TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182122

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. R H81.03/P18P Accession No. H2510

Author पाण्डेय, सुधाकर

Title प्रसाद काव्य कोश। 1957

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रसाद काव्य कोश

•

उदयशंकर पाण्डेय

•

Checked 1963

Checked 1979



प्रथम संस्करण, नवम्बर १९५७

प्रकाशक—आराधना प्रकाशन, ६४।४४, गोला दीनानाथ, वाराणसी।
आवरण—काँजीलाल।
मुद्रक—रामनिधि त्रिपाठी, मायापति प्रेस, मध्यमेश्वर- काशी।

मूल्य सोलह रुपये

वितरक
कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स,
ज्ञानवापी, वाराणसी।

प्रवेशिका

किसी कवि की महत्ता का यह चिह्न है कि उसके जीवन के पश्चात् उसकी रचनाओं का पठन-पाठन होता रहे और निरंतर बढ़ता जाय। हम लोगों के लिए तथा हिन्दी के लिए यह सौभाग्य की बात है कि प्रसाद जी की रचनाओं के प्रति लोगों का ध्यान अधिकाधिक आकृष्ट होता चला जा रहा है। केवल विश्व-विद्यालयों में ही नहीं, साधारण पाठकों में भी प्रसाद के साहित्य के प्रति अभि-रुचि बढ़ती जा रही है। श्री सुधाकरपांडेय ने 'प्रसाद काव्य कोश' तैयार करके प्रसाद साहित्य के पाठकों का मार्ग बहुत सरल कर दिया है। हिन्दी में खेद है अभी तक कोई अच्छा कोश नहीं है। फिर प्रसादजी की रचनाओं में तो ऐसे शब्द भी हैं जिन्हें उन्होंने अपने अर्थ में प्रयोग किया है। प्रसाद की काव्य-रचनाओं से शब्दों का चयन कर उसका साधारण तथा प्रसाद का विशेष अर्थ देकर पांडेय जी ने हिन्दी के लिये आवश्यक ही नहीं अनुपमेय कार्य किया है। यह सत्य है कि इससे प्रसाद की रचनाओं की व्याख्या नहीं हो सकती। किसी कोश से किसी की रचना की व्याख्या नहीं हो सकती। किन्तु विद्यार्थी तथा साधारण पाठक के लिये राह इन्होंने बना दी। शाब्दिक कठिनाई दूर हो जाने पर आधा कार्य सरल हो जाता है। वह जान जाते हैं कि कवि का अभिप्राय क्या है। फिर उसका दार्शनिक अध्ययन रह जाता है।

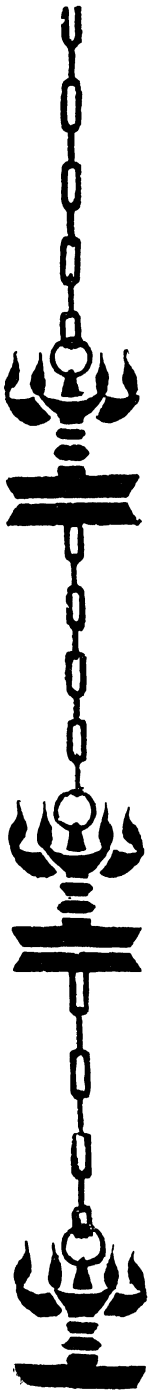
इसमें पहले शब्दों का साधारण अर्थ दिया गया है। उसके पश्चात् उसका विशेष अर्थ दिया गया है। यह स्वाभाविक ही था कि इसमें ऐसे शब्द भी आ गये हैं जो बहुत साधारण हैं और वह किसी भी कोश में पाए जा सकते हैं किन्तु पूर्णता के लिए यह उचित था कि सभी शब्द जो प्रसाद की रचनाओं में आये हैं दे दिये जांय। यह भी संकेत कर दिया गया कि यह शब्द किस रचना में किस स्थल पर आया है। इससे खोज करने वालों को बहुत सविधा प्राप्त हो जायगी।

आरंभ में प्रसाद की रचनाओं की सूची, वह कब प्रकाशित हुई इसका भी विवरण दिया गया है। उसमें कुछ ऐसी रचनाओं का भी विवरण है जो अभी किसी पुस्तक में नहीं छपी हैं पत्रिकाओं की फाइल में ही पड़ी हैं। वह भी महत्व की हैं।

हमारे यहाँ अभी इस प्रकार के काम की ओर लोगों का ध्यान नहीं गया है। लोग केवल आलोचनाओं की पुस्तक लिखना आवश्यक समझते हैं, क्योंकि वह पाठ्य-पुस्तक बन जाती है। अँग्रेजी में शेक्सपियर, स्काट, चासर आदि पर उनके अलग अलग कोश बन गये हैं। हिन्दी में भी सूर और मानस कोश बना है। प्रसाद ऐसे अद्वितीय कवि तथा साहित्य सर्जक के लिए अलग कोश की बहुत आवश्यकता थी। यह कार्य सुधाकर जीने किया है। अतएव वह हमारे साधुवाद के पात्र हैं। इस कोश में भूलें होंगी। इस प्रकार के प्रथम प्रयास में ऐसा हो जाना स्वाभाविक है। यदि ऐसा है तो इसे वह आगे ठीक करेंगे, परन्तु इसमें संदेह नहीं कि इससे प्रसाद का अध्ययन सुलभ हो जायगा। हिन्दी के विद्यार्थी के नाते तथा अपने स्वर्गीय मित्र के साहित्य के प्रेमी के नाते इस कोश का मैं स्वागत करता हूँ, प्रत्येक हिन्दी प्रेमी करेगा। आशा करता हूँ कि इस कोश से लोगों का पर्याप्त अर्थ लाभ होगा।

कार्तिक [पूर्णिमा, २०१४ वि०]

कृष्णदेव प्रसाद गौड़



काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के प्राण और हृदय
पं० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा और पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र को सादर

निवेदन

इस पुस्तक के संबंध में मास्टर साहब ने प्रवेशिका में जो कुछ लिखा है, उससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना है। यह पुस्तक एक अति विस्तृत भूमिका की अपेक्षा रखती है। 'प्रसाद की कविताएँ' नामक ग्रंथ इस पुस्तक की भूमिका है। यहाँ केवल प्रसाद के व्यक्तित्व और उनकी रचनाओं के काल-क्रम के संबंध में कुछ लिख दिया गया है।

यह कार्य अथक परिश्रम का है, साथ ही वृहत्तम साधन का भी। साधन-हीन तो नहीं हूँ क्योंकि ब्राह्मण हूँ पर श्रम असीम नहीं हो सकता। इसलिए सीमा का गुण-दोष व्यक्ति के कार्यों में सनातन स्थान बना लेता है। मेरा यह कार्य इसका अपवाद नहीं। इस पुस्तक में यदि कोई गुण है तो वह हिंदी का है और सारे के सारे दोष मेरे हैं।

मैं हिंदी तथा संस्कृत के समस्त कोशकारों का हृदय से कृतज्ञ हूँ, क्योंकि प्रायः सबसे मैंने मुक्त सहायता ली है। इसीलिए उनका ऋणी भी।

यह कोश कभी तैयार न हो पाता यदि निम्नलिखित स्वजन, मित्रों का मन वच कर्म से योग न मिलता। ये मेरे हैं, ऐसों की सेवा का मोल लगाना मेरे वश की बात नहीं। वे हैं :—

सर्व श्री शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय', प्रभात शास्त्री, हनुमान प्रसाद शर्मा एम० ए०, राममूर्ति नारायण सिंह एम० ए०, शास्त्री, पारसनाथ मिश्र साहित्यरत्न, शिवमूर्ति सिंह 'सिंहपुरी' एम० ए०, विक्रमादित्यसिंह एम० ए०, इन्दुकान्त शुक्ल एम ०ए०, रामसेवक सिंह एम० ए०, लक्ष्मीकान्त जी, सिद्धनाथ सिंह बी० ए० एल० एल० बी०, चौ० सुखदेव सिंह बी० ए० एल० एल० बी०, पं० माधवप्रसाद मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, लालजी सिंह एम० ए०, श्रीनाथसिंह, रत्नाकर पांडेय, श्रीनाथ सिंह, गंगासागर चौबे एम० ए०, शशिकान्त पाण्डेय, गौरीशंकर पाण्डेय, विजयशंकर, रामलखन सिंह, हरिनाथ सिंह, गंगा सिंह, छेदी पाण्डेय, लालबहादुर सिंह, शीतला प्रसाद, धर्मनाथ पांडेय, कृष्णानन्द, पद्माकर चौबे, प्रेम भारद्वाज, देवेन्द्र कुमार पाण्डेय, अवधबिहारी सिंह, रामप्रसाद शर्मा, मुरलीधर गुप्त, बच्चन सिंह और कल्याणदास जी, मुद्रण संबंधी कार्यों के लिए निम्नलिखित मित्रों का कार्य सराहनीय रहा। सर्वश्री रामनिधि त्रिपाठी, मगनसिंह, जंगबहादुर गुप्ता, बखेड़ू राम उर्फ (बालकृष्ण) और डा० शिवदास प्रसाद।

बाधा पहुँचाने वाले मित्रों को क्या कहूँ, आखिर उन्हें मैं कैसे कुछ कह सकता हूँ, मित्र जो ठहरे। यदि ऐसे प्रकाशक मित्र रास्ते का रोड़ा न बनते तो संभव था यह कार्य साल भर पहले पूरा हो जाता। एकाध मेरी पुस्तक के विज्ञापन से प्रेरणा ग्रहण कर इस दिशा में कार्य करने की ओर उन्मुख हुए। उन्होंने अच्छा ही किया। सबका कृतज्ञ हूँ।

सुधाकर पाण्डेय

प्रसाद की लेखनी से

कामायनी की लज्जा ।

पुस्तक-संकेत

अनुक्रम में इस पुस्तक में श्री जयशंकर 'प्रसाद' की जिन रचनाओं का उपयोग एवं प्रयोग किया गया है उनका संस्करण और संकेत निम्नलिखित हैं—

आंसू—दसम संस्करण, २०१३	वि०	=	आं०
करुणालय—तृतीय संस्करण २०११	,,	=	क०
कानन-कुसुम—पंचम संस्करण २००७	,,	=	का० कु०
कामायनी—नवम संस्करण २०१३	,,	=	का०
चित्राधार—द्वितीय संस्करण १९८५	,,	=	चि०
झरना—सातवाँ संस्करण २०१३	,,	=	झ०
प्रेमपथिक—द्वितीय संस्करण	,,	=	प्रे०
महाराणा का महत्व—तीसरा संस्करण	,,	=	म०
लहर—पंचम संस्करण २०१३	,,	=	ल०

[ये सभी पुस्तकें डबल क्राउन सोलह पेजी आकार में हैं।]

प्रसाद का व्यक्तित्व

प्रसाद जी काशी में उत्पन्न हुए। काशी सदैव से ही 'मधुर मनोहर अतीव सुन्दर सर्वविद्या की राजधानी रही है।'[1] भारत की अन्तर्गत्मा यदि किसी एक नगरी में निवास करती है तो वह नगरी है काशी। जिस काशी में वह उत्पन्न हुए थे, वह काशी तीन लोक से न्यारी है। यहाँ का वातावरण न्यारा, यहाँ के लोग निराले और जो कुछ भी है सब अनूठा। काशी वाले सदैव से ही जीवन का मूल्य समझते रहे हैं। नश्वरता में आनन्द की जो लहरें काशी में हिलोरें लेती हैं, उनका दर्शन अन्यत्र दुर्लभ है। यहाँ पंडित, साधक, विद्वान और मूर्ख सब अपने अपने रंग में रंगे रहते हैं। मस्ती काशी की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। यहाँ के लोग जीवन की लीला के नायक भी होते हैं और द्रष्टा भी। सब अपने-अपने में मस्त। यहाँ के गुण्डे भी किसी स्थान के साधु से महान होते हैं और यहाँ के साधु भी कहीं के गुण्डों से कम नहीं होते। यहाँ के लोग निर्भीक, उच्छृंखल और अपनी बात पर अड़ जाने वाले होते हैं। आवश्यकता पड़ने पर संगीनों के सामने अपनी छाती तानकर खड़े होना भी काशी के लोग जानते हैं, पर अकड़ का मस्तक झुकते हुए नहीं देख सकते, क्योंकि जीवन का क्या मूल्य है, काशी के लोग पहचानते हैं। उनका रहन-सहन सादा होता है। पर रईसी की बू उसमें झलकती है। वे सच्चे माने में रईस होते हैं।

आदि काल हो, मध्यकाल हो या आधुनिक काल हो, काशी का गौरव कभी परिवर्तित नहीं हुआ। वह काल सिन्धु की लहरों में खड़ा चिरंतन अटल ज्योतिस्तम्भ है। प्रसाद जी ऐसे ही सच्चे बनारसी वातावरण में उत्पन्न हुए थे। बनारस का सच्चा रूप उनके शैशव में उनके घर पर दीख पड़ता था। वह ऐसे गैरे खद्दूश के घर पैदा नहीं हुए थे, अपितु एक सच्चे बनारसी रईस परिवार में उत्पन्न हुए थे। वे सुँघनी साहु के पौत्र थे। सुँघनी साहु की अपने समय तूती बोलती थी। ऐसा सुँघनी साहु के स्वभाव के कारण था, उनके धन और वैभव के कारण नहीं। क्योंकि काशी की मिट्टी में यह असर है कि जो यहाँ पैदा होता है वह धन और वैभव से सम्मान को बड़ा समझता है और इस सम्मान की रक्षा के लिये काशी के लोगों ने जितना उत्सर्ग किया, उतना संसार के किसी एक नगर ने आज तक विश्व के इतिहास में नहीं किया है। यह वही नगरी है जहाँ पर महाकवि कालिदास को एक पनिहारिन टकासा जवाब दे काशी में शास्त्रार्थ करने से विरत कर देती है।[1] सुँघनी साहु के दरबार में सबका सम्मान होता था। कवि और पंडित जाते थे, शायर और सपूत आते थे, मगन और दाता भी। यह वह घर था जहाँ से सभी संतुष्ट होकर लौटते थे, यहाँ तक कि पहलवान भी। इतने विशाल हृदयवाली परम्परा का सम्बल बड़े सौभाग्य से किसी साहित्यकार को प्राप्त होता है। इस वातवरण ने जहाँ प्रसाद जी के स्वभाव में चट्टान सी दृढ़ता भरी, महान उदारता भरी, सबकी सुनने और सहने की शक्ति दी, वहीं वह मुस्कान भी दी जिसका रहस्य लोग बीसों वर्ष तक उनके साथ रहकर भी न पा सके और आज भी वे उनकी मुस्कान को एक पहेली समझते हैं।

विधाता जिसके प्रति दयालु होता है, जिसे दुख और आपदाएँ देता है, जिसे जितनी ही दुख और आपदाएँ प्राप्त होती हैं, वह उतना ही महान बनता है यदि अपने मस्तक पर उन आपदाओं से विषाद की एक भी रेखा खींचने न दे, और अपने हृदय को छोटा न होने दे, निरंतर संघर्ष करता जाय। इस माने में निश्चय ही विधाता का वरदान प्राप्त था, प्रसादजी को। उन्होंने सदैव से ही स्मितिभरे आनन्द को जीवन का चरम साध्य समझा। पगली आपदाओं को मुस्कान भीख दे विदा किया। विधाता का वरदान उन्हें था। उन्होंने स्वयं लिखा भी है;

---

(१) काशी हिन्दूविश्वविद्यालय के कुल गीत पर आधृत।

(१) उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य संमेलन द्वारा आयोजित सन् १९५२ को कालिदास जयंती पर अध्यक्षपद से दिए गये साहित्याचार्य पं० महादेव पाण्डेय के भाषण पर आधृत।

जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत की ज्वालाओं का मूल,
ईश का वह रहस्य वरदान,
कभी मत इसको जाओ भूल[२]।

१८८९ में वे उत्पन्न हुए। उनके पिता देवीप्रसाद जी थे। वे प्रसाद के पितामह बाबू शिवरतन साहु की परम्परा का पालन निष्ठा पूर्वक कर रहे थे। महाराज बनारस के यहाँ जो कलाकार आते, वे प्रायः उसके बाद इनके यहाँ जाते, चाहे वे कवि हों, विद्वान हों, भाट हों, चाहे इंद्रजालिक। वे सभी देवीप्रसाद जी की जय मानने लौटते। गुण के ग्राहक तो वे थे ही, साथ ही किसी को अपने दरबार से निराश होकर लौटने देना वे उचित नहीं समझते थे। काशी नरेश यहाँ के बड़े महादेव थे और ये छोटे। इनका घर का जीवन क्या था, यह देखना अब अप्रासंगिक न होगा।

११ वर्ष की आयु में इन्होंने धारा क्षेत्र, ओंकारेश्वर, पुश्कर, उज्जैन, जयपुर, ब्रज, अयोध्या आदि स्थानों पर अपनी मां के साथ संस्कार-यात्रा की। वहाँ के नैसर्गिक दृश्यों ने उनके मनको लुभा लिया जिसका व्यापक प्रभाव इनके जीवन और साहित्य पर भी पड़ा। प्रकृति की वह सुषमा उनके जीवन पर लकीर बन गयी जो जीवन के अन्त तक बनी रही।

उनके पिता पहले ही स्वर्गवासी हो चुके थे। १५ वर्ष तक केवल माँ का प्यार पा सके। घर के कर्ता-धर्ता और विधाता उनके बड़े भाई शम्भूरत्न जी थे। शम्भूरत्न जी का इनसे अपूर्व स्नेह रहा। वे इन्हें अपने घर की परम्परा में ढालना चाहते थे। वे इन्हें कुशल व्यवसायी के रूप में देखना चाहते थे। यही कारण था कि जब उन्हें यह पता चला कि जयशंकर दूकान पर बैठकर रद्दी कागजों पर कविताएँ लिखा करते हैं, तो वे रुष्ट हुए। दो वर्ष तक बाबू शम्भूरत्न जी का प्यार इन्हें प्राप्त हुआ। शम्भूरत्न जी सच्चे माने में बनारसी रईस थे। उनके यहाँ भी कलाकारों का, अखाड़ियों का जमघट था। बहुत उदार थे, वे खर्च के मामले में। ऐसे तो स्वयं रियाजी जीव थे, बलिष्ठ थे, सुन्दर थे उनका व्यक्तित्व मन को आकर्षित करनेवाला था। उनके यहाँ से भी लोग निराश नहीं लौटते थे। उनके संबंध में कुछ लोगों ने यहाँ तक बताया है कि वे काशी के अपने समय के वाजिदअली शाह थे, खर्च के मामले में। प्रसाद जी पर उनका ऐसा स्नेह था जैसा बड़े भाई से छोटे को बड़े सौभाग्य से मिलता है। उन्होंने प्रसाद जी के निर्माण के लिए कविता लिखने पर दृढ़ प्रतिबन्ध लगाया। किन्तु जब अभ्यागतों ने उनके काव्य-प्रतिभा की उनसे प्रशंसा की तो उन्होंने उनपर से प्रतिबन्ध ही नहीं हटाया उनके, पढ़ने-पढ़ाने की प्रौढ़ व्यवस्था की। जहाँ तक स्कूली शिक्षा का प्रश्न है सातवीं कक्षा तक ही वह क्वींस कालेज में शिक्षा प्राप्त कर सके थे। पिता चल बसे थे, स्कूल की पढ़ाई समाप्त हो गयी। पर बाबू शम्भूरत्न ने इनके लिए घर पर ही अंग्रेजी और संस्कृत की पढ़ाई का अच्छा प्रबन्ध किया। दीनबन्धु ब्रह्मचारी जैसे सद्पुरुष को इन्होंने इनका अध्यापक नियुक्त किया। वेद और उपनिषद के प्रभाव ने जो छाप प्रसाद पर छोड़ी है वह दीनबन्धु ब्रह्मचारी के अध्यापन का प्रभाव है। प्रसाद जी अपने पैरों पर खड़ा भी न हो पाये थे कि १७ वर्ष तक देख भाल कर शम्भूरत्नजी ने भी सदैव के लिये उनका साथ छोड़ दिया।

अब काशी के एक महान प्रतिष्ठित परिवार के उत्तराधिकारी के रूप में प्रसाद जी थे। १७ वर्ष की आयु, वैभव और प्रतिष्ठा की महान परम्परा, कच्ची गृहस्थी, घर में न पिता, न माँ, न बड़ा भाई—एक मात्र अकेले पुरुष। आपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा, अकेले प्रसाद जी पर अप्रत्याशित रूप से। घर में विधवा भाभी थीं। कच्ची गृहस्थी, सबका बोझ विधाता ने उनके सिर पर ला पटका। ऐसी ही दुर्दमनीय विपन्न स्थिति में कुटुम्बियों, परिवार के शुभेच्छुओं एवं सम्बन्धियों का षड्यन्त्र भी पूर्ण रूप से सम्पत्ति पर अधिकार करने के लिए चला। १७ वर्ष के एक युवक के सर पर ऐसी महान विपदाएँ, एक साथ आ पड़े और वह उन्हें सह ले, यह साधारण व्यक्तित्व का कार्य नहीं।

उन्होंने कठिनाइयों को देखा था, समझा था पर उनसे उन्होंने समझौता नहीं किया। जीवन और मरण जैसे प्रश्नों के रहते हुए भी वे अपने पथ पर बढ़ते रहे। बाधाओं से संघर्ष करते रहे। उन्हें पलायनवादी कहने वाले यह नहीं जानते कितना क्लेष, कितना दुख, कितनी वेदना, अपने कहे जानेवाले लोगों से उन्हें प्राप्त हुई थी। ऐसी अवस्था में यदि व्यक्ति गंभीर नहीं होता, उसका हृदय विशाल नहीं होता, यदि वह मुस्कान

---

(२) कामायनी पृष्ठ ५३, अष्टम संस्करण।

का मूल्य नहीं आँकता तो वह बड़ा आदमी नहीं हो सकता, भले ही और कुछ हो जाय। परिस्थितियों का प्रभाव उनके जीवन पर इतना प्रगाढ़ पड़ा कि जब कभी वे अपनी वाणी से किसी अपने मित्र से इन परिस्थितियों की चर्चा करते तो क्या स्थिति होती इसका निदर्शन पं० विनोद शंकर व्यास ने निम्नलिखित शब्दों में किया है:—"मुझसे जब कभी वह अपनी जीवन की कहानी सुनाते, तो उनका चेहरा तमतमा उठता, आँखें भर आतीं और ललाट पर संसार की कठोरता की एक रेखा स्पष्ट खिच जाती थी।"[1] इतना होने पर भी स्वाध्याय में, साहित्यिक जीवन के विकास में वे जुटे रहे। प्रायः लोग ऐसा कहते हैं कि प्रसाद जी अभ्यास करनेवाले कवि थे। धीरे-धीरे उनके साहित्य में प्रौढ़ता आयी है। संभवतः वे लोग प्रसाद जी की उन परिस्थितियों को भुला देते हैं जिन परिस्थितियों में से प्रसाद को गुजरना पड़ा था। वे लोग यह भी भूल जाते हैं कि प्रसाद उस समय लिख सके, अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति ऐसी स्थिति में कर सके जब केवल रास्ते पर खड़ा होना भी साधारण कार्य नहीं। कितने लोगों को तो प्रोत्साहन और दुलार मिला, अच्छे वातावरण में पले थे, अपने समय के महान साहित्यकार अपने गुरुओं द्वारा घोषित किये जाते थे पर प्रतिदिन प्रसाद जी की कीर्तिगाथा जिस गति से व्यापक होती जा रही है, वह प्रसाद के दृढ़ व्यक्तित्व का परिचायक है जिसके गठन में नन्हकूसिंह जैसे चरित्र के निर्माण की क्षमता थी। ऐसी परिस्थिति में उनका खड़ा रहना ही कम महत्वपूर्ण नहीं होता। वे साहित्य के क्षेत्र में खड़े ही नहीं हुए, वह तो बराबर आगे ही बढ़ते रहे। ऐसी परिस्थिति में वे आगे बढ़े जब झंझा, झकोर, गर्जन, बिजली, नीरदमाला सब कुछ थी पर उन्होंने तो अपने शून्य हृदय में दीपक जलाया था, वे स्मशान में विचरण करने वाले अमृतपायी थे।

पूर्व इसके कि साहित्यिक जीवन की चर्चा की जाय यह भी लिख देना परम आवश्यक है कि घरेलू जीवन में उनके ऊपर क्या बीता। पहला विवाह उन्हें स्वयं करना पड़ा। दूसरा विवाह भी करना पड़ा। वे तीसरी शादी नहीं करना चाहते थे। दूसरी स्त्री की एक मात्र निशानी भी उसके साथ ही समाप्त हो चुकी थी। वह उसमें प्रेम करते थे। घर तो वीरान पहले ही हो चुका था, मन भी बीयाबान हो गया। घर में विधवा भाभी का जीवन दुख की अनन्त रेखा की भाँति उनके सामने प्रश्न चिह्न बना रहता था, अब वे शादी नहीं करना चाहते थे। पर भाभी का अनुरोध वे टाल न सके। मन की जलती हुई आग की उन्हें चिन्ता न थी। दुख और वेदना की आँधी में थिर कर भी उन्होंने अधिक उचित समझा कि अपनी भाभी के मन का मान रखें। अपनी भाभी के निर्देश पर गृहस्थी बसायें। घर का सूनापन भाभी के लिए खलने की वस्तु न रह जाय। उनके चरित्र की यह महत्ता केवल पूर्ण वैयक्तिक मात्र ही न रही।

समाज में जिन लोगों से उनका सम्पर्क हुआ, उनमें मुख्यतः साहित्यिक लोग ही हैं। बाबू शिवपूजन सहाय एक बार काशी आये। उस समय मैं इन्टर की कक्षा में पढ़ता था। पं० विनोदशंकर व्यास उनसे ज्ञानवापी वाली धर्मशाला में मिलने गये। भेंट न हुई। दूसरे दिन शिवपूजन बाबू से उनकी मुलाकात हुई। मैं भी साथ था। उस समय मुझे यह नहीं मालूम था कि प्रसाद जी, शिवपूजन सहाय, निराला जी आदि कितने बड़े आदमी हैं। शिवपूजन बाबू ने प्रसाद जी के घर जाने की बात कही। व्यास जी ने मुझे उनके साथ लगा दिया। उस समय तो बड़ा बुरा लगा। मस्ती-पानी में खलल पड़ा। शिवपूजन बाबू से मुझसे क्या बातें हुई, मैं नहीं जानता। स्मरण नहीं है। शायद स्मरण रखने की कोई आवश्यकता भी मेरे लिये उस समय नहीं थी। किन्तु जब गोवर्धनसराय की गली में वे घूमे तो उन्होंने कहा कि मैं बनारस जब आता हूँ तो प्रसाद जी के मकान का दर्शन करता हूँ। वह मेरे लिये मंदिर है। वे प्रसाद जी के भवन तक गए। मंदिर की भाँति दर्शन किया, फिर वापस। मैंने समझा यह पागलपन है, पर कुछ बोल नहीं सकता था क्योंकि व्यासों जी ने शिवपूजन बाबू के सम्बन्ध में इतनी श्रद्धा मेरे मन में भर दी थी कि यही समझा कि कोई बहुत बड़े रहस्य की बात है। व्यासजी से मैंने लौटकर कहा भी कि यह क्या है, उन्होंने मुझसे कहा कि 'तू क्या समझेगा।' जो साहित्यकार भी उनके सम्पर्क में आये उनके व्यक्तिगत स्वभाव से वे उनके स्नेही बन गए। प्रेमचन्दजी जैसे उनके साहित्य के विरोधी भी उनके साथ बेनिया बाग में प्रातःकाल रोज टहलते थे। अनेक मानें में

(१) प्रसाद और उनका साहित्य, पृष्ठ ४।

उनसे भी निकट का संबंध था और यह संबंध जीवन-पर्यन्त बना रहा।

"प्रसाद जी के तीन नाटक" नामक भयंकर आलोचना-पुस्तक उनके मित्रों ने उनके व्यक्तित्व के प्रति व्यंग्य का परिणाम थी। पर उन्होंने उसका कोई भी उत्तर न दिया, न देने दिया। अपने मित्रों के प्रति वे कितने उदार थे यह इसीसे जाना जा सकता है कि राय कृष्णदास के जरा-सा कहने पर उन्होंने क्या किया यह उनके द्वारा ही लिखित इस संस्मरण के इस अंश से प्रकट हो जाता है। "इन्हीं दिनों जयशंकर जी ने भी पहिले साधना को देखा। उन्होंने भी उसे बहुत पसन्द किया, केवल जबानी ही नहीं। एक दिन आये सुदामा की तरह कुछ छिपाए हुए। उसे बहुत झपटी झपटा और हाँ नहीं के बाद बड़े हाव-भाव से उन्होंने दिखलाया। उन दिनों उनकी ऐसी ही आदत थी कि अपनी रचनाएँ दिखाने में बड़ा तंग करते थे। वह एक साफ सुथरी छोटी-सी कापी थी, जिसमें बीस के लगभग गद्य गीत उनके लिखे हुए थे, मैंने कइयों को झाँका, सुन्दर थे। एक में का संध्या वर्णन अभी तक नहीं भूला। किन्तु मैं उन दिनों बावला हो रहा था। मुझे अपनी शैली पर इतना ममत्व और आग्रह था कि जरा भी उदार नहीं होना चाहता था। मैंने छूटते ही कहा 'क्यों गुरु मुझी पर हाथ फेरना।' वे मेरी संकीर्णता पहचान गये। कई दिन बाद कोई सुनासिक बात कह कर उसे उठा ले गये और उन भावों में से कतिपय को छन्दबद्ध कर डाला। उनके झरना के प्रथम संस्करण का अधिकांश उन्हीं कविताओं का संकलन है।"[1] उनके साथ रहने वालों ने उन पर क्या लिखा है यदि यह जाना जाय तो उनके व्यक्तित्व का महत्व अपने आप ही प्रकट हो जायगा। श्री रामनाथ सुमन ने अपनी पुस्तक में यहाँ तक लिखा है कि जिसे देखकर एक बार आश्चर्य होता है, किन्तु इसे मैं आश्चर्य नहीं मानता हूँ उनके व्यक्तित्व का प्रभाव मानता हूँ।

"मैंने जीवन में अनेक महात्माओं और महापुरुषों का साक्षात किया है, सार्वजनिक रूप से ज्ञात भी, और अज्ञात भी। इनमें तीन-चार तो अत्यन्त उच्च कोटि के योगी थे और उनकी अनासक्ति बड़ी ऊँची सीमा तक बढ़ी हुई थी। पर यह बात की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र और रस में डूबकर भी जीवन की अतिव्याप्तियों से अलग रहना, और अपने लक्ष्य और आनन्द में सदा तन्मय रहना, मैंने अपने जीवन में केवल दो ही आदमियों में देखा है एक गांधीजी, दूसरे 'प्रसाद जी'। मैं जानता हूँ कि मैं बहुत बड़ी बात कह रहा हूँ, पर मैं उसकी जिम्मेदारी समझता हूँ। निस्सन्देह इस वृत्ति का विकास दोनों में अलग-अलग ढंग पर हुआ है, दोनों की साधना और उस साधना की व्यापकता में भी भेद है, पर दोनों में प्रत्येक अवस्था में आनन्द प्राप्त कर सकने की क्षमता दिखाई देती है।"[2]

पं० रूपनारायण पाण्डेय ने उसके साथ रहकर उनमें जो गुण देखा, उसका वर्णन वे इस प्रकार करते हैं; "पहली और सबसे बड़ी विशेषता उनमें यह देखी कि वह प्रत्येक सहृदय साहित्यिक के साथ असाधारण प्रेम का व्यवहार करते थे। आजकल के अनेक लेखकों की तरह वह किसी प्रतिस्पर्द्धी से ईर्षा न रखते थे। उन्होंने कभी किसी की निन्दा नहीं की उनके मुख से मैंने उस मनुष्य के प्रति भी कोई बुरा मन्तव्य नहीं सुना, जो उन्हें बुरा कहता था या उनकी प्रतिभा का कायल न था। प्रसाद जी यथाशक्ति प्रत्येक साहित्यिक का सम्मान और सहायता करते थे। दूसरी विशेषता यह उनमें थी कि मैंने कभी उनको क्रोधित होते नहीं देखा। यहाँ तक कि उनको एक बंगाली नौकर के कारण यथेष्ट आर्थिक हानि उठानी पड़ी, परन्तु उन्होंने उनके लिये भी कभी कटूक्ति नहीं की। तीसरी विशेषता यह पाई कि उनमें अभिमान नहीं था। आज के जमाने ऐसी प्रकृति दुर्लभ ही है।"[3] ऐसा न केवल ये मानते हैं बल्कि प्रायः उनके सभी मित्र कहते हैं।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा आलोचक पं० नन्ददुलारे वाजपेयी उनके सम्मानित मित्रों में से हैं, उन्होंने उनके व्यक्तित्व की जो झाँकी देखी, उसका अवलोकन कम महत्वपूर्ण नहीं है। "जो कोई किसी की आशा करता है, वह अपने साथ प्रवंचना करता है। जो भविष्य पर आस्था रखता है, वह अपने अन्तःकरण की दुर्बलता प्रकट करता है। जो अपनी कृति पर अविश्वास करेगा, वही अपनी कीर्ति चाहेगा। जो अपनी करनी से प्रसन्न नहीं हैं, संसार में उसे

१—प्रसाद और उनका साहित्य, पृष्ठ ५।

१—कवि प्रसाद की काव्य साधना, पृष्ठ २७८।

२—प्रसाद जी और उनका साहित्य, दो बात, पृष्ठ १,२

कभी प्रसन्नता नसीब न होगी। बनारसी रंग से प्रसाद जी का एकमात्र यही आशय था, किन्तु मैं इसे समझना नहीं नहीं चाहता था। दुर्बलता तो मेरे अन्दर थी। मैंने प्रसाद जी का सदैव यही बनारसी रंग देखा। बाहर से उनका व्यक्तित्व देखकर कोई उनकी मुस्कान से मुग्ध होता, कोई उनकी व्यवहार-पटुता और मैत्री से मोहित होता; किन्तु उनके इस दिव्य, किन्तु मोहक बाह्य के भीतर जाकर अपनी ही कृति में आनन्द मनानेवाले, कीर्ति की लिप्सा न रखनेवाले भली बुरी समीक्षाओं से समान रूप से तटस्थ रहनेवाले निस्पृह तथा दिव्यतर प्रसाद जी को बहुत कम लोगों ने देखा। मैं जब उन्हें पहचानने के योग्य हो रहा था, इतने में वे स्वयं ही न रहे।"[1] यह पूर्व ही स्पष्ट किया जा चुका है कि बनारस की मस्ती, उनकी गम्भीरता उसकी महानता के प्रसाद जी प्रतीक थे।

प्रसाद जी को कुछ लोग पलायनवादी घोषित करते हैं। ऐसे लोगों को देखकर इसलिये आश्चर्य होता है कि अपनी कृतियों में उनके जीवन की और उनके पौरुष की वे प्रशंसा भी किया करते हैं। प्रसाद को कुछ लोग केवल भाग्य-वादी ही समझते हैं। ऐसे लोग कवि के साथ अन्याय करते हैं। धीरे-धीरे भुलावा देकर ले चलने की बात जिन लोगों के मस्तिष्क में पलायनवाद और केवल भाग्यवाद के स्वर का उद्घोष कराती है, वे सम्भवतः ऐसे तन्तुओं से बने हैं जिन तन्तुओं से निर्जीव मशीन का निर्माण होता है। सबके जीवन में पीड़ा के बोल अपनी धुन सुना जाते हैं। उस धुन का आनन्द जो नहीं ले सकते वे कला और साहित्य के पारखी नहीं हो सकते। बहुत बड़े उत्पादक भले ही हो जायँ। पीड़ा को भुलावा देना अपौरुष का प्रतीक नहीं अपितु पुरुषत्व के विक्रम की पहली सीढ़ी है। उस व्यक्ति को कोरा नियतिवादी और पलायनवादी कहना उसके व्यक्तित्व के साथ अन्याय करना है, जिसने युग के सर्वश्रेष्ठ सत्ताधारी विद्वान पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी की परवाह नहीं की। 'सरस्वती' में अपनी रचनाएँ नहीं छपवाई। विषम आर्थिक परिस्थिति में भी 'इन्दु' का प्रकाशन जिन्होंने किया, जिसका कृतित्व पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे व्यक्ति के चिढ़ का कारण बना। निरंतर कष्ट सहने पर भी जिसने कभी आह नहीं की, जो अनेक झंझटों पर कभी-कभी तिलमिला भर उठता था, जिसने काव्य के सभी प्रतिभा-सम्पन्न शिल्पियों से सदैव मैत्री का सम्बन्ध रक्खा, उनका नेतृत्व किया और महावीर प्रसाद द्विवेदी की भाव-धारा से प्लावित लोगों को वास्तविक काव्य-चेतना का मार्ग ही नहीं दिखाया, उन्हें उसपर चलने के लिये बाध्य भी किया, वह व्यक्ति पलायनवादी नहीं हो सकता।

जीवन में विषाद और पीड़ा के क्षण आते हैं। व्यक्ति को गरल पान करना पड़ता है, चाही अनचाही हो जाती है, वैसी स्थिति में पीड़ा के स्वर यदि फूट पड़ते हैं, व्यक्ति के पाँव यदि कोलाहल से दूर भागना चाहते हैं, तो यह मृत्यु की निशानी नहीं, जीवन का प्रमाण है। उन्हें पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी का ही विरोध नहीं, सहन करना पड़ा अपितु प्रारम्भ में प्रेमचन्द्र जैसे लोग भी उनके साहित्य के विरोधी थे। पर उनके व्यक्तित्व ने सबको अपना बना लिया। यह पौरुषवान व्यक्तित्व की आभा का दीप्त प्रमाण है। उनकी जितनी आलोचना हुई, जितनी भर्त्सना हुई यदि आज के लोगों की होती तो वे साहित्य-रचना छोड़ देते और अनेक समर्थ कहे जानेवाले लोगों ने अपने द्वारा उठाए गए प्रश्नों पर व्यापक प्रितिक्रिया देख आज भी पीछे हट जाने में संकोच का अनुभव नहीं किया। पर प्रसाद जी का तो उद्देश्य सदैव से उस सीमा पर पहुँचना रहा जिसके आगे राह नहीं हुआ करती।

प्रसाद के समय आधुनिक हिन्दी के महान् निर्माता काशी में थे और उन सबके बीच रहकर उन्होंने ऐसे पथ का निर्माण किया जो काशी के गौरव के अनुरूप है और सबसे अलग, मौलिक भी।

प्रसाद जी के घर के सामने अपना शिव मंदिर था। शिव के वे भक्त थे। विश्वनाथजी भी जाते थे। शैव आनन्द की अगम धारा में स्नान करनेवाले वे दिव्य हृदय के व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व इतना विशाल था कि अपने परिचय के सम्बन्ध में हंस के आत्मकथांक में प्रेमचन्द्रजी के विशेष आग्रह पर ही उन्होंने रचना दी। उसे देखना अप्रासंगिक न होगा। वह उनके जीवन-मर्म के उद्घाटन में सहायक होगी:—

मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी,

१—जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ ४६।

इस गम्भीर अनन्त नीलिमा से असंख्य जीवन इतिहास-
यह लो, करते ही रहते हैं, अपना व्यंग्य-मलिन उपहास
तब भी कहते हो, कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख आओगे, देखोगे-यह गागर रीती।
किन्तु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले-
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।
वह विडम्बना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवञ्चना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिलखिलाकर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसको मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसका कर जो भाग गया।
जिसके करुण कपोलों की मतवाली सुन्दर छाया में।
अनुरागिणी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक के पन्था की।
सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कन्था की?
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथायें आज कहूँ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ।
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा?
अभी समय है नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

(लहर से)

जीवन में चतुर्दिक विडम्बना से घिरे व्यक्ति के लिए आनन्द का मूल्य संभवतः सबसे बड़ा होता है। प्रसाद जी ने काव्य में सर्वत्र आनन्द की उपलब्धि को ही अपना चरम साध्य माना। उनके जीवन की भाँति युग भी चतुर्दिक प्रक्रान्त था, वेदना से, पीड़ा से और अपनी आकुल परिस्थितियों से। जीवन के मध्यान्ह में उनके ऊपर ऋण का भार बढ़ गया था और अपने व्यापार की ओर भी उन्होंने ध्यान दिया, किन्तु साहित्य से वह विरक्त नहीं हुए।

उनका जीवन इस बात का साक्षी है कि वे दूसरे विचारों के साहित्यकारों का आदर करते थे। उनके यहाँ सभी विचारों के साहित्यकार एकत्र होते थे। स्वास्थ्य का भी वे ध्यान रखते थे। लोगों को यह आश्चर्य लगता था कि वह कब और किस तरह लिखते हैं, किस तरह बाधाओं के सर पर पग धर कर साहित्य का निर्माण करते हैं।

अवरोधों का ताँता उनके सम्मुख था। इन अवरोधों के बीच उन्होंने चतुर्दिक निष्ठा के साथ कार्य किया और जिस क्षेत्र में उन्होंने चरण रखा वहाँ अपना स्थायी प्रभाव छोड़ दिया। यह उस वातावरण की देन है जिस वातावरण तथा संस्कार की गोद में प्रसाद जी का निर्माण हुआ, खाये, खेले, कूदे, पनपे और बड़े हुए थे। कुछ लोगों के भीतर प्रसाद जी के सम्बन्ध में अनेक भ्रम उनके मित्रों ने फैलाया है, और सबसे बड़ा भ्रम यह है—कि वह समाज-भीरु थे। समाज में अपने को मिलाना नहीं चाहते थे। संभवतः बहुत बड़े पैमाने पर ऐसी बात मानना उनके साथ अन्याय करना होगा। उन्होंने अपनी एक सामाजिक सृष्टि बना ली थी जिसमें सभी प्रकार के लोग थे। व्यापारी से लेकर साहित्य के साधक तक, नाऊ से लेकर पंडित तक। समाज का दृश्य तो उनके सामने रहता था। यदि उसे वह न देखे होते तो सम्भवतः ऐसी देन न दे जाते जैसी उनकी मानी जाती है। उनका हृदय जब बोलता है तो किसी के अन्तर की वाणी बनकर बोलता है। अन्तर का यह दर्शन वे लोग नहीं कर सकते जो भीड़ में घेर लिए जाते हैं या घिर जाते हैं। वहाँ तो धक्कम-धक्का ही हाथ लगता है। मित्रों के बीच में वह खुलकर हँसते थे। परन्तु सामाजिक मान-अपमान एवं मर्यादा का वे ध्यान रखते थे। कहना न होगा कि प्रसाद जी ने नोबुल पुरस्कार विजेता नागूची के रवीन्द्र बाबू के यहाँ कलकत्ते आने पर प्रेमचन्द्र से स्पष्ट ही कहा था कि यदि नागूची रवीन्द्र बाबू से मिलने कलकत्ता आ सकते हैं तो काशी में प्रेमचन्द्र जी से भी मिलने आ सकते हैं। यही नहीं दिल्ली के रंगबाज साहित्यिक उनकी नारियल बाजार वाली दूकान पर एक दिन उनसे मिलने आये। उनको आज भी अपने साहित्य पर बड़ा गरूर है, गर्व है, अभिमान है। वे नित्य प्रति जहर खाते हैं—ऐसा उनका कहना है। उन्होंने नारियल बाजार वाली दूकान पर प्रसाद जी से कहला भेजा कि थोड़ी दूर इधर मैं खड़ा हूँ। प्रसाद जी जरा आकर मुझसे मिल लें। मैं कुछ बात करना चाहता हूँ। प्रसाद जी ने संदेशवाहक से काशिका में कहला भेजा कि अगर मिलना हो तो यहीं आ जायँ।[1] यह संस्मरण उनके उस सामाजिकता का प्रतीक है जो समाज में रहनेवाले व्यक्ति के लिये जरूरी है। कुछ लोग इसे आत्माभिमान मान सकते हैं किन्तु प्रसाद ने सदैव

१—पं० शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' काशिकेय की वार्त्ता पर आधृत।

आत्माभिमान उन्हीं को दिखाया जो अपने को कुछ समझते तथा बनते थे। यह काशी के वातावरण के गठन का प्रतिफल है। अपने मित्रों के भीतर प्रायः उन्होंने ऐसी बात नहीं की। हाँ जब किसी बात को वे मन में दृढ़ता पूर्वक ठीक समझ लेते तो उससे विचलित भी न होते थे। कहना न होगा कि सभी तैयारी पूरी हो जाने पर भी जब जीवन के अन्तिम समय में क्षय से आक्रान्त हुए तो राय साहब के बगीचे में नहीं गए। न जाने का कारण जो रहा हो, कुछ लोगों ने इसे नियतिवाद बताकर समाप्त किया है। किन्तु नियति का जीवन में जितना स्थान है उतना प्रसाद जी मानते थे न कि हाथ पर हाथ रख भाग्य पर सब कुछ छोड़ दें। जीवन के अन्तिम दिनों में रोग ने उनपर चढ़ाई की। यक्ष्मा से वे पीड़ित हुए। यक्ष्मा को उन्होंने जीवन भी दे दिया और ४८ वर्ष की अवस्था में समाज से चल बसे। किन्तु इतनी छोटी आयु में उनके व्यक्तित्व ने जिस साहित्यिक एवं सांस्कृतिक निर्माण का कार्य किया है वह निश्चय ही अत्यन्त गौरवशाली है तथा उनके उस कृतित्व का आख्यान करता है जिस कृतित्व का गौरव खड़ीबोली के साथ ही संस्थापित रहेगा, इसमें दो मत नहीं हैं। वे सभा सोसाइटियों में तो न जाते थे, किन्तु सम्मेलन की संस्थापना के आयोजन कर्ताओं में से एक थे। सभा के उन्नयन और विकास के वे सक्रिय सहयोगी थे। उन्हें काम से मतलब था, नाम से नहीं। भारत की साधना-परम्परा इस बात की साक्षी है कि जितने महान् व्यक्ति होते हैं वे अपने नाम के नहीं, अपने काम के दीवाने होते हैं। तुलसी, सूर, मीराँ, सब ने सामाजिक निर्माण किया है, सांस्कृतिक उत्थान किया है किन्तु राजनीतिक प्रचारकों की भाँति कहीं भी तो अपने गौरव का आख्यान नहीं किया है। प्रसाद जी उसी मूल संस्कार के समर्थक, पोषक, मात्र नहीं थे अपितु उसी साधना-प्रणाली के नये युग के अनुरूप प्रवर्तक थे। दूसरा भ्रम प्रसाद जी के सम्बन्ध में यह है कि वह बहुत सम्पन्न व्यक्ति थे, जैसे आज के पूँजीपति हुआ करते हैं, विलासी स्वभाव के। यह भ्रम बिना दूर किए हुए उनके साहित्य की वास्तविकता नहीं समझी जा सकती। वे रईस तो जरूर थे, किन्तु कर्मठ भी थे। रईस का अर्थ विलासी लगाना उनके साथ अन्याय करना होगा। उसका रहन सहन किसी नवाब की तरह नहीं, मध्यवर्ग के उच्च परिवारों की भाँति का था। अच्छा खाना-पीना और पहनना विलासता नहीं है अर्थशास्त्र के एक विद्यार्थी के नाते मैं यह कह सकता हूँ और डंके की चोट कहता हूँ कि प्रसाद के लिए वह आवश्यक आवश्यकता थी। विलासी ऋण बोझ से दबने पर चिन्तित नहीं होता, वह अपना समाधान अपनी सम्पत्ति को स्वाहा कर अपने जीवन-काल के लिए ढूँढ़ लेता है। विलासी के सामने अपना जीवन होता है, उसे मजा चाहिए अपने लिए, औरों से उसे कोई नाता नहीं। नाता उतने ही तक उसे होता है जितने तक वह औरों को विलासिता का उपादान बना सके। किन्तु प्रसाद ने जब कभी किसी पर कोई आपदा देखी अपने पर या अपने मित्रों पर तो सबके लिये चिन्तित हुए। भला ही किया लोगों का। यदि वह विलासी होते तो ऐसा कभी न करते, वह आनन्द लेते।

तीसरी बात उनके सम्बन्ध में यह कही जाती है कि वे महान् कूटनीतिज्ञ थे। उनकी कूटनीति इतनी सूक्ष्म हुआ करती थी कि लोगों को उसका पता तक नहीं हुआ करता था। कूटनीतिज्ञ होना और ऐसी परिस्थिति में कूटनीतिज्ञ होना, जब चतुर्दिक संघर्ष मचा हो, पौरुष की निशानी है यह चरित्र की बुराई नहीं। अपने देश में कूटनीति की साधना बड़ी प्राचीन है। राम, कृष्ण, और बुद्ध तक से उसका संबंध जुड़ा हुआ है। और दुश्चक्र युक्त राजनीतिक युग में कूटनीतिक सफलता सबसे बड़ी सफलता है। यदि प्रसाद जी कूटनीतिज्ञ थे तो कोई बुरी बात नहीं थी। उनका गुण ही था।

मेरे कहने का यह तात्पर्य नहीं कि संसार के सारे गुण प्रसाद जी में आ गए थे। यदि ऐसा होता तो वे पूर्णावतार न हो जाते। किन्तु वे मनुष्य थे। प्रसाद जी की अपनी कमजोरियाँ थीं, किन्तु उन कमजोरियों पर एक तपस्वी व्यक्ति की भाँति, एक साधक की भाँति उन्होंने सदैव ही विजय पाने का प्रयत्न किया। प्रारम्भ से अन्त तक जीवन भर उन्होंने संघर्ष किया। आन्तरिक संघर्ष समर के संघर्ष से अधिक भयंकर होता है। उस भयंकर संघर्ष में वे उद्विग्न हुए हैं, कभी-कभी कराह से पथ का उद्देश्य भी भूल गए हैं किन्तु मैदान से कभी हटे नहीं। दुःखों की नश्वरता जब

सचेत हो उनके भीतर जगी तो पुनः वे जागे और उन्होंने अपना रास्ता स्वयं बनाया, यह उनके व्यक्तिगत चरित्र की विशेषता थी।

वह साहित्य को जीवन की साधना माननेवाले व्यक्ति थे। उन्होंने साहित्य की रचना को कभी भी आर्थिक आय का साधन नहीं बनाया। किसी पत्र-पत्रिका से एक पैसा भी उन्होंने नहीं लिया। काशी नागरी प्रचारिणी सभा तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी से मिले पुरस्कारों को उन्होंने सभा को दे दिया। उनकी पुस्तकों के प्रकाशक भारती भंडार हैं। उसके मैनेजर पं० वाचस्पति त्रिपाठी ने अखिल भारतीय आकाशवाणी से उनके सम्बन्ध में अपनी वार्ता में कहा कि:—

"प्रसाद जी के लिखने में स्वान्तःसुखाय मूलमंत्र था। वे अपने साहित्य को अपने बुरे से बुरे समय में भी अर्थ प्राप्ति का साधन नहीं बनाना चाहते थे। फिर भी कभी कभी अपने ही साहित्य-देव की कृपा से अर्थ खिंचा चला आता था। ऐसे आए हुए अनाहूत अतिथि को किसी दूसरे को सौंपकर ही उन्हें चैन मिलता था। उन्होंने अपने अनेक पुस्तक के प्रकाशकों से कोई रायल्टी नहीं ली। अपने जीवन-काल में मिली रायल्टी की रकम भी उन्होंने अपने निजी काम में खर्च नहीं की। उन्होंने अपने प्रकाशक को आज्ञा दे रखी थी कि उनकी कोई पुस्तक किसी पुरस्कार प्रतियोगिता में न भेजी जाय। इसीके परिणाम स्वरूप हिन्दी साहित्य सम्मेलन को यह नियम बनाना पड़ा कि 'कामायनी' खरीद कर ही प्रतियोगिता में भेजी जाय। खड़ी बोली का वह सर्वप्रथम काव्य था जिस पर मंगला प्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ।"

जिस समय वह काशी में साहित्य सर्जन के लिये उद्यत हुए और अपना प्रयोग आरम्भ किया तथा उनके जीवन भर काशी में ऐसे साहित्यकार वर्तमान थे जिन्होंने अपनी कृतियों द्वारा साहित्य के इतिहास में नई चेतना जगाने का कार्य किया है। उनके बीच में रहकर वह उनसे प्रभावित न हुए यह उनके महान् व्यक्तित्व का परिचायक है। कहना न होगा कि उस समय काशी में सभी साहित्यकार मौलिक व्यक्तित्व वाले थे। बाबू श्यामसुन्दर दास हिन्दी को उच्च-स्तर पर ले जाने के लिये साहित्य और साहित्यकारों का निर्माण कर रहे थे किन्तु उनका क्षेत्र आलोचना मात्र था। हरिऔध जी भी थे, कवि, आलोचक, लेखक उपन्यासकार। पर विशेष रूप से उनकी प्रतिष्ठा कवि के रूप में ही थी। उनकी कविता उपदेशात्मक नक्काशबाजी वाली थी, यद्यपि थी अच्छी। रत्नाकर ब्रज भाषा के समर्थ महान् कवि थे पर युग उन्हें पीछे छोड़ चुका था। प्रेमचन्द जन-जीवन के कलाकार की भाँति, जिसमें सबल प्रचारक का स्वर कमजोर नहीं था, हिन्दी के कथा साहित्य का निर्माण कर रहे थे। गोस्वामी किशोरीलाल रसमय होकर मन को मोहने-वाली कथायें गढ़ रहे थे। जासूसी और ऐयारी कथाओं के स्रष्टा गण भी विद्यमान थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल शास्त्रीय समीक्षा दे रहे थे। राय कृष्णदास कहानियाँ और गद्गीत लिख रहे थे। उग्र की चतुर्मुखी प्रतिभा लोगों को आकर्षित कर रही थी। पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र कविता लिख रहे थे और नाटकों की रचना कर रहे हैं। पंडित शांतिप्रिय कविता और आलोचना लिख रहे थे। श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़, अन्नपूर्णानन्द जी आदि लोगों को हँसा रहे थे। पं० विनोदशंकर व्यास छोटी-छोटी कहानियाँ लिख रहे थे। ऐसी स्थिति में काशी में उनके जीवन-काल में सभी प्रतिभाएँ, जो चमक रही थीं, अपनी विचित्रता लिए हुए थी तथा उनमें से कुछ की ऊँचाई तो आज भी अपने स्थान पर सबसे ऊँची है। ऐसी परिस्थिति में सभी क्षेत्रों में उन्होंने प्रायः अपनी देन दी, जो अपने स्थान पर आज भी प्रतिष्ठित तथा अपूर्व है।

कथा के क्षेत्र में वे हिन्दी के द्वितीय उत्थान के प्रथम कहानीकार ठहरते हैं। गद्य में लिखित उनकी कृतियों में स्थल-स्थल पर जो काव्यमय झंकार हैं वह किसी के गद्य-गीतों में नहीं मिलता। कविता के क्षेत्र में वे हरिऔध के बहुत आगे हैं। ऊँचाई, व्यापकता सभी दृष्टियों से। जहाँ तक निबन्धों का प्रश्न है, शुक्ल जी के निबन्ध हिन्दी में सर्वाधिक गौरवशाली हैं, किन्तु प्रसाद जी के जो निबन्ध प्रकाशित हुए उनका भी अपना मौलिक गौरव है। वे उनके काव्य की अच्छी भूमिका कहे जा सकते हैं। खोज सम्बन्धी उनके निबन्ध भी परम उत्कृष्ट हैं। उनकी व्याख्या-प्रणाली साहित्यिक एवं शास्त्रीय दोनों के सम्मेलन से साकार हुई है। उपन्यास के क्षेत्र में वे प्रथम यथार्थवादी उपन्यासकार हैं। कंकाल उसका जीवित प्रमाण है। नाटक के क्षेत्र में उनका

गौरव सर्वाधिक दीप्त है। इस प्रकार उन्होंने अपने वातावरण से लिया और दिया भी।

वे भारतेन्दु की काव्य-धारा से परिचित थे। द्विवेदी जी के काव्य सिद्धान्तों के प्रयोगों को देखा था। दोनों की अच्छाइयों और बुराइयों की परख उन्होंने की थी। केवल वे केशर-कस्तूरी के पारखी नहीं थे, हृदय और मन के भी पारखी तथा जीवन और जगत के द्रष्टा भी। वे भारत की मूल सांस्कृतिक भाव धारा से अवगत थे। उन संस्कारों को अपने व्यक्तित्व के द्वारा उन्होंने नये युग के अनुरूप रचा जो अत्यन्त गौरवशाली है। वे खड़ीबोली के सर्वाधिक प्राणवान कवि हैं। उनकी रचनाओं का कालक्रम निम्नलिखित है :—

प्रसाद की रचनाएँ कालक्रमानुसार

१—शोकोच्छ्वास—सन् १९१०।
२—चित्राधार —,, १९२४ तथा १९२८।
३—कानन कुसुम —,, १९१३ तथा १९२९।
४—प्रेम पथिक —,, १९१४।
५—झरना —,, १९१८ तथा १९२७।
६—आँसू—साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी से सन् १९२५ में प्रथम-संस्करण। सन् १९३३ में भारतीय भंडार प्रयाग से संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय-संस्करण।
७—करुणालय—सन् १९२८, भारती-भंडार।
८—महाराणा का महत्व—सन् १९२८, भारती-भण्डार।
९—लहर—सन् १९३५, भारती-भंडार।
१०—कामायनी—सन् १९३५, भारती-भंडार।
११—प्रसाद-संगीत—सन् १९५७।

'इन्दु' में प्रकाशित 'प्रसाद' की कविताओं का काल-क्रम

कला १

किरण १। श्रावण ६६ वि०	१. शारदाष्टक	कविता	
किरण २। भाद्रपद ६६ ,,	१. प्रेम-पथिक	व्रज-भाषा में	
किरण ३। आश्विन ६६ ,,	१. शारदीय शोभा	कविता	चित्राधार
	२. मानस	,,	,,
किरण ४। कार्तिक ६६ ,,	१. प्रेम राज्य, पूर्वार्द्ध	,,	,,
किरण ५। अगहन ६६ ,,	१. कल्पना सुख	,,	,,
किरण ६। पौष ६६ ,,	१. वनवासिनी बाला	,,	,,
किरण ८। फाल्गुन ६६ ,,	१. रसाल-मंजरी	कविता	,,
किरण १०। वैशाख ६७ ,,	१. अयोध्योद्धार	कविता	,,
किरण ११। ज्येष्ठ ६७ ,,	१. भारत	कविता	,,
	२. समाधि-सुमन	,,	,,
किरण १२। आषाढ़ ६७ ,,	१. स्मृति	,,	,,
	२. रूमाल	,,	,,

कला २

किरण १। श्रावण ६७ ,,	१. प्रार्थना	,,	,,
	२. सन्ध्या-तारा	,,	,,
	३. वर्षा में नदी कूल	,,	,,
किरण २। भाद्रपद ६७ ,,	१. पावस	,,	,,
	२. इन्द्र धनुष	,,	,,
	३. चित्र	,,	कानन कुसुम
	४. नीरद	,,	चित्राधार

किरण ३। आश्विन ६७	वि०	१. विभो	कविता	चित्राधार
		१. अष्टमूर्ति	,,	,,
किरण ४। कार्तिक ६७	,,	१. शारदीय महापूजन	,,	,,
		२. विनय	,,	,,
		३. प्रभातिक कुसुम	,,	,,
		४. शरत् पूर्णिमा	,,	,,
		५. लता	,,	,,
		६. विस्मृत प्रेम	,,	,,
किरण ५। अगहन ६७	,,	१. जल विहारिणी	,,	कानन कुसुम
७। माघ ६७	,,	१. नीरव प्रेम	,,	चित्राधार
८—११ संयुक्तांक फाल्गुन ६७	,,			
ज्येष्ठ ६८	,,	१. होली का गुलाल	,,	,,
		२. विसर्जन	,,	,,
		३. चन्द्रोदय	,,	,,

कला ३ सन् १९१२।

किरण १ आश्विनशुक्ल ६८	,,	१. प्रभो	,,	कानन कुसुम
		२. रजनीगंधा	,,	,,
		३. देव-मंदिर	,,	,,
		४. भारतेन्दु-प्रकाश	,,	चित्राधार
किरण २ कार्तिक ६८	,,	१. एकान्त में	,,	कानन कुसुम
		२. ठहरो	,,	,,
		३. बाल-क्रीड़ा	,,	,,
किरण ३। फरवरी	ई०	१. राजराजेश्वरी	,,	,,
		२. नव-वसंत	,,	कानन कुसुम
		३. वसंत-विनोद	,,	चित्राधार
		क. वसंत	कवित्त	
		ख. चन्द्र	,,	
		ग. कोकिल	,,	
		घ. चातक	,,	
		ङ. सिरिस सुमन	,,	
		च. तरुवर	,,	
		छ. भ्रमर	,,	
		ज. आवाहन	कवित्त	
		झ. सुनो	,,	
		ञ. कहो	,,	
किरण ४। मार्च	,,	१. सरोज	,,	कानन कुसुम
		२. महाक्रीड़ा	,,	कानन कुसुम

	४. करुणाकुञ्ज	,,	कानन कुसुम
	५. सौन्दर्य	,,	कानन कुसुम
किरण ५। अप्रैल	१. कोकिल	,,	कानन कुसुम
कला ३। सन् १९१२।			
किरण १०। सितम्बर	१. मर्म-कथा	कविता	कानन कुसुम
किरण ११। अक्टूबर	१. विनोद बिन्दु	,,	चित्राधार
	क. कमला कमल पर	,,	
	ख. करत सनमान को	,,	
	ग. बताओ कौन जोर है	,,	
	घ. जीवन नैया	सवैया	
किरण १२। नवम्बर	१. हृदय वेदना	कविता	कानन कुसुम
कला ४। सन् १९१३।			
किरण १। जनवरी	१. सत्यव्रत (चित्रकूट)	,,	कानन कुसुम
	२. भारत प्रथम अतुकान्त अरिल	,,	
किरण २। फरवरी	१. करुणालय	गीति-नाट्य	
किरण ३। मार्च्च	१. वसंतोत्सव	चित्राधार	
	क. मिलि रहे माते मधुकर		
	ख. भले अनुराग में रंगे हो		
किरण ४। अप्रैल	१. करुण-क्रन्दन	कविता	कानन कुसुम
	२. भक्ति योग	,,	,,
	३. निशीथ नदी	,,	,,
किरण ५। मई	१. दलित कुमुदनी	,,	,,
	२. प्रथम प्रभात	,,	,,
	३. भूल गजल	,,	
किरण ६। जून	१. विनोद बिन्दु		चित्राधार
	१. चूक हमारी	सवैया	
	२. प्रेमोपालम्भ अहो नित प्रेम करत दिन गयो		
	३. उत्तर दियो भक्त उत्तर हूवै को मौन		
	१. नमस्कार		कानन कुसुम
कला ४। सन् १९१३।			
किरण १। जुलाई			
	विदाई		चित्राधार
किरण २। अगस्त	१. नमस्कार		कानन कुसुम
	२. श्री कृष्ण जयन्ती		
किरण ३। सितम्बर	१. देहु चरण में प्रीति "चित्राधार"		
कला ५। सन् १९१४।			
खण्ड १। जनवरी	१. पतित-पावन		कानन कुसुम
	२. रमणी हृदय		,,
	३. खोलो द्वार		झरना

किरण २ । फरवरी	क. याचना	कानन कुसुम
	ख. खंजन	,,
	ग. विनोद-बिन्दु	,,
	१. हृदय में छिप रहे इस डर से—झरना	
	२. आया देखो विमल बसंत—झरना	
	३. अमा को करिये सुन्दर राका—झरना	
	४. मिले शीघ्र इन चरणों की धूल—झरना	
किरण ३ । मार्च	१. हा सारथे रथ रोक दो—कानन कुसुम	
	२. मकरन्द बिन्दु	चित्राधार
	क. और जब कहिहै तब कहिहै	
	ख. नाथ नहिं फीकी परै गुहार	
	ग. मधुप ज्यों कंज दिख मड़रावै	
	घ. मेरे प्रेम को प्रतिकार	
किरण ४ । अप्रैल	१. गंगा सागर	कानन कुसुम
	२. विरह	,,
	१. मोहन	,,
किरण ५ । मई	१. मिलन है पलक पर दे	,,
	२. मकरंद बिन्दु	चित्राधार
	क. तुम्हारी सबहि निराली बात	
	ख. प्रिय स्मृति कंज में लवलीन	
	ग. पाइ आँच सुख की	
	घ. आसुन अन्हात	
किरण ६ । जून		
	१. महाराणा का महत्व	
कला ५ । सन् १९१४ ।		
किरण २ । अगस्त	१. शिथिल	झरना
किरण ३ । सितम्बर	१. प्रियतम	झरना
	२. मकरन्द-बिन्दु	
	क. आज इस घन की अंधियारी में	झरना
	ख. हृदय नहिं मेरा शून्य रहे	कानन कुसुम
	ग. आज तो नीके नेह निहारो—	चित्राधार
	घ. यह सब तो समुझयो पहिले ही	,,
	ङ. भूलि भूलि जात	,,
किरण ४ । अक्टूबर	१. मेरी कचाई	
	२. तेरा प्रेम—तेरा प्रम हलाहल प्यारे;	झरना
किरण ५ । नवम्बर	१. प्रेम पथ	प्रेम पथिक से :
किरण ६ । दिसम्बर	१. चमेली ,,	,,
कला ६। सन् १९१५ ।		
किरण १ । जनवरी	१. तुम्हारा स्मरण	कानन कुसुम

		२. हमारा हृदय	
किरण २ । फरवरी		१. अर्चना	झरना
		२. प्रत्याशा	,,
किरण ३ । मार्च		१. स्वभाव	,,
किरण ४ । अप्रैल		१. विनय	,,
		२. मधुकर बीत चली अब रात	उर्वशी
किरण ५ । मई		१. बसन्त राका	झरना
कला ६ । सन् १९१५ ।			
किरण २ । अगस्त		१. दर्शन	झरना
किरण ३ । सितम्बर		१. सुखभरी नींद [स्वप्नलोक]	झरना
किरण ४, ५ । अक्टूबर	संयुक्तांक	१. मिल जाओ गले	कानन कुसुम
कला ८ । सन् १९२७ ।			
किरण १ । जनवरी		१. अनुनय [सुधा सीकर से नहला दो] (चन्द्रगुप्त)	
किरण २ । फरवरी		१. तेरा रूप (भरा नैनों में, मन में, रूप)	स्कन्दगुप्त
किरण ३ । मार्च		१. जाने दो (धूप छाँह के लेख सदृश)	स्कन्दगुप्त

'जागरण' में प्रकाशित रचनाओं का कालक्रम

वर्ष १, खंड १, माघ, सं० १९८८, वसंतपंचमी ११ फरवरी १९३२	१. ले चल वहाँ भुलावा देकर : लहर :
	२. अरी वरुणा की शांत कछार : लहर :
२२ फरवरी, ३२	१. हे सागर संगम अरुण नील : लहर :
२२ मार्च, ३२	२. ज्वाला । जब नील निशा अंचल में नक्षत्र डूब जाते हैं : आँसू :
१८ जून, ३२	१. मेरी आँखों की पुतली में : लहर :
१७ जुलाई, ३२	१. वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे : लहर :

'माधुरी' में प्रकाशित रचनाओं का कालक्रम

वर्ष १, खंड १, सन् १९२२ सं० ३,		१. दीप : धूसर संध्या चली आ रही थी : झरना :
वर्ष २, खंड १, सन् १९२३-२४, सं० १,		१. कब : शून्य हृदय में प्रेम जलधि माला कब फिर घिर आवेगी : झरना :
,, ,, ,,	सं० ५,	१. अव्यवस्थित : विश्व के नीरव निर्जन में : झरना :
वर्ष २, खंड २, सन् १९२४	सं० २,	१. असंतोष : हरित वन कुसमित हैं द्रुम वृन्द : : झरना :
,, ,, ,,	सं० ३	१. वसंत । तू आता है, फिर जाता है : झरना :
,, ,, ,,	सं० ४	१. तुम : जीवन जगत के विकास विश्व वेद के हो : झरना :
,, ,, ,,	सं० ५	१. बालू की बेला : आँख बचाकर न किरकिरा कर दो : झरना :
		२. कुछ नहीं : हँसी आती है मुझको तभी : झरना :

,, ,, ,,	सं० ६	१. हृदय का सौंदर्य : नदी की विस्तृत बेला शांत : झरना :
वर्ष ३ खंड १, १९२४-२५,	सं० १	१. दो बूंदें : शरद का सुन्दर नीलकाकाश : झरना :
,, ,, ,,	सं० २	१. खोज और समस्या : शून्य गगन में खोजता जैसे चन्द्र निराश : स्कन्दगुप्त :
वर्ष ३, खंड २, १९२५,	सं० १	१. विषाद : कौन प्रकृति के करुण काव्य सा : झरना :
वर्ष ४, खंड १, १९२५-२६	सं० १	१. मेघों के प्रति : क्या अलका की विकल विरहणी : : अजातशत्रु :
वर्ष ४, खंड २, १९२६	सं० १	१. अपरिचित : निर्जन गोधूलि प्रान्तर में खोले पर्ण कुटी के द्वार ! अजातशत्रु :
,, ,, ,,	सं० ४	१. पतझड़ समीर : चल वसंत वाला अंचल से किस घातक सौरभ में मस्त : अजातशत्रु :
,, ,, ,,	सं० ६	१. भीड़ मत खिंचे वीणा के तार : अजातशत्रु :
वर्ष ५, खंड १, १९२६-२७	सं० १	१. आह : निकल मत बाहर दुर्बल आह : चन्द्रगुप्त :
,, ,, ,,	सं० ३	१. पूर्ति पीयूष प्रेम की प्रतीति उर उपजी सुखाई सुख : चित्राधार :
वर्ष ५, खंड २, १९२७	सं० ३	१. अतीत का गीत : सघन बन बल्लरियों के नीचे : : कामना :
वर्ष ६, खंड २, १९२७-२८	सं० १	१. बिदाई : आह वेदना मिली बिदाई : स्कन्दगुप्त :
वर्ष ७, खंड १, १९२८-२९	सं० १	१. इन्द्रजाल : और देखा वह सुन्दर दृश्य, नयन का इन्द्रजाल अभिराम : कामायनी :
वर्ष ८, खंड १, १९२९-३०	सं० १	१. कौन : कौन हो तुम खींचकर यों मुझे अपनी ओर : : कामायनी :

'हंस' में प्रकाशित रचनाओं का कालक्रम

मई,	१९३०	१. मानवता का विकास : डरो मत ओ अमृत-संतान : : कामायनी :
जनवरी	१९३१	१. प्रलय की छाया : लहर :
अप्रैल	१९३१	१. आह रे वह अधीर यौवन : लहर :
	१९३२ 'आत्मकथांक'	१. मधप गुनगुना कर कह जाता : लहर :
मार्च	१९३३	१. वसुधा के अंचल पर यह क्या, कन-कन सा गया बिखर : लहर :

'प्रेमा' में प्रकाशित रचनाओं का कालक्रम

जनवरी १९३१	१. जीवन संगीत : क्या कहूँ, क्या कहूँ मैं भ्रम पुंज : कामायनी

'मनोरमा' में प्रकाशित रचनाओं का कालक्रम

खंड २, १९२७, भाग २, सं० ५	१. उलझन : अगरु धूम की श्याम लहरियाँ : स्कन्दगुप्त

अक्तूबर १९२६		१. तारिका के प्रति : बिखरी किरण अलख व्याकुल हो :
१९२७	सं० १	१. संबोधन : उमड़ कर चली भिगोने आज : स्कन्दगुप्त

'जागरण' (प्रेमचन्द जी द्वारा संपादित)

वर्ष १, २२ अगस्त, १९३२	१. नग की सजल कालिमा रजनी में : लहर
१९ अक्तूबर १९३३	१. शिखर पर : पैरों के नीचे जलधर हो, बिजली से उनका खेल चले : ध्रुवस्वामिनी :

'सुधा' में प्रकाशित रचनाओं का कालक्रम

वर्ष १, खंड १, सितम्बर १९२१ संख्या १, पूर्ण संख्या २	१. अनुशोध-संस्कृति के वे सुन्दरतम क्षण यों ही भूल नहीं जाना : स्कन्दगुप्त
वर्ष २, खंड १, अक्टूबर १९२८ संख्या ३ पूर्णसंख्या १५	१. मनु की चिन्ता-हिमागिरि के उत्तुग शिखर पर : कामयानी

'गंगा' में प्रकाशित रचना का कालक्रम

मार्ग शीर्ष, सं० १९८७ वि०, नवम्बर १९३०	१. गंगा ऋद्धि सिद्ध तू अचल हिमालय से ले आयी (संग्रहों में अप्रकाशित)

संकेत

[अं०] = अंगेजी
[अ०] = अरबी
[अ०] = अव्यय
[अव्य०] = अव्यय
[अप०] = अपभ्रंश
[क्रि०] = क्रिया ।
[क्रि० अ०] = अकर्मक क्रिया ।
[क्रि० स०] = सकर्मक क्रिया ।
[क्रि० वि०] = क्रिया विशेषण ।
[दे०] = देशज
[दे०] = देखिए ।
[पुं०] = पुलिंग ।
[पूर्व०] = पूर्वकालिक क्रिया ।
[फा०] = फारसी ।
[बहु०] = बहुवचन ।
[वि०] = विशेषण ।
[व्र० भा०] = व्रजभाषा ।
[सं०] = संस्कृत ।
[सं०] = संज्ञा ।
[सर्व०] = सर्वनाम ।
[स्त्री०] = स्त्री लिंग ।

अं

अंक = का०, १८, १७६, २८६। चि०, १६२, १८०, १८२।
[सं० पु०] (सं.) आँक, चिह्न, छाप, निशान। लिखावट, लेख, अक्षर। संख्या-सूचक चिह्न। गोद, क्रोड़, अँकवार। दुःख, पाप। बार, दफा। धब्बा, दाग। डिठौना, नजर बचाने के लिए बच्चों के माथे पर लगाया जानेवाला काजल का टीका। भाग्य, तकदीर, किस्मत। नाटक का एक अंश जिसमें सामान्यतः अनेक दृश्य होते हैं। पत्र-पत्रिकाओं की कोई एक संख्या। रूपक का एक प्रकार।

अङ्क-मँह = चि०, ७२।
(ब्र. भा.) अंक में (दे० 'अंक')।

अङ्कमों = चि०, ७३।
(ब्र. भा.) अंक में (दे० 'अंक')।

अंकित = आँ०, २२, ३२। का० कु०, १२०।
[वि०] का०, ३४, ११७, १८०। ल०, २८।
(स.) चिह्नित। चित्रित। वर्णित। निशान बना हुआ, अङ्क बना हुआ।

अंकुर = का० कु०, २७। का०, ७३, २१०।
[सं० पु०] भ०, ५६। ल०, ४०।
(सं.) अंखुआ, गाभ, नया उगा हुआ तृण, वह नवीन कोमल डंठल जो बीज से प्रथम निकलता है और जिससे पत्तियाँ फूटती हैं। आँख। कोंपल। भराव। अंगूर। किसी घाव के दानेदार कण। जल। नोक। कलिका।

अंकुरित = का०, १८२।
[वि०] अंखुआ निकला हुआ। अंकुर रूप में
(हि.) दिखाई पड़ने वाला। उत्पन्न। विकसनशील वस्तु का आरंभिक रूप।

अंग = का० कु०, १२, ६५। का०, ८३, ६८, १६२, २४७। चि०, २, ३८, ४७, ६३, १५६, १७७। भ०, ५२, ३२। प्रे०, १, ११। ल०, ६२।
[सं० पु०] (सं.) शरीर, बदन, तन, गात, देह। पक्ष। भाग, अंश, टुकड़ा, खंड। भेद, प्रकार। कार्य सम्पादित करने का साधन, उपाय। पार्श्व। जन्म-लग्न। सहायता पहुँचाने वाला। सुहृद, तरफदार। प्रकृति। उपाय।

अंग-अंग = चि०, ५६, ६६।
[सं० पु०] (सं.) प्रत्येक अंग।

अंग-अंगन = चि०, १, ५६।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) अंग अंग में।

अंगड़ाई = का०, २३। ल०, ४५।
[सं० स्त्री०] शरीर का मद से टूटना। सोकर उठने
(हि.) पर, आलस्य के समय अथवा ज्वर की स्थिति होने पर शरीर का कुछ क्षणों के लिए ऐंठकर तनना। जमुहाई।

अंगड़ाइयां = ल०, ६२।
[सं० स्त्री०] अंगड़ाई का बहुवचन।

अंगभंगियों = का०, ११।
[सं० स्त्री०] हाव-भाव प्रदर्शन। स्त्रियों द्वारा अंग-
(हि.) प्रत्यंग द्वारा आकर्षित करने के आयोजन का संकेत। स्त्रियों को मोहित करने की अंग द्वारा की गयी क्रिया। अंग-भंगी का बहुवचन।

अंगराई = का०, २६३। ल०, २०।
(ब्र. भा.) (दे० 'अंगड़ाई'।)

अंगराई-सी = ल०, ९।
[वि०] (ब्र. भा.) अंगड़ाई के समान।

अंगलतिका = ल०, ६०।
[सं० स्त्री०] शरीर की बेल या लता।

अंगहि = चि०, १४।
(ब्र. भा.) अंग को।

अंगुलियाँ = ल०, ८६।
[सं० स्त्री०] (हि.) उँगली का बहुवचन।

अंचल = आं०, १६, २३, ३२, ३३, ५६, ६६।
[सं० पु०] का० कु०, १८। का०, ८, २६, ४०, ६३,

(सं.) ७३, ७५, ६७, ६८, १०६, ११६, १३१, १५८, १६८, १७२। चि०, ६२ भ०, २८ ३८, ३५,। ल०, १०, १६, २०, ३०, ३२, ६१।
आंचल, छोर, किनारा। साड़ी, धोती अथवा चादर के कोने का एक भाग। तट। देश या राज्य की सीमा का कोई प्रदेश।

अंजन का०, ११६।
[सं० पु०] (सं.) आंजन, सुरमा, काजल। रात्रि। स्याही, मसि। एक पर्वत। एक वृक्ष। अलंकार की एक वृत्ति। माया।

अंजन-सी = का०, १०३।
[वि०] अंजन के समान काली।

अंजलि = आँ० ४५, ५८। का०, १२३, २८५। ल०, ३२।
[सं० स्त्री०] (सं.) दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ वह गड्ढा, जिसमें भर कर कुछ दिया अथवा लिया जाता है।

अंत = आं०, ५२। का०, कु०, २६। का०, १६, ८१। चि०, १४१, १६६। ल०, ७०, ७७।
[सं० पु०] (सं.) आखिरी। समाप्ति। मृत्यु, अवसान। नाश। परिणाम। प्रलय।

अन्तक = ल०, ७६।
[वि०] (सं.) अन्त या नाश करने वाला।

अन्तकाल = प्रे०, ५
[सं० पु०] (सं.) अन्तिम समय, आखिरी वक्त, मृत्युकाल।

अंतरंग = का०, १२१, १६२। प्रे०, १०।
[वि० सं०] सं.) आत्मीय। अत्यन्त सन्निकट का व्यक्ति।

अंतर = आं०, १५, ३४, ५१। का० कु०, २०, ७७। का०, ७२, ७५, ८१, ६८, १०१, १०५, १०६, १५४। चि०, १७४, १७६, १८६। भ०, ४४, ६८, ६५१, प्रे० २०।
[सं० पु०] (सं.) भेद, फर्क, भिन्नता। दो वस्तुओं के मध्य की दूरी, फासला। मध्यवर्ती समय। आड़, परदा। कपट। हृदय, मन।

अंतरतम = का०, ६, ११०, १२१। भ०। ३१।
[सं० पु०] (सं.) अन्तःकरण। किसी वस्तु के सबसे भीतर का भाग। हृदय का आन्तरिक स्थल।

अंतरिक्ष = आं०, ४६। का०, ११, १३, २६, ३५, ६३, ६५, ७३, १७८, १८५, २०२, २५२, २६३। भ०, ४१, ४५, ६०। ल०, ५७।
[सं० पु०] (सं.) आकाश। स्वर्ग। गुप्त, अप्रकट। पृथ्वी और सूर्यादि लोकों के मध्य का भाग। पृथ्वी और आकाश जहाँ मिले हुए प्रतीत होते हैं। तीन वेतुओं में एक। क्षितिज।

अन्तरिच्छ = चि०, १८०।
(ब्र. भा) (देखिये 'अंतरिक्ष'।)

अन्तर्दाह = का०, ११६, १२१।
[सं० पु०] (सं.) अन्तर्वेदना।

अंतर्निहित = का० कु०, ७१। का०, २३। ल०, ७४।
[वि०] (सं.) अन्दर छिपा हुआ।

अन्तर्यामी = का०, १६७।
[वि०] (सं.) ईश्वर, भगवान। दूसरे के मन की बातों को समझने वाला।

अंतस्तल = आँ० ४७। का०, १३६, १६७।
[सं० पु०] (सं.) मन अथवा हृदय का भीतरी भाग अन्तर्हृदय।

अन्तर्हीन = का०, १६७।
[वि०] (सं.) जिसका अन्त न हो, अनन्त।

अंतःसलिला = का०, ६७।
[सं० स्त्री०] अन्तःस्रोत, गुप्त गंगा, भाव-धारा।

अंतिम = का० कु०, १२२। का०, ८२, ८८। ल०, ५१।
[वि०] (सं.) हर प्रकार का। सबसे बढ़कर। अन्त का। आखिरी।

अन्तःकरण = का० कु०, १५। भ०, १६, ३१।

[सं० पु०] (सं) मनुष्य के अन्दर की वह शक्ति जिससे वह संकल्प-विकल्प, अच्छे-बुरे की पहचान, निश्चय, स्मरण आदि करता है। हृदय, मन।

अन्तःपुर = का०, कु०, ६७ . क०, ३०।
[सं० पु०] (सं.) घर या महल का भीतरी भाग .

अंध = का०, ८८, १६६। भ०, ५१, ७७।
[वि०] (सं.) ल०, ५७, ७६। चि०, १६६। अंधा, नेत्रों की ज्योति जिसकी चली गयी हो, नेत्र-हीन, बिना आंख का। अज्ञानी, नासमझ, अविवेकी, मूर्ख। उन्मत्त, मतवाला, अचेत, अनजान। उल्लू, चमगादड़। अंधेरा। आँखें बन्द कर परिपाटी से चले आने वाले कार्य को करने वाला। रुढ़िग्रस्त।

अंधकार = आं० ७३। का०कु०, ४१, १२३। १२५।
[सं० पु०] का०, १४, १९, ७०, ११२, १२६, १३०,
(सं.) १५९, १७२, १८४, २०६, २२१, २५१, २६७, २७१। चि०, २२, ४०, ११४। भ०, ३५। ल० १०, २५, ३५, ३७, ४१, ४३, ५७, ७४। तिमिर, अंधेरा, प्रकाश-हीन। अज्ञान।

अंधकारमय = का०, ७। प्रे० २०।
[वि०] अन्धकार से परिपूर्ण, अंधेरा। अज्ञानमय।

अंधकार-सा = का०, २६६।
[वि०] (हि.) अंधकार के समान, तिमिराच्छन्न।

अन्धकारि = चि० १६४।
(ब्र. भा.) दे० अंधकार।

अंधड़ = का०, २००। भ०, ५५। ल०, ५७।
[सं० पु०] आंधी, धूल सनी भयंकर हवा का
(हि.) झोंका, तूफान। झंझा। दैवी दुर्योग या नियति से आया कष्टप्रद समय।

अंधतमस = का०, २२७।
[सं० पु०] घोर अंधकार, भयंकर अंधेरा, घोर अंधकार से आच्छादित नर्क।
(सं.)

अन्धानुरक्त = प्रे०, २४।
[वि०] आंख मूंदकर पीछे चलने वाला। अंधभक्त। अन्धश्रद्धालु।

अन्धानुरक्ति = का०, २३७।
[सं० स्त्री०] अंधी श्रद्धा। विवेकरहित भक्ति।

अंधियारी = चि०, १६४। भ०, ६२। प्रे०, १, ५।
[सं० स्त्री०] अन्धकार, अंधेरा, धुंधलापन, धुंध। एक
(हि.) प्रकार की आखों पर बांधी जाने वाली पट्टी जो घोड़ों और भयंकर जन्तुओं के नेत्रों को ढाँकने के काम में लायी जाती है।

अन्धेर = क०, २६।
[सं० पु०] अन्याय, अत्याचार। ऐसा कार्य जिसमें
(हि.) कर्तव्या-कर्तव्य का विचार न किया गया हो। दुर्व्यवस्था। कुप्रबन्ध। गड़बड़ी।

अंधेरा = का०, ११४। चि० १६।
[सं० पु०] तम, अंधकार, धुंध। प्रकाश का उलटा
(हि.) अथवा विलोम। परछाईं, काली छाया।

अंधेरी = आं०, १६, ४८।
(दे० 'अँधियारी'।)

अम्बर = आं०, २७, ३४। का० कु० ४३। का०
[सं० पु०] ६३, ७१, १६२, २५७, २६३। चि०,
(सं.) ३८, ७१ १४६, १५७, १५८, १६१, १८६। ल०, १४, १६, २७, ४२, ४४। आकाश। मेघ, बादल। अमृत। वस्त्र, कपड़ा।

अम्बरअवनिहि = चि०, ५३।
[सं०स्त्री०](ब्र. भा.) आकाश और पृथिवी को।

अम्बरचुम्बी = का०, ११०।
[वि०] आकाश-चूमने वाला। बहुत ऊँचा। गगनचुम्बी।

अम्बरतल = भ०, ३३।
[सं० पु०] बादल की सतह। आकाश की सतह।

अम्बर-पथ-आरूढ़=चि०, १५७।
[वि०] (ब्र.भा.) आकाशमार्ग में विचरण करता हुआ।

अम्बु = चि०, २८, १४०।
[सं० पु०] (सं.) जल। सुगंधवाला। चार की संख्या।

अम्बुधि = ल०, ३०।
[सं० पु०] (सं.) सागर, समुद्र।

अम्बुनिधि = का०, २८६।
[सं० पु०] सागर। समुद्र।

अम्बे = का०, २३६।
[सं० स्त्री०] (सं.) अम्बा का सम्बोधन। हे मां। हे दुर्गे। हे पार्वति। हे गौरी।

अंश = का०, कु०, १०८। का०, १६, १६५। चि० १६१। भ०, २४।
[सं० पु०] (सं.) किसी पूर्ण वस्तु का कोई भाग, टुकड़ा। उन अवयवों या अंशों में से कोई एक जिनसे किसी पदार्थ या वस्तु का निर्माण होता है। हिस्सा। भाज्य-अंक। पृथक। चन्द्रमा की कला। भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। वृत्त की परिधि का ३६० वाँ हिस्सा।

अंशुमाली = का०, कु०, २।
[सं०पु०] (सं) सूर्य, पद्माकर। बारह की संख्या।

अंस = का०, ४७।
[सं० पु०] (हि.) देखिए 'अंश'। कन्धा।

अ

अकड़े = का०, २६६।
[क्रि० पु०] (हि.) घमंड करना, ऐंठना, रोब दिखाना, हठ करना। ढिठाई करना, तनावा। अभिमान, शेखी या गर्वभाव का प्रदर्शन करना।

अकथ = का०, २२४।
[वि० सं०] (सं.) वर्णन करने से जो परे हो। जिसका वर्णन करना असाध्य हो। जो कहा न जा सके।

अकपट = प्रे०, १।
[सं०] (सं.) छल-रहित। प्रपंच रहित।

अकबर = म०, ११, १६, २०, २१, २३।
[सं० पु०] विख्यात भारतीय मुगल सम्राट, हुमायूँ का सुपुत्र।

अकरुण = ल०, ३४।
[वि०] (सं.) करुणारहित, निर्दय, कठोर, निष्ठुर।

अकस्मात = चि०, १७, २२।
[वि०] (सं.) दैवयोग से, आकस्मिक, अचानक, एकाएक, सहसा, एकदम से, तत्क्षण, अकारण।

अकारन = चि०, ४।
[क्रि० वि०] (ब्र. भा.) बिना किसी हेतु के, निष्प्रयोजन, कारण-रहित, व्यर्थ, यों ही। स्वयंभू। आप से आप होने वाला।

अकाल = क०, १८, २८।
[सं० पु०] (सं.) कुसमय, अनुपयुक्त समय। अनुकूल समय से पहले का या बाद का समय। दुर्भिक्ष, मंहगी। ऐसा समय जब अन्नादि की अत्यन्त कमी हो। दैवी प्रकोप।

अकाश = चि०, १६६।
(ब्र. भा.) (दे० 'आकाश'।)

अकास = चि०, ९३ १५९,।
(ब्र भा.) (दे० 'आकाश'।)

अकिञ्चन = आं०, १७। का० कु, ११३। का०, ४०, १३६, १७७, २४०। ल०, १७, ३४, ४५, ७०, ७८।
[वि० सं० पु०] (सं.) दरिद्र, गरीब, निर्धन, धनरहित, कंगाल, दीन, धनहीन। निर्धन व्यक्ति। सामान्य, बिलकुल मामूली। परिग्रह, त्यागी; आवश्यकता से अधिक संग्रह न करने वाला। जैन धर्मानुकूल मोह-माया से जिसे विराग उत्पन्न हो गया हो। निरीह।

अकुलाइ = चि०, ६४।
[क्रि.] (ब्र. भा) (दे० 'आकुल'।)

अकुलाई = चि०, ७१, ७३। ल०, १७।
(क्रि.) (ब्र. भा.) (दे० 'आकुल'।)

अकुलाय = चि०, ५६ ।
[क्रि.वि.] (ब्र.भा.) (दे० 'आकुल' ।)

अकूल = का०, ९२, १६२ । ल०, १५ ।
[वि०] असीम, अनन्त, जिसका कोई कूल,
(सं.) किनारा अथवा अन्त न हो ।

अकेला = का०, ५२, १३४, १६४, २०० ।
[वि० पु०] एकाकी, जिसका कोई सहायक न हो,
(हि०) जिसका कोई साथ देने वाला न हो ।

अकेली = आं०, ६० । का०, ४, १४४, २६० ।
[वि० स्त्री०] प्रे०, ५ ।
(वि०) अकेला का स्त्रीलिंग ।

अकेले = आं०, ७३ । का०, ३२, ३७, ५६, १३३,
[क्रि० वि०] १७६, २०८ । चि०, ६५ । भ०, ५२ ।
(हि.) केवल, सिर्फ । एकाकी, तनहा ।

अकेल्यो = चि०, १०७ ।
(ब्र. भा.) (दे० 'अकेला' ।)

अक्षय = का०, ३६, ६६ । प्रे०, २५ ।
[वि०] (सं.) अनश्वर । अविनाशी । नित्य ।

अक्षयवट = प्रे०, २२ ।
[सं० पु०] प्रयाग तथा गया का प्रसिद्ध बरगद का
(सं.) वृक्ष (किंवदन्ती है कि इसका नाश कभी नहीं होता ।)

अक्षर = प्रे०, २० ।
[वि०] (सं.) नाशरहित । नित्य ।

अक्षोहिणी = चि०, ६७ ।
[सं० स्त्री०] संपूर्ण चतुरंगिणी सेना । वह सेना
(सं.) जिसमें १०९३५० पैदल सिपाही, ६५६१० घुड़सवार, २१८७० रथ सवार और २७८७० हाथी सवार होते थे ।

अखंड = का०, २५२, २६४ । चि०, १३६,
[वि०] १५५ ।
(सं.) अविच्छिन्न, जिसके टुकड़े या खंड हो न सकें, अटूट । पूरा, सम्पूर्ण । क्रमबद्ध ।

अँखियां = चि०, १८३ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र० भा०) (दे० आंखें ।)

अखिल = आं०, ६६ । का० कु०, ८६, ६२ । का०,
[वि०] १५, १६, ५८, १२२, १६७, १७१ ।
(सं.) भ०, ३०, ३१, ३५, ७५ । ल०, २१, ६१ ।
सर्वाङ्गपूर्ण, अखण्ड, सम्पूर्ण, समस्त, सब, सारा, समग्र । जगत, विश्व ।

अग = का०, १५७, २४६ ।
[वि०] (हि०) अचल । स्थिर । अचर ।

अगणित = का० कु०, २५ ।
[वि०] (हि०) असंख्य, अनगिनत, अगणनीय ।

अगतिमय = का०, १८ ।
[वि०] स्थिर । जो गतिमय न हो ।

अगन्य = चि०, ६७ ।
[वि०] सामान्य, तुच्छ, नगण्य । बहुत अधिक ।
(ब्र. भा.) जिसे गिन न सकें ।

अगम = क० ३१ ।
[वि०] न जानने योग्य, जहाँ कोई न जा सके,
(हि.) जहाँ पहुँचना दुर्लभ हो, दुर्गम, गहन, कठिन, विकट । गहरा, अथाह । दुर्लभ ।

अगर = का०, १८३ ।
[सं०] (सं.) अगर की सुगंधित लकड़ी ।

अगला = का०, २७६ ।
[वि०] (हि.) आगामी ।

अगाध = का० कु०, ७४ । का०, ५७, २३७ । भ०
[वि०] (सं.) समर्पण ।

अगारू = चि०, २३ ।
[क्रि०अ०] (ब्र.भा.) आगे ।

अगिनित = चि०, १४३ ।
[वि०] (ब्र. भा.) असंख्य, अनगिनत ।

अगूढ़ = चि०, १३३ ।
[वि० सं०] सरल, आसान, भेदरहित, स्पष्ट । अगुप्त ।

अग्नि = का०, ३१, ६०, १६६, १६६, २०७,
[सं० स्त्री०] २४२, २४७ । चि०, ७२ ।
(सं.) अनल, पावक, आग । जलती हुई लकड़ी, कोयला या इसी प्रकार की अन्य कोई वस्तु या उस वस्तु के जलने पर होने वाला प्रकाशयुत ताप । जठराग्नि । वेद के तीन देवताओं में से एक

(अग्नि, वायु, सूर्य) । जलन, दाह । पूर्व और दक्षिण के मध्य की दिशा । तेज का नेत्र गोचर रूप, चिन्नक, भिलावा । तीन की संख्या । पित्त ।

अग्निचक्र = का० कु०, २१ ।
[सं० पु०] दोनों भौंहों के मध्य का वह स्थान
(सं.) जिसमें बिजली सदृश्य ज्योति होती है ।

अग्निज्वाला-सी=का०, १८१ ।
[वि०] अग्निलपट के समान । जलपिप्पली के
(हि.) वृक्ष की भाँति । ध्रुव वृक्ष के सदृश्य । अग्निज्वाल के समान ।

अग्निमयी = ल०, ५१ ।
[वि०] (सं.) आग से पूर्ण ।

अग्निशाला = का०, ८३ ।
[सं० स्त्री०] अग्नि रखने की जगह । वह स्थान जहाँ
(सं.) आग प्रज्वलित होती है ।

अग्निशिखा = का०, १३६, २०६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) ज्वाला । अग्नि की लपट या लौ ।

अग्निहोत्र = का०, ३१, ३२, ।
[सं० पु०] यज्ञ (होम) जो प्रति दिन प्रातः किया
(सं.) जाता है, इसकी अग्नि हर समय प्रज्ज्वलित रहती है । (वैदिक) यज्ञ कुंड में आहुति डालने की क्रिया ।

अग्निहोत्रशाला= चि०, ५८ ।
[सं० पु०] (सं.) अग्निहोत्र यज्ञ करने का स्थान ।

अग्रदूत = का०, ७ ।
[सं० पु०] वह जो किसी के पहले आकर किसी
(सं.) तथ्य की सूचना दे ।

अग्रसर = का० कु०, ११६ । का०, १०६,
[वि०] २३६ ।
(सं.) नेता, अगुआ, प्रधान व्यक्ति, मुखिया, सर्वप्रमुख, अग्रगामी, आगे जानेवाला व्यक्ति । प्रधान, मान्य, । राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक आदि विचारों व्यवहारों और कार्यों में औरों की अपेक्षा अधिक ज्ञान रखने वाला और अधिक उदार । प्रगतिशील । किसी कार्य में कटिबद्ध होने वाला व्यक्ति ।

अघ = का०, २८७ । चि०, १४० ।
[सं० पु०] अधर्म, पाप, पातक, गुनाह । व्यसन,
(सं.) आदत । दुःख, कष्ट ।

अघात = चि०, ८ ।
[वि०] (ब्र. भा.) अत्यधिक, भरपेट, खूब ।

अघाति = चि०, ६७ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) (दे० 'अघाता' ।)

अचञ्चल = भ्रू०, ४७ ।
[वि.] (सं.) स्थिर । धीर, गंभीर ।

अचरज = चि०, १८७ ।
[सं० पु०] आश्चर्य, अचम्भा, विस्मय, ताज्जुब,
(ब्र. भा.) मन का वह भाव जो किसी नई, विलक्षण या असाधारण बात को देखने-सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न होता है ।

अचल = का० कु०, ६१ । का०, २६, ८७, १२३,
[वि०] १५७, २५१, २५२ । चि०, १७७, १७८ ।
(सं०) भ्रू०, ३० ।
निश्चल, स्थिर, टिकाऊ, ठहरा हुआ ।

अचला = का०, २६, १२६ ।
[सं० स्त्री०, वि०] पृथ्वी । जो न चले, ठहरी हुई, स्थिराना
(हि.) साधुओं का गले में पहनने का वस्त्र ।

अचानक = क० २६, का० कु० १५, का० ६, १७,
[क्रि० वि०] २४, ४१, १८४, १८५ । भ्रू०, १५,
(हि.) १६, २६ ।
अकस्मात, सहसा ।

अचेत = का०, ४७, ४६, ८६ ।
[वि०, सं० पु०] चेतना रहित, संज्ञा शून्य । व्याकुल;
(हि.) विह्वल, नासमझ, अनजान ।
जड़ । अचैतन्य ।

अचेतन = ल०, ३७ ।
[वि०] जिसमें चेतना न हो, बेहोश, जीवन या
(सं.) प्राण से रहित । संज्ञाहीन । चेतनारहित ।

अचेतनता = का०, १३२।
[सं० स्त्री०] (हि.) जड़ता, बेहोशी, निष्प्राणता।

अच्छा = क०, ११, १६। का० कु०, ७६, ८४।
[वि०] झ०, ४४, ६१। प्रे०, ५। म०, २४।
(सं.) ल०, ११।
उत्तम, बढ़िया, खरा, चोखा, भला। ठीक। बड़ा आदमी, श्रेष्ठ पुरुष।

अच्छी = क०, ९। का० कु०, ११६। का०, १८०, २११। झ०, ६०। प्रे०, ५।
[वि०] अच्छा का स्त्रीलिंग।
(सं.)

अछूत = का० कु०, ६१। का०, २७१।
[वि०, सं० पु०] पवित्र, बिना छूआ गया, प्रयोग रहित,
(हि.) जो काम में न लाया गया हो, नया, कोरा। निम्नकोटि का व्यक्ति या जाति, अन्त्यज, अस्पृश्य।

अज = चि०, ५२।
[वि०] अजन्मा, जिसका जन्म न हो, स्वयंभू
(सं० पु०) (ईश्वर)। कामदेव। महाराज दशरथ के पिता। ब्रह्मा। विष्णु। शिव।
(सं.) बकरा, भेड़ा। माया, शक्ति।

अजगव = का०, १८५।
[सं० पु०] (सं.) शिवजी का धनुष, पिनाक।

अजमेर = म०, २४।
[सं० पु०] मध्यप्रदेश का एक नगर।

अजय = चि०, ६१।
[सं० पु०] (सं.) पराजय, हार।

अजर-अमर = का०, २७०।
[वि०] ईश्वर का एक विशेषण। जरा मरण
(सं.) रहित।

अजस्र = ल०, ५६।
[सं० पु०] (सं.) अपरिमित, अत्यधिक। निरन्तर, सदा।

अजहूँ = चि०, १५, ६७।
[अ०] अभीतक, इस समय तक, आज तक,
(ब्र. भा.) अब भी।

अजान का०, ३०, १६३। चि०, १५२। ल०,
[वि० पु०] ७४।
(हि.) अनजान, अबोध, अनभिज्ञ, नासमझ, अबूझ। जो न जाना जाय। अपरिचित, अज्ञात, अज्ञान, अनभिज्ञता। एक प्रकार का पीपल की तरह का ऊँचा पेड़ जिसके नीचे जाने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। प्रातः मसजिद में पुकारे जानेवाले शब्द।

अजित = ल०, ७४।
[वि० सं०] अपराजित, जिसे जीत न सकें, जो हारा
(सं.) न हो। बुद्ध, शिव, विष्णु। जैनियों के दूसरे तीर्थंकर।

अजिर = का०, ६४। झ०, ३१। ल०, २३।
[सं० पु०] वायु, हवा। इन्द्रियों का विषय। आंगन,
(सं.) सहन। शरीर। मेढ़क।

अजी = क०, १८। का० कु०, ८२।
[अ०] (हि.) सम्बोधन सूचक शब्द। हे, अरे, जी।

अजीगर्त = क०, १७।
(सं. पु.) शुनःशेप के पिता।

अजै = चि०, ४८।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) हार, अजय, पराजय, असफलता।

अजौ = चि०, ४१, ४८, १६८।
[क्रि० वि०] आज भी, अबतक, अभी भी।

अज्ञात = का० कु०, ४८, ७३। का० ५२, ८६।
[वि०] (सं.) झ०, २८, ५८, ८५। प्रे०, ८, १२।
जो ज्ञात न हो। जिसके बारे में कुछ ज्ञात न हो।

अज्ञान = क०, १३। का० कु०, ११६।
[सं० पु०] (सं.) ज्ञान का अभाव। मूर्खता, अनाड़ीपन।

अटकता अटकते, = का०, १६०, २२७।
[अ०] रुकना, चलते-चलते रुकना, फंस कर
(हि.) रुकना, अड़ना, झगड़ा करना, उलझना, लगा रहना। प्रेम में फँसना। विवाद करना।

अटकाव = का०, ८१।
[सं० पु०] अटकने की क्रिया का भाव। रुकाव,
(हि.) प्रतिबंध, रोक, बाधा, विघ्न।

अटकी = ल०, ५७ ।
[अ०] (हि.) अटकना का स्त्रीलिंग ।

अटल = का० कु०, ३७, का०, २३२, ल०, ६७ ।
[वि०] (सं.) न टलनेवाला, स्थिर, नित्य। दृढ़, अचल ।

अटैना = चि०, ६४ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जो न अटे, जो न समाय।

अट्टहास = का०, ३६, १६५ । ल०, ६५, ६८ ।
[सं० पु०] (सं.) अधिक जोर की हँसी, वीभत्स हंसी। ठठाकर हँसना, ठहाका ।

अट्टहास-सी = का०, १६ ।
[वि०] (सं.) = ठहाका की तरह, ठठाकर हँसने की भाँति, वीभत्स हँसी सदृश्य, ठठाकर हँसने सा ।

अड़ = का०, २५६ ।
[सं० पु०] (हि.) हठ, जिद्, टेक, प्रण ।

अड़ना = का० कु०, ११३, का०, ८१ ।
[अ०] रुकना, ठहरना, हठ करना ।

अड़े = का०, ३ ।
[क्रि०] रुके, ठहरे ।

अड़ै = चि० १०६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) अड़े ।

अणु = का०, २६६, २७० । भ०, ३८ ।
[सं० पु०] (सं.) कण, छोटा, टुकड़ा, परमाणु से बड़ा कण, धूलकण, साठ परमाणुओं का एक प्राचीन मान । संगीत के अनुसार तीन काल के चतुर्थांश समय, एक मुहूर्त का ५४६७००० वाँ भाग । सूक्ष्मकण । अत्यन्त सूक्ष्म भाग ।

अणु-अणु = का०, २०३, २८६, २६१ ।
[सं०] (सं.) प्रत्येक अणु । कण कण ।

अणुओं = का०, ६५ ।
[सं०] अणुओं का समूह ।

अतल = का०, १६८ । भ०, ५१ । ल०, ७४, ७६ ।
[वि०, सं० पु०] (सं.) गहरा, जिसका तल न हो, बिना पेंदी का । सात में दूसरे पाताल का नाम ।

अतलांत = ल०, १५ ।
[वि०] (सं.) जिसके तल का अन्त न हो ।

अति = क०, १५, २५ ।
[वि०, सं० स्त्री०] का० कु०, ३३, ४६, ६६, १०६ ।
(सं.) का०, १५, ५०, ५५, १२१, १५७, १५८, १६३, १६८, २०२, २३६, २४५, २४६, २४८, २६८, २७६, २८०, २६१, २६३ । चि०, १, ५, ५६, ५८, ६०; ६१, ६२, ६३, २२, ६७, ६८, ७१, ७२, ७३, १०७, १५०, १५१, १५८, १६२, १७३ । भ०, ३८ । प्रे०, ७ । म०, ६ । ल०, ३४, ४६, ६४, ७१ ।
बहुत, अधिक, अतिशय । अधिकता, अत्यधिकता ।

अतिकृष्ण = चि०, ६८ ।
[वि०] (सं.) गहरे काले रंग का । बहुत काला ।

अतिक्रमण = का०, २०८ ।
[सं० पु०] (सं.) खंडन, बढ़ती, उल्लंघन, भंग, अपने कार्य या अधिकार क्षेत्र आदि की सीमा पार करके ऐसी जगह पहुँचना जहाँ जाना या रहना अवैध तथा मर्यादा विरुद्ध या अनुचित है । उल्लंघन ।

अतिचार = का०, ७१ ।
[सं० पु०] (सं.) व्यतिक्रम । लांघ जाना, अपने अधिकार या अधिकृत सीमा के बाहर अनुचित रूप से और इस प्रकार जाना कि दूसरे के अधिकार में बाधा पहुँचे । ग्रहों की शीघ्र चाल । जैन मतानुसार विधाता ।

अतिचारी = का०, १६६, १८५ ।
[वि०] (सं.) घूमने फिरने वाला । वह जो अतिचार करता हो, अतिचार करने वाला ।

अतिछवि = चि०, ७२ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) अत्यन्त छवि ।

अतिथि = का०, ८१, ८३, ८५, ८६, ८७, ८८, ८६, ६० । चि०, १५६ । भ०, ८२ ८३ । प्रे०, ५ ।
(सं.)

पाहुन, अभ्यागत, मेहमान, घर में आया हुआ अज्ञात व्यक्ति। वह साधु जो एक स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरे, व्रात्य। यात्री, मुनि, संन्यासी, जैनसाधु। जिसकी तिथि नियत न हो। अग्नि। यज्ञ में सोमलता लानेवाला।

अतिथसेवारत = चि०, १४०।
[वि०] (हि.) अभ्यागत की सेवा करने में लीन। पाहुन का स्वागत करने में तन्मय।

अतिभायो = चि०, ७५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) अत्यन्त पसंद आया।

अतिरंजित = का०, ४, १०६, ११५।
[वि०] (सं.) बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही गयी। अत्युक्ति पूर्ण।

अतिलखात = चि०, १४५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) अत्यधिक दीख पड़ती है।

अतिवाद = ल०, १३।
[सं० पु०] (सं.) कठोर वचन, कड़े शब्द; सच्ची बात, खरी बात, अत्युक्ति। डींग हाँकना, बढ़ा-चढ़ा कर बातें करना।

अतिशय = चि०, ४०।
[वि०, सं० पु०] (सं.) बहुत, अत्यन्त, ज्यादा, अधिक। एक प्रकार का अलंकार जिसके द्वारा उत्तरोत्तर संभावना या असम्भावना प्रदर्शित की जाती है। (अतिशयोक्ति)

अतिहि = चि०, १६१, ६४, १७६ १७६।
(ब्र. भा.) दे० अति।

अतिही = चि० ५१।
(ब्र. भा.) दे० अति।

अतींद्रिय = का०, ३५।
[वि०] (सं.) अगोचर। जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न किया जा सके।

अतीत = आं० ७७। का०, ६, ४६, ८६, १०३, १२७, १४१, १६२, १६५, १७७, २०६। चि०, १४१। प्रे०, ६। ल०, ४३, ४४, ५३।
[वि०] (सं) भूत, व्यतीत, बीता हुआ, गत। पृथक, अलग, न्यारा, निर्लेप, विरक्त, विलग, असंग। मृत, मरा हुआ। संगीत शास्त्रानुसार परिमाण विशेष।

अतीतकथा-मकरंद = का० कु०, ११०।
[सं० पु०] (सं.) अतीत की कथा का रस।

अतीताब्धि = का० कु०, ६६।
[सं.] (हि.) अतीतरूपी सागर।

अतुल = का०, ४०। झ, ३८। ल०, ३५।
[वि०] (सं०) अनुपम, अद्वितीय, अपूर्व, अतुलनीय, जिसकी तुलना न की जा सके, बेजोड़, अकेला। बहुत अधिक अमित, असीम, अपार। जो तौला या कूता न जा सके।

अतूल = चि०, ६६।
[वि०] (सं.) दे० अतुल।

अतृप्त = आं०, ५१। झ०, ६४।
[वि०] (सं.) असन्तुष्ट, जो तृप्त या सन्तुष्ट न हो, जिसका मन न भरा हो। भूखा, पेट न भरा हो।

अतृप्ति = का०, १२, ६१, १८४, २२६, २३७।
[सं० स्त्री०] (सं.) तुष्टि का न होना। मन न भरने की दशा। चित्त की अशांति।

अतृप्ति-सी = का०, १०२।
[वि०] अतृप्ति के समान।

अत्यन्त = ल०, ३४।
[वि०] (सं.) बहुत अधिक, आवश्यकता से अधिक, अतिशय, हद से ज्यादा, बेहद।

अत्याचार = का०, १६६। ल०, ५२।
[सं० पु०] (सं.) दुर्व्यवहार, कुव्यवहार, अन्याय, जुल्म, विरुद्धाचरण, ज्यादती, आचार का अतिक्रमण, सदाचार का उल्टा। पाप, दुराचरण। आडम्बर, पाखंड, ढकोसला, ढोंग। दूसरों के साथ किया जाने वाला वह कार्य जिससे उनको कष्ट हो।

अत्याचारी = का० कु; १०८।
[वि०] (सं.) अत्याचार करने वाला, अन्यायी, दुराचारी, जालिम, वह जो अपने बल के

आधार पर दूसरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करता है, बहुतअधिक कष्ट पहुँचानेवाला। निष्ठुर, पाखंडी, ढोंगी।

अथक = ल०, ७६।
[वि०] न थकने वाला, जो न थके, अश्रान्त।
(हि.) परिश्रमी।

अथवा = क०, २७। का० कु०, १०७, १२१।
[अ०] प्रे०, २३।
(सं.) वा, या, किंवा (एक प्रकार का अव्यय जो वियोजक होता है। जिसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कई शब्दों या पदों में से एक का ग्रहण अभीष्ट हो।)

अथाह = का० कु०, ७०। का०, २४१।
[वि०] जिसका थाह न हो, बहुत गहरा,
(हि.) अगाध। कठिन, गूढ़, गम्भीर, अपार, अपरमित, जिसका कोई पार न हो सके।

अदम्य = प्रे०, ४।
[वि०] प्रचंड, अजेय, उग्र जो दबाया न जा
(सं.) सके, जिसका दमन न हो सके।

अदृश्य = का० कु०, १०१।
[वि०] लुप्त, गायब, अलक्षित, छिपा हुआ,
(सं.) अगोचर, परोक्ष जिसका ज्ञान इन्द्रियों को न हो। अलख, जो दिखाई न दे।

अदृष्ट = का०, १३१, १६७। ल०, २०, ५३, ७६।
[वि०] अन्तर्ध्यान, तिरोहित, लुप्त, गायब,
(सं.) ओझल। अलक्षित, न देखा हुआ। प्राकृतिक (प्रकृति से उत्पन्न) भाग्य, अग्नि, या जलादि से प्राप्त भय।

अदृष्टाकाश = का० कु०, ११२।
(सं० पु०) (सं.) अलक्षित आकाश।

अदृष्य = का०, २६३।
[वि०] (सं.) दे० अदृश्य।

अद्भुत = का० कु०, ६४। का०, १६७, २०७।
[वि०] (सं.) नि०, १६, ७५, १४२, १५८, १६३ भ०, ५५। प्रे०, ३। ल०, ६६, ७२। अनोखा, अनूठा, विलक्षण, अजीब, विचित्र, अपूर्व, अलौकिक, आश्चर्य-जनक। काव्य-शास्त्र के अनुसार नव रसों में से एक।

अधखिले = ल०, ६२।
[वि०] (हि.) अर्द्ध विकसित, आधे खिले हुए।

अधखुला = का०, ४६।
[वि०] (हि.) आधा खुला हुआ।

अधम = क०, ३१। का०, १८, ८४, २२७।
[वि०] (सं.) बिलकुल नीच या निकृष्ट कोटि का जीव, बुरा, खोटा, निकृष्ट। बहुत बड़ा पापी, दुष्ट या दुराचारी।

अधर = क०, १७। का० कु०, ४५। का०,
[सं० पु०] १२८, १३४, १३५, १६०। ल०, ६, १७,
(सं.) २१, २७, ४१, ४२, ६०।
ओठ, होंठ, नीचे का ओठ।

अधर्मी = चि०, १७६।
[सं० पु०] पापी, दुराचारी, पातकी, धर्म के
(हि.) विरुद्ध कार्य करने वाला, कुकर्मी, बुरा कार्य करने वाला, अन्यायी।

अधराति = चि०, १६८।
[सं०स्त्री] (ब्र०भा०) अर्द्धरात्रि।

अधरान = चि०, १५६, १६१।
[सं० पु०] (ब्र० भा०) अधर में।

अधरानहिवीच = चि०, ४६।
(ब्र० भा०) अधरों के बीच में।

अधरों = आं०, ६५। का०, ६७, ६६, १५२,
[सं० पु०] १८४, २६१। ल०, १०, १६, २१।
(सं.) अधार का बहुवचन।

अधार = चि०, ४८, १७५,।
(सं० पु०) (ब्र० भा०) दे० आधार।

अधिक = आं०, १६। का०, ४७, ५१, ५२, ८६,
[वि०] १३६, १५७, १५८, १६१, १७६,
(सं.) १६६, २१३। चि०, ५६, ६१।
अवशिष्ट, अतिरिक्त, शेष, बचा हुआ, फालतू। विशेष, बहुत, ज्यादा। तलछट

अधिकार = का०, ५४, ८२, १६२; १९०, १६२,

[सं० पु०] (सं.) १६४, २२० । चि०, ५१, ५६, । झ०, ३५ । ल०, १२, १३, ७०, ७८, ७६ । योग्यता, ज्ञान, परिचय । प्रभुत्व, अधिपत्य । कब्जा, स्वत्व, अख्त्यार, हक, । क्षमता, शक्ति, सामर्थ्य । प्रकरण, शीर्षक ।

अधिकार-लुब्ध = क०, १२ । का०, १२६, २३७ । चि०, [वि०] (सं.) १३, २२ । ल०, ७७ । प्रभुत्व से व्याकुल । अधिकार से परेशान ।

अधिकारी = का०, १६२ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रभु, मालिक, स्वामी । वह जिससे कोई हक या स्वत्व प्राप्त हो । अफसर, किसी कार्य या पद पर कार्य करनेवाला । वह जो विशेष योग्य हो । उपयुक्त पात्र ।

अधिकारों = का०, १८६, २७१ ।
[सं० पु०] अधिकार का बहुवचन ।

अधिकृत = चि०, ५३ । झ०, ६३ ।
[वि०] (सं.) स्वत्व, अधिकारी, अध्यक्ष । जो किसी के अधिकार में हो, जिस पर अधिकार कर लिया गया हो । जिसको कोई काम करने का अधिकार दिया गया हो। जिसको कोई काम करने का प्रभुत्व प्राप्त हो ।

अधित्य = चि०, ४८ ।
[सं० पु०] (सं.) दे० अधित्यका ।

अधित्यका = का० कु०, १०५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) पर्वत के ऊपर की समतल भूमि, टेबुल लैण्ड ।

अधिपति = का०, १७० ।
[सं० पु०] (सं.) राजा, प्रभु, स्वामी, मुखिया ।

अधीर = का०, १२, २७, ३६, ५१, ५२, ५५, ५६, ८६, ८६, ६१, १३६ १४६, [वि०] (सं०) १५४, १५७, १६६, २५०, झ०, २६, ३८, ६५ । ल०, २१, २५, ३७, ४४, ५४, ६६ । क०, १८ । व्यग्र, उद्विग्न, बेचैन ।

अधीरतम = का०, ३६ ।
[वि०] (सं.) व्याकुलतम, विह्वलतम, चंचलतम, अत्यंत अस्थिर, उतावला, अत्यंत आतुर, अत्यंत तेज, अत्यंत धैर्यहीन अ अधिक बेचैन ।

अधीरता = चि०, १७२ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) व्याकुलता, विह्वलता, चंचलता, उतावलापन ।

अध्वर्यू = का० कु०, ११४ ।
[सं० पु०] (सं.) यज्ञ करने वाला यजुर्वेदीय पुरोहित ।

अनंग = आं०, २४ । का०, ११, ७४, १५६ ।
[वि०] (सं.) चि०, ३, १८२ । ल०, ४०, ७७ । बिना शरीर वाला । कामदेव ।

अनंग बालिकाएं = ल०, ६० ।
[सं० स्त्री०] कामिनियां, कामवती लड़कियां । काम बालिकाएँ ।

अनन्त = आं०, ५१, ६८ । का० कु०, १ ।
[वि० पु०, सं०] (सं.) का०, ६, १०, १८, २६, ४०, ६८, ८७, ६१, ११३, १२०, १२३, १५६, १६६, १६३ । चि०, २२, २३, ६६, १३६, १६० । झ०, २६, २६, ३३, ३८, ६३ ।
असीम, बेहद, अपार, जिसका अंत न हो, अत्यधिक, असंख्य । नित्य, अविनाशी, । विष्णु, शेषनाग, लक्ष्मण, बलराम । आकाश । अबरक । एक जैन-तीर्थंकर का नाम । भुजा में पहना जाने वाला एक गहना, एक व्रत । रामानुजाचार्य का एक परम शिष्य ।

अनन्तता = का०, १२८ ।
[सं० पु] (सं.) अनन्त के गुण-धर्म वाला ।

अनन्त नीलिमा = ल०, ११ ।
[सं० पु०] (सं.) ऐसी नीलिमा जिसका अंत न हो । अपार नीलिमा ।

अनन्त मंदिर = का० कु०, ६ ।
[सं० पु०] (सं.) अनंत का मंदिर ।

अनन्त-सा = का०, २६० ।
[वि.] अनन्त के समान ।
अनन्द = चि०, ६, ३१, ५६, १५२, १५६ ।
[सं०] (ब्र. भा) देखिए' आनंद' ।
अनन्दमय = चि० ५६ ।
[वि०] (ब्र. भा.) देखिए 'आनन्दमय' ।
अनन्दित = चि०, ५६, ६४, १५० ।
[वि०] (ब्र. भा.) देखिए 'आनन्दित' ।
अनखाकर = भ्रु०, ५६ ।
[क्रि० अ] (हि.) रूठ कर, रिसिया कर, क्रोध करके ।
अनखे = चि०, १८८ ।
[वि०] (हि.) झुझलाए हुए, कोप भरे हुए खिन्न ।
अनगढ़े = का०, ४७ ।
[वि० पु०] बिना गढ़े हुए, जो किसी के द्वारा न
(हि.) बनाया गया हो, बेढ़ंगा, अनाड़ी,
अपरिष्कृत, बेतुका, स्वयंभू ।

अनगिनित = चि०, १६३ ।
[वि० पु०] बिना गिना हुआ, असंख्य, अगणित,
(हि.) बहुत, बेशुमार, ।
अनजान = का०, ४६, ५१, ५२, १६४ । चि०,
[वि०] १४३ । भ्रु०, २४, ३८ । ल०, ७४ ।
(हि.) अज्ञात, अपरिचित, नासमझ, अनभिज्ञ,
नादान; सीधा, अज्ञ, अज्ञानी, बिना
जान-पहचान का ।

अनजानि = चि०, १७६ ।
[वि०] (ब्र. भा.) देखिए अनजान ।
अनजानी = आं०, १५ ।
[वि०] (हि.) देखिए अनजान ।
अनजाने = का०, १६३ । ल०, १७ ।
[वि०] (हि.) देखिए अनजान ।
अनत = चि० १८८ ।
[क्रि० वि०] (ब्र. भा.) दूसरी जगह, अन्यत्र ।
अनन्य = का०, १४७, २०८ ।
[वि०, सं० पु०] दूसरे से संबंध न रखने वाला, एकनिष्ठ,
(सं.) एक ही में लीन । विष्णु ।
अनबन = का०, कु०, ६५ ।
[सं० स्त्री०] विरोध, बिगाड़, झगड़ा, झंझट, विद्रोह ।
(हि.) [वि०] अलग, पृथक्, भिन्न, विविध,
खुटमुट ।

अनमना = चि०, ११ ।
[वि०] (हि.) खिन्न, अन्यमनस्क, उदास, सुस्त,
अस्वस्थ, बीमार ।
अनमनी = का०, १४२ ।
[वि० स्त्री०] (हि.) उदासी, खिन्नता, रुखाई ।
अनमिल = का० कु०, ३०, ५३ ।
[वि०] असंबद्ध, बेमेल, असंगत, अलग, भिन्न,
(हि.) निर्लिप्त, बेमेल ।
अनमेल = चि०, १४२ ।
[वि०] बेमेल, असंबद्ध, बेतुका, असंगत, बिना
(हि.) मिलावट का, विशुद्ध, खालिस ।
अनरण्य = चि०, ४८ ।
[सं० पु०] रावण द्वारा अपदस्थ इक्ष्वाकु वंश का
एक सूर्यवंशी राजा ।
अनराजकता = चि०, ४८ ।
[सं०] (हि.) अराजकता ।
अनरीत = चि०, १५६ ।
[सं० स्त्री०] कुरीति, बुरी चाल, कुप्रथा, अनुचित
(हि.) व्यवहार ।
अनल = आं०, ३० । का०, कु० ५ । का०,
[सं० पु०] ११६, १५७ । ल० ६१ ।
(सं.) अग्नि, आग ।
अनलमँह = चि०, ६७ ।
(ब्र० भा०) आग में ।
अनलादिक = चि०, १८६ ।
(ब्र० भा०) अग्नि आदि ।
अनलशिखा ल०, ४६ ।
[सं०] (सं.) = अग्निशिखा ।
अनवरत = का०, १६४ ।
[क्रि० वि०] निरन्तर, सतत, सदैव, अजस्र, लगातार,
(सं.) हमेशा ।
अनवस्था = का०, २७१ ।
[सं० स्त्री०] अव्यवस्था, अनियमितता, व्यग्रता,

(सं.) अधीरता, न्याय की वह त्रुटि जिसमें तर्क निकलता जाता हो और विवाद का अंत न हो।

नास्तित्व = का०, २०।
वि०] (सं.) अस्तित्वहीन।

नहित = का०, १६७।
ं० पु०] (हि.) अहित, अमंगल, अपकार, बुराई।

नाथ = क०, २५। चि०, १५५। प्रे० २१।
वि०] बिना स्वामी का, असहाय, बेसहारा,
सं.) दीन-दुखी, नाथहीन, जिसका कोई रक्षक न हो।

नाथा = प्रे०, २०।
हि.) अनाथ का स्त्रीलिंग।

नादि = का० कु०, १। का०, ३५, ७२।
वि०] (सं.) जिसका आदि न हो, जो सदा से हो।

नामिका = आं०, ६९।
सं० स्त्री०] सबसे अच्छी। कनिष्ठा और मध्या के
सं.) बीच की उँगली।

नायास = भ्रु०, ६१।
क्रि० वि०) बिना उद्योग, सहसा, अकस्मात, अचा-
सं.) नक, बिना प्रयास या परिश्रम के, बिना प्रयास के।

नार्य = का० कु० ११५।
वे०,] (सं.) जो आर्य न हो, म्लेच्छ, अश्रेष्ट

नाहत = का०, २५३, २७३।
सं०, वि०] (सं.) बिना चोट किया हुआ, जिस पर आघात न किया गया हो। शब्द योग में अँगूठों से दोनों कानों को बन्द कर लेने से सुनाई देनेवाला शब्द। हठयोग के भीतर के छः चक्रों में से एक।

निच्छित = का०, १६४।
वि०] (सं.) बिना इच्छा के।

नियारे = चि०, १७५।
वि०] नोकीला, कटीला, तीक्ष्ण, पैना,
ब्र. भा.) तीखी धार वाला।

निर्वचनीय = का० कु० ८१।
[वि०] जिसका वर्णन न किया जा सकता हो,
(सं.) अवर्णनीय, अकथ्य, अकथनीय। [सं० पु०] ब्रह्म, परमात्मा।

अनिल = आं०, १०। का० कु०, ५। का०, ५८, १४७, २३४। चि०, १५०, १८२, १८६ भ्रु०, परिचय। ल०, २६।
[सं० पु०]
(सं.) वायु, पवन, हवा, समीर, मारुत।

अनिल-निर्देश = का० कु०, ६६।
[सं०] (सं.) हवा के रुख पर।

अनिवार्य = भ्रु० ५६।
[वि०] जिसका निवारण न हो, जिससे बचा
(सं.) न जा सके, जिसे लेना, रखना या मानना आवश्यक हो, जो हटाया या छोड़ा न जा सके।

अनिष्ट = प्र० ५। का० कु०, १०६।
[वि०] (सं.) जो इष्ट न हो, अनभिलषित।

अनिहलवाड़ा = ल०, ६५।
[सं.] एक स्थान का नाम।

अनी = चि०, ५३।
[सं० स्त्री०] सिरा, कोर, नोक। खेद, ग्लानि। झुंड,
(हि.) समूह, दल।

अनुकरण = ल०, ६३।
[सं० पु०] (सं.) नकल, देखा-देखी किये जानेवाला कार्य।

अनुकूल = क०, ६। का० कु०, ५०। का०, १३६।
[वि०] चि० १४, ६, १०, १५०, १६०। प्रे० १०।
(सं.) अनुसार, म्वाफिक, हितकर, पक्ष में रहनेवाला, प्रसन्न।

अनुकृति = का०, ४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) अनुकरण की हुई।

अनुगत = ल०, ६५।
[वि०] अनुयायी, अनुगामी, पीछे चलनेवाला,
(सं.) अनुकूल, म्वाफिक, अनुसार।

अनुगामी = क०, २२।
(वि०) अनुसरण करने वाला। समान आचरण
(सं.) करनेवाला। आज्ञाकारी।

अनुग्रह = ल०, ७३, ७६।

[सं० पु०] (सं.) कृपा, दया, अनुकम्पा, । अनिष्ट निवारण ।

अनुचर = [सं० पु०] (सं.) क०, २६ । चि० ६६ । ल०, ७२ । पीछे चलने वाला । सेवक, दास, सहचारी, साथी ।

अनुचरन = [क्रि. वि.] (ब्र.भा.) चि०, ४० । पीछे चलने की क्रिया ।

अनुचित = [वि०] (सं.) चि०, ७३ । म०, ११ । अयोग्य, अयुक्त, बुरा, खराब, जो उचित न हो, नामुनासिब ।

अनुज = [वि०] (सं.) चि०, ६४ । जो बाद में पैदा हुआ हो, छोटा भाई ।

अनुतापहि = [ब्र० भा०] चि० = ७४ । जलन से । तपन से ।

अनुदिन = [क्रि० वि०] (सं.) का०, ७१, १०५ । प्रति दिन । हर दिन । रोज ।

अनुनय = [सं० पु०] (सं.) भ०, ४३ । ल०, ७१, ७३ । विनती, विनय, प्रार्थना । रूठे हुए को मनाना ।

अनुनयवाणी = [सं०] (सं.) का०, १२७ । विनती ।

अनुपम = [वि०] (सं.) का० कु०. ६७ । चि०, ४२, ५६, ६६, १६०, १६३ । म०, ८, १३ । बेजोड़, अनूठा, उपमारहित, जिसकी टक्कर का दूसरा न हो, अत्यंत उत्तम ।

अनुपस्थिति = [सं० स्त्री०] (सं.) म०, १४ । अविद्यमान, जो मौजूद न हो, गैरहाजिर ।

अनुभव = [सं० पु०] (सं.) आं०, ५४ । का० कु०, ८०, ८७ । का०, २२७, २६०, २६१ । प्रे०, २५ । ल०, ८८ । योग द्वारा प्राप्त ज्ञान, परीक्षा से प्राप्त ज्ञान, तजर्बा, प्रयोग द्वारा प्राप्त ज्ञान ।

अनुभाव = [सं० पु०] सं.) का०, ६४ । प्रभाव, महिमा, बड़ाई, रस का बोध कराने वाले गुण और क्रिया । साहित्य या काव्य में रस के अंतर्गत चित्त के भाव प्रगट करने वाले कटाक्ष, रोमांच आदि चेष्टाएँ ।

अनुभूत = [वि०] (सं.) का० कु०, ८६ । भ०, ८६ । अनुभव से ज्ञात, परीक्षित, तजर्बा किया हुआ ।

अनुभूति = [सं० स्त्री०] (सं.) का०, २६ । ल०, ६८ । अनुभव, परिज्ञान, तजर्बा ।

अनुमान = [सं० पु०] (सं.) का०, ३५, ५२, ८७, १७७ । चि०, १८६ । भ०, ६३ । अपने मन से यह समझना कि ऐसा हो सकता है या होगा, अन्दाज, अटकल ।

अनुमानि = [क्रि० वि०] (ब्र. भा.) चि०, १७६ । अन्दाज लगाकर अनुमान करके अनुमानतः ।

अनुरक्त = [वि०] (सं.) का० कु०, २६, ३०, ७५ । का०, ' ० । भ०, ३१, ६७ । आसक्त, अनुरागयुक्त, प्रेमयुक्त, लीन ।

अनुराग = [सं० पु०] (सं.) का० कु०, ११, ४९, १११ । का०, ११, २३, ७२, ८८, ६८, १६८, १७६, २१८, २३७ । चि०, २१, २२, १७५, १८० । भ०, २८, ६६ । ल० ३६, ६२, ७६ । प्रेम, प्रीति । (दे० अनुरक्ति)

अनुरागमयी = [वि०] (सं.) का०, ६५ । अनुराग से भरी हुई ।

अनुरागिनी = [वि०] (सं.) ल०, ११ । अनुराग रखनेवाली । अनुराग रखने वाली स्त्री ।

अनुरागी = [वि०] (सं.) चि०, १४ । भ०, ३५ । प्रेमी ।

अनुरागै = (ब्र० भा०) चि०, ६८ । अनुराग करता है ।

अनुरूप = [वि०] (सं.) चि०, ७३, १८० । समान रूप का । अनुकूल । योग्य ।

अनुरोध = का०, १४० ।

[सं० पु०] (सं.) आग्रह, रुकावट, बाधा, प्रेरणा, उत्तेजना, विनययुक्त हठ ।

अनुलेप = ल०, ५० ।
[अ०] (सं.) लीपना ।

अनुलेपन-सा = का०, २१५ ।
[वि०] (हि.) लीपने सा ।

अनुशय = का०, २५० ।
[सं० पु०] (सं.) पुराना बैर, अदावत, झगड़ा, वाद-विवाद, विग्रह ।

अनुशासन = का०, २४०, २७२ ।
[सं० पु०] (सं.) आदेश, आज्ञा, उपदेश, शिक्षा, आचार-व्यवहार के नियम ।

अनुशीलन = का०, ७१ । प्रे०, १५ ।
[सं० पु०] चिंतन-मनन, बार-बार किया जाने वाला
(सं.) अध्ययन या अभ्यास ।

अनुश्रुति = का०, ७३ ।
[सं० स्त्री०] परंपरा से प्रचलित बात, कथा, उक्ति,
(सं.) बात आदि ।

अनष्ठित = का० कु०, ११३ ।
[वि०] (सं.) ठाना हुआ, जिसका अनुष्ठान हुआ हो ।

अनुसरण = का० कु०, ७३ । का०, ५६ । चि०,
[सं० पु०] १८८ ।
(सं.) पीछे चलना, अनुकरण, अनुरूप-आचरण, नकल ।

अनुसारिये = चि०, १७१ ।
(ब्र० भा०) पीछे चलना, नकल करना ।

अनुसूया = चि०, ५६, ५६ ।
[सं० स्त्री०] शकुंतला की सखी का नाम । अत्रि
(सं०) मुनि की स्त्री । दूसरे के गुण में दोष न निकालने वाला, ईर्ष्याहीन ।

अनुहारत = चि०, १६३ ।
[क्रि०] (ब्र० भा०) समान, तुल्य, सदृश्य, बराबर करना ।

अनुहारि = चि०, ३४ ।
[वि०] समान, सदृश्य, बराबर, योग्य, उपयुक्त,
[ब्र० भा०] अनुसार, लायक ।

अनुहारो = चि०, १४८ ।
(ब्र० भा०) देखिए 'अनुहार' ।

अनूठा = का० कु०, २३६ ।
[वि०] अपूर्व, निराला, अनोखा, विलक्षण,
(हि.) अच्छा ।

अनूप = क०, १४३ । चि०, ६२, ६६, ७२,
[वि० सं०] १५८, १५९ । झ०, ६४ ।
(सं.) जिसकी कोई उपमा न हो, अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय । अधिक जलवाला स्थान ।

अनूपम = चि० ५६, ६०, ७२ ।
(ब्र० भा०) दे० अनुपम ।

अनूपम सी = का० ४१ ।
[वि०] अनुपमत्व । निराले पन के समान ।

अनेक = चि०, ३१, ४८, ५२. ५८, ६०, ६५,
[वि०] १११. १६२ । झ०, ६४ ।
(सं. का० एक से अधिक ।

अनेकरूपी = का० कु०, ६ ।
[वि०] (सं) अनेक रूप वाला । बहुरूपिया ।

अनोखा = का०, ७७ ।
[वि०] अपूर्व, विलक्षण, निराला, विचित्र,
(हि०) सुंदर, मनोहर ।

अनोखे = चि०, ५८, १८८, । प्रे०, ४ ।
[अ०] (हि.) देखिए अनोखा ।

अनोखी = आं, ३७ । का० कु०, ४१, ४३, ११४,
[वि०] (सं) ११५ । चि०, ४६, ५८, १४३ ।
प्रे०, १६ ।
अनोखा का स्त्रीलिंग ।

अन्तर्निनाद = का०, २५२
[सं० पु०] आन्तरिक गूँज या स्वर ।

अन्न = का०, ३२, ५२, ८४, १४१ ।
[सं० पु०] खाद्य पदार्थ, अनाज, धान, गल्ला, नाज,
(सं.) पृथ्वी, प्राण, जल, सबका भक्ष्य तथा ग्रहण करने वाला ।

अन्य = का०, ६६, १२४, १३३, १४४, २८७ ।
[वि०] प्रे०, २ ।

(सं.) कोई दूसरा। और व्यक्ति। भिन्न।

अन्यमनस्क = का० कु०, १८।
[वि०] जिस व्यक्ति का मन कहीं और लगा हो।
(सं.) जिसका ध्यान किसी दूसरी बात के सोचने में लगा हो।

अन्योन्य = चि०, १५।
[सर्व०] परस्पर। आपस में। अर्थालंकार जिसमें
(सं.) दो पदार्थों के किसी गुण या क्रिया को एक दूसरे के कारण उत्पन्न हुआ कहा जाय।

अन्हात = चि०, १७६।
[ब्र. भा.] स्नान किया हुआ।

अपदार्थ = आं०, ४१।
[वि०] (सं.) अयोग्य वस्तु। अवस्तु। पदार्थ भिन्न।

अपना = आं०, २३। क०, १८, २६, ३१।
[सर्व० पु०] का०, कु०, २२। का०, ३१, ६३,
(हि.) १०२, ११०, ११४, ११७, ११८, ११६, १२६, १८५, २१०, २३७, २४८। प्रे०, १। म०, २, १८। ल०, २१, ४५। हरएक की दृष्टि से उसका। निजका, निजी।

अपनापन = का०, २४१।
[सं० पु०] (हि) आत्मीयता। आत्माभिमान। स्वार्थबुद्धि। अपनत्व।

अपनाया = का०, १७२, २०१। भ्र०, ५८।
[क्रि०] अपना बनाया, स्वीकार किया, शरण में लिया।

अपनी = क०, २६, २६। का०, कु०, ६, ५२।
[सर्व०, स्त्री०] का०, ३१, ८६, ६८, १०२, १०६, ११८, १७७, २०२, २३५ २६२, २७१। चि०, १४२, १५७। ल०, ६, ५६, ६३, ६४, ६६, ७५, ७८। निजी।

अपनी-अपनी = का०, १८५।
[सर्व० पु०] प्रत्येक को। सिर्फ अपनी अपनी चिंता।

अपने = क०, ६, २६। का० कु०, २८। का०, [सर्व० पु०] ७, ३२, १०४, १०६, १६६, २०६, २१०, २२६, २३७, २८२, चि०, ७२, १४५, १४७, १५८। भ्र०, १६। प्रे०२। म०, १३, १५। ल०, ३८, ४१, ४८, ५३, ६४, ६८, ७८,। निजी। आत्मीय।

अपनेपन = चि०, ६६।
[सं० पु०] आत्मीयता। अपनत्व।

अपनो = चि०, ६६।
(ब्र० भा०) देखिए, अपना।

अपमान = का०, कु०, ४५। का०, १८६। चि०,
[सं० पु०] १३, १०२। म०, १४। ल०, ५२,
(सं.) ७७।
अनादर। अवज्ञा। अवहेलना। तिरस्कार। बेइज्जती।

अपमान-ज्वाला = भ्र०, ७८। ल०, ७, ६६।
[सं० स्त्री०] तिरस्कार की लपट। तिरस्कार की
(सं.) अग्नि।

अपमानित = आं०, ५७ का०, कु०, ६४।
[वि०] तिरस्कृत। जिसकी अवज्ञा की गयी
[हि०] हो। जिसे नीचा दिखाया गया हो।

अपमानित हिय = चि०, ५८।
[वि०] वह हृदय जिसका तिरस्कार किया गया
(ब्र० भा०) हो।

अपयश = म०, १७।
[सं० पु०] (सं.) अपकीर्ति। बदनामी। कलंक, लांछन।

अपर = चि०, ५६।
[सं०] (सं.) पहले का। पूर्व का। दूसरा। अन्य।

अपराध = क०, ३१। का०, ८४, १२२, १७७,
[सं० पु०] २०८, २४६।
(सं.) वह अनुचित कार्य जिससे किसी को हानि पहुँचे। विधान के विरुद्ध कोई ऐसा कार्य, जिसके कारण कर्ता को दंड मिल सकता हो। बुरा काम। दोष। पाप।

अपराधी = का०, २१०, २२८, २३८।

[वि० पु०] दोष करने वाला । पापी । कसूरवार ।
(हि०) मुलजिम ।

अपरिचित = का०, ३२, ८१ । चि०, २२, ।
[वि०] अज्ञात । अनजान । जिसके बारे में कुछ
(सं.) जान पहिचान न हो ।

अपरिमित = का०, २७६ ।
[वि०] असीम । बेहद । असंख्य । अनंत ।
(सं.) जिसकी माप न की जा सके ।

अपरूप = का०, ६१ । चि०, १८६ । भ्र०, ६३ ।
[वि०] बदशकल । भद्दा । बेडौल । अद्भुत ।
(सं.) अपूर्व ।

अपलक = आं०, १८ । का०, १२, २८० । ल०, ३१ ।
[वि०] जिसकी पलकें न गिरें । निरंतर । बिना
(सं.) आँख झँपे ।

अपहृत = का०, ८४ । म०, २ ।
[वि०] जबर्दस्ती छीना गया । हरण कर लिया
(सं.) गया । छीना हुआ । चुराया हुआ ।

अपांग = भ्र०, १६, २५ ।
[वि०] (सं.) जिसका कोई अंग टूट गया हो ।

अपार = का०, ४, ८, ६, ५२, १५६, १६६, २३४ ।
[वि०] भ्र०, २१, ४२ । चि०, १४६, १७७ ।
(सं.) सीमारहित । अनन्त, असीम, असंख्य,
अतिशय ।

अपारा = चि०, ७४, १५० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) पृथिवी । दुर्गा । महाशक्ति ।

अपावन = आं०, ७४ ।
[वि०] (सं.) अपवित्र । न छूने योग्य ।

अपूर्ण = का० कु०, ८१ । का०, १५६, १६०,
[वि०] १६१, १६५, १९४ ।
(सं.) अधूरा । असमाप्त । कम । जो पूर्ण या
भरा न हो ।

अपूर्णता = का०, १६३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) भरा हुआ न होना । अधूरापन ।

अपूर्व = चि०, ११ ।
[वि०] जो पहले न रहा हो । अद्भुत । अनोखा ।
(सं.) विचित्र । उत्तम । श्रेष्ठ ।

अप्रकटित = प्रे०, २२ ।
[वि०] जो प्रकट न किया गया हो । जो प्रकाशित
(सं.) न हो । जो प्रत्यक्ष न किया गया हो ।
अप्रत्यक्ष ।

अप्रतिम = चि०, १० । ल०, ७३ ।
[वि०] जिसके समान कोई न हो । जो अद्वि-
(सं.) तीय हो ।

अप्रतिहत = का , २०६ ।
[वि०] जिसका विघात न किया गया हो ।
(सं.) अपराजित । न रोका हुआ ।

अप्रत्याशित = प्रे०, २३ ।
[वि०] जिसकी आशा न की गयी हो । अचानक
(सं.) या अकस्मात होनेवाला ।

अप्रमाद = का०, १६७ ।
[सं. पु.] (सं.) प्रमाद या पागलपन का अभाव ।

अप्सरा = चि०, ६, १६, १७, ६५ । ल०, ६० ।
[सं० स्त्री०] स्वर्ग की वेश्या । वारांगना । अनुपम
(सं.) सुन्दरी । जल-कण । वाष्प कण ।

अप्सरागान = चि०, ११३ ।
[सं० पु०] अप्सराओं के गीत । स्वर्गीय गान ।
(हि.) सुन्दर स्त्रियों द्वारा गाया गया गीत ।

अप्सरियों = का०, २६४, २६० ।
[सं० स्त्री०] अप्सराएँ । सुंदर स्त्रियाँ ।

अप्सरे = का०, १२७ ।
[सं०] अप्सरा का संबोधन ।

अब = आं०, १२, ३० । क०, ६, १०, २१,
[क्रि० वि०] २२, २८ । का०, कु०, ५६, ८३ ।
(हि०) का०, ४, ८१, ८७, १०६, ११३, १४५,
१६२, १६३, १७३, १७७, १८५, १६६,
२२७, २५६, २६०, २६६ । चि०, ५७,
७२, ७३, ७४, १५८, १६०, १७०,
१८३ । भ्र०, सर्मपण । प्रे०, ४ ।
म०, १०, १२, १७, २०, २१ । ल०,
२४, ५१ ।
अभी । इस समय । अबकी ।
इसी बार ।

अबला = चि०, १०३ । म०, ११, १२ । ल०,
[वि०, सं० स्त्री०] ६८, ७५ ।
(सं.) स्त्री । महिला । बल रहिता नारी ।

अबहिं = चि०, १५८ ।
[क्रि० वि०] इसी समय । इसी वक्त । अभी ।

अबही = चि०, १५६ ।
(ब्र भा.) देखिये 'अबहिं' ।

अबहुं = चि०, ६६ ।
[वि०] (ब्र. भा.) अब भी,इस पर भी, अब तक भी ।

अबहूं = चि०, १८६ ।
(ब्र.भा.)[क्रि०वि०] अब भी । इस पर भी । अबतक भी ।

अबाध = का०, ४८, ५४ । ल०, ७६ ।
[वि०] (सं.) निर्विघ्न । बाधारहित । अनियंत्रित । अपार । असीम ।

अबोध = का०, १५७, १६३ ।
[वि० सं०पु०](सं.) अनजान । नादान । मूर्ख । अज्ञान । बोधहीन ।

अभ्र (अभ्र) = का०, १४६ ।
[सं० पु०] बादल । मेघ । आकाश । स्वर्ण, सोना । अभ्रक धातु ।
(सं.)

अभंग = का० १५६ ।
[वि०, सं०] (सं.) अखंड, पूर्ण, क्रमबद्ध । जिसका भंग न हुआ हो । पूरा ।

अभय = का०, १६८, २४४, ।
[वि०] (सं.) निर्भय । निडर । बेखौफ ।

अभया = ल०, ३२ ।
[वि०,स्त्री०] (सं.) भय रहित । हरीतकी । हर्रे ।

अभागा = ल०, ७२ ।
[वि०] (सं.) भाग्य हीन । बदकिस्मत । मंद भाग्य ।

अभागिनी = प्रे०, १८ ।
[वि० स्त्री०] (हि.) भाग्यहीना । भाग्य रहिता ।

अभाव = का०, कु०, ६७ । का०, ५, १८, ३०,
[सं० पु०] १२८, १३१, १४५, १५१ । प्रे०, ३ ।
(सं.) ल०, ३१, ७४ ।
अनस्तित्व । असत्व । असत्ता । टोटा । कमी । घाटा ।

अभिनन्दन = का०, १०२ । ल०, १३, २८ । चि०,
[सं० पु०] ७,६१, ६२ ।
(सं.) प्रार्थना । प्रोत्साहन । आनंद । प्रशंसा । उत्तेजना । संतोष ।

अभिनय = आं०, ७६ । क०, १० । का०, कु०,
[सं० पु०] ५६ । का०, १०४, १३५, १५८ २४१,
(सं.) २६३ प्रे०, १३ । ल०, ६५ ।
बनावटी । हाव भाव द्वारा किसी विषय का वास्तविक अनुकरण करके दिखलाना । हृदय के भावों को व्यक्त करने के लिए अंगों द्वारा की गयी चेष्टा ।

अभिनयमय = ल०, ४६ ।
[वि०] (सं.) अभिनय से युक्त ।

अभिनव = का० १६१, २६०, २७७, २८५ २६२ ।
[वि०] चि०, ६६ । भ्रू०, ६७ । प्रे०, १८ ।
(सं.) ल०, ३६ ।
नया । नवीन । नूतन । ताजा ।

अभिनव-सी = का०, २२५ ।
[वि० स्त्री०] (सं.) नये के समान ।

अभिनवेन्दु = चि०, १६८ ।
[सं० पु०] सं.) नवीन चंद्रमा । नया चाँद ।

अभिभावक = प्रे०, १० ।
[वि०] (सं.) रक्षक । सरपरस्त । देखरेख करनेवाला । पराजित करनेवाला । तिरस्कार करने वाला ।

अभिमान = क०, ८ । का०, कु०, ४५, ८३ ।
[सं० पु०] का० ४६, १५७, १७७ । चि०, १६४,
(सं.) १७७ । भ्रू०, ३८, ६४ । ल०, ४६, ६७, ७५, ७६ ।
अहंकार । गर्व । घमंड । अपने को अधिक योग्य और समर्थ समझने की भावना ।

अभिमानी = का०, १७७, २५७ । चि०, १६४ ।
[वि०] (सं.) अहंकारी, घमंडी, गर्वीला ।

अभिराम = का०, कु०, ६७ । का०, ४६, ४७, ५३ ।
[वि०] (सं.) चि०, १५६ । भ्रू०, ५६, ६३, ६६ ।

प्रे०, ७।
मनोहर। सुंदर।

अभिलषित = का०, १६४।
[वि०] (सं.) जिसकी अभिलाषा की जाय। वांछित। चाहा हुआ।

अभिलाष = चि०, १७७।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) इच्छा। कामना। चाह।

अभिलाषा = आं०, ३८, ६५। का० कु०, ४६।
[सं० स्त्री०] का०, ४६, ६४, ६६, १०२, १०९ ११३, १३०, १४८, १५०, १६६, १८६। झ०, ३६, ४३, ५१। प्रे०, ३, १६। ल०, २२, ६०।
(सं.) कामना। आकांक्षा। चाह।

अभिलाषाओं = आं०, ११। का०, १६४, १७७।
[सं. स्त्री.] झ०, ७०।
अभिलाषा का बहुवचन।

अभिलाषा-शलभ=का०, १७६।
[सं० पु०] (सं.) इच्छा रूपी पतंग। कामना रूपी फतिंगा।

अभिलाषित = चि०, ५६।
[वि०] (सं.) इष्ट। चाहा हुआ।

अभिवादन = क०, २१। म०, २०।
[सं० पु०] प्रणाम, नमस्कार, वन्दना, स्तुति, किसी बड़े के प्रति प्रकट की जाने वाली श्रद्धा या आदर-भावना।

अभिव्यक्ति = का० १४०।
[सं० स्त्री०] स्पष्टीकरण। साक्षात्कार। आविर्भाव
(सं.) उस वस्तु का प्रत्यक्ष होना जो पहले प्रत्यक्ष न हो।

अभिशप्त = आं०, ७८।
[वि०] (सं.) शाप पाया हुआ। बद्दुआ पाया हुआ।

अभिशाप = आं० ७७। का०, ५, १६, ५३, १६२,
(सं० पु०) १६७, १६६, २२६। ल०, ७६।
(सं.) शाप, बद्दुआ। मिथ्या दोषारोप।

अभिषेक = आं०, ६६। का० कु०, ११३। का०, ४५। झ० ३७।
[सं० पु०] शांति या मंगल के निमित्त मंत्र पढ़कर कुशा तथा दूब से जल छिड़कना। जल-सिंचन। विधि के अनुसार मंत्रों द्वारा जल छिड़क कर अधिकार प्रदान करना। राज्य पद पर निर्वाचन। यज्ञ के पश्चात् शांति के निमित्त स्नान। छेद युक्त वह घड़ा जो शिवलिंग पर टपकने के लिए तिपाई पर रखा जाय।

अभिसारि = का०, ११।
[वि०] नायक या नायिका का परस्पर मिलने
(सं.) के लिए संकेतित स्थान पर जाना। युद्ध। चढ़ाई। आक्रमण। सहारा।

अभी = क०, १७, १६। का० कु०, १२०,
[क्रि०वि०] १२१, १२४, १२५, १२६। का०,
(हि०) ८२, १२६, १५०, १६०, १८३, १८५, १६८, २०६। चि०, १६६। म०, १, ३, ७, ५, १७। ल०, ४५, ७६।
इसी समय। इसी वक्त।

अभीष्ट = का०, कु० २६। म०, १८।
[वि०] (सं.) वांछित। चाहा हुआ। मनोनीत। पसंद का। अभिप्रेत। अभिच्छित। अभिलाषित।

अभीत = चि०, ६६, १४१। झ०, ७०।
[वि०] (सं.) न डरा हुआ। भय न खाया हुआ। भय रहित। निर्भय। निडर।

अभूतपूर्व = ल०, ६८।
[वि०] (सं.) जो पहले न हुआ हो। अपूर्व।

अभेद = का०, २८६। झ०, ६३।
[सं० पु०] भेद का अभाव। फर्क का न रहना।
(सं) साहित्य में एक अलंकार का नाम।

अभ्यर्थना = म०, १४।
[सं० स्त्री०] विनय। प्रार्थना। दरख्वास्त। अग-
(सं.) वानी। सम्मान के लिए आगे बढ़ कर अभिवादन करना।

अभ्यास = का०, ५१, २८७।
[सं० पु०] किसी कार्य को बार-बार करना। पुनः-

(सं.) पुनः अनुशीलन। पुनरावृत्ति। दोहराना। स्वभाव। मुहावरा। आदत। टेव। शिक्षा। एक काव्यालंकार का नाम जिसमें किसी दुष्कर बात को सिद्ध करनेवाले कार्य का वर्णन हो।

अभ्युदय = का० कु०, ३६। का०, ५६।
[सं० पु०] सूर्य आदि ग्रहों का उदय। अभीष्ट कार्य
(सं०) या काम की सिद्धि। उन्नति। बढ़ती। उत्सव। शुभ फल। दैवयोग।

अमंद = का०, ५६, १६८। वि० १, २५ ६१,
[वि०] (सं.) १३८, १४०, १६१, १६२, १६४, १६५, १६६, १७६। ल० १६। मंद का धीमा या मध्यम न होना। तेज। उत्तम। श्रेष्ठ, सुन्दर। उद्योगी। कार्यकुशल। चलता-पुरजा।

अमर = का०, ५, १४, २८, ७४, ११२, २२२।
[सं० पु०] ल०, १४।
(सं.) देवता। पारा नामक धातु। सेंहुड़ का पेंड़। अमरकोश के रचयिता अमरसिंह का नाम। उन्चास पवनों में से एक पवन। विवाह के पूर्व वर-कन्या के राशिवर्ग के संयोग के निमित्त नक्षत्रों का एक गण।

अमरतरंगिनि= चि०, ७१।
[सं० स्त्री०] देवताओं की नदी। देवनदी।
(सं.) देवगंगा।

अमरता = का०, ७, १८।
[सं०] देवत्व प्राप्त करना।

अमरते = का०, १२।
[सं०] अमरता का संबोधन।

अमरत्व = का०, १६६।
[सं०] अमर का भाव। अमरता। देवत्व।
(सं.) देवों का जीवन। जन्ममरण से मुक्ति।

अमरबेलि = आं०, ७३।
[सं० स्त्री०] कभी नष्ट न होने वाली लता। आकाश-बेंवर।

अमरषभरे = चि०, ४१।
[वि०] क्रोधयुक्त। कोपयुक्त। क्षोभयुक्त।
(हि.) क्षोभ से भरा हुआ। रस के तैंतीस संचारी भावों में से एक।

अमरसिंह = म०, ७।
[सं०] महाराणा प्रताप के पुत्र का नाम।

अमराई = का०, कु० ३६।
[सं०स्त्री०] (व०भा०) आम की बारी। आम का बाग।

अमरावती = चि०, ६७।
[सं० स्त्री०] (सं.) देवों की नगरी। इन्द्र की राजधानी।

अमल = आं०, ७१। का० कु०, ६२। चि०, १
[वि०] १५०, १६०, १७४, १७६, १७७।
(सं) ल०, ३५।
निर्मल। दोष रहित। पाप शून्य।

अमला = का०, ७६। चि०, १४६।
[वि० सं०] (स.) दोषरहित। स्वच्छ। पवित्र। लक्ष्मी।

अमा = का०, १६४। चि० १०१। भ्रु०, ६५।
[सं० स्त्री] (सं.) अमावस्या। वह रात्रि जिसमें चन्द्रमा की कोई कला उदित नहीं होती।

अमात्य = चि०, ५२, ७१।
[सं० पु०] (सं.) मन्त्री। वजीर।

अमिट = का०, २२२।
[वि०] हि.) नमिटने वाला। नष्ट न होने वाला।

अमित = चि०, १, ६, २२, १५४। प्रे०, १७।
[वि०] (स.) असीम। बेहद। अत्यधिक।

अमिताभ = ल०, १३।
[सं० पु०] अत्यधिक चमक-दमक वाला। असीम
(सं.) प्रभा सम्पन्न। भगवान बुद्ध।

अमुक = भ्रु०, ७५।
[वि०] (सं.) फलाँ। वह या यह। कोई।

अमूल्य = भ्रु०, ८०।
[वि०] (सं.) मूल्य रहित। अनमोल।

अमृत = का०, १८, १२४, १४७, १५२, २२४,
[सं० पु०] २६४। चि०, ७४। भ्रु०, ३०। ल०, १५।
समुद्र मंथन से निकले १४ रत्नों में से

एक। सुधा। पीयूष। जल। रोगहारी औषधि। देव। इंद्र। सूर्य। शिव। पारा। धन्वन्तरि। उड़द। सोना। अन्न। सोमरस। मुक्ति।

अमृतधाम = का०, १६२।
[वि०] (सं.) अमृत का घर।

अमृतसंतान = का०, ५८।
[वि०] (सं.) अमर पुत्र। भगवान के पुत्र।

अमोघ = का० १६५।
[वि०] (सं.) निष्फल न होने वाला। अचूक। लक्ष्य पर पहुँचने वाला। व्यर्थ न जाने-वाला।

अमोल = का०, ८१, १४८, १६६। भ०, ७४।
[वि०] (सं.) अमूल्य।

अम्लान = आं०, ६८। का० १२, २५, ४७, १६८, २४६।
[वि०] (सं.) जो कुम्हलाया या उदास न हो। प्रफुल्ल। प्रसन्न।

अयऊ = चि०, ६५।
[क्रि०] (ब्र० भा०) आये।

अयश = का०, कुं० ११६।
[सं० पु०] (सं.) अपकीर्ति। बदनामी।

अयाचित = का० कु०, १०५।
[वि०] (सं.) न मांगा हुआ। जो बिना मांगे मिला हो।

अयि = चि०, १३२।
[अव्य] (सं.) संबोधन चिन्ह। हे अरे। अरी।

अरघ = चि०, ४५।
[सं० पु०] (सं.) सोलह प्रकार के उपचारों में से एक। देवता के सामने फूल अक्षत, जल गिराने का कार्य। महापुरुष के आगमन पर हाथ धुलाने के लिए दिया जाने वाला जल।

अरण्य = क०, १६।
[सं० पु०] (सं.) वन। जंगल।

अरसौंहैं = चि०, ३।
[वि०] (सं.) आलस्यपूर्ण। आलस्य भरा।

अरराय = का०, १६८।
[क्रि० वि०] (सं.) अरर शब्द करके विदीर्ण होते हुए।

अरविन्द = का० कु०, ६७, ८३, ११२। चि०, २१।
[सं० पु०] (सं.) भ्रू०, परिचय। प्रे०, १०। कमल। पद्म। पारस। तांबा।

अरविन्द विकास सहित = चि०, १४५।
[वि०] (सं.) कमल के विकास के साथ।

अरविन्द सा = का०, कु० २६। चि० २, २२।
[वि०] (सं.) कमल के समान।

अरसीसी = चि०, २२।
[वि०] (सं.) तीसी के समान।

अराएं = का०, २६४।
[सं० स्त्री०] (सं.) पहिये के मध्य चारों ओर लगी लकड़ियां।

अराति = का०, कु० ११२।
[सं० पु०] (सं) शत्रु। दुश्मन।

अराम = चि०, २५, १४५।
[सं० पु०] (सं.) उद्यान। बाग।

अरामहिं = चि०, १५६।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) उद्यान, बाग।

अराल = का०, १६८।
[वि०, सं० पु०] (सं.) टेढ़ा। कुटिल। मस्त हाथी। राजा।

अरावली = ल०, ५७।
[सं० पु०] राजस्थान की प्रसिद्ध पर्वत शृंखला जो तीन सौ मील तक फैली है।

अरि = क०, १५। चि०, २२, ५३।
[सं० पु०] (सं.) शत्रु। दुश्मन।

अरिगन = चि०, ५३।
[सं० पु०] (ब्र.भा) शत्रुवृन्द। शत्रुओं का झुंड।

अरिगन सों = चि०, ६६।
[सं पु०] ब्र.भा.) शत्रुओं से। शत्रुवृन्द के समान।

अरिदर्प = चि०, ६७।
[सं पु०] (सं.) शत्रु का घमंड।

अरिदमन = का० कु०, ११२।
[वि०] (सं.) शत्रु को दमन करनेवाला। शत्रु का नाश करनेवाला।

अरिशिर = चि०, ६७ ।
[सं० पु०] (सं.) शत्रु का सर । बैरी का कपाल ।
अरिहूँ = चि०, १०३ ।
[सं० पु०] (ब्र भा.) शत्रु को, बैरी को ।
अरी = का० कु०, १०६ । का०, ५, ६, ७, ३६,
[अ०] ८४, १२७, १७५, १८४ । ल०, ११,
(हि०) १२, ५१ ।
[सं० पु०] शत्रु ।
विस्मय बोधक ।
अरुझी = चि०, १, ५७ ।
[अ०] (ब्र. भा.) अनिच्छा । घृणा । नफरत ।
अरुण = आं०, ६७ । का०, १० । का० कु०,
[सं० पु०] ३६, ११८ । का०, ६, ४६, ४७, ८२,
(सं.) ८६, १३५, १५६, १६७, १७५, १७६,
२२१, २६२, २८४ । चि०, १८, ५५,
६३, १७० । भ्रू०, परिचय, २१, २२,
२५, ६६ । प्रे०, १० । ल०, १५, ४१,
५६, ६० ।
लाल । सूर्य । सूर्य का सारथी । गरुड़ ।
संध्या की लालिमा । एक दानव । प्रातः
काल की लाली । कुंकुम । सिंदूर । मंजीटा
पुन्नाग वृक्ष । लाल कमल । लाल
मणि ।
अरुण कपोलों=ल०, ११ ।
[सं० पु०] (सं.) लाल गाल । रक्ताभ कपोल ।
अरुण किरण= चि०, २१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) लालकिरण । रक्त किरण ।
अरुण यौवन = भ्रू०, ६७ ।
[सं० पु०] (सं.) लाल जवानी । नई जवानी ।
अरुण सिन्दूर विभूषित=चि०, २८
[वि०] (हि.) लाल सिंदूर से सुसज्जित ।
अरुणांचल = का०, २२२ । ल०, २४ ।
[सं० पु०] (सं.) रक्तांचल । लाल अंचरा ।
अरुणाश्रित = चि०, २८ ।
[वि०] (सं.) अरुण का आश्रित ।
अरुणिमा = चि०, १६८ । ल०, १०, ६०, ७६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) ललाई । लालिमा । अरुणता
अरुणे = आं०, ६१ ।
[अ०] (सं.) अरुण का संबोधन ।
अरुणोदय = का०, ३१, ७७ । भ्रू०, ३८ । प्रे०
[सं० पु०] १८, २६ ।
(सं.) प्रातःकाल । सूर्योदय ।
अरुनारे = चि०, १७५ ।
[वि०] (ब्र. भा.) लाल । रक्ताभ ।
अरे = क०, १०, २७, २८ । का०, ७, २५,
[अ०] (सं.) ११४, १२७, १५३, १६२, १७७,
१७६, २११, २१५, २२६, २५७ ।
चि०, १५२, भ्रू०, ८३ का० कु०, ८८,
१२५ । म०, ६ । ल०, ५, ५७ ।
संबोधन । हे । ऐ । अयि ।
अर्चना = का०, ६१ । भ्रू०, ३६, ३७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) पूजा । श्रद्धा की भावना । सत्कार करना ।
अर्चियाँ = का०, ३२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) किरणें ।
अर्जुन = का० कु० ११५ । चि, ६१ ।
[सं० पु०] युधिष्ठिर के एक भाई का नाम ।
अर्घ = का०, ८७, ११०, १४६ । ल०, ३४ ।
[सं० पु०] पूजा के लिए जल । मुख धोने के लिए
(सं.) जल । अतिथि के सत्कार के लिए जल ।
अर्द्ध = ल०, ७५ ।
[सं० पु०] (सं.) आधा ।
अर्ध = का०, ३३ । भ्रू०, २४ ।
[सं० पु०] (सं.) आधा ।
अर्धक्षेम = भ्रू० ३८ ।
[सं० पु०] (सं.) आंशिक कल्याण ।
अर्धांगिनी = का० २८१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.)धर्मपत्नी । विवाहिता स्त्री ।
अर्पण = का०, १०५ । भ्रू०, समर्पण ।
[सं० पु०] (सं.) देना । स्वत्व त्याग । एक दम दे देना ।
अर्पित = का०, २०, १२८ ।
[वि०] (सं.) दिया हुआ । स्थापित । प्रदत्त ।
अर्बुदगिरि = म० का० भ० ७ ।
[सं० पु०] (सं.) आबू नामक पर्वत जो राजस्थान में है ।

अलक = का०, १७६। चि०, १७५, । झ०, ३१।
[सं० पु०] (सं.) मस्तक के इधर-उधर लटकने वाला बाल। घुँघराले बाल। जुल्फ।

अलकावली = का० कु०, १८, १६। ल० ५६। का०, २५२।
[सं० स्त्री०] घुंघराले बालों की पंक्ति।
(सं.)

अलक जाल= का० २५२।
[सं० पु०] (सं.) घुंघराले बालों का समूह।

अलकन सों = चि०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) घुंघराली जुल्फों से।

अलकाहु = चि०, ५०।
[ब्र० भा०] दे० अलक।

अलकें = आं०, २५। का०, १४२, १६८, २२१।
(ब्र० भा०) दे० अलक।

अलकों = आं०, ४७। का०, ३६, ६६, १२५,
[सं० पु०] १५६, २८६। ल०, १०, १६, ४८।
(सं.) दे० अलक।

अलकों-सी = का०, १०३।
[वि०] (सं.) जुल्फों के समान।

अलख = ल०, २०।
[वि०] (हि.) अदृश्य। न दीखने वाला। भगवान।

अलग = आं०, २०। का० कु०, १०६, ११६।
[वि०] (हि.) का०, ११७, १६३, १६५, २६१। ल० ४०।
पृथक्। न्यारा। भिन्न।

अलग-अलग = का०, १८६।
[वि०] (हि.) भिन्न भिन्न।

अलगाना = का०, १३६।
[स०] (हि.) अलगाना का भूतकाल। पृथक हुआ। अलग हुआ।

अलबेली = आं०, २४। चि०, ५६।
[वि०] (हि.) सुंदरी। अपूर्व सौंदर्यमयी।

अलभ्य = ल०, ७०, ७३।
[वि०] प्राप्ति के अयोग्य। न मिलने योग्य।
(सं.) दुर्लभ।

अलम् = झ०, ८१।
[अ०] (सं.) बस। पर्याप्त। व्यर्थ। निष्फल।

अलम्बुषा = का०, २६३।
[सं० स्त्री०] गोरखमुंडी। स्वर्ग की एक अप्सरा।
(सं.) घुसने से रोकने के लिए खींची गयी रेखा। लजावन्ती।

अलस = आं०, ६७। का०, १८, ३५, १२०,
[वि०] (सं.) १ ०, १६६। झ०, २४। ल०, २५, ३१, ४५, ६१।
आलस्य युक्त। आलसी।

अलस-कटाक्ष = प्रे० १८।
[सं० पु०] आलस्ययुक्त कटाक्ष।

अलखाई = आं०, २७। का०, २३, ६३, ६७, ८८,
[वि०] २२१।
(ब्र० भा०) शिथिल। क्लान्त।

अलाउद्दीन = ल०, ७७।
[सं० पु०] एक खिलजी सम्राट का नाम।

अलात-चक्र = का० २००।
[सं० पु०] किसी जलती हुई लकड़ी को आकाश में घुमाने से बना हुआ घेरा। बनेठी।
(सं.)

अलि = क०, १६। चि०, १७१, १७५।
[सं० पु०] कोयल। भौंरा। कौवा। बिच्छू। कुत्ता।
[सं० स्त्री] सखी-सहेली।

अलि-अलकों = आं० १२।
[सं० पु०] भौंरों के समान काले केशों।

अलिअवली = का० कु०, ६७। चि०, २।
[सं० स्त्री०] भ्रमरों की पंक्ति। सखियों की पंक्ति।

अलिकुल = आं०, ३१।
[सं० पु०] (सं.) भ्रमरों का कुंज।

अलिकुलमिषित=चि०, १४४।
[वि०] (ब्र. भा.) भ्रमरों के समूह द्वारा मर्दित।

अलिगन = का० कु०, ३६।
[सं० पु०] (हि.) भौंरे।

अलिन = चि० १६७।
[सं० पु०] (ब्र०भा०) भौंरे। अलि का बहुवचन।

अलिपुंज = का० कु०, १४। चि०, १५।
[सं० पु०] (सं.) भंवरों का झुंड।

अलियों = आ०, ३० । झ०, १७ ।
[सं० पु०] (हि.) भौंरों ।
अलिवृन्द = प्रे० १३ ।
[सं० पु०] (सं.) भ्रमरों का समूह ।
अलिसम = चि०, १५ ।
[वि०] (ब्र.भा.) भौंरों के समान ।
अली = चि०, ६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) सखी । सहेली । पंक्ति ।
[सं० पु०] भौंरा ।
अलीक = का०, २५१ ।
[वि०] (सं०) असत्य । झूठा । बेसिर पैर का ।
अलीगण = का० कु०, १३ ।
[सं० पु०] भ्रमरों का समूह । भौंरों का दल ।
अलौकिक = का० कु०, ५६ । चि०, ३६ ।
[वि०] अपूर्व । आश्चर्यमय । अभूतपूर्व । असा
(सं.) मान्य । असाधारण ।
अल्पना = चि०, १६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) साँझी । आंगन पूरने की कला ।
अल्हड़ = ल०, २३ ।
[वि०] (हि०) अल्पवयस्क । कमसिन । अनुभवहीन ।
अवकाश = आं. १३, ४१, ४८ । का० १२०, १७६,
[स० पु०] २३५, २५६ । झ०, २१ ३३, ४३ ।
(सं.) छुट्टी । विश्राम ।
अवकाशगत = का० कु०, ६३ ।
[वि०] (सं.) अवकाश से संबद्ध । छुट्टी से संबद्ध ।
अवगत = चि०, २५ ।
[वि०] (सं.) ज्ञात । जाना गया ।
अवगाहते = का० कु०, २७, ८४ ।
[अ० क्रि०] (हि.) नहाते । अच्छी प्रकार समझते ।
अवगाहन = प्रे० १५ ।
[सं० पु०] नहान । समझ ।
अवगाहना = का० कु०, ८४ ।
[क्रि०] (हि०) नहाना । थहाना ।
अवगुंठन = का०, ६५, ६८ । आ०, ६८ ।
[सं० पु०] (सं.) घूंघट ।
अवचय = चि०, ७० । प्रे०, ११ ।
[सं० पु०] फूल आदि इकट्ठा करना, चुन कर जमा
(सं.) करना ।
अवज्ञा = चि०, ७४, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) अपमान । तिरस्कार । आज्ञा या नियम का उलंघन करना ।
अवतार = का० कु०, ६४ ।
[सं० पु०] प्रादुर्भाव । अवतरण । उतरना । जन्म
(सं.) लेना । शरीर धारण करना ।
अवध-राज = चि०, ५०, ५३, ५४ ।
[सं०पुं०] राज्य, जहाँ । बध का अभाव हो । कोशल
(ब्र० भा०) देश । अयोध्या । अयोध्या का राजा ।
अवधि = चि०, ५३ । ल०, १५, २६ ।
[सं० पुं०] सीमा । हद । काल । मनोयोग । अपा-
(सं.) दान । (अव्यय) तक, पर्यन्त ।
अवनत = का०, २३४, २३७ ।
[वि०] (सं.) गिरा हुआ । पतित । झुका हुआ ।
अवनति = म०, २ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) पतन । गिरावट । नीचे झुकना ।
अवनति-करण = का०, २३६ ।
[सं० पु०] नीचे झुकाना । गिराना ।
अवनि = चि०, १८६ । ल०, १८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) भूमि । पृथिवी ।
अवभृत = ल०, ६३ ।
[सं० पु०] यज्ञ के अन्त में किया जाने वाला
(सं.) स्नान । वह शेष कर्म जिसके करने का विधान मुख्य यज्ञ के समाप्त होने पर है ।
अवयव = का०, ४, १४, १०४, २७७, २८७ ।
[सं० पु०] (सं.) भाग । अंग । हिस्सा ।
अवराधि = चि०, २६ ।
[क्रि० अ०] (ब्र०.भा.) पूजकर ।
अवरुद्ध = का०, १४५ ।
[वि०] (सं.) रुका हुआ । गतिविहीन । रुँधा हुआ ।
अवरेखो = चि०, २७ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) देखो । चित्रित करो । सोचो । कल्पना करो । अनुमान करो ।

अवरैख्यो = चि०, ७४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) देखा। चित्रित किया। सोचा। कल्पना किया। अनुमान किया।

अवलम्ब = क०, २८। का०, ५६, १३५, १६८, १७२, २१३, २१८, २१६, २६।
[सं० पु०] (सं.) म०, १२। ल०, ७४। आश्रय। ठिकाना। आधार। सहारा।

अवलंबन = का०, २६, ६६, १२१, २३७।
[सं० पु०] (सं.) प्रे०, १८। सहारा, आश्रय, आधार, ठिकाना।

अवलंबित = का०, ४७।
[वि०] (हि.) सहारा लिया हुआ। आश्रित। निर्भर।

अवली = चि०, ६३, ७१, ७२, ६३, १४८, १७५।
[सं० स्त्री०] (हि.) पंक्ति। समूह।

अवलीन = चि०, ६८।
[वि०] (सं.) छिपा हुआ। गुप्त। नीचे धँसा हुआ।

अवशिष्ट = का०, ३२, १०३, १६७। म०, ।
[वि०] (सं.) बचा हुआ। शेष पड़ा हुआ।

अवशेष = चि०, १७०।
[सं० पु०] (सं.) बचा हुआ। कार्य में न आया हुआ। शेष।

अवश्य = म०, १६।
[वि०अ०] (सं.) जरूर।

अवसर = क०, ११। का० कु०, ३३, ३४, ४६।
[सं० पु०] (सं.) का०, २६०। चि०, १०, १८, ६५। समय। काल। अवकाश। मौका। फुरसत। संयोग।

अवसाद = का०, ६, १८, ५५, ७०, ८२, २०६।
[सं० पु०] (सं.) भ०, ३५। ल०, ५६। नाश। क्षय। विषाद। दीनता। थकावट। रंज।

अवसाद-चीर = का०, १३६।
[पूर्व० क्रि०] हि.) दुःख या चिंता को दूर करके।

अवसाद-सी = ल०, २७।
[वि०] (हि.) दुःख के समान।

अवसादमयी = का०, १०३।
[वि०] (हि.) दुःखमयी। चिन्तामयी।

अवसान = का०, ३। भ०, ३४, ८८।
[सं० पु०] (सं.) समाप्ति। अन्तिम स्थिति। अंत समय।

अवस्था = का०, २००। प्रे०, ४, ६, ६।
[सं० स्त्री०] (सं.) दशा। स्थिति।

अवहेलना = ल०, ७६।
[सं० स्त्री०] सं.) अपमान। तिरस्कार।

अवहेलि = चि०, ५६, १४२, १४३।
[अ०] (ब्र. भा.) तिरस्कार करके। अपमान करके।

अवहेली = चि०, ५६।
(अ०) तिरस्कार करने वाला। अपमान करने
(ब्र. भा.) वाला।

अवाध = का०, १५७, २०८।
[सं० पु०] (सं.) निरन्तर। बिना बाधा के। बराबर।

अवाध्य = म०, २२।
[वि०] न रोका जाने योग्य। निर्मुक्त। रोकने
(सं.) से न मानने वाला।

अविकल = का० कु०, ८३। चि०, ५६।
[वि०] ज्यों का त्यों। बिना उलटफेर का।
(सं.) पूर्ण, पूरा।

अविचल = आँसू, ६८। का०, १६१, २२०।
[वि०] चि०, ३३।
(सं.) स्थिर। अटल। अचल।

अविज्ञात = का०, २६६।
[वि०] (सं.) न जाना हुआ। न समझा हुआ।

अविनाशी = का० कु०, ६०, ६१।
[वि०] जो कभी नष्ट न हो। नित्य। सदा
(सं.) एक रस रहनेवाला। अक्षर।

अविनीत = का०, १८६।
[वि०] अविनयी, उद्दण्ड, उच्छृंखल।

अविरत = का० कु०, १३। का०, ८१, १७०।
[सं० पु०] विराम का अभाव। निरंतर, लगातार।

अविरल = का० कु०, १३, ५३। का०, २३४,
[वि०] २४०, २४५, २६४, २७३, २७८।
(सं.) चि०, ५५। भ०, २६, ७०।
मिला हुआ। अभिन्न। घना।

अविरुद्ध = का०, १८५।
[वि०] (सं.) अनुकूल। जो प्रतिकूल न हो।
अविश्वास-सी० = भ्र,० ८०।
[वि०] (सं.) अविश्वास के समान।
अव्यक्त = का०, ७२, ६०। चि०, ७२।
[सं० पु०] विष्णु। कामदेव। शिव।
[वि०] (सं.) जो स्पष्ट न हो। जो प्रत्यक्ष न हो।
अशरीरी = का०, २६४।
[वि०] (सं.) शरीर रहित। आकार रहित। निराकार।
अशांत = का०, ८५, ६२, ६३, १४४, १५८,
[वि०] (सं.) १६०, १६१, १६६, १६७, २४०, २४१।
जो शांत न हो। चंचल।
अशुद्ध = का०, १६६।
[वि०] अपवित्र। जो शुद्ध न हो। जो गंदा
(सं.) हो।
अशेष = का०, १४।
[सं० पु०] पूरा। समूचा। शेष रहित। अनंत।
(सं.) अपार।
अशोक = चि०, ५७, १४०, १५८, १५५।
[सं० पु०] शोक रहित। एक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ
(सं) आम की पत्तियों के समान लंबी तथा लहरदार होती हैं। पारा। एक भारतीय प्रसिद्ध सम्राट का नाम, जिसने समस्त एशिया में बौद्ध धर्म का प्रचार किया।
अश्रान्त = का० कु०, ११६। का०, ४७, ८१,
[वि०] (सं.) ६१। भ्र०, २८ ५६, ७१, ७२।
अश्रांत = ल०, २१।
[वि०] (सं.) श्रम रहित। न थका मांदा।
अश्रु = का० कु०, ४५, ४६, ६८। का०, १७१।
[सं० पु० चि० ५६, ७३। प्रे०, २०।
(सं) नेत्र, जल, आंसू। आँख से निकलने-वाला जल। काव्य के नव सात्विक अनुभावों में एक अनुभाव।
अश्रु-कण = का० कु०, २६। भ्र०, ४२।
[सं० स्त्री०] आँसू की बूँद।
अश्रु-जल = का०, १०६। प्रे० २२।
[सं० पु०] आँसू का जल। अश्रुवारि।
(सं.) आँसू।
अश्रु-भरे = चि०, १५२।
[वि०] (हि.) आँसू से भरे।
अश्रु-मय = का०, १३।
[वि०] (सं.) आँसू से भरा हुआ।
अश्रु-मयी = आं०, ७५।
[वि०] (सं.) आँसू से भरी हुई।
अश्रु-वारि = चि०, ३६।
[सं. पु०] (सं.) आँसू का पानी।
अश्रु-सर = का०, २१७।
[सं. पु०] (सं.) आँसू का तालाब।
अश्व = का० कु०, ४४, ७२, ११४। चि०, २,
[सं. पु०] ६४। म०,
(सं.) घोड़ा। तुरंग। वाजि।
अष्टमी = भ्र०, ७२, ८५। प्रे०, ११।
[सं० स्त्री०] आठवीं। आठवीं तिथि। कृष्ण का
(सं.) जन्म-दिन।
असंख्य = का०, १६, २५२, २६१। चि०,
[वि०] १४०। भ्र०, ६६। ल०, ११।
(सं.) संख्या रहित। अनंत। अगणित। अगण्य।
असंयत = चि०, ५।
[वि०] (हि.) संयम रहित। उद्दण्ड।
अस = चि०, ३२, ३३, १०७।
[सर्व वि०] (ब्र.भा.) ऐसा। यह। इस प्रकार का।
असत = का०, २५१।
[वि०] (सं.) असत्य। मिथ्या। सत्य रहित।
असत्य = का०, १५२।
[वि०] (सं०) मिथ्या। झूठ।
असन्तोष = भ्र०, ४१।
[सं० पु०] (सं०) संतोष का अभाव। अधैर्य। अतृप्ति। अप्रसन्नता।
असफल = का०, ७, ५३, १२३, १८६। ल० ८०।

[वि०] (सं.) सफलता का अभाव। जो अपने कार्य अथवा उद्देश्य में सफल न हुआ हो।

असफलता-सी = का०, १०३।
[वि०] (हि.) सफलता के अभाव सा।

असफलताओं = का०, ३७, ६५, १२१, १५८।
[सं० स्त्री०] असिद्धियों, नाकामयाबियों।

असभ्य = चि०, ८४।
[वि०] (सं.) अशिष्ट। गँवार। उजड्ड।

असमय = का० ७६।
[सं० पु०] (सं.) बुरे समय।

असल = प्रे०, ६। म०, २३।
[वि०] (हि.) सच्चा। खरा। श्रेष्ठ। शुद्ध। उच्च।

असवारी = चि०, ७२।
[सं० स्त्री०] (हि.) वह चीज जिसपर सवार हों। पालकी, नालकी।

असहाय = क० २५, २८। का०, ४०, ४८, ५६, ८२, ११६, ।
[वि०] (सं.) सहारा रहित। निरावलंब। अनाथ।

असीम = आं०, ७, ३४, ४८। का० कु०, २।
[वि०] (सं.) का०, २६, १६५, १५२, १५५, १८६, १६८, २०६, २४५, २६०। चि०, ५६, १३६। क०, २२।
सीमा रहित। अनन्त। अवधिरहित।

असीस = चि०, १५२।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) आशीर्वाद, दुआ।

असुर = का०, ५६, १११, ११४, २०१।
[सं० पु०] (सं.) दैत्य, दानव। राक्षस। देवों के शत्रु।

असुरों = का०, १६१।
[सं० पु०] (सं.) राक्षसों।

अस्त = का०, ८४, ८८, २६१। चि०, १०१।
[वि०] (सं.) झ०, ८५। ल०, ४४।
डूबा हुआ। समाप्त। मृत। खत्म। गुप्त। लुप्त। छिपा हुआ।

अस्तधाम = चि०, ६६।
[वि०] (सं.) अस्ताचल को। यमधाम को। मृत्यु के घर को।

अस्त-व्यस्त = चि०, १४। झ०, २२, २४, ३४।
[वि०] (सं.) अव्यवस्थित, बिखरा हुआ। परेशान। चिंतित।

अस्ताचल = आं०, ५६। प्रे०, ५।
[सं० पु०] (सं.) पश्चिमांचल पर्वत जिसके पीछे सूर्य अस्त होता है।

अस्ति-नास्ति = का०, २७०।
[क्रि० वि०] सत्ता या अभाव।

अस्तित्व = का० कु०, ७८। का०, २६, ३३, ७२, १४०, १४१, १५७। प्रे०, १७।
[सं० पु०] (सं.) लहर, ७८।
सत्ता का भाव विद्यमानता, मौजूदगी।

अस्तु = क०, ३०, ३१। चि०, ६४।
[क्रि० वि०] (सं.) जो हो। अच्छा। भला।

अस्त्र = का०, १४६, २००। झ०, ८८।
[सं० पु०] ल०, ६५।
(सं.) फेंककर चलाया जानेवाला हथियार। वह हथियार जिसके द्वारा कोई वस्तु फेंकी जाय जैसे बंदूक, तोप।

अस्थि = का०, ११६। ल०, ५७।
[सं० स्त्री०] (सं.) हड्डी।

अस्थिर = का०, ३३, २८१। ल० ४६।
[वि०] (सं.) जो स्थिर न हो। चंचल। डाँवाँडोल।

अस्पष्ट = का०, ६४, १७५।
[वि०] (सं.) जो स्पष्ट न हो। जो प्रकट न हो।

अस्फुट = का०, १०५। चि०, १६६।
[वि०] (सं.) विरल। अव्यक्त। जो साफ न हो। गूढ़ जटिल, दुसह।

अहंकार = का०, कु०, ८१।
[सं.पु०] (सं.) घमंड, अभिमान, गरूर।

अहंता = का०, १६१, १६५।
[सं.] (सं.) अहं का भाव।

अहा = का०, कु०, १०३।
[क्रि० वि०] आश्चर्य सूचक शब्द।

अहा ! = क०, ८ । का० कु०, १५, ५३, १०६ ।
[क्रि० वि०] भ०, १६ । प्रे०, २ ।
(सं.) आश्चर्य व्यक्त करने वाला शब्द ।

अहेर = का०, १५० । चि०, ६ ।
[सं. पु०] (सं.) शिकार, मृगया ।

अहेरी = का०, १४२ ।
[सं० पु०] (सं.) शिकारी । आखेटक ।

अहैं = चि०, १५, २६, ५७, ७२, ७३, ६१,
[क्रि०] १०३ १४७, ।
(ब्र. भा.) हैं ।

अहो = क०, १६, १७, २८ । का०, कु०, २०,
[क्रि० वि०] २८, ३६, ५४, ६१, ७५, ८३ । चि०,
(हि.) ११, ७२, ७३, १५२, १५६, १५७,
१७२, १८३, १८४ । भ०, ४३ ।
प्रे०, ४, ६ । म०, १६, १५ ।
एक अव्यय जिसका प्रयोग कभी संबोधन के समान और कभी करुणा खेद, प्रशंसा, हर्ष और विस्मय प्रकट करने के लिए किया जाता है ।
हाय ! अरे ! वाह वाह ! शाबास !

अहोभाग्य = ल०, ७८ ।
[वि०] (हि.) भाग्यशाली, खुशकिस्मत ।

अहौं = चि०, ५० ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) हूँ ।

अहो = चि०, ३१, १४१, १५१, १८६ ।
[क्रि०] (हि.) हूँ ।

आ

आ = क०, २६ । का०, २५७ ।
[क्रि०] (हि.) आओ ।

आंख = आं०, २०, ३०, ३६, ४६, । क०,
[सं० स्त्री] १० । का० कु०, ६०, १०७ । का०,
(हि.) ५१, ६६, ७७, ८५, ८६, ६८, २१८,
२६१ । भ०, १६, ३२ । ल०, ३२
६३ ।
नेत्र । चक्षु ।

आंखमिचौनी-क्रीड़ा = प्रे०, १५ ।
[सं० पु०] लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का
(हि.) किसी दूसरे लड़के की आंख बंद कर देता है और बाकी लड़के इधर-उधर छिपते हैं । आंख मूँदे लड़के को उन्हें ढूँढ़ कर छूना पड़ता है ।

आंखिन = चि०, ७२ ।
[सं०] (ब्र. भा.) आँख का बहुवचन ।

आंखें = आं०, ५७, ६५ । का०, १७, ३५, ६३,
(हि.) ६७, २१५, २२१, २६४ । चि०, ५६ ।
भ०, २३, ४७ । म०, ६ ।
आँख का बहुवचन ।

आँखों = आं०, ५३, ५८, ६८ । का० कु०, ७७ ।
(हि.) का०, ६४, ६५, ६६, ८८, ६७, १०१,
१०४, १२२, १४२, १५१, १८४,
२१६ । भ०, २१, ३६, ४४, ४६, ४७,
४८, ६१ । ल०, १६, २०, २२, २३,
२७, ३७, ३८, ५२ ।
आँख का बहुवचन ।

आँगन = आं, १६, ५१, ५५ । का०, २६२ ।
[सं० पु०] भ०, २८ । प्रे० १२ ।
घर के अन्दर का सहन । अजिर । चौक । अंगना ।

आंच = का० कु०, ५१ । भ०, ३४ ।
[सं० स्त्री०] चि०, २४ ।
(हि.) धमक । अग्नि की लपट । गर्मी । ऊष्णता ।

आंतरिक = का० कु०, १५, १६, २६, ५५, १२३,
[वि०] (सं.) १२५ । चि०, १८, २२० । प्रे०, २४ ।
भीतरी । अन्दर का ।

आन्दोलन = का०, १६८, १८६ ।
[सं. पु०] (सं) हलचल । धूम । उथल-पुथल ।

आन्दोलित = ल०, ६२ ।
[वि०] (सं०) हलचल युक्त । झोंका खाता हुआ ।

आंधी = का०, २२३, २२८ । चि०, १६ । भ०,

[सं० स्त्री०] ५२, ८४ । ल०, १६, ७१, ७७ ।
(हि.) बहुत वेग की हवा जिसमें इतनी धूल उड़ती है कि चारों ओर अंधियाली छा जाती है ।

आंसू = आं०, १२, १२, १३, ३२, ५३, ७८,
[सं० पु०] ७६ । का० कु०, २३, ३१ । का०,
(हि.) १०६, १६४, १७८ । झ०, २१, ३१, ४६ । प्रे०, १५ । ल०, २४, ३०, ३६, ३८, ४२, ४८ ।
आँख का पानी, अश्रु, आँख का जल ।

आंसू-धारा = आं०, ३६ । का० कु०, १३ ।
[सं० स्त्री०] आँसू का प्रवाह ।

आ-आकर = ल०, ६० ।
[अ०] उपस्थित होकर ।

आइ = चि०, ५७ ।
[क्रि० अ०] (ब्र. भा. आकर ।

आई = आं०, ७६ । क०, ३० । का०, १६६, १७१, १७२, २२६, २३३ । चि०, ६६ । ल०, ६२ ।
[क्रि० अ०]
(हि.) आयी । उपस्थित हुई ।

आओ = आं०, ५१ । का० कु०, १० ८४, ६८ । चि०, ३४ । झ०, ५३ ।
[क्रि०]
(हि.) उपस्थित होओ ।

आकर = आं०, १६, २६, ३४ । का० कु०, ३०, ३४ । का०, २१२, २१५, २६५ । झ०, ३६, ४६, ७८ । प्रे०, १४ । ल०, १५, ३८ ।
[सं० अ०]
(हि.) घर, खजाना, भंडार, उपस्थित होकर ।

आकण्ठ = का० कु०, १२१ ।
[वि०] (सं.) पूर्ण रूपेण । गले तक ।

आकर्षक = चि०, ३० ।
[वि०] (सं.) सुन्दर । अपनी ओर खींचनेवाला । आकर्षण करनेवाला ।

आकर्षण = का०, २०, ४७, ५६, ५८, ७२, ७३, १२८, २२७, २३७, २४४ । चि०, ३१ ।
[सं० पु०]
(सं.) खिंचाव । किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना । तंत्र शास्त्र में एक प्रकार का प्रयोग जिसके द्वारा दूरस्थ मनुष्य या पदार्थ पर पास आने के लिए प्रभाव डाला जाता है ।

आकर्षण-मय = का०, १५३ । ल०, ३० ।
[वि०] (सं.) सौन्दर्यमय ।

आकर्षित = क०, १३ । प्रे०, २ ।
[वि०] (सं.) खिंचा हुआ । मुग्ध ।

आकस्मिक = का०, १८६ ।
[वि०] (सं.) अचानक या सहसा होनेवाला । किसी घटनावश या संयोगवश हो जानेवाला । अयाचित ।

आकांक्षा = का०, १६६, २६७ ।
[सं० स्त्री०](सं.) इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

आकांक्षा-जलनिधि=का०, १६५ ।
[सं० स्त्री०] (सं) अभिलाषा-सागर । इच्छा-सिन्धु ।

आकांक्षा-तृप्ति = का०, ७४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) इच्छा की पूर्ति । अभिलाषा की तुष्टि । संतुष्टि ।

आकार = क०, ३२ । का० कु०, ६२ । का०, ७२, १०५, १२६, १७६, १६२, २८६ ।
[सं० पु०] (सं.) आकृति, रूप । स्वरूप । डीलडौल, कन्धा । बनावट । संगठन । चिह्न । चेष्टा ।

आकाश = आं०, ४८, ४६, ७३ । क , ८, ११ ।
[सं० पु०] का०, कु० ५, ६, १७, २६, ४२, ५० । का०, ८१, १६०, १६५ । चि०, ६, १०१, १३६ । झ०, २४ । प्रे० १४ ।
(सं.) नभ । गगन । आसमान । अंतरिक्ष ।

आकाश-पट= का० कु०, ६ ।
[वि०] (सं.) आकाश का वस्त्र । दिगंबर ।

आकाश-बिहारी=क०, १५ ।

[वि०] (हि.) आसमान पर विचरनेवाला, सूर्यादि ग्रह । पक्षी ।

आकाश-रंध्र = का०, ६६ ।
[सं०] (सं.) आकाश का छिद्र ।

आकुल = क०, १८ । का०, १५० । चि०, ६८ ।
[वि०] (सं.) ल०, १५ ।
व्यग्र, व्यस्त, घबड़ाया हुआ ।

आकुलता = का०, ११६, १२८, १४५ । चि०, ७३ ।
[सं० स्त्री०] विकलता अस्थिरता । चंचलता ।
(सं.) विक्षोभ ।

आकुलि = का०, १११, ११२, २०१ ।
[सं०] सं.) असुर पुरोहित का नाम । मनु का पुरोहित ।

आकृति = का०. २६३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) आकार । रूप । स्वरूप ।

आक्रमण = म०, २३ ।
[सं० पु०] (सं.) हमला, चढ़ाई, वार ।

आक्रान्त = का०, ६, ६३ । चि०, ३ ।
[वि०] जिस पर आक्रमण या हमला किया
(सं.) गया हो । पराजित । अभिभूत ।

आके = का०, कु०, ५६ ।
[क्रि० अ०] (दे० 'आकर' ।)

आखेट = चि०, १५१ ।
[सं० पु०] शिकार, मृगया ।

आगंतुक = का०, ५०, ५५, १६१ ।
[वि०] आनेवाला । आगमन शील । जो इधर-
(सं.) उधर से घूमता हुआ आ जाय । अतिथि ।

आग = का०, २०० । चि०, ५७ । ल०, ३८ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) अग्नि । ताप । सुंदर ।

आगत-पतिका = क , ७ ।
[सं. स्त्री०] (सं.) जिसका पति परदेश से आ गया हो ।

आगम = चि०, १५६ । प्रे० २ ।
[सं० पु०] आगमन । होनहार, भवितव्यता । आय,
(सं.) आमदनी । वेद, शास्त्र । नीति ।

आगमन = का०, कु०, ६६, १२४ । चि०, ३१,
[सं० पु०] ६३ । ल०, १५ ।
(सं.) आमद । आगम । आय ।

आगरे = म०, २० ।
[सं० पु०] उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध नगर । यह मुगल शासकों की राजधानी थी ।

आगे = आं०, ६४ । का०, ६६, ११६, १४१,
[क्रि० वि०] १८१, २५७, २७८, २८३ । का०, कु०,
(हि.) २५ । प्रे०, ४ । म०, ५ ।
अग्रभाग में । समक्ष । सामने । जीवन काल में । जीते जी । बाद में । अनन्तर ।

आग्रह = चि०, ५ । भ्रू०, ७४ ।
[सं० पु०] अनुरोध । हठ । परायणता । तत्परता ।
(सं.) बल । जोर । आवेश ।

आघात = चि०, १३ ।
[सं० पु०] (सं.) ठोकर । धक्का । मार । चोट । आक्रमण ।

आघातों = का०, कु०, ६२, ६३ । का०, १८१ ।
[सं० पु०] (हि०) आघात का बहुवचन ।

आच्छादित = का० कु०, १२२ । प्रे० ३ ।
[वि०] (सं.) ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त । आवृत्त ।

आज = क०, २६, २६ । का०, १०, १२, १३,
[अ०] ४६, ५२, ५८, ८६, १४२, १५४,
(हि०) १६२, १६७, १७०, १७७, २००,
२८६ । का० कु०, १०६, ११८ । भ्रू०,
२८, ३६, ४५, ४६, ५६, ५६, ६१,
६६, ६६ । म० १२, १४, १५ ।
वर्तमान दिन । जो दिन बीत रहा है ।

आजीवन = ल०, ७८ । म० ६ ।
[क्रि० वि०] (सं) जीवन पर्यन्त । जिंदगी भर ।

आजु = चि०, ७१, ७४ ।
[अ०] (ब्र० भा०) (दे० आज ।)

आज्ञा = क०, ११, २१, २३ । का०, २४३ ।
[सं० स्त्री०] ६१, चि०, ४१, ६४, ६६ । भ्रू०, ४६,
(सं.) ८५ । ल०, ७३ । म० ३ ।
आदेश, हुक्म, अनुमति ।

आज्ञा-पत्र = म०, २४ ।
[सं० पु०] (सं.) आदेश पत्र, हुक्मनामा ।

आटा = ल०, ५२।
[सं० पु०] पिसान। किसी अन्न का चूर्ण।
(हि.) बुकनी।

आडम्बर = म०, १४।
[सं० पु०] गंभीर शब्द। ऊपरी बनावट। झूठा
(सं.) आयोजन। युद्ध में बजाया जानेवाला बड़ा ढोल। दर्प।

आड़ = का०, कु०, ६३।
[सं० स्त्री०] (हि.) ओट, परदा। रक्षा। शरण।

आतंक = का०, १६५। म०, १।
[सं० पु०] रोब। दबदबा। प्रताप। भय। शंका।
(सं.) रोग।

आतंक-ग्रस्त = का०, १२१।
[वि०] (सं.) रोब से डरा हुआ। भय से परेशान।

आतप = का०, ३८। झ०, ३६।
[सं० पु०] धूप, ग्रीष्म, गर्मी, ऊष्णता। सूर्य का
(सं.) प्रताप।

आता = झ०, २७।
[क्रि०] (हि०) आगमन करना।

आती = आं०, ३५। क०, ८। का०, ३४, ३८,
[क्रि० स्त्री०] ३६, ४०, ६६, १२२, १४०, १६०,
(हि) १८३, २०५, २४६। का० कु०, ४२,
६६। ल०, ६, १५, ४४, ४६।
आगमन करती।

आतुर = का०, १२२। झ०, ६५। ल०, २४,
[वि०] ४४।
(सं.) व्याकुल, व्यग्र, उद्विग्न, घबराया हुआ।
अधीर, उत्सुक।

आते = झ०, १६, ५२।
[क्रि०] (हि०) आगमन करते।

आत्म = का०, १६१। वि०, ६५।
[वि०] (सं.) अपना, स्वकीय, निजी।

आत्मकथा = प्रे०, ४। ल०, ११।
[सं० स्त्री०] सं.) अपनी जीवनी, अपनी कहानी।

आत्मगौरव = ल०, ६३।
[सं० पु०] सं.) अपनी श्रेष्ठता। अपनी बड़ाई।

आत्मजा = का०, १८५।
[सं० स्त्री०] (सं.) पुत्री, कन्या। स्वयं से उत्पन्न होने वाली।

आत्मबल = प्रे०, २२।
[सं० पु०] (सं.) आन्तरिक शक्ति। आत्मिक बल।

आत्मबलि = का० कु०, ४८।
[सं० पु०] आत्मबलिदान, अपने आपको होम कर
(सं.) देना, या खपा देना।

आत्ममंगल = का०, १६१।
[सं० पु०] (सं.) अपना कल्याण।

आत्म-विश्वास = का०, पृ० सं० १६१।
[सं० पु०] (सं.) अपना विश्वास। निजी भरोसा।

आत्मविश्वासमयी = का०, १६२।
[वि०] (सं.) अपने ऊपर विश्वास रखने वाली।

आत्मसंमान = ल०, ७७।
[सं० पु०] (सं.) अपना आदर। निज गौरव।

आत्मविस्तार = का०, ५६।
(सं० पु०) (सं) अपना फैलाव।

आत्मसमर्पण = प्रे०, २४।
[सं० पु०] (सं.) अपने आप को अर्पित करना।

आत्मा = का० कु०, ६, ११६।
[सं० स्त्री०] चित्त, चैतन्य, मन, बुद्धि। जीवात्मा,
(सं.) ब्रह्म। मन या अन्तःकरण के व्यापारों
का ज्ञान कराने वाली सत्ता।

आत्मीयता = का०, २१६।
[सं० स्त्री०] (सं०) अपनापन, मित्रता। घनिष्ट सम्बन्ध।

आत्मोत्सर्ग = म०, १५।
[सं० पु०] अपना त्याग। दूसरों की भलाई में
(सं.) अप ने हित की बलि करना।

आदर = झ०, ३५।
[सं० पु०] सं) सम्मान, सत्कार, प्रतिष्ठा, इज्जत।

आदि = का० कु०, ४७। चि०, ५२, १४०,
[अ०] १४३,।
(सं) बिलकुल प्रथम। पहला। आरम्भ का।
[सं० पु०] आरंभ। बुनियाद। मूलकरण। ईश्वर।

आदिक = चि०, ५०।
[अ०] (सं.) आदि। वगैरह। इत्यादि।

आदित्य = चि०, १०१।
[सं० पु०] (सं.) अदित के पुत्र। सूर्य। इन्द्र।

आदेश = क०, १२, १५। ल०, १३।
[सं० पु०] आज्ञा। हुक्म उपदेश। नमस्कार।
(सं.) प्रणाम।

आधार = क० ३१। का०, ४८, २०६, २६०,
[सं० पु०] भ्र०, ७५।
(सं.) सहारा। आश्रय। अवलम्ब। योग शास्त्र में एक चक्र का नाम।

आधि = का० कु०, ७२।
[सं० स्त्री०] मानसिक व्याधि, चिन्ता। रेहन।
(सं.) गिरवी। बंधक।

आधीन = चि०, ५०।
[वि०] (सं.) आश्रित, मातहत, वशीभूत।

आनंद = क०, ८, २६। का०, २, ५३, ५५, ५६,
[सं० पु०] ६३, ६४, १०१, १०२, १३६, १६१,
(सं.) २४२, २५४, २८६, २६४। का०
कु०, १६, २७, २६ ३०, ३१, ३३,
४७, ६३, ८६, ६६, ११६, १८४।
चि०, ६, १७, ६०, ६२, ७३, १३६
१४३। भ्र०, १६, २०, ३८, ४१ ८३।
प्रे०, ८।
हर्ष। प्रसन्नता। खुशी।

आनंद-अंबु-निधि= प्रे०, २५।
[सं० पु०] (सं.) प्रसन्नता रूपी सागर।

आनंद-आसन = का० कु०, ३१।
[सं० पु०] प्रसन्नता का निवास। आनंद रूपी
(सं.) आसन।

आनन्द-कंद = चि०, १५५।
[सं० पु०] (सं.) प्रसन्नता का भूल। आनंदमय।

आनंद-घन = का० कु०, ४३। चि०, ५६।
[सं० पु०] (सं.) प्रसन्नता रूपी मेघ। प्रसन्नता का खजाना।

आनंददायक = का० कु०, ७२।
[वि०] (सं.) प्रसन्नता प्रदान करनेवाला।

आनंद-दृश्य = का० कु०, १६।
[सं० पु०] खुशी का दर्शन, प्रसन्नतादायक वस्तु या
(सं.) घटना का दर्शन, आनंद प्रदान करने
वाला दृश्य।

आनन्दपूर्ण = का०, २५३।
[वि०] (सं.) प्रसन्नता से भरा हुआ। खुशी से युक्त।

आनन्द-भवन-सा = का० कु०, १६।
[वि] (हि.) प्रसन्नता के घर-सा।

आनंद-मंदिर = का० कु०, ३०।
[सं० पु०] प्रसन्नता के भवन-सा। आनन्द रूपी
(सं.) मंदिर।

आनंदमय = का० कु०, १६, १२४।
[वि०] (सं.) प्रसन्नता से भरा हुआ।

आनंदमयी = प्रे०, १।
[वि०] (सं.) प्रसन्नतामयी।

आनंदविभोर = का०, ६।
[वि०] (सं.) खुशी में मस्त। प्रसन्नता में मग्न।

आनंद-शिखर = का०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) प्रसन्नता की चोटी।

आनंद-समन्वय=का०, ७४।
[सं० पु०] (सं.) प्रसन्नता का मिश्रण।

आनंद-सहित = चि०, ६३।
[वि०] (सं.) प्रसन्नतायुक्त। खुशी के साथ।

आनंद-सुधा-रस=का०, २६१।
[सं० पु०] (स.) प्रसन्नता रूपी अमृत।

आनन्दित = चि०, ५८, ५६, ७५।
[वि०] (हि.) प्रसन्न। खुश।

आन = का० कु०, ४३।
[सं० स्त्री०] मर्यादा। शपथ। सौगंध। प्रतिज्ञा।
(हि.) प्रण।

आनन = का०, १६८। का० कु०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) मुख। मुँह।

आनन-सरोज = ल०, ६२।
[वि०] (सं.) मुखरूपी कमल।

आनि = चि०, १६८।
[क्रि०] (ब्र० भा०) लाकर।

आनी = वि०, ५७ ।
[पूर्व० क्रि०] (दे० 'आनि' ।)
(ब्र. भा.)

आने = का०, १२५, १७८, १८६, २२० ।
[क्रि०] (हि.) भ्र०, ३२ ।
लाये ।

आप = क०, ११, २१, ३१ । का० कु०, ६६ ।
[सर्व०] (सं.) का०, १३६, १६३, १६६ । चि०, ५३, ६४, ६५, १०६ । भ्र०, ६३, ६४ । म०, २१, २३ । ल०, ५५ ।
स्वयं । खुद । तुम, तव, वे के स्थान में आदरार्थ प्रयुक्त शब्द ।

आपादमस्तक = का० कु०, ३० ।
[क्रि०वि०] (सं.) एड़ी से चोटी तक ।

आपदाओं = का०, ६ । ल०, ६६, ६८ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दुख, क्लेश । विपत्ति, संकट ।

आपदा-वृन्द = क०, १४ ।
[सं०] (सं.) आपत्तियों का समूह ।

आपानक = भ्र०, २५ ।
[सं० पु०] (सं.) मदिरालय । मधुशाला ।

आभा = का०, ११८, २८८ । का० कु०, १२० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) चि०, २१, २८, ६२, १०७, १ ६ ।
कांति, प्रभा, द्युति, दीप्ति । झलक, छाया, प्रतिबिम्ब ।

आभारी = का०, २२६ । भ्र०, १७ ।
[वि०] (हि.) उपकृत ।

आभास = भ्र०, ४६ ।
झलक, छाया, प्रतिबिम्ब । संकेत ।

आभूषण = का०, १८१, १८२ । म०, १३ ।
[सं० पु०] (सं.) अलंकार, गहना ।

आमंत्रण = का०, १२५ ।
[सं० पु०] (सं.) निमंत्रण, न्योता ।

आमंत्रित = ल०, ३३ ।
[वि०] (सं.) निमंत्रित ।

आमखास = का० कु०, १०८ ।
[सं० पु०] (अ) महल के भीतर राजा से लोगों के मिलने का स्थान ।

आमिष = का०, १११ ।
[सं० पु०] (सं.) भोग्य वस्तु । लोभ, तृष्णा । माँस ।

आमोद = का० कु०, ५१, ५३ । का०, ६५, १३३ । चि०, १ ।
[स० पु०] (सं) प्रसन्नता, हर्ष, खुशी ।

आमोदभरी = का०, १८३ ।
[वि०] (हि.) प्रसन्नता से भरी हुई ।

आयत = चि०, २२ ।
[वि०] (सं.) विस्तृत, दीर्घ, विशाल ।

आया = क०, २१ । का० कु०, १६, ३४, १०२ ।
[क्रि०अ०] (हि.) २११ । का०, १४३, १६७ । भ्र०, ६६ । म० ११ १५ । १६६, १७८, २०६, २१६, २५० । ल० १६, ६८ ।
उपस्थित हुआ ।

आयी = का०, २८५, २८६ ।
[क्रि० अ०] आया का स्त्रीलिंग ।

आयुध = का०, १४१ ।
[सं० पु०] सं. शस्त्र ।

आये = का०, ११२, ११४, १४०, १६०, १७५, क्रि अ०] (हि.) १८५, २६०, २८७, २८६ । भ्र०, ३३, ६३, ६३ ।
उपस्थित हुए ।

आयो = चि०, ५१, ५४, ६०, ७३ ।
(ब्र. भा.) (दे० 'आये' ।)

आरक्तिम = चि०, १६३ ।
[वि०] (सं.) रक्ताभ । अरुणाभ ।

आरण्यक = ल०, १२ ।
[वि०] (सं. जंगली । वन्य । बनैला ।

आरति = चि०, ४१ ।
[सं० स्त्री०] (सं. विरक्ति ।

आरम्भ = का० कु०, ४८ । का०, ३४, ७५ ।
(सं० पु०) भ्र०, ८८ । म०, ५ । ल०, ६५ ।
शुरुआत । प्रारम्भ ।

आरम्भिक = का० ७२, ७६, १४० ।

[वि०] (सं.) प्रारंभिक। शुरू की।
आरसी = चि०, ७१।
[सं० स्त्री०] (हि.) दर्पण। शीशा।
आराधना = का० कु०, ७२।
[सं० स्त्री०] (सं.) पूजा। उपासना।
आराधो = चि०, ७४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पूजा करो। उपासना करो।
आराध्य = का०, १६१।
[वि०] (सं.) पूज्य। पूजनीय। उपास्य।
आराम = का० कु०, ६६। चि०, १६, १६४।
[सं० पु०] (सं.) उद्यान। बाग। फुलवारी। उपवन।
आराम-मोहि = चि०, ४६।
[अ०] (ब्र. भा.) उद्यान से मोहकर।
आरोहण = का०, १८१।
[सं० पु०] (सं.) चढ़ना। सवार होना। अंकुर निकलना। सीढ़ी।
आर्त = ल०, ६५।
[वि० पु०] (सं.) पीड़ित। चोट खाया हुआ। दुखित।
आर्तत्राण = चि०, २।
[सं० पु०] (सं.) दुखी की रक्षा। पीड़ित का उद्धार।
आर्द्र = प्रे०, १५।
[वि०] (सं.) भींगा। तर। लथपथ। गीला।
आर्य = क०, १०, ३१। का० कु०, ६८, १०१, १०२। चि०, २। म० ८।
? श्रेष्ठ। उत्तम। बड़ा। पूज्य। श्रेष्ठ कुलोत्पन्न।
आर्य-जाति = म०, ६।
[सं० पु०] आदि सभ्य जाति।
आर्यनाथ = म०, १०।
[वि०] (सं.) श्रेष्ठ पुरुषों के स्वामी। आर्य जाति के स्वामी।
आर्य-पताका = क०, १०।
[सं० स्त्री०] (सं.) आर्य जाति की ध्वजा।
आर्य-पूर्व-पुरुषों = क०, ६।
[सं० पु०] (सं.) आर्यों के पुरखों।
आर्य-मंदिर = का० कु०, १२०।
[सं० पु०] (सं.) आर्य जाति का देवस्थान।
आर्य-राज्य = म०, १०।
[सं० पु०] (सं.) श्रेष्ठ राज्य। आर्य जाति का राज्य।
आर्य-वीर = चि०, १३।
[सं० पु०] (सं.) श्रेष्ठ वीर। महान योद्धा। आर्य जाति का बलवान पुरुष।
आर्य वृन्द = का० कु०, १०५।
[सं० पु०] (सं.) श्रेष्ठ पुरुषों का समूह। आर्यों का समुदाय।
आर्य-शिल्प = का० कु०, १०८।
[सं० पु०] (सं.) आर्यों का कला-कौशल।
आर्यावर्त = चि०, ३।
[सं० पु०] (सं.) आर्यों का निवास-स्थान। उत्तरी भारत।
आर्ष = का० कु०, ४५। चि०, १२, १३, १००। म०, ६, ७।
[वि०] (सं.) ऋषि संबंधी। ऋषिकृत। वैदिक।
आलमगीर = का० कु०, १०८।
[सं० पु०] एक मुसलमान बादशाह का नाम।
आलस = आं०, ७४। का०, ११, ७०, ७२, ११८, १४२। चि०, १०६। झ०, ३१, ६४। प्रे०, १८। ल०, ३१, ६४।
[सं० पु०] (हि.) आलस्य, सुस्ती।
आलस्य = का०, ४५।
[सं० पु०] (सं.) सुस्ती, काहिली।
आलाप = का०, १७८। चि०, २६।
[सं० पु०] (सं.) बातचीत। बोलना। गाते समय सातों स्वरों का राग सहित उच्चारण। तान।
आलिंगन = आं०, ७३। का०, १२, १५, २०, ८६, ६७, १२५, १४०, १७५, १७७, १८५, २४५, २५२। चि०, ३६, ६४। झ०, ३६। ल०, ११, २१, ३४।
[सं० पु०] (सं.) परिरंभण, अँकवारी, गले से लगाना।
आलिंगन-सी = का०, २६३।
[वि०] (हि.) परिरंभण के समान।
आलिंगित = का०, २३५। चि०, १६३।
[वि०] (सं.) परिरंभित।

आलियों = चि०, ४६ ।
[सं० स्त्री०] (दे० 'अलियों' ।)
आली = का० कु०, ३६ । चि०, ५८ । ल०, १६ ।
[सं० स्त्री०] (दे० 'अली' ।)
आलोक = आं०, २४, ५५, ५७, ७२ । का०,
[सं० पु०] कु०, २५, ४३, ६३, ६६, ६२, १०६ ।
(सं.) का०, ३४, ६५, ६६, ८१, ८७, ११२, ११४, १६७, १६८, २४१, २५०, २६१ । चि०, २० । झ०, ३४ । म०, १३, १६ ।
प्रकाश, उजाला, ज्योति । दर्शन । चांदनी । किसी विषय पर लिखित टिप्पणी अथवा सूचना ।

आलोक-अधीर= का०, ११ ।
[सं० पु०] (हि.) प्रकाश के लिए धैर्यरहित ।
आलोक-किरन = का०, २२५ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) ज्योति-किरण, प्रकाश-रश्मि ।
आलोक-किरन-सी = का०, १८१ ।
[वि०] (हि.) प्रकाशरश्मि के समान ।
आलोक-पूरन = का० कु०, ४२ ।
[वि०] (हि.) प्रकाशपूर्ण । आलोक से भरपूर ।
आलोक-भिखारी = का०, १८४ ।
[वि०] (हि.) प्रकाश का भिक्षुक । आलोक का इच्छुक ।
आलोक-मणि = का० कु०, २६ ।
[सं०] (सं.) प्रकाशमय रत्न ।
आलोकमय = झ०, ५७ ।
[वि०] (सं.) प्रकाशमय । प्रकाश से युक्त ।
आलोकमयी = आं०, ६८ । का०, १०४, १६६ ।
[वि०] (सं.) प्रकाशयुक्ता । प्रकाश से भरी हुई ।
आलोक-रश्मियां= का०, १२० ।
[सं० स्त्री०] (हि.) प्रकाश की किरणें ।
आलोक-विन्दु = का०, ७५, २६४ ।
[वि०] प्रकाश का केन्द्र । प्रकाश का मुख्य स्थान ।
आलोक-शिखा = का०, १८२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रकाश की चोटी । प्रकाश की ज्योति ।
आलोकहु = चि० १३६ ।
[क्रि०](ब्र. भा.) भलीभांति देखो । (दे० 'अवलोकन' ।)
आलोकित = का० कु०, १२० । का०, १८१ । चि०,
[वि०] २० । झ०, ८६ ।
(सं.) प्रकाशित । ज्योतिमय ।
आलोड़न = का०, १७ ।
[सं० पु०] (सं.) मंथन । हिलोरना । मथना ।
आवत = चि०, १४, १६, ५६, ६४, ७० ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) आना ।
आवत ही = चि०, १४७, १५६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) आते ही ।
आवन = चि०, ६६ ।
[सं० पु०](ब्र. भा.) आगमन ।
आवरण = का०, ६५, ६६, ६८, ६१, १३६,
[सं० पु०] १४७, १५१, १६४ । झ०, ६३ ।
(सं.) ल०, १७६, १६२, २०६, २५२ ।
आच्छादन । ढक्कन । ढपना । किसी वस्तु पर लपेटा गया वस्त्र । पर्दा । बेठन । दीवाल इत्यादि का घेरा । अज्ञान ।
आवरणयुक्त = का०, २८ ।
[वि०] (सं.) आच्छादित ।
आवर्जिता = का०, १०२ ।
[वि०] (सं.) त्यक्ता, छोड़ी हुई ।
आवर्तन = का०, ११, २०, ७२ ।
[सं० पु०] फिराव । घुमाव । चक्कर देना । विलोडन,
(सं.) मंथन ।
आवश्यक = झ०, ७५ ।
[वि०] (सं.) जिसे अवश्य होना चाहिए । जरूरी । काम का । सापेक्ष ।
आवश्यकता = क०, २६ । प्रे०, ३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) अपेक्षा । जरूरत । प्रयोजन । मतलब ।
आवहीं = चि०, ५१ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) आते हैं ।
आवहु = चि०, १५६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) आयें ।

आवास = का० कु०, ६६, १०८ । का०, ८७ ।
[सं० पु०] (सं.) घर । निवास स्थान । रहने की जगह ।
आवाहन = का० कु०, २६ ।
[सं० पु०] (सं०) बुलाना । पुकारना । निमंत्रित करना ।
आवृत्त = का०, १६५, १६६ १७२, २७७ ।
[वि०] (सं.) अवगुंठित । छिपा हुआ । घिरा हुआ ।
आवें = का , १४६, १५१, १६५, १८२, २१६
[क्रि०] (हि.) का० कु०, ५६ । चि०, १०८ । भ्र०, ३६, ४३ ।
उपस्थित हों ।
आवेग = का० कु०, ५३ । चि०, ५६ ।
[सं० पु०] (स.) जोश । चित्त का प्रबल वेग । उत्कंठा सहित मन का वेग ।
आवेश = का०, ५८ ।
[सं० पु०] (सं.) जोश । मन की प्रेरणा । झोंक । वेग । व्याप्ति । संचार । दौरा ।
आशंकाएं = का०, १०६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) शंका । शक । संदेह । भय । डर ।
आश = चि०, १६६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) (देखिए 'आशा' ।)
आशा = आं०, ६७ । क०, १८ । का० कु०, ५०, ६५ । का०, २७, ५०, ६४, १०६, ११३, ११४, १३०, १४५, १६६, १६६, १७७, १८४, २२५, २६४ । चि०, ८, १७, १८, ६८, १४१, १४३ । भ्र०, २३, २७, ३३, ४०, ४१, ४६, ७१ । प्रे०, ५ । ल०, १८, ४०, ५५, ५७, ६१, ७२, ७४, ७५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.)
किसी पदार्थ के पाने की इच्छा या कामना । अप्राप्त को पाने की आकांक्षा ।
आशामय = का० कु०, ११६ । चि०, ६८ । प्रे०, ३ ।
[वि०] (सं.) आशा से पूर्ण । कामनामय ।
आशामयि = का०, २३७ ।
[सं०] (हि.) आशामयी का संबोधन ।
आशालता = भ्र०, ५६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) आकांक्षा बल्लरी ।
आशा-सा = भ्र०, ७० ।
[वि०] (हि.) आशा के समान ।
आशिष-सह = चि०, ७३ ।
[अ०] (ब. भा.) आशीर्वाद के साथ ।
आशीष = चि०, ६० ।
[सं० स्त्री० ब० भा०) असीस । आशीर्वाद । दुआ ।
आशुतोष = चि०, ६६, १५५ ।
[वि० सं०] शीघ्र संतुष्ट होने वाला ।
आशु शान्ति = चि०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) शीघ्र शमन ।
आश्चर्य = का० कु०, १०६ । का०, २२ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रे०, ४ ।
अचंभा । ताज्जुब । रसके नौ स्थायी भावों में से एक ।
आश्रम = क०, १८, ३० । का० कु०, १०५, १०६ । चि०, ५८ ।
[सं० पु०] (सं.) ऋषियों, मुनियों के रहने का स्थान ।
आश्रय = का० कु०, २८, ४४, १२५ । का०, १००, १८१, १८२, १८५, १६३ । भ्र०, ३६ । प्रे०, २१ ।
[सं० पु०] (सं.)
सहारा । आधार । अवलंब । भरोसा । जीवन निर्वाह का अवलंब । घर ।
आश्रित = का० कु०, ४४ । का०, २२६ ।
[वि०] (सं.) आधार पर ठहरा हुआ । अधीन । सेवक, दास ।
आश्वासन-सा = भ०, ४ ।
[वि०] (हि.) आश्वासन के समान ।
आश्वासन = आं०, ४६ ।
[सं० पु०] (सं.) सान्त्वना ।
आस = का०, २४७ । चि०, ५, २७, ६६, १०१, १०६ ।
(ब्र भा.) (दे० 'आशा' ।)
आसक्त = भ्र०, ६७ ।
[वि०] (सं.) अनुरक्त । लीन । लिप्त । मोहित । मुग्ध ।
आसन = क०, १५ । का० कु०, २६ । का०,

[सं० पु०] (सं.) १२३ । प्रे०, ४, ६ ।
बैठकी । जिस वस्तु पर बैठा जाता है ।

आस-पास = का० कु०, ५४, ६७ ।
[क्रि० वि०] हि.) चारों ओर । अगल-बगल । पड़ोस ।

आस-भरी = चि०, १५१ ।
[वि०] (ब्र. भा.) आशा भरी ।

आसव = का०, १८३ । ल०, ४७ ।
फल या अन्न के रस में बनाया गया मद्य । छाने हुए तरल खमीर । अर्क ।

आसीन = चि०, ४१ ।
[वि०] (सं.) विराजमान । बैठा हुआ ।

आसीस = चि०, ३१ ।
[सं० पु०] (हि.) आशीर्वाद । दुआ ।

आसु = चि०, १५ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) आसरा । आश्रय, सहारा ।

आसुर = क०, २७ ।
असुर संबंधी । राक्षसी ।

आसुरी = क०, २७, ३१ ।
[वि०] (सं.) असुर संबंधी । राक्षसा ।

आह = आं, ६५ ।
[अ०] (सं) क०, ६, ११ ।
का०, ६, ७, ३८, ४६, ५१, ५२, ५५, ८४, ६२, ६४, १७६, २०७, २१५, २४८, २४६ । चि०, १२ । भ०, २६ । ल०, १०, ४०, ५७, ६८ ।
दुःख, चिंता और शोक व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त ध्वनि । हाय । हन्त । हा ।

आहत = आं०, १२ । का०, २००, २४५ ।
[वि०] (सं.) चि०, १६ ।
घायल, जख्मी ।

आहरण = चि०, २२ ।
[सं. पु०] (सं.) चुराना । छीनना । जबरदस्ती लेना ।

आह रे = ल०, २१ ।
[अ०] (हि.) दुःख व्यंजक शब्द । हाय रे ।

आहुति = का०, ३२, २३६, २४२ । चि०, ६७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) मंत्र द्वारा अग्नि में घृत सामग्री आदि डालना । होम । उत्सर्ग, त्याग ।

आहुतियाँ = ल०, ५६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) आहुति का बहुवचन ।

आहार = क०, १३ । चि०, ५८ । ल०, ५५ ।
[स० पु०] (सं.) म०, २२ ।
भोजन । खाद्य वस्तु ।

इ

इंगित = का० कु०, ५७ । ल०, ६५ ।
[सं० पु०] (सं.) इशारा । चेष्टा । संकेत चिह्न ।

इंदिरा = का०, २८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) लक्ष्मी, शोभा, छवि ।

इंदीवर = का०, ६५, १४२, १७५ । चि०, ६७ ।
[सं० पु०] (सं.) कमल । नील कमल । नीलोत्पल ।

इन्दु = का० कु०, १, १७, ४३, ५१, १०० ।
[सं० पु०] (सं.) चि०, १०७ । ल०, ३५ ।
चन्द्रमा, शशि । कपूर ।

इन्दु कर = का० कु०, ४२, १०० ।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रकिरण ।

इन्दुकला = चि०, १४५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) चन्द्रकिरण । चन्द्रमा की कला ।

इन्दुहि = चि०, ४६ ।
(ब्र. भा.) (दे० 'इन्दु' ।)

इन्द्र = क०, १५ । का०, ४७, १६० ।
[वि० सं०] (सं.) विभूति सम्पन्न । ऐश्वर्यमान । भारत का प्रथम सम्राट । देवताओं का प्रथम सम्राट ।

इन्द्रजाल = का०, ३८, ४६, ६७, १७०, २२६, २६१ । ल०, ७३, ७७ ।
[सं० पु०] (सं.) जादू । माया कर्म ।

इन्द्रजाल-सी= का०, १३६ ।
[वि०] (हि.) जादू-सा ।

इन्द्र धनुष = आं०, ३४ । का०, १६४ ।
[सं० पु०] (सं.) वह सात रंगों का अर्द्धवृत्त जो वर्षा ऋतु में सूर्य के विलोम दिशा में दीख पड़ता है ।

इन्द्रनील = का०, २४ ।
[सं० पु०] (सं.) नीलम, नीलमणि ।

इन्द्रवधूटी = चि०, १५७ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) वीर बहूटी

इन्द्रिय = का०, १३० । का० कु०, ८२ ।
[सं० स्त्री०] (हि.)

इकंत = चि०, ७४ ।
[वि०] (ब्र. भा.) एकांत । निरखा ।

इक = का० कु०, १८, ४२, ५१ । चि०, ३५,
[क्रि० वि०] (ब्र. भा) ४२, ५१ । भ्र०, ५६ ।
एक ।

इकट्ठा = का०, १३१ । चि०, १० ।
[क्रि० वि०] (हि.) एकत्रित । एक जगह बटोरा हुआ ।

इक्ष्वाकु = चि०, ५०, ६६ ।
[सं० पु०] (सं.) एक प्रमुख सूर्यवंशी राजा ।

इक्ष्वाकु-वंश = क०, २६ ।
[सं० पु०] (सं.) इक्ष्वाकु का कुल । राम, दशरथ, अनरण्य आदि प्रतापी सम्राट इक्ष्वाकु के वंशज थे ।

इक्ष्वाकु-कुल = क०, १० ।
[सं० पु०] (सं.) इक्ष्वाकु राजा का वंश ।

इच्छा = का० कु०, १२२ । का०, ५३, ७२,
[सं० स्त्री०] (सं.) १२२, १४१, १४३, २६२ । चि० २२ । भ्र० ४७ ।
वाञ्छा, चाह, अभिलाषा ।

इच्छित = क०, १४ ।
[वि०] (सं) वांछित, अभिलाषित ।

इठलाना = आं०, १७ । क०, ६ । का०, १००,
[क्रि० अ०] (हि.) १४०, २५८, २६२, २६१ ।
इतराना, गरूर करना, गर्व से अकड़ना ।

इड़ा = का०, १६६, १७२, १८१, १८१,
[सं० स्त्री०] (सं.) १८५, १८६, १८६, १६०, १६१, १६७, २०६, २०७, २१०, २१३, २१४, २२६, २३०, २४४, २७७, २७६, २८० ।
मनु की दुहिता । बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी । इरा, सरस्वती, भारती । वाणी ।

इत = चि०, ४१, ५३, ६६, १४७ ।
[क्रि० वि०] (हि.) यहाँ । इधर ।

इतना = आं०, ४६ । क०, १३ । का०, ८,
[वि०] (हि.) ३८, ८४, १००, १०४, १४४, १४५, १६०, १६२, २०८, २२३, २३४, २३६, २७२ । भ्र०, ७६ । म०, १५ । ल०, ४४, ७१ ।
इस मात्रा में, इस कदर, इस समय में, इस बीच में ।

इतर = ल०, ६४ ।
[वि०] (सं.) अन्य । दूसरा । नीच । साधारण ।

इतराइ = चि०, १४७, १५२ ।
[अ०] (ब्र. भा.) गरूर से भर कर ।

इतराई = आं०, ६८ ।
[क्रि०] (हि.) इतरा गयी ।

इतराता-सा = का०, ६८ ।
[वि०] (हि.) इतराते हुए के समान ।

इतिप्रलीनां = चि०, १३३ ।
[अ०] सं.) इस प्रकार छिपी हुई । इस प्रकार डूबी हुई ।

इतिहास = का०, ३८ । ल०, ५२ ।
[सं० पु०] (सं.) विगत प्रसिद्ध घटनाओं और पुरुषों का कालक्रम के अनुसार वर्णन । तवारीख ।

इधर = का०, ५१, ५२, ८२, १८१, २३३ ।
[क्रि० वि०] (हि.) इस तरफ । इस ओर ।

इधर-उधर = का०, १७८ ।
[क्रि० वि०] (हि.) इस तरफ, उस तरफ । इस ओर, उस ओर । इतस्ततः ।

इन = आं०, ४५ । क०, ३१ । चि०, ६४,
[सर्व०] (हि.) ७४ । ल०, ४६, ७६ ।
इसका बहुवचन ।

इन्ही = ल०, ७६ ।
[सर्व०] (हि.) इन लोगों को ही ।

इमि = चि०, ६१ ।

[क्रि० वि०] (हि.) ऐसे, इस तरह।

इष्ट = का० कु०, २६।
[वि०] (सं.) चाहा हुआ, ईप्सित, आकांक्षित।

इस = क०, ९, ११, २५, २६, ३०, ३१।
[सर्व०] (हि.) का०, ८४, ८७, १५३, १५४, १७०, २७०। भ्रू०, ४०, ४१, ४८, ५६, ८१।
वर्तमान वस्तु की ओर संकेत बोधक शब्द।

इसीलिए = का०, १६३। भ्रू०, ५४।
[क्रि० वि०] (हि.) इसी वजह से। इसी कारण से।

ई

ईर्ष्या = का० कु०, ३१। का०, ८४।
[सं० स्त्री०] (सं.) दूसरे का लाभ या उत्कर्ष देख कर जलना।

ईर्ष्या-पवन = का०, ८४।
[सं० पु०] (सं.) ईर्ष्या की हवा। दूसरे के उत्कर्ष को देख कर जलने की भावना की हवा।

ईप्सित = क०, १४।
[वि०] (सं.) इष्ट। चाहा हुआ। प्रत्याशित।

ईश = का० कु०, ११६। का०, ६, ५३।
[सं० पु०] (सं.) चि०, ७४। प्रे०, ३।
ईश्वर। भगवान। स्वामी। राजा। मालिक। शिव।

ईश-कृपा = क०, २६।
[सं० स्त्री०] (सं) ईश्वर की कृपा। भगवान की दया।

ईशान = चि०, १५५।
[सं० पु०] (सं.) अधिपति। स्वामी। मालिक। शिव। महादेव। परमात्मा। ग्यारह रुद्रों में से एक। ग्यारह की संख्या। पूरब और उत्तर का कोना।

ईश्वर = चि०, ५०, ७४।
[सं० पु०] (सं.) भगवान। परमात्मा। शिव। योगशास्त्रानुरूप क्लेश कर्म विपाक तथा अदृष्ट से पृथक।

उ

उँगली = का० कु०, ६३। का०, ६७, २००, २१३। भ्रू०, ७२।
[सं० स्त्री०] (हि.) हथेली से जुड़ी हुई पांच शाखाएँ जिनसे चीजें पकड़ी जाती हैं। इन पांचों में से प्रत्येक को उँगली कहते हैं।

उँह = चि०, ४।
[अ०] (हि.) अस्वीकार, घृणा या बे परवाही का सूचक शब्द। वेदनासूचक शब्द। कराहने का शब्द।

उकसाना = ल०, ५६।
[सं०] (हि.) उभारना। ऊपर उठाना। उठा देना। उत्तेजित करना।

उखड़ी = का०, १६।
[क्रि०] (हि.) दृढ़ स्थिति से हटी।

उगना = आं०, १४, ७८।
उदय होना। जमना। अंकुरित होना। उत्पन्न होना। उपजना।

उगलना = आं०, २०। का० कु०, २४, २५।
[क्रि०] (हि.) का०, १४।
गुप्त तथ्य या बात बता देना। पेट के भीतर की चीजों को मुख द्वारा बाहर निकालना।

उग्र = ल०, ७७।
[वि०] (सं.) कठोर। भयंकर। उत्कट। तीव्र। प्रचंड। प्रबल। घोर। रौद्र।

उचित = क०, २३। का० कु०, ७३। चि०, ६२, ७०।
[वि०] (सं.) योग्य। ठीक। मुनासिब। वाजिब।

उच्च = का०, २२८।
[वि०] (सं.) उन्नत। ऊँचा। श्रेष्ठ। उत्तम। महान। बड़ा।

उच्छृंखल = का०, ३८, २२०। प्रे०, २४।
[वि०] (सं.) जो शृंखलाबद्ध न हो। क्रमहीन। निरंकुश। स्वेच्छाचारी। उद्दण्ड।

उच्छलित = का०, १६१।

[वि०] (हि.) छलका हुआ।

उच्छ्वास = आं०, ५३, ७१। का०, ५४, २६२।
[सं० पु०] (सं.) ल०, १५।
उसांस। ऊपर की ओर खींची हुई सांस। श्वास। ग्रंथ का विभाग या प्रकरण।

उच्छ्वासमय = का० कु०, ७३। का०, ६१, १६५,
[वि०] (सं.) २८१।
उच्छ्वास से पूर्ण।

उछलि = चि०, ७०।
[क्रि०वि०] (ब्र. भा.) उछल कर।

उछाल = का०, ८३। चि०, १६१।
[सं० पु०] (हि.) सहसा ऊपर उठने की क्रिया। ऊपर उठने की हद। ऊँचाई। छींटा।

उछालि = चि०, ४२।
[अ०] (ब्र. भा.) उछालकर।

उछाह = चि०, ६६।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) उत्साह। उमंग।

उजड़ा = का०, २०, ४६, १५८, १६०, १६६,
[वि०] (हि.) १७१।
ध्वस्त। अस्तव्यस्त। नष्ट।

उजरी = चि०, ५१।
[वि०] (ब्र. भा.) उजड़ी। नष्ट हुई।

उजला उजले = का०, १६६, २३३।
[वि०] (हि.) उज्ज्वल, निर्मल, साफ. श्वेत।

उजारी = चि०, ५६।
[क्रि०वि०] (ब्र. भा.) उजाड़ी हुई। नष्ट की गयी।

उजाला = आं०, ५१, ६२, ६३। का०, २६,
[सं० पु०] (हि) २८४। भ०, ४६।
प्रकाश। अपने कुल, परिवार या देश काल में उत्तम।

उज्जल = चि०, ४३।
(ब्र. भा.) (दे० 'उज्ज्वल'।)

उज्ज्वल = आं०, १७, ५८, ७२। का० कु०,
[वि०] (सं.) ३८, ४१, १०८। का०, १०२, १२५, १३०, १५१, १६८, २५२, २७६। चि०, ७१, ७२। भ०, ६६। म०, ८। ल०, ११, १२, ३०, ३४, ६७।
उजला। सफेद। साफ। चमकता हुआ। निर्दोष। पवित्र। निर्मल, स्वच्छ।

उटजों = ल०, ३२।
[सं० पु०] (सं.) कुटियों, झोपड़ियों।

उठना = आ०, १७, ३०, ५०, ५१, ७७।
[क्रि० अ०](हि.) क०, ८। का० कु०, ८, १६, ७१, ६५। का०, ८, १०, ३१, ३६, ५१ ६८, ८२, ६६, ११८, १२५, १३६, १३६, १४३, १४८, १५३, १५६, १६४ १६८, १६६, १८४, १८५, १८६, १६० २०६, २१२, २२१, २३३, २४६, २४८, २५४, २५६, २६३, २६२। चि०, ३४, ४६, ५८, ६५, ७०, ७४, १४३। भ०, २६, ६६, ७३। म०, ११। ल०, ६, १३, ३४, ४२, ४५, ४७, ४८, ५२, ६६, ७०, ७६ ।
ऊपर चढ़ना, उन्नत होना। समाप्त होना।

उड़ = का०, २५३। भ०, ६६।
[क्रि० अ०] (हि.) उड़कर। उड़ो।

उड़ती = का०, १७५।
[क्रि० स्त्री०] हवा में एक स्थान से दूसरे स्थान पर
(हि.) जाना। पृथक होना। फीका पड़ना।

उड़ना = आं०, १४। का० कु०, १८, २५, ६६,
(हि.) १०७। का०, ८८, १६२, १८६।

उड़ा = भ०, ७०।
[क्रि०] (हि.) उड़ना की भूतकालिक क्रिया।

उड़ाय = चि०, ५, १७०।
[क्रि० अ०] उड़ाकर। वायु में तैराकर। भगाकर।
(ब्र. भा.)

उड़ाती = भ०, २८।
[क्रि० स्त्री०] (हि.) उड़ने में प्रवृत्त करना।

उड़ावत = चि० ६२।
[क्रि०] (ब्र. भा) उड़ा रहा है।
उडुगन = का०, १७८, । चि०, ३१, १०८।
[सं० पु०] (सं.) तारा मंडल। नक्षत्र मंडल
उडु-दल = का०, २३५।
[सं० पु०] ताराओं का समूह। तारा मंडल।
(सं.) पक्षीदल।
उडुराज = चि०, १४६, ।
[सं० पु०] ताराओं के स्वामी। नक्षत्राधिपति।
(हि.) चंद्रमा : पक्षीराज।
उतना = का० कु०, ६, ६१।
[वि०] (हि.) उस मात्रा मे, जितना वह है उसके बराबर।
उतरना = का० कु०, ३०। का०, १४, १६,
[क्रि०] (हि.) २७१। चि०, ४७, ५८, ५६, ६२,
१०१। भ०, ४८, ।
ऊँचे स्थान से क्रम से नीचे की ओर आना।
उतराई = ल०, ४३।
[सं० स्त्री०] ऊपर से नीचे आने की क्रिया। नदी
(हि.) के पार जाने का महसूल।
उताली = चि०, ५८।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) शीघ्रता। उतावली।
उत्कंठा = का०, ५०, १७६, । भ०, १२, ५४।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रबल इच्छा, प्रबल कामना।
उत्तम = का०, १६२। चि०, ५।
[वि०] (सं.) सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट।
उत्तमता = का० कु०, ८२, ६३, । का०, २७१।
[सं० स्त्री०] (सं.) श्रेष्ठता, उत्कृष्टता।
उत्तर = का० कु०, ४५। का०, ८१, १००,
[सं० पु०] (सं.) १५८। चि०, ६८। भ०, ३।
दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। जवाब। प्रतिवाद। प्रतिकार। एक वैदिक कालीन गीत। विराट राजा का पुत्र।
उत्तरगिरि = का०, १७।
[सं० पु०](सं. उत्तरी पहाड़। हिमालय।
उत्ताल-जलधि-वेला = आं०, ६०।
[सं० स्त्री०](सं.) महासागर का किनारा। विशाल सिंधु का तट।
उत्तुंग = का० कु०, ५३, १०४, का० ३। चि०,
[वि०] (सं.) ६६।
बहुत ऊँचा।
उत्तेजना = का०, ६२। भ०, ५३। ल०, ७१।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रोत्साहन। प्रेरणा। बढ़ावा।
उत्तेजित = का०, पृ० सं० १३४। १६५, २३७।
[वि०] (सं.) म०, १५। भ०, ३१।
प्रोत्साहित। उत्प्रेरित।
उत्सर्ग = क०, ३०। का०, ५७, १०५।
[सं० पु०] (सं.) त्याग। छोड़ना। दान। न्योछावर।
उत्सव = का० ८८, १०२, ११५। चि०, ६४।
[सं० पु०] (सं.) प्रे० १३।
उछाह। मंगल-कार्य। धूमधाम। आनंद मंगल का समय। त्योहार। पर्व। समारोह।
उत्सव-शाला= ल०, ४८।
[सं० स्त्री०] (सं.) आनंद मंगल कार्य सम्पन्न करने का स्थल।
उत्साह = का० कु०, ११७। का०, २७, ५१, ५४,
[सं० पु०] (सं.) ६०, १०६, ११०, १८१, १८२। प्रे०
१८। ल०, ७०।
उमंग। उछाह, जोश। हौसला। साहस। वीर रस का स्थायी भाव।
उत्साह-पूर्ण = का० कु०, १६।
[वि०] (सं.) जोश से भरपूर।
उत्साहित = चि०, ६५।
[वि०] (सं.) जोश से भरा हुआ। उमङ्गित।
उत्साही = का०, २५७।
[वि०] (सं.) उमङ्ग से पूर्ण। जोशीला। उत्साह से पूर्ण। हौसले वाला।
उत्सुक = का० कु०, ८०। का०, ५५।
[वि०] (सं.) उत्कंठित, इच्छुक।

उदधि = आं०, ४१ । का०, १६, १२१ १६० ।
[सं० पु०] (सं.) समुद्र । सागर । सिन्धु ।
उदधी = चि०, ४८ ।
(ब्र० भा०) (दे० 'उदधि' ।)
उदय = का०, २४१, २४४ । चि०, २४, ३६,
[सं० पु०] (सं.) १०१ । भ्रु०, ३८, ५६, ६७ ।
उगना । निकलना । प्रकट होना । बाहर आना ।
उदयत = चि०, १०७ ।
[क्रि०] (ब्र. भा) उदय होता हुआ । निकलता हुआ ।
उदार = क०, ३२ । का०, ४६, ८१, १५६,
[वि०] (सं) १७२, २३४, २४८ । चि०, ४७, ५२,
१४६ । भ्रु०, ४१ । ल०, ३४ । म०,
१७ ।
विशाल हृदय का, व्यापक हृदय वाला, दाता ।
उदारता = का०, १४८ । भ्रु०, ५२ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) सहृदयता, उच्चता, दानशीलता ।
उदास = का०, १८०, २३४ । चि०, १६६ ।
[वि०] (सं.) ल०, ४४, ४६ ।
रंजीदा, विरक्त, दुखी ।
उदासी = का०, १०६, ११०, १२० ।
[सं० स्त्री०] (हि.) विरक्तता । उदासीनता ।
उदासीन = आं०, ५० । भ्रु०, ६१ ।
[वि०] (सं.) विरक्त । जिसका किसी कारण से किसी वस्तु से मन टूट गया हो । तटस्थ । निष्पक्ष । झगड़े से अलग ।
उदासीनता = का०, २६६ ।
[सं० स्त्री०] (हि०) विरक्ति, उदासी ।
उदित = ६५ । का० कु०, का०, २३, ६७,
[वि०] (सं.) २६१ । चि०, १६४, म० ६ ।
उगे हुए । प्रकट हुए । निकले हुए । प्रकाशित ।
उद्गम = का०, १४०, १६३, २६५ ।
[सं० पु०] (सं.) निकास । निकलने की जगह । मूल स्थान ।
उद्गीथ = का०, ३४ ।
[सं. पु०] (सं.) सामवेद के गायन का एक अंग ।
उद्ग्रीव = का०, ८३ ।
[वि०] (सं.) ऊपर गर्दन किए हुए ।
उद्घोषित = प्रे० ७ ।
[वि०] (सं.) सार्वजनिक रूप से सूचित की गयी ।
उद्दाम = का०, ६१, ११६ ।
[वि०] (सं.) बन्धन रहित । निरंकुश । उग्र । उच्छृंखल । स्वतंत्र । गम्भीर । महान ।
उद्देश्य = का० कु०, ८३ । भ्रु०, ८६ ।
[सं० पु०] (सं.) लक्ष्य । इष्ट । मतलब का । कहने योग्य वह वस्तु जिस पर ध्यान रख कर कोई बात कही जाय । अभिप्रेत पदार्थ या बात ।
उद्धत = ल०, ७८ ।
[वि०] (सं.) उच्छृंखल । उत्कट । उग्र । प्रचण्ड प्रगल्भ ।
उद्धार = चि०, ५२ । ल०, १२ ।
[सं० पु०] (सं.) मुक्ति । छुटकारा ।
उद्बुद्ध = का०, ६० ।
[वि० सं०] जाग्रत । बुद्धिमान । प्रबुद्ध । चैतन्य । ज्ञान प्राप्त किया हुआ ।
उद्भ्रान्त = का०, ४६, ६२ । ल०, २१ ।
[वि०] (सं०) भ्रांति से युक्त । भूला हुआ । चकित । भौचक्का । घूमता या चक्कर मारता हुआ । उन्मत्त, पागल । विह्वल ।
उद्यत = क०, ३१ ।
[वि०] (सं.) मुस्तैद । तत्पर । लगा हुआ । उठाया हुआ । ताना हुआ ।
उद्यम = क०, ३० ।
[सं० पु०] (सं.) प्रयास । प्रयत्न । उद्योग । मेहनत । काम । धंधा । व्यापार । व्यवसाय । पेशा ।
उद्यान = क०, ६ । चि०, २१ ।
[सं० पु०] (सं.) बगीचा । बाग । फुलवारी । आराम ।
उद्योग = क०, ११ । का० कु०, १३ । चि०, ६,

[सं० पु०] (सं.) ६५, १०१।
प्रयत्न। मेहनत। परिश्रम, प्रयास। व्यवसाय।

उद्विग्न = म० ३।
[वि०] (सं.) उद्वेग युक्त। आकुल। घबड़ाया हुआ। व्याकुल।

उद्वेग = का० कु०, १३, ७३। का०, ५२।
[सं० पु०] (सं.) भ०, ५४।
चित्त की व्याकुलता। घबड़ाहट। मनोवेग। आवेश। जोश। झोंक। संचारी भावों में से एक।

उद्वेलित = का०, ६, १२१, २२१। ल०, २०।
[वि०] (सं.) छलका हुआ। छलछलाया हुआ।

उधर = का०, ४, २३, ३२, ८६, १३ , १४१,
[क्रि० वि०] (हि.) १८४, १८६, २१५, २१८, २३३, २५३, २५७। ल०,
उस तरफ। उस ओर। वहां।

उधार = का०, २६। ल०, ३६।
[सं० पु०] (हि.) ऋण। कर्ज। छुटकारा। उद्धार।

उन = आं०, २५, ४६। का० कु०, २५,
[सर्व०] (हि.) २६। का०, १३, ६६, १४३, १५८. १७१, १७६, १८५, १६६, २२०, २३६, २५४, २७८, २६१। चि०, ६५। म० २, ३। ल०, ४४, ४६।
उसका बहुवचन।

उनीदा = चि०, ३। ल०, ३१।
[वि०] (हि.) नींद से भरा हुआ, ऊँघता हुआ।

उन्नत = का० कु०, ३०। का०, १३५, १६६,
[वि०] (सं.) २४७। चि०, १३। ल०, ६३।
उत्कृष्ट। श्रेष्ठ। समृद्ध। बढ़ा हुआ। बड़ा। महान्।

उन्नत-हृदय = म०, २३, २४।
[वि०] (सं.) विशाल हृदयवाला। उदार। महान।

उन्नति = का०, ११०, १८१, २३५, २६८।
[सं० स्त्री०] (हि.) भ०, ६६।
वृद्धि। बढ़ती। बढ़ोत्तरी। समृद्धि।

उन्निद्र = का० कु०, १००। का०, ६८, १७१।
[वि०] (सं.) (दे० 'ऊनीदा'।)

उन्मत्त = का०, ६८, ७१, ६२।
[वि०] (सं.) मतवाला। पागल। मदांध। बेसुध।

उन्माद = का०, १८४, १६३, २६२।
[सं० पु०] (सं.) पागल, उन्माद।

उन्मन = का०, २८५।
[वि०] (सं.) अन्यमनस्क।

उन्माद = आं०, ५४। का०, ७०, ६१, ६७,
[सं० पु०] (सं.) १००, ११६, २०१।
पागलपन। विक्षिप्तता। रस तैंतीस संचारी भावों में से एक।

उन्मादक = प्रे० १६।
[वि०] (हि.) नशा करानेवाला। पागल करनेवाला।

उन्मीलन = का०, ५३, ७१।
[सं० पु०] (सं.) आँख का खुलना। खिलना। विकसित होना।

उन्मीलित = ल०, ३७।
[वि०] (सं.) विकसित। खुला हुआ। प्रकाशित।

उन्मुक्त = का० कु०, ४। का०, ८६, १५७.
[वि०] (सं.) १५८, १६१, २३४, २५१। म०, ६।
खुला हुआ। बंधन रहित। मुक्त किया हुआ।

उन्मेष = का० कु०, १२।
[सं० पु०] (सं.) आंख का खुलना। चमक। विकास। खिलना।

उन्हीं = का० कु०, ४१। का०, २७८, २८४।
[सर्व०] (हि.) प्रे० ६।
उनको।

उपकरण = क०, १०। का०, १७, ५८, ८२,
[सं० पु०] (सं) १४१।
साधन। सामग्री। सामान।

उपकार = का० १००, २०६, २२६। भ०, ६१।
[सं० पु०] (सं.) हित साधन। भलाई। नेकी। लाभ।

उपकारी = का०, १४६, २१०।
[वि०] (सं.) उपकार करने वाला। भलाई करनेवाला।

उपकूल = का०, १६० ।
[सं० पु०] (सं.) तट, किनारा, किनारे की भूमि।

उपचार = का० ६४, ६५, १०५, १६६ ।
[सं० पु०] (सं.) व्यवहार । प्रयोग। चिकित्सा । इलाज या सेवा । पूजन के अंग ।

उपजती = भ्र०, ६१ ।
[क्रि०] (हि.) पैदा होती । उत्पन्न होती । बढ़ती ।

उपजावत = चि०, ६३ ।
[क्रि०] (ब्र.भा) पैदा करते हैं । उत्पन्न करने हैं ।

उपद्रव = का०, १६३ ।
[सं० पु०] (सं.) उत्पात । हलचल । ऊधम । दंगा-फसाद ।

उपधान = आं०, ३६ । म०, २० ।
[सं० पु०] (सं.) तकिया । गेडुआ । विशेषता । प्रेम । प्रणय ।

उपभोग = का०, ६४ ।
[सं० पु०] (सं.) किसी वस्तु के व्यवहार का सुख या आनंद लेना । काम में लाना । बरतन ।

उपयुक्त = प्रे०, २१ । म०, २४ ।
[वि०] (सं.) योग्य । उचित । वाजिब । मुनासिब ।

उपयोग = का० कु०, १३ । का०, १६३ । म०, १६, १६ ।
[सं० पु०] (सं.) काम । व्यवहार । प्रयोग । योग्यता । लाभ, फायदा । प्रयोजन । आवश्यकता ।

उपयोगी = का०, १४६ ।
[वि०] (सं.) काम में आनेवाली । प्रयोजनीय । लाभकारी ।

उपल = का०, १६७, २७८ ।
[सं० पु०] (सं.) पत्थर । रत्न । बादल । ओला ।

उपलखण्ड = का० कु०, ५७, ६६ ।
[सं० पु०] (सं.) पत्थर का टुकड़ा । बादल का टुकड़ा । रत्न का टुकड़ा । ओले का टुकड़ा ।

उपलब्ध = का०, कु०, ३० ।
[वि०] सं.) प्राप्त ।

उपलोपम = का०, २३६ ।
[वि०] (सं.) पत्थर के समान । बादल के समान । रत्न के समान । ओला के समान ।

उपवन = का०, कु०, २, ३५, ४६ । चि०, २२, ६३ । प्रे०, १३ ।
[सं० पु०] (सं.) बाग, कुंज, आराम, उद्यान, वाटिका, फुलवारी ।

उपस्थित = का०, ३३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) विद्यमान । मौजूद । हाजिर । ध्यान में आया हुआ ।

उपहार = आं०, १७ । का० कु०, ५२ । का०, १८१ । भ्र०, ४२ । चि०, ५४ । ल०, ६२, ७६ । प्रे०, १३ ।
[सं० पु०] (सं.) भेंट । नजर । नजराने की वस्तु ।

उपहारों = क०, १० । भ्र०, ६४ ।
[सं० पु०] (सं) उपहार का बहुवचन ।

उपहास = आं०, २३ । चि०, ६७ । ल०, ११, ७६ । भ्र०, ३३ ।
[सं० पु०] (सं.) निंदासूचक हास । हँसी । ठट्ठा ।

उपादान = का०, २३७ ।
[सं० पु०] (सं.) प्राप्ति । मिलना । स्वीकार । ग्रहण । वह कारण जो स्वयं कार्य रूप में परिणत होता है ।

उपाधि = चि०, १३६ ।
[सं० स्त्री०] सं.) प्रतिष्ठा सूचक पद । खिताब । और को और बतानेवाल छल । कपट । उपद्रव ।

उपाय = का०, ११२, १२४, १७०, १७१, १८१, १६६, २६० । चि०, ५० ।
[सं० पु०] सं.) समीप पहुँचना । प्रयत्न । साधन । युक्ति, तरकीब ।

उपाख्यान = चि० ४६ ।
[सं० पु०] (सं.) प्राचीन वृत्तांत । कथा-कहानी । पुरानी कथा ।

उपालम्भ = का०, ११७ । भ्र०, ४६ ।
[सं० पु०] (सं.) निन्दा, बुराई । उलाहना । शिकायत । ओरहना ।

उपाव = चि०, १६६ ।
(ब्र. भा.) (दे० 'उपाय' ।)

उपासना = का०, ७१, १५७, १६१, २४०, २६४, २६७ ।

सं० स्त्री०] (सं.) आराधना। पूजा। परिचर्या।
पेक्षा = का०, १५७, १७५। झ०, ८६।
सं० स्त्री०] (सं.) उदासीनता। लापरवाही। विरक्ति।
पेक्षामय = का०, ४।
वि०] सं.) उपेक्षा से पूर्ण। विरक्तिमय।
पेक्षित = का०, १६७। झ०, ३७।
वि०] (सं) जिसकी उपेक्षा की गयी हो। तिरस्कृत जिसका अनादर किया गया हो।

फनी = ल०, १७।
क्रि० वि०] (हि.) ऊपर आयी। उफनाई। उबली। खौली।

बार = का०, कु०, १२।
सं० पु०] (हि.) मुक्ति, उद्धार। किसी को किसी कष्ट से बचा लेना।

भचूभ = का० कु०, १५।
[क्रि० वि०) (हि.) खचाखच। मुहेंमुह। ऊपर तक भरा।
भरी = का०, २५८।
[क्रि०] (हि.) सतह से ऊपर उठी हुई। ऊपर निकली।
मंग = का०, ८५, २२६। चि०, ४२। ल०,
[सं० स्त्री०] (सं.) ४६, ५४।
उत्साह। चित्त का उभाड़। सुखदायक मनोवेग। जोश। अधिकता। पूर्णता।
मंगित = चि०, ६४।
[वि०] (सं.) उत्साह पूर्ण: उमंग से भरा हुआ।
मगाहै = चि०, ६५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) उमंगित होता है।
मड़ = का०, ८, २६, १०६, १२२। ल०,
[सं० स्त्री०] (हि.) ५७।
उमड़ने की क्रिया। बाढ़। बढ़ाव।
मड़ता = का० कु०, ६२। ल०, का०, ५४। ६६।
[वि०] (हि.) बढ़ता हुआ। सीमा से बाहर निकलता हुआ।
मड़ि = चि०, ११, ६५।
[अ०] (ब्र. भा.) बढ़कर। सीमा से बाहर निकलकर।

र = आं०, ५४। का०, १८०, २१०, २४६।
[सं० पु०] (सं.) चि०, २२; ५२। झ०, २६। ल०, २३।
हृदय। मन। चित्त। छाती। वक्षस्थल।
रस्थल = का०, कु०, २६।
[सं० पु०] (सं.) हृदयस्थल। वक्षस्थल।
राहनो = चि०, ६०।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) (दे० उलहना।)
र्मियां = ल०, ५६।
[सं० स्त्री०] (हि.) लहरियां। तरंगें। पीड़ा। दुख। निशान।
र्मिल = आं०, ६८, । का०, ३५, ३६, १५६।
[वि०] (हि.) तरंगित। जिसमें लहरें उठी हों।
र्वर = का० कु०, ५७।
[वि०] (सं.) उपजाऊ। जरखेज।
र्वशी = चि०, १, ६, ७, ८, ६, १०, ११।
[सं० स्त्री०] सं.) इंद्रपुरी की एक अप्सरा।
लझ = का०, २२१, २३०।
[सं० स्त्री०] (सं.) फँसाव, अटकान। गाँठ। चिन्ता।
लझता = का०, ३५।
[क्रि०] (हि.) फंसता।
लझन = आं, २५। का०, २११, २३५, २८६।
प्रे०, ६।
(दे० 'उलझ'।)

लझन-लतिका = का०, १६५।
[सं० स्त्री०] (हि.) फंसने की बेल।
लझना = का०, २२५।
[क्रि० अ०] (हि.) फँसना, अटकना, लपेट में पड़ना।
लझा = आं, ६७। का०, १२७, १३५, १५८।
[क्रि०] (हि.) ल०, ४४, ४८।
फंसा।
लझाये = आं०, ६०।
[क्रि०] (हि.) फंसाये।
लझी = का०, ३६, ११५, ११६, १७७, १८२।
[वि०] (हि.) फंसी हुई।
लझी-अलकों का०, ३६।

[सं० स्त्री०](हि.) फंसी लटों ।
उलटता = ल०, ५४ ।
[क्रि० अ०] (हि०) पलटता ।
उलटी = का०, १६२ ।
[क्रि०] (हि) विपरीत, विरुद्ध ।
उलाहना = का० कु०, ८४ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) उपालंभ, गिला, शिकायत । निंदा ।
उलीच = भ्रं०, ३२ ।
[अ०] (हि०) उंडेल ।
उल्का = का०, १४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रकाश । तेज । ज्वाला । जलती लकड़ी ।
उल्काधारी = का०, २०५ ।
[वि०](हि.) जलती लकड़ी या प्रकाश या ज्वाला लिए हुए ।
उल्लंघन = का० कु०, १२१ ।
[सं० पु०] सं.) लांघना । पार होना । डांकना । अतिक्रमण करना ।
उल्लसित = का०, २५४ ।
[वि०] (सं.) प्रसन्न । खुश ।
उल्लास = का० कु , ५०, ६६, ७२ । का०,
[सं० पु०] (सं.) ३०, ६३, ६५, ६४, ११६, १४०, १४५, १८१, २२०, २७८ । भ्रं० ३६, ८६ । प्रे०, ११ । ल०, ६५ । प्रसन्नता । खुशी । उमंग ।
उल्लास-पूर्ण = का०, २४२ ।
[वि०] (सं.) प्रसन्नतामय । उमंगमय ।
उल्लास-शील = का०, १६१ ।
[वि०] (सं.) प्रसन्न स्वभाववाला ।
उल्लास-सहित = का० कु०, ४६ ।
[वि०] (सं.) प्रसन्नतापूर्वक ।
उवारो = चि०, ५२ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) उद्धार करें ।
उशीर-गृह = का० कु०, ६२ ।
[सं० पु] (सं.) खश के जड़ से बना हुआ घर ।
उषा = का० कु०, ६६, ७६ । का०, १०, २३, १६८, १७१, १७६, १६७, २८६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) भ्रं०, २८, २६, ४८, ६४, ६७ । प्रे०, ८ । ल० ११, ३२, ३५, ४० ।
उषा-पट = का० कु०, ११ । चि०, २८ ।
[सं० पु०] (सं.) लाल वस्त्र ।
उषा-सी = का०, १७२, २१७ । ल०, १०, २० ।
[वि०] (हि.) ऊषा के समान ।
उष्ण = का० ७७ । भ्रं०, ८६, ६० ।
[वि०] (स.) गरम । तेज ।
उस = आं०, ७८ । क०, ८, ६, ३१, का०
[सर्व०] (हि.) कु०, ४, २७ । का०, ६, ४६, ७०, १००,१०१,१३६, १४०, १४६, १६६, १७०, १८४, १८५, २१६, २६५ । प्रे० २, २० । ल०, ५६, ६०, ६१, ६५, ६६, ७५ । भ्रं०, २४, ४१, ४७, ५०, ७३, ७५,८७, ८९ । 'वह' का कर्मकारक ।
उस पर = का० कु०, ४२ । ल०, ३८ ।
[सर्व०] (हि.) वह का अधिकरण कारक का रूप ।
उसास = का०, १४२ । चि०, ५६, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) लंबी सांस । ऊपर को खींची हुई सांस । उच्छ्वास । ठंढी सांस । दुःख या शोक सूचक सांस ।
उसी = भ्रं०, २३, ५८, ५९ ।
[सर्व०] (हि.) उसको ही ।
उसे = भ्रं०, ७५, ७६ ।
[सर्व०] (हि.) उसको ।
उह = का०, १७६ ।
[अ०] (हि.) ओह ।

ऊ

ऊँचा = का० कु०, ११८ । का०, २६, २४७ ।
[वि०] (हि.) ल०, ४६, ५४, ७४ । म०, ८ । दूर तक ऊपर की ओर गया हुआ । उठा हुआ । उन्नत ।
ऊँचाई = का०, २५७ ।

[सं० स्त्री०] ऊपर की ओर का विस्तार । उठान ।
(हि.) उच्चता । गौरव, बड़ाई ।

ऊँची = ल०, ५७ ।
[वि० स्त्री०] (हि.) (देखिये 'ऊँचा')।

ऊँचे = का०, ८८, १४७, १८२, २५८ । भ्रू०,
[सं० पु०] (हि.) पृ० सं० ४५ ।
ऊपर की ओर । जोर से (शब्द करना)।
बड़े ।

ऊँचे-ऊँचे = का०, २५७ ।
[क्रि० वि०] (हि.) बड़े-बड़े । उन्नत । विशाल ।

ऊजड़ = का०, १६० ।
[वि०] (हि.) उजड़ा या ध्वस्त स्थान । निर्जन ।
जंगल । बियाबान ।

ऊन = का०, १४२, १४७ ।
[सं० पु०] (हि.) भेंड, बकरी आदि के रोयें जिनसे
वि० (सं.) कम्बल बनता है । कम, थोड़ा ।
उदास । सुस्त ।

ऊपर = का०, ३, ६८, १८२, १८५, १९५,
[क्रि० वि०] (हि.) २४५, २४६, २५८, २६० । चि०,
६५, ७० । ल०, ४० ।
ऊँचे स्थान में । ऊँचाई पर । आधार
पर । सहारे पर । ऊँची श्रेणी में ।
लेख में सबसे पहले । अधिक, ज्यादा ।
प्रकट में । देखने में । तट पर । अति-
रिक्त, सिवा ।

ऊपर-नीचे = का०, १७० ।
[मु०] (हि.) एक पर एक । उत्थान पतन । ऊपर से
लेकर नीचे तक ।

ऊब = भ्रू०, ५९ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) व्याकुलता । ऊबने की क्रिया या भाव ।
उद्वेग । घबराहट । उत्साह । व्यंग ।

ऊर्जस्वित = का०, ४ । ल०, ५४ ।
[वि०] (सं.) बलवान । वीर्यवान । तेजस्वी । चढ़ा
हुआ ।

ऊर्जित = ल०, ६३ ।
[वि०] (सं.) बलवान । शक्तिमान । उत्साहित ।

ऊर्ध्व = का०, २५७ ।
[क्रि० वि०] (सं.) ऊपर । ऊपर की ओर ।

ऊर्मिल = आं०, ७३ ।
[वि०] (सं.) तरंगित । जिसमें तरंगें उठती हों ।
आन्दोलित ।

ऊष्मा = का०, २६१ । ल०, ३८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) गर्मी ।

ऋ

ऋजु = का०, ११८, १८२ ।
[वि०] (सं.) सीधा, सरल, सहल ।

ऋण = का०, ७६, ११०, २४८, २४९ ।
[सं. पु०] (सं०) कर्ज, उधार ।

ऋतु = का०, १७८, २१७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) मौसम ।

ऋतुओं = का०, २६१ ।
[सं० स्त्री] (सं.) ऋतु का बहुवचन ।

ऋतुपति = का०, ७३, १०१ ।
[सं० पु०] (सं.) बसंत, ऋतुराज ।

ऋतुनायक = चि०, १४७ ।
[सं० पु०] (सं.) ऋतुराज, ऋतुपति, बसंत ।

ऋषि = क०, २७ ।
[सं० पु०] (सं.) मंत्रद्रष्टा । परम बुद्धिमान, ज्ञान-विज्ञान
का ज्ञाता, दूरदर्शी । सच्चरित्र, त्यागी ।
परोपकारी । तपस्वी ।

ऋषिकुल = चि०, ५९ ।
[सं० पु०] (सं.) ऋषियों का परिवार ।

ऋषियों = ल०, १२ ।
[सं० पु०] (सं.) ऋषि का बहुवचन ।

ऋषिवर = चि०, ५८ ।
[सं० पु०] (सं.) ऋषि श्रेष्ठ ।

ऋषिवर्य = का० कु०, १०५ ।
[सं० पु०] (सं.) श्रेष्ठ ऋषि । महर्षि ।

ऋषे = क०, ३० ।
[सं०] (सं.) ऋषि का संबोधन ।

ए

एक = का०, २७७, २७८ । भ्रु०, २३ ।
[वि०, सं०] हि.) सबसे छोटी संख्या, अधम गिनती । एकताबद्ध । अभिन्न ।
एकती = चि०, १५८ ।
[सं० स्त्री०] (व्र. भा.) एक जगह । एकत्र ।
एकता = का०, १६४ ।
[सं० स्त्री०] मिलकर एक होने का भाव । एक मत ।
(सं.) मेल । समानता । बराबरी । अकेला । अनोखा । अद्वितीय । अनुपम ।
एकत्र = का०, १६८, १८२, १८६, २७२ ।
[क्रि० वि०] (सं.) का० कु०, ११८ । ल०, ६० । एकट्ठा । एक जगह ।
एकटक = चि०, ११ ।
[सं० पु०](हि.) अनिमेष या स्थिर दृष्टि से । लगातार देखते हुए ।
एकत्रित = भ्रु०, ७६ । प्रे०, १२ ।
[वि०] (सं.) संगृहीत । एकट्ठा किया हुआ ।
एकांत = का० कु०, ५३ । का०, २४, ३४, ४५, ६५, १३२, १३४, २४६ । भ्रु०, ७१ । ल०, ४१ ।
[वि०] (सं.) अत्यन्त, बिलकुल । अलग । अकेला । निर्जन । सूना ।
एकाएक = चि०, ५ ।
[क्रि० वि०] (हि.) अकस्मात् । अचानक । सहसा ।
एकाग्र = चि०, १० ।
[वि०] (सं.) एक रूप में स्थिर । चंचलता रहित । ध्यानमग्न ।
एकाधिपत्य = चि०, १७ ।
[सं० पु०] (सं०) किसी वस्तु पर एक व्यक्ति का पूर्ण अधिकार या पूर्ण प्रभुत्व ।
एषणा = का०, २६६ ।
[सं० स्त्री](सं.) इच्छा । अभिलाषा ।
एहि = चि०, २३, ५७ ।
[सर्व०] (व्र. भा.) इसे । इसको ।

ऐ

ऐंठ = ल०, ६६ ।
[सं० पु०](हि.) ऐंठने की क्रिया या भाव । अकड़ ठसक । गर्व, घमण्ड ।
ऐंठी = आं०, २५ । का०, ११६ ।
[सं० स्त्री०] मुड़ी हुई । फिरी हुई । अकड़ी हुई
(हि.) घमण्ड में चूर ।
ऐरावत = चि०, २८ ।
[सं० पु०] (सं.) इन्द्र का हाथी । इन्द्र का धनुष । इर वान नामक मेघ । बिजली । एक ना का नाम । नारंगी ।
ऐश्वर्य = का०, २७० । ल०, ६८ ।
[सं० वि०] (सं.) विभव, सम्पदा । गौरव, महिमा, महत्व
ऐसा = आं०, ६७ । क०, २२ । का० ४० [वि०] (हि.) १४४, १८६, १६१ २५८ । भ्रु०, ४० म०, ४ । ल०, १८ ।
इस प्रकार का । इस ढंग का ।
ऐहैं = चि०, ६४ ।
[क्रि० अ०] (व्र. भा.) आयेंगे ।

ओ

ओ = क०, १६ । का०, ५, ४०, ६५, १५४, १७०, १८४, १६६, २०१ । ल०, ६ ४३ ।
[अ०] (हि.) संबोधन और आश्चर्यबोधक शब्द ।
ओघ = का० ७१ ।
[सं० पु०] (सं.) समूह । ढेर । घनत्व, घनापन । बहाव धारा ।
ओघ-सा = ल०, ६६ ।
[वि०] (हि.) उलटे हुए के समान । पलटे हुए के समान ।
ओज = का०, ८७ । चि०, ६४, १५३ । ल० ५६ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रताप, तेज । उजाला, प्रकाश । साहित्य

शास्त्र का एक गुण। शरीर में रेशों का सार भाग।

ओझल = का०, २४६।
[सं० पु०] (हि.) ओट, आड़।

ओढ़ = ल०, ४३।
[क्रि० स०] (हि.) शरीर को ढककर, आच्छादित कर। अपने सिर लेकर। अपने ऊपर या जिम्मे लेकर।

ओढ़ि = चि०, २४।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) (देखिये 'ओढ़'।)

ओढ़नी = म०, १३।
[सं० स्त्री०] (हि.) स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र। चादर।

ओढ़े = का०, ३०, २३५।
[क्रि०स०] (हि.) शरीर को आच्छादित किये, ढके। अपने सिर लेना या जिम्मे लेना।

ओत-प्रोत = का० कु०, ६४। का०, ४।
[वि०] (सं.) बहुत मिला जुला। गुँथा हुआ।

ओपकार = चि०, ६२।
[वि०] (सं.) उपकार से सम्बन्ध रखने वाला। उपकार से भरा हुआ।

ओस = का०, ६४, २७१। ल०, २४।
[सं० स्त्री०] (हि.) हवा में मिली हुई भाप जो रात की सर्दी से जमकर कणों के रूप में गिरती है। शबनम।

ओस-सा = ल०, ७०।
[वि०] (हि.) ओस के समान सुंदर या नश्वर। क्षणिक।

औ

औ = का० कु०, १२६। चि०, ४६, १०१।
[अ०] (हि.) झ०, २६।
कविता में और का सूचक शब्द।

औद्धत्य = का० कु०, १०५।
[सं० पु०] (सं.) उग्रता। अक्खड़पन। धृष्टता। अविनीतता। अशालीनता।

और = क०, ८, ६, १०। का० कु०, ४१, ५७, ८३। का०, ५, १०, ५१, ८४, ८५, १०५, १२६, १२६, १८३, १६७, २६२, २६५। चि०, १५, ४६ ६५, ७३, १४०। झ०, २५, ४४, ७४। प्रे०, ४, ६। म०, १०। ल०, ४०, ४४, ५२, ५६, ६२, ६५, ६७, ६६, ७०, ७६।
[अ०] (हि.) संयोजक शब्द। तथा।

औरहु = चि०, ५२, ५७, १४४।
[अ०] (ब्र. भा.) और भी।

औरों = का० कु०, ७५। का०, १३२, १७२, २१०। झ०, ४४, ५३। ल०, ११।
[अ०] (हि०) और दूसरे भी। दूसरों को, अन्य को।

औषधी = झ०, ८८।
[सं० स्त्री०] (सं.) दवा।

औषधीश = चि०, १६४।
[सं० पु०] (सं) औषधि के स्वामी, वैद्य, हकीम।

क

कंकन = चि०, ६१।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) कलाई में पहिनने का आभूषण, कड़ा, कंगन, कंगना, कंकण, चूड़ा, खड़ुआ। वह धागा जो हिन्दू संस्कृति के अनुसार विवाह के अवसर पर वर-वधू के दाहिने हाथ में रक्षार्थ बांधा जाता है।

कंकण-क्वणित = का०, ११।
[सं० पु०] (सं.) ध्वनिमय कंकण।

कंकाल = का०, २२७।
[सं० पु०] (सं.) अस्थि-पञ्जर। शरीर की ठठरी मात्र।

कंचन = चि०, ६१।
[सं० पु०] (सं.) सुवर्ण, सोना, सम्पत्ति, धन। धतूरा। निरोग, स्वस्थ। मनोहर।

कंचन-सा = का०, २०७।
[वि०] (हि.) सुवर्ण सदृश्य। सोने की तरह।

कंज = आं०, ३०। का० कु०, ६४। चि०,

[सं० पु०] ३, २३, १८८, १८६ । झ०, ६४ ।
(सं०) कमल, सरोज । ब्रह्मा । अमृत । केश ।

कंज-कली = का० कु०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कमल की कली । सरोज की कलिका ।

कञ्ज-कानन-मित्र=का० कु०, १० ।
[सं० पु०] (सं.) कमल वन का मित्र, सूर्य ।

कंज-कोश = चि०, १८१ ।
[सं० पु०] कंज = ब्रह्मा । कमल । अमृत । शिर के
(सं०) बाल, केश । कोश - अंड, अंडा । डिब्बा, गोलक । फूल की कली । आवरण । वेदान्त के अनुसार पांच संपुट । कंज-कोश = कमल के फूल का पराग स्थान ।

कंजनाल = चि०, १४ ।
[सं० स्त्री०] कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली
(सं०) और लम्बी डंडी, पौधे का डंठल, कांड, नली, नाल ।

कंटक = का० कु०, ४, ५०, ६३ । चि० १०,
[सं० पु०] ११, १६४, १८४ । ल०, ५० ।
(सं.) कांटा, सुई का अग्रभाग या नोक, काम में होने वाली बाधा । ऐसा काम जिससे किसी को दुःख हो । रोमांच । कवच ।

कंजु-लोचन = का० कु०, १०० ।
[सं० पु०] (सं.) कमल के समान आँख ।

कंटक-संग = का०, १६३ ।
[सं० पु०] (सं) कांटों के साथ । कांटो के सहित ।

कंकीर्ण = का० कु०, ५५ ।
[वि०] काँटों से बिंधा हुआ, काँठों से घिरा हुआ ।
(सं.) आपत्तिमय ।

कंटकित = का०, १२६ ।
[वि०] (सं०) काँटेदार । रोमांचित । पुलकित ।

कंठ = का० कु०, ४३ ४८ । का०, १८३ २६,
[सं० पु०) ४२, ७२, १४६, १५४, १७५, २७४ ।
(सं.) झ०, ४५, ५०, ४८, ल०, ३४, ७१ ।
गला । गले की वे नलियाँ जिनसे भोजन अन्दर उतरता है और आवाज आती है । घाँटी । स्वर । तीर, तट, करार ।

कंथा = ल०, ११, १५ ।
(सं० स्त्री०) (सं) गुदड़ी । चिथड़ा ।

कंदरा = चि०, १५६, २२ ।
[संज्ञा० स्त्री०] (सं.) गुफा, गुहा ।

कंदील = प्रे० १५ ।
[सं० स्त्री०] मिट्टी, अबरक, कागज, आदि की
(अ.) बनी हुई वह लालटेन जिसका मुँह ऊपर की ओर रहता है । भारत में कार्तिक मास में सनातनधर्मावलम्बी उसी को आकाशदीप के रूप में जलाते हैं ।

कंदुक = का० कु०, १०, । चि०, १६१ ।
[सं० पु०] (सं.) गेंद । सुपारी । एक वर्णवृत्त ।

कंदुक-सा = का०, २६८ ।
[वि०] (सं.) गेंद के समान ।

कंध = चि०, ६६ ।
[सं० पु०] (हि.) डाली, शाखा । कंधा, स्कन्ध ।

कंधर = चि०, ४१ ।
[सं० पु०] (सं.) गरदन, ग्रीवा । बादल, मेघ ।

कंप = का०, २४६ ।
[सं० पु०] (सं.) काँपना । साहित्य में सात्विक अनुभाव ।

कंप-कंप = ल०, २५ ।
[क्रि० अ०] (हि.) काँप-काँप कर, भयभीत होकर ।

कंपन = का०, ३५, ६५, १५७, १९४, ६६,
[सं० पु०] २६३ । ल०, ४६ ।
(सं.) कँपकँपी, थरथराहट ।

कंपन-सी = का० कु०, १०८ । ल०, ६ ।
[वि०] (स.) थरथराहट के समान ।

कँप-सी = का०, ५ ।
[वि०] (सं.) काँपने के समान ।

कंपाइ = चि०, ५ ।
[पूर्व० क्रि०](हि.) कँपाकर, थरथराकर ।

कंपित = का०, १६, ४४, १४४, १५३, १६२,
[वि०] (सं.) २५३, २६७ । ल०, १७, ३४ ।

काँपता हुआ। चलायमान, चंचल। भयभीत। डरा हुआ।

कँपती = का०, १४।
[वि०] (हि.) थरथराती, काँपती।

कँपते = प्रे०, ४।
[वि०] (हि.) थरथराते, काँपते।

कँपा देना = प्रे०, ११।
[क्रि० स०] (हि.) थरथरा देना, चलायमान कर देना।

कँपी = म०, १३।
[क्रि० अ०] (हि.) काँप गई। अयभीत हो गई।

कंबु = का० कु०, ४३।
[सं० पु०] (सं.) शंख। शंख की चूड़ी। हाथी। घोंघा।

कई = का०, २३४। म०, १८।
[वि०] (हि.) एक से अधिक। अनेक। कतिपय।

कक्षा = का०, ५।
[सं० स्त्री०] (सं.) परिधि, घेरा। ग्रहमार्ग। श्रेणी।

कच = चि०, ६८।
[सं० पु०] केश, बाल। झुरुट। बादल। धँसने या चुभने का शब्द या भाव।
(सं.)

कचनार = चि०, ७२।
[सं० पु०] (हि.) एक सुगधित पुष्प वृक्ष। पुष्प विशेष।

कच-भार = का० कु०, ६७।
[सं० पु०] केश का भार या बोझ। बादल का घेरा।
(सं.)

कचोट = भ०, ७३।
[सं० पु०] (हि.) धँसने या चुभने का भाव, कसक। टीस।

कच्छप = का०, १५, ५९।
[सं० पु०] (सं.) कछुआ। अवतारों में से एक।

कछार = प्रे०, ३। ल०, १२, १३।
[सं० पु०] समुद्र या नदी के किनारे की तर
(हि.) और नीची भूमि। दलदल।

कछु = चि०, ४६, ६०, ६४।
[वि०] (हि.) थोड़ा, कुछ।

कछुक = चि०, ६५, ७२, १४१, १८४।
[वि०] (हि.) कुछ। थोड़ा।

कछुक-बेर = चि०, ६०।
[क्रि० वि०] (हि.) कुछ समय बाद या पश्चात्। उपरांत।

कटक = चि०, ४२, ५२।
[सं० पु०] सेना। राजशिविर। कंकण। पर्वत का
(सं.) मध्यभाग। समूह। एक नगर का नाम।

कटना = का०, २१४। भ०, १५। म०, ६।
[क्रि०] किसी वस्तु का औजार से कटकर
(हि.) टुकड़ों में (विभक्त) होना। अलग होना। युद्ध में मरना।

कटाक्ष = का०, २५३। भ०, ८१। ल०, ७६।
[सं० पु०] तिरछी चितवन, मोहक नयन भंगिमा।
(सं.) आक्षेप में व्यंग्यपूर्ण बात।

कटि = का०, १४३। चि०, २२, २४, ५५, ६४, १४८।
[सं० स्त्री०] कमर, शरीर का मध्यभाग। हाथी का
(सं.) गण्डस्थल।

कटिबद्ध = चि०, १५।
[वि०] (सं.) कमर बाँधे हुए, तैयार, तत्पर, उद्यत।

कटीला = भ०, ४८।
[वि०] (हि.) काट करने वाला। तीक्ष्ण, चोखा, बहुत तीव्र प्रभाव डालने वाला। मोहित करने वाला। कांटेदार।

कटु = का०, १०६।
[वि०] छह रसों में से एक रस। कड़ुवा,
(सं.) चरपरा। बुरा लगने वाला, अप्रिय।

कटुता = का०, ३६, ११६, १५७।
[सं० स्त्री०] (सं.) कड़ुवापन, कड़ुवाई, मतभेद।

कटुवचन = चि०, ४१।
[सं पु०] हि. कठोर बात, अप्रिय वार्ता।

कटे = का०, ११५, १४६।
[क्रि० अ०] (हि) बाँटे, समाप्त। टुकड़े हुए।

कठिन = का० कु०, ८, ११२। का०, ३, १७८।
[वि०] चि०, ४१। भ०, ८३। ल०, ६६।
(सं.) कड़ा, सख्त, कठोर। जल्दी समझ में न आनेवाला, दुष्कर, दुःसाध्य।

कठिनाई = का० कु०, ४५। चि०, ७२।
[सं० स्त्री०] (हि.) कठिनता, कठोरता, कड़ाई।

कठोर = आं०, ६६। क०, २४। का० कु०, ८२, ११२। का०,१७०,१९४, २४८। चि०, १४।
[वि०] (सं.)
कठिन। सख्त, कड़ा, निर्दय, निष्ठुर।

कठोरता = भ्रू०, १४३।
[सं० स्त्री०] (सं.) कड़ाई, निर्दयता, बेरहमी, सख्ती।

कड़ाकर = का०, ७७।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) सख्त कर, कठोर कर, तान कर।

कड़ियाँ = आं०, ७०, का० ७७।
[सं० स्त्री०] (हि.) जंजीरें, लड़ी। गीत का एक पद।

कड़ी = क०, २। का० कु०, ५१। का०, १५८, ६। भ्रू०, ८। म०, ३।
[सं० स्त्री०] (हि.)
सिकड़ी की लड़ी का छल्ला, जंजीर। गीत का एक पद। काठ की धरन। संकट।

कड़े = म०, १, ५।
[सं० पु०] (हि.) सख्त, कठिन, एक प्रकार का आभूषण।

कढ़ै = चि०, १०६।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) कड़ाई, कठोरता, निर्दयता।

कढ़त = चि०, १५४।
[क्रि० अ०] (हि.) निकलता, बाहर होता, आगे बढ़ता।

कढ्यो = चि०, ६, १८४।
[क्रि०अ०] (ब्र.भा.) निकल जाना, बाहर हो जाना।

कढ़ि = चि०, १८६।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) निकल कर, बाहर होकर।

कढ़ी = चि०, १८१।
[क्रि० अ०] (हि.) निकल गई, बाहर हो गई, आगे बढ़ गई।

कढ़ै = चि०, १६६
[क्रि० अ०] (ब्र० भा०) निकल जाय, बाहर हो जाय।

कण = आं०, ११। का०, ६, ३६, ८४, ८८, ६७, १२३, २४२, २६३। भ्रू०, ३१। प्रे०, २५।
[सं० पु०] (सं.)
बहुत छोटा टुकड़ा, तिनका, रवा, दाना।

कण-कण = का०, १६, १२५, १७८, २८९। ल०, ४६।
[सं० पु०] (सं.)
प्रत्येक स्थान, हर जगह, जर्रा जर्रा।

कण-सा = का०, ६१।
[वि०] (सं.) कण के समान छोटा, दाने के समान।

कण-सी = का०, २०।
[वि०] (सं.) 'कण-सा' का स्त्रीलिंग।

कणहिं = चि०, १५३।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) कण मात्र, बहुत थोड़ा।

कण्व = चि०, ५८।
[सं० पु०] (सं.)
एक ऋषि का नाम जिन्होंने 'शकुन्तला' का पालन किया था।

कण्व-चरण = चि०, ५, ६०।
[सं० पु०] (सं.) कण्व ऋषि का चरणपाद।

कण्व-महर्षि = चि०, ५५, ६५।
[सं०पु०] (सं.) देखिये 'कण्व'।

कतहुँ = चि०, ५५।
[अ०] (ब्र. भा.) कहीं।

कतार = चि०, १५८।
[सं० स्त्री०] (अ०) पंक्ति, श्रेणी, समूह, झुण्ड।

कथन = का०, १०९।
[सं० पु०] (सं.)
कुछ कहना, किसी की कही हुई बात। किसी के सम्मुख दिया गया वक्तव्य।

कथन-सदृश = प्रे०, ७।
[वि०] (सं.) कहने के समान, कही बात के समान।

कथा = आं०, १३, ५८,। का०, ३७, ६५, २७६। चि०, ४६। प्रे०,६। म०, २। ल०, ११।
[सं० स्त्री०] (सं.)
वह जो कहा जाय, धार्मिक आख्यान या चर्चा।

कथाओं = म०, १५।
[सं० स्त्री०] (हि.) कथा का बहुवचन।

कथानुकूल = चि०, ६०।
[वि०] (हि.)
कथा के अनुसार। धर्म विषयक-वार्ता के पक्ष में अथवा हित में।

कदंब = का०, ६८, २२३, २८५। चि०, [सं० पु०] (सं.) ५५, ६२।
एक वृक्ष तथा उसके फल का नाम।

कदंब-कानन-सा = का०, २२३।

[वि०] कदम्ब बन अथवा उपवन के समान।
(सं.) हरा-भरा-प्रसन्न।

कदंब-सा = का०, ६४। ल०, ५६।
[वि०] (सं.) कदंब के समान। रोमाञ्चित।

कदली = चि०, ७०।
[सं० स्त्री०] (सं.) केला। काले तथा लाल रंग का हिरन।

कन = आं०, ३२। का०, २१७, २३५। ल०,
[सं० पु०] ३४।
(हि.) (देखिये 'कण'।)

कनक-कुसुम-रज = का०, २६१।
[सं० पु०] (सं.) पलास के फूल का पराग।

कनिष्ठ पुत्र = का०, १८।
[सं० पु०] (सं.) सबसे छोटा पुत्र, लहुरा लड़का।

कनी = चि०, २८।
[सं० स्त्री०] छोटा टुकड़ा, हीरे का बहुत छोटा
(हि.) टुकड़ा। किनकी।

कन्या = चि०, ३३।
[सं० स्त्री०] क्वारी लड़की, पुत्री, बेटी। बारह
(सं.) राशियों में से एक।

कपट = चि०, ४२। भ०, ५२। प्रे०, १६।
[सं० पु०] (सं.) छल, धोखा, दुराव, छिपाव।

कपटी = चि०, २६।
[वि०] (सं.) कपट करने वाला, धोखेबाज, धूर्त।

कपिशा = ल०, ५१।
[सं० स्त्री०] (सं.) एक नगरी का नाम। मद्य, सुरा।

कपाल = का०, १२२, १८७।
[सं० पु०] (सं.) खोपड़ी, ललाट, मस्तक। भाग्य, अदृष्ट।

कपूर-सा = का० कु०, १०।
[वि०] (हि.) कपूर के समान। कर्पूर सदृश।

कपोल = आं० २२, ३२। का०, १०, ६४। चि०,
[सं० पु०] ६, ७०। भ०, २२। म०, १३।
(सं.) गाल।

कपोल-कला = चि०, १४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) कपोल का सौन्दर्य।

कपोलन = चि०, ३।
[सं० पु०](ब्र. भा.) कपोल का बहुवचन।

कपोलों = का०, १०३, १७१।
[सं० पु०] (हि.) कपोल का बहुवचन।

कबन्ध = चि०, ४२।
[सं पु०] जल, पानी। मेघ, बादल। बिना सिर का
(सं.) धड़। एक राक्षस का नाम। एक मुनि
का नाम। एक गंधर्व का नाम। राहु-केतु।

कब = आं०, १७, २३। का०, १५, १६, २८,
[क्रि० वि०] ६३, ८१, १४०, १४५, १५७, १५८,
(हि.) १७०, १८४, १९०, २३३, २७८।
किस समय।

कबतक = का०, १७, ३७, १११।
[क्रि० वि०] (हि.) किस समय तक।

कब-से = का०, २५७।
[क्रि० वि०] (हि.) किस समय से।

कब-री = का०, २१२।
[क्रि० वि०] (हि.) बताओ कब।

कबहुँ = चि०, १४१, ६४।
[क्रि०वि०](ब्र. भा.) कब से। किसी समय भी। कभी भी।

कबौं = चि०, ६१, १५६।
[क्रि० वि] (ब्र. भा.) किसी समय। कभी।

कभी = आं०, २७। का०, ७, १५, २६, २६, ३१।
[क्रि० वि०] का० कु०, २३। का०, ३३, ५५, ८३,
(हि.) १०५, १४१, ११८, १४८, १५१,
१५३, १७७, १७८, १८६, १६०,
१६२, २१४, २४४। भ०, ८६। प्रे०,
३, ५, १३, १५, १६, २०, २६। म०,
३, ११, १२, १४, १८, २२। ल०, १०,
३४, ३४। प्रायः अनेक पृष्ठों पर।
अन्य किसी समय।

कभी-कभी = का०, १६१।
[क्रि० वि०] हि.) किसी-किसी समय।

कभी मत = का०, ५३।
[क्रि० वि०] (हि.) किसी समय भी नहीं।

कमनीय = आं०, ३८। का० कु० ४८, ५३। का०
[वि०] सं.) २५४, २६२। ल०, ६१।

मनोहर। मनोरंजक। सुन्दर। कामना करने योग्य।

कमनीयता = आ०, २०। का० कु०, ८२। भ०, ६३।
[सं० स्त्री०] (सं.) सौन्दर्य, मनोहरता।

कमल = का०, ३६, ४५, १६८, २६१। चि०, २, १४१, १५७। प्रे०, १३। ल०, ४४।
[सं० पु०] (सं.) जल में उगने वाला एक पौधा जो अपने सुन्दर फूल के कारण प्रसिद्ध है। जल, पानी। गर्भाशय का अग्रभाग। फूल। एक प्रकार का पित्त रोग का रोगी। कुंकम। आँख का कोआ। दीपक-राग का दूसरा पुत्र। छह मात्राओं का एक छन्द। छप्पय के ७१ भेदों में से एक। एक प्रकार का रोग। हिरन की एक जाति।

कमल-कली = का० कु०, ६६। चि०, १२०।
[सं० स्त्री०] (सं.) कमल की कली।

कमल-कोश = का० कु०, १२२। चि०, १६५।
[सं० पु०] (सं.) कमल का कोश जिसमें पराग रहता है।

कमल-दल-बीच=का० कु०, ४८।
[सं० पु०] (हि.) कमल की पंखुड़ियों के बीच।

कमल-लोचना= म०, १७।
[सं० पु०] (हि.) कमल जैसे नेत्रोंवाली।

कमला = का० कु०, ६०। चि०, १४६। ल० ७८।
[सं० स्त्री०] (सं०) लक्ष्मी। धन। ऐश्वर्य। जारंगी, संतरा। एक नदी का नाम। सुन्दरी।

कमलावली= का० कु०, ५०।
[सं० स्त्री०] (सं.) कमलों का समूह।

कमलिनी = चि०, २४, १७०। भ०, ७०।
[सं० स्त्री०] (सं.) कमल। कुमुदिनी। छोटा कमल।

कमली = भ०, २१।
[सं० स्त्री०] (सं.) कुमुदिनी

कमान = चि०, ३, १६३।
[सं० स्त्री०] (फा.) धनुष। इन्द्रधनुष। मेहराबदार बनावट। तोप, बन्दूक। फौजी कार्य की आज्ञा। नौकरी। ड्यूटी। फौजी काम।

कमाल = का० कु०, ४३।
[सं० पु०] परिपूर्णता। निपुणता। कात्स्न्यित आश्चर्य। अद्भुत कार्य।
(अ.)

कमी = का०, ११४, १४५, २८७। भ०, ८६। ल०, ६४।
[सं० स्त्री०] (फा.) न्यूनता, अल्पता। हानि।

कर = का०, २६, २८, २६, ३२, ३३, ३६, ३६, ५२, ५३, ६७, ६२, ६८, १०५, ११६, ११७, ११८, १३२, १२७, १३३, १३६, १५७, १६५, १७०, १७५, २४४, १८३, १८५, १८६, १६६, २००, २२८, २३०, २३७, २३८, २४२, २४३, २७०। प्रे०, ४। म०, २, ३, ५, ६, ७। ल०, १।
[सं० पु०] (सं.) हाथ। हाथी का सूंड। सूर्य या चन्द्रमा की किरण। ओला, पत्थर। महसूल। टैक्स। करने वाला। छल, युक्ति। पाखंड। अवधी और ब्रज भाषा की सप्तमी की विभक्ति।
[क्रि०] (दे० 'करना'।)

कर-कमल = का०, ८५। चि०, २।
[सं० पु०] (सं.) कमल के समान हाथ या कमल रूपी हाथ। कर-सरोज।

करका-घन-सी= का०, ६।
[वि०] (सं.) ओले गिराने वाले या बरसाने वाले बादलों के समान।

कर किसलय= भ०, २७।
[सं० पु०] (हि.) कोमल पत्ते सा हाथ।

कर-चिन्ह = चि०, ३०।
[सं० पु०] (हि.) हाथ का निशान।

करजोरे = चि०, ६४।
[वि०] (ब.भा.) हाथ जोड़े हुए।

करतल गत = का०, १३६। चि०, १, ६, ६३, १४१।
[वि०] भ०, ५३। म०, ३।
(सं.) हाथ में आया हुआ; सरल। अधिकृत।

करतूत = का० कु०, ६६।

[सं० पु०] (हि.) कार्य, कर्म, करनी, कला, हुनर।

करना = आं०, १५। क०, १५, २१। का०, ६, १५, २०, २३, २६, २८, २९, ४५, ५०, ५१, ५२, ५३, ५५, ५६, ६४, ७०, ७१, ८३, ८४, ८८, ९०, ९२, ९९, १००, २०३, १०४, १०५, १२३, १३३, १६१, १६१, १६४, १६५, १६७, १७०, १८१, १८३, १८·, १९१, १९४, १९९, २१६, २१८, २२६, २३६, २४३, २४७, २५०, २५१, २५६, २६२, २६७, २७०, २७१, २७३, ३८१, २८६, २८५। चि०, ५६, १४८। प्रे०, ५, २५। म०, ३, ९, १४। ल०, ११।
दे० करने।

[क्रि० हि.)

करनी = का०, २३९।
[सं० स्त्री०] (हि.) करतूत।

कर-पल्लव = का०, २५६।
[सं० पु०] (सं.) पत्ते रूपी हाथ या हाथ।

करने = का०, ८४, ९४, १०४, ११७, १४६, १४७, १५०, १८३।
[क्रि०] (हि.) एक रूप से दूसरे रूप में लाने की क्रिया। बनाना।

करनेवाले = ल०, ११।
[सं० पु०] (हि.) क्रिया को आरम्भ से समाप्ति की ओर ले जाने वाले, सम्पादित करने वाले, कर्ता।

करबीच = म०, ८।
[अ०] (हि.) कर के मध्य में।

कर-लाघव = म०, ६।
[सं० पु०] (सं.) कार्यपटुता, दक्षता, निपुणता, किसी काम को शीघ्र और निपुणता के साथ करने का भाव।

करपै = चि०, ७३।
[सं० पु०] (सं.) हाथ पर। सूँड पर, किरण पर।

करवट = आं०, ११। का०, १८९।
[सं० स्त्री०] हाथ या पार्श्व के बल लेटने की स्थिति (हि.) या मुद्रा।

करवा = क०, २६।
[सं० पु०] (हि.) जल देने का टोंटीदार पात्र।

करवाल = चि०, ४६, १०३। म०, ८।
[सं० पु०] (सं.) तलवार। नाखून।

कर से = का०, ३१।
[सं० पु०] (हि.) हाथ से।

कर-स्पर्श = का० कु०, १६।
[सं० पु०] (सं.) हाथ से छूने का भाव, छूना, सहलाना। आरम्भ करना।

करहुं = चि०, ३०, ५७, ७२, ७४, १४१।
[क्रि०] (ब्र. भा.) (दे० 'करहूँ'।)

करहूं = चि०, ४६।
[क्रि० स०](ब्र. भा.)करो। (दे० 'करना'।)

करहुगे = चि०, १५७।
[क्रि०स०](ब्र भा.) करोगे।

कराती = का०, २५०।
[क्रि०] (हि.) कराती हुई। (दे० 'करना')।

कराना = म०, ७।
[क्रि० स०] (हि.) किसी काम को दूसरों से सम्पादित कराने की क्रिया।

कराल = चि०, १०६।
[वि०] (सं.) कठिन, दुर्गम, भयङ्कर, भयानक।

करालिका-सी = चि०, १००।
[वि०] (सं.) भयावनी, भीषणता प्रदर्शित करनेवाली के समान।

कराह = का०, २४८।
[सं०पु०] (अ०) व्यथा सूचक शब्द।

कराहती = चि०, १६४।

कराहते = का०, २६६।

कराहना = का० कु०,४,४५। का०,१०। ल०,५२।
[क्रि० अ०] (अ.) व्यथा सूचक शब्द निकालना।

करि = चि०, १६, २८, ४६।
[सं० पु०] (सं.) हाथी।

[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) करके।

करिकर = चि०, २२।

[सं० पु०](सं.) हाथी का सूँड़ ।

करि-कर-सम = म०, ८ ।
[वि.] (सं.) हाथी के सूँड़ के समान ।

करि के = चि०, १५, ६६ ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) करके ।

करि कै = चि०, ४२ १४८, १५२ ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) (दे० 'करि के' ।)

करि-दर्प = चि०, ४१ ।
[सं० पु०] (सं.) मद, मस्ती ।

करिबो-कछु = चि०, ६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) कुछ करना है । कुछ करो ।

करी = चि०, १८, ३१, ४१ ।
[सं० पु०] (सं.) (दे० 'करि' ।)

करु = चि०, १०२ ।
[क्रि० स०] करो, किसी काम को करने की आज्ञा
(ब्र भा.] सूचक क्रिया ।

करुण = आं०, १३ । का०, ४७, ५५, १२६
[सं० पु०] ८६ । भ्र०, २७, ३० । ल०, ५६, ७२ ।
(सं.) दुख, दयार्द्र, करुणा युक्त भाव ।
साहित्य शास्त्र में एक रस का नाम ।

करुण-कथा = का०, २०६ ।
[सं० स्त्री०](सं.) दयार्द्र कहानी, दया से पूर्ण गाथा ।

करुणा-कलित = आं०, १ । का० कु०, ५३ ।
[वि०] (सं.) करुणा से पूर्ण या भरी हुई ।

करुण-कहानी = आं०, १५, ७६ ।
[सं० पु०] (हि.) दया से पूर्ण कथा ।

करुणक्रन्दन = का० कु०, ७ ।
[सं० पु०] (सं.) करुणा से भरा हुआ रोना ।

करुण-कामना = का०, ४७ ।
[सं० स्त्री०] (सं) वह अभिलाषा जिसमें कूट-कूट कर दयनीयता भरी हो, कातरता ।

करुण-व्यथा = का० कु०, ६३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) करुणा के कारण आया हुआ दुःख ।

करुण वेदना = का०, २१२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) (दे० 'करुण-व्यथा' ।)

करुणा = आं०, ७, ११, २५, ३८, ६६ । क०,
[सं० स्त्री०] २५, ३० । का०, ४, ८३, १६५,
(सं.) १८०, २८१ । प्रे०, १६, २२ । म०,
६ । ल०, ६, २८, ३२ ।
मन का वह दुखद भाव जो दूसरों का दुःख देखने से उत्पन्न होता है और जो दुःख दूर करने की प्रेरणा देता है । प्रिय के वियोग से होने वाला दुःख ।

करुणा-कटाक्ष = आं , २६ । का० कु०, ६० ।
[सं० स्त्री०] करुणा रूपी कटाक्ष । ऐसे विशिष्ट
(सं.) प्रकार से देखना जिसमें करुणा निहित हो ।

करुणा-कुञ्ज = का० कु०, १४ ।
[सं० पु०] करुणा से भरा हुआ स्थल । करुणा की
(सं.) प्रतिमूर्ति ।

करुणा-निधान = चि०, १७८, १८५ ।
[सं०पु०) जिसका हृदय करुणा से परिपूर्ण हो ।
(सं) बहुत बड़ा दयालु ।

करुणानिधि = का० कु०, ७, ६३ । चि०, १८५ ।
[सं० पु०] प्रे०, २२ ।
(सं.) (दे० 'करुणानिधान' ।)

करुणा-पट = आं०, १४ ।
[सं० पु०] (सं.) करुणा रूपी वस्त्र या परदा ।

करुणाप्लावित = प्रे०, ७ ।
[वि०] (सं.) करुणा रूपी जल की बाढ़ । चतुर्दिक करुणा से व्याप्त ।

करुणामय = का०, ४० ।
[वि०] (सं.) सकरुण, अत्यधिक करुणावाला ।

करुणा मिश्रित = म०, ८ ।
[वि०] (सं.) करुणा से युक्त ।

करुणा-यमुना = प्रे०, २० ।
[सं० पु०] (सं.) करुणा की नदी ।

करुणार्द्र-कथा = आं०, १३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) करुण-कहानी ।

करुणालय = क०, २६, ३० ।
[सं० पु०] (सं.) करुणा का घर । दया का घर ।

करुणा लोक = का०, ८२ ।
[सं. पु०] (सं.) करुणा का संसार ।

करुणा सदन = क०, ९६ ।
[सं पु०] (सं.) करुणा का घर, करुणालय ।

करुणा-समुद्र = चि०, १७८ ।
[सं० पु०] करुणा रूपी सागर । अत्यन्त
(सं) कारुणिक ।

करुणा-सिन्धु = क०, २५ ।
[सं० पु०] (सं.) (दे० 'करुणा समुद्र' ।)

करुणा क्रन्दन = चि०, ५७ ।
[सं० पु०] (सं.) विलाप ।

करूँ = क०, ११, १८ । का०, १३४, १५३,
[क्रि०] २३० । प्रे०, ६ । म०, १६, २३, ३० ।
(हि०) करना क्रिया का रूप ।

करे = का०, ८५, १३२, १४६, १७०, १७८,
[क्रि०] १८४, २१०, २८३ । प्रे०, ४ । म ,
(हि.) २, १८ ।
(दे० 'करना' ।)

करेरे = चि०, ६६ ।
[वि०] (ब्र. भा.) कठोर, बड़ा कठिन ।
(हि.) 'करेर' ।

करै = चि०, ६, १०१ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दे०, 'करना' ।

करै = चि०, २३, ६६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) (दे० 'करना' ।)

करो = का०, १३८ ।
[क्रि०] (हि.) (दे० 'करना' ।)

करों = का०, १११, ११४, १६५, १७१, १६७ ।
[सं० पु०] (हि) कर का बहुवचन ।

कर्कश = का० कु०, ४५, ११६ ।
[वि०] कठोर, हिंसक । तलवार । क्रूर, निर्दय,
(सं०) साहसिक, प्रचंड । खुरखुरा, काँटेदार ।

कर्ण = का०, ६४ ।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य का सुपुत्र । विराट दानी सम्राट ।

कर्णदेव = ल०, ७५ ।
[सं० पु०] (सं.) गुर्जर देश के एक नरेश का नाम ।

कर्णधार = क०, ६ । का० कु०, ८ ।
[सं० पु०] मल्लाह, माँझी, पतवार । प्रश्रय देने
(सं.) वाला । पथप्रदर्शक । नाविक ।

कर्णधार-रक्षित=म०, ११ ।
[वि०] सं.) प्रश्रयप्राप्त, संरक्षित ।

कर्णिकार = चि०, ५५ ।
[सं० पु०] (सं.) चम्पा का वृक्ष ।

कर्तव्य = म०, ६, ८ ।
[वि०] करने के योग्य, जिसे करना आव-
(सं) श्यक हो ।

कर्तव्य-पथ = का० कु०, १०८ ।
[सं० पु०] (सं.) कर्म-मार्ग ।

कर्त्ता = का०, २६८ ।
[सं० पु०] (सं.) करने वाला, रचने या बनानेवाला ।

कर्तृत्व = का०, १६५ ।
[सं० पु०] (सं.) कर्त्ता का भाव, कर्त्ता का गुण-धर्म्म ।

कर्नफूल = चि०, ५५ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) आभूषण जो कान में पहना जाता है ।

कर्पूर = प्रे०, ३ ।
[सं० पु०] (सं.) कपूर नामक सुगन्धित द्रव्य ।

कर्म = क०, २३, २५, २७ । का० कु०, ६४,
[सं० पु०] ६८ । का०, ३३, ५६, ७५, ८२,
(सं.) १०६, ११३, ११५, १४६, १४७,
१८३, २०५, २४०, २४२, २४४,
२६८ । प्रे०, ५ । ल०, १३, ३४ ।
वह जो किया जाय । क्रिया, कार्य,
काम । धार्मिक कृत्य । व्याकरण में वह
शब्द जिसके वाच्य पर कर्ता की क्रिया
का प्रभाव पड़े । भाग्य ।

कर्म-कलश = का०, १६८ ।
[सं० पु०] (सं.) कर्त्तव्य रूपी घट ।

कर्म-कुसुम = का०, १२३ ।
[सं० पु०] (सं.) कर्त्तव्य रूपी फूल ।

कर्मचक्र = का०, २६७ ।

[सं० पु०] (सं.) भाग्यचक्र, समय का फेर।
कर्म-चक्र-सा = का०, २६६।
[वि०] (सं.) समय के फेरे के समान।
कर्म-जगत = का०, २६६।
[सं० पु०] (सं.) क्रिया-क्षेत्र।
कर्म-जाल = का०, ३३।
[सं० पु०] (सं.) कर्मों का समूह।
कर्म-पथ = क०, १५। का० कु०, ११६।
[सं० पु०] (सं.) (दे० 'कर्तव्य-पथ'।)
कर्मफल = म०, ८।
[सं० पु०] (सं) कर्मों का फल, परिणाम या नतीजा।
कर्ममयी = का०, ३१।
[वि०] (सं.) कर्म से युक्त। कर्म से युक्त वातावरण।
कर्म-मार्ग = क०, १४। का० कु०, १२५।
[सं० पु०] (सं.) (दे० 'कर्म-पथ'।)
कर्मयोग रत = म०, ७, १८।
[वि०] (सं.) कर्म में निष्ठा रखने वाले, कर्मयोगी।
कर्मलीन = का०, १७१।
[वि०] (सं.) कर्म करता हुआ, कर्म में दत्तचित्त।
कर्म-लोक = का०, २६६।
[सं० पु०] (सं.) संसार, मर्त्यलोक।
कर्महिं = चि०, १५५।
[सं० पु०](ब्र. भा.)=कर्म को।
कर्मों = का०, २६७।
[सं० पु०](सं०) कर्म का बहुवचन
कर्मों की पुकार= का०, १७२।
[सं० पु०](हि.) कर्मों की अपेक्षा, कर्म करने की प्रेरणा।
कर्मोन्नति = का०, २५१।
[सं० स्त्री०] (सं.) कर्म करते हुए आगे बढ़ने की प्रवृत्ति।
कलंक = चि०, ६७। झ०, ७३। ल०, ५६।
[सं० पु०] चिह्न, अपवाद। धातुओं का मल,
(सं.) विकार, दोष।
कल = आं०, २६। का०, २६, ११६। चि०,
[सं० पु०] हि.) २१, १७३। झ०, ६८।
अव्यक्त मधुर ध्वनि। सुंदर। आराम।
साल वृक्ष। आगे आने वाला दिन। शांति।
कलकंबु = का०, ६३। चि०, ४७।
[सं० पु०] (सं.) सुमधुर ध्वनि करने वाला कंठ। कोकिल
हंस, कबूतर।
कल कमल = का० कु०, ३६।
[सं० पु०] (सं.) सुंदर कमल, पूर्ण विकसित कमल।
कल-कल = आं०, ८। क०, ८। का०, ६३, २७८।
[सं० पु०] चि०, १५०। म०, ४, २४।
(सं.) झरनों आदि के गिरने या चलने का
शब्द। कोलाहल, शोर।
कल-कल ध्वनि = का० कु०, ६७।
[सं० स्त्री] आकर्षक ध्वनि, सुमधुर शब्द, अपनी
(सं.) ओर आकृष्ट करने वाली गुंजार। झरनों
आदि के गिरने से उत्पन्न ध्वनि।
कल-कल नाद = का० कु०, ५७।
[सं० पु०] (सं.) (दे० कल कल ध्वनि।)
कलकलनादिनी=चि०, १। ल०, ३२।
[वि० स्त्री०] (हि.) सुमधुर ध्वनि करने वाली, नदी।
कलकपोल = का०, ११।
[सं० पु०](तं.) रोम विहीन, कोमल चिकना गाल।
कल-किंकिनी = चि०, ५१।
[सं० स्त्री०](सं.) क्षुद्र घंटिका, आभूषण विशेष का नाम।
कल किशोर = चि०, ७०।
[सं० पु०] ग्यारह से पंद्रह की अवस्था का सुन्दर
(सं.) बालक, पुत्र, बेटा।
कलकेली = चि०, १६१।
[सं० स्त्री०] सुन्दर खिलवाड़, सुन्दर हँसी, रति,
(सं.) मैथुन, स्त्री प्रसंग, ठट्ठा, दिल्लगी।
कलना = का०, ८।
[सं०स्त्री०] गणना, विचार, लेन-देन, व्यवहार,
(सं.) धारण या ग्रहण करना, विशेष ज्ञान
प्राप्त करना।
कलनाद = का० कु०, २६। चि०, २३, ६१, ६३।
[सं० पु०] (सं.) मधुर ध्वनि।
कलनादिनी = चि०, १८४।
[सं० स्त्री०](सं.) नदी।

कलनिनादिनी= चि०, १६७।
[सं० स्त्री०] (सं.) (दे० 'कल-नादिनी'।)
कलभ = चि०, २२। का०, कु०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) हाथी का पंचवर्षीय बच्चा, ऊँट का बच्चा।
कलरव = आं०, ३१, ६५। का० कु०, ३३, ७५३।
सं० पु०] का०, ११, ६४, ६८, ६६, १००, १५०,
(सं.) १६८, १७२, १८८, २७७, २८५।
चि०, २३, १४४। प्रे०, १८। ल०,
१५, २४, ३६।
मधुर ध्वनि या आवाज, गुंजार, शोर।
कलश = का०, १८२।
[सं० पु०] घट, घड़ा, गगरा। मन्दिर का ऊपरी
(सं.) भाग। चोटी या शिखर। पूजा का एक
विशेष उपकरण।
कलसी = चि०, ६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) (दे० 'कलश'।)
कलहंस = का०, २८५।
[सं० पु०] (सं.) हंस, राजहंस। श्रेष्ठ राजा। परमात्मा।
कलह = का०, २१६। झ०, ८८।
[सं० पु०] (सं.) विवाद, झगड़ा।
कला = आं०, २०, ३८। का० कु०, ५२,
[सं० स्त्री०] ५३। का०, १०५, १६५, १७५,
(सं.) २६४। चि०, ४२, १४६।
अंश, हिस्सा। चन्द्रमा का सोलहवाँ
भाग, सूर्य के प्रकाश का बारहवाँ हिस्सा,
समय का एक विभाग जो ३० काष्ठा
का होता है। राशि के तीसवें अंश का
साठवाँ भाग, राशि चक्र के एक अंश
का साठवाँ भाग। कौशल। काम-शास्त्र
की चौसठ कलाएँ। विभूति, तेज, शोभा,
छटा। कौतुक, खेलवाड़। छल, कपट।
ढंग, युक्ति; नटों की एक कसरत, हुनर।
कलाकार = ल०, ३७।
[सं० पु०] (सं.) कौशलपूर्ण कार्य करने वाला, कला-
कुशल।
कलाकौशल = का० कु०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) किसी कला की निपुणता।
कलाधर = का०, १५३।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा। शिव। कला का ज्ञाता।
कलानिधि = का० कु०, ५०।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा।
कलापी = चि०, २३।
[सं० पु०] (सं.) मोर, कोकिल।
कला-सी = का०, २६०।
[वि०] (सं.) कला के समान।
कलिका = आं०, ३५। का०, ६७। चि०, ५६।
[सं० स्त्री०] (सं.) फूल की कली।
कलिंग = ल०, ४६।
[सं० पु०] एक प्राचीन प्रदेश जो गोदावरी और
(सं.) वैतरणी के बीच था। यहीं पर अशोक ने
नर संहार द्वारा प्राप्त विजय से विरक्त
हो अहिंसा का व्रत लिया।
कलित = आं०, ७, १६। का०, २६, ४६, ८१।
[वि०] (सं.) चि०, २२, ३३, ६८, ७५। झ०, ८०।
भरा हुआ, युक्त, सुशोभित।
कलिन = चि०, ३८, १६७।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) कलिका बहुवचन। (दे० 'कलिका'।)
कलिनसी = चि०, ६६।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) कलियों से।
कलियाँ = आं०, ५३८, ७८। का०, कु०, १८,
[सं० स्त्री०] (अ०) ४१, ७२०। का०, ६१, १३३, १५८,
१७५। चि०, ३५, १८२। म०, ६।
(दे० 'कलिका'।)
कली = का० कु०, ६, ३४, ५२। का०, १८१,
[सं० स्त्री०] हि.) २१२। चि०, ९, २९, ५६। प्रे०, २।
(दे० 'कलिका'।) बिना खिला हुआ फूल।
कली-कुल = प्रे०, २।
[सं० पु०] (सं.) कलियों की जाति या वन।
कली-निकर = चि०, २४।
[सं० पु०] (सं.) कलियों का समूह।
कलुषित = का०, २२६। ल०, ७६।
[वि०] (सं.) मलिन, मैला, निन्दित।

कलुषित काया = का०, २२६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) मलिन या पापी शरीर, निन्दित या कलङ्कित शरीर ।

कलुस = आं०, ६१ । का०, १२०, १६३, १८५ ।
[सं० पु०] (सं.) कोढ़ । पाप, मलीनता ।

कलेवर = का०, २६२ । चि०, २२ ।
[सं० पु०] (सं.) शरीर, देह ।

कलोल = का०, २५२ । चि , ६३ ।
[सं० पु०] (हि.) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा ।

कलोलिनी = ल०, १८१ ।
[वि०] (सं. क्रीड़ा करने वाली ।

कलोलै = चि०, ४६ ।
[क्रि० अ०] (ब्र. भा.) आमोद-प्रमोद करना । क्रीड़ा करना ।

कल्पना = आ०, २६ । का० कु०, १८, ७५ । का०, ३७, ५०, १२६, १८२, २११, २२४ । चि०, ७२, १०५, १६५ । प्रे०, ६ । ल०, ४४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) अच्छी रचना, सजावट । वह शक्ति जो अन्तःकरण में नई और अनोखी वस्तुओं के स्वरूप को उपस्थित करती है । उद्भावना । किसी वस्तु में दूसरी वस्तु का आरोप मान लेना, अनुमान करना ।

कल्पना-जग = का०, १७८ ।
[सं० पु०] (सं.) आरोपित संसार, मनगढ़न्त दुनियाँ ।

कल्पनातीत = भ्र०, ५१ ।
[वि०] (सं.) कल्पना से परे या बाहर । जिसका अनुमान या अन्दाजा न लगाया जा सके ।

कल्पना मंदिर = प्रे०, ३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कल्पना का मन्दिर । उस स्थान के सदृश जहाँ से हृदय को अधिक से अधिक भावनाओं में विचरण करने की प्रेरणा मिलती हो ।

कल्पना-मराल = चि०, १४३ ।
[सं० पु०] (सं.) बनावटी हंस, मनगढ़ंत हंस । कल्पना रूपी हंस । नीर-क्षीर-विवेकी कल्पना ।

कल्पना-लोक = का०, १५८ ।
[सं० पु०] (सं) कल्पना का संसार । वह देश या प्रदेश जहाँ से अन्तः को प्रेरणा मिलती हो ।

कल्पना-वीणा = का० कु०, ६३ । का , २६ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) कल्पना की वीणा ।

कल्पनाहि = चि० १४३ ।
[सं०स्त्री०] (ब्र.भा.) कल्पना ही, कल्पना को, कल्पना में ।

कल्पवृक्ष = का०, ११ । चि०, १५३ ।
[सं० पु०] (सं.) नन्दन कानन या इन्द्र के वन का वह वृक्ष जो इच्छित फल देता है । कल्पतरु । चौदह रत्नों में से एक रत्न ।

कल्पित = का० कु०, ७५ । का० । २३४ । चि० । १४१ ।
[वि०] (सं.) जिसकी कल्पना की गई हो । मन से गढ़ा हुआ । बनावटी । नकली ।

कल्पितगेह = का० । ५४ ।
[सं० पु०] (सं.) मन से गढ़ा हुआ घर । हवाई-महल ।

कल्याण = आं०, १०, ५५ । का०, १०१, १६२ । प्रे०, २३ ।
[सं० पु०] (सं.) मंगल, भलाई, कुशल, क्षेम ।

कल्याण-कला = का०, २२८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) वह कला जिससे कल्याण प्राप्त हो । (श्रद्धा) ।

कल्याण-कामना = प्रे०, १६, २३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) मंगल की अभिलाषा या इच्छा ।

कल्याण-भूमि = का०, १६६ ।
[सं० स्त्री०] = (सं) वह भूमि या लोक जहाँ सब प्रकार का अर्थात् अर्थ, धर्म, काम, मोक्षजनित कल्याण प्राप्त हो ।

कल्याणमयी = का०, २४६ ।
[वि०] (सं.) कल्याण या मंगल करनेवाली ।

कल्याण मार्ग = प्रे०, २३ ।
[सं० पु०] (सं) पुरुषार्थ साधन का पथ या उन्नति का मार्ग । मंगल-पथ ।

कल्याणी = आं०, ६३ । का०, २६४ ।

[सं० स्त्री०] (सं.) कल्याण करने वाली देवी, (श्रद्धा)।
कल्लोल = का०, ६८।
[सं० पु०] (सं.) (दे० 'कलोल'।)
कवच = चि०, ३८।
[सं० पु०] (सं.) युद्धस्थल में शरीर की रक्षा करने वाला पहनावा, वर्म। तन्त्रशास्त्र का एक प्रकार का यन्त्रात्मक अस्त्र। एक वृक्ष विशेष का नाम।
कवरी = झ०, ४५।
[सं० स्त्री०] (सं.) चोटी, जूड़ा, वेणी।
कवरी-भार = झ०, २१।
[सं० पु०] (सं) जूड़ा, केशों का बोझ। अलकों का बोझ।
कवि = का०, ४५, ५०। चि० ४८, १४२, १६५।
[सं० पु०] (सं.) काव्य रचना करने वाला। काव्य-स्रष्टा। ब्रह्मा। त्रिकालदर्शी।
कशाघात = का०, २६७।
[सं० पु०] (सं.) चाबुक के मारने से लगा हुई चोट।
कश्यप = का० कु०, १०६। चि०, ५८।
[सं०पु०] (सं.) एक ऋषि का नाम जो मरीचि ऋषि के पुत्र थे। विशिष्ट प्रकार के ऋषि। मृग एवं मछलियों के नाम।
कष्ट = का०, ११४, १६६। चि०, ३५, ३६, १०१। प्रे०, ६, ७।
[सं०पु०] (सं.) दुःख, पीड़ा, व्यथा।
कष्ट-पूर्ण = का०, ७७।
[वि०] (सं.) व्यथित, दुःखित, पीड़ित।
कसक = का०, १५६, १६०, १७५। ल०, ४२।
[सं० स्त्री] (हि.) हल्का, मीठा दर्द, टीस। साल। बहुत दिनों का भीतरी द्वेष या वैर। हौसला।
कसकर = का०, ७१। ल०, ५७।
[पूर्व०क्रि०] (हि) बाँधकर।
कसत = चि०, १७६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) कसता हुआ, बाँधता हुआ।
कसता = का०, १२४, १४५।
[क्रि०] (हि.) बाँधता।
कह = का०, १४६, १५४, १७७, १७८, १८६, १८६, १६४, १६५, १६६, २००, २०१, २०६, २१२, २३०, २३४, २४४, २७८। ल०, १०, ११। शब्दोच्चारण द्वारा अभिप्राय व्यक्त करना।
[क्रि०] (हि.)
कहता = का०, १५७।
[क्रि०] (हि.) शब्दोच्चारण द्वारा अभिव्यक्त करना।
कहती = का०, ७७, १००, १०६, १११, १३१, १३४, १५४, १६५, २०१, २११, २१६, २४६, २६०, २७३। वर्णन करती। शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करती।
[क्रि०] (हि.)
कहते-कहते = का०, ६४, ०६, ३४।
[अ०] (हि.) वर्णन करते-करते।
कहते हैं = का०, १०२, १२०, २१५, २२२, २३८।
[क्रि०] (हि.) वर्णन करते हैं।
कह देना = का०, १२०।
[क्रि०] (हि.) कहना का भविष्यत् काल।
कह दो = का०, ३७।
[क्रि०] (हि) कहने का आदेश देना।
कहन = चि०, ६२।
[सं०] (ब्र. भा.) कथन।
कहना = आं०, १५। का०, २७, ५०, ५४, ५५, ६३, ६८, ७३, १६७, १८६, १६२, १६८, २८२। प्रे०, २, १६, २०। बोलना।
[क्रि०] (हि.)
कहने = का०, ६०, १२७, २१६।
[क्रि०] (हि.) कहना का बहुवचन।
कहरे = का०, २८६।
[अ०] (हि.) कहो, बोलो।
कहाँ = आं०, २९, ४०। क०, ४, २४। का०, १०, १६, १८, २६, ३७, ६५, ७०, ८४, ८६, १११, १२३, १३३, १४०, १४४, १७५, १७७, १७६, १८३, १६९, २११, २१३, २१६, २२४,
[अ] (हि.)

२३०, २४५, २५८, २५६, २६१, २७८, २६२। प्रे०, ८, १७, १८। म०, ७। किस जगह।

कहा = [क्रि०] (हि.) का०, ४८, ८५, ८६, ८७, ८६, ११२, ११४, १६२, २१५, २८०। प्रे० ४, ७, ८, २३। म०, ४, ५, १०, १४, १६, १८, २१, २३। कहना की भूतकालिक क्रिया।

कहानी = [सं० स्त्री०] (हि.) आ०, ५, ७८। प्रे०, ६, २०। ल०, ११। मन से गढ़ा या किसी घटना के आधार पर प्रस्तुत किया हुआ विवरण, कथा, किस्सा, आख्यायिका झूठी या मनगढ़ंत बात। गल्प।

कहानी-सी = [वि०] (हि.) का०, ४। कहानी की तरह कल्पित किन्तु व्यावहारिक सत्य की तरह।

कहावति = [क्रि०] (ब्र. भा.) चि०, १८३। कही जाती है।

कहुँ = [अव्य०] (ब्र. भा.) चि०, १५, १४१। कहीं, किसी स्थान पर।

कहूँ = [क्रि०] (हि) का०, ८६, ११७, १६५। चि०, १। प्रे० ८, ११। कहना का प्रथम पुरुष में रूप।

कहूक = [अ०] (ब्र. भा.) चि०, ३। कहीं का, किसी स्थान का।

कहि = [पू० क्रि०] (ब्र. भा.) चि०, ५७, ६४, ७४, १४१, १६५। कह कर।

कहिये = [क्रि०] (हि.) क०, १७। चि०, ४ ७४। म०, १२, २०। बोलिए।

कहीं = [अ०] (हि.) क०, १, २८, ३०। का०, ३२, ४१, ५२, ५, ५८, ८५, १२४, १४६, १४६, १५८, १६५, १७१, १७७, १८०, २१८, २१६। झ०, ७ ६१, ६२, ८६। प्रे०, ५, १०, १४, २६। म०, ४, १६। ल०, ११। किसी स्थान पर।

कही = [क्रि०] (ब्र भा.) का०, १६४। कहा का स्त्रीलिंग।

कहु रे = [अ०] चि०, ५। कहो रे।

कहे = [क्रि०] (हि.) का०, १६५, १७१, १७७। प्रे०, १५, २०। म०, १७। कहा का बहुवचन।

कहै = [क्रि०] (ब्र. भा) चि०, २५, ४८। कहते हैं।

कहो = [क्रि०] (हि.) का०, ३७, ६०, ६१, ६४, १२२ १६६, १६६, १८४। म०, ६, १०, १४, २१ २३। बोलो।

कह्यो = [क्रि०] (ब्र. भा.) चि०, ४१, ७४। कहा।

कहौ = [क्रि०] (ब्र. भा.) चि०, ३१, ६७, १६५। कहो।

कसौटी = [सं० स्त्री०] (हि.) चि०, १७६। झ०, ८०। सोना का परख करनेवाला पत्थर।

कस्तूरी = [सं० स्त्री०] (हि.) ल०, ५६। एक सुगंधित पदार्थ जो हिरण की नाभि से निकाला जाता है। एक प्रकार का हिरण।

कस्तूरी-कुरंग = [सं० पु०] (सं) का०, १५३। कस्तूरी जाति का हिरण, वह मृग जिसमें कस्तूरी हो।

कांचनीय = [वि०] (सं.) चि०, २६, १६१। स्वर्णयुक्त, स्वर्णिम कचनारमय, चम्पा सदृश, धतूरा के तुल्य।

काँटन = [सं० पु०] (ब्र० भा०) चि०, ३५। कंटक, कांटा, वृक्ष की टहनियों का नुकीला अंकुर जो पिन की तरह तेज होता है।

काँटे = क०, ७,। का० कु०, ४६, ८२।

[सं० पु०] (हि.) का०, १५४, १५८ । झ०, २१, २६, ५२ । प्रे०, १२, १६ । म०, २ । ल०, १८, ३५ ।
कॉटन ।

कांत = [सं० पु०] (सं.) का०, ८२, १३०, २४२, २४५ । झ०, २८, ५६ ७१ । ल०, १३ ।
पति, शौहर । चन्द्रमा । एक प्रकार का बढ़िया, लोहा, कांतिसार । कुंकुम ।

कांति = [सं० स्त्री०] (सं.) का० कु०, ९, ५३ । का०, ३७, २३६ । चि०, ११, ३०, ४५, ७०, १४६, १५३ । झ०, २७, ३४ ।
दीप्ति, चमक, शोभा, छवि । एक प्रकार का आर्यछन्द ।

कांति-सिन्धु = [सं० पु०] (सं.) का०, २५४ ।
शोभा-सागर, अत्यधिक शोभा या छवि । छवि-रत्नाकर ।

काँपना = [क्रि०] (अनु.) का०, २५, ८६, १२०, १८४, १८६, १९८ ।
हिलना, थरथराना, थर्राना, भय से शंकित होकर कांपना ।

काई-सी = [वि०] (हि.) का०, ८४ ।
काई के समान । त्याज्य, उपेक्षित ।

काकली = [सं० स्त्री०] (सं.) का० कु०, १६ । का०, ६३, १७५ ६२ । चि०, १७१ ।
मधुर ध्वनि, कलनाद, कोकिल या मोर का मधुर तथा मीठा स्वर ।

काके = [सर्व०] (हि.) चि०, १७ ।
किसके ।

काटत = [पू० क्रि०] (ब्र. भा.) का० कु०, ५ । चि०, ४२, १७३ ।
किसी वस्तु को दो टुकड़ों में किसी तीखी धारदार औंजार से विभक्त करते हुए, पीसते हुए, समय बिताते हुए, विनष्ट करते हुए, डसते हुए ।

काटपेंच = [सं० पु०] (हि.) चि०, १८१ ।
छल-छिद्र । दाँव-पेंच । काट छाँट ।

काटना = [क्रि० स०] (हि.) का०, २५७ । म०, ६ ।
किसी वस्तु को औजार से काटकर टुकड़ों में करने की क्रिया । बिताना, जैसे 'समय काटना' । घूमना जैसे 'चक्कर काटना' ।

कोटि = [सं० स्त्री०] (सं०) चि०, ४२ ।
श्रेणी । करोड़ ।

काठ = [सं० पु०] (हि.) ल०, ५२ ।
पेड़ का कोई अंग जो कट कर या गिर कर सूख गया हो, लकड़ी ।

काठों की सन्धि=का०, १३६ ।

कातर = [सं० पु०] (हि.) का०, ११६ । झ०, २४ ।
[वि०] (सं.) अधीर, व्याकुल, डरा हुआ, भयभीत, आर्त, दुःखित ।

कातरता = [सं० स्त्री०] (सं.) का०, १६ ।
अधीरता, व्याकुलता, भयभीति, अत्यन्त दुःख ।

कातरताएँ = (सं० स्त्री०) (हि.) का०, १२ ।
'कातरता' का बहुवचन ।

कादम्बिनी = (सं० स्त्री०) (सं) चि०, १५०, १५७ ।
बादलों का समूह, मेघमाला ।

कादम्बिनी = [सं० स्त्री०] (सं) अं०, ५६ । चि०, १५०, १५७ । झ०, ३६ ।
बादलों का समूह, मेघमाला ।

कादर = [वि.] (हि.) का० कु०, ११५ । म०, ६ ।
डरपोक, भीरु । अधीर, व्याकुल ।

कादरता = [सं० स्त्री०] (हि.) चि०, ६३, ६५ ।
भीरुता, डरपोकपन । अधीरता, व्याकुलता । कायरता ।

कान = [सं० पु०] (हि.) का०, २७, १०३, १६०, १८५, १९४ ।
सुनने की इंद्रिय, श्रवण, श्रुति, श्रोत्र ।

कानन = [सं० पु०] (सं.) का० कु०, ८२ । का०, ३२, ७३, १४४, २६२, २७९, २८४ । प्रे०, ४, ७, १४, १६, २० । म०, १ ५, ७, ८, १५, १६ ।
जंगल, वन, घर ।

कानन-अंचल= का०, ४८ ।
[सं० पु०] (सं.) वन, उपवन रूपी आँचल ।
कानन-कुसुम = का० कु०, ११३ ।
[सं० पु०] (सं.) वन पुष्प, जंगल के प्रसून ।
कानों के कान खोल=का०, ७० ।
[मु०] (हि.) अत्यन्त ध्यान से सुनना ।
कानन-कोने = प्रे०, ३ ।
[सं० पु०] जंगल के एक कोने में या घर के एक
(हि.) कोने में ।
काननचारी = का०, १६६ ।
[सं० पु०] जंगल में विचरण करने वाले, जंगली
(सं.) जंतु, प्राणी । घर में विचरण करने वाले मानव ।
कानन-सा = का०, २२३ ।
[वि०] जंगल या वन के समान घर के समान,
(सं.) वन सदृश्य ।
काफूर = ल०, ७७ ।
[सं० पु०] (अ.) एक मुस्लिम व्यक्ति का नाम ।
काम = का०, ६, ५२, ५३, ७१, ७४, ८८,
[सं० पु०] ६२, ६३, १०६, ११०, १३६, १४७,
(सं०) १६२, २६० ।
इच्छा, मनोरथ । इन्द्रियों की अपने-अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति । सहवास या मैथुन की इच्छा । कामदेव, महादेव । चतुर्वर्ग या चार पदार्थों में से एक। वह जो किया जाय । व्यापार । कार्य ।
कामद-कानन = का० कु०, ६६ ।
[सं० पु०] कामना को पूर्ण करने वाला वन, संतुष्टि
(सं०) प्रदान करने वाला जंगल, अति सुन्दर तथा मनोरम कानन । अभिसार वन ।
कामना = आं० ३८ । का०, ३८, ८७, १३१,
[सं० स्त्री०] २६०, २६३ । भ्रु०, १८, ३७, ३६,
(सं.) ६४ । प्रे०, ९६, २५, ल०, १८ ।
मन की इच्छा, मनोरथ, ख्वाहिश ।
काम-वासना = प्रे०, ११ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रिय सहवास एवं मैथुन की इच्छा ।

कामायनी = का०, ११८, १२६, १७५, १८०,
[सं० स्त्री०] २१४, २३०, २६०, २६५, २६० ।
(सं) मनु की पत्नी, श्रद्धा का एक नाम ।
कामायनि ! = का०, १७७ ।
[सं० पु०] (सं.) हे कामायनी ! कामायनी का संबोधन ।
किरणावलि = का० कु०, ४३ । चि०, १४६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) किरणों का समूह या पंक्ति ।
किरन = का०, ८६, १७०, १७५, १८१ । चि०,
[सं० पु०] ३८ । ल०, ३६ ।
(हि.) (दे० 'किरण' ।)
किरन-उँगलियाँ=ल०, १० ।
[सं० स्त्री] (हि. किरण रूपी उँगलियाँ । किरणों का पुंज ।
किरन-कली = का०, १७८ ।
[सं० स्त्री०] (सं) किरण रूपी कली, बाल किरण ।
किरन-सा = का०, ६० ।
वि० पु०] (हि.) दे० 'किरन-सी' ।
किरनै = चि०, १, १४५ ।
[सं० स्त्री० (ब्र. भा.) (दे० 'किरन' ।)
किरनो = आं०, ३८ । का०, ६७, ६८, ९८ ६६,
[सं० स्त्री] १७२, २३५ । ल०, २१ ।
(हि.) 'किरण' का बहुवचन ।
किरनों-की-सी= का०, १७२ ।
[वि०] (हि) 'किरण सी' ।
किरनों-सी = का०, १५१ ।
[वि०] (हि.) दे० 'किरण-सी' (बहुवचन)
किरातहि = चि०, ६१ ।
[सं० पु०] एक प्राचीन जंगली जाति,
(ब्र भा.) किरात को ।
किरीट = का०, २६ ।
[सं० पु०] (सं०) सिर बाँधने का एक आभूषण मुकुट ।
किलक = का०, १७६ ।
[सं० स्त्री०] किलकने या हर्षध्वनि करने की क्रिया,
(सं.) हर्षध्वनि । किलकारी ।
किलकार = का०, २८५ ।
[सं० पु०] (हि.) स्पष्ट हर्षध्वनि ।

कामिनि = का०, १२ । चि०, ६८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कामवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, मदिरा ।

कामिनी = चि०, ४६, ५१ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) (दे० 'कामिनि' ।)

काम्य = का० कु०, १८, ११५ ।
[वि०] (सं.) जिस वस्तु की इच्छा की जाय, इच्छित यज्ञ अथवा कर्म ।

कायकर्म = का०, २७० ।
[सं० पु०] (सं.) शरीर से होनेवाला कार्य, वह कार्य जो शरीर के लिए किया जाय, जैसे स्नान । कर्म रूपी शरीर ।

कायर = का०, २०१ । म०, १७ ।
[वि०] (हि.) डरपोक, भीरु, कातर, असाहसी ।

कायरता = का०, १८ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) भीरुता, डरपोकपन, कादरता ।

काया = का०, ४६, ६७, १२३, १८४, १६३, २२६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) शरीर, तन, बदन, देह ।

कारक = का० कु०, ६४ ।
[वि०] (सं.) करनेवाला, किसी के स्थान पर या प्रतिनिधि के रूप में काम करनेवाला । साधन ।

कारण = का०, ५४, २३६ । भ०, ५३ । प्रे०, ८ । म०, १६ ।
[सं० पु०] (हि.) जिसके प्रभाव से या फलस्वरूप कोई काम हो । सबब, हेतु, निमित्त, प्रयोजन । वह जिससे कुछ उत्पन्न या प्रकट हो । मूल साधन । तान्त्रिक उपचार या कर्म ।

कारा = आं०, ५६ । का०, ६५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) बंधन, कैद, कारागार, जेल । पीड़ा, क्लेश ।

कारी तरवारे = चि०, ६५ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) काली तलवारों । भयंकर युद्ध, विनाशकारी समर ।

कारुण्य-नीर-प्रवाह = का० कु०, ११५ ।
[सं० पु०] (सं.) करुणा से निकली हुई आँसूओं की धारा । अत्यन्त कारुणिक रूप से नयन के नीर का प्रवाह ।

काल = आं०, ४५, ७० । का० कु०, ३०, ११५ । का०, १८, ३४, ६३, १६५, २६१ । प्रे०, ३० । ल०, ४८ ।
[सं० पु०] (सं.) संबंध की वह सत्ता जिसके द्वारा भूत, वर्तमान, भविष्य का बोध होता है । समय । मृत्यु, यमराज । उपयुक्त समय, अवसर । अकाल, दुर्भिक्ष, शिव का एक नाम ।

काल जलधि = का०, १८ ।
[सं० पु०] (सं.) काल रूपी सागर, मृत्यु सागर ।

काल-परिधि = का०, १६३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) समय चक्र, समय का घेरा ।

कालरात्रि = का०, ६३ । म०, ६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) अँधेरी और भयावनी रात । ब्रह्मा की रात जिसमें सारी सृष्टि का लय हो जाता है । प्रलय की रात, मृत्यु की रात । दिवाली की रात । कतल की रात ।

काला = का०, १७ ।
[वि०] (हि.) काजल या कोयले के रंग का, स्याह, कृष्ण । कलुषित, बुरा । भारी, प्रचण्ड ।

कालापानी = आं०, २२ ।
[सं० पु०] (हि.) आजीवन कठोर दंड, कारावास । अण्डमन निकोबार द्वीप में भारतीयों को दिया जाने वाला आजीवन कारा दण्ड ।

कालिन्दी = आं०, ३१ । का०, १४२, १५६ ।
[सं० स्त्री०] (सं) चि०, २१ । यमुना नदी जो कालिंद पर्वत से निकलती हैं ।

कालिंदी-मनोहर-कूल = का० कु०, ११२ ।
[सं० पु०] (सं) यमुना नदी का मनोरम किनारा ।

कालिमा = का०, १४, ८२, ८७, १७५, १८६ । भ०, ३५, ८० । ल०, २६, ५६, ७२, ८० ।
[वि०] (सं.)

कालापन, कालिख, कलौंछ, अँधेरा, कलंक, लाञ्छन ।

काली = आं०, १६, २१, ३७, ५७ । का०, ९६, १४२, १४७, १६७ । ल०, ३७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) चंडी, कालिका, पार्वती, गिरजा ।
[सं० पु०] (हि) एक नाग का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।
[वि०] (हि.) श्याम रंग वाली । कृष्ण रंग वाली ।

काली-काली = ल०, ४८ ।
[वि०] (हि.) एकदम स्याह वस्तु । घनघोर काला । भयंकर कृष्णाभा ।

काले = आं०, ४५ । का० कु०, ३८ । का०, १४२ । ल०, ३७ ।
[वि०] (हि.) (दे० 'काला' ।)

काले-काले = ल०, ७६ ।
[वि०] (हि०) अत्यन्त काला । बहुत कालिमापूर्ण ।

काल्पनिक = का०, १३५ ।
[वि०] कल्पित, आरोपित, कल्पना करने का
(सं.) भाव । वह गाय जो गर्भ-धारण करने के योग्य हो ।

काश्मीर = म०, १७, २१, २४ ।
[सं० पु०] भारत में हिमालय की तराई में स्थित
(हि.) मनोरम प्राकृतिक प्रदेश ।

काष्ठ = का०, ११८ ।
[सं० पु०] (सं.) (दे० 'काठ' ।)

का-सा = का०, ४५ ।
[वि०] (हि०) के सदृश, समान या तरह ।

कासों = चि०, ६१ ।
[सर्व०] (व्र. भा.) किससे ।

काहि = चि०, ६४, १५६, १६७ ।
[सर्व] (व्र. भा) किस को ।

काहूसो = चि०, ७२ ।
[सर्व०] (व्र. भा.) किसी से ।

किंकिनि = चि०, ६१ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) क्षुद्र घंटिका, करधनी ।

किञ्जल्क = आं०, २२ । भ्र०, २८ ।
[सं० पु०] (सं.) कमल का केसर, पराग, कमल ।

किञ्जल्क-पुंज = का० कु०, ४८ ।
[सं० पु०] सं) कमल का समूह ।

किंसुक = चि०, १७२ ।
[सं० पु०] (हि.) पलाश, ढाक, टेसू ।

किन्तु = का०, ७, ५४, ५६, ८४, ८६, ९२, ९४, १११, ११३, ११८, १२३, १३१, १४२, १७४, १७६, १७८, १८०, १८४, १५५, १८६, १८६, १९०, १९१, १९२, १९४, १९५, १९७, १९८, २००, २०१, २१०, २२६, २ ८, २६०, २६१, २६५, २७०, २७१ ।
पर, लेकिन, परन्तु, वरञ्च, वरन्, बल्कि ।

कितना = आं०, ७६ । का० कु०, १ । का०, ५, ३७, ३८, ५१, ५२, ५४, ६३, ६५, ६३, ९८, १११, १२०, १२६, १५८, १५६, १७६, १७८, १८६, १६२, १६४, २०८, २०६, २२६, २२८, २३४, २३५, २४७, २४८, २६१, । प्रे०, २२, २३ । ल०, ३० ।
[क्रि०वि०] (हि.) [प्रश्नवाचक वि०]
किस परिमाण, मात्रा या संख्या का । अधिक, बहुत । किस परिमाण या मात्रा में ? अधिक, बहुत, ज्यादा ।

कितनी = का०, ५, २७, ६४, ६६, ६७, ६६, ७७, ११५, १२२, १५०, १६०, १६४, १७२, १७६, १८०, १८४, १८६, १९०, १९२, १९३, २०६, २११, २२३, २२८, २२६, २४९ । ल० ११ ।
[क्रि० वि०] (हि) [प्रश्नवाचक वि०]
(दे० 'कितना' ।)

कितने = का०, १७, २५, ५६, ७५, ८४, ६८, १६४, १७१, १७६, १७८, १८३, २५७, २७२ ।
[क्रि० वि०] (हि.) (प्रश्नवाचक)
(दे० 'कितना' ।)

किधर = का०, १२२, २८६, २५७ ।
[क्रि० वि०] (हि.) किस ओर ? किस तरफ ?

किधौं = चि०, २२, २६, १४६, १६१ ।
[अ०] (हि.) अथवा, या ।

किन = का०, ६७, १७७ । ल०, ४० ।
[सर्व०] (हि) किस का बहुवचन ।

किनारा = आं०, ४१ । झ०, ५५ ।
[सं० पु०] (फा०) किसी वस्तु का वह भाग जहाँ उसकी लम्बाई या चौड़ाई समाप्त होती है। अन्तिम सिरा। नदी या जलाशय का तट, तीर ।

किनारी = चि०, १५० ।
[सं० स्त्री०] (फा०) सुनहले या रुपहले आदि रंग का पतला गोटा । (वार्डर)

किन्नरियां = का०, २८५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) किन्नर जाति की स्त्रियाँ । सारंगी ।

किमपि = चि०, १३२ ।
[अव्य०] (सं.) किञ्चित, कुछ भी ।

किया = क०, १०, ७, १६, २२, २६, । का०, ३३, २४, ४७, ५५, ६७, ७२, १४०, १६१, १६५, १८१, १६६, १६७, १६६, २० , २१६, २२६, २३५, २८६ । प्रे०, २, १४, १६, २१ । म०, १, ३, ९, १०, १२, २३ ।
[क्रि०] (हि.) 'करना' का भूतकालिक रूप ।

किरण आं०, १८, ४१, ६० । का० कु०, १ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) का०, ३७, ४७, ५०, ८१, ८२, ८८, १८०, १५६, १६७, २२७, २४६, २५२, २६० । झ०, २८, ७९ । प्रे०, १, ७ ।
ज्योति की वे अति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में प्रज्वलित पदार्थों से निकल कर फैलती हुई दिखाई देती हैं। सूर्य्य, चन्द्र, दीपक आदि के रोशनी की लकीर ।

किरण-सी = का०, ९ ।
[वि०] (स.) किरण के समान, ज्योतिमान, शोभित ।

किलकारना = झ०, २६ ।
[क्रि० अ०] (हि.) आनंद या उत्साह के समय जोर से अस्पष्ट और गंभीर ध्वनि करना । हर्ष-ध्वनि करना ।

किलकारी = ल०, २३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) हर्षध्वनि ।

किलात = का०, १११, २०१ ।
[सं० पु०] (सं) एक विशिष्ट जंगली जाति, किरात, भील।

किवाड़ = का० कु०, ११६ ।
[सं० पु०] (हि.) लकड़ी का पल्ला जो दरवाजा बन्द करने के लिए चौखट में जड़ा रहता है, पट, कपाट ।

किशोर = का०, १०३, ११३ ।
[सं० पु०] (सं.) ग्यारह से सोलह वर्ष तक की अवस्था का बालक । पुत्र, बेटा ।

किशोर-वय = का०, १० ।
[सं० पु०] (सं.) ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की अवस्था का नाम ।

किशोरी = चि०, ७५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) ग्यारह से सोलह वर्ष तक की बालिका ।

किस = क०, १७, २६, ३१ । का०, २४, २५, २६, २८, ३०, ५२, ८६, ११३, ११४, ११७, १४६, १४८, १५०, १५६, १५७, १५८, १६०, १७१, १८४, १६९, २१३, २१३, २२२, २६१ । प्रे०, १२, २३ । म०, १०, १५, १६ । ल०, २०, ४४ ।
[सर्व०] (हि.) कौन का विभक्ति मय रूप ।

किसलय = आं०, १६, २३, २६, ७६ । क०, १३, १७ । का०, ४७, ६८, ६७, १०२ । चि०, ५७, ७१ । झ०, ७२ । प्रे०, १७ । ल०, ५७, ७१ ।
[सं० पु०] (हि.) नया निकला हुआ । कोमल पत्ता, कल्ला ।

किसलयमय = झ०, २३ ।
[वि०] (हि.) किसलय रूपी, या किसलय से युक्त, कोमल पत्ते से ढका हुआ ।

किसलय-सा = ल०, ३७ ।
[वि०] (हि.) किसलय के समान ।

किसी = क०, २६, ३१। का०, २६, ३६, ८६, १२६, १६०, २८०, २८४। प्रे०, २, १४, १७, २०, २४। म०, २३। 'कोई' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है।
[सर्व०] (हि.)

किसे = का०, ३७, ३६। प्रे०, १३। किसको।
[सर्व०] (हि.)

कीट-सा = आं०, ४५। का०, ६०।
[वि०] (सं.) कीड़े-मकोड़े के समान। जमी हुई मैल के समान।

कीजिये = क०, २१, २२, २६। चि०, १४७। (दे० 'करना')। 'करना' की विधि क्रिया।
[क्रि०सं०] (हि.) म०, ११, २१।

कीर = चि०, २३, ६६, १५६।
[सं० पु०] (सं.) तोता, सुग्गा, सूआ, व्याध।

कीरन = चि०, २३।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) तोते।

कीरति = चि०, ५०, ५२, १०६।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) (दे० 'कीर्ति')।

कोरहि = चि०, ७०।
[सं०पु०] (ब्र. भा.) तोते को।

कीर्त्ति = क०, ६। का०, ६, ५८। चि०, १५४। म०, ८।
[सं० स्त्री०] (सं.) पुण्य, ख्याति, बड़ाई, यश, वह अच्छा या बड़ा काम जिसको करने के बाद नाम या यश हो।

कीर्ति-कलाप-गंध=चि०, ४८।
[सं० पु०] (सं.) यश रूपी पराग की सुगन्धि। चतुर्दिक यश विस्तार।

की-सी = का०, १८।
[वि०] (हि.) (दे० 'का सा')।

कीन्हे = चि०, ४६, ६४, १७२।
[क्रि०स०] (ब्र. भा.) किया।

कीन्हो = चि०, ५२, ६४, ७४।
[क्रि० सं०] (दे० 'कीन्हें')।

कीन्ह्यो = चि०, ६०, ६६, १७१।
[क्रि० सं०] (ब्र. भा.) किसी काम को पूर्ण कर दिया।

कीलाल = चि०, १३६।
[सं० पु०] (सं.) पानी। रक्त, लहू। अमृत। शहद। पशु।

[वि०] बंधन को दूर करने वाला।

कुंकुम = का०, १००, १०२, १७५। ल०, १०।
[सं० पु०] (सं.) काश्मीर देशज गन्ध द्रव्य।

कुंकुम-अरुण = का० कु०, ११।
[सं० पु०] (सं.) (दे० 'कुंकुमारुण')।

कुंकुमचूर्ण = का०, १५६।
[सं० पु०] (सं.) काश्मीर में उत्पन्न एक प्रकार के गंध द्रव्य का चूर्ण।

कुंकुमारुण = का० कु०, १०।
[सं० पु०] (सं.) कुंकुम की ललाई।

कुंचित = का० कु०, ४५। का०, १०३।
[वि०] (सं.) टेढ़ा-मेढ़ा, घुँघुराला।

कुंज = आं०, २७, ४८। क०, २८। का०, १०, ७८, ६०, ११२, १४६, १५८, १७५, १८२, २४३, २६६। चि०, ५, २३, ३६, ४५। प्रे०, १०। म०, ६। ल०, १२, ३२, ४३।
[सं० पु०] (सं.) लता और पोधों से घिरा मण्डप की तरह का स्थान।

कुंज मह = का० कु०, ३४।
[वि०] (हि.) कुंज के मध्य में।

कुंजर = चि०, १६१।
[सं० पु०] (सं.) हाथी। केश, एक पर्वत। अंजना के पिता, एक वृद्ध पक्षी। छप्पय छंद का एक भेद। पीपल। हस्त नक्षत्र। आठ की संख्या।

कुञ्जर-कलभ = का०, २५८।
[सं० पु०] (सं.) हाथी के पंच-वर्षीय बच्चे।

कुण्ठित = चि०, ६७।
[वि०] (सं.) मन्द, मूर्ख, जो तेज न हो, निकम्मा।

कुंतल = का०, ६३। चि०, २२, २५। भ०, २२।
[सं० पु०]

(सं.) जौ, सुगन्धवाल, शिर के बाल, केश। बहुरूपिया।

कुंद = का०, ८७। चि०, ५५।
[सं० पु०] एक फूल, कमल, कनेर। एक पहाड़।
[वि०] कुबेर की नौनिधियों में से एक। नौ की
(सं.) संख्या। विष्णु। खराद। मंद, कुत्सित।

कुंदकली = चि०, १८।
[सं०स्त्री०] (सं.) कुंद फूल की कली।

कुंदकली-सों = चि,० ५५।
[वि०] (सं.) कुंद फूल की कली के समान।

कुन्दन-सों = चि०, ५६।
[वि०] (सं.) उत्तम सोने के समान।

कुम्भ = आं०, २७। चि०, २८।
[सं० पु०] घड़ा। हाथी के मस्तक का उभड़ा हुआ
(सं.) भाग। एक राशि का नाम। प्राणायाम का एक भाग। बुद्धदेव के जन्म का नाम। एक दैत्य। एक बानर। एक पेड़। प्रति बारहवें वर्ष पड़ने वाला एक पर्व।

कुम्भ-कर्ण-सा = का० कु०, २५।
[वि०] घड़े के समान कान वाले की तरह।
(सं.) कुम्भकर्ण नामक राक्षस की तरह विशाल।

कुकर्म्म = चि०, ६७।
[सं० पु०] (सं.) बुरा काम।

कुचक्र = का० कु०, ६३। का०, १८६।
[सं० पु०] षड्यंत्र। किसी को मार डालने या उसको
(सं.) हानि पहुंचाने के लिए जाल रचना।

कुचल = का०, १३६।
[पूर्व क्रि०] (हि.) कुचलकर।

कुचलते = क०, २००। का०, १३३।
[क्रि० स०] (हि.) बार-बार ऐसी घाव या चोट पहुंचाना कि घायल विकृत हो जाय।

कुचलना = आं०, ३०, ४५। का० कु०, ८३। का०, १५, ५८। म०, २।
[क्रि० स०] (हि.) किसी वस्तु के ऊपर बार-बार ऐसा घाव या चोट पहुँचाना कि उसका रूप विकृत हो जाय। रौंदना।

कुछ = आं०, ९, २४, ४१, ४५, ५१, ६६,
[वि०] [हि०] ६७। क०, १३, १८, २३, ३०। का० कु०, ११२। का०, ५, ६, ७, १६, २६, ३२, ४०, ५२, ६४, ६६, ६७, ६८, ८१, ८५, ८६, ८६, ९०, ९२, १००, १०५, १०६, १११, ११५, ११६, १२०, १२७, १२९, १३०, १३२, १३९, १४०, १४२, १४३, १४५, १४६, १५१, १६२, १६३, १६४, १६७, १७७, १७८, १६५, १७६, १८३, १८४, १८५, १८६, १९०, १९२, १९४ १९५ १९६, १९९, २०५, २०६, २०८, २१०, २१३, २१४, २१५, २१६, २१८, २१९, २२०, २२२, २२५, २२६ २२९, २३०, २३३, २३४, २३६, २३७, २४०, २४२, २४५, २४७, २४८, २५९, २६०, २७०, २७१, २७२, २७८, २७९, २८०, २८४, २८७, २८८, २९१, २९२। भ०, ७। प्रे०, ८, १६, २०। म०, ४, १६। ल०, १८, २१।
थोड़ी संख्या या नाम मात्र का, जरा-सा, थोड़ा सा। (सर्व०) कोई।

कुछ करके = का०, २६६
[पूर्व क्रि०] (हि.) थोड़ा बहुत करके, निश्चित करके।

कुछ-कुछ = का०, १४२, १४३, १५७, १८०,
[वि०] (हि.) १८२, २६१, २६६, २८७
थोड़ा-थोड़ा।

कुटिया = आं०, १६, ७९। का०, १७६, १७९।
[सं० स्त्री०] प्रे०, ३, ४। ल०, ४०।
(हि.) झोपड़ी, कुटी, साधुओं का वह निवास स्थान जहाँ रहकर वे साधना करते हैं।

कुटिल = क०, १४, २८। का० कु०, ८, ६३, ८८, १०५, ११३। का०, ११, भ०, २२। प्रे०, ३।
[वि०] (सं.) वक्र, टेढ़ा, घूमा या बल खाया हुआ, छलदार, घुँघराला, कपटी, छली।

कुटिलता = आ०, २२। का०, कु० ८८।
[सं० स्त्री०] (हि.) टेढ़ापन, छल, कपट।

कुटिला = का० कु०, ४४। चि०, ४६, ७।
[वि० स्त्री०] (सं.) (दे० 'कुटिल'।)

कुटीलाई = चि०, १८३।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) (दे० 'कुटिलता'।)

कुटी = का० कु०, ६०। प्रे०, ६। ल०, १२, ३२।
[सं० स्त्री०] (सं.) (दे० 'कुटिया'।)

कुटीर = का०, १८६। प्रे०, ३।
[सं० पु०] (सं.) (दे० 'कुटिया'।)

कुटिरहिं = चि०, ५८।
[सं० पु०] (ब्र भा) कुटीर में।

कुटुम्ब = का०, १८७।
[सं० पु०] (सं.) परिवार, खानदान।

कुटुम्बी = का०, १८७।
[सं० पु०] (सं.) परिवार के लोग, खानदान के लोग।

कुठार = चि०, १७३।
[सं० पु०] (सं.) कुल्हाड़ी, परशु, फरसा।

कुड्मल = आ०, ७६। ल०, २५।
[सं० पु०] (सं.) कली।

कुतूहल = का०, २१, ४५, ५०, ८३, ८८, ६७, ११५, २२४, २७८। ल०, १०, ७२।
[सं० पु०] (सं.) कोई वस्तु या बात देखने या सुनने की प्रबल इच्छा। विनोदपूर्ण उत्कण्ठा, क्रीड़ा। कौतुक, खेलवाड़, आश्चर्य, अचम्भा।

कुत्सित = का० कु०, ८८, ६४, १३२। का०, ११६। म०, २, १४।
[वि०] (सं.) कुष्ठ रोगी। निन्दित।

कुथोल = चि०, ५१।
[सं० पु०] (हि.) बुरी, अनुचित या अशुभ बात।

कुमति = चि०, १७३।
[सं० स्त्री०] (सं) मूर्खता, बुरे रास्ते पर चलने वाली बुद्धि। बुद्धिहीनता।

कुमार = का०, २१४, २१५, २२८, २२६, २३०, २५४। चि०, ३०, ४१, ४७। म०, ७।
[सं० पु०] (सं.) बेटा, पुत्र, पाँच वर्ष की अवस्था का बालक, युवावस्था या उससे कुछ पहले की अवस्था का पुरुष। युवराज। सनक-सनन्दन आदि ऋषि, मंगल ग्रह। अग्नि के एक पुत्र का नाम, भारत का एक नाम, एक वृक्ष विशेष।
[वि०] जिसका विवाह न हुआ हो, अविवाहित।

कुमार-समीप = का०, २२६।
[वि०] (सं.) कुमार के पास।

कुमार-हेतु = चि०, ७३।
[सं० पु०] (सं.) कुमार के लिए या कारण।

कुमारिकायें = ल०, ६३, ७६।
[सं० स्त्री०] (सं.) कुमारियाँ, अविवाहित लड़कियाँ। कुमारी का बहुवचन।

कुमुद = आ०, ७७। का०कु०, १६। चि०, ५१, १४६, १४७। भ०, ७०।
[सं० स्त्री०] (सं.) कुई, कोका, लाल कमल। चाँदी। विष्णु। एक बंदर। एक द्वीप। आठ दिग्गजों में से एक। एक केतु। तारा। कपूर। संगीत का एक ताल।
[वि.] कंजूस, लोभी।

कुमुदबन्धु = का० कु०, ४६।
[सं० पु०] (सं) चन्द्रमा।

कुमुदिनी = का० कु०, ५४। चि०, १५, १०७, १७८।
[सं० स्त्री०] (सं.) भ०, ८४। कुई का फूल।

कुमुदिनी नाथ = का० कु०, ६५।
[सं० पु०] (सं.) कुमुदिनी के स्वामी, चन्द्रमा।

कुमद्वती = चि०, ५२।
[सं० स्त्री०] (सं.) नागराज कुमुद की बहिन। षड्ज स्वर में से चार। ऋतुओं में से एक।

कुम्हलाना = का० कु०, १३ ।
[क्रि० अ०] पौधे का हरापन समाप्त होना, मुर-
(हि.) झाना । कान्ति का मलिन पड़ना, प्रभाहीन, पीला होना ।

कुम्हिलात = चि०, ५६ । प्रे०, २ ।
[क्रि० अ०](ब्र.भा.) सूखने के समीप होना, मुरझाना ।

कुम्हिलाय = चि०, ४, १६४ ।
[क्रि० अ०] (ब्र. भा.) मुरझाकर । मुरझाय ।

कुरंग = चि०, १७६ ।
[सं० वि०] (सं.) बादामी या तामड़े रंग काहिरन, मृग ।
बुरा ढंग या लक्षण । बुरे रंग का, बदरंग ।

कुरबक = का० कु०, ८३ ।
[सं० पु०] (सं.) एक फूल कटसरैया ।

कुरबक रस-लुब्ध=का० कु०, ८३ ।
[वि०] (सं.) कुरबक के रस में मुग्ध ।

कुरुचि = का०, १६० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) बुरी इच्छा, घृणा ।

कुल = क०, २२ । चि०, ११, २६, ४७, ६३,
[सं० पु०] ६७, १०२ ।
(सं.) एक ही पूर्व पुरुष से उत्पन्न व्यक्तियों का वर्ग या समूह, वंश, घराना, खानदान, जाति, समूह, समुदाय, झुण्ड । घर, मकान । वाम मार्ग, कौल, धर्म ।

कुलकामिनी = चि०, १४७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रतिष्ठित महिला, कुलवंती बधू ।

कुल-कुल = ल०, १६ ।
[अ०] (हि.) एक विशेष प्रकार की ध्वनि का समूह जो प्रातः काल पक्षियों के द्वारा होता है ।

कुल-गुरु = क०, २७ ।
[सं० पु०] कुल, परिवार, खान-दान आदि का
(हि.) गुरु । खानदानी गुरु ।

कुलघालक = चि०, ६८ ।
[वि० पु०] वंश विनाशक, खानदान का नाश करने
(हि.) वाला । नाशायक ।

कुलपथा = चि०, ६४, ८६, ६१, १०१, १६५ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) परम्परागत रिवाज, वंशगत विशिष्ट रीति-रिवाज ।

कुल-बाला-सी = का० कु०, ३५ ।
[वि०] (हि.) कुलवंती स्त्री के समान, मर्यादित ।

कुल-मान = का० कु०, ११५ ।
[सं० पु०] (हि.) वंश की प्रतिष्ठा, खानदान की इज्जत ।

कुलमानी = म०, १८ ।
[सं० पु०] वंश में स्वाभिमानी या अपने खानदान
(हि.) की प्रतिष्ठा पर मर मिटने वाला व्यक्ति। वंश के गौरव का ध्यान रखनेवाला ।

कुलबधुएँ = ल०, ६३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) (दे० 'कुल कामिनी') (बहुवचन) ।

कुलवारन = चि०, १०२ ।
[वि० पु०] वंशगत मर्यादा तोड़ने वाला । वंश की
(ब्र. भा.) परम्परा को विनष्ट करने वाला ।

कुलाकुल = चि०, १६६ ।
[सं० पु०] समस्तवंश वालों की आकुलता, व्यथा,
(हि.) घर-परिवार की व्याकुलता ।

कुलिश = का०, १३ ।
[सं० पु०] वज्र, इन्द्र का एक विशेष अस्त्र जो
(सं.) देवासुर संग्राम के पहले महर्षि दधीचि की हड्डियों से बना था । हीरा । बिजली । कुठार ।

कुलेल = ल०, २३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) प्रसन्नता पूर्वक खिलवाड़ आमोद-प्रमोद । क्रीड़ा ।

कुल्या = का० कु०, २६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) नहर, नाली । कुलीन वधु ।

कुँवर = का०, २२ ।
[सं० पु०] वह व्यक्ति जो वंश परम्परागत अधिकारी
(हि.) हो, कुमार । अविवाहित ।

कुविचार-क्रूरों = का० कु०, ८ ।

[सं० पु०] (सं.) बुरे विचार, कलंकित करने वाली भावनायें, दुष्टों के बुरे विचार।

कुश = चि०, ४७।
[सं० पु०] (सं.) एक विशेष तृण-जाति जो पवित्र कर्मों में काम में आती है। राम के पुत्र तथा एक द्वीप का नाम।

कुश-कुमुदनी = चि०, ५४।
[सं० पु०] (सं.) कुश और कुमुदनियाँ।

कुश-प्रभाव = चि०, ५३।
[सं० पु०] (सं.) कुश के समान प्रभाववाला।

कुशराज-कुमार= चि०, ४६।
[सं० पु०] (सं.) राजा कुश का पुत्र या उत्तराधिकारी।

कुशल = का०, १४०, १८२। चि०, ६०।
[वि० पु०] (सं०) तीव्रबुद्धि वाला, चतुर, पटु, कौशल वाला व्यक्ति।

कुशवती = चि०, ४५, ४६।
[सं० पु०] कुश की नगरी।

कुशासन = का० कु०, १०१।
[सं० पु०] (सं.) दुःख देने वाली व्यवस्था, निन्दनीय प्रबंध। कुशा की चटाई।

कुसुम = आं०, ६, ६६। का० कु०, १०, ३४, ४१, ५१। का०, १३, ३५, ४८, ६४, ६५, ११३, १४३, १६३, १७५, १८१ २१६। चि०, ५, ११, २४, ३८, ५८, ६६, १४८, १८४। झ०, १६, २०, ३७, ६६। प्रे०, ८, २४। ल०, २५, ४५।
[सं० पु०] (सं.) फूल, पुष्प। नेत्र का एक विशेष रोग। पीले फूल का पौधा। वर्रै। वह गद्य जिसमें छोटे-छोटे वाक्य हों।

कुसुम-अवचय= प्रे०, ११।
[सं० पु०] (सं.) फूलों का इकट्ठा करना, फूलों को चुनना।

कुसुम-ऋतु = का०, २१७।
[सं० पु०] (सं.) बसंत ऋतु।

कुसुम-कलियाँ = प्रे०, २।
[सं० स्त्री०] (हि.) फूलों की कलियाँ।

कुसुम-कली = का० कु०, १८। म०, १६।
[सं० स्त्री०] (हि.) फूलों की कली।

कुसुम-कानन = का०, १७।
[सं० पु०] (सं.) फूलों का जङ्गल, वह जङ्गल जिसमें विशिष्ट-विशिष्ट जाति के फूलों के पेड़ लगे हों। फूलों की राशि।

कुसुम कलिका = चि०, ५६, ६२।
[सं० स्त्री०] (सं.) फूलों की कली। अति कोमलता का सूचक।

कुसुम-कुञ्ज = प्रे०, ८।
[सं० पु०] (सं.) पुष्पित कुञ्ज। लताओं का झुरमुट जिसमें पुष्प खिले हों।

कुसुम कुन्तला = ल०, ६०,।
[सं० स्त्री०] (सं.) फूलों से सजाये हुए केश।

कुसुम-दल = प्रे०, २५।
[सं० पु०] (सं.) फूल और पत्ते, फूलों की पङ्खड़ियाँ।

कुसुम-धूलि = का०, १५२।
[सं० स्त्री०] (सं.) पराग, मकरन्द। पुष्पों का विशेष रस। पुष्प-पराग-कण।

कुसुमन = चि०, ६१।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) कुसुम का बहुवचन, फूलों।

कुसुम-पात्र = चि०, ५८।
[सं० पु०] (सं.) फूल रूपी पात्र। फूलों के बर्तन।

कुसुम-मकरन्द = का० कु०, १६। का०, ६१।
(सं० पु०) (सं.) (दे० 'कुसुम धूलि'।)

कुसुम-मणि = का० कु०, १०४।
[सं० पु०] (सं.) मणियों सदृश्य पुष्प। मणी रूपी कुसुम।

कुसुम-रज = झ०, २३।
[सं० पु०] (सं.) पराग, मकरन्द।

कुसुम-रस = झ०, ६४। ल०, २२।
[सं० पु०] (सं.) फूलको निचोड़ कर निकाला गया तरल पदार्थ।

कुसुम-वाहना = का० कु०, १३।
[वि० स्त्री०] (सं.) पुष्पों पर चढ़ी हुई, पुष्पों के कारण मनोरम।

कुसुम-विकसित=का०, २१७।

[सं० पु०] (सं.) फूले हुये फूल, पूर्ण विकसित पुष्प ।

कुसुम-विलास = ल०, २२ ।
[सं० पु०] (सं.) फूलों का आनन्द, पुष्पों के द्वारा मिलने वाला आनन्द ।

कुसुम-वैभव = का०, ४६ ।
[सं० पु०] (सं.) पुष्पों का ऐश्वर्य । पुष्प ही ऐश्वर्य हैं जिसके । प्रकृति, वसन्त ।

कुसुम-समान = का०, १५१ ।
[वि०] (हि.) = फूल के सदृश कोमल, अत्यन्त कोमल ।

कुसुम-सी = भ्रु०, ५४ । ल०, ४० ।
[वि०] (हि.) देखो 'कुसुम' से ।

कुसुम-हास = का०, १५८ ।
[सं० पु०] (सं.) फूलों सी हँसी, पुष्पों की हँसी । मृदु मुसकान, स्मित, हास्य ।

कुसुमाकर = आं०, ३१ । का० कु०, १३ । का०, २६२ । चि०, १७३, १७५ ।
[सं० पु०] (सं.) वसंत ऋतु । बाग, उपवन ।

कुसुमित = क०, १६ । का० कु०, १४, ३४ । ७२, ८२ । चि०, ३६, ६८, १५ प्रे० १४ ।
[वि० पु०] (सं.) म०, २० । भ्रु०, ४१ ।
पुष्पित, फूले हुए ।

कुसुमित-कानन = का०, १० । भ्रु०, १७ ।
[वि० पु०] (सं.) फूलों से भरा हुआ वन ।

कुसुमों = का०, १८७, २२०, २४६, २६५ ।
[सं० पु०] (सं.) फूलों, पुष्पों, सुमनों ।

कुसुमोत्सव = का०, ७३ ।
[सं० पु०] (सं.) वसंत ऋतु में भ्रमरों के द्वारा होने वाली पराग-क्रीड़ा ।

कुसुमोद्गम-सा = का०, १४० ।
[वि० पु०] (सं) कुसुम के उद्गम सदृश्य ।

कुहक = का० कु०, ३० । का०, १०८ । भ्रु०, ७६ ।
[सं० पु०] (हि.) पक्षियों का अति मधुर स्वर ।

कुहुक-कामिनी = प्रे०, ५ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) कामार्त बाला को कामार्त विदग्ध वाणी जो प्रायः एकांत में हुआ करती है । कामाकुल युवती के विरहाकुल अधखुले शब्द ।

कुहुक-सी = का०, ६० ।
[वि० स्त्री०] (हि.) मार्मिक विरहाकुल ध्वनि के सदृश ।

कुहुकिनि = आं०, ३३ । का०, १५६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) कोयल ।

कुहर = का०, १७०, २२५ ।
[सं० पु०] (सं.) छेद, सुराख, गले का छेद ।

कुहासों = का०, २० ।
[सं० पु०] (हि.) कुहरा, ओले के सूक्ष्म कण जो वातावरण में भाप के रूप में जम जाते हैं ।

कुहू = का० कु०, ८ का०, १७६, १७६ ।
[सं० स्त्री०] (सं) चि०, १६१ । अमावस्या की रात्रि ।

कुहेलिका = प्रे० १६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कुहासा, कुहरा ।

कूक = आं , ७६ । का० कु०, ४२ । भ्रु०, २७ । ल०, ४२, ४४ ।
(हि.) मयूर अथवा कोकिल की बोली, मीठी आवाज, कसक से भरी ध्वनि ।

कूकि = चि०, १८० ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) कूक कर—दे० 'कूक' ।

कूजत = चि०, १, २३ ।
[क्रि०] (हि.) पक्षियों का आनंद-विभोर कलरव करना ।

कूजन = का०, ६४, १७८ ।
[सं० पु०] (हि.) पक्षियों की मधुर-ध्वनि ।

कूजित = का० कु०, १७ ।
[वि०] (हि.) बोले जा चुके शब्द । गुंजित ।

कूदना = म०, १२ ।
[क्रि० अ०] (हि.) एक स्थान से दूसरे स्थान पर उछल कर जाने की क्रिया ।

कूर = चि०, १७६ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा) दुष्ट, निर्दय, दुराचारी, क्रूर ।

कूल = आं०, ४१, ७१, ७६ । का० कु०, १७, ५७ । का०, २४६ । चि०, ११ । भ्रु०,

(सं.) ६६ । प्रे०, १३, १४, २४ । ल०, २६, २७, ७२ ।
किनारा, तट, तीर । नहर, तालाब ।

कूल तरु श्रेनी = चि०, १५० ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) किनारे पर लगी हुई वृक्षों की पंक्तियाँ ।

कूलन = चि०, ४८, ९३, १५०, १६६ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) कूल का बहुवचन । (दे० कूल ।)

कूलहि = चि०, १८२ ।
[सं० पु०] (हि.) खानदान को, वंश को । किनारे को ।

कूलों = का०, १२८, १६७, २६६ ।
[सं० पु०] (सं.) कूल का बहु०, दे० कूल ।

कृतघ्न = का० कु०, ६३ । का०, २३० । म०,
[वि० पु०] ६, १६ ।
(सं.) उपकार न मानने वाला ।

कृतघ्नते = का०, ८४ ।
[सं० स्त्री०] उपकार की उपेक्षा करने वाली वृत्ति ।
(सं.) कृतघ्न का संबोधन ।

कृतज्ञता = का०, २१८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) उपकार मानने वाली वृत्ति ।

कृति = का० कु०, ६१ । का०, ७६ । ल०, ४२
[सं० स्त्री०] (सं.) कार्य, क्रिया, सम्पादित कर्म ।

कृतियां = का०, ७५, ११५ ।
[सं० स्त्री०] बहु० दे० 'कृति' ।

कृतियों = का०, ७५, १३१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कृति का बहुवचन दे० कृति ।

कृतिमय = का०, ६५, ७१ ।
[वि० पु०] (सं.) कर्तव्य से युक्त, कर्तव्य से पूर्ण ।

कृत्य = का०, २७३ ।
[सं० पु०] कर्म, कर्तव्य । अंतिम संस्कार
(सं.) संबंधी कर्म ।

कृत्रिम = का० कु०, ५४, ८२ । का०, १६६,
[वि० पु०] १६६, २३६ । म०, १६, २० ।
(सं.) नकली, बनावटी ।

कृत्रिमता = ल०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) बनावट ।

कृत्रिमते = झ०, ७६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) संबोधन—दे० 'कृत्रिमता' ।

कृपया = चि०, ७४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कृपा से, कृपापूर्वक, दया से ।

कृपा = क०, २५ । का० कु०, ३ । चि०, १४५,
[सं० स्त्री०] १४७ । झ०, ८१ ।
(हि.) दया । किसी का दैन्य देखकर उत्पन्न होने वाली वृत्ति ।

कृपा-कोर = चि०, १७८ । ल०, ७६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) कृपा की तीव्रता, अत्यधिक दया ।

कृपाण = चि०, २८, ४० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) तलवार, एक शस्त्र, असि, कटार ।

कृपाणी = ल०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कटारी ।

कृपाने = चि०, ७४ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) तलवार का संबोधन ।

कृपानाव = प्रे०, २२ ।
[सं० स्त्री०] कृपा रूपी नाव । कृपा द्वारा उद्धार
(हि.) होने का साधन ।

कृश = का० कु०, ६४ । म०, २० ।
[वि० पु०] (सं.) दुर्बल, क्षीणकाय, कमजोर ।

कृषक = का०, १८१ ।
[सं० पु०] (सं.) किसान, हलवाहा ।

कृषक-करों = का० कु , ६१ ।
[सं० पु०] (सं.) किसान के हाथों ।

कृषकगन = चि०, १५७ ।
[सं० पु०](ब्र.भा.) किसान लोग । कृषक वर्ग ।

कृषक-समूह = प्रे०, ७ ।
[सं०पु०] किसानों का समुदाय, कृषक वर्ग, खेती
(हि.) करनेवालों का झुंड ।

कृषि = झ०, ६३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) खेती ।

कृष्ण-प्रभाव = का० कु०, ११३ ।
[सं० पु०] (सं.) श्रीकृष्ण के प्रभुत्व से ।

कृष्ण मारुत = का० कु०, ११३ ।
[सं० पु०] (सं.) कुटिल वायु ।

कृष्ण वर्ण = का० कु०, १२३, १२५ ।

[सं० पु०] (सं.) श्याम वर्ण, पक्का रंग। काला रंग।

कृष्णसिंह = म०, १०।
[सं० पु०] (हि.) राणाप्रताप की सेना का एक प्रमुख सैनिक।

कृष्णा = चि०, ३१, ६३, । ल०, ६८।
[सं० स्त्री०] (सं.) काली, श्यामा। यमुना नदी, कृष्णा नाम की एक विशिष्ट नदी। द्रौपदी। काली देवी।

कृष्णा की नवतरलविचि = चि०, ६८।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) कृष्णा की नई नई प्रवहमान चमकती लहरें।

कृष्णगुरुवर्तिका = ल०, ७५।
[सं० स्त्री०] (सं.) एक विशिष्ट सुगंधि द्रव्य की बत्ती।

केन्द्र = का०, ५८, १६७, २७२।
[सं० पु०] (सं.) किसी वृत्त या परिधि के ठीक बीचो-बीच का बिंदु। नाभि। वह मूल स्थान जहाँ से चारों ओर फैले हुए कार्यों का प्रबन्ध होता है। बीच या मध्य।

केन्द्रच्युत = का० कु०, ६२, ११२।
[वि० पु०] (सं) स्थान भ्रष्ट। अपनी जगह से हट जाना। धूरीहीन।

केंन्द्रीभूत = का०, ८।
[वि० पु०] (सं.) एकत्र होना। एक स्थान पर घनीभूत होना।

केन्द्रों = का०, २३६।
[सं० पु०] (सं.) केन्द्र का बहुवचन। दे० केन्द्र।

केतिक = चि०, ६।
[वि०](ब्र० भा०) कितना। कितने। कितनी।

केतकी = का०, १४२ ।चि०, ५५।
[सं० स्त्री०] (हि) केवड़ा। एक रागिनी का नाम।

केतन = का० कु०, ६४ ।ल०, ७७।
[सं० पु०] (सं.) निमंत्रण। ध्वजा। चिह्न। घर, भवन। स्थान, जगह।

केतु-आकार = म०, ७।
[वि० पु०] (सं.) केतु के रूप का।

केतो = चि०, १८७।
[वि० पु०] (ब्र. भा.) कितना। प्रश्नवाचक शब्द।

केरो = चि०, १४५।
[सं०पु०](ब्र. भा.) केलों।

केलि = चि०, १४२, १६५।
[सं० स्त्री०] (हि.) रति। मैथुन-क्रीड़ा।

केलिहि = चि०, १४६।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) क्रीड़ा को।

केली = चि०, ४६, ५६, १४७।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) दे० 'केलि'।

केवल = आं०, ६, २५, । क०, १६, २८। का०
[अ०] कु०, १३, ८३। का०, ७, ८, ५५,
(हि.) ७५, १०५, १०६, १२७, १२८,
[वि०] १३३, १४८, १६३, १६७, १७०,
१७७, १६६, २०८, २३८, २४२,
२४५, २५२, २६४, २७०, २८७।
चि०, ६, १७३। झ०, ४०, ८१। प्रे०,
१७, २०, २३, २४। म०, १४, २४।
सिर्फ, एक मात्र। अकेला।

केश = चि०, ४०, ६७।
[सं० पु०] बाल। विष्णु। किरण। वरुण। विश्व।
(सं) ब्रह्मशक्ति का एक भेद। एक दैत्य का नाम।

केश-अवली = चि०, ५५।
[सं० पु०](सं.) सँवारी हुई किन्तु बिना बँधी लटें।

केशभार = का०,१५६।
[सं० पु०] (सं०) अलकों का भार। केश का बोझ।

केशर = का० कु०, ३७। चि०, १६१।
[सं० पु०] (सं.) एक सुगंधित द्रव्य। एक प्रकार का पुष्प। घोड़े या सिंह के गर्दन पर लटकते हुए बाल (अयाल)। नाग केशर बकुल, मौलसिरी, पुन्नाग, हींग का वृक्ष, कर्सास। स्वर्ग। एक विष।

केशरी = चि०, १६१। म०, १३।
[सं० पु०] (सं.) सिंह, घोड़ा, पुन्नाग, एक प्रकार का नीबू। हनुमानजी के पिता। एक प्रकार का कपड़ा।

केशव = का० कु०, ११७।
[सं० पु०] (सं) विष्णु। कृष्ण।

केशव-संग = का० कु०, ११३ ।
[सं० पु०] (सं.) भगवान कृष्ण के साथ ।

केसर = आं०, ६२ । का०, १७५, २६१ । चि०, ११३ ।
[सं० पु०]
(हि.) दे० 'केशर' ।

केशर-रज = का०, २६२ ।
[सं० पु०] पीताभ सुगंधित द्रव्य । केशर का मकरन्द ।
(सं.)

केहरि किशोर = का०, २७७ ।
[सं पु०] (सं०) सिंह का तरुण पुत्र ।

केहरि शावक = चि०, ४० ।
[सं० पु०] (सं.) सिंह का बच्चा ।

केहि = चि०, ३०, १५१, १५५ ।
[सर्व० पु०] ब्र भा.) किसका, किसको ।

कै = चि०, ६, ४२ ।
[वि०] (ब्र. भा.) कितना । अथवा । कैसे ।

कैधों = चि०, ६, १८१ ।
[अ०] (ब्र. भा.) या, किंधौं, मानो ।

कैलास = चि०, २८७ ।
[सं० पु०] हिमालय पर्वत की एक चोटी जिस पर
(ब्र. भा.) भगवान शंकर का निवास है ।

कैसा = आं०, ३७ । क०, १०, १३, २६ ।
[अ०] का०, १०, ८५, १४६, १८४, १६६,
(हि.) २३४, २४८, २६६ । प्रे०, १८, १६, २५ । म०, १, ६, १० । ल०, ४७, ६२, ६८ ।
किसी प्रकार का । किसी ढंग का । किसी प्रकार का नहीं ।

कैसी = आं, १४ । क०, ८ । का०, १३, २५, ५१, ८०, ६१, १२०, १२४, १२७, १८६, २११, २३७, २४३, २८० । प्रे०, ३, ४, १८ । म०, ७, १६ ।
[अ०]
(हि.)
दे० 'कैसा' । (स्त्री लिङ्ग) ।

कैसे = क०, १२, २७ । का०, २६, ४०, ७०, ६०, ११७, १२०, १२४, १३२, १७७, १७६, १८६, १६२, १६४, २०१, २१२, २२६, २३८, २८५ । चि०, १८७ । प्रे०, २, ११, २० । ल०, १०, ११ ।
[क्रि० वि०]
(हि.)
किस प्रकार से, किस ढंग से, क्यों, किस लिए,

कोउ = चि०, ५६, ५७ ।
[सर्व० पु०] (ब्र भा.) दे० 'कोई' ।

कोई = आ०, ३५, ३६, ४० । क०, १६ । का०, १७, २८, ३२, ५२, ६७, ८१, १०५, ११६, १२६, १३३, १४५, १८५, १६०, १७५, १७७, १७८, २०६, २११, २१२, २४७, २६१, २६६, २८७, २८८ । प्रे०, ३, ६, १३, २०, २२ । म०, १२, १६ । ल०, ३१, ४४, ७७ ।
[सर्व० पु०]
(हि.)
ऐसा जो अज्ञात हो, अविशेषवस्तु अथवा व्यक्ति ।

कोक = का०, ८२ ।
[सं० पु०] चक्रवाक । चकवा पक्षी । रतिशास्त्र के
(सं.) एक आचार्य । विष्णु । भेड़िया । जंगली खजूर । मेंढक ।

कोकनद = भ०, २६ ।
[सं० पु०] (सं.) अरुणकमल, लाल कुमुदनी ।

कोकिल = का० कु०, १७, ४८, ६६ । का०, ५०, १७५, १७७ । चि० ११ । भ०, २६, ५६, ६६ । प्रे०, ११ । ल०, ४४ ।
[सं० पु०]
(सं.)
कोयल । नीलम की छाया । एक प्रकार का चूहा । छप्पय का एक भेद ।

कोकिला = का० कु०, १६, ४२, ४३ । चि०, २३, १७१, १७५ । भ०, ६६ ।
[सं० स्त्री०]
(सं.) मादा कोयल । पिकी ।

कोकिला-कल-रव-समान=का० कु०, १९ ।
[वि०] कोयल की ध्वनि के समान । मीठी
(हि.) आवाज ।

कोटर-मुख = का० कु०, २५ ।

[सं० पु०] वृक्ष-गह्वर का द्वार। पेड़ के खोखले
(सं) भाग का रास्ता। घोसले का मुख।

कोटि = चि०, ४२, १७७।
[सं० स्त्री०] धनुष का सिरा। सौ लाख की संख्या।
(सं.) तलवार की धार। श्रेणी। पद।
दर्जा।

कोटि-कोटि = का०, १६०।
[वि०] (हि) करोड़ों। अनेक। बहुत।

कोटिहुं = चि०, २२।
[सं० स्त्री०](ब्र.भा.)करोड़ों।

कोण = का०, १७९।
[सं० पु०] कोना। दो दिशाओं के बीच की दिशा।
(सं.) विदिशा। दो सीधी रेखाओं के परस्पर
मिलने का स्थान।

कोदण्ड = चि० ६६।
[सं० पु०] (सं.) धनुष। कमान। भौंह।

कोना = का०, १२, ३६, ६३, ७०, ७६, ८६,
[सं० पु०] २०८। प्रे०, १३।
(हि.) नुकीला। छोर या किनारा। एक बिन्दु
पर मिलती हुई ऐसी दो रेखाओं का
अन्तर जो फिर एक नहीं होंतीं।
एकान्त स्थान।

कोने-कोने = ल०, ६३।
[क्रि० वि०] (हि०) प्रत्येक स्थान। प्रत्येक कोण में।

कोनों = का०, १५०, २१५।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) कोने का बहुवचन।

कोप = का० कु०, २०। चि०, ७४।
[सं० पु०] सं.) क्रोध, गुस्सा, रिस।

कोपल = चि०, १४६। भ्र०, २६, ७२।
[सं० स्त्री०] (हि.) वृक्ष की नवीन कोमल पत्ती।

कोप-सी = म०, ८६।
[वि०] (हि.) क्रोध के समान।

कोपि = चि० ४१।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र.भा.) क्रोध या गुस्सा करके।

कोपित = चि० ४२।
[वि०] (हि.) क्रोधित।

कोपै = चि० १०३
[क्रि०] (ब्र. भा.) क्रोध करे।

कोमल = आं० २२, ३२, ३६, ६६, । क० १७।
[वि०] का० कु०, ६, ३३, ५३। का०, २३,
(सं.) ४६, ५०, ६३, ६८, ६६, ८३, ८५,
६७, १०२, १०४, ११८, १४२, १४५,
१४६, १५१, १८०, १८५, १६४,
२१३, २४८, २६३, २६४। चि०, २,
५७, ७१। प्रे०, १, ३, ७। ल०, ६,
१०, १४, २५।
मृदुल। मुलायम। परिपक्व। सुन्दर,
मनोहर। स्वर का एक भेद।

कोमल-कंठ = प्रे०, १६।
[सं०पु०] मृदुल गला। जिस गले से मधुर महीन
(सं.) स्वर निकले।

कोमलकाय = चि०, १७०।
[सं०पु०] (ब्र. भा.) मृदुल तन।

कोमल-किसलय= चि०, ५६।
[संज्ञा पु०](हि.) कोमल नया पत्ता। कल्ला।

कोमल-गात = चि०, १४१।
[सं० पु०] (हि.) मृदुल तन, मनोहर शरीर।

कोमलता = आं०, ६६।
[सं०स्त्री०](हि.) मृदुलता, मुलायमपन, नरमता।

कोमल-नाद = चि० ५१।
[सं०पु०] (सं.) मृदुल और मधुर स्वर।

कोय = चि०, ४।
[सर्व०] (ब्र. भा.) दे० 'कोई'।

कोयल = का०कु०, ३८। का० ६३।
[सं० स्त्री०] एक काले रङ्ग का पक्षी जिसका स्वर
(हि.) बड़ा मीठा होता है। कोकिल। पिक।

कोलाहल = का० कु०, १०१। का०, ८, २४, ६४,
[सं० पु०] १००, १४४, १८६, २३६, २५०,
(सं.) २६६, २६७,। चि०, ४२। भ्र०, ३०।
प्रे० १३। ल०, १४, ६८, ७७।
कल-कल ध्वनि। कल्याण कान्हड़ा और

विराग के मिश्रण से बना एक राग। हल्ला। शोर।

कोलाहल कलह= का०, १६४, २१६।

[सं०पु०] (हि.) संघर्ष का स्वर। दंगा फसाद के समय का शोर-गुल।

कोर = [सं०पु] (हि.) का० कु०, ७७। भ्र०, ४४। ल०, ७६। कोना। किनारा। धार। अस्त्र की धार या नोक। ताव, गर्व। द्वेष।

कोरक = [सं०पु०] (सं.) का० कु०, १२१। का०, ६३, ७३। कली। मुकुल। फूल या कली के बाहर का हरा भाग। कमल की नाल। कोरक नामक गन्ध द्रव्य।

कोरदार = [वि०] (हि.) भ्र०, ८१। नुकीला, चोख, चुभने वाला। सानदार।

कोरी = [सं०पु] (हि.) आं०, ३२। का० कु०, १६। मोटे कपड़े बुनने वाली एक जाति। हिन्दू जुलाहा। कोढ़ी। कोरदार। [वि०] अछूती। नवीन।

कोश = [सं०पु०] (सं.) का० कु०, ३६। अंड। अंडा। अंडकोश। डिबिया। फूल की कली। आवरण। गिलाफ। वेदान्त के अनुसार पांच सम्पुट जो शरीर में होते हैं।

कौड़ी के मोल= ल०, ७४।

[सं० पु०] (हि.) बहुत ही निकृष्ट, सस्ता। कम दाम का। गयागुजरा। (मुहावरा)।

कौड़ी के तीन = चि० १५६।

[सं०पु०] (हि.) बहुत सस्ता। तुच्छ होना। गया-गुजरा (मुहावरा)।

कौंध = का० १०१।

[सं० स्त्री०] (हि.) बिजली की चमक।

कौंदि = चि० १३२।

[सं० स्त्री०](सं.) कुन्द, पुष्प, सुरभि।

कौतुक = [सं० पु०][वि०] आं०, ३३। का० कु०, १८, ६१। का०, १६१। चि० १४२। (सं.) कुतूहल। आश्चर्य। अचम्भा। विनोद, दिल्लगी, प्रसन्नता। क्रीड़ा।

कौतुक वश = प्रे० १५।

[क्रि० वि०] (सं) कौतुक के कारण। तमाशे के कारण।

कौतुक-सा = का० ७०।

[वि०] (हि.) क्रीड़ा के समान।

कौतूहल = [सं० पु०] (हि.) आं० १६। भ्र० ७४। देखिए कुतूहल। कौतुक, तमाशा।

कौन = [सर्व०] (हि.) क०, १२, १५, १६, ३१, ७५। का० १३, १६, १७, २४, २६, ३७, ४५, ५०, ६७, ७७, ८४, ८६, ८७, ६० ६१, ६७, ६६, ११०, ११३, १२०, १२३, १२४, १२५, १२७, १२६, १६६, १७७, १८३, १८६, २०१, २१०, २१६, २३८, २४५, २६१, २६५। चि० ५। प्रे०, १, ६, ८, १२, १३, १८, २२ २३। भ्र०, ८, ६, १५। ल० १०, ११, ३४, ४७, ५७।

प्रश्नवाचक सर्वनाम जिसके द्वारा अभिप्रेत वस्तु या व्यक्ति पूछा जाता है। विभक्ति लगने पर कौन का रूप किस हो जाता है। किस प्रकार का।

कौन-सो = चि० १८१।

[वि०] (ब्र.भा.) किस प्रकार का। कैसा।

कौमुदी = का०, ८८। चि० २३। भ्र० ८५।

[सं० स्त्री०] (सं.) त्योत्स्ना। चांदनी। कार्तिकी पूर्णिमा। कुमुदिनी। कूई।

कौरवनाथ = का०, कु०, ११३

[सं० पु०](सं.) कौरवराज। दुर्योधन।

कौरवाधिप = चि० ६६।

[सं० पु०](सं.) कौरवों का राजा, दुर्योधन।

कौसल = का०, ६६, १२२। चि० ४३।

[सं० पु०] (सं) कुशलता। निपुणता। चतुराई। गुण। किसी कार्य को अच्छी तरह करने की क्षमता। कोशल देश का निवासी।

कौशिक = क०, ३०।

[सं० पु०](सं.) विश्वामित्र ।

कौशेय = का०, २९३ । प्रे०, ४ ।
[सं० पु०] (सं.) रेशमी वस्त्र ।

कौस्तुभ = चि०, १६२ ।
[सं० पु०] सागर-मंथन से निकला । एक रत्न जिसे
(सं.) विष्णु अपने हृदय स्थल पर धारण करते थे ।

क्या = आं०, ४० । क० १४, २२, २६, २७,
[सं० किम्] २८ । का०, ५८, ४०, ५१, ५२, ५६,
(हि.) ५७, ६३, ६६, ६७, ६९, ७५, ८४, ८५, ९२, ९४, १० , १०५, १०६, १२९, १३०, १३१, १३४, १४२, १४४, १४६, १५८, १६२, १७०, १८३, १९०, १९२, १९४, १९५, १९९ २०५, २१६, २१८, २२०, २३०, २३४ २३७, २४०, २४७, २४८, २५०, २५४, २६० । प्रे० २, ४, ५, १३, २०, २२ । म०, २, ६, ११, २३ । ल० १० ।
अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा का सूचक शब्द । कौन सी वस्तु या बात ?

क्यारी = आ०, १९ । का० कु०, १९ । का० १८२ ।
[सं० स्त्री०] चि०, ३९ । झ०, २६, ५२ । म० २०,
(हि.) खेत का एक विभाग, कियारी ।

क्यों = आ० ८ । क०, २६ । का९, ३८,
[क्रि०वि०स०किम्] ३९, ४०, ५२, ६५, ६७, ८५, ८६, १०४, १४६, १५०, १६१, १८६, १८९, २०१, २०५, २१० २१४, २१५, २१९, २३४, २३६, २४९, २५७, २७२, २८०, २८२, २८५ । प्रे०, ६ । म०, १, २१ । ल० १० ।
किस लिए, किस हेतु, किस बात की जिज्ञासा के कारण सूचक शब्द ।

क्योंकि = क०, ३१ । का०, १९८, २०७ । प्रे०
[क्रि० वि०] ६ । म० १, २१ ।
(हि.) कारण से ।

क्रंदन = आं०, १४ । का० कु०, २५ । का० १५,
[सं०पु०] १२१ १७१, १८५, १९५ १९८ ।
(सं.) ल० ६५, ७० ।
रोना, विलाप करना ।

क्रन्दन-ध्वनि = ल०, ४६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) विलाप का स्वर ।

क्रन्दन-मय = का०, १३ ।
[वि०] (सं.) विलाप के साथ ।

क्रतुमय-पुरुष = का०, १८३ ।
[सं० पु०] (सं.) यज्ञ पुरुष । विष्णु ।

क्रम = का०, कु०, १९, ८८ ।
[सं० पु०] डग भरने की क्रिया । तरतीब । सिल-
(सं.) सिला । उचित रूप से कार्य करने की प्रणाली ।

क्रमशः = का०, १४ ।
[क्रि० वि०] (सं.) क्रम से । धीरे-धीरे । सिलसिलेवार ।

क्रय-विक्रय = प्रे०, ७ ।
[सं० पु०] व्यापार-रोजगार । खरीदने-बेचने की
(सं.) क्रिया ।

क्रान्ति = चि०, १७० ।
[सं० स्त्री०] गति । चाल । उलट-फेर, परिवर्तन ।
(सं.) वह कल्पित वृत्त जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता नजर आता है ।

क्रिया = क०, ३१ । का०, २६२, २७२ ।
[सं० स्त्री०] कर्म । प्रयत्न । कोशिश । किसी कार्य
(सं.) का किया जाना ।

क्रिया तन्त्र = का०, २६६ ।
[सं० पु०] (सं.) काम में लगा हुआ व्यक्ति । क्रियाशील ।

क्रीड़त = चि०, ६३, ६९, ७३ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र.भा.) खेलते हुए ।

क्रीड़ा = आं०, १२, ५१, ७३ । का०, कु०,
[सं० स्त्री०] २२, ४६ । का०, २३, १११, १२२,
(सं.) १७८, १८५ । चि०, १५७ । झ०, ४४, ४६, ६० । प्रे०, ८, १०, १६ । ल०, २०, २२, ५४, ६० ।
खेल-कूद । आमोद-प्रमोद । ताल का एक भेद ।

क्रीड़ा-कुञ्ज-समान = प्रे०, २५ ।
[वि०] (हि.) क्रीड़ा करने के कुंज के समान ।

क्रीड़ा कूट = क०, ६ ।
[सं० पु] (सं.) खेल की कलाबाजी । दिलगी ।

क्रीड़ागार = का०, ७० ।
[सं० पु०] (सं.) आमोद-प्रमोद करने का स्थान ।

क्रीड़ा-नवकायें = का०, १५६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) तेज चलने वाली नौकाएँ ।

क्रीड़ा-पूर्ण = का०, कु०, ८६ ।
[वि०] (सं.) आमोद प्रमोद से भरा हुआ । चञ्चल ।

क्रीड़ा-वश = प्रे०, ५ ।
[क्रि० वि०] (सं.) खेल-कूद के कारण ।

क्रीड़ा-मय = का०, २६ ।
[वि०] (सं.) खेल की भावना से भरा हुआ । आमोद के साथ ।

क्रीड़ा शील = का०, कु०, ५४ ।
[वि०] (सं) खेलाड़ी । आमोदशील ।

क्रीड़ासर-बीच = का कु०, ५४ ।
[सं० पु०] (सं.) उस सरोवर के बीच जिसमें आमोद प्रमोद होता है ।

क्रीड़ा-सा = ल०, ३० ।
[वि०] (हि.) खेल के समान ।

क्रीड़ित = का०, ४६ ।
[वि०] (हि.) खेलते हुए ।

क्रुशता = का०, १४२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) पीलापन, क्षीणता ।

क्रुद्ध = का०, कु०, १०६ । का०, १५, १७ ।
[वि०] (सं.) क्रोध से पूर्ण । क्रोध से लाल ।

क्रूर = क०, १३, ३१ । का०, कु०, ६३, ६८ । का०, १३, २०० । म०, २, १५ ।
[वि०] (सं०) दूसरे को कष्ट पहुँचाने वाला, पर-पीड़क, निर्दय, निष्ठुर, नीच, बुरा, खराब ।

क्रूरता = का० कु०, २०६, ल० ६८, ७१, ७६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) दुष्टता, निर्दयता, निष्ठुरता, कठोरता ।

क्रोड़ = का०, २४३ ।
[सं० पु०] (सं.) गोद, अंक, गोदी । आलिंगन काल में दोनों भुजाओं के बीच का मध्य । वृक्ष का कोटर ।

क्रोध = का० कु०, ४७, १०५ । का०, १२६, १८५, १८६, १८६, । चि०, १३, ५३, १७६ । भ० ४३ । म०, २, ४ । ल०, ६५, ७७ ।
[सं० पु०] (सं) कोप, रोष, गुस्सा ।

क्रोध-मोह = का०, २२७ ।
[सं० पु०] (सं.) गुस्सा, और प्रेम ।

क्रोधानल ज्वलित = चि०, १०० ।
[वि०] (सं.) क्रोध की भीषण अग्नि से प्रज्वलित ।

क्रोधित = का०, ११, चि०, ४२ ।
[वि०] (सं.) कुपित, क्रुद्ध, नाराज ।

क्लान्त = का० कु०, १२ । का०, ५२, १४१, १६६ । भ०, २५, ५२, ६२ ।
[वि०] (सं.) श्रांत, थका हुआ, मुरझाया हुआ ।

क्लान्ति = भ०, ६२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) परिश्रम । थकावट ।

क्लेश = का० कु०, ७ ।
[सं० पु०] (सं.) दुःख, कष्ट, विपत्ति । लड़ाई, मारपीट, व्यथा, वेदना ।

क्ष

क्षण = आं०, ५८ । का० कु०, ६८, ६६, १०३ । का०, १६, १२८, १६२, १६२, १६५, १६१, १६६, १६७, २०१, २२०, २६६ । भ०, २६, ७८, । ल० २१, ४३, ४६, ७४, ७७ ।
[सं० पु०] (सं.) काल या समय का सबसे छोटा मान, पल का चौथाई भाग, काल, अवसर, मौका ।

क्षण-क्षण = का०, १५, १२३, २१२ । ल०, ६७, ६८, ७० ।
[सं० पु०] (सं.) प्रत्येक समय ।

क्षण-भंगुर = प्रे०, २३ । ल० ४८ ।
[वि०] (सं.) थोड़े समय में नष्ट होने वाला, नश्वर ।

(सं.) अनित्य। क्षण भर में विनाष्टि को प्राप्त करने वाला।

क्षणभर = का० कु० ७६, ११६। का० १४६, [सं० पु०] २५३। भ्रू० ४४। म० ३।
(हि०) थोड़े समय का सूचक शब्द, पलभर।

क्षणिक = का०, ५५, १२४, २६८। प्रे० २५।
[वि०] = क्षण-भंगुर, अनित्य, क्षण भर ठहने
(सं.) वाला।

क्षति = म० ४।
[सं० स्त्री०] (सं.) हानि, नुकसान, अपकार, अनिष्ट, क्षय।

क्षत्र = का० १६२।
[सं० पु०] बल, राष्ट्र, धन, शरीर, जल, क्षत्रिय।
(सं.) छतरी।

क्षत्रिय = म० ७, १०, १२।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'क्षत्री'।

क्षत्रिय-जाति = का० कु० ११२।
[सं० स्त्री०](सं.) क्षत्रिय वर्ग या विरादरी।

क्षत्रियोचित = का० कु० ११६।
[वि०] (सं.) क्षत्रियों के लिए उचित। वीरोचित।

क्षत्री = चि० ६५, ६७।
[सं० पु०] भारत के चार वर्णों में से एक। भारतीय
(ज.) जाति जिस पर देश की रक्षा और शासन का भार सौंपा गया था।

क्षत्रीन = चि० ६५।
[सं० पु०] (ब्र. भा.)क्षत्री शब्द का बहुवचन।

क्षमता = आं०, ४३। का० कु०, ११३। का० १५७,
[सं० स्त्री०] १७१, २६१।
(सं.) सामर्थ्य। योग्यता। किसी काम को करने की शक्ति।

क्षमहु = चि० ७४, ६१।
[क्रि०,सं०](ब्र.भा.) क्षमा करो। मुआफ।

क्षमा = क०, २१। का० कु०, ६६। का० २०७, २३८, २४०, २४२। चि०, ६८, ७४, ६६। म०, २१।
[सं० स्त्री०] चित्त की वह वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरों
(सं.) के द्वारा पहुँचाया हुआ कष्ट सह लेता है और उसके प्रतिकार या दण्ड की इच्छा नहीं करता। सहिष्णुता। पृथ्वी, दुर्गा।

क्षमा करना = का० कु० ११३।
[क्रि०] प्रतिकार की भावना न रखना। किसी
(सं) के अपराध को मुआफ करना।

क्षमा-निलय = का० २४६।
[सं० पु०] क्षमा का घर। क्षमा सदृश्य वास
(सं.) स्थल। क्षमाकर।

क्षय = का० १६३।
[सं० पु०] धीरे-धीरे घटना, नष्ट होना, ह्रास,
(सं.) अन्त, समाप्ति।

क्षात्रधर्म = चि० ४१।
[सं० पु०] क्षत्रिय जाति का धर्म जैसे—अध्ययन,
(सं.) दान, प्रजा-पालन और शासन।

क्षिति = का०, १५७।
[सं० स्त्री०] (सं.) पृथ्वी, वास स्थान। क्षय।

क्षितिज = आं०, ८। क०, ११, १५, ३१, ६७, [सं० पु०] ७०, ८१, ८२, १६५, १७१, १७१, (सं.) २४५। भ्रू०, ३३, ८४। ल०, १०, २७। वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिला हुआ दिखाई देता है। पृथ्वी से उत्पन्न, पेड़, वृक्षादि। मंगल ग्रह।

क्षितिज-पटी = आं०, २२। का०, १६३।
[सं० स्त्री०] क्षितिज रूपी पटिया। क्षितिज रूपी
(सं) परदा या वस्त्र।

क्षितिज-भाल = का०, १७५।
[सं० पु०] क्षितिज का ललाट या क्षितिज रूपी
(सं.) ललाट।

क्षितिज-बेल = ल०, १४।
[सं० स्त्री०] क्षितिज का तट या किनारा, वह स्थान
(सं.) जहाँ आकाश और पृथ्वी मिले हुए दिखाई देते हैं।

क्षीण = का० कु०, १२५। का०, १५, १५६, [वि०] १७५।
(सं.) दुबला पतला। क्षय शील, घटा हुआ, कृश।

क्षीण-गंध = ल०, ७५।
[सं० स्त्री०] (सं.) हलकी महक। मंद सुरभि।

क्षीणस्रोत = का० कु०, ५७।
[सं. पु०] पतली धारा, वह प्रवाह जो फैल कर
(सं.) न बहता हो।

क्षीर = भ०, ५।
[सं० पु०] दूध। द्रव या तरल पदार्थ, जल। पेड़ों
(सं.) का रस।

क्षुद्र = क०, २७। का०, ११, १६३, १६५,
[वि०] १६४। भ०, ५। म०, १२।
(सं.) कृपण। अधम, नीच, छोटा या थोड़ा, दरिद्र।

क्षुद्रता = ल०, ६६।
[सं० स्त्री] कृपणता, अधमता, नीचपन, छोटापन,
(सं.) दरिद्रता।

क्षुधित = म०, १२।
[वि०] (सं.) भूखा, क्षुधा से युक्त।

क्षुब्ध = का०, ५०, १८५, १८६, १८६, १६५।
[वि०] चि०, ६७। भ० ३७। म०, ११।
(सं.) जिसे क्षोभ हुआ हो, चंचल, व्याकुल।

क्षेत्र = का०, २६६।
[सं० पु०] खेत, भूमि का बड़ा या लम्बा चौड़ा
(सं) टुकड़ा, भूखण्ड, प्रदेश, स्थान, रेखाओं या सीमा आदि से घिरा स्थान। वह भू-भाग जो अपने भौगोलिक, प्राकृतिक या राजनीतिक कारणों से कोई विशेषता रखता हो, धार्मिक या पुराना स्थान, तीर्थ। वह स्थान जहाँ विद्यार्थियों को मुफ्त भोजन मिलता हो।

क्षेम = भ०, ६१।
[सं० पु०] संकट, हानि या नाश आदि से किसी
(सं.) वस्तु को बचाना, रक्षा, सुरक्षा, कुशल-मंगल, सुख, आनन्द, मुक्ति।

क्षोभ = का० कु०, ६२। का०, १८६, २१८।
[सं० स्त्री०] भ०, ३८। म० २०। ल० ७१, ७२। क्षुब्ध होने की अवस्था या भाव, (सं.) व्याकुलता, भय, रंज, शोक, क्रोध।

ख

खंजन = का० कु०, ६७।
[सं०पु०] खड़रिच, ममोल, शरत और शीतकाल
(सं.) में दिखाई देनेवाला एक पंछी।

खंड = का०, १६, ८७, १०४, १६६, २५७।
[सं० पु०] चि०, १६०। भ०, २२। ल०, ५६।
(स.) टुकड़ा, विभाग।

खडंहर = का०, १६०। प्रे०, २०।
[सं०पु०] टूटे या गिरे हुए मकान, भवन या
(हि.) प्रासाद का अवशिष्ट भाग।

खग = का० कु०, ६६। का०, २०६, २८४।
[सं० पु०] चि०, १। भ०, ३५। ल०, ३३।
(सं.) पक्षी, चिड़िया। ग्रह, तारे। बाण, तीर।

खग-कुल-सी = का० कु०, १५। का०, २८५। भ०,
[वि०] १६। ल०, १६।
(हि.) खगकुल के समान। पक्षिदल के समान।

खग-मृग = का०, २८४। प्रे०, २२, २४।
[सं० पु०] पक्षी और हरिन। जङ्गल के जानवर
(सं.) और पक्षी।

खग-वृन्द = का०, कु०, ६६।
[सं० पु०] (सं०) पक्षियों का समूह।

खग-रव = का०, २०६।
[सं० पु०] (सं.) पक्षियों की आवाज।

खटकना = का०, कु०, ११३।
[क्रि०] खलना, झगड़ा होना, बुरा मालूम
(हि.) होना। 'खट-खट' शब्द होना।

खटका = का०, २५।
[सं० पु०] आपत्ति, अनिष्ट, भय, डर, आशङ्का,
(हि.) चिन्ता, फिक्र।

खटाई = भ०, ४०।
[सं० स्त्री०] (हि०) खट्टापन।

खड्ग = का०, २०० चि०, ६४।
[सं० पु०] (सं.) एक प्रकार की तलवार।

खड्ग-लीला = ल०, ६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) तलवार की लड़ाई।

खड़-खड़ = का० कु०, २५ । म० १ ।
[सं० पु०] (हि.) खड़खड़ाहट की आवाज ।

खड़ा = आ०, ७२ । का०, १६ । का०, ४८, १११, १८२, १६२, १६७, २७६, २०७, २८८ । प्रे०, १३ म० ६ ।
[वि० पु०] (हि.) ऊपर की ओर सीधा उठा हुआ । टाँगे सीधे करके उनके सहारे शरीर सीधा किए हुए ।

खड़ी = आं०, ६४ । का०, १६, ५८, ५६, ६६, १०६, १६१, १६५, २०१, २२०, २३३, २८५ । चि०, ४७ । प्रे०, १८ । ल०, ५१, ६०, ६६, ७४ ।
[वि० स्त्री०] (हि.) खड़ा का स्त्रीलिंग ।

खड़ी होना = का०, ७२ ।
[क्रि०] (हि.) दे, खड़ा ।

खड़े = आं०, १६ । क०, १४ । का० कु०, ६१ । का, १८२, २१५, २२५ । चि०, ५३, ७१ । म०, ८ २० । ल० ५६ ।
[क्रि०] (हि.) खड़ा का बहुवचन ।

खड्ड = का०, २५७ ।
[सं० पु०] (सं.) गड्ढा ।

खरसान = चि०, ३ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) हथियार तेज करने की एक प्रकार की सान । तेज सान ।

खराद = भ्रु०, ७३ ।
[सं० स्त्री०] (फा०) लकड़ी या धातु की सतह को सम एवं चिकनी करने का औजार । खरादने का काम । खरादने का भाव ।

खरीदना = प्रे०, १६ ।
[क्रि०] (फा०) क्रय करना । मोल लेना ।

खरी = का० कु०, ११ । चि०, १३६, १५१ । भ्रु०, ८१ ।
[वि०, सं०] (सं.) अच्छी, बढ़िया, विशुद्ध । तेल निकालने के बाद बची हुई तेलहन की सिट्ठी ।

खरे = चि०, १७३ ।
[वि०] (सं.) खरा का बहुवचन । अच्छे, बढ़िया । ज्ञानी । स्पष्टवादी ।

खल = का०,कु०,१२६ । चि०,६६ । प्रे०, ५ ।
[वि०] (सं.) क्रूर, नीच, अधम, दुष्ट ।

खसि-सी = चि०, २३ ।
[वि०] (अ.) बकरे के समान ।

खा = क०, १८ । चि०, १४ ।
[क्रि०] (हि.) भोजन करके । भोग कर ।

खाकर = का०, ३६ ।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) भोजन करके । भोग कर ।

खाई = का०, १८६, २५७ । प्रे०, ४ ।
[सं० स्त्री०] (सं०) खन्दक, किले आदि के चारो ओर रक्षार्थ बनाई गई नहर ।

खाट = का०, कु०, ४५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) चारपाई ।

खाते-खाते = का०, १११ ।
[क्रि० वि०] (हि.) भोजन करते-करते ।

खान = चि०, २२, ६६, १८७ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) आकर, घर, वह स्थान जहाँ से धातु या मूल्यवान पत्थर खोद कर निकाले जाते हैं । उत्पत्ति का मूल स्थान । उद्भवस्थल ।

खान-खाना = म०, १८, २१, २३, २४ ।
[वि०] (फा०) प्रतिष्ठित ।

खारा = ल०, १५ ।
[वि०] (हि.) अरुचिकर, अप्रिय । नोनछार ।

खाली = आं, २८, ६६ । क०, १६ । क०, कु० ४५ । ल०, १४, ४८ ।
[वि० स्त्री०] (अ.) रिक्त, रीता । जो भरा न हो । व्यर्थ, फिजूल, निष्फल । शून्य ।

खास = का०, कु०, १०८ ।
[वि०] (अ०) मुख्य, प्रधान, विशेष ।

खिचवर = आं०, ५२ ।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) दे० खिचना ।

खिंचना = आं०, १५, ३८, ४१ । का० कु०, १० । का०, १८०, प्रे०, १७ ।

[क्रि० अ०] (हि.) आकर्षित होना। घसीटना। प्रवृत्त होना। अनुराग या सम्बन्ध कम होना।

खिंचा = का०, २२२।

[क्रि०] (हि.) दे० खिचे।

खिचे = का० कु०, ६२, २१, २६। ल०, ४६, ७३।

[क्रि०] (हि.) खिचना का भूतकालिक क्रिया।

खिजलाना = का० कु०, १८।

[क्रि०] (हि.) झुझलाना, चिढ़ना।

खिड़की = झ०, ५२, ५५।

[सं० स्त्री०] (हि.) वातायन, छोटा द्वार, झरोखा। मकान में हवा आने के लिए बना हुआ छोटा दरवाजा।

खिन्न = का०, २०६।

[वि०] (सं.) उदासीन। चिन्तित।

खिल = का०, १६८। झ०, ५४। ल०, २५, २७, ६०।

[पूर्व० क्रि०] (हि.) दे० खिलना।

खिल-खिलकर= का० कु०, ५५। प्रे०, २।

[पूर्व०क्रि०] (हि.) दे० खिलना।

खिल-खिलाकर= ल०, ११।

[पूर्व०क्रि०] (हि.) खिल खिल शब्द कर जोर से हँसना।

खिल-खिलाती =का०, ३६।

[पूर्व०क्रि०] (हि.) = दे० खिलखिलाकर।

खिलत = चि०, ३६, ५६।

[क्रि०] ब्र०भा०) खिलता है।

खिलता = आं०, ३१, ४४। का०, १७८, २२४।

[क्रि० अ०] (हि.) दे० खिलना।

खिलती = का०, १५६, २३५। प्रे०, ६, ८।

[क्रि० अ०] ल०, ३२।

(हि.) दे० खिलना।

खिलते = का०, ११८, १६३।

[क्रि० अ०] (हि.) दे० खिलना।

खिलना = आं०, ४४। क०, ८, का० कु०, १६, ६७, ६०। का०, ४६, २६५। चि०, ११, १४७, १७७, १८७। झ०, ५४,। प्रे०, १, २, ८, १०, १३। म०, १६। ल०, ४३, ४६।

[क्रि० अ०] (हि.) विकसना, प्रसन्न होना। खुलना। कली का फूटना।

खिलवाड़ = का० कु०, १०। का०, १६५।

[सं०पु०] (हि.) हंसी-खेल, ठट्ठा, क्रीड़ा।

खिला = का०, ८८, ६४, १५८, २४६,।

[क्रि०] (हि.) फूला, कली की पंखुड़ियों का खिलना। भला लगा, अच्छा लगा। विकसित हुआ, प्रसन्न हुआ।

खिलाती = का०, १३५।

[क्रि०] (हि.) भोजन कराती। खेलाना।

खिलाना = का, ०कु ०, ८। झ०, ५८।

[क्रि०] (हि) भोजन कराना। प्रमुदित कराना। खेलाना।

खिलि = चि०, १५।

[पू०क्रि०] (ब्र.भा.) खिलकर।

खिली = का० कु०, १३, ३४। का०, ३५।

[क्रि०] (हि.) चि०, ६७। झ०, ८४। प्रे०, ८। ल०, ६२।

खिला का स्त्रीलिंग।

खिले = का०, ६६, १३०, २१६।

[क्रि०] (हि.) खिला का बहुवचन।

खिलेगा = का०, १३३।

[क्रि०] (हि.) खिला की भविष्यत् क्रिया।

खिलेगी = ल०, ४०।

[क्रि०] (हि) खिला का भविष्यत् कालिक क्रिया।

खिलेरहे = चि०, १८०।

[क्रि०] (हि.) खिले थे।

खिलौगे = चि०, १७५।

(ब्र.भा.) दे० खिलेगा।

खिसक कर= म०, १७।

[पूर्व०क्रि०] (हि.) सरक कर।

खिसक गई = म०, १३।

[क्रि०] (अनु.) सरक गयी।

खिसकना = आं०, ४७। का० कु०, ६४।

[क्रि०] (अन.) सरकना।
खीच = म०, ६।
[सं० स्त्री०] हि.) आकर्षण, खिचाव।
खीचती = का०, २२८।
[क्रि०] (हि.) दे० खिचती।
खीचते = का०, ८६।
[क्रि०] (हि.) दे खिचते।
खीचना = का०, ६६, १२०। ल०, २७।
[क्रि०] (हि.) दे० खिचता।
खोचरहा = का०, २२७।
[क्रि०] (हि.) दे० खिच रहा।
खींचरही = का०, २०५।
[क्रि०] (हि.) दे० खिच रही।
खींचा = का०, १०६।
[क्रि०] (हि.) खिचना का भूतकाल।
खींचि = चि०, ६४, १५७।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) खींच कर।
खीझना = चि०, १५५।
[क्रि० अ०] (हि.) खीजना, झुझलाना।
खींझरहा = का०, २२७।
[क्रि०] (हि.) झुझला रहा।
खीझलाना = का०, ८३।
[क्रि० अ०] हि०.) दे० खींझाना।
खील = का०, ६१। ल०, १५।
[सं० स्त्री०] (हि.) कील। काँटा।
खुट्टी = का०, १६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) कुट्टी। खूँटी
खुदवाना = का० कु०, १०८। प्रे०, २०।
[क्रि०] (हि.) खोदाई कराना।
खुल = का०, १३३, १८१, १८४।
[क्रि०] (हि.) दे० खुलना।
खुलता था = का०, २३३।
[क्रि०] (हि.) खुलना का भूतकालिक रूप।
खुलते = का०, ८४, ११६।
[क्रि०] (हि.) खुलना की वर्त्तमान काल की क्रिया।
खुलना = आं, ३७, ६८। का०, ४६, ५७, १८४,
[क्रि० अ०] २६३। ल०, २५, ३२।
(हि.) गुप्त बात का प्रकट होना, आवरण हटना।
खुलनेवाली = का०, १८०।
[क्रि०] (हि.) जो खुल सके।
खुला = का०, ८७, १७२, १७६, २२१।
[क्रि०] (हि.) खुलना की भूतकालिक क्रिया।
खुली = का०, ३५, ८७, १८६। चि०, १८१।
[क्रि०] भ्रु०; १६, ५२। प्रे०, १०। म०,
(हि.) १०। ल०, ४५, ६१।
खुलने की भूतकालिक क्रिया। (खुला स्त्रीलिंग)।
खुले = का०, १२५, २१८, २४७। का० कु०,
[क्रि०] ६२। प्रे०, ६।
(हि.) खुला का बहुवचन।
खुले-किवाड़ सदृश = का० कु०, ६०।
[वि०] खुले हुए दरवाजे के समान। बिना
(हि.) अवरोध के। बिना आवरण के।
खुसरु = ल०, ७८।
[सं० पु०] (फा.) दिल्ली का एक शासक।
खुसामदी = चि० ७७६।
[वि०] (फा.) चाटुकार।
खूब = का० कु० ४६। भ्रु० ४६, ५६।
[वि०] म० २।
(फा.) बहुत ज्यादा।
खेइ = चि० १८७।
[सं० स्त्री०](देश०) झाड़-झंखाड़। झड़बेरी की सूखी झाड़ी।
खेकर = प्रे० १०।
[क्रि०] काटकर, गुजार कर। नाव चला कर।
खेत = क० ८। का० ६। प्रे० ७।
[सं० पु०] वह भूमि जिसमें अन्न उपजाया जाता
(हि.) है। समर-भूमि।
खेती = का० १८१।
[सं० स्त्री०](हि.) खेत में अन्न उत्पादन का काम।
खेद = का० कु० ८८। का० १४३, १६
[स० पु०] भ्रु० ६३।
(सं.) दुःख, रंज, व्यथा।

खेना = आं० ४०, ४२। का० कु०, १०, ११२। [क्रि०] का०, ५७, ८१, ८३, १३५, १६४, (हि.) १६५, २२६, २३४, २६०। चि०, १, ६६, १४२। भ्रु०, ३२, ८३, ८६, ६०। प्रे०, ७, ८, १०। ल०, ३८। नाव चलाना। काटना, गुजारना।

खेल = आं०, ७२। का०, २२६। [सं० पु०] (हि.) क्रीड़ा।

खेल-खेल = प्रे०, १०। ल०, ६। [पूर्व० क्रि०] (हि.) क्रीड़ा में भाग लेकर।

खेलई = चि०, ४६। [क्रि०](ब्र० भा०.)खेलती है।

खेलति = चि०, १। [क्रि०](ब्र. भा.) खेल करती है।

खेलना = का० कु०, ७, १०। का०, २७, ४८, ५७, ७८, ८१। चि०, ६३,। भ्रु०, ३२, ५५। प्रे०, ७। ल०, २३, ४४, ५३। [क्रि०] (हि.) खेल करना। क्रीड़ा करना।

खेलने = का० १५०, १६६, २२२। [क्रि०] (हि०) क्रीड़ा करने।

खेलरहा = का०, १७०। [क्रि०)(हि.) खेलना का वर्त्तमान काल।

खेल रही थी = का० २०८। [क्रि०] (हि.) क्रीड़ा कर रही थी।

खेला = का०, १६४। [क्रि०] (हि.) खेलवाड़ किया।

खेलि = चि० ६। [पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) खेल कर।

खेलिहै = चि०। १४१। [क्रि०] (ब्र. भा.) खेलेगा।

खेलो = का०, १६५, १६६। [क्रि०] (हि.) क्रीड़ा करो।

खेल्यो = चि०, १०७। [क्रि०] (ब्र. भा.)खेला।

खेवा = ल०, ५७। [सं० पु०] (हि.) उतराई। बोझ लदी नाव की खेय।

खेवैया = चि० १८२। [सं० पु०](देश०) नौका को पार लगाने वाला।

खोखली = का०, १५८। [वि० स्त्री](हि.) पोली। जिसके भीतर कुछ भी न हो।

खोखलेपन = का०, २२७। [सं०] (हि.) पोलापन। निस्सारता।

खोगया = का०, २४१। [क्रि०] (हि.) नष्ट किया। गवाया। भूल गया।

खोंट = भ्रु०, ७४। [सं०स्त्री०] (हि.) दोष, बुराई।

खोज = का० कु०, १०। का०, १४, ८७। [सं० स्त्री०] १११, ११४, १३६, १७५, २४३, (हि.) चि०, ३५, ४६, ६०। भ्रु०, ३१, ३३। प्रे० १४। अनुसंधान, तलाश।

खोजती = का०, २८१। [क्रि०] (हि.) ढूढ़ती।

खोजता = का०, १३१, १५३, १६३, २२७, २३०। [क्रि०](हि.) ढूढ़ता।

खोजते = का०, १६१। [क्रि०] (हि.)ढूढ़ते।

खोजनते = चि०, ६४। [क्रि० वि०](ब्र.भा.)खोजने से।

खोजना = क०, १८, २६। का०, ४०, ५१, [क्रि०] ५६। चि०, १६७, १६८, १८३, १८६। (हि.) भ्रु०, २५, ३८। तलाश करना, ढूढ़ना।

खोजरहा = का०, ५८, २३०। [क्रि०] (हि.) ढूढ़ रहा।

खोजरहे थे = का०, २१३। [क्रि०] (हि.) ढूढ़ रहे थे।

खोजूँ = का०, ६१। [क्रि०] (हि.) ढूढ़ूँ।

खोदना = का०, कु०, १०८।

[क्रि०] उत्तोजित करना। उकसाना, उभाड़ना।
(हि.) खनन करना।

खोदूं = का०, २१८।
[क्रि०] (हि) गवाँ दूँ।

खोती हूँ = का०, २३७।
[क्रि०] (हि.) गवां देती हूँ।

खोना = का०, कु०, ६, ६१। का०, ८६।
[क्रि०] (हि). गँवाना, नष्टकरना, भूलना। छोड़ देना।

खोया = का०, १४।
[क्रि०] (हि.) गँवाया।

खोये = का०, २१४।
[क्रि०] (हि.) गँवाये।

खोल = का०, कु०, ६२, १०५। का०, ६६,
[पूर्व०क्रि०] ११७, १६६, २५२, २५३।
(हि.) उघार कर। अवगुण्ठन मुक्त करके।

खोलकर = का०, कु०, ५१, ८४। का०, २६१,
[पूर्व०क्रि०] भ०, ३७। प्रे०, ६, १०। ल०
(हि.) ५१, ६८।
उघारकर। अवगुंठन हटाकर।

खोलना = आं, ६५। का० ३७१, ६३, ७०, १७१,
[क्रि०] ४०। चि०, ५७, ७०, १५३, १६७,
(हि.) १८१। भ०, २१। ल० १७।
उखाड़ना, अवरोध हटाना, अनावरण करना। आरम्भ करना।

खोली = का०, १३२।
[क्रि०] (हि.) उघारी।

खोले = का०, १३४।
[क्रि०] (हि.) उघारे।

खोलो = का०, २१३।
[क्रि०] (हि.) उघारो।

खोलो-खोलो= का० ६८।
[क्रि०] (हि.) उघारो, उघारो। मुक्त करो, मुक्त करो।

खौलता = का० १३६।
[क्रि०अ०] (हि.) उबलता।

खौलना = का० कु०, ८४।
[क्रि०अ०] (हि.) उबलना।

ख्याति = चि० १५५।
[वि०] (ब्र.भा.) प्रसिद्धि, मशहूरी।

ग

गंगा = चि०, ७४।
[सं० पु०] भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध तथा पवित्र
(सं.) नदी।

गंगा-यमुना = प्रे०, २२।
[सं० पु०] भारत की दो प्रसिद्ध तथा पवित्र
(सं.) नदियाँ।

गंगासागर = का० कु०, ७४।
[सं. पु०] वह पवित्र तीर्थ जहाँ गंगा समुद्र से
(सं.) मिली है।

गंतव्य = का०, १७०।
[वि०] (सं.) निश्चित। अभीष्ट। निर्दिष्ट।

गंध = का०, ३२, ६५, ६६, ८८, १७८,
[सं० स्त्री०] १८१, २३३, २४६, २६२, २६३,
(सं.) २६४। चि०, १, २, १४६। भ०,
५६। ल०, २७, ६२।
बास। महक। सूक्ष्म अंश।

गंधप्रेम = म०, २४।
[सं. पु०](सं.) गन्ध का प्रेम। सौरभ से प्रीति।

गंधमय = चि०, ४६। भ०, ६४।
[वि०] (हि.) गन्ध से भरी हुई।

गंधवाह = का०, २६१। चि०, १३२।
[सं० पु०] (सं.) वायु। हवा।

गंधर्वों = का०, ५१, ५६।
[सं० पु०] (हि.) देवताओं में एक विशेष कोटि के लोग जो गाने में निपुण होते हैं। गानेवालों की जाति के लोग।

गंध-वितरण = का० कु०, ६७।
[सं० पु०] (सं.) गन्ध का बटवारा।

गंभीर = का कु०, २१, ७५। का०, २६, ३५,
[वि०] ५६, ८६, ११४, २४५, २७७, २६०।
(सं.) चि०, ११, २३, १५७, १६०, १६६।
प्रे०, १२, २५। म०, २, १८।

गहरा। घना। गूढ़। जटिल। जिसका अर्थ लगाना कठिन हो। शान्त। धीर।

गंभीरता = म०, ६।
[सं० स्त्री०] शान्ति। धैर्य। जटिलता। गहनता।
(हि.) अर्थ लगाने की कठिनाई।

गंभीराशय = चि०, १५८।
[सं० पु०] गहन अभिप्राय। कठिन तात्पर्य। गूढ़
(सं.), विवेचन।

गई = आं०, ६। का०, ६, ४, ११७, १३२,
[क्रि०] १४३, १७०, १७८, १७६, २३३।
(हि.) प्रे०, ४, २१। म०, २०।
'जाना' क्रिया का भूतकालिक स्त्रीलिंग रूप।

गगन = आंसू ३२, ४४, ६०, ६८। का कु०,
[सं० पु०] ३६, ७४, ६५। का०, १३, ३६, ६३,
(सं.) १७१, १७५, १८०, १८५, २३४,
२४५, २८४, २६०। चि०, ७१,
१०७, १५०, १६०। झ०, ३८, ७१।
प्रे०, १५। ल०, २१, ४८, ६३।
आकाश। नभ।

गगन-चुम्बिनी = का०, ३०।
[वि०] (हि.) बहुत ऊँची। आकाश को चूमनेवाली।

गगन-बीच = का० कु०, ४६। प्रे०, ६।
[वि०] (हि.) आकाश के बीच।

गगन-शोक = का०, १७०।
[सं० पु०] (सं.) वह शोक जो पूरे सृष्टि में व्याप्त हो।

गगन-सा = का० कु०, १५।
[वि०] (हि.) आकाश के समान।

गगन-हृदय = चि०, १६२।
[सं० पु०] (सं.) नभ के बीच, आकाश-सा विशाल हृदय।

गज = का० कु०, ५२, ६४।
[सं० पु०] (सं.) हाथी। आठ की संख्या सूचक शब्द। ३६
(हि.) इंच की एक नाप जिसे 'गज' कहते हैं।

गजराज-गण्ड = का०, २५८।
[सं० पु०] (सं.) हाथी का कपोल या कनपटी।

गजरे-सी = म०, २०।
[वि०] (हि.) फूलों की बड़ी मालाओं के समान।

गज्जन = चि०, २५।
[सं० स्त्री०] (ब्र भा.) गर्जन। घोर शब्द।

गठन = चि०, ७०।
[सं. स्त्री०] (हि.) बनावट।

गाड़ना = क०, १७। का०, २६८। झ०, ५४।
[क्रि०] चुभना। दर्द करना। दुखना। दफन
(हि.) करना। खुरखुरा लगना।

गढ़न = चि०, ५६।
[सं०स्त्री०] (हि.) बनावटी। गठन, गढ़ने की क्रिया या भाव।

गण = का०, २७८। झ० ५६। म० ७।
[सं० पु०] समूह। शिव के पारिषद। दूत। सेवक।
(सं) अनुचर। लघु और गुरु के विचार से तीन-तीन वर्णों का समूह।

गणना = का०, ३८।
[सं० स्त्री०] गिनना। आकड़ा। लेखा। हिसाब
(सं.) लगाना।

गणहिं = चि०, २६।
(ब्र० भा०) गण को।

गणेश = चि०, ७२।
[सं० पु०] गणों के ईश। हिन्दुओं के प्रधान
(हि.) देवता जिसका शिर हाथी का और शेष शरीर मनुष्य का है।

गत = का०, कु०, ६६। का०, १५७, १६।
[वि०, सं.] रहित। हीन। बीता हुआ। सम्बन्धी-
(सं.) जैसे जातिगत, भावगत। नाचने की एक मुद्रा। संगीत की एक कला।

गत-प्रत्यागत = ल०, ६६।
[वि०] (सं.) गया और लौट कर आया हुआ।

गति = का०, कु०, ७, ५५। का०, ११, १७,
[सं० स्त्री०] ८१, ११५, १५७, १६०, १६८, १६३,
(सं.) २०६, २२४, २६७। चि०, १७६।
झ०, २७, ५५, म०, १६। ल० ७१।
चाल। गमन। कंपन। हरकत।
अवस्था। दशा। प्रवेश। लीला।
माया। मोक्ष।

गतिमय = का०, १५७, १६१।
[वि०] (सं) चलती हुई। हिलती हुई। गतिशील।
गतिविधि = का०, २७७। ल०, २६।
[सं० स्त्री०] (सं) हाल चाल। दशा। हालत।
गतिविधि-निर्धारक = का०, कु०, ६४।
[वि०] (हि.) दशा या हालत को ठीक करने वाला। स्थिति-निर्धारक।
गतिशाली = का० १४४।
[वि० , (हि.) देखिए गतिशील।
गतिशील = का०, २५३।
[वि०] जिसमें गति हो। उन्नतिशील। चलने-
(सं०) फिरने वाला।
गतिहीन = का०, १४५।
[वि०] (सं) स्थिर अटल, जिसमें गति न हो।
गदगद = का०, कु० ६३। का० ६४, २१८,
[वि०] २८६। चि०, ५०, ५६। झ०, ४५। प्रे०, ४, ७।
हर्ष। प्रेम। आनन्द।
गदगद-हृदय-निःसृता = का०, कु०, ३।
[वि०] (सं.) प्रसन्नता प्रभूत।
गदा = का०, कु०, १०६।
[सं० स्त्री०] एक प्राचीन अस्त्र जिसमें एक डण्डे में
(हि.) बड़ा लट्टू लगा रहता है।
गर्भिणी = क०, ३०।
[वि.] (हि.) गर्भिणी, गाभिन।
गमन = चि०, ४०, ५८।
[क्रि०] (सं.) जाना। रवाना होना। प्रस्थान करना।
गया = आ०, ३२। का०, ८, ९, ११, १३६,
[क्रि०] (हि.) १४४, १५०, १६२, १७८, १७६, २१२, २५२, २८१, २८३। प्रे०, ४, ६, १८, २१। म०, ५, ८, १०, २१, २४।
'जाना' क्रिया का भूतकालिक एक वचन, पुलिङ्ग रूप।
गर = चि०, १५१।
[सं० पु०] रोग, बीमारी। (हि०) गला, (सं.) गरदन। (फा०) कारीगर बनाने वाले।
गरज = चि०, १५७, २५८।
[सं० पु०] बादल या सिंह की आवाज (फा०)
(सं.) मतलब, प्रयोजन, इच्छा, स्वार्थ।
गरजन = चि०, १५८।
[सं०पु०](ब्र. भा.) बादल, सिंह या वीर पुरुषों की आवाज।
गरजना = आ०, ७। का०, कु०, १०५। का०, १४, ११६। चि०, १५८। प्रे०, २५।
[क्रि०] सिंह या बादल की तरह आवाज करना।
(हि.)
गरमें = चि०, ७१।
(ब्र. भा) गले में।
गरल = आ०, ४२। का०, ५, १६, १२१, १२४, १६३। चि०, ७२। झ०, ८४।
[सं० पु०] ल०, ४३।
(सं.) विष। जहर।
गरल-पात्र = का०, १६३।
[सं० पु०] (सं) जहर रखने का बर्तन।
गरिमा = झ०, ४२। ल०, ३१, ६६, ७६।
[सं० स्त्री०] गुरुत्व, महत्व, गौरव। आठ सिद्धियों
(सं.) में से एक। घमण्ड।
गरुड़ = चि०, ६५।
[सं० पु०] (सं.) विष्णु का वाहन। एक प्रकार का पक्षी।
गरे = चि०, १।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) गले, नटई।
गर्जन = आ०, १५। का० कु०, ५७, १०७।
[सं० पु०] चि०, १५३।
(सं.) दे० गरजन।
गर्त = क०, २५। का० कु०, ६४, १२०।
[सं०पु०] (हि.) गड्ढा, दरार, नरक।
गर्दन = का० कु०, ७३।
[सं०स्त्री०](फा.) गला।
गर्भ = का०, ४६, १४३।
[सं० पु०](सं.) पेट। गर्भाशय। पेट के अन्दर का बच्चा।
गर्भ-सा = का०, १४२।
[वि०] (हि.) गर्भ के समान।

गर्म = का० कु०, ८५। झ०, ८४।
[वि०] (हि.) ताप युक्त। गरम।
गर्व = क०, १०। का० कु०, ४४, ८५, १०४।
[स० पु०] का०, १४३। झ० ७५। म०, १६।
(सं.) अहंकार। घमण्ड। अपने गौरव का अनुभव करना।
गर्व रथ = का०, २५।
[स० पु०] (सं.) गर्व रूपी रथ।
गर्व-सी = ल०, ७३।
[वि०] (हि०) गर्व के समान
गर्व-स्फीत = का० कु०, ८१।
[सं० पु०] (सं.) बढ़ा हुआ गर्व। अधिक घमंड।
गर्विता = चि०, ७१।
[वि०] गर्व करने वाली। वह नायिका जिसे
(सं.) अपने रूप गुण आदि पर अहंकार हो।
गर्वीले = का०, २०१।
[वि०] (हि.) गर्व करने वाले।
गर्वोन्नत = का०, २६६।
[वि०] अहंकार में चूर। गर्व में अपने को ऊँचा
(सं.) समझने वाला।
गर्व्वी-मानव= प्रे०, २५।
[सं० पु०] (हि०) अहंकारी मनुष्य।
गल = का०, ४८, १८०, १६०, २४७, २५४।
[पु० सं०] चि०, ५६, ७०।
(सं) गला, कण्ठ। गलना क्रिया का धातु।
गलते = का०, १८१।
[क्रि०] (हि.) पिघलते।
गलबांही-डाल= आ०, २६। झरना०, ३२।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) गले में बाहीं डालकर।
गल बीच = का० कु, १०३ चि०, ५५।
[सं०पु०] (हि.) गले के बीच।
गल मंह = चि०, ७१, ७५।
[सं०पु०](ब्र.भा.) गले में।
गला = का० कु०, ३६। झ०, ३४, ५१।
[स०पु०] (हि.) कंठ। गरदन।
गली = का०, २४३।
[सं०स्त्री०] (हि.) सकरा मार्ग। पिघली [क्रि०] (हि.)।
गले = आ०, १८। का०, ११, ७३, १३०।
(हि.) चि०, १, १६२। झ०, ३७, ५१, ७४। प्रे० २, २०, २६।
गला का बहुवचन।
गल्प-कथा = का० कु०, ४७।
[सं०स्त्री०] (सं.) झूठी कहानी
गवांई = चि०, १८३।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) खोकर। नष्ट करके।
गहत = चि०, ६१, १५४, १६०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्राप्त करता है। लेता है।
गहन = आ, ६०। का०, ३२, १११, १५७।
[वि०] चि०, १६१। ल०, ५७।
(हि.) कठिन। घनी, दुर्गम। अथाह। लेना, पकड़ना।
गहन-सी = का०, ६६।
[वि० हि०] गूढ़। कठिन। आसानी से समझ में न आनेवाली।
गहने = का०, २५८।
[सं० पु०] (हि.) अलंकार। आभूषण।
गहराई = का०, ३२, १०५। ल०, ४३।
[सं० स्त्री०] (हि.) गहनता। गम्भीरता।
गहरी = का० कु, ३६। का०, ५, ७०, १०६, २२६। झ०, १५। प्रे०, ११, १३।
[वि०]
(हि.) ल०, १३, १४।
गम्भीर। अथाह। बहुत नीचे तक।
गहरे-गहरे = का०, २८६।
[क्रि० वि०] (हि.) बहुत नीचे। गहराई में।
गहहु = चि०, ८६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्राप्त करो। पकड़ो।
गहै = चि०, ४१, १०३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्राप्त करें।
गहो = चि०, १७२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्राप्त करो।
गहौ = चि०, १५२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दे० 'गहो'।

गह्वर = का०, ८८।
[सं०पु०] गर्त्त, गुहा, खोह, गुप्त स्थान। पाखंड।
(सं.) रोना। जल।

गांछि = चि०, ७१।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) जोड़कर, गूंथ कर।

गाँठ = का०, ७७।
[सं० पु०] (हि.) बन्धन, गिरह।

गांधार = का०, ४६। म०, १३, १५।
[स० पु०] कान्धार देश। गंध-रस नामक सुगंधित द्रव्य।

गाइ-गाइ = चि०, ६७।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) गा-गाकर।

गागर = ल०, ११।
[सं० स्त्री०] (हि.) गगरी। पानी भरने का पात्र। घड़ा।

गागरि = ल०, १६।
[सं० स्त्री०] (हि.) छोटा घड़ा। गगरी।

गात = का० कु०, ११२। का०, ५३, १५१। चि०, ३, १७६। झ०, ५८। ल०, २४, ३७, ४५।
[सं० पु०] (हि.) अंग, शरीर।

गाता = का०, ३४, ४५, ६८, १५०, १६५, २२५, २६२। झ०, ७०। म० १७।
[क्रि०] (हि.) 'गाना' क्रिया का सामान्य वर्तमान काल का रूप।

गाथा = का० कु०, ६३। का०, ३७, १७६। प्रे०, ५, ६। ल०, ११, १५, २६, ३२, ४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) कथा। वृतान्त। प्राकृत का एक छन्द।

गान = का० कु०, १६। का०, २६, २६, १२७, १५०, १६७, १६८। चि०, १४६। झ०, १७, ३५, ६८।
[सं० पु०] (हि.) गाने की क्रिया।

गाना = ल०, १५, ४६।
[क्रि०,] (हि.) गाने की क्रिया करना।

गानों = का०, २७, १४५, २७८।
[सं० पु०] (हि.) गीतों।

गाय = क०, १८, १६, २५। प्रे०, ७।
[सं० स्त्री०] सींग वाला सीधा पशु जो दूध देता हो। गऊ, गैया।

गाल = का० कु०, ४६, ११५।
[सं० पु०] (हि.) कपोल।

गालव = चि०, ५८।
[सं० पु०] (सं.) एक ऋषि। एक वैयाकरण। एक स्मृतिकार। एक प्रकार का वृक्ष।

गालियाँ = चि०, १८०।
[सं० स्त्री०] (हि.) ऐसी बातें जो दूसरों को बुरी लगें।

गावत = चि०, २६, १६७।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा) गाते हुए।

गावन = चि०, ६२, १५३। १२६।
[क्रि० वि०] (ब्र. भा.) गाने के लिए।

गिद्धनी-गन = चि०, ५१।
[सं० पु०] (ब्र. भा) गिद्धनियों का समूह।

गिनती = का०, २६८। म०, ३।
[सं०स्त्री०] (हि.) गणना।

गिनना = आ०, ३६। का०, १७६, २४१।
[क्रि०] चि०, २६, ६२, प्रे०, ११। म०, २४।
(हि.) ल०, ३, ६।
गणना करना।

गिरजा = का० कु०, ६। चि०, १८६।
[सं० पु०] (हि.) ईसाइयों का प्रार्थना मन्दिर। पार्वती।

गिरना = का० कु०, ५२। आँसू १२, ४६, ७७।
[क्रि०] क०, २६। का०, १५, १६, १७, ८२, ६४, १६४, १७१, १७५, २०२, २५१, २५७, २६६, २८१, २८४, २६२। चि०, १, ४२, ५०, ६४, १६६। झ०, १५, ३५, ३८। प्रे०, ३, १४, १७। म०, ७। ल०, ६, ११, २५, ३४, ३७, ८०।
(हि.) ऊपर से नीचे की ओर आना। पतन होना।

गिरवाती = का०, २६७।
[क्रि० (हि.) पतन की ओर ले जाती।

गिरा = का० कु०, ५२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) वाणी । जीभ । सरस्वती ।
गिरि = का०, २, १७, २५७, २८१, २८४ ।
[सं० पु०] चि०, १, ४२, ६४, १६६ । झ०, १५,
(सं.) ३५ । प्रे०, १४, १७ ।
पहाड़, परिव्राजकों की उपाधि ।
गिरि-अंचल = का०, २८१ ।
[सं० पु०] (सं.) पहाड़ी के मध्य में । तराई ।
गिरि-कंदर = म०, १६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) पहाड़ की गुफा ।
गिरि-कानन = चि०, १५६, प्रे०, ११ ।
[सं० पु०] (सं.) पर्वत और जंगल या उपवन ।
गिरितटी = प्रे० १५ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) पहाड़ की तराई ।
गिरि-पथ = का०, १७६, २७७।
[सं० पु०] (स.) पहाड़ी मार्ग । पहाड़ पर का रास्ता ।
गिरि-भार = ल०, ४७ ।
[सं० पु०] (हि.) पहाड़ का बोझ । अत्यधिक भारस्वरूप ।
गिरि-शृंग = चि०, १ ।
[सं० पु०] (सं.) पर्वत की चोटी, शृङ्ग, शिखर ।
गिरि-श्रेणी = का० कु०, ४२ ।
[सं० स्त्री०] पर्वत माला, पहाड़ की चोटियों,
(सं.) की शाखाएँ ।
गिरी = का, २०२ ।
[क्रि० अ.] किसी वस्तु से दूसरी वस्तु का पात हो
(हि.) जाना या स्वयं अपने स्थान से चेतना
शून्य होकर दूसरे स्थान पर आ जाना ।
खड़ा न रहकर जमीन पर या नीचे
डाल देना, बल, महत्व आदि कम
करना, प्रवाह को ढाल की ओर ले
जाना, युद्ध में मार डालना ।
गीत = का०, ११, ८६, ६८, १४१, १६४ ।
झ०, ७० । प्रे० ७ । ल०, २८, ४७ ।
[सं० पु०] वह पद या छन्द जो गाया जाता हो,
(सं.) गाना ।
गीत-भार = ल० ७१ ।
[सं० पु०] वह गीत या गाथा जो उतारा या
(हि.) अपने से अलग न किया जा सके, वह
परम्परा जो छोड़ी न जा सके ।
गीत-सा = का० कु०, १२२ ।
[वि०] (सं.) गीत के समान, मनोहर ।
गीति = का०, २४३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) गीत, गान । आर्याछंद का एक भेद ।
गीलापन = लहर, २३ ।
[सं० पु] (हि.) भींगने का भाव, भींगा, तर ।
गीली = आं०, १३ ।
[वि०] (हि.) भींगी हुई, तर ।
गुंजंतु = चि०, १३२ ।
[क्रि० अ० (व्र. भा.) गुंजार करें, भ्रमरों की मधुर ध्वनि हो ।
गुंज = चि०, ४६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) भौंरों के भनभनाने का शब्द, गुंजार,
(सं.) आनन्द ध्वनि, कलरव ।
गुंजन = का०, २८५ ।
[सं० पु०] भौंरों की गूँज, भनभनाहट, कोमल,
(सं.) मधुर ध्वनि ।
गुंजरित = का० कु०, ८६, १२२ ।
[वि०] भौंरों आदि के गुंजार से युक्त, किसी
(सं.) प्रकार की गूँज से युक्त ।
गुंजार = का० कु०, २१, ३४, ४२ । का० २६ ।
[सं० पु०] चि० १५, १८, २६ ६६ । झ० २३ ।
(सं.) प्रे० १३ ।
भौंरों की गूँज, भनभनाहट ।
गुंजारित = का०, ६०, १६८, १७६, १६३ ।
[वि०] (सं.) गूँजाता हुआ या गूँज से भरा हुआ ।
गुंजारि = चि०१६१ ।
[पू० क्रि०] (व्र. भा.) 'गुंजार' करके ।
गुंजारी = आं०, ६५ ।
[वि०] (हि.) गुंजार करनेवाला ।
गुंजित = का० कु०, १७ । चि० १४६, १५० ।
[वि०] (सं.) (दे० गुंजरित ।)
गुजरात = ल०, ६०।

[सं०पु०] (हि.) भारत का एक दक्षिण-पश्चिमी प्रान्त।

गुज्जरेश = ल०, ६२।

[सं०पु०] (अप०) गुजरात देश के राजा।

गुण = का० कु०, ८४। चि०, १५३, १५५।

[सं० पु०] स्वभाव, धर्म, विशेषता, निपुणता,

(सं.) सद्वृत्ति, राजनीति में परराष्ट्र के साथ व्यवहार की ६ रीतियां। धनुष की प्रत्यञ्चा।

गुण-गण = का०कु०, ३।

[सं० पु०] (सं.) गुण समुदाय, सद्वृत्तियों का समूह।

गुण गान = चि०, १७७।

[स०पु०] गुणों या सद्वृत्तियों का वर्णन करना

(सं.) या गाना, प्रशंसा।

गुणाधार = का० कु०, ८।

[सं०पु०] गुणों के आधार, गुणों को आश्रय देने

(सं.) वाला, ईश्वर।

गुदगुदाया = का० कु०, १६। भ०, १६।

[क्रि०अ०] किसी को हँसाने या छेड़ने के लिए

(हि.) उसके तलवे या बगल भाग को सहलाया।

गुनगाथ = चि०, १७०।

[सं०पु०] (ब्र.भा.) गुणों का स्वामी, ईश्वर।

गुनगुनाना = का०, १००। ल०, ११।

[क्रि०अ०] गुन-गुन शब्द करना, नाक में बोलना,

(अनु.) धीरे-धीरे स्वर में गाना।

गुनती = का०, १८४।

[क्रि०स०] (हि.) सोचती, समझती या रटन करती।

गुनना = चि०, १७२।

[क्रि०स०] गुणा, करना, जरब देना, गिनना,

(हि.) उद्धरणी करना, रटना, सोचना, महत्व समझना, मानना।

गुनी = चि०, १७६।

[वि०] (ब्र. भा.) गुणवाला, कई गुणों से युक्त।

गुप्त = क०, १३। भ०, ७६। प्रे० ५।

[वि०] (सं.) छिपा हुआ, जिसे जानना कठिन हो, गूढ़।

गुफा = आ० ६०, । का०, १३६, १४६, १५१।

[सं०स्त्री०] (हि.) कन्दरा, गुहा।

गुफा-द्वार = का०, १४१, १४४।

[सं०पु०] (हि.) कन्दरा का दरवाजा।

गुरिया = का० कु०, ११६।

[सं० स्त्री०] माले का दाना या मनका, मछली के

(देश०) मांस का कटा हुआ छोटा टुकड़ा।

गुरुकुल = का० कु०, १०६।

[स० पु०] वह स्थान जहाँ गुरु विद्यार्थियों को

(सं.) अपने स्थान पर रखकर शिक्षा देता हो, वह आधुनिक संस्था जहाँ विद्यार्थियों को प्राचीन ढंग से शिक्षा दी जाती हो। गुरु घराना या वंश।

गुरुवर = चि०, ५८।

[सं० पु०] (सं.) गुरुओं में श्रेष्ठ या उच्चतम।

गुरुहुँसों = चि० ४१।

[सं० पु०] (ब्र.भा.) गुरु से भी।

गुर्जर = ल०, ६२, ६।

[सं० पु०] (सं.) गुजरात देश, गूजर जाति, गुजरात का रहने वाला।

गुर्जर-महीप = ल०, ६१।

[सं० पु०] (अप०) गुजरात देश का राजा।

गुलाब = चि०, ३५। भ०, ४८, ५१।

[सं० पु०] म०, १६।

(फा.) एक कँटीला सुगन्धित पौधा या उसका फूल जिसमें सौरभ होता है।

गुलाबी = का०, ४६ भ०, ४८।

[वि०] (फा.) गुलाब के फूल के रङ्ग का। हल्का,

[सं० पु०] ,, थोड़ा। एक रङ्ग का नाम।

[सं० स्त्री०] ,, शराब की प्याली, एक पर्ची।

गुलाल = चि०, ६, १८०, १८२।

[सं० पु०] एक तरह की लाल बुकनी या चूर्ण

(फा.) जिसका उपयोग हिन्दू जाति होली के अवसर पर करती है।

गुलाल-सी = भ०, ७०।

[वि०] (फा.) गुलाल की तरह।

गुलाली = का०, ७५।

[वि०] (फा.) गुलाल के रङ्ग का।

गुल्फ = का०, १४२।
[सं० पु०] (सं.) एँड़ी पर की गाँठ।

गुहा = का०, कु०, २६। का०, २३, ३०, ११८, १५७, १५८, २१६, २४७।
[सं० स्त्री०]
(सं.) गुफा, कन्दरा।

गुहा-गृह = का०, २८४।
[सं० पु०] (सं.) गुहा रूपी घर।

गुहार = चि०, १८७।
[सं० स्त्री०] रक्षा या सहायता के लिए चिल्लाना,
(दे०) पुकार, दुहाई, हल्ला, गुल्ला, शोर।

गुहि = चि०, १४५।
[पूर्व०क्रि०] (ब्रज.) गूँथकर, पिरोकर, गूँधकर।

गूँगे = का०, १९६।
[वि०] (हि.) जिनमें बोलने की शक्ति न हो।

गूँज = का०, कु०, १६, ६६। का०, ५७, ६३, १०१, १७६, १८२, २२५। भ०, १६, ४५, ५५। म०, २०। ल०, ४५, ४६, ५७, ६३, ७१, ७३।
[सं० स्त्री०]
(सं.) भौंरों के गूँजने का शब्द, गुंजार, प्रतिध्वनि, खेलने में लट्टू की कील, नथ या बाली में लपेटा हुआ तार या वैसी ही कोई वस्तु।

गूँजत = चि०, १६६।
[क्रि०अ०] (ब्र.भा.) गुंजार करना, भन-भनाना।

गूँजती = का०, कु०, ५०। चि०, १६५, १६७।
[क्रि० अ०] ल०, १२, २३, ५८।
(सं.) दे० 'गूँजत'

गूँजता-सा = का० कु०, ४२।
[वि०] (हि.) गूँजने के समान, भन भनाने के समान।

गूँजते = का०, ८६. २६२।
[क्रि० अ०] (सं.) गुंजार करते, भनभनाते।

गूँजी = का०, १६२।
[क्रि० अ०] किसी बन्द स्थान में धुँआ या आवाज़
(सं.) का भर जाना।

गूजें = का०, ६६।
[क्रि० अ०] (सं.) गुंजार करे।

गूढ़ = का०, ८१। ल०, ४७।
[वि०] छिपा हुआ, जिसमें कुछ विशेष अभिप्राय छिपा हो, गहरे या गंभीर आशय
(सं.) वाला, जिसका आशय समझना कठिन हो।

गूँथ = का०, ६७।
[क्रि० सं०] तागे आदि में एक ही तरह की बहुत
(हि.) सी चीजों को पिरोना, गूँथना।

गूंद = भ्र०, २३।
[पूर्व० क्रि०] (सं.) लूटकर, हड़पकर।

गूंधन = चि०, ७०।
[क्रि० सं०] (सं.) गूँथना, पिरोना, माँड़ना।

गृह = का०, १६, ८२, ११८, १८२, २३४।
[सं० प०] चि०, ६७, ६२। भ्र०, ४१, ५२।
(सं.) प्रे०, ६, १३।
ईंट आदि से बनाया हुआ मकान, गेह, भवन, निकेतन, आगरा, कुटुम्ब, वंश।

गृह-पति = का०, ८१।
[सं० पु०] (सं.) घर का स्वामी। अग्नि। कुत्ता।

गृह-पति सदृश = का० कु०, ६३।
[वि०] (सं.) गृहपति या घर के मालिक के समान।

गृह-लक्ष्मी = का, १५०।
[सं० स्त्री०] (सं.) घर की लक्ष्मी, सच्चरित्रा स्त्री।

गृह-विधान = का०, १५०।
[सं० पु०] घर का कार्य तथा व्यवहार, सुचारु
(सं.) रूप से चलानेवाला नियम, ढंग। तरीका।

गृहस्थ = प्रे०, ७, ८।
[सं०पु०] (सं.) घर-द्वार वाला। कुटुम्ब वाला।

गृहिणी = चि०, ६२।
[सं० स्त्री०] (सं.) गृह स्वामिनी। भार्या, पत्नी, स्त्री।

गेंद = ल०, ५४।
[सं० पु०] रबर कपड़े या चमड़े का बना हुआ
(हि.) वह गोला जिससे लड़के खेलते हैं। कंदुक।

गेरि = चि० १५७, १८८।

[पूर्व०क्रि०] (हि.) गिराकर या डालकर।

गेह = का० कु०, ६८। का०, ८४।
[सं० पु०] (सं.) घर। भवन। गृह।

गैरिक = का०, २७७। ल०, ३२।
[सं० पु०] (सं.) गेरू। सोना।
[वि०] गेरू से रँगा हुआ। गेरुआ।

गैल = का०, २८।
[सं० स्त्री०] (हि.) छोटा मार्ग। रास्ता।

गोईये = चि०, १७८।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) छिपाइये।

गोचर = का०, २३५।
[सं० पु०] (सं.) चारागाह, चरी।

गोचर-भूमि = का०, २३५।
[सं० स्त्री०] वह भूमि जो केवल गौओं को चरने के
(सं.) लिए छोड़ दी जाती है, पशुचर भूमि।

गोता = का० कु०, ६०।
[सं० पु०] पानी में डूबने की क्रिया या भाव।
(हि.) डुबकी।

गोद = क०, ३०। का० कु०, ६४, १०५।
[सं० स्त्री०] का०, ३०, ४७। चि०, १४१, १८५।
(हि.) भ्रु०, ३४, ६०। प्रे०, २१। ल०, ५४।
क्रोड़, आंचल, अंक।

गोधन = का०, कु०, १२५।
[सं० पु०] गौयें, गोरूपी सम्पत्ति, एक प्रकार
(सं.) का तीर।

गोधूली = आं०, १६। का० ६७, १०१। भ्रु०, ३०, ३४।
[सं० स्त्री०] सायंकाल की वह बेला जब गौयें
(सं.) चरकर घर लौटकर आती हैं और उनके खुर से धूल उड़कर आकाश में छा जाती है।

गोप = चि०, १६१।
[सं० पु०] गो रक्षक, ग्वाला, अहीर, गोशाला का
(सं.) अध्यक्ष, राजा, गाँव का मुखिया। गले में पहनने का हार।

गोप-कुल = का०, कु०, १११।
[सं० पु०] (सं.) गोरक्षकों या ग्वालों का परिवार।

गोप-बाला = का०, कु०, ११।
[सं० स्त्री०] (सं.) ग्वाल जाति की लड़की, गोपी, ग्वालिन।

गोप-बालक-वेश = का०, कु०, १११।
[सं० पु०] (सं.)= ग्वाल बाल की तरह पहनावा।

गोपाल = का०, कु०, १२५।
[सं०पु०] श्रीकृष्ण। राजा। गौ का पालन
(सं.) करने वाला।

गोय = चि०, १६६।
[सं० पु०] (दे०) गेंद।

[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) छिपाकर।

गोरक्षण = चि०, ३१।
[सं० पु०] (सं.) गौवों की रक्षा का भाव।

गोरे-गोरे = का०, कु०, ४६।
[वि०] (हि.) साफ और सफेद रङ्गवाले। सुन्दर-सुन्दर।

गोरोचन = चि०, ३८।
[सं०पु०] एक पीला सुगन्धित द्रव्य जो गो के
(सं.) पित्ताशय से निकलता है।

गोल = का०, कु०, ५, १०। का०, २५३। चि०,
[वि० सं०] ३, ६८। भ्रु०, २२। ल०, ५४।
(सं.) वृत्ताकार, वृत्त, समूह, अस्पष्ट।

गौर = का०, कु०, ३४।
[सं० पु०] (अ) ध्यान, चिन्तन।
[वि०] (हि.) साफ तथा स्वच्छ रङ्ग वाला।

गौरव = आं०, १७। का०, ३०, १०२, १५५।
[सं० पु०] ल०, ५१, ५८।
(सं.) सम्मान, पूज्य बुद्धि, अभ्युत्थान उत्कर्ष, गुरुता का भाव।

गौरव-मण्डित= का० कु०, ११८।
[वि०] (सं.) सम्मान या आदर से सुशोभित। समादृत। प्रतिष्ठित।

गौरी = का०, २६४।
[सं० स्त्री०] पार्वती, गोरे रंग की स्त्री, आठ वर्ष

(सं.) की कन्या, तुलसी, गोरोचन, सफेद गाय, प्रियङ्गु वृक्ष, पृथिवी, बुद्धि की एक शक्ति, एक प्राचीन नदी।

ग्लानि = का०, ६०, २०७।
[सं० स्त्री०] (सं.) परिताप, अरुचि, खेद, मानसिक या शारीरिक शिथिलता। साहित्य में वीभत्स रस का स्थायी भाव।

ग्रंथ = का० कु०, १०६।
[सं० पु०] (सं.) पुस्तक, किताब। गाँठ लगाने का भाव।

ग्रंथि = का०, १४५, २५२।
[सं० स्त्री०] (सं.) गांठ, मायाजाल, बंधन।
रोग, आलू, कुटिलता, भद्रमोथा।

ग्रंथिहि = चि०, १५२।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) गाँठ या माया जाल को।

ग्रस्त = का कु०, ६४।
[वि०] (सं.) पकड़ा हुआ, खाया हुआ, पीड़ित।

ग्रस्त-सी = का० २३६।
[वि०] (सं.) पीड़ित के समान। दुखी, प्रताड़ित, व्याकुल।

ग्रह = का०, ५, १७, २५, १७०, २०५, २६१।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य आदि नव ग्रह, नौ की संख्या।
(वि.) अनुग्रह, निर्बन्ध, आग्रह, हठ, अध्यवसाय। रोग। स्कन्द, शकुनि आदि अच्छी तरह पकड़ने वाला। अवांछित। व्यक्ति कष्ट दायक बात।

ग्रह-गण = का० कु०, ६२।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य आदि नव ग्रहों का समुदाय या समूह। कष्टदायकों की जमात।

ग्रहण = का० कु०, २८, ६५, ११६। का०, १६३, २३६, २५३, चि०, १७७। ल०, ५१, ७८।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य अथवा चंद्र का राहु द्वारा ग्रसा जाना। स्वीकार, लेना, उपलब्धि, प्राप्ति। अर्थ, तात्पर्य, धारण।

ग्रह पथ = आं, ४३। का० ३४।
[सं० पु०] (सं.) ग्रहों के घूमने या भ्रमण करने का मार्ग।

ग्रह पुंज = का०, ५८।
[सं० पु०] (सं.) ग्रहों का समूह या समुदाय।

ग्रहरश्मि-रज्जु = का०, १६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) सूर्य तथा चन्द्र के किरणों की रस्सी।

ग्राम = क०, २९, ३०।
[सं० पु०] (सं.) गाँव, समूह, सात स्वरों का समूह, सप्तक। शिव।

ग्राम्य = प्रे०, ७।
[वि०] (सं.) ग्रामीण, मूढ़, असभ्य। गवारू। ठेठ,
[सं० पु०] (सं.) प्रकृत। सहज। एक काव्य दोष।

ग्रीवा = का० कु०, ३०। भ्रु०, २२।
[सं० स्त्री०] (सं.) गला, गर्दन।

ग्रीषम = चि० १५६।
[सं० पु०] (ब्र भा.) गर्मी की ऋतु, गरम।

ग्रीष्म = क०, १५। म०, ४।
[सं० स्त्री०] (सं.) गर्मी की ऋतु, उष्णता। गरमी, जेठ असाढ़ के दिन।

ग्रीष्म-ताप = का० कु०, ५७।
[सं० पु०] (सं.) अति तीव्र गरमी, ग्रीष्म ऋतु का ताप या जलन।

ग्रीष्म-ताप-तापित = का० कु०, ५५।
[वि०] (सं.) ग्रीष्म ऋतु की ताप से जलाया हुआ।

ग्रीष्म-निदान = चि०, १४६।
[सं० पु०] (सं.) ग्रीष्म ऋतु का सूर्य।

ग्रीष्मासन = का० कु०, १३।
[सं० पु०] (सं.) ग्रीष्म ऋतु रूपी आसन। गरमी की ऋतु।

घ

घंटा = का०, २७७। चि०, १६१।
[सं० पु०] (सं.) बाजा। दिन-रात का ध्वनि उत्पन्न करने वाला धातु का चौबीसवाँ भाग।

घंटाध्वनि = का०, २८६। ल०, ६३।
[सं० स्त्री०] (सं.) घंटे का स्वर।

घटना = का०, १८६ । झ०, १५ । प्रे०, ३ ।
[सं०स्त्री०क्रि०](हि.) होना । ठीक । उतरना । कम होना । अचानक किसी बात का होना, वाकिया ।

घटा = आं०, १६ । का० कु०, २७, ४३, ११४ ।
[सं० स्त्री०]
(सं.) मेघमाला । समूह ।

घटाटोप = ल०, ४७ ।
[सं० पु०] घनघोर घटा । बादलों की भाँति ।
(सं.) समूहबद्ध होकर चारो ओर से घेर लेने वाला दल ।

घड़ियाँ = आं०, ४५, ७१ । का०, ११५, १६२, १७७ । ल०, ३६ ।
[सं० स्त्री०]
(हि.) घड़ी का बहुवचन ।

घड़ी = का०, १७५, २२४ । झ०, ४७ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) २४ मिनट का समय । अल्प समय, समयनिर्देशक यंत्रिका ।

घड़ी-घड़ी = का०, १६५ ।
[अ०] (हि.) बार-बार ।

घन = आं०, ५० । का०, कु०, ७५, १२३ । का०, ३३, ८८, ८६, १०१, १७५, १८१, १८४, २००, २३४, २३७, २७९ । चि०, ११, २१, ६१, १६०, १६० । झ०, ६२ । ल०, २१, ४२ ।
[सं० पु०]
(सं.) बादल । समूह । कपूर । [वि०] घना, गाझिन । मजबूत, दृढ़ ।

घन-कुंज = का०, कु०, १०० ।
[सं० पु०] (सं.) गझिन कुञ्ज ।

घन-तिमिर = का०, ५० । ल०, ३२ ।
[सं० पु०] (सं.) गहन अन्धकार ।

घन-नाद = का०, १६३, २६६ ।
[सं० पु०] (सं.) बादल का गर्जन ।

घन-पटल = का०, ८२ ।
[सं० पु०] (सं.) बादलों की तह ।

घनमाला = का०, १६, ३० ।
[सं० पु०] (सं.) बादलों का समूह ।

घन-मीत = चि०, १५६ ।
[सं० पु०] (हि) बादल के मित्र ।

घनश्याम = का०, ४६, ८१, १०४ । चि०, १८६ । झ०, ६ ।
[सं० पु०]
(सं.) काला बादल । कृष्ण । प्रियतम ।

घन-सा = का०, २४४ ।
[वि०] (हि.) बादल के समान ।

घन-सी = का०, ६ ।
[वि०] (हि.) बदली के समान ।

घनहिं = चि०, १६३ ।
[सं० पु०](ब्र. भा.) बादल को ।

घना = आं०, २४ । का०, १७६, १८७, १८६, २६४ ।
[वि०]
(हि.) सघन । बहुत पास पास ।

घनी = का०.कु०,३२,१२५ । का०, १४, १२१, १८७, १८६ । चि०,१६४ । झ०,५५ । झ०, ७, १६ । ल०, ११, १४, ५६ । घना का स्त्रीलिङ्ग ।
[वि०]
(हि.)

घनीभूत = आं०, १४ । का०, १७ ।
[वि०] (हि.) अत्यन्त घनी । पूंजीभूत ।

घने = का०, कु०, ३१ । का०, १७, १७६, १८१, १८२ ।
[वि०]
(हि.) घना का बहुवचन ।

घनेरे = चि०, ७४, १०८, १५५ ।
[वि०] (ब्र भा) अत्यधिक । अगणित । बहुत ।

घनो = चि०, १०६ ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) बादलों ।

घबराना = क०, १४, १७ । का० कु०, ६३ । का०, १, ८, ६, २६१ । प्रे० ५ । म० ५ ।
[क्रि०अ०]
(हि.) अधीर होना, व्याकुल होना ।

घमण्ड = म०, १४ ।
[सं०पु०] (हि.) गरूर, अभिमान, गर्व ।

घमण्डी = का० कु०, ८३ ।
[वि०] (हि.) अभिमानी, अहंकारी ।

घर = आं०, ५१। का०, ७३, १०१, १४४, १७८, २१६, २३३ । झ०, ८८, ८३
[सं० पु०]

(हि.) प्रे०, ६, १० १३।
गृह, आवास, मकान।

घर्षिता = का० २०१।
[वि०] (सं.) रगड़ खायी हुई, रगड़ी हुई।

घाटी = आं०, ५६। का०, १०१, १५२, १६७,
[सं०स्त्री०] २८३। म०, ४।
(हि.) दो पर्वतों के बीच की सकरी भूमि, दर्रा।

घात = चि०, १८, ३८। ल०, ३७।
[सं० पु०] (सं.) प्रहार, चोट। अहित, बुराई।

घाते = आं, ८। का०, १७८।
[सं०पु०] (सं.) घात का बहुवचन।

घात-प्रतिघात= म०, ११।
[सं०पु०] चोट, और चोट के कारण चोट खाए
(सं०) हुए द्वारा प्रहार।

घायल = आ०, २२। का०, २०६, २०७, २१३,
[वि०] २१४, २६८।
(हि.) जिसे घाव लगा हो।

घाव = का० कु०, ६३।
[सं०पु०] (हि.) जख्म। चोट

घास = म०, २२।
[सं० स्त्री०] चौपायों के चरने का उद्भिज।

घिर = का०, १६६, १८६, २ ६।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) आवृत्त होकर।

घिरती = का०, ११:।
[क्रि०अ०] (हि.) आवृत्त होती। छातीं।

घिरना = आं०, १२, १६। का० कु०, ४३।
[क्रि० अ०] का०, ६, ३३, ४६, १७५। भ्र०, २४,
(हि.) ३६, ४७।
आवृत होना। छाना।

घिरि = चि०, ६५, ७१।
[क्रि०] (ब्र भा.) घिर कर।

घिरी = का० कु०, ४३। भ्र०, ४६। प्रे०,
[क्रि०] ३, ४।
(हि.) छाई।

घी = का० कु०, ११४।
[सं० पु०] (हि.) घृत।

घुंघराली = का०, १०३, २२१। भ्र०, २८।
[वि०] (हि.) टेढ़ी, कुंचित, लच्छेदार।

घुंघराले = का०, ७४। प्रे०, १८।
[वि०] (हि.) घुंघराली का बहुवचन, पुलिंग।

घुटनों = ल०, ६६।
[सं० पु०] (हि.) टाँग और जाँघ के मध्य की गाँठ।

घुलना = आं०, ५८। का०, ७५, १७६, २८८।
[क्रि० अ०] भ्र०, ११, परिचय।
(हि.) भलीभाँति मिल जाना। धीरे-धीरे
चिन्ता या रोगग्रस्त हो क्षीण होना।

घुलनें = का०, ८७।
[क्रि० अ०] (हि.) घुलना का बहुवचन।

घुला = का०, २१४।
[क्रि०] (हि.) घुलना की भूतकालिक क्रिया।

घुली = का०, २१६। ल०, ६०।
[क्रि०] (हि.) घुला का स्त्रीलिंग।

घुसना = म०, २।
[क्रि० अ०] तह तक पहुँचना, प्रवेश करना, भीतर
(हि.) जाना।

घूंघट = आं०, १६। का०, ३६, ६४, ६७।
[सं० पु०] चि०, १८२। भ्र०, २५।
(हि.) मुँह छिपाने के लिए किया गया परदा।

घूंघट-ओट = का० कु०, ५३ भ्र०, ६४।
[सं० पु०] (हि.) परदे के पट से।

घूट = का०, ८४, १११, २३६, २८६।
[सं० पु०] गले से द्रव पदार्थ उतरने की एक बार
(हि.) की सीमा।

घूम = आं०, २६। का० कु०, ८३। का०,
[सं० स्त्री०] २५, ८६, १४२, १४४, १५०, १५२,
(हि.) १५६, २३३, २६४, २६६। म०, २,
६। ल०, २०।
घुमाव, मोड़, चक्कर।

घूमा = क०, १३। का० कु०, १३। का०,
[पूर्व० क्रि०] ५१, ५२। ल०, ६५।
(हि.) चक्कर काटकर। चक्कर।

घूमता = चि०, ३५, १०१, १६१। प्रे०, ११८।

[क्रि०] ल०, ५८ ।
(व्र. भा.) चलता, चक्कर काटता ।
घूमती = क०, ३० । का० कु०, ८ । का०,
[क्रि०] २६४ ।
(हि.) चलती, टहलती, चक्कर लगाती ।
घूमी = प्रे०, १६ ।
[क्रि०] (हि.) घूमना का भूतकालिक क्रिया ।
घृणा = का० कु०, ८३ । का०, २०७, २१८ ।
[सं० स्त्री०] भ०, २१ ।
(सं.) नफरत । वीभत्स रस का स्थायी भाव ।
घेर = प्रे०, ७, १० । म०, ७ ।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) घेरकर ।
घेरा = का० कु०, ५४ । का०, २५८ । भ०,
[सं० पु०] (हि) ८२ । प्रे०, १२ ।
परिधि, फैलाव । अहाता । सेना द्वारा
चारो ओर से घिर जाने वाला स्थान ।
घेरि = चि०, ४०, ६५ ।
[पूर्व०क्रि०] हि.) घेर कर ।
घेरे = का० कु०, २६ । का०, ७०, ७१,
(हि) २२५, २६४ । म०, ३ ।
छेंके हुए । घेरा का बहुवचन ।
घोंट = का०, ३६ ।
[सं०पु०,पूर्व०क्रि०] घोंटने का काम । टीपने का काम ।
(हि.) मसलने का काम । रगड़कर, घोंटकर ।
घोर = क०, २५ । का० कु०, ८, ४३, १०७,
[वि०] १२३ । चि०, १८२ । प्रे०, ५, २१ ।
(सं.) म०, ६, १२ ।
भयंकर, भयावना, विकराल ।
घोरान्धकार = चि०, १०१ ।
[सं० पु०] (सं.) दे० घोर + अंधकार । गहनतिमिर ।
घोरि = चि०, १७० ।
[पूर्व०क्रि०] (व्र. भा.) घोलकर ।
घोरी = चि०, १८२ ।
[पूर्व० क्रि०] (व्र०भा०) घोलकर ।
घोल = का०, ३८, ६७, १५२, २३७ ।
[सं० पु०] (हि.) मिश्रण ।
घोलता = का०, २४ ।
[क्रि०] (हि.) मिलाता ।
घोषणा = का०, कु०, ११६ । का०, २६७ ।
[सं० स्त्री०] उच्चस्वर से सार्वजनिक रूप में दी गयी
(सं) सूचना । विज्ञापन ।
घोषित = म०, ५, ७ ।
[वि.] (सं.) घोषणा की हुई ।
घ्राण = का०, ८६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) नाक, सुँघने की शक्ति । गंध, सुगंध ।

च

चंक्रमण = ल०, २३ ।
[सं० पु०] (सं.) टहलना । घूमना ।
चंगेर = प्रे०, २।
[सं० स्त्री०] बांस की बनी छोटी टोकरी । झूला,
(हि.) पालना ।
चंचल = आं०, ३४, ६०, ६६ । का० कु०, ३६,
[वि०] ४२ ५३, ६१ । का०, २५, ४०, ४५,
(सं.) ६६, ६७, ७०, १०३, १११, १३१,
१४०, १५६, १६६, १७१, १७६,
१८२, २१३, २१६ । चि०, ४, २४,
६२, ६६, १७६, १८३ । भ०, १७,
२२, ३८ । ल०, १०, २०, २६, ३०,
४३, ४८ ।
अस्थिर । चलायमान । अधीर । उद्विग्न ।
अव्यवस्थित ।
चंचलता = का०, ६४, १३९ । चि०, १४८ ।
[वि० स्त्री०] (सं.) चपलता । शरारत । नटखटपन ।
चंचल-सी = का०, २२६ ।
[वि०] (हि.) अधीरता के समान ।
चंचला = आं०, २४ । का० कु०, ५२, १२४ ।
[सं० स्त्री०] का०, ११६, २३७ । चि०, १०० ।
(सं.) भ०, ४६ ।
लक्ष्मी, बिजली, पिप्पली ।
चंचले = भ०, ७६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) हे लक्ष्मी ! हे चंचल स्वभाववाली !

चंट = का० कु०, ४०, ४२। भ्रू०, ४१।
[वि०] (हि.) चतुर। धूर्त।

चण्ड = का० कु०, ५४, १०८। चि०, ६४।
[वि०] उग्र। तीव्र। प्रखर। बलवान। विकट।
(सं.) क्रोधी। उद्धत।
[सं० पु०] (सं.) ताप। इमली का वृक्ष। एक भैरव। दुर्गा द्वारा मारा गया दैत्य।

चण्डकर = चि०, ३६।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य।
[वि०] तेज किरणों वाला।

चण्डशासन = प्रे०, ६।
[सं० पु०] (सं.) तेज शासन। अत्याचारी का शासन।

चंद = का० कु०, ४०, ४२। चि०, २, ३१, १०८, १४६, १५६। भ्रू०, ४१।
[सं० पु०] (हि.) (फा०) चन्द्रमा। हिन्दी काव्य के कवि। कुछ, थोड़ा।

चन्दन = का० कु०, ६। का०, १०२। ल०, २८
[सं० पु०] (सं.) एक सुगन्धित लकड़ी। एक सुगन्धित लेप।

चन्दवदनि = चि०, १६२।
[वि०] (ब्र. भा. चन्द्रमुखी। चन्द्रमा के समान मुखवाली।

चन्द्र = आ०, ४१, ४३। क०, ६। का० कु०, ३६। का०, ६३, १२०। चि०, २८, ७२, ७५, १०७, १८६। भ्रू० २५। प्रे०, १२, १७। म०, ६। ल०, १३।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा। मोर की पूँछ की चन्द्रिका। जल। कपूर। सोना।

चंद्र-कर = भ्रू०, ५७।
[सं० स्त्री०] (सं.) चन्द्रमा की किरण।

चंद्र कला = का० कु०, ३६। चि०, ६, १४५।
[सं० स्त्री०] (सं.) चन्द्रमंडल का सोलहवाँ अंश। मस्तक पर धारण करने का आभूषण। चन्द्रमा की किरण या ज्योति।

चन्द्र-कान्त = का० कु०, १०५। ल०, ६२।
[सं० पु०] (सं.) चंदन। कुमुद। एक कल्पित रत्न जो चन्द्रमा के सामने रखने पर पिघलता है और उससे अमृत निकलता है।

चंद्रकिरण = भ्रू०, ५३।
[सं० स्त्री०] (सं.) चंद्रमा की किरण।

चन्द्र-किरीट = का०, २६४।
[सं० पु०] (सं.) चन्द रूपी मुकुट।

चन्द्रकुल चंद = चि०, ३२।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) चन्द्रवंशियों में चन्द्रमा सदृश्य।

चन्द्रकेतु = चि०, ७०, ७४।
[सं० पु०] (सं.) लक्ष्मण के पुत्र का नाम।

चन्द्रप्रभा = का० कु, १०५। म०, ८।
[सं० स्त्री०] (सं.) चाँदनी। कपूर।

चन्द्रमंडल = का० कु०, ४२।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा का घेरा।

चन्द्रमणि = चि०, ६२।
[सं० स्त्री०] (सं.) चन्द्रकान्त मणि।

चन्द्रमा = का० कु०, ४३। चि०, ४६। भ्रू०, ७१।
[सं० पु०] (हि.) दे० चन्द्र।

चन्द्रमा-सा = का० कु०, २६।
[वि०] (हि.) चन्द्रमा के समान।

चन्द्रमुख = का० कु०, ६७। म० १८।
[वि०,सं०] (सं.) चन्द्रमा के समान मुखवाला। चन्द्रवत मुख।

चन्द्रमुखी = प्रे०, ६।
[वि०] (हि.) चन्द्रमा के समान मुखवाली।

चन्द्र-बिम्ब = का०, ३४। प्रे०, १६।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्र मण्डल। चंद्रमा का घेरा।

चन्द्र-विनोद = भ्रू०, ६६।
[सं० पु०] सं.) चन्द्रमा से विनोद।

चन्द्रशालिनी = का०, १३६। प्रे०, ६।
[सं० स्त्री०] (सं.) चाँदनी। चन्द्रिका।

चंद्रहीन = का०, २३३।
[वि०] (सं.) बिना चन्द्रमा की।

चंद्रातप = का० कु०, ६६।
[सं० पु०] (सं०) चन्द्रमा का प्रकाश। चाँदनी।

चंद्राभमय = का० कु०, १००।

[वि०] (सं.) चन्द्रमा की आभा से युक्त ।

चंद्रालोक = झ०, ५४ ।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा का आलोक । चाँदनी ।

चंद्रावली = चि०, १६४ ।
सं० स्त्री०] (सं.) एक गोपी का नाम ।

चन्द्रिका = आं०, २४, ४८ । का० कु०, २, ६, ४१ ।
[सं० स्त्री०] का०, ४६, ८८, १०१ । चि०, ७१, १६४,
(सं.) १७० । झ०, ४८, ५५, ५६, ६६, ७१ ।
चाँदनी, कौमुदी । मोर की पूँछ पर का गोल चिन्ह । माथे पर पहनने का एक गहना । बेंदी ।

चन्द्रिका-निधि = का०, ३५ ।
[सं० स्त्री०] [सं) चन्द्रमा ।

चन्द्रोज्वल = चि० ६३ ।
[वि०] (सं.) चन्द्रमा की-सी उज्ज्वल ।

चम्पक-लता = चि०, ५६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) चम्पा की लता ।

चम्पक-लतिका = चि०, ५६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) चम्पा की लता ।

चम्पक = चि०, ५६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) एक सुगंधित फूल । चम्पा ।

चम्पक-कलिका-हार = चि०, ५५ ।
[सं० स्त्री०] (सं) चम्पा की कलियों का हार ।

चकई = चि०, २४ ।
[सं० स्त्री०] चक्रवाक नाम के पंक्षी का मादा । घिरनी
(हि.) की तरह का एक गोला ।

चकई-चकवा = प्रे०, ८ ।
[सं०] (हि.) चक्रावक के जोड़े ।

चकचूर = चि०, १६८ ।
[वि.] (हि.) चकनाचूर ।

चकाचौंध-सी = म०, १३ ।
[वि०] तीव्र प्रकाश से होनेवाली आँखों की
(हि०) तिल-मिलाहट के समान ।

चकित = आं, १३ । का० कु०, २५, १०२ ।
[वि०] का०, ८६, १०१, १५०, २१५, २६४ ।
(सं.) चि०, ४२, ६६ ।
चौकन्ना । हक्का-बक्का । विस्मृत ।

चकित-सा = ल०, १८ ।
[वि०] (हि.) भौचक्का-सा ।

चकित ह्वै = चि०, ६१ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) चकित होकर ।

चकोर = आं, ४३ । का० कु०, ५० । चि०, १५,
[सं पु०] १६४, १८६ ।
(हि.) चन्द्रमा का प्रेमी एक प्रकार का पहाड़ी तीतर, जिसके सम्बन्ध में कवि मान्यता है कि वह अंगार खाता है ।

चकोरी = चि०, १७१ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) चकोर की मादा ।

चक्कर = का० कु०, ८ । का०, २५७ । झ०, ३३ ।
(सं० पु०] फेरा । परिक्रमण । पहिये के समान
(हि.) गोल वस्तु ।

चक्कर-सा = म०, ४ ।
[वि०] (हि.) पहिये के समान । फेरे के समान ।

चक्र = का० कु०, १० । का०, १७, २०,
[सं० पु०] ६२, १८६, २६४ । ल०, ३३, ६५ ।
(सं०) चक्की । पहिया । बवंडर । समूह । सेना । घेरा । दिशा ।

चक्र सी = का०, १२२ ।
[वि०] (हि.) घेरे के समान ।

चक्रवर्त्ति = चि०, ६८ ।
[वि०] वह राजा जिसका शासन दूर-दूर तक
(ब्र. भा.) फैला हो । नरेशों का नरेश ।

चक्रवाल = का०, १२१, १७०, २६४ ।
[सं० पु०] सं.) मण्डल । घेरा । पौराणिक पर्वत ।

चक्राकार = का०, ८६ ।
[वि०] (सं) पहिये के समान आकार वाला । गोल ।

चख = चि०, २२, १८६ ।
आंख ।

चखि के = चि०, १८३ ।
[पू० क्रि०](ब्र.भा.) देखकर । स्वाद लेकर

चचैन = चि०, २४ ।

[क्रि० वि०] (ब्र.भा.) चैनपूर्वक ।

चट = का० कु०, ११३ ।
[क्रि० वि०] (हि.) झट । फौरन । शीघ्र ।

चटकीला = ल०, ४६ ।
[वि०] (हि०) भड़कीला । चटपटा । चमकदार ।

चटचटा = भ्रं०, ४८ ।
[क्रि० वि०] (हि.) कली के खिलने की ध्वनि ।

चट्टानों = का०, ५६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) चट्टान का बहुवचन ।

चढ़ना = आं, ५१ । का०, ७ । का०, ६४, ६६, १०६, १२१ । २०६ । २५७ । २५८ । २८४ । चि०, १८४ । प्रे०, १२ । म०, ५ ।
[क्रि०] (हि.) नीचे से ऊपर जाना । उठना । उड़ना । आक्रमण करना । देवता को भेंट चढ़ाना । पकाने के लिए चूल्हे पर रखना । बढ़ाना ।

चढ़ाइयाँ = का० कु०, ११२ ।
[सं० स्त्री०](हि०) आक्रमण । धावा । (बहुवचन)

चढ़ाना = आ०, १७ । का० कु०, ६ ।
[क्रि०] (हि.) उठाना । आक्रमण करना ।

चढ़ि = चि०, ६४ ।
[पूर्व० क्रि०](ब्र.भा.) चढ़कर ।

चढ़ी = का०, १८५, २४१ । चि०, ३ । प्रे० ३ । म०, ५ ।
[क्रि०] (हि.) चढ़ना का भूतकालिक स्त्रीलिंग रूप ।

चढ़े = म०, २ ।
[क्रि०] (हि.) ऊपर उठे ।

चढ़ै = चि०, १०६ ।
[ब्र. भा.] आगे बढ़े । उन्नति करे ।

चतुरंग = का० कु० ९६ ।
[सं० पु०] (सं.) शतरंज का खेल । हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल चार अंगों वाली सेना ।

चतुरंगिनी = चि० ६७ ।
[सं० स्त्री०, वि०] [चतुरंगिणी] चार अंगों वाली । हाथी, (ब्र. भा.) घोड़ा, रथ और पैदल चार अंगों वाली सेना ।

चतुर = आं० २२ । का० कु०, ६६ । का०, ३८ ।
[वि०] चि०, ६६ । म०, २० ।
(हि.) निपुण । टेढ़ी चाल चलने वाला । वक्रगामी । दक्ष ।

चतुर्दिक = का०, २०६, २५७, २६४ ।
[सं० पु०] (सं.) चारो दिशाएँ ।
[क्रि० वि०] (सं) चारो ओर से ।

चपल = आं १६ । का०, ५, ८३ ८५, १०२, १४२ । चि०, १५० । भ्रं०, २२, २४, २६, ८६ । ल०, ७६, ७६ ।
[वि०] (सं.) चंचल । जल्दबाज । चालाक । अस्थिर ।

चपलता = का०, १७५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) चंचलता । तेजी ।

चपला = आं, ३४ । का० कु०, ५२, ६८ । का०, ५०, १७७, २५८ । चि०, १२६, १६४, १९० । भ्रं०, ३१ । प्रे०, १६ । ल०, २१, २७ ।
[वि०] (सं.) [सं० पु०] चंचला । तेज स्त्री । आकाश में चमकनेवाली बिजली जीभ । लक्ष्मी । धन । भांग । दुश्चरित्रा स्त्री । पीपल एक छन्द का भेद । मदिरा । जहाज में लकड़ी या लोहे की लगी पट्टी । विजया ।

चपलाएँ = का०, १६ ।
[सं० स्त्री०](हि.) अनेक चंचलाएँ ।

चपला-सीम = भ्रं० २२ ।
[वि०] हि.) चपला के समान ।

चपेटा = का०, १७ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) धक्का । झोंका । झटका ।

चबाता = म०, १५ ।
[क्रि०] (हि.) दांतों को अच्छी तरह दबा-दबाकर चबाना ।

चमक = का०, १७५, २४६ । चि०, १६४, १७० भ्रं०, ७३, ६२ । म०, १० । ल०, ६१ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) प्रकाश । ज्योति । रोशनी । आभा ।

दमक। कमर या पीठ में अचानक उठा हुआ दर्द।

चमक कर = प्रे० १६।
पूर्व० क्रि०](हि.) एक झलक दिखाकर।

चमकती = आ०, ३३। का०, २००, २५८।
क्रि०] (हि.) झिलमिलाती, प्रकाश देती।

चमकने = आं, ५०। प्रे, १।
क्रि० अ०] झिलमिलाने। प्रकाश देने। प्रतिध्वनित
हि.) होने।

चमकावत = चि०, ६१।
क्रि०वि०] (ब्र.भा.) चमकाते हुए।

चमकि = चि०, ६५, ७५, १६०।
ब्र. भा.) चमक कर।

चमकीला = का० कु०, ३६। का०, ७, २७०। झ०,
वि०] २२। प्रे०, २४।
हि.) भड़कीला। चमकदार।

चमकूँगा = आं०, ४२।
क्रि०] (हि.) प्रकाशित होऊँगा।

चमड़े = का०, १४७।
सं० पु०] (हि.) चर्म। त्वचा। खाल।

चमत्कार = ल०, ६६।
सं० पु०] (सं.) आश्चर्य। विस्मय। विचित्रता।

चमत्कृत = का०, १६, ८३, १००। झ०, १८।
वि०] (सं.) चकित, आश्चर्ययुक्त।

चमरों = का० २७८।
सं० स्त्री०](हि.) सुरागायों।

चमू = चि०, ६५।
सं० स्त्री०](सं.) सेना। फौज।

चमूपति = म०, ३।
सं० पु०] (सं) सेनापति। राजा।

चमेके = चि० १००।
क्रि०] (हि.) दे० चमकना।

चमेली = प्रे०, १, २, ४, ६, १३, १६,१८, १६,
सं० स्त्री०] २४, २६, २७।
हि.) एक सुगंधित फूल की लता। एक सुगन्धित-फूल।

चरण = आ०, ११,४५। क०, १०, १७, ३०।
[सं० पु०] का०, ३, ६, २७, २६, १२०, १२३,
(सं.) १६८ झ०, ३१। ल०, १०, ४२,६०।
पग। किसी वस्तु का चौथाई भाग। चरन।

चरण-अरविन्द=का० कु०, ६३।
[सं० पु०] (सं.) चरण रूपी कमल।

चरण अलक्तक=ल०, ६०।
[सं० पु०](सं.) पैर का आलता।

चरण-कमल = का०, ६, ६६। चि०, १७४।
[सं० पु०] (सं.) कमल के समान चरण।

चरण-चिन्ह-सी= ल०, १०।
[वि०] (हि) पग के चिन्ह के समान।

चरण-चूमि = चि०, ६०।
[पूर्व० क्रि०](ब्र. भा.)चरण चूमकर।

चरण-धूल = का०, ६१, २४४।
[सं० स्त्री०] (हि.)चरण की धूल।

चरण रेणु = का० कु०, ६०।
[सं० स्त्री०](सं.) चरण की धूलि।

चरण-सरोजिस=का० कु०, १००।
[सं० पु०](हि.) चरण रूपी कमल।

चरण-स्पर्श= का० कु०, १०३।
[सं० पु०] पैर छूना। श्रद्धा-पूर्वक। झुककर अभि-
(सं.) वादन करना।

चरनन = चि०, ६४, १५७, १६०।
[सं०पु०](ब्र.भा.) चरण का बहुवचन।

चरम = का०, १३०।
[वि०](सं.) पराकाष्ठा। अन्तिम।

चराचर = का० कु०, ८६।
[सं० पु०] चर और अचर। जगत। सृष्टि, जग,
(सं.) संसार विश्व।

चरित = का० कु०, १०, चि०, १४६।
[सं० पु०] स्वभाव, प्रकृति। आचरण। जीवन-
(हि) कथा, जीवनी। दे० चरित्र।

चर्म = का०, ४६, ११८, १४६, १८३।

[सं० पु०] (सं.) चि०, ६५। त्वचा। खाल।

चल = [वि० स० पु०] (सं) आ०, १०, ७६। क०, ८। का० कु०, ५३। का०, ५, ६, ३४, ३५, ३६, ८६, ६३, ११८, १४६, १५०, १६५, १६७, १७०, १६२, २०६, २२२, २२३, २५१, २५३, २५४। चि०, १८३। प्रे०, १४, १८। म०, १, २। ल०, १४, २३, ४६। चंचल। पारा। विष्णु। शिव। दोष। कंपन। छल। अस्थिर। चलायमान।

चल चक्र = [सं० पु०] (सं.) का०, ६५। चंचलचक्र। चलनेवाला चक्र। आवर्त। भँवर।

चलचित्रों = [सं० पु०] (हि.) का०, २६४। प्राणवान चित्र। वह चित्र जो पट पर चलते नजर आते हैं।

चलत = [क्रि० वि०] चि०, १, २६, ६५, १५०। (ब्र.भा.) चलते हुए।

चलता-फिरता = [मुहा०] (हि.) [क्रि० वि०] का०, १६६। बिना उद्देश्य या लक्ष्य का काम करना, काम करना। इधर-उधर घूमता। काम चलाता। आवास या निवास-स्थान हीन।

चलते-चलते = [क्रि० अ०] (हि.) आ०, ६६। चलने का कार्य करते-करते।

चलदल-सा = [वि०] (सं.) का०, १४८। पीपल के पत्ते के समान। चंचल, अस्थिर। निरुद्देश्य।

चल-प्रकाश = [सं० पु०] (सं.) का०, ३५। अस्थिर ज्योति।

चलना = [क्रि० अ०] (हि.) आ०, ८, ३३। क०, ८, ६, १०, १४, १६, २७। का०, ८, ११, १३, १४, १७, २६, ३४, ३६, ३६, ४३, ४६, ५१, ५६, ७०, ७१, ७३, ७६, ८१, ८३, ८६, ८७, ८८, ६४, १२३, १४१, १४२, १४८, १४६, १५०, १५४, १६०, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १७१, १७७, १७८, १७६, १८५, १८६, १८६, १६८, २००, २०५, २०६, २०७, २१०, २११, २१३, २१४, २२६, २४१, २४३, २५०, २५६, २६४, २६६, २७१, २७२। २७७, २७८, २८१, २८२, २८६, २६२। चि०, १५, ५८ ६५। प्रे०, ४, ६, ७, १२, १६, १८, २५। म०, ४, ६, ७, १७, २४। ल०, १०, २१, २३, ३६, ५१, ६७। पैर उठाते हुए एक जगह से दूसरी जगह जाना। गमन करना। हिलना-डुलना।

चलाना = [क्रि० स] (हि.) का०, १८१। चलने में प्रवृत्ति कराना, ऐसा काम करना कि चलता रहे।

चलावत = [क्रि० स०] (ब्र. भा.) चि०, १६३, १८२। देखें "चलाना"।

चलिजात = [क्रि० अ०] (ब्र.भा.) चि०, १७१। चला जाता है।

चलिजाहु = [क्रि०स०] (ब्र.भा.) चि०, ५३, ५८, ६४। चले जाने की आज्ञा देना। चले जाओ।

चलूँ = [क्रि० अ०] (हि.) का०, १४८, १६१, १६५, २२०। चलने के लिए आज्ञा माँगना।

चलीचलो = [क्रि० स०] (हि.) म०, ४। चलने के लिए प्रवृत्त करना।

चल्यो = [क्रि० अ०] (ब्र. भा.) चि०, ५४। चल दिया।

चषक = [सं० पु०] (सं.) का०, २४, १६३, १६८। झ०, २५। शराब पीने का प्याला। मधु, एक विशेष प्रकार की मदिरा।

चसका = [सं० स्त्री०] (हि०) का० कु०, ७८। शौक, आदत, लत।

चहूँ = चि०, ४६, १७०।

[वि०] (ब्र. भा.) चारो।
चहुँओर = चि०, १५४, १७७।
[अ०] (ब्र. भा.) चारो ओर, सब तरफ।
चहत = चि०, २८।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) चाहता है। इच्छा रखता है।
चहति = चि०, १७०।
[क्रि० स०] (ब्र. भा०) चाहती है। इच्छा रखती है
चहल-कदमी = भ्रु०, ५१।
[सं०स्त्री०] (हि.फा). धीरे-धीरे टहलना या घूमना।
चहल पहल = का०, १७७।
[सं०स्त्री०] (हि.) आनन्द, भीड़। धूम-धाम, रौनक।
चहै = चि०, १५, २६, १५८, १६६।
[क्रि०स०] (ब्र. भा.) चाहता है, इच्छा रखता है।
चहौं = चि०, १६६, १७२।
[क्रि०स०] (ब्र.भा.) चाहता हूँ, इच्छा रखता हूँ।
चह्यो = चि०, १०७।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) चाह या इच्छा रखने की सम्भावित क्रिया, चाहे, चाहना हूँ।
चांडाल = क०, २८।
[सं० पु०] (सं.) एक छोटी जाति, डोम, श्वपच, पतित मनुष्य। एक गाली।
चाँद = क०, १४। का०, कु०, ५१, ६५। का०, [सं० पु०] (हि.) ३५, ७१, २४६, २८६ चि०, १६४, १७१।
चन्द्रमा, निशाकर, सुधाकर।
चाँदनी = आ०, २७। क०, ७८। का०, १७५। [सं० स्त्री०] (हि.) प्रे०, ८। म०, म०, १६। ल०, ११, ३७, ६१।
चन्द्रमा का प्रकाश, चाँद का उजाला चन्द्रिका।

चाँदनी-सदृश्य = का०, ६८।
[वि०] (हि) चाँदनी के समान उज्वल तथा स्वच्छ। निर्मल, मनोहारी, सुहावना।
चाँदी = प्रे०, १२।
[सं० स्त्री०] (हि.) एक सफेद चमकीली धातु जिसके सिक्के, गहने, बर्तन आदि बनते हैं।

चाँदनी-सी = का०, १८०। प्रे०, २५।
[वि०] (हि) दे० 'चाँदनी सदृश'।
चाँदनि-हूँ = चि०, ३४।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) चाँदनी को। चाँदनी भी।
चाँप-चाँप = ल०, १०।
[पूर्व० क्रि० स०] (हि.) दाब-दाब कर, कस-कस कर, ठूँस-ठूँस कर।
चाचा = प्रे०, १२।
[सं० पु०] हि.) पिता का छोटा भाई, काका, पितृव्य।
चाटती = का०, २७०।
[क्रि०, सं०] (हि.) जीभ से रगड़ कर या उठाकर खाने की क्रिया करती, पोंछकर खा लेती, प्यार से किसी पर जीभ फेरती।
चातक = आ०, १३। का०, कु०, ५०, १२४। [सं० पु०] (सं.) चि०, १५८, १७२, १६०। भ्रु०, ४६। प्रे०, १४।
पपीहा नामक पक्षी।
चातकी = का०, २१७।
[सं० स्त्री०] (सं.) मादा 'चातक'।
चादर = आ०, ३७।
[सं० स्त्री०] (सं.) बिछाने या ओढ़ने का लम्बा-चौड़ा कपड़ा, हलका ओढ़ना, दुपट्टा, किसी पहाड़ या चट्टान को गिराने वाली चौड़ी धार, पवित्र स्थान पर चढ़ाये जाने वाले फूल।
चाप = क०, १४। चि०, २२, १६५।
[सं० पु०] (सं.) धनुष, कमान, वृत्त की परिधि का कोई भाग, मेहराब।
[सं० स्त्री०] (हि.) चापने की क्रिया या भाव, दबाव, दाब, आहट।
चार = क०, ३, ६६, २१५ ल०, २७।
[वि०] (हि.) दो का दूना।
चारण = का०, २६। म०, २०।
[सं० पु०] (सं.) राजाओं और बड़े-बड़े आदमियों का यशगान करने वाला भाट। बन्दीजन, राजपूताने की एक जाति।

चारणभूमि = प्रे०, १४ ।
[सं०स्त्री] चारणों के निवास करने का स्थान ।
(सं०) चरागाह ।
चार वर्ण = का०, १६६ ।
[सं० पु०] भारतीय जाति का चार प्रमुख विभा-
(सं.) जनः—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ।
चारु = चि०, ३, २३, ४७, ७०, ७५, १०८,
[वि०] १४३, १५४ ।
(सं.) सुन्दर, मनोहर ।
चारु-तारा बलित = का०, कु ४२ ।
[वि०] (सं.) सुन्दर एवं मनोहर तारों से घिरा हुआ ।
चारो = क०, ६ । प्रे०, २२ । ल०, ७०, ७६ ।
[वि०] (हि.) सब, सभी, चार संख्यक सभी ।
चारो ओर = का०, १६०, २१८ २६२ ।
[अव्य०] (हि.) दे० चहुँ ओर ।
चाल = क०, ८, ६ । का० कु०, ६६ । झ०,
[सं० स्त्री०] ५३, ८६ ।
(हि) चलने की क्रिया, गति, चलने का ढंग आचरण, बरताव, व्यवहार, रीति, रिवाज प्रथा, परिपाटी, युक्ति, तरकीब । छल, धूर्तता । प्रकार, तरह । शतरंज, ताश, चौरस आदि के खेल में मोहरा, पता या दांव पर रखने या आगे बढ़ाने का काम । चलने का शब्द, आहट ।
चालक = प्रे०, ७ ।
[वि०] चलाने वाला, जैसे वायुयान या मोटर
(सं.) चालक ।
चालन = चि , ६४
[सं०पु०] (सं.) कोई चीज चलाने की क्रिया या भाव ।
[सं० पु०] भूसी, चोकर जो कुछ छानने से या
(हि.) चालने से निकलता है ।
चाव = का०, ८४, ६४ ।
[सं० पु०] अभिलाषा, वासना, प्रेम, अनुराग,
(हि.) शौक, चाह, उमंग, उत्साह ।
चाव-भरी = का०, १४० ।
[वि०] प्रेम, अनुराग, चाह या वासना से भरी
(हि.) हुई या पूर्ण ।
चाव-ते = चि०, १७६ ।
[सं०पु०](व्र.भा.) चाव से ।
चाहना = क०, १८ । का०कु०, १०, २५ ।
[क्रि० स०] का०, २५, ८१, ८४, ८६, १०५,
(हि.) १३४, १५७, १६३, १७७, १६२, १६०, १६४, २२६, २३६, २४२, २६६, । चि०, ५०, ६६, ६७, १०५, १४३, १५६, १७०, १७१ । झ०, ४८। प्रे०, २२ । म०, १७ । ल०, १०, ३६, ४४, ६४, ६६, ७६ ।
इच्छा या अभिलाषा करना, प्रेम करना, माँगना, देखना, ढूँढना ।
चाहिये – क०, १७, २७ । का०, १६४ ।
[अव्य०] (हि.) उचित है, आवश्यक है ।
चाहूँ = का , १२०, १६४ ।
[क्रि०सं०] (हि.) जिसकी इच्छा रखूँ या अभिलाषा करूँ ।
चाहो = का० कु०, ६१
[अव्य०] (हि.) जैसी इच्छा हो, जैसा उचित हो ।
चाह्यो = वि, १, ८, ६ ।
[अव्य०] (व्र.भा.) दे० 'चाहो' ।
चिन्ता = आं०, ५५ । का० कु०, २६, ६४ ।
[सं० स्त्री०] का०, १४८ । चि०, ४७,१४३ ।
(सं.) ध्यान, भावना, सोच । किसी कार्य-सिद्धि या परिस्थिति के बारे में बार-बार उठने वाला अस्थिर सोचमय विचार ।
चिंताकातर = का० ४ ।
[सं० पु०] चिंता के कारण उत्पन्न वह भाव जिसमें
(सं) भय एवं सहायता की याचना होती है ।
चिन्तामणि-वितरण = का०, कु०, ८६ ।
[सं० पु०] चिन्तामणि रूपी रत्न का बाँटना, भग-
(सं.) वच्चिन्तन रूपी मणि या रत्न का बाँटना ।
चिंतित = क०, २८ । का० कु०, ५६ ।
[वि०] (सं.) चिंतायुक्त, जिसे चिंता हो ।
चिंतित-सा = का० कु०, २६ । का०, १८६ ।
[वि०] चिन्ता करने वाले की तरह, या जिसका

(हि.) चिन्तन हो, चुका हो, उसकी तरह।

चिकनई = चि०, १८४।
[सं० स्त्री०] चिकना होने का भाव, चिकनापन,
(ब्र. भा.) स्निग्धता, सरसता।

चिकना = का०, १४ ।
[वि०] (हि.) जो खुरदुरा न हो, साफ और बराबर।

चिकनी-चुपड़ी = प्रे० ६।
[मुहा०] (वि.) बनावटी। मनपसंद। खुशामदी।
(हि.) अतिरंजित।

चिकुर = चि०, १६०।
(सं० पु०] (सं.) केश, बाल पर्व।

चिटकीं = का० कु०, १००।
[क्रि० अ०] (हि.) कलियों का खिलना, विकसित होना।

चिढ़ना = प्रे०, ११।
[क्रि० अ०] (हि.) अप्रसन्न होना, झल्लाना, खीजना।

चित = का०, २५२, २५८। चि० ३, १४८,
[वि०] १४४, १७०, १७१, १६४, १८६।
[सं० पु०] (हि.) चुनकर ढेर किया हुआ। ढका हुआ,
(सं.) ,, अच्छादित। चित्त, मन। पीठ के बल।

चितचोर = का० कु०, १०।
[सं० पु०] चित्त को चुराने वाला, मनोहर, मन-
(सं.) भावन।

चितमराल = चि०, १४३।
[सं० पु०] (सं) चित्त या मन रूपी हंस।

चितलाई = चि०, १६१।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा) मन या ध्यान लगाकर।

चितलावे = चि०, १८८।
[क्रि० प्रे०] (ब्र.भा.) मन लगाये, ध्यान लगाये।

चितवत = चि०, ३।
[क्रि० सं०] (ब्र. भा.) किसी वस्तु को ध्यान पूर्वक देखना।

चितवन = का० कु०, २२। का० ३४। झ०, २२,
[सं० स्त्री०] ३१ ।ल० २०।
(हि.) ध्यान पूर्वक ताकने या देखने की क्रिया
या भाव, कटाक्ष।

चिता = का०, ५, ३३, २७३।
[सं०स्त्री०] चुनी हुई लकड़ियों का ढेर जिस पर
(सं०) शव जलाया जाता है।

चिताभस्म = चि०, ७२।
[सं० पु०] (सं.) चिता की राख।

चिति = का०, २४२। झ०, ३४।
[सं. स्त्री०] चिता, समूह, ढेर, चुनाई। दुर्गा। चैतन्य।
(सं०) ईंटों की जोड़ाई।

चिति केन्द्रों = का०, १६२।
[सं० पु०] वह मध्य स्थान जहाँ से चेतना आती
(सं.) है। अन्तःकरण।

चितिमय = का०, २५२।
[वि०] (सं०) चैतन्य से परिपूर्ण।

चितेरी = आं०, २२। ल०, ६४।
[सं० स्त्री०] चित्र बनाने वाली स्त्री, चित्रकार
(हि.) का स्त्री लिंग।

चितेरे = चि०, ६९।
[सं० पु०] (हि.) चित्र बनाने वाले, चित्रकार।

चितेरो = चि०, १६३।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) चित्रकार, चितेरा।

चितै = चि०, १, १७४।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) ध्यानपूर्वक देखकर।

चितौन = चि०, ५६।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) दे०, चितवन।

चित्कला = का० कु०, ६४।
[सं० स्त्री०] (सं.) हृदय की कला। अन्तर की कला।

चित्त = का० कु०, ५१, ५३। का० १४८।
चि०, ४८, १५६, १४८, १६८, १७०,
१७१। प्रे० ९।

[सं० पु०] (सं.) अन्तःकरण की एक वृत्ति, मन दिल।

चित्त-कल्पने ! चि०, १५।
[सं० पु०] (सं.) हे चेतन कल्पने ! मन की कल्पने !

चित्त-मन्दिर = का० कु०, ६२।
[सं० स्त्री०] (सं.) मन रूपी मन्दिर या देवालय।

चित्तरंजन = चि०, १५४।
[सं० पु०] (सं.) मन की प्रसन्नता, हृदय का आनन्द।

चित्र = का० कु०, ५१, ११४। का०, १२०,

१४७, १५२, १७५, १७६, १७८, १८०, २४५, २४७। चि०, ४६, १४१। म० ८। ल०, २६, २८, ३७, ६१, ७२।

[सं० पु०] (सं.) तिलक, तस्वीर। अलंकार। एक प्रकार का वर्णवृत्त। आकाश। एक प्रकार का कोढ़। एक यम का नाम। चित्रगुप्त। रेंड का पेड़, अशोक का पेड़, चीते का पेड़। धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक। काव्य में एक अलंकार।

[वि०](सं.) विचित्र, विस्मयकारी, चितकबरा, कई रंगों का।

चित्रकार = का०, ६४।

[सं० पु०] (सं.) चित्र बनाने वाला, चितेरा।

चित्रकूट = का० कु०, ६५।

[सं० पु०] (सं.) एक स्थान का नाम जहाँ वन-गमन के समय भगवान रामचन्द्र ने निवास किया था।

चित्र-पट = ल०, १४।

[सं० पु०] (सं.) चित्राधार, स्क्रीट, सिनेमा का परदा।

चित्र-पट-सा = क०, ८।

[वि०] (सं.) चित्रपट के समान, रंगविरंगा, अस्थायी।

चित्र-पटी = का०, २५८। भ०, ३४। ल०, ७२।

[सं० स्त्री०] (सं.) दे० 'चित्रपट'।

चित्र-लिखा-सा = का० कु०, ६५। चि०, ५६।

[वि०] (सं.) लिखे हुए चित्र के समान, मूक, अचंचल, स्थिर।

चित्र-सा = का०, १८३।

[वि०] (सं.) चित्र के समान, मूक, स्तब्ध अचंचल, स्थिर।

चित्र-सी = का०, १६८।

[वि०] (सं.) दे० 'चित्र सा'।

चित्रसारी = ल०, ५६।

[सं० स्त्री०] (सं.) रंग महल, वह घर जहाँ चित्र टँगे या दीवार पर बने हों।

चित्रित = आं, ३०। का०, ६४। चि०, ६६।

[वि०] ल०, ५६।

(सं.) चित्र द्वारा दिखाया हुआ, जिस पर चित्र बने हों।

चित्रों = का०, १५६।

[सं० पु०] (हिं.) 'चित्र' का बहुवचन।

चिनगारी = का०, ५८।

[सं० स्त्री] (हिं.) आग का छोटा कण या टुकड़ा।

चिनगारियाँ = का०, ६२।

[सं० स्त्री०] (हिं.) आग के छोटे कण या टुकड़े।

चिनगारी-सी = चिनगारी के समान या जलाने की

[वि०] (हिं.) क्षमता रखनेवाला।

चिह्न = का०, २५।

[सं० पु०] (सं.) निशान, पताका, किसी प्रकार का दाग या धब्बा।

चिह्न सा = का०, ३१।

[वि०] (सं.) चिन्ह की तरह।

चिरंजीव = चि०, ७४।

[वि०] (सं.) चिरजीवी तक।

चिरंजीवी = का० कु०, ६१। चि०, ४३।

[वि०] (हिं) बहुत दिनों तक जीने वाला, दीर्घायु।

चिरंतन = का०, १६, ८६, १५७।

[वि०] (सं.) पुरातन, पुराना।

चिर = आं, ३०, ५५, ७८। का०, ३५, ८७,

[वि०] (सं) १४८, १५१, १६५, १७७, १६८,

[क्रि० वि०] (सं) २१७, २२६, २३६, २३७। चि०, ६०। प्रे०, ५, २३। ल०, ६, १०, ३४, ४०, ४३।

बहुत दिनों का, दीर्घ कालवर्ती। बहुत दिन। अधिक समय तक।

चिरकिशोरवय= का, १०।

[वि०] सदा ग्यारह से पन्द्रह वर्ष की अवस्था

(सं.) वाला, सदा किशोर रहने वाला।

चिर-चंचल = का०, १४०।

[वि०] सदा चंचल रहने वाला, अव्यवस्थित,

(सं.) अधीर।

चिर-चिंतन = का०, १६६।

[सं० पु०] (सं.) बार बार स्मरण या ध्यान।

चिर-जीवन-संगिनी=आं०, ७५।

[वि०] (सं.) सर्वदा जीवन के साथ रहने वाली पत्नी।

चिर-तापित = चि०, ५६।

[वि०] (सं.) बहुत दिनों से तपाया हुआ या पीड़ित किया हुआ या सताया हुआ।

चिर दुखी = प्रे०, २२, २३।

[वि०] (हि.) बहुत दिनों से दुख भोगने वाला।

चिर-निद्रे ! = का०, १८।

[सं० स्त्री०] (सं.) हे मृत्यु !

चिर निराशा= का०, २१७।

[सं० स्त्री०] (सं.) कभी पूर्ण न होने वाली आशा या अभिलाषा।

चिर-निवास = का०, १५६।

[सं० पु०] (सं.) जहाँ हमेशा निवास होता हो जैसे अज्ञान, जहाँ मोह का हमेशा निवास रहता है।

चिर-प्रवास = का०, १५६, १७८।

[सं० पु०] (सं.) बहुत दिन तक या हमेशा अपने प्रियजन से दूर रहने का भाव सूचक शब्द। चिरकाल से प्रिय से विलग निवास।

चिर-बंधन-हीन= का०, १६१।

[वि०] (सं.) सदा बंधन में न रहनेवाला या हमेशा बंधन से रहित। माया से परे या मुक्त।

चिरबंधु = का० कु०, ६८। का०, ६४।

[वि०] (सं.) सदा बंधुत्व की भावना रखनेवाला या बंधु की तरह आचरण करनेवाला।

चिर बसंत = का०, २६५।

[सं० पु०] (सं.) अनन्तकालिक वसंत, जहाँ सदा मधुमास रहता हो या सरसता एवं सरलता रहती हो।

चिर मंगल = का०, २३६।

[सं० पु०] (सं.) सदा कल्याण।

चिर-मिलित= का०, २८६।

[वि.] हमेशा मिलने वाली। सर्वदा प्राप्त होने (सं.) योग्य।

चिर मित्र = म०, ११।

[सं० पु०] अनादिकालिक मित्र या साथी। अटूट (सं.) साथी। पुराना दोस्त।

चिरमुक्त = का०, १४५, २८३।

[वि०] (सं.) कभी बंधन में न पड़नेवाला।

चिर-मौन = आं०, ७७।

[वि०] (सं.) सदा मूक रहने वाला, कभी न बोलने वाला।

चिर-विषाद-विलीन=का०, २२७।

[वि०] (सं) सर्वदा खिन्नता में लीन रहने वाला, जिसका खिन्नता में ही लय हुआ हो या जिसने सदा से विषाद में अपना अस्तित्व खो दिया हो, सतत विषाद-मय।

चिर-संगिनी = प्रे,० ६६।

[वि०] (सं.) हमेशा साथ रहने वाली, कभी विमुक्त न होने वाली। सहधर्मिणी।

चिर-संचित = ल०, २६।

[वि०] (सं.) बहुत दिनों से इकट्ठा किया हुआ।

चिर-सुन्दर = आं, १६। का०, २८६।

[वि०] (सं.) सदा सुन्दरता से युक्त, जो विकार से रहित हो।

चिलियानवाला = ल०, ५१।

[सं० पु०] (हि.) पंजाब में एक स्थान विशेष का नाम।

चीत्कार = का०, १६०, १६८।

[सं० पु०] (सं.) चिल्लाहट, हल्ला, आह या दुःख से एकाएक निकला हुआ शब्द, चीखना।

चीन्हों = चि०, ६६।

[क्रि० सं०] (ब्र.भा.) पहचाना।

चीनांशुक = चि०, ६२। झ०, २२।

[सं० पु०] (सं.) चीन देश का बना हुआ कपड़ा, सिल्क।

चीर = का०, १३६, १५७, २५०। ल०, ३७।

[सं० पु०] (सं०) पेड़ की छाल, चिथड़ा, गौ का थन, चार लड़ियों वाली मोतियों की माला।

[सं० स्त्री०] (सं.) एक प्रकार का बड़ा पक्षी। बौद्ध भिक्षुकों के पहनने का कपड़ा, एक प्रकार का पेड़।

वस्त्र, कपड़ा। सोसा नाम की धातु। चीरने की क्रिया का भाव।

चुँगत = चि०, १४३।
[क्रि० स०] (ब्र.भा.) चोंच द्वारा दाना या कीड़े-मकोड़ों के चुनने की क्रिया सूचक शब्द। उठा लेता है।

चुँगना = आं०, २३, ४३।
[क्रि० सं०] (हि.) चिड़ियों का दाना चुनना, उठालेना।

चुम्बक = चि० १५।
[सं० पु०] (सं.) लोहे को अपनी ओर खींचने वाला धातु या पत्थर, चुम्बन करने वाला। ग्रन्थों को इधर-उधर उलटने वाला।

चुम्बन = आं० २६, ३२, ४६। का०, १२, २८, ६१, १३६, १८०, चि०, ६७। झ०, ४६। ल०, ३०, ४०, ४३।
[सं०पु०] (सं.) दे० 'चुम्बक'। चुम्मा, बोसा।

चुम्बन-उल्लास-भरी = का०, कु०, ५४।
[सं० पु०] (सं.) उल्लास में आकर लिया हुआ चुम्बन। चुम्बन की आकांक्षा।

चुम्बित = का०, १६४। ल०, १०।
[वि०] (सं.) जिसका चुम्बन लिया जाय। चुम्बन ली गई। प्यार किया हुआ। चुमा हुआ।

चुम्बी = का०, १००।
[वि०] (सं.) [सं०स्त्री०] (सं.) चूमने वाला। चूम्मा, बोसा।

चुआ = का०, कु०, ६७।
[क्रि० सं०] (हि.) 'चूना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

चुकना = क०, ११, २०। प्रे०, ११। ल०, ४४, ५०।
[क्रि० अ०] (हि.) बेबाक होना, निबटना।

चुकाना = आं०, ६२। क, २६। का०, १०६, ११६, १७८। म०, १८।
[क्रि० स०] (हि.) बेबाक करना, निबटाना।

चुटकी = का० कु०, १६। का०, १८४।
[सं० स्त्री०] (हि.) अँगूठा और बीच की उँगली की वह स्थिति जो दोनों को मिलाने या एक को अन्य पर रखने से होती है, उँगलियों में पहनने का चाँदी का एक गहना, पेंचकश, दरी के ताने का सूत, कपड़ा छापने की रीति।

चुनते = का०, १८१।
[क्रि० स०] (हि.) दे० 'चुनना'।

चुनना = का , ३२, १२१।
[क्रि० स०] (हि.) बीनना, समूह में से एक-एक चीज अलग करके निकालना, ढेर में यथारुचि एक-एक को छाँटना, सजाना, जोड़ाई करना, शिकन डालना।

चुन-चुन = आं०, ५८।
[क्रि० स०] (हि.) एक-एक करके चुनना।

चुनि = चि०, ६१।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) चुनकर।

चुनि राखे = चि०, ७०।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) चुनकर रखना या चुन लेना।

चुप = आं०, ३१, ५७। क०, १६। का० कु०, २१। का०, ६, ३६, ७७, १०४, १५०, १७७, १६६, २२८, २२६, २३४, २७७।
[वि०] (हि.) मौन, खामोश। पक्के लोहे की वह तलवार जिसमें न टूटने के लिए कच्चा लोहा लगा होता है।

चुपके = आं०, ५७। का०, ६३, ६७, १२४, १५०, २४६।
[अव्यय] (हि.) धीरे से, बिना किसी प्रकार के शब्द के।

चुप-चाप = आं०, ४५। का०, ४५, ७७, १४३, २०६, २३०, २३३, २४०। चि०, १६५। प्रे०, ६। ल०, १२।
[वि०] (हि.) शान्त, मौन, निःशब्द।

चुपधीर = चि०, १६५।
[वि०] (हि.) गंभीर और धैर्यवान।

चुप होकर = का०, १७७।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) मौन होकर।

चू = आं०, ४५। का०, २२१।

[क्रि० अ०] (हि.) गिरना, टपना, गर्भपात होना।

चूक = का०, २७०। चि०, ४१, १८३।
[सं० स्त्री०] ल०, ४२।
(हि.) भूलने या चूकने की क्रिया या भाव, भूल से छुटी हुई बात या छुटा हुआ काम।

चूड़ा-मणि = चि०, ३१।
[सं० पु०] सिर का एक गहना, सीस का फूल, सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु।
(सं.)

चूनिबो = चि०, ५७।
[क्रि०सं०](ब्र.भा.) दे० 'चुनना'।

चूमना = आं०, ९। क०, १७। का०कु०, १३।
[क्रि० सं०] का०, १६, ३६, १४२, १६४, १५०, १५२, १५७, १५९, २३३। चि०, ३८, ६३, ६८। भ०, २८, ७३,। ल०, २७, ६०।
(हि.) होंठो से किसी का कोई अङ्ग स्पर्श करना। चुम्मा लेना। विवाह के समय, या पूर्व मड़वा कर्म हो जाने पर सुहागिनों का वर या दुलहिन के लिए अक्षत लेकर सर्वांग स्पर्श करते हुए मंगल कामना करने की क्रिया।

चूमि = चि०, ६०, ६२।
[पूर्व क्रि० स०] (ब्र.भा.) चूम कर।

चूर = का० १३। चि०, १५। भ०, ३२।
[सं० पु०] ल०, ६६, ५७।
(हि.) किसी वस्तु के टूटे या पिसे हुए बारीक टुकड़े, चूर्ण, चूरा, बुकनी, पाचन की दवा, चूर्ण।

चूर्ण = का०, ५८, ७३, १७६, १८१, ल०, ५७।
[सं० पु०] दे० 'चूर'।
(सं.)

चेत = चि०, ३४।
[सं० पु०] चेतना, होश, ज्ञान, बोध, सावधानी, चौकसी, स्मरण, सुध, ख्याल।
(सं.)

चेतत = चि०, १६८।
[क्रि०स०] (ब्र.भा.) चेत करना, स्मरण करना।

चेतन = का० कु०, ६४। का०, ३, २५, ५६, १६३, २४१, २५२, २५३, २६४, २८६, २८८, २८६, २६४। ल०, ४६, ५८।
[वि०] चेतना युक्त। आत्मा, प्राणी, ईश्वर।
[सं० पु०]
(सं.)

चेतनता = क०, ६, १२६, १२८, १६३, १६६, १६१, २४०, २४२, २८६, २६४। ल०, ३३।
[सं० स्त्री०] चेतन का धर्म्म, चैतन्य, संज्ञा, होश।
(सं.)

चेतनते = का०, १८४।
[सं० स्त्री०] (सं.) चेतनता का संबोधन।

चेतन-संसार= आं०, ६२।
[सं० पु०] वह संसार जिसमें चेतनता हो, प्राण हो या आत्मा हो।
(सं.)

चेतना = आं० १६, ५६। का० १७, ३५, ५१, ५८, ६६, ६०, ८१, ८६, ६०, ६३, १०२, १२२, १५६, १६२, २१६, २६०। ल०, २६। ल०, ७४।
[सं० स्त्री०] बुद्धि या बोध की वृत्ति या शक्ति, चेतनता।
(सं.)

चेतना-सूत्र = कु०, ११६।
[सं० पु०] चेतनता का सूत्र, चेतनता से परिपूर्ण होने का सूचक।
(सं.)

चेतना-तरंगिनि = आं०, ८।
[सं० स्त्री०] चेतना या ज्ञान रूपी नदी या धारा, चैतन्यता।
(सं.)

चेति = चि०, १७०, १७१।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) चेतकर।

चेतिहै = चि०, १७०।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) चेत करेंगे।

चेतिहौं चि०, १७०।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) चेतूँगा या चेत करूँगा।

चेतो = चि० ४८।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) चेतने की आज्ञा देना।

त = चि०, १७ ।
[सं०पु०] (हि.) वर्ष का पहला भारतीय मास ।

चैतन्य = आं० ११, २० । का०, १७१ ।
[सं०पु०] चेतन आत्मा, ज्ञान, चेतना, ब्रह्म,
(सं.) ईश्वर । बंगाल के एक प्रसिद्ध महात्मा ।
[वि०] (सं.) चेत या होश में हो, सचेत ।

चैती = भ्रु०, ४८ ।
[सं० स्त्री०] चैत वैसाख में कटने वाली फसल तथा
(हि.) गाये जाने वाले गाने ।
[वि०] (हि.) चैत सम्बन्धी, चैत का ।

चैन = का०, ७१ । चि०, १७१, १७४ ।
[सं० पु०](हि.) आराम, सुख ।

चोट = का०, ३६, २६८ । ल०, २० ।
[सं०स्त्री०] किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु के वेग
(हि.) पूर्वक आकर गिरने से होने वाला आघात जो बहुधा अनिष्ट या हानि करता है, आघात की क्रिया से होने वाली हानि या अनिष्ट और शरीर पर होने वाला घाव, जखम, आक्रमण के समय होने वाला घाव, आक्रमण के समय होनेवाला हथियार का वार, किसी को हानि पहुंचाने के लिए चली जाने वाली चाल, चुभती हुई बातों की बौछार, व्यंग, ताना, वार ।

चौंक = का०, २१९ ।
[सं० पु०] भय आदि से अचानक काँप उठने का
(हि.) भाव, चौकन्नापन, चकित होने का भाव, शंकित होने का भाव ।

चौंकना = प्रे० १२ । ल०, ७२ ।
[क्रि०अ०] भय आदि के कारण अचानक काँप
(हि.) उठना, चौकन्ना या खबरदार होना, चकित होना, भौचक्का होना, शंकित होना, भड़कना ।

चौकड़ी = का० कु०, ७३ । का०, १७९ । चि०,
[सं० स्त्री०] १७६ ।
(हि.) हिरन का चारो पैर एक साथ उठते हुए दौड़ना, छलाँग ।

चौके = का०, १६५ ।
[क्रि०अ०] (हि.) दे० 'चौंकना' चौंक गये ।

चौगूनी = चि०, १०६ ।
[वि०] जितना हो उसका चार बार और,
(हि.) चतुर्गुणा ।

चौधारे = प्रे० २२ ।
[वि०] (हि.) चारो तरफ से धारीदार ।

चौदहो भुवन = आं० ५३
[सं० पु०] चौदहो लोक [सात ऊपर के और
(सं.) सात नीचे के लोक] ।

छ

छंद = का० कु०, ८६ । का० ८६, ६०, १६५,
[सं० पु०] चि०, ६, १६६ । भ्रु० ११, ३८, ४५,
(हि.) ६६ ।
पद्य । वेग, चाल, रंग ढंग । अभिप्राय । एकान्त । निर्जन । आवरण । वर्णमात्र गिनती के विचार से होने वाली वाक्य रचना ।

छककर = आं० ३६ ।
[पूर्वा०क्रि०](हि.) पीकर । अघाकर । परेशान होकर ।

छकता = का०, १२६ ।
[क्रि०] (हि.) पीता । अघाता । परेशान होता ।

छका = का० कु०, ६७, ७८, १०१ ।
[क्रि०] (हि.) परेशान हुआ ।

छज्जे = का० कु०, १०६ ।
[सं० पु०] कोठे या पाटन का दीवार से निकलने
(हि.) वाला भाग । ओरी ।

छटा = का० कु०, ४१, ६८, ११४ । का०,
[सं० स्त्री०] ६७ । चि०, ७१, १५८ । भ्रु० १५,
(हि.) ३६, ६३ । म० ७ ।
शोभा । बिजली ।

छड़ = का०, ८६ ।

[सं० पु०] (हि.) धातु या लकड़ी का लम्बा पतला टुकड़ा।

छड़ी = का० कु०, १०६।
[सं० स्त्री०] लकड़ी जिसे हाथ में लेकर लोग चलते हैं।

छत्री = चि० ६४।
[वि०](हि.)[सं०पु०]छत्र धारण करनेवाला क्षत्रिय। नाई।

छद्म = आं०, ४०।
[सं०पु०] (हि.) धोखा। छिपाव। गोपन।

छनना = का०, ६४, १७६। ल० ३१।
[क्रि० अ०] (हि.) किसी चूर्ण अथवा तरल पदार्थ का कपड़े आदि में से इस प्रकार गिरना कि मैल या सीठी ऊपर रह जाय। पात्र जिससे छाना जाय।

छपछप = का०, २४६।
पानी में तैरने या किसी वस्तु के गिरने का शब्द।

छपिके = चि०, ६६।
छिपकर। छिप गया।

छमकि = चि०, १८८।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) थोड़ा उछल कर।

छमहु = चि०, ४०।
[क्रि०] क्षमा करो।

छयो = चि०, १८४।
[क्रि०] (ब्र.भा.) छाया है

छरिलीने = चि०, १७१।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छल लिया।

छरी = चि०, ७३।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) छड़ी।

छल = आं०, ४०, ४६। का० कु०, ११३। का०, १२, १३५, १८८, १६८, २४८। चि०,१०३। भ०, ३८, ८०। ल०, ५३, ७७।
[सं० पु०](सं.) कपट, धोखा। धूर्तता।

छलक = का०, १११।
[सं० स्त्री०] (हि.) छलने की क्रिया।

[सं० पु०] (सं.) छल करने वाला।

छलकना = आं०, ४७। का०, १०५। चि०, ६६। [क्रि०] (हि.) किसी तरल पदार्थ का उछलकर बाहर निकलना।

छलकाना = भ०, ५३।
[क्रि०] (हि.) किसी तरल पदार्थ को उछालना।

छलकी = आं०, ६८। म०, १३।
[क्रि०] (हि.) छलना नामक क्रिया का भूतकालिक स्त्रीलिंग रूप।

छलके = का०, २६१।
[क्रि०] (हि.) छलना नामक क्रिया का भूतकालिक रूप।

छल-छन्द = का० कु०, ५६। का०, ८२।
[क्रि०] (हि.) कपट। धूर्तता।

छलछन्द-सों = चि०, १६६।
[क्रि० वि०] (ब्र. भा.) कपट से। धूर्तता के कारण।

छलछल = ल०, २०, ४८।
[सं० पु०] (हि.) पानी के छलकने या हिलने का शब्द।

छलछात = का०, कु०, ६३।
[सं० पु०] (हि.) धोखा। कपट। छल-छद्म।

छलछालो का० कु०, १२।
[सं० पु०] (हि.) छलरूपी छाली।

छलछाया = का०, २०८।
[सं० स्त्री०] (हि.) छल रूपी छाया।

छलतो = का०, ११८, १८२।
[क्रि० वि०] धोखा देती।

छलना = आं०, २४ ५७। का०, ८, १५६।
[क्रि०] (हि.) चि०, १८१। भ०, ६४,। ल०, ५२, ६८, ७८, ७६।
धोखे या भुलावे में डालना। छल।

[सं० स्त्री०](हि.) धोखा।

छल-बलिवेदी = ल०, ५४।
[सं० स्त्री०] (हि.) छल रूपी बालि वेदी।

छलसो = चि० १०७।
[सं०पु०](ब्र.भा.) छल से।

छला = भ०, ६४।
[क्र०] (हि.) छला हुआ।

छली = का० कु०, ४३। का०, १३१, १६६,

[क्रि०] (हि.) १८६, २४३ । चि०, १५६ ।
[वि०] (हि.) धोखा खायी । कपटी धोखेबाज ।
छले = का०, १४७ ।
[क्रि०] (हि.) कपटें । धोखा खायें ।
छवि = आं०, १८, ३३ । का० कु०, ३६ ।
[सं० स्त्री०] का०, ४०, ४७, ६८, ८६, ६२, १८४,
(सं०) २२२, २३६ । चि०, ३६, ४७, ६६,
१६१, १६६, १८१ । झ०, ३४, ३६ ।
म०, १६ । ल०, २६ ।
शोभा । कान्ति । प्रभा ।
छवि-किरणे = झ०, ५५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.] शोभा की किरण ।
छवि किरनो = चि०, १८२ ।
[ब्र भ.] शोभा की किरणों ।
छवि की रेखा = का०, २३६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) शोभा की लकीर ।
छविधाम = का०, ४६, ८७ । चि०, ४, १५६ ।
[वि०] (हि.) शोभा की घर । बहुत सुन्दर ।
छविधारी = चि०, १६२ ।
[वि०] (हि.) शोभावान । सुन्दर ।
छविमान = का०, २६, ८६ ।
[वि०] (हि.) शोभावान । सुशोभित ।
छीवलखि = चि०, ७० ।
[पूर्व० क्रि०] ब्र. भा. शोभा देखकर ।
छविवन्त = का० कु, १३ ।
[वि०] (हि.) शोभावान । सुन्दर ।
छवि-सर = आं०, ४ ।
[सं० पु०] (सं.) शोभा रूपी सर ।
छहरी = झ०, १५ ।
[क्रि०] (हि.) बिखरी । छिटकी ।
छाँह = का०, ३ । प्रे०, १६ ।
[सं. स्त्री०] (हि.) छाया ।
छाँही = चि०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) छाया में ।
छा = आ० ५४ ।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) घिर कर । घेर कर । ढँक कर ।

छाइ = चि०, ४३, १८१ ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) छाकर, ढँक कर ।
छाई = आं०, १४, ३३ । का० कु०, ३६ ।
[क्रि०] का०, १२६, १५६, २८१, २८३,
(हि.) २६३ । चि०, ४६, ६१ । ल०, ३३ ।
छा गई । छाई हुई है ।
छाजत = चि०, ५५, १५६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छाता है ।
छाजाती = आं०, १६, ११० ।
[क्रि०] (हि.) छा जाती है ।
छाजन = का०, १४६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) छप्पर । जिससे छापा जाय ।
छाजन-सी = का०, ६८ ।
[वि०] (हि.) छप्पर के समान ।
छाजी = चि०, ६६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छाती ।
छाजै = चि०, ४० ।
[वि०] (ब्र. भा.) छाये हुए । सुशोभित ।
छाड़िके = चि०, ११, १४, २०, ५३, १६२ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) छोड़कर ।
छाड़्यो = चि०, ४२, ५४ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छोड़ दिया ।
छाती = आं०, ६० । का० कु०, २७ । का०,
[सं० स्त्री०] ११, ४०, १५२, १७७, १६८, २४२ ।
(सं.) झ०, ८६, ६१ । ल०, ३७, ५२, ५८,
५७, ६७, ७० ।
वक्षःस्थल । सीना । छापी हुई ।
छात्र = का० कु०, ७ ।
शिष्य । विद्यार्थी ।
छाप = क०, २७ । का०, २८८ ।
[सं० पु०] चिह्न । मुद्रा ।
छाया = आं०, १८, २४, ४२, ६२, ७५ । क०,
[सं० पु०] १७ । का० कु०, २२ । का०, ३१,
३३, ३७, ३८, ६६, ६७, ७०, ७३,
७६, ८७, ८८, ६०, ६१, ६७, १००,
१०४, ११२, ११४, ११७, ११६,

१२३, १२७, १५७, १५६, १६७, १६६, १८१, १८२, १८४, १८६, १६३, २०६, २१२, २१६, २१६, २२०, २२१, २२७, २२६, २३३, २३८, २४०, २४५, २४६, २६२, २६४। प्रे०, ४, १४, १५, १६। म०, ३। ल०, ११, १४, २७, ३६, ५३, ७९, ८०।

छाह। वैसा ही। अनुहार।

छायानट = आं०, ३३।
[सं० पु०] (हि.) छायारूपी नट।

छाया-पथ = आं०, ४८। का०, ८। झं०, २३।
[सं० पु०] प्रे०, १०। ल०, ३६।
आकाश गंगा।

छायापथ-समीप = का० कु०, ११४।
[अ०] (सं०) आकाश गंगा के निकट।

छाया-पथ-सा = का०, २२१।
[वि०] (हि.) आकाश गंगा के समान।

छायामय = का०, २६२, २६३।
[वि०] (हि.) काला। अदृश्य। छाया से युक्त।

छाया-सा = क०, १५। का० कु०, ८२। का०, १०,
[वि०] १६५, १७०। प्रे०, ४६।
(हि.) छाया के समान।

छाया-सो = चि०, ७१
[वि०] (ब्र. भा.) छाया के समान।

छाये = का०, २१५।
[वि०] (हि०) आच्छादित।

छाले = आं०, ११। का०, ६०, १८०, २६८।
[सं० पु०] (हि.) फफोले।

छावत = चि०, ४२, ६१, ७२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छा जाता है।

छिछला = झं०, ४२।
[वि०] (हि.) पतला, कम गहरा।

छिटक रहे = प्रे०, १२। ल०, ६।
[क्रि०] (हि.) बिखर रहे। छा रहे।

छिटकाकर = आं०, ८।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) बिखेर कर, छितरा कर।

छिटकाये = आं०, ६०।
[क्रि०] (हि.) बिखराये।

छिटकी = चि०, १६४।
[क्रि०] (हि.) बिखरी। छितराई।

छिड़क = का०, कु०, १२४। झं०, ७०।
[क्रि०] (हि.) पानी की बूँदें बिखेर कर।

छिड़कना = का०, कु०, ६३। ल०, २३, ४१।
[क्रि०] (हि.) इधर-उधर फैलना। बिखरना।

छिड़केगा = का०, १५२।
छिड़कना क्रिया का भविष्यत् रूप।

छिड़ना = आं०, २६।
आरम्भ-होना छिड़ना।

छितिज = चि०, १६३।
[सं० पु०] (हि.) देखिए० क्षितिज।

छिद्र = का०, २२६।
[सं० पु०] (सं.) छेद। दोष। बिल।

छिद्यो = चि०, १८४।
(ब्र. भा.) छेदाहुआ।

छिन = म०, २२। ल०, ६६।
[सं० पु०] (हि.) क्षण।

छिनाहुआ = झं०, ३१।
[क्रि०] (हि.) बलात लिया हुआ।

छिन्न = का०, १८५ ११२। झं०, ३०।
[वि०] लि०, ७०।
कटा हुआ। खंडित।

छिन्न-पत्र = का०, कु०, ५५।
[सं० पु०] (सं.) पत्तों से हीन। फटा हुआ।

छिन्न-पात्र = ल०, १७।
[वि० पु०] (सं.) टूटा बर्तन।

छिन्नभिन्न = का०, १६८।
[वि० पु०] (सं.) कटा हुआ। टूटा फूटा। तितर-बितर।

छिपके = आं०, २६, ४२। का० कु०, १०।
[पूर्व० क्रि०] का०, २६, १४६, १५६, १६६, १७८,
(हि.) १८६, २८४, २६३। म०, १४। ल०, ३८, ४६।

आंखों की ओट में होकर। न दिखाई देकर।

छिपकर = ल०, ७६।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) देखो-छिपके।
छिपतही = चि०, ७०।
[क्रि०] (ब्र.भा.) छिपते ही।
छिपती-सी = का०, ९७।
[वि० स्त्री०](हि.)=छिपते हुए के समान।
छिपना = का० कु, २४। चि०, २८, १६६।
[क्रि०] भ्रु०, ६४। प्रे०, १, १६, ल०, १८,
(हि.) ७४।
ओट में आना।
छिपा = का०, ८१, ८६, १७७, १८६।
[क्रि०] (हि.) छिप गया।
छिपाना = आं०, १६, ६०। का०, ५३,। चि०,
[क्रि० पु०] १५८, १६३, १७७, १८६। भ्रु०६३।
(हि.) ल० ७०।
आंख से ओझल करना। प्रकट न करना। गुप्त रखना।
छिपावत = चि०, ७०।
[क्रि०] (ब्र.भा) छिपाता है।
छिपि = चि०, १८६।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र.भा.) छिपकर।
छिपे = ल०, ६१।
[क्रि०] (हि.) अदृश्य हुए।
छिपी = का० कु०, ६, १२४। का०, ६, १६,
[क्रि०] १८०। चि०, २६।
(हि.) छिप गई।
छिप्यो = चि० ५३।
[क्रि०] (ब.भा.) छिप गये।
छिरकि = चि०, २३।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) छिड़ककर।
छिल-छिलकर = आं०, ११।
[पू० क्रि०] (हि.) रगड़ खा-खा कर।
छिले = का० कु०, १२।
[क्रि०] (हि.) छिल गये।

छींट = का०, ३०।
[सं० स्त्री०] महीन बूँद। जल कण। रंगीन बेल-
(हि.) बूँटेदार कपड़ा।
छीनकर = ल०, ५३।
[पूर्व० क्रि०] जबर्दस्ती ले लेना। काटकर अप-
(हि.) हरण कर।
छीन = का०, ६६, २२०। चि०, १५।
[वि० पु०] दुबला-पतला, सूक्ष्म, क्षयशील, घटा
(हि.) हुआ। जिसमें क्षीणता का भाव हो।
छीनना = आं०, ४६। चि०, १५६।
[क्रि०] (हि.) हरणकर लेना।
छीना = का०, १६२, १४०।
[क्रि०] (हि.) हरण कर लिया।
छिनी = का०, १६९। प्रे० ६६।
[क्रि०] (हि.) अपहरण कर ली गई।
छीर = चि०, १४६।
[सं० पु०] (हि.) दूध, द्रव या तरल पदार्थ, जल, पानी, पेड़ों का रस या दूध। खीर।
छुआ = का०, २२७।
[क्रि०] (हि.) स्पर्श किया।
छुई-मुई = का०, १११।
[सं० पु०] (हि.) एक छोटा पौधा। लजाधुर। अलम्बुषा। लाजवन्ती।
छुट = आं०, ५५। का०, २४८। २८७।
[अव्यय] (हि.) अतिरिक्त, सिवाय।
छुटकारा = म० २३।
[सं० पु०] (हि.) मुक्ति, रिहाई, निस्तार, किसी कार्य से मुक्ति।
छुटिजात = चि०, १३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छुट जाता है।
छुटिहै = चि०, ६०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छुटि जायेगा।
छुटी = म०, ८।
[क्रि०] (हि.) छुट गई।
छुटे = क०, ३२। का०, १६३। ल०, ४८।
[क्रि०] (हि.) छुट गये।

छुट्टी = का०, १६६ । म०, १७ ।
[सं०स्त्री०] छुटने या छोड़े जाने की क्रिया ।
(हि.) छुटकारा, कार्योपरान्त मिलने वाला अवकाश । फुर्सत, नियमित रूप से कार्य बन्द रहने का काम ।

छुट्यो = चि०, ६, ५८ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छुट गये ।
छुड़ावन = चि०, ६५, १५८ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छुड़ाने के लिये ।
छुड़ाये = आं०, ३७ ।
[क्रि०] (हि.) छुड़ा दिये ।
छू = आं०, ४२ । भ०, २१ । प्रे०, ३, ११ ।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) फूँक कर । स्पर्श करके ।
छूओमत = का०, २७१ ।
[क्रि०] (हि.) स्पर्श मत करो ।
छूकर = आं०, २६, ७१ । ल०, ५९ ।
[पू० क्रि०] (हि.) छुना क्रिया का पूर्वकालिक रूप ।
छूछा = आं०, ३२ ।
[वि० पु०] (हि.) रिक्त, खाली ।
छूट = का०, ४०, १४७, २००, २३९, २५६, २६३ ।
[सं० स्त्री०]
(हि.) छुटने की क्रिया का भाव । असावधानी के कारण कार्य के किसी अंग पर ध्यान न जाने की अवस्था । वह अनुमति जो किसी को निज या कोई कार्य करने अथवा न करने के लिये मिले ।

छूटत = चि०, ३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छूट जाता है ।
छूटता = आं०, ३७ ।
[क्रि०] (हि.) मुक्त हो जाता है ।
छूटती = का०, ६२ ।
[क्रि०] (हि.) छूटती है ।
छूते = का०, १२६ ।
[क्रि०] (हि.) स्पर्श करते ।
छूती हैं = प्रे०, १ ।
[क्रि०] (हि.) आलिंगन करती हैं ।

छूने में = का० ६६, २५७ ।
[सं० पु०] (हि.) स्पर्श करने में ।
छेड़ना = भ्र०, ३१ ।
[क्रि० पु०] तंग करना, विरोधी को चिढ़ाना, मजाक
(हि.) करना, चुटकी लेना । कोई काम या बात आरंभ करना ।
छेड़ो = का०, १९३ ।
[क्रि०] (हि.) परीशान करो ।
छू लेती = का०, २६३ ।
[क्रि०] (हि.) स्पर्श कर लेती ।
छूरा = ल०, ७३ ।
[सं० पु०] (हि.) बड़ी छुरी, उस्तरा ।
छेड़छाड़ = का०, कु०, १०० ।
[सं० पु०] (हि.) अनायास छेड़ना ।
छेम = चि०, १७३ ।
[सं० पु०] (हि.) कुशल ।
छोटा = म०, ५ ।
[सं० पु०](हि.) जिसमें छोटापन हो । नाटे कद वाला ।
छोटा-सा = का०, २१६, २८४ । म०, ३, ४ ।
[वि० पु०] (हि.) छोटेपन के भाव का सूचक ।
छोटी-छोटी = का०, २६०, । ल०, ५६ ।
[वि०] (हि.) नन्हीं-नन्हीं ।
छोटी-सी = आं०, ७२ । का०, १४६ १७५ । चि० वि० स्त्री०] ७१ । भ्र०, ५५ । ल०, ४० । म०, ४ ।
(हि.) साधारणता का सूचक ।
छोटे-बड़े = का० कु०, ६ ।
[वि० पु०] (हि.) साधारण और बड़े ।
छोड़ = आं०, ३१ । क०, १४, २८ । का० कु०, ६३, ८३ । प्रे०, ६, १२, १५ । ल०, १२, १३, ४५, ६६, ७३ ।
[वि० पु०] छोड़ने का भाव । विलग होना ।
(हि.)
छोटे-छोटे = प्रे०, ११, २४ ।
[वि०] (हि.) = नन्हें-नन्हें तुच्छ, हीन ।
छोड़ = का०, १५४, १५८, २४८ ।
[अ०] (हि.) = छोड़ना, अतिरिक्त । सिवाय ।
छोड़ि = चि०, ५३, १५६, १७८ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) = छोड़कर ।

छोड़ी = का०, २४१ । म०, १३ ।
[क्रि०] (हि.) त्याग दिया ।
छोड़ू = का०, २३८ ।
[क्रि०] (हि.) छोड़ दूँ ।
छोड़े = का०, २१० ।
[क्रि०] (हि.) छोड़ दिये ।
छोड़ो = का०, १३३, २२८ । प्रे०, २१ ।
[क्रि०] (हि.) मुक्त करो ।
छोर = आं०, ८ । का० कु०, ८, १२ । चि०,
[सं० पु०] १६३, । भ्र०, ८४ ।
(हि.) किनारा, कोर ।
छोह = चि०, १७१ ।
(सं० स्त्री०) (हि.) मोह, अनुराग । ममता । प्रेम ।

ज

जंग = का, १।७। चि० ५४ ।
[सं० स्त्री०] युद्ध, मुर्चा जो लोहे के पात्रों में लग
(फा०) जाता है ।
जंगल = म०, ३२ ।
[सं० पु०] वह स्थान जहां बहुत दूर तक अपने
(सं०) आप उगने वाले पेड़ हों, बन, कानन ।
जंजीरों = आं, २१ ।
[सं० स्त्री०] कड़ियों की लड़ी, बेड़ी, सिकड़ी, किवाड़
(फा.) की कुंडी ।
जन्तु = का०, ६ । का०, १४२, १८५ । चि०,
[सं०पु०] १४३ ।
(सं.) जन्म लेने वाला जीव, प्राणी, पशु,
जानवर ।
जम्बू-द्वीप = चित्र० ६६ ।
[पु० सं०] पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक
(सं.) द्वीप, भारतवर्ष ।
जऊ = चि०, १८४ ।
[अ०] (ब्र०भा०) जो भी, यदि, अगर ।
जकड़ना = का०, १३, १४५ । ल०, १०, ७३ ।
(हि.) २१३ ।
बाँधना, भुज पाश में कसना ।

जग = आं, १६, २४ । का०, १५७, २३५,
[सं०पु] २४२, २८६, २६०, चि०, ३२, ४८,
(सं.) १०६ । प्रे० २५ । ल०, २६, ३५,
४५ ।
संसार, विश्व, चरा चलने वाले ।
जग जनक = प्रे० २३ ।
[सं० पु०] (सं) संसार का पिता, प्रेरक, संचालक ।
जगत = आं०, ६१ । क०, ३२ । का० कु०,
[सं० पु०] ६१ । का०, ३४, ३७, ४०, ४१, ५३,
(सं.) ६२, ६३, ११८ । १२२, २४६, २४२,
२८४, २६० । चि०, १०२ । भ्र०,
६३ । प्रे० १४, १७, २३, ल०, १२,
१३, २६ ।
दे०—जग ।

जगत-गति = म०, २ ।
[सं० स्त्री०] (सं०) संसार की दशा, संसार की गति, चाल ।
जगत नीरवता = का० कु०, ७४ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) संसार की शांति, शांत वातावरण ।
जगत माँहि = चि०, ७२ ।
[स० पु०] (हि.) संसार में ।
जग-मंगल = का०, २२५, २८१ ।
[सं० पु०] (सं) संसार का शुभ, संसार में शुभ कार्य ।
जगत-रङ्गशाला = का० कु०, १२५ ।
[सं० पु०] जगत रूपी नाट्यगृह, संसार रूपी
(सं.) नाटक खेलने का स्थान ।
जगत-सुख-भोग = का० कु०, ३१ ।
[सं० पु०] सांसारिक सुखों का भोग करना ।
(सं) सांसारिक विलास ।
जगता = का०, २३५ ।
[क्रि०पु०] जाग उठना, प्रबुद्ध होना, सचेत होना,
(हि.) क्रियाशील होना ।
जगती = आं०, ४३, ६३, ७४ । का० कु०,
[सं० स्त्री०] ६६ । का०, ३०, ३६, ६५, १०३,
(सं.) १०४, ११४, १२०, १२६, १२८,
१२६, १५७, १७५, १७६ २६२,
२८०, २८१ । ल० ३०, ३१, ३८ ।

पृथ्वी, वसुधा तल, धरातल, जगना क्रिया का वर्तमान कालिक रूप।

जगती-तल = का० कु०, २४।
[सं०पु०] (सं.) पृथ्वी का धरातल।

जगते = का०, १७, १०२, १७८, २७०।
[वि०पु०] सम्बोधन, जगना क्रिया का एक रूप
(हि.) व्यक्ति को पुकारने के लिये उद्बोधन।

जगत्पिता = क०, २६।
[सं० पु०] संसार के पिता, विश्व के रचयिता या
(हि.) उत्पन्न करने वाले। भगवान, ईश्वर।

जगद्वन्द = आं०, ६२।
[सं० पु०] सांसारिक दुविधा, अनिश्चित, भ्रांत
(सं.) सिद्धान्त।

जगद्बन्धु = क०, २६।
[सं० पु०] विश्व का भाई, संसार का संरक्षक
(सं.) या सहायक, ईश्वर।

जगदीश = क०, ३०।
[सं० पु०] (हि.) संसार का स्वामी, विष्णु, शंकर भगवान्।

जगना = आं०, ११। का०, ३७। झ०, २६।
[क्रि०] कार्य करने योग्य चेतना प्राप्त करना।
(हि.) तैयार होना, कटि बद्ध होना।

जगन्नाथ = का०, कु०, ६१।
[सं० पु०] (सं.) संसार का स्वामी, भगवान।

जगन्नियन्ता = क०, ३०।
[सं. पु०] संसार का नियंत्रण करने वाला, विश्व
(सं.) का संचालक।

जगबन्धु = चि०, १५४।
[सं० पु०] (सं.) दे०—'जगतबंधु'।

जगभर = प्रे०, १७।
[सं० पु०] संसार का भरण करने वाला, विश्व का
(सं.) पोषण, विष्णु।

जगमगात = चि०, ६१।
[क्रि० स्त्री०] प्रकाशित होना, दमकना।

जगह = का० कु०, ७५, म०, ४।
[सं० स्त्री०] स्थान, स्थल, मौका, अवसर, पद,
(फा.) ओहदा।

जगाना = ल०, २०, ३६।
[क्रि०] सचेत करना, कार्य करने के योग्य शक्ति
(हि.) प्रदान करना।

जगि = चि०, ४७।
[पूर्व० क्रि०] जगकर, सोने के बाद उठकर, सचेत
(हि.) होकर।

जगी = का०, २३। ३५, १२६।
[क्रि०] (हि.) जग गई, सचेत हो गई।

जगे = का०, २३०। चि०, ४६।
[क्रि०] (हि.) सचेत हुए, सोकर उठे, चैतन्य हुए।

जटा = का० कु०, २७, १०५।
[सं० स्त्री०] लट के रूप में गुथे हुए सिर के बड़े-बड़े
(सं.) बाल, वृक्षों की जड़ के पतले-पतले सूत, जूट, पटसन।

जटा-सी = आं०, १४।
[वि०] जटा के समान, उलझी हुई, अस्पष्ट,
(हि.) दुरूह।

जटित = चि०, २४, ७५।
[वि०] (सं.) जड़ा हुआ।

जटिल = आं०, १४।
[वि०] (सं.) कठिन, दुरूह, असाधारण, उलझनपूर्ण।

जटिलताओं = का०, ५२।
[सं० स्त्री०] (हि.) कठिनाइयाँ, उलझनें, दुरूहताएँ।

जड़ = का० कु०, ५३। का०, ३ ५६, १४५,
[सं० स्त्री०] १५७, १६३, १६७, २६४। ल०, ४६।
(सं.) अचेतन, चेष्टाहीन, मूर्ख, वृक्ष की जमीन के नीचे वाला भाग, सोर, नींव, बुनियाद।

जड़-चेतनता = का०, ७७।
[सं० पु०] निष्क्रिय चेतनता, शांत, अगति का
(सं.) सूचक।

जड़ता = आं०, २५। का०, ४६, १५१, १६४, १७१, १८३, २४१।
[सं० स्त्री०] (सं.) जड़ का भाव, मूर्खता, अचेतनता, साहित्य में एक संचारी भाव। स्तब्धता की छाप। अगति।

जड़ता-सा = का०, ६, २४, ३० ।
[वि० पु०] स्तब्धता के समान, जड़े हुए के सदृश।
(हि.) दे० 'जड़ता' ।

जड़ाव = चि०, ४६ ।
क्रि०] (हि.) जड़ने की क्रिया का भाव, जड़ाऊ का काम ।

जतन ते = चि०, १ ।
[सं० पु०] (हि.) उपाय करने से । प्रयत्न पूर्वक । यत्न से ।

जतन सों = चि०, ७० ।
सं० पु०] (हि.) दे० जतन से ।

जन = चि०, २२, ६६, १०६ ।
सं० पु०] लोक । लोग । प्रजा । अनुयायी । अनुयायी । अनुचर । समूह । सात ऊर्ध्व-लोकों में पाँचवाँ लोक ।

जनक = प्रे०, ८ ।
सं०पु०] (सं.) जन्मदाता । पिता । सीता के पिता ।

जनक-लली = का० कु०, ६६ ।
सं० स्त्री०] (हि.) सीता । जानकी ।

जनक-सुता = का० कु०, ६६, ६७ ।
सं० स्त्री] (सं.) जानकी ।

जनता = का०, १८१, १८५, १६८ ।
सं० स्त्री०] जन का भाव । जन समूह । किसी
सं.) देश या स्थान के बहुत से निवासी ।

जननी = का० कु०, ६० । का०, ३८, १४३,
सं० स्त्री०] २४३, २६४ । चि०, १५४ । प्रे०,
सं.) १४ । म०, ६ ।
मां, माता । पैदा करने वाली ।

जननी-भूमि = म० १५ ।
सं० स्त्री०] जन्म भूमि, पैदा होने का स्थान, मातृ-
सं०) भूमि ।

जनपद = क० ६ । प्रे० १४ ।
सं० पु०] (सं०) बसा हुआ स्थान, बस्ती, आबादी ।

जनपदकल्याणी = का० २३६ ।
सं० स्त्री०] सं०) सबका मंगल करने वाली ।

जनपद-परस-तिरस्कृत = आं०, ७८ ।
[सं० पु०] जनपद के निवासियों द्वारा घृणित,
(सं) उनके द्वारा उपेक्षणीय, जनपद से निर्वासित ।

जनप्राणों = का०, २०० ।
[सं० पु०] मनुष्यों के प्राण, जनता विशेष के
(सं.) मानसिक भाव ।

जन-मन = चि०, १६१ ।
[सं० पु०] जनता का मन । लोक की आन्तरिक
(सं.) भावना का सूचक ।

जन-रञ्जन-करी = आं०, ५८ ।
[वि० स्त्री०] (हि.) जनों को प्रसन्न करने वाली ।

जन-रव = प्रे०, ७ ।
[सं० पु०] (सं.) जनता की आवाज, कोलाहल ।

जनसंहार = का०, २०१ ।
[सं० पु०] (सं.) नर-हत्या, जन समूह की हत्या करना ।

जन-स्रोत = प्रे०, ४ ।
[सं० पु०] (सं.) उमड़ी भीड़ जन का उद्गम स्थल ।

जन-स्रोत सा = प्रे०, ७ ।
[सं० पु०] (हि.) जन के आदि उद्गम स्थल के समान ।

जनहीन = चि०, ५१ ।
[सं० पु०] (हि.) एकान्त, जहाँ कोई न रहता हो ।

जनाकीर्ण = का०, १६० ।
[वि० पु०] मनुष्य से भरा हुआ, अधिक आबादी
(सं.) वाला स्थल ।

जनात हैं = चि०, ३६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा. ज्ञात होता है, मालूम पड़ता है ।

जनि = चि०, १७५, १८४ ।
[सं० पु०] (सं.) उत्पत्ति, जन्म, नारी, माता, पत्नी,
(अ०) नहीं, न, मत ।

जनित = का०, २६७ ।
[वि० पु०] जनमा हुआ, उत्पन्न, किसी के कारण
(सं.) उद्भूत ।

जनु = चि०, ४०, ४७ ।
[क्रि० वि०] (हि.) मनो, उत्प्रेक्षा वाचक ।

जन्म = का०, कु०, ६४, का०, ७३, ८६ ।
[सं० पु०] चि०, ६६ । झ० ६८ ।

(सं.) गर्भ से निकल कर जीवन धारण करना, उत्पत्ति, पैदाइश, अस्तित्व में आना। अविर्भाव, जीवन भर। जिन्दगी, आयु।

जन्म-जन्म = आं० ७४।
[अं०] अनेक जन्मों में, बार-बार जन्म लेने
(सं.) का भाव।

जन्म-दाता = क०, ११।
[सं० पु०] (सं.) जनक। पिता। कारण। स्वरूप।

जन्म-भू = प्रे०, ७।
[सं० स्त्री०] जन्म भूमि। मातृ-भूमि। पैदा होने
(सं.) का स्थान।

जन्म-भूमि = क०, ६। का०कु०, ६०। प्रे०, ७,
[सं० स्त्री०] १४। ल०, ३३।
(सं.) दे० जन्म भू।
हुआ हो।

जन्म संगिनि = का०, ६२।
[सं० स्त्री०] जीवन सहचरी। आजीवन साथ देने
(सं.) वाली। सह धर्मिणी, पत्नी।

जन्मांतर = भ्रु०, ६८।
[सं० पु०] (सं.) अनेक जन्मों में। दूसरे जन्मों में।

जन्मान्तर-स्मृति=का० कु०, ७३।
[सं० स्त्री०] पूर्व जन्मों की घटनाओं की याद
(सं.) या स्मृति।

जपत = चि०, १७६।
[क्रि० पु०] किसी व्यक्ति या किसी नाम अथवा
(ब्र. भा.) किसी वाक्य का निरन्तर स्मरण करता आया है।

जपना = का०, १५४। भ्रु०, ६४।
[क्रि० पु०] जप करना, कुछ देर तक किसीको निरं-
(हि.) तर स्मरण करना। अनुचित रीति से किसी का कुछ ले लेना।

जब = आं०, ३०, ३१, ३७। क०, ८, १०,
[क्रि० वि०] ११, १३, १८, २८, २६। का०, ३८,
(हि.) ४५, ४६, ५१, ६३, ७६, ८६, ६८, १४१, १४३, १४४, १५०, १५१, १५२, १५७, १५८, १६१, १६२, १६५, १७८, १८६, २१६, २२०, २२३, २३०, २४५, २७६। प्रे०, ६, १५, १७, २४। भ्रु०, ३, ११, २२, २४। ल०, १७, २७, ३७।
जिस समय। अपेक्षणीय काल का सूचक।

जबहिं = चि०, ६५, ७२, १५६।
[क्रि वि०](ब्र.भा.) जिस समय।

जबै = चि०, ४७, १५६।
[क्रि०वि०] ब्र.भा.) जब। जिस समय।

जभी = का० कु०, ३१ ६८, १०५।
[क्रि० वि०] (हि.) जबही। जिस समय ही।

जमजाये = का०, १७५।
[क्रि० पु०] (हि.) जड़ जमा ले। डगे। प्रौढ़ हो जाय।

जमती = का०, १४।
[क्रि०] निश्चल होती है। सम्पन्न होती है।
(हि.) पूर्ण होती है।

जम रहे = का०, २६०।
[क्रि०] प्रौढ़ हो रहे, सम्मान प्राप्त कर रहे।
(हि.) स्थिर हो रहे।

जमायो = चि०, १७७।
[क्रि०](ब्र.भा.) सपन्न किया, स्थिर किया। जड़ जमाया।

जमींदारी = प्रे०, २१।
[सं०पु०] (फा) जमींदार की जमीन, जमींदार का पद।

जय = क०, ३१। चि०, ७४, ६१। भ्रु०, ७।
[सं० पु०] (सं.) जीत, शत्रुओं की हार या पराभव। विष्णु के एक पारिषद् का नाम।

जयगान = का०, ५७।
[सं० पु०] जय के हर्ष में गाये गये गान या गाये
(सं.) जाने वाले जय गीत।

जयघोष = का०, १०२। ल०, १३।
[सं० पु०] जय जयकार रव। विजय होने के
(सं.) पश्चात् विजय की सूचना देने वाली ध्वनि।

जयति = का० कु०, ३। चि०, ९१।
[क्रि०] (सं.) जयघोष का बोधक शब्द।

जयति-जय = चि०, ९१, १५४।
[क्रि०] (सं.) जय-जयकार करने का प्राचीन ढंग।
जयतु = चि०, ६५।
[क्रि०] विजयी होने के लिये आशीर्वादात्मक
(सं.) शब्द।
जयनाद = का०, ७।
[सं० पु०] (सं.) दे०—'जय घोष'।
जयमाला = आं०, ६२। ल०, ४७।
[सं० स्त्री०] विजय के उपलक्ष्य में दी गई माला या
(सं.) स्वयम्बर के समय वर को पहनाई जाने
वाली माला।
जय-लक्ष्मी-सी= का०, २३।
[वि० स्त्री०] जयरूपी लक्ष्मी के सदृश हर्षोत्फुल्ल,
(हि.) ऊषा, प्रातःकालीन आभा।
जरठ = ल०, ७०।
[वि०पु०] (सं.) कठोर, बुड्ढा, जीर्ण, पुराना।
जरतारी-ओढ़नी= म०, १३।
[सं० स्त्री०] सोने चाँदी के तारों के बेल बेलबूटों
(हि.) द्वारा बनी चादर या कामदार दुपट्टे।
जरा = क०, ६। का०, ५। प्रे०, ६। म०,
[सं० स्त्री०] ४, १३।
(सं.) बुढ़ापा।
जराइबो = चि०, १६।
[क्रि०] जलाना, संतप्त करना, जलन उत्पन्न
(ब्र. भा.) करना।
जरामरण = का०, १६६।
[सं० पु०] (सं.) बुढ़ापा और मृत्यु।
जराव = चि०, १८२।
[क्रि०] (ब्र.भा) जलाओ, संतप्त करो। [वि०] जड़ाऊ।
जरावत = चि०, १६।
[क्रि०] (ब्र.भा.) जला रहा है।
जरि = चि०, १६, १५६, १८२।
[पूर्व० क्रि०](ब्र भा.) जलकर, दुखी होकर।
जरिबो = चि०, १५।
[क्रि०] (ब्र भा.) जलना, विरह जलन से संतप्त होना।
जर्जर = का०, १७, १६६।
[वि० पु०] (सं.) पुराना, निर्बल, बुड्ढा, क्षीण, चिड़चिड़ा।
जर्जरता = ल०, ३३।
[सं०स्त्री] (सं.) पुरानापन, जीर्णता, चिड़चिड़ापन।
जल = आं०, १०, २७, ३०। क०, ८, १४।
[सं० पु०] का०, ३, ११, १५, २३, ५८, ११८,
(सं.) १६०, १६२, १७६, १८०, २०७,
२१६, २१६, २२४, २६८, २९०,
२६२। चि०, २ झ०, ५५, ५६।
प्रे०, ४, १५, २४। म०, ४। ल०,
१३, ३०, ६३।
पानी। जीवन। जलना क्रिया वा धातु।
जलकण = का० कु०, ६६।
[सं० पु०] झरनों से झरे हुए जल के सूक्ष्मतम
(सं.) कण।
जल-कण-भूषित=चि०, १४४।
[वि० पु०] सं जलकणों से सुशोभित।
जल-कन = का०, २४५। ल०, २७।
[सं० पु०] (सं.) दे०—जल-कण।
जलकर = का० कु०, ७६। का०, १६, २०७।
[पूर्व क्रि०] (हि.) कष्ट पाकर, मरण तुल्य कष्ट पाकर।
जल-जल = का०, २५४।
[पू०क्रि०] (हि.) कष्ट पाकर, संतप्त होकर।
जलज = का०, १७५, १७६।
[सं० पु०] जो जल में उत्पन्न हो। कमल। शंख।
(सं.) मछली। जल-जंतु। मोती।
जलजात = चि०, १४२। का०, २१७।
[सं० पु०] (सं.) कमल। जल में उत्पन्न होनेवाले पदार्थ।
जलजात-पात = चि०, १८१।
[सं० पु०] (हि) कमल के पत्ते।
जल-थल = आं०, ४६।
[सं० पु०] (सं.) पृथ्वी एवं जल।
जलद = आं०, ५१, ५५। का० कु०, २६।
[वि० सं०] का०, १६, ८७, १५३, २२५, २६१।
(सं.) चि०, ३३, १६६। झ०, ४०। ल०,
५६।
जल देनेवाला।

बादल, मेघ। वंशज, जो पितरों को जल देते हैं।

जलद-गंभीर-कंठ=प्रे०, २३।
[वि०] (सं०) बादलों की भाँति गंभीर घोष करने वाला कंठ।

जलद-जाल = का० कु०, १०१।
[सं० पु०] (सं.) एक में बुने या गुँथे हुए बहुत से डोरों का समूह। किसी को फँसाने के लिए होनेवाला षड्यंत्र समूह। एक प्रकार का तोप। मेघ-माला। बादलों का समूह।

जलद-जाल सा= का० कु०, १२६। म०, ६।
[वि०] (सं.) घन-घोर बादल के समान भयावह। अस्पष्ट।

जलद-पटल = चि०, ४२।
[वि० पु०] (सं.) बादल रूपी पर्दा।

जलद-स्वर-मन्द्र= ल०, १३।
[सं० पु०] (सं.) बादलों का गम्भीर घोष। गम्भीर गर्जन, बादल के समान गंभीर ध्वनि।

जलदागम = का०, १२७।
[सं० पु०] (सं.) वर्षा ऋतु का आगमन या आरम्भ, आकाश में बादलों का घिरना।

जलधर = का० कु०, ६६। का०, १३, १६४, १७५, २२५, २५८।
[सं० पु०] (सं.) बादल, समुद्र।

जलधर-सम = का०, २३६।
[वि०] (सं.) बादल के समान।

जलधारा = का० कु०, ६८। चि०, १५०।
[सं० स्त्री०] (सं.) जल की धारा? जल-प्रवाह।

जलधि = आं०, २२। का० कु०, ७५। का०, ८, १६, २३, ५४, ५६, ८२, १६०।
[सं० पु०] (सं.) चि०, ६५। ल०, १०, १५, ४१, ५६। समुद्र।

जलधि-वेला = ल०, ५६।
[सं० पु०] (सं.) समुद्र का किनारा, समुद्र तट।

जलन = आं०, ६, ६०। का० कु०, २६। का०, १५३, १६३। भ्रू०, ७०, ८६। ल०, ५१।
[सं० स्त्री०] (हि.) आन्तरिक-वेदना। कष्ट।

जलना = आं०, १०, ३०, ४२, ४४, ६०, ६१, ७६। का०, १३, ३१, १७६, १७७, १७६, १८१, १८२, १६०, २१२, २४२, २६८। भ्रू०, ७०, ८७। प्रे०, ३। ल०, ४६, ५०।
[क्रि०] (हि.) कष्ट सहना। वियोग जन्य ताप से पीड़ित होना। बलना, दग्ध होना, आकुलता।

जल-निधि = आं०, १८, ७३, ७७। का०, १३, १६, ४५, ४८, ७३, १५६, १६३, १६०, १६५, २५२, २८८।
[सं० पु०] (सं.) समुद्र।

जल परिवर्त्तन = म०, १७।
[सं० पु०] (सं) आबहवा की तबदीली।

जल-भूमि = का० कु०, ५।
[सं० पु०] (सं.) जल और स्थल।

जल-मण्डल = ल०, ५८।
[स० पु०] (सं.) जल का घेरा।

जलमह = चि०, ५८।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) जल में।

जलमयी = अ०, ५०।
[वि०] (सं.) जलरूप। जल में निमग्न।

जलमाया = का०, ५।
[सं० स्त्री०] (सं.) जलरूपी माया। जलजाल।

जल-राशि = म०, ११।
[सं० स्त्री०] (सं.) जल-समूह। अत्यधिक जल।

जल-लहरी = चि०, १४४। भ्रू०, ५५।
[सं० स्त्री०] (हि.) जल में उठनेवाली छोटी छोटी लहरें।

जलवायु = म०, २०, २१।
[सं० स्त्री०] (सं.) आबहवा, किसी स्थान की वर्षा, गर्मी एवं वायु का माध्यमिक मान।

जलवास = का० कु०, ४२।
[सं० पु०] (सं.) जल रूपी गृह। जल-निवास।

जल-विन्दु = का० कु०, १०० । झ०, ४० ।
[सं० पु०] (सं) जल की बूँदें ।
जलविन्दु पूरित = का० कु०, २६ ।
[वि०] (सं.) जल-कणों से भरा हुआ ।
जल विहार = का० कु०, ४२ ।
[सं० पु०] (सं.) जल क्रीड़ा के द्वारा प्राप्तआनन्द । जल पर निवास ।
जल संघात = का०, २० ।
[सं० पु०] (सं.) जल-समूह । जल-राशि । जल का आघात ।
जल-स्रोत-सी = म०, ८ ।
[वि०] (हि.) जल-प्रवाह के समान, चलनेवाली, चंचल ।
जलाकर = का०, १७६ ।
[क्रि०] (हि.) संतप्त करके ।
जलाना = आं०, १७, ५१, ६१ । का०, १७६,
[क्रि०] (हि.) १७६, २६२ । प्रे०, १५ । ल०, ३८, ६४ ।
आग में भस्म करना । संतप्त करना, कष्ट देना । झुलसाना ।
जले = आं०, ६१ ।
[क्रि०] (हि.) जला करे । 'जलना' का भूतकालिक बहु-वचन रूप । जलते रहे ।
जल्दी = क०, ६, १०, ११ । म०, १४ ।
[क्रि० वि०] (हि.) शीघ्रता ।
जल्पना = चि०, ७२ ।
[क्रि०] (हि.) व्यर्थ बक-बक करना । डींग मारना ।
जवा = ल०, ४० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) अड़हुल । जपा । जौ ।
जवाहिर = चि०, ६१ ।
[सं० पु०] (अ०) रत्न मणि ।
जहाँ = क०, १४, १७ । का०, ११, १२, ८८;
[क्रि० वि०] १३०, १३१, १७५, २०७, २१४,
(हि.) २१७, २२८, २३०, २८०, २८८ ।
झ०, ६० । प्रे०, ४, ५, १५, २२, ४६ । ल०, १४ ।
जिस स्थान पर, जिस जगह ।
जहाँ-जहाँ = प्रे०, ६ ।
[क्रि० वि०] (हि.) हर जगह ।
जहान = चि०, ६६, १३६ ।
[सं० पु०] (फा०) संसार, जगत् ।
जाँच = का०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) जाँचने की क्रिया का भाव ।
जाँय = का०, २४४ ।
[क्रि०,] (हि.) जायें, यदि जायें ।
जाँय-बीत = का०, १६४ ।
[क्रि०] (हि.) व्यतीत हो जाँय ।
जाइ = चि०, १५६, १७२ ।
[पू० क्रि०] (ब्र. भा.) जाकर ।
जाऊँगा = आं०, ४०, ४३, । का०, ३६, ५३, २१३,
[क्रि०] २३० । प्रे०, ५, २१ । म० १७, २ ।
(हि.) ल०, ३६ ।
जाना क्रिया का प्रथम पुरुष में भविष्यत् कालिक रूप ।
जाकर = आं०, ३४ । क०, ११ । का० ५५,
[पू० क्रि०] १८०, २८३ । प्रे०, १२, २१ । म०,
(हि.) १३ । ल० ३६ ।
पहुँचकर ।
जाकी = चि०, २५ ।
[सर्व०] (ब्र. भा) जिसकी ।
जाके = चि०, १५६, १५३ ।
[सर्व] (ब्र. भा.) जिसके ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) जाकर ।
जाको = चि०, ५२, १०१, १४३ ।
[सर्व० पु०] (ब्र० भा०) जिसको ।
जाग = का० कु०, ८७ । का०, १७, ४०, ७४,
[क्रि०] (हि.) १२५, १२६, १२६, १४८, १६८,
[पूर्व० क्रि०] १७२, २०६, २३६, २४१, २४२, २७३ । ल०, १६, ६३ ।
सचेत हो, निद्रा छोड़ो । सचेत होकर ।
जागरण = आं, ७२ । का०, ३१, ७०, ८८, १०१,
[स० पु०] १०५, १०५, १७८, २०५, २७६ ।
(सं.) झ०, ५४ ।
जागना, सचेत रहना । उत्सव या पर्व पर रात भर जागना ।

जागरण-सी = का०, २७ ।
[वि०] (हिं.) जागने के सदृश्य ।
जागहु = चि०, ४६ ।
[क्रि०] (ब्र.भा०.)जाग जाओ । सचेत होवो ।
जागिके = चि०, १५६ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) जागकर ।
जागे = आं० ४६ । का०, १६५ । चि०, ४६ ।
[क्रि०] (हिं.) जाग गये । तैयार हुए । सचेत हुए ।
जागै = चि०, १४ ।
[क्रि०] (ब्र.भा) जाग गए । होश में आये ।
जागो = आं०, ६४, ६५, ७४ । ल० २४ ।
[क्रि०] (हिं.) चेतना में आओ । तैयार हो जाओ ।
जागृत = का०, २५ ।
[वि०] (सं०) जागा हुआ, सचेत ।
जागृति = का०, कु०, ६१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) जागरण, चेतनता ।

जाड़ा = प्रे०, ११ ।
[सं० पु०] (हिं.) वह ऋतु जिसमें बहुत सर्दी पड़ती है । शीतकाल । ठंढक, सर्दी ।
जात = चि०, ३५, ६६, १४३, १५६ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) बीतते हैं ।
जाता = आं० ३३ । क० ६, २६ । का०, २०, ४६, ६८, १०४, १२६, १५६, १६७, १८०, २२८, २५७, २८२, २८६ । प्रे० ६, २१ । म०, ८, २२ ।
[क्रि०] (हिं.) जाना क्रिया का एकरूप ।
जाति = क०, १० । का०, ८ । म०, ८ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) जन्म, पैदाइश । हिन्दुओं का सामाजिक विभाग, कोटि, श्रेणी, वर्ग ।
जाती = आं०, २७, ५६ । का०, २३, ३४, ३६, ५१, १२३, १४४, १५०, १६०, १८०, २३४, २६७ । चि०, ४० । प्रे०, ३, ११, १५ ।
[क्रि०] (हि.) जाना क्रिया का एक रूप ।
जाती = का० १७६, १७८, १८५, १६८, २०१, २३४, २४६, २७८ ।
[क्रि०] (हि.) जाना क्रिया का एक रूप ।
जाते-जाते = ल० ३६ ।
[क्रि०] (हिं०) चलते-चलते ।
जादू = का०, ६७ । चि०, ४७ ।
[सं० पु०] (फा.) ऐसा आश्चर्यजनक काम जिसे लोग अलौकिक समझें, इन्द्रजाल, तिलस्म, टोना, टोटका, दूसरे को मोहित करने की शक्ति । मोहिनी ।

जान = का०, १३२, १४३ ।
[सं० स्त्री०] फा०) प्राण । ज्ञान, जानकारी, परिचय ।
[पूर्व० क्रि०] हि.) जानकर ।
जानकी = का० कु०, ६६, ६७, १०१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) जनक की पुत्री सीता ।
जानकी-अंग = का० कु०, ६८ ।
[सं० पु०] (सं.) जानकी के शरीर के अंग ।
जानकी वदन = का० कु०, ६८ ।
[सं० पु०] (सं.) जानकी का मुख ।
जानति = चि०, ३२, ५७, ६६, १५१, १५८ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जानती है ।
जानता = प्रे० ३ ।
[क्रि०] (हि०) जाना क्रिया का एक रूप ।
जानना = क० ११, १३ । का० २२२ । चि० १८७ । प्रे० १ ।
[क्रि०] (हि) ज्ञान प्राप्त करना । भिज्ञ या परिचित होना ।
जानहु = चि० ५० ।
[क्रि०] (ब्र. भा) ज्ञात कर लो, मानो ।
जाना = क० २०, २६ । का०, ११७, १६७, १६१ । म० २४ । ल० ३६ ।
[क्रि०] (हि.) एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने के लिये चलना । गमन करना, प्रस्थान करना ।
जानि = चि०, १४२, १५१, १७२, २८३ ।
[पूर्व० क्रि०](ब्र. भा.) जानना क्रिया का पूर्वकालिक रूप ।
जानिहौं = चि०, ३३, ४६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) ज्ञात करोगे । जान लोगे ।

जानी = चि० ६८, १५५ । प्रे० ३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) ज्ञात कर लिया ।

जानु = का०, १५३ ।
[सं० पु०] जांघ और पिंडली के बीच का भाग ।
(सं.) [क्रि०] जानिए ।

जाने = आं० ५८ । का०, १२६, १६६, १६२,
[क्रि०] १६६, २०१ । चि०, ५८ । म० २४ ।
(हि.) ज्ञात कर लिये ।

जानो = आं०, १७ । प्रे० ६ ।
[क्रि०] (हि.) ज्ञात कर लो । मानो ।

जानौ = चि०, १५३, १७६ ।
[क्रि०] (ब्र भा.) ज्ञात कर लो ।

जान्यौ = चि०, १८१, १८५ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) ज्ञात कर लिये । अवगत हो गये ।

जामहँ = चि०, १४३ ।
[सर्व०] (ब्र. भा.) जिसमें ।

जामे = चि०, ५७ ।
[सर्व०] (ब्र. भा) जिसमें ।

जाया = प्रे० २१ ।
[सं० स्त्री०] सं.) पत्नी, जोरू, स्त्री ।

जायेगा = का०, ११७, २५१ । म० ८ ।
[क्रि०] (हि.) जाना क्रिया का भविष्यकालिक रूप ।

जारत = चि०, १६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जलाता है ।

जारन = का०, ६३ । चि०, १०७ ।
[वि०] (ब्र. भा.) जलानेवाला दाह ।

जारही = का०, ३६, १०५, २०५ ।
[क्रि०] (हि.) 'जाना' क्रिया का एक रूप ।

जारहा का०, ८१, १६१ ।
[क्रि०] (हि.) 'जाना' किया का एक रूप ।

जाल = आ०, ३७ । का०, ८ । का० कु०, ८६,
[सं० पु०] का०, ३४, ६८, ८१, ८३, १६८,
(सं.) २५२ । चि०, २२, १४३ । भ०, ७० ।
ल०, २५ ।
एक में बुने हुए बहुत से डोरों का समूह । किसी को फँसाने या वश में करने का षड्यन्त्र । एक प्रकार की तोप ।

जाल-डोरी = चि०, १८२ ।
[सं० स्त्री०] जाल के अलग-अलग सूत । चन्द्र
(हि.) किरणें ।

जालन = चि०, ४२ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) जाल का बहु वचन दे० जाल ।

जाली = का०, ६३ । ६६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) जिसमें बहुत से छिद्र हों ।

जालों = का०, १४ ।
[सं० पु०] (सं.) जाल का बहुवचन ।

जावेगा = का०, १२४ । प्रे० २, ३, ५ । म०, १० ।
[क्रि०] (हि.) जाना क्रिया का भविष्यत् कालिक रूप ।

जावें = आं०, ५४, ७४ । चि०, १८७ ।
[क्रि०] (हि.) जायें । जायँ ।

जावै = चि०, १६४ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जाय, जाओ ।

जासन = चि०, १०६ ।
[सर्व०] (ब्र. भा.) जिससे ।

जासु = चि०, ५६, १३६, १५३ ।
[सर्व०] (ब्र. भा.) जिसकी ।

जासु अतिही = चि०, १६१ ।
[सर्व०] (ब्र. भा.) जिसकी ज्यादती हो ।

जासो = चि०, ५५, ६६, १५६, १७३ ।
[सर्व०] (ब्र. भा.) जिससे ।

जाहि = चि०, ३४, ४०, ५०, ५६, ६३, १५५,
[सर्व०] १८४ ।
(ब्र. भा.) जिसको ।

जाहिर = चि०, ३२ ।
[वि०] प्रकट, स्पष्ट, खुला हुआ, विदित, जाना
(अ.) हुआ ।

जाहिरहिं = चि०, ६१ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्रगट है ।

जाहि-लखि = चि०, ५६ ।
[सर्व०] (ब्र. भा.) जिसे देखकर ।

जाहु = चि०, ५३, १५७।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जाओ।
जाहुगे = चि०, १५६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जाओगे।
जाह्नवी-सी = झ० ३५।
[वि०] (हि.) गंगा के समान पवित्र, निर्मल।
जिऊँ = का०, २४३।
[क्रि०] (ब्र भा.) जीऊँ।
जितना = का०, ८, २५, ६५, ७५, १७८, १६६,
[वि०] ल० ७४, ७६।
(हि.) परिमाण सूचक शब्द।
जितनी = का०, १३०।
[सर्व०] (हि.) परिमाण सूचक शब्द।
जितने = आं०, ७३। का०, १७१। म०, १०,
[वि०] (हि.) परिमाण सूचक शब्द।
जिधर = का०, १८१।
[अ०] (हि.) किस ओर।
जिन = का०, १२, १३, १४, १५, २५, ६६,
[सर्व०] ७७, ११४, ११६, १२०, १६२, १८२,
(हि.) १६५, २०१, २३६, २४८, २५८, २६३।
चि०, ६७। प्रे०, १४, २५। म०, २।
जिन्होंने।
जिनकी = का०, ११४, २५८।
[सर्व०] (हि.) संबंध वाचक 'जो' का रूप, बहुवचन।
जिनहिं = चि०, १०२।
[सर्व०] (ब्र.भा.) जिनको।
जिंहें = का०, २३६।
[सर्व०] (ब्र. भा.) जिनको।
जिन्हैं = चि०, ६, १७।
[सर्व०] (हि.) जिनको।
जिमि = चि०, १००, १०७, १६१, १६५।
[अ०] (ब्र. भा.) जिस प्रकार।
जिया = का०, १६६।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्राण रक्षा किया।
जिये = का०, १२२, १४६, १८३। चि०,३३।
[क्रि०] (ब्र.भा.) 'जिया' बहुवचन।

जिस = क०, १३, ३१। का०, १०, ११, २५,
[सर्व०] २६, २६, ३४, ५३, ५४, ६२, ७३,
(हि.) ७६, ६०, ६४, १००, १०१, १०२,
१०६, १०७. ११५, ११६, १२०,
१२१, १२२, १२६, १३०, १३१,
१४०, १४२, १४३, १४४, १४८,
१५१, १५७, १६०, १६३, १६६,
१६७, १६८, १७०, १७५, १८३,
१६३, १६७, १६६, २०५, २०६,
२२४, २३३, २३४, २३६, २४०,
२४८, २५०, २५१, २५४, २६३,
२६८, २६९। चि०, ८८। झ०, १६,
३६। प्रे०, १, २, ६, १०, ३४।
म०, १३, १६, १८। ल०, ६२, ७६।
'जो' का एक रूप।
जिससे = का०, १२६, १३६, १४५।
[सर्व०] (हि.) जिसके द्वारा, जिसकी सहायता से,
जिसके कारण।
जोऊँ = का०, २८, १११।
[क्रि०] (हि.) 'जीना' क्रिया का रूप।
जीकर = का०, २८, १४६।
[पू० क्रि०] (हि.) जीवित रह कर।
जी को = का०, २१५।
[सं०] (हि.) मनको।
जी-जीकर = का०, १२३।
[पू०क्रि०] (हि.) जीवित-सा अनुभव करके।
जीतना = आं०, ५८। का०, कु, ६३। का०,
[क्रि०] ५५, १६५, १७०, १६७। झ०, ६३।
(हि.) ल०, ५३।
विजय प्राप्त करना, विपक्षी को हराना।
जीते ही बनता = का०, २६८।
[क्रि०] (हि.) किसी प्रकार जीवित रहना।
जीना = का०, २०१। झ०, ६५। ल०, ५३।
[क्रि०] (हि.) जीवित रहना।
जीने दो = का०, २०१।
[क्रि०] (हि.) जीवित रहने दो।

जीभ = क०, १७५ । ल०, ५१ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) जिह्वा, वाणी, जबान ।

जी भरकर = आं०, ३६ । का०, कु०, ५१ ।
[पूर्व० क्रि०] प्रे०, २० ।
(हि.) पूरा, सन्तुष्टि मिलने तक, यथेच्छ ।

जी रहा है = का०, २१७ ।
[क्रि०] (हि.) प्राण रखा कर रहा है ।

जीर्ण = का०, १६० ।
[वि०] पुराना, जर्जर, जिसमें जीर्णता आ
(सं०) गई हो ।

जीर्ण-काण्ड = भ्रु०, ३३ ।
[वि०](सं.) जर्जर तना, जर्जर-शोर, जर्जर-डाली ।

जीव = क०, १३ का०, कु०, ६५ । चि०, ३०,
[सं० पु०] १३६ । भ्रु०, ६५ । म०, ८ ।
(सं.) चेतन तत्व, प्राण, आत्मा, जीवात्मा ।
जीवधारी ।

जीवन = आं०, १४, ७६ । का०, १८ । का०
[सं० पु०) कु०, ६५, ७७ । का०, ५, २६३ ।
(सं.) जीवित रहने का भाव, प्राण धारण,
जन्म से मृत्यु पर्यन्त का समय ।
जिन्दगी । जीवित रहने वाली
वस्तु ।

जीवन-कन = ल०, २१ ।
[सं० पु०] चेतनता अंश, आंशिक चेतनता का सूक्ष्म
(सं.) भाग ।

जीवन-गीत = ल०, २८, २६ ।
[सं० पु०] (सं.) जीवन प्रदान करने वाली गीत ।

जीवन-घट = का०, २८३ । भ्रु०, ७७ ।
[वि०] (सं.) जीवन रूपी घट ।

जीवन-घाटी = का०, २१७ ।
[वि०] जीवन रूपी घाटी, जीवन का दुर्गम
(सं.) पथ, जीवन का दुखमय रास्ता ।

जीवन जलनिधि = का०, २२५ ।
[सं० पु०] (सं) जीवन रूपी समुद्र, जीवन की अगा-
धता का सूचक शब्द ।

जीवन-द्रव = आं०, ७१ ।
[वि०] (सं.) जीवन रूपी द्रव पदार्थ । जीवन की
तरलता, जीवन का स्नेह तत्व ।

जीवन धारे = का०, १६२ ।
[वि०] जीवन रूपी डोरी, जीवन की क्षणिकता
(सं.) का सूचक शब्द ।

जीवन-धन = का० कु०, ७६, । का०, ६८ । भ्रु०,
[वि०] ३७, ४४, ४५, ४८, ५२, ८०, ६५,
(सं) ६६ । ल०, २६ ।
जीवन रूपी धन । सर्वश्रेष्ठ धन । वह
धन जिसके द्वारा प्राणी सब
कुछ करने में समर्थ होता है ।
प्रियतम ।

जीवन-धारा = का०, २४१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) जीवन रूपी धारा, जीवन-प्रवाह ।

जीवन-नद = का०, १६४ ।
[सं० पु०] जीवन रूपी नद, जीवन की गहराई
(सं.) तथा प्रवाह का सूचक ।

जीवन-नाव = भ्रु०, ५५ ।
[सं० स्त्री०] जीवन रूपी नौका, जीवन में तारल्य
(हि.) की अनिवार्यता का बोधक, क्षणिकता
का सूचक ।

जीवन-निर्झरिणी = प्रे०, प०, २४ ।
[सं. स्त्री०] (सं.) जीवन रूपी नदी ।

जीवन-निशीथ = का०, १५६, १७२ ।
[सं० पु०] जीवन रूपी अर्द्ध रात्रि, जीवन के तम-
(सं.) मय पक्ष का बोधक ।

जीवन-पतंग = ल०, ४६, ५० ।
[सं० पु०] जीवन रूपी शलभ, रूप-लिप्सा में
(सं) प्राण-विसर्जन करने की ओर
संकेत ।

जीवन-पथ = प्रे०, २६ ।
[सं० पु०] (सं.) जीवन रूपी पथ । जीवन का रास्ता ।

जीवन-भर = प्रे० २१ ।

[वि०] (हि.) आजीवन, जन्म से लेकर मरने के पहले तक का समय।

जीवन-मधु = का० २७१।
[सं० पु०] जीवन का मधु। जीवन में माधुर्य का
(सं.) बोधक।

जीवन-मरण = म० ८।
[संज्ञा पु०] (सं.) जीवन और मृत्यु।

जीवन-मरण शोक = का० १७१।
[संज्ञा पु०] (सं०) आवागमन से संबंधित शोक।

जीवन-मरण-समस्या = का० २५०। झ० ४०।
[सं० स्त्री०] जन्म लेने और मरने से संबन्धित
(सं.) समस्या।

जीवन-मार्ग = का० कु०, ७३।
[सं० पु०] (सं०) जीवन की राह, जीवन रूपी पथ।

जीवन-मुक्त का० कु०, ३०।
[वि० पु०] जीवन काल में ही मुक्तता का अनु-
(सं.) भव करने वाला।

जीवन-मुक्ति = झ० ६८।
[सं० स्त्री०] (सं.) जीवन के बन्धनों से छुटकारा।

जीवन-मूल = का० कु०, १४।
[सं० पु०] जीवन का आदि स्रोत, जीवन की वास्त-
(सं.) विकता।

जीवन-रण = का० २००।
[सं० पु०] जीवन रूपी युद्ध, जीवन के संघर्ष तत्व
(सं.) का सूचक।

जीवन-रस = का० १६८, २७०, २७१। ल० ७२।
[सं० पु०] (सं.) जीवन का रस, जीवन का आनंद तत्व।

जीवन-धनु = का०, ६१।
[सं० पु०] जीवन रूपी धनु, जीवन की वक्रता
(सं.) का बोधक।

जीवन-विक्षुब्ध-महासमीर = का० १५७।
[सं० पु०] जीवन रूपी क्षुब्ध प्रचण्ड पवन, जीवन
(सं.) की दुर्गम गति-शीलता का बोधक।

जीवन-राशि = का० ४६।
[सं० पु०] जीवन रूपी राशि, शृंखला-बद्धता का
(सं.) परिचायक, वैषम्य-मूलक घटनाओं के केन्द्र का बोधक।

जीवन-रहस्य = का० ४८।
[सं० पु०] (सं.) जीवन का तत्व, जीवन की वास्तविकता।

जीवन-लीला = का०, ३२।
[सं० स्त्री०] जीवन रूपी लीला, जीवन की अनित्यता
(सं.) का सूचक।

जीवन-शरद् = का० कु०, ६७।
[सं० पु०] जीवन रूपी शरद, जीवन की शीतलता
(सं.) का सूचक।

जीवन-संगी = आं०, १६।
[सं० पु०] (सं.) जीवन-साथी जीवन में सहायक प्राणी।

जीवन-समाधि = का०, १६०।
[सं० पु०] जीवन रूपी समाधि, जीवन की परम
(सं.) शांति का सूचक।

जीवन-सर = का०, ६६।
[सं० पु०] जीवन रूपी तालाब, जीवन की क्षुद्रताओं
(सं.) या ओछेपन का बोधक।

जीवन-सिन्धु = का०, ८१।
[सं०पु०] जीवन रूपी समुद्र, दुरुहता का
(सं०) बोधक।

जीवन-सुख = का०, ३८।
[सं०पु०] (सं.) जीवन का सुख।

जीवन-सोता = झ०, ३५।
[सं० स्त्री०] जीवन रूपी सोता, कठिन जीवन प्रवाह।
(सं.) मंद गति जीवन।

जीवन-सुधा = का० कु०, २७।
[सं० स्त्री०] जीवन रूपी सुधा, जीवन का अमृत,
(सं.) जीवन के अमरत्व का बोधक।

जीवन-स्मृति = ल० २७।
[सं०स्त्री०] (सं. जीवन की स्मृति, जीवन-संबंधी यादगार।

जीवन स्रोत = का० कु०, ५७। प्रे०, २२।
[सं० पु०] जीवन रूपी स्रोत। जीवनका उद्गम
(सं.) स्थल। जीवन सोता।

जीवन-स्रोत-सा = का० कु०, ५३।
[वि०] (हि.) जीवन स्रोत के सदृश।

जीवनी = का०, १६६।
[सं० स्त्री०] जीवन चरित। किसी व्यक्ति के जीवन
(सं.) की समस्त घटनाओं का संकलित रूप।

जीव-मंडली = का० कु०, २४।
[सं० पु०] (सं.) प्राणि वर्ग, प्राणिओं का समुदाय।

जीवित = का०, १८, ६०, १०६, १४७, १९४,
[वि०] (सं.) २४७, २६६। प्रे०, १६। ल०, ५१, ५७, ७५, ७६।
जिसमें जीवन हो, गतिशील प्राणी।

जु = चि०, ७०।
[सर्व०] जो।

जुग = चि०, १४२।
[सं० पु०] युग, दो, जोड़ा, चौरस के खेल में दो
(सं.) गोटियों का एक ही घर में आकर बैठना।

जुगाली = ल०, ३३।
[सं० स्त्री०] पागुर, चौपायों की वह क्रिया जिसके
(हि.) द्वारा वे मुँह चला-चलाकर खाए हुए चारे को निगला करते हैं।

जुगनूँ = का०, १७६, २३४।
[सं० पु०] सोनकिरवा, खद्योत, पटबीजना, पान
(हि.) के आकार का एक आभूषण।

जुटना = का०, २५, ५८, ८२ १८१, १८१,
[क्रि०] १८६।
(हि.) दो वस्तुओं का जुड़ना। संबद्ध या संश्लिष्ट होना।

जुड़ने = का०, १८३, १८६।
[क्रि०] 'जुड़ना' क्रिया का एक रूप।

जुन्हाईहिं = चि०, १४६।
[सं०स्त्री०] (ब्र. भा.) चाँदनी।

जुरि = चि०, १, १०८।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) जुड़कर।

जुरी = चि०, ५६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जुड़ गई, जुट गई, मिल गई।

जुरे = चि०, ४१, १६६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जुड़ गये, मिले।

जुहा = चि०, १०१।
[क्रि०] (ब्र. भा.) इकट्ठा करो।

जुहे = चि०, ५३, ६६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) इकट्ठे हुए।

जूआ = चि०, १०७।
[सं० पु०] एक प्रकार का खेल जो धन की बाजी
(प्रा.) लगाकर खेला जाता है। बैलों के कंधे पर रखी जाने वाली लकड़ी। चक्की की वह लकड़ी जिसे लगाकर वह चलाई जाती है।

जूटै = चि०, ७२।
[क्रि०] जुड़ जाय, इस प्रकार जुटना कि जुटने
(ब्र.भा.) का स्थान तक न ज्ञात है।

जूठ = चि०, ८७।
[वि०] उच्छिष्ट भोजन, एक बार काम में लाई
(हि.) गई वस्तु।

जूही = आ०, ४४। का० कु०, १२६।
[सं० स्त्री०] (हि.) पुष्प विशेष का नाम।

जेहि = चि०, ३, २२, ३४, ४८, ४६. ५६,
[सर्व०] ७३, १६३।
(ब्र भा.) जिसको।

जैसा-जैसे-जैसी=का०, २, ६, २३, २४, २६, ३२, ४७,
[अ०] ६७, ७७, ८१, ६४, १०५, १२३,
(हि.) १३६, १४५, १५६, १६२, १६७, १९६, २१३, २२७, २२८, २३३, २३४, २५८, २६१, २६६, २७०, २६०, २६१, २६२, २६४, चि० १२, ४८। प्रे० २, ४, ६. १३ १५, १८। म० १, २, ४, ८, १०, १६, १६, २१
'दृष्टांत' अलंकार का बोधक-समानता का बोधक।

जो = क०, ७, २५, ३२। का० २५, ३०;
[सर्व०] ३३, ३६, ४८, ६६, ६६, ७१, ७२,
(हि.) ७४, ७५, ८१, ८४, ११२, १५७, १७०, १७१, १८२, १८५, १८३, १६०, १६१, १६२, २०७, २०६, २१९, २२५, २२८, २४०, २४२, २४३, २५१, २५८। म० १, २, १०।
संबंधवाचक सर्वनाम जिसका प्रयोग

पहले कही हुई किसी संज्ञा विशेष के लिये हो।

जोगी = चि०, १७२।
[सं० पु०] साधुओं की जाति विशेष जो सारंगी पर
(हि.) गाना गा-गाकर भिक्षा। माँगा करती है।

जोड़ना = का०, ३०, १७७। भ०, २६, ६४।
[क्रि०] दो वस्तुओं को किसी प्रकार भी मिलाना,
(हि) संबंध स्थापित करना, सामग्री या वस्तुओं को क्रम से रखना। संचित करना, एकत्र करना, जोड़ लगाना।

जोड़ी = का० कु०, ३८, ४२। चि०, ३३, ७४।
[सं० स्त्री०] एक ही प्रकार की दो वस्तुएँ। दो बैलों
(हि.) का युग्म, मंजीरा।

जोड़े = का० कु०, १०।
[क्रि०] (हि.) जोड़ना क्रिया का भूतकालिक रूप।

जोति = चि०, १६४।
[सं० स्त्री०] प्रकाश, उजाला, लपट, लौ, अग्नि,
(ब्र.भा.) सूर्य, दृष्टि, परमात्मा।

जोपम = चि०, १८०।
[अ०] (ब्र. भा.) यदि, अगर।

जोय = चि०, ५३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) देखकर।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) स्त्री।

जोर = चि०, १७८। म०, ५।
[सं० पु०] (फा.) बल, शक्ति, ताकत, वश।

जोरि = चि०, ५४।
[पू० क्रि०] (हि.) जुटाकर।

जोरी = चि०, ७५।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) जोड़ी —दे० 'जोड़ी'।

जोरे = चि०, ७४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जोड़, मिलाये।

जोहत = चि०, ७०।
[क्रि०] बाट देखना, प्रतीक्षा करना, इन्तजार
(ब्र. भा.) करना।

जौन = चि०, १६, ४१, ६६, ६१, १५३,
[सर्व०] १७०, १७३, १८४।
(ब्र. भा.) जो।

जौलौं = चि०, १०४।
[अ०] (ब्र. भा.) जब तक।

जौहरी = चि०, १०७।
[वि०] रत्नों का व्यापारी, रत्नों की परीक्षा
(फा.) करने वाला। रत्न पारखी।

ज्येष्ठ = क०, २६।
[पु०] (सं.) बड़ा, जेठा। गरमी का एक महीना।

ज्यों = का० कु०, ८०। का०, १६, २७, ३१,
[अ०] ३४, ४५, ४६, ४७, ८६, ८७, ६३,
(ब्र. भा.) ६४, ६७, १०६, १४३, २१२, २३६,
३४७, २८४।
जिस प्रकार।

ज्यों कि-त्यों = प्रे० प० ५।
[अ०] वैसा या ऐसा। उस तरह या इस
(ब्र. भा.) तरह।

ज्यों-ज्यों = आं० २५।
[अ०] (ब्र. भा.) किसी न किसी प्रकार।

ज्योति = आं० ४३। का०, ३२। का० कु०,
[सं० स्त्री०] २, १२६। का०, ४६, ६५, १८९,
(सं.) २७३, २६४।
प्रकाश, ज्ञान, दृष्टि।

ज्योति-कला = का०, १५६।
[सं० स्त्री०] प्रकाश की कला, ममता जनित चेतना
(सं.) का मंद मधुर प्रकाश।

ज्योति-मय = का०, २५२।
[वि०] (हि.) प्रकाश से युक्त, ज्ञान से पूर्ण।

ज्योति-मयी = का०, ७७। ल०, ६१।
[वि०] (हि.) दे० 'ज्योति-मय'। (स्त्रीलिंग)।

ज्योति-मान = का०, १६३।
[वि०] प्रकाश मान, ज्ञानवान, प्रकाश से
(हि.) परिपूर्ण। ज्योतिमान।

ज्योतिरिंगणों = का०, १७।
[सं. पु०] रेंगने में ज्योति उत्पन्न करने वाले,
(सं.) जुगनू, खद्योत।

ज्योति रेखा = ल०, ५७। का०, २१७।

[सं० स्त्री०](सं.) प्रकाश की रेखा, किरण ।

ज्योति-रेखा-हीन = ल०, ५७ ।
[वि०,] (सं.) प्रकाश की रेखा से हीन या प्रकाश विहीन ।

ज्योतिर्मय = का०, २७२ ।
[वि०](सं.) प्रकाशमय, चमकता हुआ ।

ज्योतिर्मान = का०, २६ ।
[वि०] (सं.) प्रकाशमान (दे० 'ज्योतिमान' ।)

ज्योतिष्पथ-स्वामी = का०, २५ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रकाश के मार्ग का स्वामी, सूर्य, चंद्र, ब्रह्म ईश्वर ।

ज्योतिष्मती = का०, २६० ।
[सं०स्त्री०] (सं.) चाँदनी रात । एक नदी । एक वैदिक छंद । एक बाजा । मालकंगनी ।

ज्योत्स्ना = का०, १२७, १३०, २५२, २७१, २८८ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) चाँदनी, सौंफ, सफेद फूल की तोरई ।

ज्योत्स्ना-सी = का०, ६२ ।
[वि०] (सं.) ज्योत्स्ना के समान, प्रकाश वाली, कान्ति वाली, अत्यन्त सुन्दरी ।

ज्योत्स्ना-शाली का०, ११६ ।
[वि०] (सं.) ज्योत्स्ना से पूर्ण या भरा हुआ, प्रकाश युक्त ।

ज्वलन = का०, ८४, १५६, २०७ ।
[सं० पु०] (सं.) अग्नि, ज्वाला, लपट । चीता या चित्रक नामक वृक्ष । जलन ।

ज्वलन-पिण्ड= ल०, ५६ ।
[सं. पु०] (सं.) जलता हुआ आग का गोला, मूर्तिमयी ज्वाला ।

ज्वलन-शील = का०, १५८, १५७ ।
[वि०] (सं.) जलने वाला या जलने की क्षमता रखने वाला ।

ज्वलित = का० कु०, १०८ । का०, ३३, ८५, [वि०] म०, १० ।
(सं.) जलता हुआ, या जला हुआ ।

ज्वाल = का०, १७३ ।
[सं०पु०] (सं.) अग्निशिखा ।

ज्वार = का०, १२५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) एक पौधा जिसका दाना एक प्रकार का अन्न होता है । समुद्र के जल का लहराते हुए ऊपर उठना या आगे बढ़ना ।

ज्वाला = आं०, १०, ६०, ६१, ६२, ७७ ।
[सं० स्त्री०] का० कु०, १३, ७१ । का०, ११ से ।
(सं.) अग्निशिखा, लपट, विष आदि की जलन या गर्मी, ताप ।

ज्वाला-ताप = का० कु०, २४ ।
[सं० पु०] (सं.) ज्वाला के समान ताप । जलने की भाँति का कष्ट होना ।

ज्वालायें = का०, १६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) अग्निशिखा, लपट, विष आदि की जलन । बहुत अधिक गर्मी ।

ज्वालामय = प्रे० प०, १५ ।
[वि०] (सं.) ज्वाला से युक्त, जलाने वाला । ताप दायक ।

ज्वालामयी = आं०, ६ ।
[वि०] (सं.) ज्वाला से भरी हुई । तापदायिनी ।

ज्वालामुखी= आं०, ६१ । का० कु०, ६२, ७१ ।
[सं० पु०] का०, ५, १४, ४७, ५८ ।
(सं.) एक प्रकार का पर्वत जिसके मुँह से समय-समय पर आग, धुआं या राख निकला करती है ।

ज्वालामुखी समान= का० कु०, ६७ ।
[वि०] (हि.) ज्वालामुखी के समान त्रास दायक ।

ज्वाला में = का०, १६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) अग्निशिखा, लपट, विष आदि की जलन में

ज्वालावलि = चि०, १३६ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) ज्वाला की पंक्तियां ।

ज्वालावली = का० कु०, ६३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) दे०—ज्वालावलि ।

ज्वाला-सी = का०, १८३ ।
[वि०] (सं.) लपट के समान ।

ज्वलिका-सी = चि०, १०६ ।
[वि०] (सं.) ज्वाला की भाँति जलानेवाली ।

ज्ञ

ज्ञात = का० २१० । झ०, ५४ ।
[वि०] (सं.) अवगत, जाना हुआ, बोधगम्य ।
ज्ञान = का० कु०, ६४ । का०, ५१, १६२,
[सं० पु०] १६५, १६७, १८२, १६४, २५४,
(सं.) २६२, २६९, २७२, २७३ ।
वस्तुओं और विषयों की वह जानकारी जो मन या विवेक में होती है । जानकारी, बोध, यथार्थ बात या सत्य की पूर्ण जानकारी, तत्वज्ञान ।
ज्ञानी = चि०, ५६ ।
[वि०] (हि.) जिसे ज्ञान हो, ज्ञानवान, आत्मज्ञानी ।

झ

झंकार = ल०, १३ ।
[सं० स्त्री०] झन-झन शब्द; झनझनाहट, झींगुर
(सं.) आदि छोटे कीड़ों के बोलने की ध्वनि ।
झंकार-पूर्ण = का-कु०, ६७ ।
[वि०] (स०) जिसमें झंकार की ध्वनि हो ।
झंकरित = प्रे०, १४ ।
[वि०पु०] (सं) झंकार करने वाली ध्वनि ।
झंकृत = का०, २४२, ल० ४२, ४४ ।
[वि०] (सं.) जिसमें झंकार हुई हो ।
झंझट = का० कु० ८ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) बखेड़ा, प्रपंच ।
झंझा = आ० १५, का० १३, १६५, ल० ४२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) ऐसी तेज आँधी जिसके साथ पानी हो ।
झंझा-प्रवाह-सा =का०, १५४ ।
[वि०] (हि.) बहुत तेज धारावाहिक आँधी के समान ।
झंझा वात-सा = ल०, ६६ ।
[वि०] (हि.) आँधी के झकोरों के समान ।
झंझा-सदृश = का० कु०, ८ ।
[वि०] (सं.) बहुत तेज जल युक्त आँधी के समान ।
झकोर = आ० १५ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) हवा का झोंका, झटका, धक्का, लहर ।
झगड़न = चि० १८६ ।
[क्रि०] (अ०) झगड़ा करना ।
झगड़ा = आ० ६७, का० कु० १२४, चि०
[सं० पु०] १८६ ।
(हि०) झक झक, किसी बात पर होने वाली कहा सुनी, विवाद, लड़ाई, हुज्जत, तकरार ।
झटपट = झ० ६४ ।
[अ०] (हि.) शीघ्र ।
झटके = का०, १३ ।
[सं० पु०] (हि.) हवा के तेज झोंके, झकोरे ।
झड़ते = का०, २६२ ।
[क्रि०] किसी वस्तु से उसके अंशों का गिरना ।
झड़ी = का० कु०, १०, ६७, ७२, का० १६ ।
[सं० स्त्री०] किसी चीज के लगातार झड़ने की
(हि.) क्रिया । कुछ समय तक लगातार होने वाली वर्षा । लगातार बहुत-सी बातें कहते जाना, या बहुत सी चीजें रखते जाना ।
झड़ी सी = का० कु०, ३२, ५३ ।
[वि०] (हि.) झड़ी के समान । दे० 'झड़ी' ।
झड़े = का०, १३३ ।
[क्रि०] (अ.) झड़ गये ।
(हि.) झंकार ।
झनकार = का० कु०, ४२, का०, १७५, झ०,
[सं० स्त्री०] १८, ३१, ३२, ल०, ६०, ७६ ।
(हि.) झंकार ।
झन-झन = म०, १३ ।
[सं०पु०] (हि.) झंकार की ध्वनि ।
झपकी = ल०, ६० ।
[सं० स्त्री०] हलकी सी नींद, आँख झपकने की
(अ.) क्रिया या भाव ।
झपेटे = म० १६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) झपट, झड़प ।
झर = का०, २४४ ।
[सं० स्त्री०] पानी का झरना, सोता, समूह, लाग-

(सं०) तार वृष्टि, झड़ी।

झरता = आ०, ६८। का०, ७५, २३५।

[क्रि०] (हि.) झरता है।

झरते = का० १७८, २३५, २५३।

[क्रि०] (हि.) झरते हैं।

झरना = का० कु०, २१। का० २६। झ० १५, १६।

[सं० पु०] (हि.) ऊँची जगह से पानी या और किसी चीज

(अ०) लगातार गिरना, ऊँचे स्थान से गिरने वाला जल प्रवाह। सोता, चश्मा।

झरने = का० कु०, ६६। का० २३५। प्रे० ७।

[सं० पु०] (अ) 'झरना' का बहुवचन। दे० 'झरना'।

झरनै = चि०, १४५।

[क्रि०] (ब्र. भा.) झड़ना।

झरनो = का० ६३।

[सं० पु०] (अ.) 'झरना' का बहुवचन। दे० 'झरना'।

झरै = चि०, ५१।

[क्रि०] (ब्र. भा.)-झरता है।

झलक = आ० १६, ६७। का०, १४३, ५५६,

[सं० स्त्री०] प्रे० १८। ल० ४८।

(हि.) चमक, दमक, आभा। आकृति का आभास या प्रतिबिंब, क्षणिक दर्शन। वह प्रधान आभा जो समस्त चित्र में व्याप्त हो।

झलकना = का० ७३, १०५, २६२। चि०, १५७,

[क्रि०] १६०। झ० ७२।

(अ.) चमकना, कुछ-कुछ प्रगट होना आभास होना।

झलकावत = चि०, २२।

[क्रि०] (ब्र.भा.) झलका रहा है, आभास दे रहा है।

झलके = का०, १८०, २४५।

[सं० पु०] (अ.) फफोले। [क्रि०] दिखायी दिये।

झलते = प्रे०, ७।

[क्रि०] (हि.) पंखे से हवा करते हैं।

झलना = का० कु०, ६८।

[क्रि०] (हि.) पंखे से हवा करना, हिलाना।

झलमल = का०, २३३, २३४, २३५।

[सं० पु०] अंधेरे में होनेवाला हलका प्रकाश,

(हि.) चमक दमक।

झला = चि०, १४६।

[सं० पु०] (हि.) हलकी वर्षा, झालर, पंखा, समूह।

झहर-सी = चि०, २६।

[वि०] (हि.) झटकों की झर-झर के समान।

झाँई = का०, २६०। झ०, १६, ७१, ७२।

[सं० स्त्री०] छाया, परछाईं, अंधकार, अँधेरा,

(हि-) धोखा। रक्त विकार के कारण शरीर पर पड़े हुए काले धब्बे।

झाँकना = झ०, २५। ल०, ६२।

[क्रि०] (हि.) लुक-छिपकर देखना।

झाँक-झाँककर = का० कु०, १२४।

[क्रि०] (हि.) छिपे रूप से देख-देखकर।

झाड़ = आ०, १६।

[सं० पु०] छोटे-छोटे ऐसे वृक्ष जिनकी पत्तियं

(हि.) जमीन के निकट हों। छत में टाँगे जाने वाले शीशे के फानूस।

झाड़खण्ड = ल०, ४०।

[सं० पु०] ऐसा स्थल जहाँ बहुत कँटीले छोटे-छोटे

(हि.) वृक्ष लगे हों।

झालर = का० कु० ६२। का०, २६३। झ०,

[सं० स्त्री०] ५६।

(हि.) किसी वस्तु की शोभा बढ़ाने के लिए उसके किनारे-किनारे नीचे लटका हुआ किनारा।

झिझक = का०, ५२।

[सं० स्त्री०] (हि.) एक प्रकार का अज्ञात भय।

झिटका-सा = का०, ४५।

[वि०] (हि.) झटका-सा। कंपन पैदा होना। धक्के-सा लगना।

झिटके = ल०, ६५।

[सं० पु०] (हि.) झटका, धक्का। (बहुवचन)।

झिर-झिर = आ०, १८।

[अ०] (हि.) किसी द्रव पदार्थ की फुहियाँ, धीरे-धीरे झड़ना।

झिलकर = का०, २६२।
[क्रि०] (हि.) जबरदस्ती मिलकर।

झिलना = ल०, ४६।
[क्रि०] (अ.) विवशता पूर्वक कोई कष्ट या आपत्ति झेलना।

झिल-मिल = आ०, ७३। का०, २७, ६७, ७८, १०४, १३६, १६७, १२६। प्रे०, ५। ल०, ४३।
[वि०] (हि.) हिलता हुआ प्रकाश, एक प्रकार का मुलायम कपड़ा।

झिल्ली = का० कु०, १२४। का०, १७५। भ०, ३१।
[सं० स्त्री०] (सं.) झींगुर।

झिल्ली-रव = चि०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) झींगुर की ध्वनि, झनकार।

झीना = का०, ५३।
[वि०] (हि.) बहुत महीन, झिल्लड़, बहुत से छेद वाला। झँझरा, दुर्बल।

झीनी = का०, कु०, ७२। का०, १६६, २६३।
[वि०] (हि.) झीना का स्त्रीलिंग। दे० 'झीना'।

झीम-रहे = का०, ६५।
[क्रि०] (हि.) किसी भाव में मस्ती से झूम रहे हैं। हिल रहे हैं।

झील = भ०, ७१, ७२, ८४। ल०, १६।
[सं० पु०] (हि.) खूब लंबा-चौड़ा प्राकृतिक जलाशय। जिसके चारो ओर भूमि हो।

झुंड = म०, ३, ५, ७।
[वि०] (हि.) समूह, गिरोह, समुदाय।

झुँझलाता = का०, २००, २२७।
[क्रि० पु०] (हि.) झिझकता।

झुक = का०, ६४, ६८, १८५। चि०, ६६।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) भ०, २३। म०, २०, २१। ऊपर से नीचे की ओर हुलक कर।

झुकना = भ०, ६६। ल०, १०, ३५, ६०।
[क्रि०] (हि.) ऊपरी भाग का नीचे की ओर कुछ लटकना, निहुरना, नवना, नम्र होना, मन का किसी ओर प्रवृत्त होना, हार मानना।

झुकाना = का० कु०, ७३। चि०, ५८। ल०, ६६।
[क्रि०] (हि.) नवाना, नीचे की ओर लटकाना।

झुकाव = का०, १८५।
[सं० पु०] (हि.) मन की प्रवृत्ति का किसी दिशा की ओर प्रवृत्त होना।

झुकी-सी = का०, १८६, ६४। चि०, २२। भ०, २८।
[वि०] (हि.) कुछ मुड़ी हुई-सी। नमित।

झुके = का०, १४२।
[क्रि०] (हि.) प्रवृत्त हुए।

झुठलाना = का०, २७२।
[क्रि०] (हि.) झूठा बनाना, बहकाना।

झूठे = क०, २८। चि०, १७६।
[सं० पु०] (हि.) झूठ बोलने वाले, किसी-वास्तविकता का विपरीत चित्रण।

झुरमुट = का०, ८८। प्रे०, ३। ल०, २६।
[सं० पु०] (हि.) पास-पास उगे हुए कई झाड़। बहुत से लोगों का समूह, गिरोह। कुंज।

झुरमुट-सा = म०, ४।
[वि०] (हि.) झुरमुट के समान। कुंज के समान।

झुलाऊँगी = का०, १५२।
[क्रि०] (हि.) परेशान करूँगी। विवश कर दूँगी।

झुलसते = का०, २१७।
[क्रि०] (हि.) अधिक गर्मी या जलने के कारण किसी वस्तु के ऊपरी भाग का सूखना या जलकर काला पड़ जाना। झौंसते।

झुलसना = म०, ५।
[क्रि०] (हि.) देखें झुलसते।

झुलसाता = का०, १५८।
[क्रि०] (हि.) झुलस जाता। जलता हुआ।

झुलसाना = का०, कु०, १३।
[क्रि० पु०] (हि.) देखें 'झुलसाना'।

झुलसानेवाली = ल०, ६६।

[वि०] (हि०.) जलाने वाली।
झुलसाया = का०, १८१।
[क्रि०] (हि.) झुलस गया।
झुलसी = १२१
[वि०] (हि.) झुलस गई।
झूम-उठा = का०, २२३।
[क्रि० पु०] (हि.) मस्त हो उठा।
झूम-झूमकर = क०, ८।
[पूर्व०क्रि०] (हि) हिल-हिल कर।
झूमते = क० १८, चि०, ३८। म० ८, १६।
[वि०] (हि.) मस्ती में हिलते।
झूमना = क०, ८। चि०, ६६। झ०, ६२।
[क्रि०] ल०, ७४।
(हि.) बार-बार आगे-पीछे किसी वस्तु का हिलना। झोंके खाना।
झूमपड़ी = का०, २२५।
[क्रि०] (हि.) प्रसन्न हो उठी।
झूमे = का०, १४५।
[क्रि०] (हि.) प्रसन्न हुए।
झूल = का०, ७३, १६२, २४६। झ०, ७०।
[क्रि०] चौपायों की पीठ पर डाला जाने वाला
(हि.) कपड़ा। साधुओं की पोशाक विशेष।
झूलता = का०, २५३।
[क्रि०] (हि.) हिलता। झूले पर झूलने की दशा।
झूलना = ल०, ४०।
[क्रि०] नीचे लटककर बार-बार आगे-पीछे इधर-
(हि.) उधर झोंके से हिलना। झूले पर बैठ कर पेंग लेना। किसी बात या काम की आशा में बराबर किसी एक स्थान पर आते-जाते रहना। लटकना।
झूला = का०, १४६, २६४।
[सं० पु०] पेड़ या छत आदि में लटकाई हुई
(हि.) रस्सियाँ या रस्से जिस पर बैठकर झूलते हैं। हिंडोला।
झूले-सी = का०, १०५, १५१।
[वि०] (हि.) हिंडोले के समान।
झूलो = का० १२८।
[क्रि०] (हि.) 'झूलना' का विधि सूचक रूप।
झेल = झ०, ७०।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) झेलकर। सहकर।
झेलता = का०, २१६।
[क्रि० पु०] (हि.) सहता हुआ।
झेलती = का०, १४३।
[क्रि०] (हि.) सहती हुई।
झेलना = आ०, ७७। का० कु०, १०, ६७।
[क्रि०] झ० ३२।
(हि.) सहना।
झेलती है = २२६।
[क्रि०] (हि.) सहती है।
झोंक = आं० २७। का० कु०, १८, २५। का०, १७०, २६०। झ०, ७३।
[सं० पु०] झुकाव, प्रवृत्ति। बोझ। भार। प्रबल
(हि०) या तीव्र गति। वेग, तेजी।
झोंके = का० १०५, ११८।
[सं० पु०] (हि.) 'झोंक' का बहुवचन।
झोपड़े = ल० ५६।
[सं० पु०] (हि.) घास-फूस की बनी हुई कुटी।
झोरी = झ० ५४।
[सं० स्त्री०] (हि.) झोली।
झोली = ल० १७।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'झोरी', थैला।

ट

टंकार = का०, २००।
[सं० स्त्री०] झनकार, विस्मय, कीर्ति, ठन-ठन
(सं.) शब्द, धनुष खींचने का शब्द।
टक = चि०, १५१, १७१। प्रे०, ३।
[सं० स्त्री०](सं.) स्थिर दृष्टि, तराजू का पलड़ा।
टकराना = आ० ८, ४३। का० कु०, ५७। का०,
[क्रि० अ ०] ३, १२, १७, १६, २६, ५२, ६६,
[क्रि० स०] १६७, २४६, २६३।
(हि०) ज़ोर से भिड़ना, टक्करें खाना, मारे-मारे फिरना, व्यर्थ घूमना।

एक चीज पर दूसरी चीज को जोर से मारना, टक्कर देना।

टके-मोल = प्रे०, २।
[मुहा०] (हि.) सस्ते भाव।

टटोलता = आ, ५१।
[क्रि० सं०] (हि.) मालूम करने के लिए उँगलियों से छूना, या दबाना। ढूँढने के लिए इधर-उधर हाथ फैलाना या दौड़ाना। बातचीत के द्वारा किसी के भाव को जानना। थाह लेना।

टट्टी = प्रे०, ४।
[सं० स्त्री०] (हि.) बाँस या खस आदि का बना हुआ हल्का और छोटा टट्टर।

टपकाना = आं०, ५७।
[क्रि० सं०] (हि.) बूँद बूँद करके गिराना, चुआना, भभके से अर्क खींचना, या चुआना।

टरो = का० कु०, ११६।
[क्रि० अ०] (हि.) आज्ञा देकर किसी को हटाने की सूचना देने वाली क्रिया।

टलतीं-विचलतीं= ल०, ६६।
[क्रि० अ०] (हि.) हट जातीं और आने से मुँह मोड़ लेतीं, अपने विचारों से अलग हो जातीं और दूर हो जातीं।

टलना = का० कु०, ४१।
[क्रि० अ०] (हि.) सामने से हटना, खिसकना, अपनी जगह से हटना।

टहनियाँ = का० कु०, ६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) वृक्ष की पतली या छोटी शाखाएँ, पतली डालियाँ।

टहलना = का० कु०, १८, ६८, १०१। का०, २०५, २६६। भ०, २५।
[क्रि० अ०] (हि.) मनबहलाव के लिए धीरे-धीरे चलना। घूमना-फिरना।

टालीकोट = वि०, ६३।
[सं० पु०] एक स्थान विशेष का नाम, जहाँ प्राचीन (हि.) काल में मुगलों के साथ महाराज सूर्यकेतु का युद्ध हुआ था।

टिकना = का०, १६०, २००। प्रे०, १६।
[क्रि० अ०] (हि.) कुछ समय के लिए रुकना या ठहरना, कुछ दिनों तक काम देना या काम में आना, स्थिर रहना, बना रहना या अड़ा रहना।

टीको = वि०, ६।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) टीका या तिलक।

टुकड़ा = का० कु०, १०६।
[सं० पु०] (हि.) खंड, चिह्न के द्वारा किसी वस्तु का विभक्त अंग, रोटी का तोड़ा हुआ अंश या खंड।

टुकड़ी = आं०, १३।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे०, 'टुकड़ा' दल, जत्था, किसी विशेष प्रकार के काम करने वालों का दल।

टुकड़े-टुकड़े = भ०, ३८।
[सं० पु०] (हि) खंड-खंड।

टूट = का२३६। ल०, ४५।
[पूर्व-क्रि०,सं०] (हि.) टूटकर, टूटकर निकला हुआ खंड। टूटन। भूल, टोटा, घाटा, न्यून। कमी।

टूटना = का० कु०, १०८। का० १६३। ल०, २१।
[क्रि० अ०] (हि.) खंड-खंड होना। भग्न होना, अंग का जोड़-जोड़ उखड़ जाना। लगातार चलने वाली क्रिया का क्रम रुकना, किसी पर एकाएक आक्रमण करना। एकाएक बहुत से लोगों का लूटने के लिए या मारने के लिए आ जाना। धन वैभव में कमी का आना। युद्ध में किले का शत्रु के हाथ में आ जाना। शरीर में ऐंठन या तनाव के साथ पीड़ा होना।

टूटी = आ०, १०। प्रे०, १८। ल०, ४२।
[क्रि० अ०] (हि.) टूट गई, खंड-खंड हो गई।

[वि०] (हि.) टूटी हुई । खंड-खंड होने वाली । कमी
[सं० स्त्री०] (हि.) घाटा, न्यूनता ।

टूटे = का०, १८५ । प्रे०, १३ । म०, ११ ।
[क्रि० अ०] (हि.) टूट जाये, (वि०) टूटे हुए ।

टेक = का०, ५५, १५३ । चि०, ३२ ।
[सं० स्त्री०] भारी वस्तु को टिकाये रखने के लिए
(हिं.) उसके नीचे लगाई हुई लकड़ी ।
चाँड़, थूली, ढाँसना, सहारा, आश्रय,
अवलंब । ऊँचा टीला । मन में ठानी हुई
बात, हठ ।

टेढ़ी = चि०, १८५, १६० । भ्रु० ३२ ।
[वि०] जो सीधा न हो, कुटिल, तिरछा, कठिन
(हि.) मुश्किल ।

टेरो = चि०, १७२ ।
[क्रि०स०] (ब्र.भा.) टेरना या पुकारना ।

टोक = का० २२५ ।
[सं० स्त्री०] टोकने की क्रिया या भाव, किसी वस्तु
(हि.) का ओर या छोर ।

टोकना = का० कु०, ४५ ।
[क्रि०स०] किसी को काम करने के लिए उद्यत या
(हि.) तैयार देखकर कुछ कहकर या पूछताछ
करके रोकना ।

टोने से = का० ३६ ।
[वि०] (हि.) टटोलते हुये के समान, ढूढ़ते हुए से ।

टेरि = चि० ४१ ।
[पूर्व क्रि०] (हि.) पुकार कर ।

टोलियाँ = भ्रु० ७० ।
[सं० स्त्री०] एक साथ एक काम करनेवाले व्यक्तियों
(हि.) की छोटी छोटी मंडलियाँ, छोटे मुहल्ले ।

ठ

ठंढक = का० १०१ ।
[सं० स्त्री०] शीत, सरदी, जाड़ा । तरी, संतोष,
(हि.) तृप्ति ।

ठगे से = चि०, १५७ ।
[मुहा०] (ब्र. भा.) ठगे से, चकित से, भवचक्के से ।

ठहर-ठहर = का०, २०१, २४१ । ल०, ६, २२, ३६ ।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) रह रहकर, रुक-रुककर ।

ठहरती = का०, २५, ८६, १०, २६० ।
[क्रि० अ०] (हिं.) दे० 'ठहरना' ।

ठहरना = आ०, २३, क०, १५ । का० कु० ८ ।
[क्रि० अ०] (हि.) भ्रु०, २४, २६, ३१, ८०, ८८ । ल०,
१०, ७१ ।
रुकना, थमना, डेरा डालना, टिकना,
एक स्थान पर बना रहना । जल्दी खराब
या नष्ट न होना । धैर्य रखना, निश्चित
या पक्का होना ।

ठहरात = चि० ६७ ।
[क्रि० स०] (ब्र.भा.) दे० 'ठहराना' ।

ठहराती = क० ६ ।
[क्रि० स०] (हि.) दे० 'ठहरना' ।

ठहराना = का० २६ ।
[क्रि० स०] चलने से रोकना, टिकाना, अड़ाना,
(हि.) पक्का करना, तै करना ।

ठहरावो = चि० ३६ ।
[क्रि० स०] किसी को ठहराने के लिए दूसरे को
(ब्र. भा.) प्रेरित करना ।

ठहरे = का० १६२ ।
[क्रि० स०] (हि.) रुके, अड़े ।

ठहरो = का० कु०, ८४ । का०, १००, १०६,
[क्रि० स०] २०० । म०, ४
(हि.) ठहरने की आज्ञा देना ।

ठांव = का० १८ ।
[सं० पु०] (हि.) स्थान, जगह, ठिकाना ।

ठाढ़ो = चि०, ७०, १८१ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) खड़ा ।

ठानो = चि०, ६१ ।
[क्रि० स०] ठानना, तत्परता के साथ कार्य आरम्भ
(ब्र. भा.) करना, दृढ़ संकल्प करना ।

ठान्यो = चि०, ३२ ।
[क्रि० स०] ठान लिया, दृढ़ कर लिया, पक्का कर
(ब्र. भा.) लिया ।

ठिठकती-सी = का०, ३६ ।
[वि०] रुकती हुई के समान या रुक-रुक कर
(हि.) चलती हुई की तरह ।

ठिठकी = चि०, १६४ ।
[क्रि० अ०] (हि.) रुक गयी, थम गई, ठिठक गई ।

ठिठुरे = का०, ३ ।
[वि०] (हि.) सरदी के कारण ऐंठे हुये या सिकुड़े हुये ।

ठिठोली = चि०, ५८ । ल०, १७ ।
[सं० स्त्री०] दिल्लगी, मजाक, हँसी ।

ठीक = क० १३, २२, २३, ३६ । का०, ११०
[वि०] २५१ । झ०, ३२ । प्रे०, ५ । म०,
(हि.) ५ १०, ११, २१ ।
यथार्थ, प्रमाणिक, उपयुक्त, उचित, मुनासिब । शुद्ध; दुरुस्त, सीधे रास्ते पर आया हुआ, निश्चित किया हुआ, पक्का ।

ठुकराना = का०, १२६ । झ०, ३१ । ल०, ४२ ।
[क्रि० स०] ठोकर लगाना, तुच्छ समझ कर दूर
(हि.) करना ।

ठोकर = का० कु०, १४ । का०, १०२, १६३ ।
[सं० स्त्री०] प्रे०, १६ । ल०, ५७ ।
(हि.) वह आघात जो रास्ते में चलते हुए कंकड़-पत्थर आदि के धक्के से पैर में लगता है ।

ठोस = ल०, ७६ ।
[वि०] (हि.) जो पोला या खोंखला न हो, दृढ़, मजबूत ।

ठौर = चि०, १७५, १८६, १६० ।
[सं० पु०] (हि.) जगह, स्थान ।

ठौर-हि-ठौर = चि०, १८३ ।
[सं० पु०] (हि.) जगह-जगह, प्रत्येक स्थान ।

ड

डंक = का०, २४६ । ल०, ७८ ।
[सं० पु०] आर, विषैले कीड़ों का वह अंग जिसके
(हि.) माध्यम से डसते हैं । कलम को जीभ ।

डग = का०, २१४, २८० ।
[सं० पु०] फाल, कदम । कदम के बीच की वह
(हि.) दूरी जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलते हुए पैर रखने में आती है ।

डग भरता = का०, २८६ ।
[मुहा०] (हि.) चलते जाना ।

डगमग = का०, १६५। ल०, ५० ।
[स० पु०] इधर-उधर हिलना-डुलना, विचलित
(हि.) होना, किसी बात पर जमा न रहना ।

डर = का०, ६८ । का०, ५२, १६६, चि०,
[सं० पु०] ६७, म०, १२, १३ ।
(हि.) अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होने वाला भाव, भय, भीति, अनिष्ट की सम्भावना से मन में होने वाली कल्पना । आशंका ।

डरती = का०, १७६ ।
[क्रि० अ०] दे० डरना क्रिया का सामान्य वर्तमान
(हि.) रूप ।

डरना = का० कु०, ४४, ८१ । चि०, ७२ ।
[क्रि० अ०] झ०, २१, ७८ । ल०, ३८ ।
(हि.) अनिष्ट अथवा हानि की आशंका से व्याकुल होना, भयभीत होना, आशंका करना ।

डरहु = चि०, ५२ ।
[क्रि० अ०] (ब्र. भा.) डरो, भय करो ।

डरा = का०, १८२, १८६ ।
[क्रि० स०] (हि.) डर गया, भयभीत हो गया ।

डराहि = चि०, २२ ।
[क्रि० अ०] (ब्र. भा.) डरते हैं, भय करते हैं ।

डरे-डरे = का०, १७६ ।
[वि०] भयभीत, आशंकित, अनिष्ट की सम्भा-
(हि.) वना से किसी के सामने आने में हिचकिचाहट संकोच तथा भय भाव से भरे हुए ।

डांड़े = का०, १६ ।

[सं० पु०] (हि.) नाव को खेने का डाँड़ा, ।

डार = चि०, १५, १४७, १७२ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) डाल, शाखा, एक प्रकार की खूँटी जो फानूस जलाने के लिए दीवार में लगाई जाती है । डलिया ।

डारि = चि०, २९, १६३ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र भा.) डालकर, छोड़कर ।

डरोमत = का०, ५८ ।
[क्रि०] भयभीत न होओ ।

डारिकै = चि०, १७२ ।
[पूर्व० क्रि०] दे० 'डारि' ।

डाख्यो = चि०, ६७ ।
[क्रि० सं०] (हि.) डाल दिया, छोड़ दिया ।

डाल = क०, १६ । का०, ५६, १४१, १५१,
[सं० स्त्री०] २११ । चि०, १४६ । भ०, ४६ ।
(हि.) प्रे०, ८, १६ । म०, ७ । ल०, ६७ ।
पेड़ की शाखा, डार । तलवारका फल ।

डाल-डाल = क०, ६८, २६३ । भ०, २७ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) प्रत्येक डाल, सब जगह ।

डालना = आं०, ४२ । का०, ५, ३१, का० कु०,
[क्रि० सं०] ३६ । ल०, ४१ ।
(हि.) नीचे गिराना, छोड़ना किसी पात्र में कोई वस्तु गिराना, छोड़ना, घुसाना, फैलाना ।

डालने = का०, १५४ ।
[क्रि० सं०] (हि.) छोड़ने, फेंकने, रखने ।

डाल-पात = का० कु०, १०१ ।
[सं० पु०] (हि.) शाखा और पत्ते ।

डाल-सहित = का० कु०, २५ ।
[वि.](हि.) शाखा के साथ या सहित, सशाखा ।

डाला = का०, १६२, १६६ ।
[क्रि० स०] (हि.) छोड़ दिया, फेंक दिया, रख दिया ।

डालियों = का०, ३०, १७७ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) शाखायें, डारियाँ ।

डाली = आं०, १८, २६ । का०, ७७, ६८,
[सं० स्त्री०] १६३, १६७, १७७, २८४ । का० कु०,
(हि.) ३८ । चि०, ४६ । प्रे०, २, ६, १४ ।
म०, २ । ल०, ३१, ३५, ४२ ।
दे० 'डाल' ।

डाले = आं०, १६ । का०, १४६ ।
[क्रि० स०] (हि.) छोड़े, रखे, फेंके ।

डालों = का०, १५८ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'डालियाँ' ।

डालो = का०, १८४ ।
[क्रि० स०] (हि.) डालना का आज्ञार्थक क्रिया ।

डाह = का०, ८४ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) जलन, ईर्ष्या ।

डीह = का०, १४५ ।
[सं० पु०] छोटा गाँव, उजड़े हुए गाँव का टीला,
(हि.) ग्राम देवता ।

डूबती-सी = का०, २९ ।
[वि०] डूबती हुई के समान, वह जो डूबती
(हि.) प्रतीत होती हो ।

डूबना = आं० १, का० कु०, २८ । का०, ८०,
[क्रि० अ०] १०८ । चि०, ८ । प्रे०, २ ।
(हि.) पानी या किसी तरल पदार्थ में पूरा समाना, गोता खाना, सूर्य, चन्द्र, आदि ग्रहों का अस्त होना, चौपट होना, नष्ट होना, ऋण दिये हुए धन का न मिलना, व्यापार से लगे हुए धन का घटना ।

डूबा = का०, ८, १५, ७०, १५६, १६८ ।
[क्रि० अ०] डूब गया । नष्ट हो गया, सूर्य, चन्द्र
(हि.) आदि ग्रह अस्त हो गये ।

डूबाना = चि०, १७८ । ल०, १६ ।
[क्रि० सं०] (हि.) पानी या किसी तरल पदार्थ में समूचा डालना, गोता देना, चौपट या नष्ट करना ।

डूबे = का०, ८, ५६, १८४ ।
[क्रि० अ०] (हि.) दे० डूबा ।

डुब्बी = भ०, ५१ ।
[सं० स्त्री०] (हि) जल में डूबने की क्रिया या भाव, गोता ।

डेरा = का० कु०, ६३ ।
[सं० पु०] टिकाना, ठहराव, खेमा, तम्बू, ठहरने
(हि.) का स्थान, छावनी ।

डेरा-डालना = आं०, १५ ।
[मुहा०] ठहरने के लिए आयोजन करना या
(हि.) टिकना ठहरना ।

डोर = का०, २६५ । ल०, ४६ ।
[सं०स्त्री०] पतला तागा, डोरा, धागा, पानी
(हि.) खींचने वाली रस्सी ।

डोरी = का०, १२५ । का० कु०, ११४ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) रस्सी, रज्जू, पाश, बंधन ।

डोरी-सी = ल०, ६६ ।
[वि०] (हि.) डोरी के समान, पतली ।

डोल = का०, ६८, १४८, १६६, २३०, २५२,
[सं० पु०] लोहे का गोल बरतन, हिंडोला, झूला,
(हि.) पालकी ।

डोलत = चि०, १, १५८, १६१ ।
क्रि० अ०] (हि.) डोल रहा, हिल-डुल रहा, चल रहा ।

डोलना = ल०, १६ ।
[अ०] हिलना, चलायमान होना, चलना,
(हि.) फिरना, टहलना । हटना । चला जाना ।
चित्त विचलित होना ।

डोलै = चि०, १४, ४६ ।
[क्रि० अ०] (ब्र. भा.) हिलै, चलै, हटै । 'दे० डोलना ।'

ढ

ढँक रहे थे = का०, ४६, १५१ । ल०, २१, २५ ।
[क्रि० स०] किसी वस्तु के ऊपर किसी दूसरी वस्तु
(हि.) जैसे चादर आदि) को ओढ़ाकरछिपाने
की क्रिया कर रहे थे ।

ढँकना = आं०, ७६ । प्रे०, १२ । ल०, ७६ ।
[सं० पु०] (हि.) ढाकने की वस्तु, ढक्कन ।

[क्रि०अ०] (हि.) छिपाना ।

[क्रि०स०] किसी वस्तु को ओट में करना, किसी
(हि.) वस्तु को किसी वस्तु से ढाँककर छिपाना ।

ढंग = का० कु०, ६६ । म०, १४ ।
[सं० पु०] रीति, शैली, प्रणाली, पद्धति, प्रकार,
(हि.) भाँति, तरह । रचना, बनावट । युक्ति,
उपाय । आचरण, व्यवहार, चालढाल,
लक्षण, स्थिति, दशा ।

ढकले = भ्रु०, २२ ।
[क्रि०स०] 'ढकना' क्रिया का प्रेरणार्थक वर्तमान
(हि.) रूप ।

ढकी = का० कु०, ७१ ।
[वि०] (हि.) ढँकी हुई, छिपी हुई, आच्छादित ।

ढके हुए = ल० ६४ ।
[वि०] (हि.) छिपे हुए । ओट में रहनेवाले ।

ढयो = चि०, १८४ ।
[क्रि० स०](ब्र.भा.) नष्ट कर दिया, बरबाद कर दिया ।

ढरना = भ्रु , १६, ४४ । ल०, ३८ ।
[क्रि० अ०] ढरकना, ढल जाना, गिरकर बह जाना,
(हि.) गुजरना, बीतना, उँड़ेला या लुढ़काया
जाना, साँचे में ढाला जाना ।

ढरी = का०, १८१ ।
[क्रि०अ०] (हि.) ढरना क्रिया का सामान्य भूत रूप ।

ढरे = का०, ६७ ।
[क्रि०अ०] (हि) दे० 'ढरी' ।

ढरो = का० कु०, ७७ ।
[क्रि०अ०] (हि.) 'ढरना' क्रिया का आज्ञा सूचक रूप ।

ढल गया = का० १४४, २३५ । ल० ३५ ।
[क्रि०अ०] (हि.) समाप्त हो गया, अस्त हो गया ।

ढलकना = ल० ६ ।
[क्रि० अ०] किसी तरल या द्रव पदार्थ का आधार से
(हि.) नीचे की ओर जाना, ढलना, लुढ़कना ।

ढलता-सा = का०, १०१ ।
[वि०] ढलते हुए के समान, अस्त होता हुआ
(हि.) सा या समाप्त हुआ सा ।

ढलती = का०, १७६ ।
[क्रि० अ०] पक्ष में हो जाती । उतरती, समा
(हि.) जाती या विलीन हो जाती । अनुरूप
हो जाती ।

ढलते = का०, २६४, २७२।
[क्रि० अ०] (हि.) दे० 'ढलती'।

ढलना = प्रे०, ४। म०, २०।
[क्रि० अ०] (हि.) ढरकना, गिरकर बहना। बीतना लुढ़कना, किसी के पक्ष में होना, किसी पर प्रसन्न होना, साँचे में ढाला जाना; लहराना।

ढलमल = ल० ३०।
[वि०] (हि.) लहराती हुई, आभा से युक्त।

ढला = का०, १६५, २२८।
[क्रि० अ०] (हि.) 'ढलना' क्रिया का सामान्य भूत रूप।

ढली = का०, २४७।
[क्रि० अ०] (हि.) दे० 'ढला', (स्त्रीलिंग)।

ढलें = ल०, ४२।
[क्रि०अ०] (हि०) ढलना क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

ढहकर = का०, १४५।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) गिर कर या ध्वस्त होकर, नष्ट होकर, मिटकर।

ढार = का०, ८३। का० कु०, ७७। भ०, २१, ४४।
[सं० पु०] (हि.) ढाल। उतार, ढाँचा, रचना, बनावट।
[सं० स्त्री०] (हि.) कान का एक गहना।
[क्रि० स०] (हि.) 'ढारना' क्रिया का सामान्य रूप।

ढारत = चि०, १८२।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) ढार रहा था, 'ढार' देना।

ढारि = चि०, १५०।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) ढारकर।

ढारिके = चि०, ४७।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) दे० 'ढारि'।

ढाल = का०, ७२, १६८, २२८। म०, ११।
[सं० स्त्री०] (सं.) एक प्रकार का वह अस्त्र जिससे तलवार आदि की चोट रोकी जाती है। वह जगह जो बराबर नीची होती चली गई हो। ढालने की क्रिया या भाव।

ढालकर = का०, १६३।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) उड़ेलकर, गिराकर।

ढालती = का०, १८३, २६८।
[क्रि० स०] (हि.) 'ढालना' क्रिया का सामान्य भूत रूप।

ढालना = का० कु०, ६७।
[क्रि० स०] (हि.) किसी तरल पदार्थ को गिराना या उड़ेलना।

ढालवें = का०, २७६।
[वि०] (हि.) वह जमीन जो बराबर नीची होती गई हो। ढालू।

ढिग = चि०, ३६, ६६।
[क्रि०वि०] (हि.) समीप, निकट।
[सं० स्त्री०] (हि.) तट, किनारा, छोर, हाशिया।

ढिठाई = चि०, ६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) ढीठ होने की क्रिया या भाव, अनुचित साहस, निर्लज्जता, धृष्टता।

ढीठ = चि०, १८३, १८५।
[वि०] (हि.) बड़ों का आदर या संकोच न करने वाला अनुचित साहस करने वाला, साहसी।

ढील = ल०, १५।
[सं० स्त्री०] (हि.) शिथिलता, सुस्ती, अनुचित विलम्ब, बन्धन को ढीला करने का भाव।

ढीला = का०, १०४। ल०, १४।
[वि०] (हि.) जो कसा या तना न हो, जो बहुत गाढ़ा न हो, जो अपने कर्तव्य अथवा संकल्प पर स्थिर न हो। सुस्त—आलसी।

ढीली = का०, २७१। चि०, १८१।
[वि०] (हि०.) दे० 'ढीला'

ढीली-सी = का०, २३४।
[वि०] (हि.) सुस्त रहने वाली की तरह, आलसी सदृश्य, वह जिसका बंधन लुजलुज मालूम होता हो।

ढुलकना = प्रे० १६, २२। ल०, ७६।
[क्रि० अ०] (हि.) निरन्तर ऊपर से नीचे की ओर लुढ़कते हुए गिरना, लुढ़कना।

ढुलककर = का०, २६८।

[पूर्व० क्रि०] (हि.) लुढ़ककर।
ढुलकाना = १४।
[क्रि० स०] (हि.) लुढ़काना, ढँगलाना।
ढेर = प्रे० ७०। म०, २।
[वि०] (हि.) समूह, राशि।
ढेरी = आं०, ३५। का० कु०, ४६।
[वि०] (हि.) समूह, राशि।
ढेरों = का०, १६०।
[वि०] ढेर का बहुवचन।
ढोकर = का०, ८६।
[क्रि०] (हि.) लादकर लाना, वहन करना।
ढोती = का०, ११८।
[क्रि०] (हि.) ढोती है।
ढोना = आं०, १२।
[क्रि०] (हि.) वहन करना, लादकर लाना।

त

तंतु (तन्तु) = का०, १५१, १८५। चि०, १४३।
[सं० पु०] सूत, तागा। संतान। विस्तार, फैलाव।
(सं.) ताँत।
तंतु-सदृश = का०, १४५।
[सं० पु०] (सं.) धागे की तरह, सूत की तरह।
तंत्र = का० कु०, ११४। का०, १६३।
[सं० पु०] सूत, जुलाहा, ताँत, कपड़ा। सिद्धाँत,
(सं.) प्रमाण। कारण, उपाय। अधिकार।
समूह। धन। श्रेणी। उद्देश्य।
हिन्दुओं का उपासना सम्बन्धी एक
शास्त्र जो शिव का चलाया हुआ माना
जाता है।
तंद्रा = आं०, ५४। का०, ३४, ६६, १००,
[सं० स्त्री०] १६६, २२६। भ०, ८८।
(सं.) वह अवस्था जो नींद आने के पहले
होती है। ऊँघाई।
तंद्रालस = का०, १६७।
[सं० पु०] (हि.) तन्द्रा-आलस्य।
तन्द्रा-सी = प्रे०, १६।
[सं० स्त्री०] अलसाई हुई, तन्द्रा के समान अलसाई
(हि.) हुई।
तउ = चि०, ५१, १६५।
[अव्यय] (हि.) तो भी, तिसपर भी, तथापि।
तऊ = चि०, १७६, १८४।
[अ०] (ब्र. भा.) दे० 'तउ'।
तक = आं०, ४०। का० कु०, ४१। का०,
[अव्यय] २८, ५२, ६४, ६६, १४०, १४२,
(हि.) १६६, १६६, १७०, १७५, १७६,
१८५, २१४, २२०, २५४। प्रे०, १८,
१६, २२, २५, २६। म०, ११, १५,
२२। ल०, १५, १६।
किसी वस्तु या व्यापार की सीमा या
अवधि सूचित करनेवाली एक विभक्ति।
पर्यन्त।
तकली = का०, १४१, १४२, १४५, १५०।
[सं० स्त्री०] (हि.) वह यंत्र जिससे सूत काता जाता है।
तज = ल०, १४, १५, १७।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) छोड़ना, परित्याग करना, त्यागना।
तजत = चि०, ३२।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) त्यागने की क्रिया या भाव।
तजि = चि०, ७४, १०६, १४८, १८८।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) त्याग कर, छोड़कर, तजकर।
तजै = चि०, १०३, १६८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) तजता है।
तजौ = चि०, १०३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छोड़ो। त्यागो।
तज्यो = चि०, ४७।
[क्रि०] (ब्र.भा.) त्याग दिया, छोड़ दिया।
तट = आं०, ४, ८, ७२। का०, ९०, १०।
[सं० पु०] का०, १३, १६, ३८, ८१, २४५,
(सं) २४६, २५०, २६३, २६६, २७०।
चि०, ५५। भ०, ३५। प्रे०, ८। म०,
८। ल०, ५३, ५६।
क्षेत्र, प्रदेश, किनारा, तीर। महादेव।
तटन = चि०, १५०।

[सं०पु०](ब्र.भा.) तटों, किनारों।

तटिनी = प्रे०, ८, ११, २१।
[सं०स्त्री०](हि.) नदी, सरिता।

तटिनी-तरंग = का० कु०, ७२।
[सं०पु०](हि.) नदी की लहर।

तड़ित = का० कु०, ४३। ल०, ३२, ६३।
[सं०स्त्री०] सं.) बिजुन, बिजली।

तत्त्व = क०, २८। का०, ३, १५३, २६८।
[सं० पु०] प्रे०, २०।
(सं.) यथार्थता, जगत का मूल कारण। सांख्य शास्त्र में तत्त्व २५ माने गये हैं। (पुरुष, प्रकृति, बुद्धि, अहंकार, चक्षु, कर्ण, नासिका, जिह्वा, त्वक, वाक्, पाणि पायु, पाद, उपस्थ, मन, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) परमात्मा, ब्रह्म, सार-वस्तु, सारांश।

तत्पर = क०, ११।
[वि०] (सं.) उद्यत, सन्नद्ध, । दक्ष, निपुण।

तथा = प्रे०, ११।
[अ०] (सं.) और।

तथागत = ल०, १२।
[सं० पु०] (सं.) गौतम बुद्ध।

तथापि = का० कु०, ३६। चि , १५५।
[अव्य०] (सं.) तौभी, तब भी, तिसपर भी।

तदपि = चि०, ३०,३६, ४१,१०१, १६६,१६८
[अ०] १७०।
(सं०) तौ भी, तिसपर भी, तथापि।

तद्यपि = चि०, ७०,
[अ०] (सं.) तौभी।

तन = आं०, २४, क०, १२३, २६३,
[सं० पु०] चि०, ३४, १४६, भ्रु०, १६।
(सं.) तनु, शरीर, देह, काया, बदन।

तनक = का० कु०, ४५,८४।
[वि०]
(हि.) दे० 'तनिक'। [सं०] एक रागिनी का नाम।

तनता = का० कु०, ११७। का० ३४।
[क्रि० अ०] तनना क्रिया का रूप। खिंचाव के
(हिं.) कारण अपने पूरे विस्तार तक पहुँचना। अकड़ कर सीधा खड़ा होना। अभिमान पूर्वक रुष्ट होना।

तन-मन = का०, १२८। चि०, ६५ प्रे० प० २।
[सं पु०] (हिं.) पूर्ण तत्परता, पूर्ण सहयोग, सब कुछ।

तन-रक्षा = का० कु०, ३५, का० १६१, प्रे.प.
[सं० स्त्री] १५, २५।
(सं.) बचाव, रक्षण। राख, भस्म। शरीर की रक्षा।

तना = का० कु०, ६। का०, ७१,१२६, २०५।
[सं० पु०) (फा.) चि०, १५१।
(हिं०) वृक्ष के नीचे का हिस्सा जहाँ डाली नहीं होती। पेड़ का जड़।

तनिक = का० कु०, ४५, का०, २४, ७१,
[वि०] १४१, १६०, १६४, १६७, भ्रु० ३६।
(हि०) थोड़ा, कम, छोटा।
(क्रि०वि०) (हि.) जरा भी, टुक।

तनिको = आं० ४६। क०, १४। चि०, १८६।
[क्रि० वि०] (ब्र. भा.) जरा भी।

तनी = चि०, १६४।
[क्रि०] (हि.) तनना का भूतकालिक स्त्रीलिंग रूप।

तन्मय = का०, २७३, २८५, २८६।
[वि०] (सं०) किसी काम में मग्न, दत्तचित्त,लवलीन।

तन्मयता = आं० ६६।
[सं० पु०] किसी काम में मग्न, दत्तचित्त,
(हि.) लवलीन।

तप = क०, २८, २६, का० ३१, ३३, ३६,
[सं० पु०] ५५, २४२, २४७। ल० ३३।
(सं.) तपस्या, नियम अग्नि, एक कला का नाम, एक लोक का नाम शरीर और इन्द्रियों को वश में रखने का धर्म, ग्रीष्म ऋतु।

तपती = भ्रु० ३२।
[क्रि०] (हि.) जलती, गरम होती।

तपते = का०, ५०।
[क्रि०] जलते, गरम होते, पूर्ण तपाक पर
(हि.) होते।

तपन = का०, ५०। चि०, १५६। प्रे०, १,
[सं० पु०] ४, १५, २६।
(सं) जलन। सूर्य। एक प्रकार की अग्नि।
एक नरक। अरनी का पेड़। वह क्रिया,
या हाव-भाव जो नायक के वियोग में
नायिका करे या दिखावे। ताप, गरमी।

तप-वन = चि०, ५६, ७६।
[सं० पु०] तपस्या का स्थान, ऋषियों का आश्रम,
(हि.) तपस्या करने का जंगल (वन)। अरण्य
की तपस्या भूमि।

तपस = का०, २७०।
[सं. पु०] (हि.) चन्द्रमा, सूर्य, पक्षी, व्रतचर्या, फागुन,
मास।

तपसी = चि०, १८३।
[सं० पु०] (हि.) तपस्या करने वाला। तपस्वी।

तपस्या = का०, ३३। झ०, ७८।
[सं स्त्री०] (सं.) तप, व्रतचर्या। फागुन मास।

तपस्वी = का०, ५२, ५६।
[सं० पु०] (सं.) तपस्या करने वाला, तपसी।

तपस्वी-सा = का० ३। प्रे०, ३।
[सं०पु०] (हि.) तपस्वी की भाँति।

तपाता = प्रे० प० १५।
[क्रि०] (हि.) तपस्या करता। जलाता।

तपावन्त = चि०, १४।
[सं०पु०] (हि.) तपस्वी।

तपोवन = का०, २७६, २८०, २८७। चि०
[सं० पु०] ५५, ५६। लं० ३२।
(सं.) तपस्या करने का स्थान, ऋषियों का
आश्रम।

तप्त हृदय = का० कु० ६२।
[सं०पु०] (सं.) दुःखी हृदय। शोकाकुल मन।

तब = आँ० २०, से ७० पृष्ठ में ६ बार। क०,
[अ०] १६,१८, २२, ३१। का० कु०, १८,
(हि.) १६। का० १६ से २५० पृष्ठ तक २४
बार। चि० १५ से १६ पृष्ठ तक २१ बार।
म० ६, ८, ११, १४, २२। लं० ११
से ७१ तक ९ बार।
उस समय, उस वक्त, इस कारण, इस
वजह से।

तबतक = का० कु०, ८१।
[अ०] (हि.) उस समय तक।

तबहिं = चि०, ५३, ५४, ५६, ६४, ६५, ६८,
[अ०] ७२।
(ब्र.भा.) ठीक, उसी समय।

तबहुँ = चि० ६६, १६६।
[अ०] (ब्र.भा.) फिर भी, तिस पर भी।

तबहूँ = चि०, ३० १४३।
[अ०] (ब्र.भा.) तिसपर भी, तब भी, फिर भी।

तबै = चि०, ५३, ५४, ६८, ७३, १६७।
[अ०] (ब्र.भा.) तब भी, उसी समय।

तबौ = चि०, १८३।
[अ०] (ब्र.भा) तिस पर भी, तब भी, फिर भी।

तभी = क०, १३, २२। का० कु०, १५, ३१।
[अ०] का०, २२१।
(हि.) तिस पर भी। तब भी।

तम = आं०, ४०, ६७। का० कु०, ५६। का०
[सं० पु०] कु०, ५६। का०, १६, २७६। चि०,
(सं.) १५६, १६१, १६६, १७०। झ०,
३४। प्रे०, १। लं०, ३६, ४६,
७०, ७६।
अन्धकार, अँधेरा, राहु, पाप क्रोध,
अज्ञान, कालिख, नरक, मोह, सांख्य
शास्त्रानुसार अविद्या, प्रकृति का तीसरा
गुण। पैर का अगला भाग।

तमकना = म०, ११।
[क्रि०अ०] क्रोध या आवेश दिखलाना। तम-
(हि.) तमाना।

तम-चूर्ण = आं०, १६।

[सं० पु०] (सं.) अन्धकार रूपी चूर्ण।

तम-नयन = ल०, २४।
[सं० स्त्री०] (सं) अन्धकार रूपी नेत्र।

तम-मय = आं०, ३१। चि०, ७२। भ्रू०, ३०।
[वि०] प्रे०, ५।
(हि.) अन्धकार से युक्त। अन्धकारमय।

तम-व्योम = भ्रू०, ५२।
[सं० पु०] (सं.) अन्धकार रूपी आकाश।

तमस् = का०, १९७, २५२, २५७।
[सं०, पु०,] अन्धकार, अज्ञानांधकार, पाप, तमसा
(सं.) नदी। प्रकृति के तीन गुणों में से अन्तिम गुण।

तमसाच्छन्न = का० कु०, ११२।
[सं० पु०] (सं.) अन्धकार से ढका हुआ या घिरा हुआ।

तमाल = आं०, ५४। का० कु०, ११४, १२४।
[सं० पु०] चि०, १५५। भ्रू०, २०। प्रे०, १०।
(सं.) एक बहुत ऊँचा सुन्दर सदाबहार वृक्ष। तेज-पत्ता। एक प्रकार की तलवार। काले खैर का वृक्ष। बाँस की छाल, तिलक का पेड़। पान।

तमाल-कुञ्ज = क०, २८। चि०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) तमाल का झुरमुट।

तमावृत = चि०, ६६।
[वि०] (सं.) तम से ढका हुआ या घिरा हुआ।

तमासा = भ्रू०, ८७। प्रे०, ८।
[सं० पु०] वह खेल या कार्य जिसे देखने से मन
(फा०) प्रसन्न हो। अद्भुत व्यापार। अनोखी बात। पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

तमिस्रा = क०, १३। का०, ६३।
[वि०] (सं.) तम से भरी हुई। घोर काली। अत्यंत कृष्ण।

तरङ्ग = आं०, ४८, ७०। का० कु०, ३७, ४२,
[सं० स्त्री०] ४३, ६४, ७५। का०, २७३। चि०,
(सं.) ४८, १८१। भ्रू०, ५६, ६२। प्रे०, २१, २३। ल०, ४४, ४८, ५०।
पानी की लहरें। चित्त की उमङ्ग। कपड़ा या घोड़े आदि की उछाल। ध्वनि, के शीत, ताप ध्वनि की लहर।

तरङ्ग-मयी = का०, १६८।
[सं० स्त्री०] (हि.) तरङ्गसंयुक्त। उमङ्गसंयुक्त।

तरङ्ग-मालाएँ = का०, कु० १।
[सं० स्त्री०] लहरों की लड़ी जो एक पर एक
(हि.) उठा करती है।

तरङ्ग-शाली = चि०, १५२।
[वि०] (हि.) भावों में डूबा हुआ। मस्त।

तरङ्ग-सा = का०, ६१, १७०।
[सं० स्त्री०] (सं.) लहर के सदृश।

तरङ्गाघातों = का०, १५।
[सं० पु०] (हि.) लहरों की चोटें।

तरंगायित = क०, ८। का०, २८६।
[वि०] जिसमें तरंगें उठती हो, तरंगित।
(सं.) तरंगों की तरह का लहरदार।

तरंगित = चि०, १६६।
[वि०] (ब्र. भा. उमंगित, उर्मिल।

तरंगिनी = आं०, ८, ३१। चि०, १६७।
[सं०स्त्री०] (हि.) तरंग वाली, सरिता जो तरंगों से युक्त हो। नदी।

तरंगिनी-कूल = चि०, १५०।
[सं० पु०] (सं.) नदी या सरिता का किनारा।

तर = का०, २६३।
[वि०] गीला, ठण्डा, शीतल। हरा। माल-
(फा०) दार। वृक्ष। पथ। नाव कीड तराई। रसपूर्ण, सरस।

तरणि = चि०, १६०।
[सं० पु०](सं.) सूर्य। नाव (तरणी)।

तरणी किरण = चि०, २६।
[सं० पु०] (हि) सूर्य की किरण।

तरणी-विश्व = चि०, २८ ।
[सं० पु०] (सं) ज्योतिर्मय विश्व ।

तरणी = का०, १०६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) नौका, नाव, कमलिनी ।

तरल = आं०, ४२, ७०, ७२ । का० कु०, ४३,
[सं० पु०] १०० । का०, ३, से २४६ पृष्ठ तक ११
(सं.) बार । चि०, १५०, १६६, १७७, १७८ ।
[वि०] (सं०) झ०, २८, ३४, ७०, ७२ । ल०, ४३,
५६, ५८, ७२, ।
पानी के समान बहने वाला । द्रव । चम-
कीला । क्षणभंगुर । खोखला । पोला ।
कोमल । हार के बीच की मणि । हीरा ।
लोहा । तल । निन्दा । घोड़ा ।

तरलता = का०,६८, ११० ।
[सं० स्त्री०](सं.) चंचलता । द्रवत्व । चपलता ।

तरल-सिहर = ल०, ३७ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) चल कम्पन, भयभीत होना, घबड़ाहट ।

तरलित = का० कु०, ४२, चि०. ६३, ७१ ।
[वि०] (सं.) काँपता हुआ ।

तरवार = चि०, ४१, ६५,
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) तलवार, असि ।

तरवारि = चि०, ५३ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) दे० 'तरवार' ।

तरवारै = चि० ६५ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) तरवार का बहुवचन ।

तरसना = का, २१७ ।
[क्रि० स०](हि.) ललचना, अभाव का दुख होना ।

तरी = का०, १८१, प्रे०, १०,
[सं०स्त्री०] कछार, तराई, तरहटी । नाव । गीला-
(हि.)(फा.) पन, आर्द्रता, नमी । वह नीची भूमि
जहाँ बरसात का पानी एकत्र होकर
समा जाता हो ।

तरु = का०,६४, १०४, २४५, २८१ । चि०,
[सं० पु०] १५, २२, ३८, ५७, १४३, १७३ । झ०,
(सं.) ३५ । प्रे० १३, १५ । ल०, १२, ५६,
१५१ ।

तरु-ओटन = चि०, ७०,
[क्रि० वि०] (ब्र.भा.) वृक्ष की आड़ में करना ।

तरु गण = का० कु०, ५७, ६६ ।
[सं० पु०] (सं.) वृक्षों का समूह ।

तरु-गन = चि०, १, ७, ५५ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा) वृक्षों का समूह ।

तरु-छाया = ल०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) वृक्ष की छाया ।

तरु-जाल = क०, ६ ।
[सं० पु०] (हि.) घने वृक्ष सघन बन ।

तरुण = का० कु०, १२४ ।
[वि०] (सं.) नया, युवा, नूतन ।
[सं० पु०] (सं.) बड़ा जीरा । पूजा का फूल । मोतियां ।

तरुणता = क०, १३ ।
[सं स्त्री०] (सं.) युवापन, नवीनत्व ।

तरु तल = प्रे० प०, १५ ।
[सं० पु०] (सं.) वृक्ष के नीचे का स्थल । वृक्ष की छाया ।

तरुन = का० कु०, ३८ । चि०, ३,११, १२,
[सं० पु०] ८, १५८ ।
(हि.) दे० 'तरुण' । वृक्ष ।

तरु-पुंज = का० कु०, ६६ ।
[सं० पु०] (सं.) वृक्षों का समूह ।

तरु-राज = का० कु०, ५३, ५६, १०१, १२५ ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) कल्पवृक्ष, ताड़ का पेड़ ।

तरुवर = चि०, २३, ६६, ७०, ७१, १४६ । म०,
[सं० पु०] ८, प्रे०, ७, १५ ।
(सं.) श्रेष्ठ या बड़ा वृक्ष ।

तरुवर गण = चि० ११ ।
[सं० पु०] (सं) श्रेष्ठ वृक्षों का समूह ।

तरुशाला = चि०, ४५, म० ४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) उपवन, कानन ।

तरु-ससीप = का०, कु०, १७१ ।
[अ०] (हि.) वृक्ष के समीप ।

तर्क = का०, कु०, ८६ । का०, १११, १६१,
[सं० पु०] १६५, २२८ ।
(सं.) दलील, चमत्कार पूर्ण ।

[सं० पु०](का०) त्याग, । छोड़ना ।

तर्कमयी = का०, २४१, २४४,
[वि०] (सं.) तर्क से भरा हुआ ।

तर्क युक्ति = का०, २७० ।
[सं०स्त्री०](सं.) हेतु पूर्ण विवेचन का उपाय । दलील ।

तर्कशास्त्र = का०, ११० ।
[सं०पु०] न्याय शास्त्र या सिद्धान्त । खण्डन-
(सं०) मण्डन के द्वारा निश्चय का उपाय ।

तल = आं०, १०, ४२ । ५४ । का०, १६, ५२,
[सं०पु०] ११०, १८२, भ्रू०, ३४६२, ल०, १६,
(सं.) ७५, ७८ ।
नीचे का भाग । जल धारा के नीचे की भूमि । पैर का तलवा । बायें हाथ से वीणा बजाने की क्रिया । आधार । सात पातालों में से पहला । कानन, धनुष की डोरी की रगड़ से बचाने वाला बाईं हाथ में पहिनने का चमड़ा या कल्ला ।

तलवार = म०, ५, १०, १६, ल०, ४६, ५५,
[सं०स्त्री०] एक प्रसिद्ध लम्बा धार दार हथियार ।
(हि.) खंग, कृपाण ।

तलहटी = का०, २८४, प्रे०, ११ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) पहाड़ के नीचे की भूमि । तराई ।

तल्लीन = का०, २४२, ल०, १२ ।
(वि.) किसी विषय या कार्य में लीन ।
(हि.) निमग्न ।

तव = का० कु०, ३०, ६२, ७९, ८१, ८८ ।
[सर्वनाम०] का०, १४८, १६३, १८०, १८४,
(सं.) १६४, ३२६, २४३, ३४७, २४८,
२५० । चि०, ३०, ४१, ४८, १४१,
१४२, १४३, १४७, १४६, १८७,
१८८, १६० । भ्रू०, ७, ८, १६ ।
तुम्हारा ।

तव-रक्त = चि०, ६७ ।
[सं० पु०] (सं.) तुम्हारा खून ।

तहँ = चि०, ४५, ४६, ४७, ५१, ५३, ५४,
[अ०] ५६, ६०, ६४, ६५, ७१, ७२, ७३,
(व्र. भा.) १४२, १५१ ।
तहाँ, वहाँ, उस स्थान पर ।

तहाँ = का०, १८३ । चि०, ४, ३१, ४६, ५१,
[अ०] ५३, ५८, ७३ ।
(हि.) उस स्थान पर ।

तहीं = चि०, ८ ।
[अ०] (व्र. भा.) वहीं ।

ताण्डव = का०, १६६, १५३ ।
[सं० पु०] शिव का नृत्य, पुरुष-नृत्य, उद्धत नृत्य ।
(सं.) विनाश की क्रिया ।

ताण्डव-नृत्य = का० कु०, ८६ । का०, २० ।
[सं० पु०] (सं.) शिव का नृत्य ।

ताण्डव-मय = का०, १५ ।
[वि०] शिव के नृत्य से युक्त या विनाश की
(सं.) आशंका से युक्त ।

ताण्डव-लीला = का०, १८६ ।
[सं० स्त्री०] शिव-नृत्य-क्रीड़ा । पुरुष-नृत्य-क्रीड़ा ।
(सं.) उद्धत-नृत्य-क्रीड़ा ।

ताकी = चि०, १५३, १६१, १८८, १८५ ।
[अ०] (व्र. भा.) उसकी ।

ताकुल = चि०, ३२ ।
[सं० स्त्री०] (व्र.भा.)उस कुल का । उस कुल में ।

ताके = चि०, १७३ ।
[अ०] (व्र. भा.) दे० 'ताकि' ।

ताग = चि०, १८० ।
[पूर्व०क्रि०] (व्र. भा.) जोड़कर ।

ताड़ = का०, ११० ।
[सं० पु०] एक ऐसा वृक्ष जिसमें शाखा नहीं होती ।
(सं.) हाथ का एक आभूषण ।

ताड़ित = भ्रू०, ७२ ।
[वि०] (हि.) सताया हुआ ।

तात = क०, २४ । चि०, ४८ ।
[सं० पु०] (सं.) पिता, गुरू, पूज्य व्यक्ति, पुत्र, भाई ।
[वि०] (हि.) तपा हुआ, गरम ।

तातर = चि०, १८४।
[अ०] (ब्र. भा.) उसके नीचे।
तातारी = ल०, ७३।
[वि०] (हि.) तातार देश की, तातार निवासिनी।
तातों = चि०, १६।
[सर्व०] (ब्र. भा.) तिसको या उसको।
तान = का०, ५२। चि०, ११३। झ०,
[सं० पु०] ५७। ल०, २६।
(हि.) फैलाव, विस्तार। आलाप।
तानना = का० कु०, १०६।
[क्रि०] (हि.) फैलाना, विस्तार करना, खींचना।
तानि = चि०, १६३।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) तानकर। फैलाकर।
तनि = का०, १०,२८५।
[सं० पु०] (हि.) = तान का बहुवचन।
तानों = का० २६४।
[सं० पु०, क्रि०] (हि.) 'तान' का बहुवचन।
ताप = आं०, ५१, ७६। का० कु०, १३, १०४।
[सं० पु०] का०, १२१, १६२, १६१, २८१,
(सं.) २८३। चि०, ३६, १७४। झ०, ७६।
गर्मी। लपट, ज्वर, कष्ट, मानसिक कष्ट,
दैहिक, दैविक भौतिक ताप।
ताप-भ्रांति = का०, २३६।
[सं० स्त्री०] (सं.) ताप की समाप्ति, ताप का भूल जाना।
तापर = चि०, १४५।
[अ०] (ब्र.भा.) तिसपर भी।
तापस = चि०, ७३, ७४।
[सं. पु०] (ब्र.भा.) साधू, तपस्या करने वाला।
तापस-वेष = चि, ७३।
[सं०पु०] (हि.) तपस्वी का पहनावा पहने हुए।
तापित = का०, २५, ३८, २८५।
[वि०] तप किया गया। कष्ट पाया हुए।
(सं.) दुःख से पीड़ित।
तापैं = चि०, १७७।
[सं० स्त्री०] (ब्र भा.) ज्वालाएँ।
तामरस = का०, १७५। चि०, १७३।
[सं० पु०] (सं.) सोना। तांबा। धतूरा। कमल।
तामस = का०, ११८।
[वि०] तमोगुण वाला, तमोगुण से संयुक्त।
(सं) (सं० पु०) सर्प, खल। चौथे मनु का
नाम। क्रोध, अन्धकार।
ताये = चि०, ७१, १६०, १६२।
[क्रि०] (ब्र. भा) ढका हुआ।
तायों = चि०, १८३।
[क्रि०] (ब्र.) ढाका।
तार = आं०, १५।
[सं० पु०] सूत। चाँदी। धातु, तन्तु, आँख की
(सं.) पुतली। नक्षत्र, असली मोती, ताल,
मजीरा, तल।
तारक = का०, ४७, १०४, २३३। का० कु०,
१७। ल०, ४५।
[सं० पु०] तारा, नक्षत्र, आँख की पुतली। उद्धार
(सं.) करने वाला। कर्णधार।
तारकागण = का० कु०, २। चि०, १५४। झ०
[सं० पु०] ७५।
(सं.) तारों का समूह।
तारकागन = चि०, १७०।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) दे० 'तारकागण'।
तारक-दल = का०, २३४।
[सं० पु०] (सं.) तारों का समूह।
तारक-हार = का०, ६२।
[सं० स्त्री०] (सं) तारों का हार।
तारका = का०, कु०, ८, ३०, ३५, ७४, ६७।
[सं० स्त्री०] का०, ४७, १०४, २३३। झ०, ७२।
(सं.) ल०, ४५।
नक्षत्र तारा, आँख की पुतली, तारका
नाम की राक्षसिन।
तारका अवली = का०, कु०, १०।
[सं० स्त्री०] (सं.) तारों की पंक्तियाँ।
तारकायें = ल०, ६२।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'तारक'। (बहुवचन)
तारकारत्न = का० कु०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) तारक रूपी बहुमूल्य धातु।

तारकावलि = चि०, २३ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) तारों की पंक्ति ।
तारको = चि०, १६२ ।
[सं० पु०] (सं.) 'तारक' का बहुवचन ।
तारन = चि० १६ ।
[सं०स्त्री०](ब्र. भा०) दे० 'तारो' ।
तारा = आं०, ५४, ६७, ६९ । क०, १३,
[सं० पु०] २५ । का०, १७, ३७, ६७, ७०, १४७,
(सं.) १७०, १७६, १७८, १८१, २०५,
२४१ । चि०, १६०, १६१ । झ०,
३८ । ल०, ३७, ४३, ७४ ।
नक्षत्र, सितारा । भाग्य । आँख की
पुतली ।
ताराओं = आं०, ७६ । का०, १३२, २२४ ।
[सं० स्त्री०] प्रे०, ६ । ल०, १४, ६८ ।
(हि.) 'तारा' का बहुवचन ।
तारागण = क०, ८ । का० कु०, ३६, का०, १६७ ।
[सं० पु०] प्रे० ६ ।
(सं.) तारों का समूह या दल ।
तारागन = चि०, ७१, ७५, १६१ ।
[सं० पु०](ब्र.भा.) दे० 'तारागण' ।
तारा-घट = ल०, १६ ।
[सं० पु०] (सं.) तारारूपी घड़ा ।
तारा दृज्ञ = का०, १७१ ।
[सं० पु०] (सं०) तारों का समूह ।
तारा दीप = का०, ३८ ।
[सं० पु०] सं.) तारा रूपी दीपक ।
तारा-निकर = चि०, ३६, १४५ ।
[सं० पु०] (सं.) तारों का समूह ।
तारा-पुंज = का० कु०, ५६ ।
[सं० पु०](सं.) तारों का समूह ।
तारा-मंडित = का०, २४६ ।
[वि०] (हि.) तारों से सुशोभित या सजा हुआ ।
तारायें = ल०, २४, ७६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'तारा' (बहुवचन) ।
तारालो = का०, कु०, ५ ।
[सं०स्त्री०](सं.) तारों का समूह ।
तारा-शशि = का० कु०, ५ ।
[सं० पु०] (सं.) तारा और चंद्रमा ।
तारा-सा = प्रे०, ३, ५ ।
[वि०] (सं.) तारा के समान ।
तारा-हीरक-हार=म०, १८ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) तारा रूपी हीरे का आभूषण या माला ।
तारिकायें = झ०, ५६ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) सितारों का समूह ।
तारुण्यमयी = ल०, ३३ ।
[वि०] (सं.) यौवन से भरी हुई, तरुणी ।
तारे = आं०, ३६, ४४ । का० कु०, ४ । का०,
[सं० पु०] ११८, १२३ । झ०, ५२ । प्रे०, ११,
(हि.) १२, २४ ।
तारा का बहुवचन ।
तारों = आं, १६ । का०, ६५, २८५ । प्रे०, ११ ।
[सं० पु०](हि.) तारों का बहुवचन ।
ताल = का० कु०, ६३ । का०, १६८, २५२ ।
[सं० पु०] झ०, २७ ।
(सं.) हथेली । करतल ध्वनि । एक नरक ।
महादेव । पोखरा । नृत्य या संगीत में
समय और गति का परिमाण ।
तालाब ।
ताल-ताल = का०, १६३ ।
[अव्य०] (हि.) संगीत का प्रत्येक ताल ।
ताली = चि०, ७० ।
[सं० स्त्री०] (हि.) कुंजी । ताल देने वाली ।
तालों = का०, २७७ ।
[सं० पु०] (हि.) ताल का बहुवचन ।
तासु = चि०, २३, ४६, ५२, ७०, ९५, १०२,
[सर्व०] १६१, १६२, १७१ ।
(ब्र. भा.) उसको, जिसको ।
तासुत = चि०, २३ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) उसका पुत्र ।
तासों = चि०, १८, ६६, १८४ ।
[सर्व०] (ब्र. भा.) उससे ।

ताहिं = चि०, ६, १४, २५, ५१, ६३, ६५, [सर्व] ६८, ७३, १६४, १७६, १७८, १८६, (ब्र. भा.) १९० । उसकी ।

ताही = चि०, १०९ । [सर्व] (ब्र. भा.) दे० ताहि ।

ताहू = चि०, १९० । [सर्व] (ब्र. भा.) दे० ताहि ।

तितली = का०, २६२ । भ्रू०, ६९ । [सं० स्त्री०] एक उड़ने वाला सुन्दर फतिङ्गा जो (हि.) फूलों पर मड़राता है । एक प्रकार की घास ।

तितै = चि०, १, [क्रि० वि०] उतना । उसी स्थान पर । उसी की । (ब्र. भा.) वहीं । वहाँ भी । वहाँ । उधर ।

तिन चि०, ५८, ६५, ७१, ७२, १००, [सर्व०] १०१, १५७, १५९, १६३, १७१, (ब्र भा.) १८५, १८६ । प्रे०, ४ । ल०, ४० । उन ।

तिनका = म०, १२ । ल०, ४७ । [सं० पु०] (हि.) तृण । तृण का टुकड़ा । [सर्व०] उनका ।

तिन्हैं = चि०, ४८, ६९, १०१, १०९, १६९, [सर्व०] १८५ । (ब्र. भा.) उनको ।

तिमि = चि०, १६५, १६६, १६७ । [अ०] (ब्र. भा.) उसी प्रकार ।

तिमिंगलों = का०, १२ । [सं० पु०] (सं.) समुद्री स्तनपाई एक विशेष बड़ा जन्तु जो कुछ कुछ मछली के आकार का का होता है । प्रायः इसकी हड्डियों के लिये शिकार किया जाता है । बहुत बड़ी मछलियाँ जो छोटी मछलियों को निगल जाती है ।

तिमिर = आं०, ४१ । का०, १५, ४९, २१७ । [सं० पु०] चि०, १०७, १९० । ल०, १३ । (सं.) अन्धकार । तम ।

तिमिर-फणि = का०, १२१ । [सं० पु०] (सं.) काला साँप, अंधकार रूपी साँप ।

तियान = चि०, ४९ । [सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) औरतें ।

तिरता = का०, ल०, २३ । [क्रि० अ०] (हि.) पानी पर तैरता हुआ ।

तिरती-सी = ल०, ६, ६९ [क्रि० अ०] (हि.) पानी पर उतराती सी ।

तिरते = ल०, ६२ । [क्रि० अ०] (हि.) पानीपर उतराते ।

तिरना = का०, ७, ९८, १०५ । आं०, २२, ४१ । [क्रि० अ०] पानी पर तैरना या उतराना, पार (हि.) करना । उद्धार होना ।

तिरस्कार = का० कु०, १२१, भ्रू०, ८० । [सं० पु०] (हि.) फटकार । अनादर ।

तिरस्कृत = का०, ५३ । [वि०] (सं.) जिसका तिरस्कार हुआ है । अनाहत ।

तिरोहित = आ०, ४६ । का०, १०, १६९, २६१ । [वि०] छिपा हुआ । आच्छादित । अन्तर्हित । (सं०) लुप्त । अदृष्ट ।

तिल = का०, ११० । चि०, १६२ । [सं० पु०] एक प्रकार का बीज जिससे तेल (सं.) निकाला धाता है । शरीर पर के काले दाग । एक प्रकार का गोदना जो औरतें गाल और ठुण्ढी पर सौन्दर्य के लिये गोदाती हैं ।

तिलक = कि० ३८ । [सं० पु०] चंदन, या केसर का टीका । माथे पर का (सं.) एक गहना । वसन्त ऋतु में फूलने वाला एक पौधा ।

[वि०] उत्तम, जीवन-शोभा अथवा कीर्ति बढ़ाने वाला ।

तिलोदक = क०, २२ । [सं० पु०] तिल और जल । सनातन धर्म के

(सं.) अनुसार जो किसी मृतक आत्मा की तृप्ति के लिये अंजलि भोजन और तिल लेकर कुश पर जो नदी या तालाब के किनारे गाड़ा गया होता है, छोड़ते हैं। पिंडा-पानी।

तिस = का० कु०, ६०, १४६, २४०, म०, [स्त्री०] ६, २२।
(हि.) 'ता' का एक रूप जो विभक्ति लगने से तिस होता है।

तिहारी = चि०, १४०, १७०, १७१, १७४, [सर्व०] (ब्र. भा.) तुम्हारी।

तिहारे = चि०, १७४, १८२, १८५। [सर्व०] (ब्र. भा.) तुम्हारे।

तिहुँ = चि०, १७८। [वि०] (ब्र. भा.) तीन।

तीक्ष्ण = का०, १६६। म०, ६। [वि०] (ब्र. भा.) तेज। कटु। उत्ताप। विषैला।

तीखा = आं०, ५२। का०, १६२, २५०। चि०, [वि०] ४२।
(हि.) तेज। प्रखर। उग्र स्वभाव वाला, जिसका स्वाद चरपरा हो। सुनने में अप्रिय, कटु। अच्छा, बढ़िया।

तीछन = चि०, ३६, ४२, १६३। [वि०] (ब्र. भा.) तीक्ष्ण, तेज।

तीछनता = चि०, १०५। [सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) तीक्ष्ण की भाववाचक संज्ञा। तीक्ष्णता। तेज, ऐश्वर्य।

तीन = क०, १६। का०, १६। चि०, ४३, [सं० स्त्री०] १५६, २४५, २६१।
(हि.) दो और एक। एक संख्या।

तीर = का० कु०, ८६। का०, २३ ३१, ४५ [सं० पु०] १०६, १४१, १५७, २४८, १५०।
(सं.) चि०, ६, ४१ ४२, ५३, ५५, ५६, ७१, १६४।
नदी का किनारा, कूल। निकट, समीप।

तीरथ = चि०, ३२। [सं० पु०] (ब्र. भा.) देव स्थान। पवित्र या पुण्य स्थान।

तीरन = चि०, ६०। [सं० पु०] (ब्र. भा.) तीर का बहुवचन।

तीरे = आं०, ३१। का०, ३४। [सं० पु०] (हि.) दे० तीर।

तीर्थ = का०, २७८, २७९। [सं० पु०] (सं.) देखिये तीरथ।

तीव्र = आं०, ३६, ५०। का० कु०, ११६, [वि०] १८१, १६६, २६७। भ्रू०, ५७। ल०, (सं.) ७१, ७६।
अधिक तेज, कटु, प्रचण्ड।

तीसरी = चि०, ७२। [वि०] (हि.) त्रि। पहली दो को छोड़कर अगली।

तुङ्ग (तुंग) = का० ३०, १५७। चि०, १, १६०। [वि०] भ्रू०, २, ५६।
(सं.) उन्नत, ऊँचा। मुख्य।

तुच्छ = का०, ५६, ६४, १२६। ल०, ६४। [सं० पु०] (सं.) सारहीन। छिलका या भूसी।

तुझ = आं०, १७। क०, २६, २७। का० कु०, ३६। का०, १८ २१८। प्रे०, २४। [सर्व०] (हि.) तुम का मध्यम पुरुष, कर्मकारक।

तुम = आं०, १५-७६ पृष्ठ तक २१ बार। [सर्वनाम] का०, ६-३१ पृष्ठ तक १७ बार। का० (हि.) कु०, १ से ६८ पृष्ठ तक २६ बार। का०, १ से २८७ पृष्ठ तक ३ बार। चि०, ५-१६४ पृष्ठ तक ३५ बार। भ्रू०, ५-६४ पृष्ठ तक ६ बार। प्रे०, ४-२६ पृष्ठ तक १४ बार। म०, ४-३६ पृष्ठ तक ४ बार। ल०, १०-६१ पृष्ठ तक ६ बार।
'तू' शब्द का बहुवचन।

तुमुल = का०, ६१, २१६। म०, ११। [सं० पु०] (सं.) युद्ध का कोलाहल या धूम।

तुरंग = का० कु०, ३७, ३६, ४३, का०, ३०, [सं० पु०] ४७।

(सं.) घोड़ा। चित्त। सात की संख्या। जल्दी चलने वाला।

तुरंग-सा = का०, २५।
[सं पु०] (सं.) घोड़े की भाँति।

तुरंत = का०, २४६।
[अ०] (हि.) दे० तुरत।

तुरत = का०, १७, २२। का० कु०, १८, २२, ३१, ४७, ५१, ६६, १०१। का०, २२०। चि०, ५३, ६४, १६७।
[अव्य०] (हि.) शीघ्र, तत्क्षण, चटपट।

तुरतहिं = चि०, ४८, ५६, ६५।
[अ०] (ब्र. भा.) तत्काल ही।

तुरते = चि०, ३१।
[अ०] हि.) तुरंत ही।

तुरतै = चि०, १६७।
[अ०] (हि.) तुरंत ही।

तुर्क = म०, १५, १६।
[सं० पु०] (हि.) मुसलमान। तुर्क देश का वासी।

तुर्की = ल०, ६६।
[सं० पु०] (हि.) तुर्किस्तान का वासी।

तुल जाना = का०, १०५।
किसी काम के लिए उतारू हो जाना। तौल जाना।

तुलना = ल०, ६४।
[सं० स्त्री०] (हि.) तौलाना। समता। बराबरी।

तुलसीदास = का० कु०, ८७।
[सं० पु०] (हि.) रामचरित मानस के रचयिता हिन्दी के महाकवि।

तुला = का०, २७१।
तौल। तराजू।

तुल्य = भ०, १४।
[वि०] (सं.) सदृश, समान, बराबर।

तुव = चि०, ५७, १८८, १९०।
[सर्व०] (ब्र. भा.) दे० 'तव'।

तुषार = का०, ८, ३०, १७६। चि०, १८८।
[सं० पु०] भ०, ३१।
(सं.) पाला, एक प्रकार का कपूर हिमालय के उत्तर का एक प्रदेश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध हैं।

तुष्ट = का० कु०, १५। म०, १३।
[वि०] (सं.) प्रसन्न, खुश, राजी।

तुष्टि = का०, १८६, १६१।
[सं० स्त्री०] (सं.) तृप्ति। संतोष। प्रसन्नता।

तुहिन = आं०, ४५। का०, ३६, १५६। ल०, ३८, ४१।
[सं० पु०] (सं.) पाला, हिम, चाँदनी, शीतलता।

तुहिन-बिन्दु = का०, १७८
[सं० पु०] (सं०) हिमकण, ओसकण।

तुही = चि०, १८२।
[सर्व०] ब्र. भा.) तुमहीं।

तू = आं०, ५७। क०, २१—५७ पृ० तक ७ बार। १६—२५४ पृष्ठ तक १७ बार। का० कु०, ६। का०, ल०, ६—७२ पृ० तक ११ बार।
[सर्वनाम] तुम का एकवचन। एकवचन सर्वनाम।

तूर्य = ल०, ५६।
[सं० पु०] एक प्रकार का बाजा। तुरही।

तूर्यनाद = का० कु०, १२४। भ०, ३६।
मुँह से बजाये जाने वाले एक प्रकार के बाजे का स्वर। सिंहा की ध्वनि या आवाज।

तूल = का०, १६२।
[सं० पु०] कपास तथा सेमल का धूआँ, रूई।

(सं.) (वि०) तुल्य, समान।

तूलिका = आं०, २२। ल०, ६४।
चित्र अंकित करने की कलम या कूँची।

तृण = क०, २५। का०, २६, १११, २६४।
[सं० पु०] प्रे० ३। ल० ६६।
(सं०) तिनका। घास का छोटा टुकड़ा।

तृण-गुल्मों = का०, १७६।
[सं० पु०] (हि.) तिनके और छोटे पौधे।

तृण तृण = का०, १११।
[सं० पु०] (स.) प्रत्येक तृण।

तृप्त = का०, ३१, ८६, चि०, १५, १८६,
[वि० सं०] भ्र०, ३७।
जिसकी इच्छा या वासनापूर्ण हो चुकी हो। अघाया हुआ।

तृप्त विधुर = ल० ३४।
[सं० पु०] वह दुखी जो कुछ क्षणों के लिए प्रसन्न
(सं.) हो गया हो। प्रसन्न रहुआ।

तृप्त हृदय = आ० ७६।
[सं. पु०] (सं.) शान्त हृदय।

तृप्ति = का०, ७४, १३०, १३६, १६६, २२३,
[सं० स्त्री०] २७०। भ्र० ४१, ७१।
(सं.) इच्छा या वासना पूर्ण होने पर मिलने वाली शांति।

तृषा = का० १३६, २७१।
[सं० स्त्री०] प्यास, इच्छा, अभिलाषा। लोभ,
(सं.) लालच।

तृषित = का० कु०, २४। का०, ३६, १८३।
[वि०] (सं.) प्यासा, अभिलाषी।

तृष्णा = आ०, ४२। का० कु०, २४। का० ७१,
[सं० स्त्री०] ७४, २६७। चि०, ६६।
(सं.) किसी वस्तु को पाने के लिए व्याकुल करने वाली इच्छा। लोभ, लालच, प्यास।

तृष्णा ज्वाला = का०, १६४, ल० ४६।
[सं० स्त्री०] तृष्णा से उत्पन्न होनेवाली ज्वाला।
(सं.) तृष्णा रूपी ज्वाला।

ते = चि०, १३६, १४६।
[अ०] (ब्र. भा.) से, द्वारा। (सर्व०) वे, वे सब।

तेजमय = का० कु०, १२६।
[क्रि०] (स.) दीप्तियुक्त। कान्तिमय।

तेज = क०, ३२। का०, २७७। चि०, ४०,
[सं० पु०] ५३, ५६। म० ५। ल० ५।
(सं०) दीप्ति, कांति, पराक्रम, बल, तत्व, तीक्ष्णधार वाला। प्रखर या तीव्र। फुरतीला।

तेजमयी = प्रे० ६।
(वि०) (हि.) प्रकाश से भरी हुई या युक्त।

तेज-सा = म० ६।
[वि०] (हि.) प्रकाश के समान।

तेजबल = का० कु०, १४४।
[सं० पु०] (सं०) तपस्या का बल। पौरुष का बल।

तेरा = का० कु०, ११३।
[सर्व०] मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम। 'तू'
(हि.) का सम्बन्ध कारक रूप।

तेरी = आ० २२, ३५, ३८, ४३, ६२, ७३,
[सर्व०] ७४। क०, २५। का० कु०, १, १३,
(हि.) ३०, ४२, ४८। का०, ६, २४४। चि०, ४१, ६०, ६६, १०७, १५५, १७७, १७८, १८५, १८७। भ्र० १८, ४४। ल०, १२, ३०, ४२, ४३, ४५, ५१, ६८, ७६।
'तेरा' का स्त्रीलिंग।

तेल = प्रे० ३।
(सं. पु.) विशेष चिकना या तरल पदार्थ जो
(हि.) विशेष बीजों को पेर कर निकाला जाता है। स्नेह।

तेहि = चि०, ३२, ४८, ५१, ५३, ५५, ६६,
(सर्व०) (हि.) ७३, ६६, १५६, १७१, १८४।
उसको उसे।

तैरना = भ्र०, ४२। ल०, ५१।
[क्रि० अ०] पानी पर उतराना। हाथ तथा पैर
(हि.) हिलाकर पानी पर रेंगना।

तैसी = का० कु०, ८। चि०, १८०, १८१।
[वि०] (हि.) उस प्रकार की, उस तरह की।

तैसों = चि०, ३६, १८७।
[वि०] (ब्र. भा.) वैसा ही।

तो = आ०, ४३। क०, १८, २२। का०
[अ० हि०] कु०, १६। का०, १७६। भ्र०, ३६। प्रे०, १३, २२। म०, २१, २२,

२३। ल०, १०, ४५, ५१, ६४, ६८। तव का छोटा रूप होता है।

तोको = चि०, १८६।
[सर्व०] (ब्र. भा.) आपको। तुमको।

तोख = चि०, ५७, ५८, ६८।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) संतोष। तोष।

तोड़ = का, १४५, १५८, २४३। प्रे०, २।
[सं० पु०] ल०, १३।
(हि.) तोड़ने की क्रिया या भाव। नदी आदि के जल का प्रवाह या तरखा।

तोड़ना = आं०, ४४। का० कु०, ११०। प्रे०, २, २०। ल०, २३।
[क्रि० स०]
(हि.) आघात या झटके से किसी वस्तु के टुकड़े करना। किसी वस्तु का अंग-भंग करना। खेत में पहले-पहल हल चलाना। सेंध लगाना। बल, प्रताप आदि का महत्व कम करना या हटाना।

तोप = का० कु०, १०७।
[सं० स्त्री०] एक प्रकार का अग्निशास्त्र जो दो पहिए
(तु.) पर टिका होता है। इसमें एक मोटी नली होती है। जिसमें गोला भरकर शत्रुओं पर छोड़ा जाता है।

तोपें = ल०, ५१।
[सं० स्त्री०] (तु.) 'तोप' का बहुवचन।

तोरण = प्रे०, ४, १३।
(सं० पु०) किसी घर या नगर का बाहरी फाटक
(सं.) बंदनवार, ग्रीवा, गला, शिव।

तोरन-बंदनवार= म०, १६।
[सं०पु०] किसी नगर या घर के बाहरी फाटक
(हि.) पर लटकाई जाने वाली पत्तियों एवं फूलों की मालाएँ।

तोरि = चि०, २३।
[पुर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) तोड़कर।

तोल = का०, १०५, २५३। भ०, ७४।
(सं० स्त्री०) (हि०) वजन। भार का मान।

तोष = चि०, ५४।
[सं० पु०] तृप्ति। संतोष। प्रसन्नता, (वि०) अल्प।
(सं.) थोड़ा।

तोहि = चि०, १४, ५७, १७०।
[सर्व०] (ब्र.भा.) तुमको।

तौ = चि०, १५५।
[क्रि०वि०](ब्र.भा.) तो (क्रि०अ०) था।

तौन = चि०, १८४।
[सर्व०] (ब्र.भा.) वही।

त्यहि = चि०, १०७।
[सर्व०] (ब्र.भा.) उस।

त्याग = का० कु०, ३१। का०, ५२, ७२,
[सं० पु०] २३६, २५३।
(सं.) किसी पदार्थ को छोड़ देना या उस पर से अपना अधिकार हटा लेना। उत्सर्ग। विरक्ति के कारण सांसारिक पदार्थों को छोड़ना या चित्त वृत्ति हटा लेना। दान।

त्यागे = चि०, १४, ५६, ६५।
[क्रि०सं०] (हि.) छोड़ दिया।

त्यों = आं०, ७२।
[क्रि०वि०](ब्र.भा.) उस प्रकार, उस तरह। उसी वक्त।

त्योंही = का० कु०, ८०। का०, २००।
[अ०] (ब्र. भा) तभी। उसी समय।

त्योहार = प्रे०, ८।
[सं० पु०] वह दिन जब कोई धार्मिक जातीय
(हि.) उत्सव मनाया जाता है। पर्व दिन।

त्यौं = म०, २२।
[क्रि०वि०] (हि.) उस प्रकार। उसी समय।

त्रस्त = क० १८। का० कु०, ६४। का०, १३,
[वि०] १८५, १८६। मं० ७। ल० ५२।
(सं.) का० कु०, १४।
भयभीत, पीड़ित, व्याकुल।

त्राण = का० १४०, १८६, २६१। चि० ६४।
[सं० पु०] (सं.) रक्षा, बचाव, कवच।

त्राता = का० कु०, २७।

[वि०] (सं) रक्षक ।
त्रास = का०, २०० । ल० ५१, ५२ ।
[सं० पु०] (सं.) डर, भय, कष्ट, तकलीफ ।
त्रासिनी = ल०, ५१ ।
[वि० स्त्री०] (हि.) कष्ट देने वाली, भयभीत करने वाली ।
त्राहि-त्राहि = क०, २६ ।
[अ०] (सं.) रक्षा करो ।
त्रिकोण = का०, २६२, २७३ ।
[वि०] ऐसा क्षेत्र जिसके तीन कोने हों । इच्छा,
(सं.) ज्ञान और क्रिया का त्रिभुज क्षेत्र ।
त्रिगुण = का०, १६८ ।
[वि०] (सं.) तीनों गुण—सत, रज, तम ।
त्रिदिक् = का०, २६१ ।
[वि०] (सं.) तीनों दिशायें ।
त्रिपुर = का०, २७२ ।
[वि०] वाणासुर का एक नाम । तीन लोक —
(सं०) आकाश, पाताल, मर्त्य । आकाश स्थित तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युमाली द्वारा निर्मित तीन नागरिक ।
त्रिपुरारि = चि०, ६७ ।
[सं० पु०] (सं.) शंकर ।
त्रिबली = का०, १६८ ।
[वि०] पेट के ऊपर पड़ने वाली तीन
(सं.) रेखाएँ—जो नारी-सौन्दर्य की सूचि काएँ हैं ।
त्रिभुवन = का०, २६१ ।
[वि०] (सं.) तीन लोक —स्वर्ग, मर्त्य, पाताल ।
त्रिशूल = का०, २७७ ।
[वि०] एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल
(सं०) होते हैं । शिव जी का अस्त्र ।
त्वरा-सी = का०, ११५ ।
[वि०] (हि०) शीघ्रता की तरह । अत्यन्त शिघ्र ।

थ

थक = आं०, २७, ५६, । का०, १५८, २५७,
[क्रि० वि०] (हि.) २५६ । चि०, १६० । प्रे०, ८, १४ ।
विश्रांति या थकने के भाव से पूर्ण ।
थकना = का०, ६३, १२३, २१३, २१६ । ल०,
[क्रि०] ११, २३, ३१ ।
(हि.) परिश्रम करने की वह स्थिति जब और काम करने की इच्छा न करें, क्लांत होना ।
थका = म०, ८ ।
[क्रि०] (हि.) थक गया ।
थकी-सी = का०, ६६, १७५, २१३, २२९ ।
[वि०] (हि.) श्रांत के समान ।
थपेड़े = का०, १६ ।
[सं० पु०] (हि.) थप्पड़, आघात, धक्का, चक्कर, टक्कर ।
थर-थर = का०, १८५, २४६ ।
[क्रि०] (हि.) कँपकँपी । हिलने का भाव ।
थल = चि०, २ । प्रे०, ६ ।
[सं० पु०] स्थान, जगह, जल से रहित भूमि, स्थल
(हि.) का मार्ग । जंगली पशुओं की माँद ।
थला = चि०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (व्र. भा.) भूमि, स्थल ।
थाके = चि०, १६३ ।
[क्रि० अ०] (व्र.भा.) थकान का अनुभव करने लगे ।
थाप = चि०, ७४ ।
[क्रि० स०] (व्र. भा.) स्थापित कर, जमाकर ।
थापिके = चि०, ४५ ।
[पूर्व० क्रि०] (भा.) स्थापित कर, प्रतिष्ठित कर ।
थाल = प्रे०, १२ ।
[सं०] (हि.) परात ।
थालें = ल०, ६२ ।
[सं० पु०] (हि.) पेड़ पौधों के चारों ओर बनवाया हुआ गड्ढा ।
थिर = आं, ५६ । का०, १०६ । चि०,
[वि०] ३३, ६६ ।
(देश०) स्थिर, शांत ।
थिरता = चि०, १८३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) स्थिरता, शांति, गांभीर्य ।
थोथा = म०, १४ ।
[वि०] (दे०) जिसमें कुछ तत्व न हो । खोखला ।

द

दंड = का० १। का०, २०९, २११। चि०, ४८, ६६। ल०, ७३, ७८।
लाठी। जुर्माना। सजा। शासन। साठ पल।

दन्त = चि०, ७०, १३३। ल०, २५, ५१।
[सं० पु०] (सं.) दाँत। बत्तीस की संख्या।

दंत-अवली = का०, कु०, ११५।
[सं० स्त्री०] (हि.) दाँतों की पंक्ति, कतार।

दंभ = का० कु०, ६०। का०, १७, २७१।
[सं०] (सं.) अभिमान। घमंड।

दंभ-स्तूप = का०, १६६।
[सं० पु०] (सं.) अहंकार का धवरहरा।

दंपति = का०, १८२। चि० १६५।
[सं० पु०] (सं.) पति-पत्नि का जोड़ा।

दंशन = का०, १२२।
[सं० पु०] (सं.) दाँत से काटना। डंक मारना, डँसना।

दक्षिण = का०, ६०, २१७। प्रे० १४।
[सं० पु०] (सं.) दाहिना, चतुर। उत्तर के सामने की दिशा।

दग्ध = आं०, ५५, ७५। का० कु०, ८६।
[वि०] (सं.) ल०, ६५। जलाया, जलाया हुआ। दुखित।

दग्धश्वास = का०, १७६।
[वि०] (सं.) गरम श्वास।

दग्ध-हृदय = ल०, ५६।
[सं० पु०] (सं.) जला हुआ हृदय। दुखित हृदय।

दबना = आं० २६। का०, ५६, ६४, १६०।
[क्रि०अ०] (हि.) चि०, ५७। म०, १२, ८६। ल०, १०, ७३, ७६।
झुकना।

दम = का० ६६।
[सं० पु०] (सं.) इन्द्रियों को वश में रखना। शक्ति। श्वाँस।

दमकीली = का०, कु०, ३६।
[वि०] (हि.) चमकने वाली। चमकती हुई।

दमनीय = ल०, ७०।
दमन करने योग्य।

दया = आं०, ७१। का० कु०, १, २७। का०, [सं० स्त्री०] ५७, २११। चि०, १४, ७०, १५४, (सं.) १७४। झ०३७, ४३, ५६। प्रे० ७। ल०, ३३।
सहानुभूति का भाव, करुणा।

दयानिधि = का० कु०, २। चि०, ३०। प्रे० १८।
[सं० पु०] (सं.) करुणानिधे। दया सागर।

दयानिधे = क०, ३०।
[सं० पु०] (सं.) करुणानिधान।

दयामय = म०, २४।
[सं०] (सं.) दया से पूर्ण। दयालु। ईश्वर।

दयाला = चि०, ६१।
[वि०] (ब्र. भा०) दे० 'दयालु'

दयालु = चि० १५३।
[वि०] (सं.) दया करने वाला। दयावान।

दरपन = चि०, ६८।
[सं० पु०](ब्र. भा.) दर्पण। मुँह देखने का शीशा।

दरबारहु = चि० १८७।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) दरबार भी।

दरशन = चि०, १६४।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) साक्षात्कार। देखा-देखी। भेंट।

दरसात = चि०, १८, ६८, १६६।
[क्रि० अ०] दिखाई देता है। दृष्टिगोचर होता है।
(ब्र. भा.)

दरसाति = चि० १६८।
[क्रि०अ०] (ब्र. भा.) दिखाता है।

दरसान = चि०, ९।
[क्रि० अ०] (ब्र. भा.) दिखाई देना।

दरसावै = चि०, १६१, १७४।
[क्रि० सं०] (ब्र. भा.) दिखावें।

दरस = चि०, १८१।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) दे० 'दर्शन'।

दरसावो = चि०, ३६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दिखाओ ।
दरस्यो = चि०, ६० ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दिखाई दिया ।
दरिद्र = का०, ८२ । प्रे०, २०, २३ ।
[वि०] (सं०) बहुत गरीब, निर्धन, कङ्गाल ।
दारिद्र्य-दलित = का०, १६४ ।
[वि०] दरिद्रता से कुचला हुआ, गरीबी से
(सं.) सताया हुआ ।
दर्प = आं०, ३८ । का० कु०, २० ।
[सं० पु०] चि०, ४१ ।
(सं.) घमण्ड । उद्दण्डता, अक्खड़पन ।
दर्पोद्धत = म०, ५ ।
[सं० पु०] (सं घमण्ड के कारण, उजड्ड ।
दर्शकहिं = का०, ११४ ।
[सं०] (ब्र. भा.) दर्शक को । देखने वाले को ।
दर्शन = का०, १२ । चि०, २४, १७० । भ्रू०,
[सं०] ५५ । ल०, २१ ।
(सं.) देखिये 'दरशन' । एक शास्त्र का नाम ।
दर्शनों = ल०, १२ । २२ ।
[सं० पु०] (हि.) दर्शन का बहुवचन ।
दल = क०, १३ । का० कु०, ३४ । का०,
[सं० पु०] २, पृष्ठ से २८४ तक । चि०, ४२,
(सं.) ५३ । म०, ४ । ल०, २६, ३०, ४४,
५०, ६६
किसी वस्तु के उन दो सम खण्डों में से एक जो परस्पर जुड़े हों, पर जरा-सा दबाव पड़ने पर अलग हो जाय । पत्ता । पत्र । समूह । गिरोह । सेना । फूल की पङ्खुड़ी । म्यान ।
दल सा = का० २०० ।
[वि०] (हि.) दल के सदृश ।
दल-अंचल = ल०, ७० ।
[सं० पु०] (सं०) पत्र रूपी अंचल ।
दलारविन्द = चि०, ३२
[सं० पु०](ब्र. भा) कमल का दल ।
दलिता-सी = का०, १०३ ।
[वि०] (हि.) दलित सदृश ।
दलित = का०, २६७ । चि०, ५८ । भ्रू०, ४५ ।
[वि०] ल०, ५२ ।
(सं.) मसला हुआ, रौंदा या कुचला हुआ ।
दव = का०, १३६ ।
[सं०] वन, जंगल । जंगल में लगने वाली
(सं.) आग । दावाग्नि । अग्नि ।
दशकहिं = चि०, १६१ ।
[वि०] (सं.) दसवीं ।
दशन = ल०, ६८ ।
[सं० पु०] (सं.) दाँत, कवच ।
दशरथ = चि०, ५२ ।
[सं० पु०] (सं) अयोध्या के प्रसिद्ध राजा । श्रीरामचंद्र जी के पिता ।
दशा = आं०, ४४, ७८ । का० कु०, ८०,
[सं० स्त्री०] ९७ । का०, २५, २८१ ।
(सं.) स्थिति, अवस्था । मानव जीवन की अवस्थाएँ; अभिलाषा, चिन्ता, स्मरण, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि ।
दस्यु = का०, ८४ ल०, ५१ ।
[सं० पु०] (सं.) डाकू, चोर । असुर , अनार्य । दास ।
दस्यु-दल = क०, १० ।
[सं० पु०] (हि.) डाकुओं का गिरोह ।
दह = का०, २३४ ।
[सं० पु०] (हि.) कुण्ड । नदी में जहाँ गहरा गड्ढा हो ।
दहकता = म०, १६ ।
[क्रि०] (हि.) जलता हुआ, तप्त, गर्म ।
दांत = का०, २४० ।
[वि०] जिसका दमन किया गया हो । इन्द्रियों
(सं.) को वश में कर लिया गया हो । दाँत का बना हुआ । दाँत संबंधी ।
[सं० पु०] (सं.) मैनफल ।
दाँव = का०, ५५ । भ्रू०, ५६ ।
[सं० पु०] (हि.) बार । दफा । उपयुक्त अवसर । बाजी ।

(हि.) मौका। जुए में बदी गयी चाल।
दाग = का० ४०।
[सं०] मुर्दा जलाने की क्रिया। जलाने का
(हि.) काम। दाह। जलन। डाह। जलने का चिह्न। चिह्न।
दादा = चि०, ४, ७३।
[सं०पु०] (हि.) पिता के पिता।
दान = आं०, १८, २३। क०, १८। का० कु०,
[सं०] ६२। का०, ५२,५४, ६३, ६४, १०६,
(सं.) १६३, २२६। चि०, ५१, १४२। झ०, ५, १७। ल०, ४५।
देने का कार्य। उदारतावश दिये जाने वाले धन या सामान। दान में दी जानेवाली वस्तु, महसूल, कर, चूँगी। राजनीति का उपाय। हाथी का मद। एक प्रकार का मधु। छेदन। शुद्धि।
दानव = का०, १०६। ल०, ४७।
[सं०पु०] (सं.) असुर, राक्षस-संतति।
दानशीलता = का०, १५३।
[सं०स्त्री०] (हि.) दान करने की प्रवृत्ति। उदारता।
दाबहुँ = चि०, ४२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दबावो।
दाबि = चि०, ४१, ६५, १६३।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) दाबकर।
दाब्यो = चि०, ४२।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) दबाया।
दाम = चि०, १३७।
[सं० पु०] (सं.) रस्सी, डोरी। समूह। माला। मूल्य।
दामक = चि०, २१।
[सं० पु०] (सं.) गाड़ी के जुए की रस्सी। लगाम।
दामिनि = चि०, ३४, १५८, १८।
[सं० स्त्री०] आकाश में चमकने वाली, बिजली।
(सं.) एक आभूषण।
दाया = का० कु०, ७। चि०, ३०।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा) करुणा। दया।
दायित्व = क०, १०। का०, २६८।
[सं० पु०] (सं.) जवाबदेही। जिम्मेदारी।
दारुण = का०, ११६, १२०, १२१। झ०, ४७।
[वि०] ल०, ५२।
(सं.) भयंकर। कठिन। प्रचंड। एक नरक
[सं० पु०] (सं.) का नाम।
दालान = प्रे०, ४। झ०, ५६।
[सं० पु०] (फा.) मकान के आगे का भाग। ओसारा।
दावा = चि०, ६५।
[सं० पु०] किसी वस्तु पर अपना अधिकार दिख-
(हि.) लाना। स्वत्व। हक।
दावाग्नि = म०, १६।
[सं० स्त्री०] (सं.) दावानल, बन में लगने वाली अग्नि।
दावानल = का० कु०, ८६, १०७। ल०, ६४, ६५।
[सं० स्त्री०] (सं.) बन में लगने वाली आग।
दावाग्नि-प्रखर= का०, २८१।
[सं० स्त्री०] (सं.) बन में लगी हुई प्रचण्ड आग।
दास = क०, १५। का०, २६६। चि०, ३०,
[सं० पु०] ७४, १५५। ल०, ७७, ७८।
(सं.) सेवक, गुलाम।
दासता = का०, १६८।
[सं० स्त्री०] (सं.) गुलामी, नौकरी।
दासी = म० १, ३। ल० ६६, ७३।
[सं० स्त्री०] (सं०) सेवा करनेवाली मजदूरनी, लौंडी।
दासीपन = क० २६।
[सं० स्त्री०] (हि.) दासता। दासीत्व।
दासी सदृश = क० ३०। का० कु०, ६३।
[वि०] (सं.) सेविकाओं की तरह।
दाह = का०, २७, ६०, २४२। चि०, १०६, १५१।
[सं० पु०] (सं.) जलन, ताप, शोक।
दिखावत = चि०, ६१, ६२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दे० 'दिखलाना'।
दिखाता = आँ० ३२, ३६। क०, ८। का० कु०,
[क्रि०] (हि.) १, ६, १२, १६, ४१। का० १५७, २६३। ल० ६, ४६।
'दिखाना' क्रिया का रूप।

दिखलाना = आँ०, १०,३८, ५३ । क०, १७ । का०
[क्रि०] कु०, १०, ३४, ३६, ४२ । का०,४६ ।
(हि.) झ०, ४६ । प्रे०, १ , १५, २५ ।
म०, १४ । ल०, ११, १४, ३६, ६८,
१४१, १८१, २६५ । चि०, १६० ।
देखाना ।

दिखाओ = का० १६६ । चि०, ४२, १८६ ।
[क्रि०] (हि.) 'दिखना' का एक रूप ।

दिखाते = क०, २५ । का० कु०, १३, २८ । का०
[क्रि०] ३०, ७४, १८१, २११, २३३, २१६,
(हि.) प्रे० १ ।
'दिखाना' क्रिया का रूप ।

दिखाना = चि०, ११ । ल०, ४७,७३ । आं०, ४ ।
[क्रि०] क०, २५ । का०, २६६ ।
(हि.) दे० 'दिखलाना' ।

दिगन्त = क०, ८ । का० कु०, ४१, ५७, ८६ ।
[सं० पु०] का०, १०, ११, १३, ३६, ६३, ११७,
(सं०) १५६, १६६ । ल० १३, ६० । चि०,
५०, १७५ ।
छोर या अंत । क्षितिज । दिशाएँ ।

दिग्दाहों = का० १३ ।
[सं० पु०] अशुभ । दैवी घटनाएँ जिसमें सूर्यास्त
(सं०) होने के समय दिशाएँ लाल और
जलती हुई सी दिखलाई पड़ती हैं ।

दिग्वस्त्र = चि०, ७२ ।
[सं० पु०] (सं.) शिव । दिगम्बर । लग्न । नग्न ।

दिग्विजय = चि०, ६७ ।
[सं० स्त्री०] प्राचीन काल में राजाओं का सभी
(सं.) दिशाओं में विजय प्राप्त करना ।

दिन = का० कु, ३१ । का०, ७५, ८२, ८६,
[सं० पु०] ६३, ११२, १२६, १६४, १६६, १७८,
(सं०) २०६, २१७, २२२, २२६, २३४,
२८१ । चि०, ८, ३५, ५६, ६१,
१८५, १८६ । झ०, ४७ । प्रे०, ६,
१२, १६, २०, । म०, १७, २२ । ल०,
७७, ७८, ७६ ।
सूर्य निकलने से उसके अस्त होने तक
का समय । ८ पहर या चौबीस घंटे
का समय । दिवस ।

दिनकर = आं०, ५६ । का० कु०, ४ । का०,
[सं० पु०] २५३, २८४ । चि०, १६०, १६३ ।
(सं.) प्रे०, ५ । म०, ७ । ल०, २६ ।
सूर्य, आग, मन्दिर ।

दिनकर-कर = का० कु०, ३३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सूर्य की किरणें ।

दिन-दिन = का०, ३३ ।
[अ०] (हि.) नित्यप्रति सदा । हर रोज ।

दिननाथ = का० कु०, २८ । चि०, ४८, १०१ ।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य ।

दिनभर = का०, १४४ । चि०, ३८ । म०, ७ ।
[सं०पु०] (हि.) पूरा दिन ।

दिन-रात = का०, १५ । का० कु०, २६, ७५ ।
[सं०स्त्री०] का०, ४६ । चि०, ३८ । प्रे०, १७,
(हि.) १६ ।
सदा, हमेशा ।

दिन-रैन = चि०, ६ ।
[सं० पु०] (हि.) दे०'दिन-रात' ।

दिनान्त निवास= का०, ८६ ।
[सं०पु०](सं.) सन्ध्या का निवास ।

दिनेश = का० कु० ११३ । चि०, १४० ।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य ।

दिप्यो = चि० ५३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्रकाशित हुआ ।

दिया = आं, ५३ । क०, २२ । का० कु०, ६,
[सं० पु०] पृष्ठसे २८१ तक अनेक बार । चि० ३१,
(हि.) ५८, ६०, ६२, ७१, १०७, १५८,
१६४, १७३, २८१ ।
दीपक । (क्रि० स०) दे देना ।

दियो = चि० ६७ ।
[क्र०] (ब्र. भा.) 'दिया' क्रिया का एक रूप ।

दिलाती = क० १४ । का० कु० १४ ।

[क्रि०] (हि.) दिलाना ।

दिलीप = चि० ४८, ५२ ।
[सं० पु०] इक्ष्वाकु वंशी एक राजा का नाम जो
(सं.) रघु के पिता थे ।

दिल्ली = का० कु० १०८ । ल० ६६ ।
[सं०] (हि.) भारतवर्ष की राजधानी ।

दिल्लीपति = म० ११ ।
[सं० पु०] (हि.) दिल्ली के राजा ।

दिवस = का० कु० २२ । १७, ३४, १४४,
[सं० पु०] १७८ । चि० १२, ५७ । प्रे० ११,
(सं.) १५, १६, २१ । म० २१ ।
दिन, वासर, रोज ।

दिवसन = चि० ६० ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) दिवस का बहुवचन

दिवा = का० २६१ ।
[सं० पु०] दे० 'दिवस' ।

दिवाकर = का० कु०, २४, २८, ५४ । का० ६३ ।
[सं० पु०] चि० १, १४३, १४५, १५२ । म० ३ ।
(सं.) सूर्य, भास्कर । कौवा । मदार का फूल ।

दिव्य = का०, ५०, ५८, ६० । चि०, १०१ ।
[वि०] ल० ६४ ।
(सं.) अलौकिक, बढ़िया, सुन्दर ।

दिव्य ज्योति = का० कु० ६, १२, ५१, ११२, ११३,
[सं० पु०] १२४, १२६ । का० २२२, २४०,
(सं.) २४१, २७३, २८७ । ल० १३ ।
तत्त्ववेत्ता । आकाश मे होने वाला
उत्पात । स्वर्गीय, अलौकिक । चमकीला ।

दिव्य-रथ = का० कु०, ११४ ।
[सं० पु०] (सं.) अलौकिक रथ ।

दिवाकर-किरणाली = का० कु०, ३४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सूर्य की किरणों की पंक्ति ।

दिवा-रात्रि = का० ७, ३६ ।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'दिन-रात' ।

दिवा-श्रांत = का० १८० ।
[वि०] (सं) दिन का थका हुआ ।

दिशा = का० कु० ५६ । का० १३५, १८४,
[सं० स्त्री०] २४५, २६०, २९३ । चि० १०१ ।
(सं.) ओर, तरफ, क्षितिज के चार कल्पित
विभागों में से किसी ओर का विस्तार ।
दिक् । दस की संख्या ।

दिशि = का०, २३४ । चि०, ५३, १६३ ।
[सं० स्त्री०] ब्र.भा) दे० 'दिशा' ।

दिशि-दिशि = का०, १२० । चि०, १३२ ।
[सं० पु०] (सं.) सभी दिशाओं में । प्रत्येक ओर ।

दीक्षित = का० कु०, ११४ ।
[वि०] जिसने संकल्प करके यज्ञ किया हो ।
(सं.) जिसने गुरु से मन्त्र लिया हो ।

दीक्षितह्वैकै = चि०, ४१ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र.भा.) गुरु से मन्त्र लेकर ।

दीखता = का०, ६३, ५१ । का० कु०, १६,
[क्रि० अ०] २६, ४१ । म०, ४, ५ ।
(हि.) दिखाई देता ।

दीख = का०, २६८ । का० कु०, ५१ ।
[क्रि०] (हि.) दे० देखना । दिखाई पड़ना ।

दीजिये = आं०, २१, २८, ४५ । क०, १५,
[क्रि० स.] २५, २२, २५, २७, ६, ३० । चि०,
(हि.) ५४, १७५ । ल०, ७३ ।
देना क्रिया का आदर सूचक वर्तमान
काल का रूप ।

दीजे = का० कु०, ६ । चि०, ७३, १४८ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) देना क्रिया का रूप ।

दीठि = चि०, ४६, १७२ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) दृष्टि, नजर, निगाह ।

दीन = आं०, ४४ । का०, ११, २५ । का०,
[वि०] ७४, ८६ । का०, ७, १७, ३३, ४६,
(सं.) ५५, ८८, १३६, १४५, १५७, १६१,
६४, १६७, २३६, २४५ । चि०, ४६,
५१, १००, १७०, १७२, १९८ । भ०,
४६, ६५ ।
गरीब, धनहीन, दुखित, कातर, मत,
मजहब ।

दीनता = आं०, ३८, ७१ । चि०, ३० । भ०,

[सं० स्त्री०] ५८, ५६ । ल० ६५ ।
(सं.) गरीबी । धनहीनता । उदासी । नम्रता
दीन-दुख = चि०, १७६ ।
[सं० पु०] (सं) गरीबी का दुख ।
दीन-दुख-हारी = प्रे०, २१ ।
[सं० पु०] (सं.) गरीबों का दुख दूर करनेवाला ।
दीन-बन्धुता = चि०, १७६ ।
[सं० पु०] (सं.) गरीबों का दुख दूर करने की भावना ।
दीन-वाणी = चि०, ५० ।
[सं० स्त्री०] विनम्र वचन । कातरता से भरी
(सं.) हुई बोली ।
दीन सम = का, ११, १५ । म०, २ ।
[वि०] (सं.) गरीबों के समान ।
दीने = चि०, ७४, १७१ ।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) दिया ।
दीन्ह = चि०, ४२, ४८, ५७, ६०, ६४, ६६,
[क्रि० स०] १०१, १५४ ।
(ब्र. भा.) 'दिया' ।
दीन्हों = चि०, ५२ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) 'दिया' ।
दीप = आं०, १७, १६, ७३ । क०, ६ । का०
[सं० पु०] कु०, ४, ८, ६, १०३ । का०, १७६,
(सं.) १७६, २०६, २६३ । चि०, ४६, १६१
भ०, ३४, ३५ ।
दिया । चिराग । एक मात्रिक छंद । द्वीप ।
दीपक = आं०, ३०, ४४, ७६ । का०, ६,
[सं० पु०] १६० । चि०, १६ ।
(हि) दिया । चिराग । एक अर्थालंकार । एक
राग का नाम । केशर । मयूर-शिखा ।
दीपती-सी = का०, ६७ ।
[वि०] (हि.) प्रकाशित होती-सी ।
दीपमाला = का० कु०, २ ।
[सं० स्त्री०] जलते हुए दीपों की पंक्ति । दीप-शिखा
(सं.) आरती के लिए जलाई हुई बत्तियों का
समूह ।
दीपशिखा = का०, १७६ ।

[सं० स्त्री०] (सं.) चिराग की लौ । दिये की टेम ।
दीपांकुराली = चि०, ४६ ।
[सं स्त्रसे०] (सं.) दीप रूपी अंकुरों की वाली ।
दीपाधार = म०, १६ ।
[सं० पु०] (स.) दीप का आधार, दीवट ।
दीप्त = का०, ४७ ।
[वि०] (सं.) प्रकाशित । चमकता हुआ ।
दीप्ति = का०, ६, २४६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रकाश । आभा । शोभा ।
दीरघ = चि०, ३ ।
[वि०] (सं.) विस्तृत, बड़ा, विशाल ।
दीर्घ = का० कु०, ८६ ।
[वि०] (सं.) दे 'दीरघ' ।
दुन्दभी-मृदंग-तूर्य = ल०, ५६ ।
[सं० पु०] नगाड़ा, मृदंग और ढोलक । तुरही या
(सं.) सिंहा ।
दुःख = आं०, ३६, ७५ । क०, १७, ३१ ।
[सं० पु०] का० कु०, १४, २७, ३०, ६३, ७६,
(सं) ११३ । का०, ६, २६३ । चि०, १८ ।
१८८ । प्रे०, २०, २२, २३ । म०,
१०, १२, १५ । ल०, ३१, ४५ ।
कष्ट, क्लेश, आपत्ति ।
दुख-ज्वाला= का०, २८२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) विपत्ति,
दुःख-जलधि= का०, ८ ।
[सं० पु०] (सं.) दुख का सागर । बहुत बड़ा दुख ।
दुःखस्वप्न = का०, १६० ।
[सं० पु०](सं.) बुरा स्वप्न ।
दुख = क० २, १४, २२३ । चि०, १८१, १८४,
[सं०पु०] १७८, १८५ ।
(सं.) दे० 'दुःख' ।
दुखद = का०, १६४ ।
[वि०] (सं.) दुखदेने वाला ।
दुखदायक = क०, १३ । प्रे० २३ ।
[वि०] (सं०) दुख या कष्ट पहुँचाने वाला ।
दुखदंड = का०, २६६ ।

[सं० पु०] (सं.) दुख रूपी कष्ट। दुख का दंड।

दुखतटनी = का०, १७६।
[स० स्त्री०] (हि) दुख रूपी नदी।

दुखदीनता = का०, २६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) गरीबी का दुख।

दुख-द्रुम-दल= का० कु०, ७, चि०, १४०।
[सं० पु०](सं.) दुख रूपी वृक्ष के पत्ते।

दुख-पिपासा= का० कु०, ५७।
[सं० स्त्री०](सं.) दुख की प्यास।

दुख भरी = का०, २१३।
[वि०] (सं.) दुख से युक्त।

दुख-सुख = आं०, ४६। का०, १०२, १६०, २२२,
[सं० पु०] २७२।
(सं.) कष्ट और आनन्द।

दुख सागर = का०, कु०, ६३। प्रे०, २१।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'दुख जलधि'।

दुख कामी = चि०, ६८।
[वि०] (हि.) दुःख में लीन।

दुख भार = आं०, ४८।
[सं० पु०] (हि.) दुख का बोझ।

दुखिया = का०कु०, ६१। का०२, १३। चि०, ६०।
[सं० स्त्री०] भ० ५। प्रे०, १८। ल०, ५०, ७२।
(हि.) दुखी।

दुखियान = चि०, १७८।
[सं०पु०] (ब्र. भा. दे० 'दुखिया'।

दुखी = आं० ५५। का० कु०, ५६, ८६।
[वि०] का० ११८, २१३। चि०, १०३, १४०,
(हि.) १८५। प्रे०, ५, ६, १८, २३।
खिन्न। दुःख में पड़ा हुआ। कष्ट झेलने वाला।

दुग्ध-धाम = का०, १४७।
[सं०पु०] (सं.) दूध के घर अर्थात् दूध देने वाले पशु।

दुग्ध-सी = का० ६४।
[वि०] (सं.) दूध के समान, स्वच्छ, सफेद।

दुत = चि०, १८४।
[अ०] (हि.) घृणा पूर्वक दूर हटाने के लिए कहा जाने वाला शब्द। झिड़की।

दुपहरी = ल०, ६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) दोपहर। मध्याह्न।

दुरन्त = का०, २४६। ल०, ५१, ५२।
[वि०] दुर्गम। दुस्तर। घोर। जिसका अन्त
(सं.) बुरा हो।

दुराई = चि०, ५८।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) छिपाई।

दुराशामयी = ल०, ५२।
[वि०] (सं) बुरी आशा से युक्त।

दुर्ग = का० कु०, ८, १०, ११८। प्रे० १,
[सं० पु०] ३, ४।
(सं.) गढ़, किला, एक असुर का नाम।
[वि०] (सं.) जहां जाना सहज न हो।
दुर्गम।

दुर्गद्वार = म०, १०।
[सं० पु०] (सं) किले का दरवाजा।

दुर्गुन = चि०, १८५।
[सं पु०] (ब्र. भा) बुरा गुण। दोष।

दुर्जन = प्रे० ५।
[वि०] (सं.) दुष्ट या खोटा आदमी। खल।

दुर्जन-कृत = म०, १४।
[वि०] (सं०) बुरे व्यक्ति के द्वारा किया हुआ।

दुर्जेय = का०, ७।
[वि०] (सं०) जिसका जीतना अत्यन्त कठिन हो।

दुर्दम्य = का० कु०, ११२।
[वि०] जिसका दमन करना, दबाया या जीता
(सं०) जाना बहुत कठिन हो। प्रबल, प्रचण्ड।
(संज्ञा, पु०) (सं.) गाय का
बछड़ा।

दुर्दिन = आं०, १, १४। का० कु०, १०८।
[सं० स्त्री०] बुरा दिन मेघाच्छन्न दिन। दुख और
(सं.) कष्ट के दिन।

दुर्दिन-जल-धारा = का० कु०, १०८।
[सं० स्त्री०] वह दिन जिसमें घनघोर बादल छाये

(सं.) हों, मूसलधार पानी बरसता हो, इस प्रकार के दिन के जल का प्रवाह ।

दुर्दैव = क०, २८ ।

[सं० पु०] (सं.) दुर्भाग्य, अभाग्य ।

दुर्दैव-वश = का० कु०, १०६।

[सं० पु०] (सं.) दुर्भाग्य से ।

दुर्धर्ष = का०, १६४ ।

[वि०] (सं) कठिन, प्रचण्ड, दुर्गम ।

दुर्निवार = का० १५६, १६१ ।

[वि०] सं.) जो शीघ्र रोका या हटाया न जा सके ।

दुर्बल = का० १८ । का०, १८५, २५६ । प्रे० [वि०] २१ ।

(सं.) कमजोर । दुबला-पतला निर्बल ।

दुर्बलता = का०, कु०, ८६ । का०, ५६, ६४, [सं० स्त्री०] १२२, १७० ।

(सं.) बल की कमी, कमजोरी, कृशता, दुबलापन ।

दुर्भर = का०, १४३ ।

[वि०] (सं.) जो उठाया न जा सके ।

दुर्भाग्य = प्रे० १६ ।

[सं० पु०] (सं.) बुराभाग्य, बुरी किस्मत, बुरा अदृष्ट ।

दुर्भाव = का० कु०, ११३ ।

[सं० पु०] (सं.) बुराभाव, द्वेष ।

दुर्भेद्य = का०, २६, ६६, ६३ ।

[वि०] जो सहज भेदा या छेदा न जा सके ।

(सं.) जिसे पार करना अत्यन्त कठिन हो ।

दुर्मद = ल०, ५१ ।

[वि०] (सं.) जो मद में चूर हो, घमण्डी, मदमस्त ।

दुर्लभ = का०, १२३ । ल०, १२ ।

[वि०] जो कठिनता से मिल सके, अनोखा,

(सं.) बहुत बढ़िया और विलक्षण । (सं. पु०) विष्णु ।

दुर्लक्ष्मी = का०, २०० ।

[सं० स्त्री०] अनिष्टकारक धन । बुरी भार्या, कुलटा

(सं.) स्त्री ।

दुर्लित = का०, १३६ । ल०, ६ ।

[वि०] बुरा, खराब, जिसका रंग-ढंग ठीक

(सं.) न हो ।

दुर्बोध = का०, ६५ ।

[वि०] (सं) जो जल्दी समझ में न आ सके । कठिन

दुर्व्यवहार = का०, १२४ ।

[सं० पु०] (सं.) बुरा बर्ताव या सलूक । बुरा आचरण ।

दुलार = का०, १४८, १६०, १६६, १८६, [सं० पु०] २४३ ।

(हि.) बच्चों को प्रसन्न करने की पूर्ण चेष्टा, लाड़-प्यार ।

दुलरा कर = का०, १५२ ।

[पूर्वकि०] (हि.) बच्चों को प्यार कर ।

दुविधा = का०, १५३ ।

[सं० स्त्री०] दो बातों में से किसी को निश्चित न

(हि.) कर सकने का भाव । मन की अस्थिरता, संशय ।

दुश्चिन्त-सा = का० कु०, १२३ ।

[वि०] विकट, चिन्तित व्यक्ति की तरह ।

(सं.) कठिनता से समझ में आने-वाले की तरह ।

दुष्कर-सा = क०, १७ ।

[वि०] अत्यन्त कठिनता के साथ । दुःसाध्य

(सं.) सदृश ।

[सं० पु०] (सं.) आकाश की तरह ।

दुष्कर्म = का०, ७ । म०, १२ ।

[सं० पु०] (सं.) बुरा काम, कुकर्म, पाप ।

दुष्काव्य = म०, १४ ।

[सं० पु०] बुरा काव्य । जिस काव्य से समाज में

(सं.) बुराई आती हो ।

दुष्ट = चि०, ६६ । का० कु०, १०२, ११२ ।

[वि०] क०, २८, २६ ।

(सं.) दोषग्रस्त, बुरे स्वभाव वाला, दुर्जन पाजी, खल ।

दुष्टन = चि०, ४२ ।

[वि०] (ब्र. भा.) देखिये 'दुष्ट' । (बहुवचन) ।

दुष्प्राप्य = का० कु०, ३० ।

[वि०] (सं.) जिसका मिलना कठिन हो, दुर्लभ ।

दुष्यन्त = चि०, ५८, ६०, ६६ । का० कु०, १०६ ।
[सं० पु०]
(सं.) महाभारत में वर्णित एक पुरुवंशी राजा का नाम जिसने कण्व ऋषि की पालिता पुत्री "शकुन्तला" से गन्धर्व विवाह किया था ।

दुष्यन्त-सहित = चि०, ५६ ।
[सं० पु०] (सं.) दुष्यन्त के साथ ।

दुसह = का०, २३४ । का० कु०, २२ ।
[वि०] (सं.) जो सहा न जाय । असह्य । कठिन ।

दुस्तर = क०, ३१ ।
[वि०] जिसको कठिनता से पार किया जा
(सं.) सके । विकट । कठिन ।

दुहराना = म०, १ ।
[क्रि० स०] किसी काम का दो बार किया जाना ।
(हि.) दोबार आवृत्ति करना ।

दुहरी = आं०, २४ ।
[वि०] (हि.) दो परतों का होना ।

दुहाई = ल०, ३३ ।
[सं० स्त्री०] घोषणा । पुकार । अपनी रक्षा के
(हि.) लिए चिल्लाकर लोगों को बुलाना । दूध दुहने की मजदूरी । गुहार ।

दुहुँ = चि० ४१, ४२, ५३, ६४, ६५ ।
[वि०] (ब्र. भा.) दोनों ।

दुहुँन = चि०, १६, २३ ।
[वि०] (ब्र. भा.) देखिये 'दुहुँ' ।

दुहें = का०, १४७ ।
[क्रि० स०] (हि.) दुहना ।

दूजे = चि०, ३१ ।
[वि०] (ब्र. भा.) दूसरे ।

दूत = का०, ५० । चि० १८४ ।
[सं० पु०] किसी समाचार को पहुँचाने वाला
(सं.) मनुष्य, चर, धावन, प्रेमी का संदेश प्रेमिका तक पहुचाने वाला ।

दूध और पानी सा = भ० ४०१ ।

[वि०] दूध और पानी के समान एक हो
(हि.) जाने वाला ।

दूनों = चि०- १८१, १८४ ।
[वि०] (ब्र. भा) दोनों ।

दूना = का०, १६० ।
[वि०] (हि.] दूगुना ।

दूनी = का०, १७६ । चि०, १०६ ।
[वि०] (हि.) दूना का स्त्रीलिङ्ग ।

दूर = प्रे० प०, २, १५, २१ । क०, १५, ३० । का० कु०, २८ । का०, ३२, ६८, ७०, ८१, १२६, १३६, १४२, १५०, १६४, १८०, २३३ २६०, २७२ । चि०, १५ । भ०, ३३, ५५, म०, १, ३, ४ । ल०, ६७, ६६, ३१ ।
[क्रि० वि०] (हि.) विस्तार तथा काल सम्बन्ध के विचार से अन्तर पर ।

दूर दूर = का०, ३, २८, ३०, ३५, २१८ ।
[क्रि० वि०] (हि) बहुत दूर तक । निकट नहीं ।

दूरते = चि०, ४ ।
[क्रि० वि०] (हि) दूर से ।

दूरागत = का०, १७२, २११, २२५, ६६ ।
[वि०] (सं.) दूर से आया हुआ ।

दूर्वादल = चि०, ३६ ।
[सं० पु०] (सं.) दूब नामक घास की पत्ती ।

दूसरा = का०, ८१, ६२, १६१, १६८, १७१, २१०, २६०, २७२, २७७ । चि०, १८७ । का० कु०, ८, २०, ४२ । प्रे०, १३ ।
[वि०] (हि.) कोई और । द्वितीय ।

दृगंञ्चल = चि०, २४ । ल०, ४८ ।
[सं० पु०] (सं.) आँख की पलक ।

दृग = आं०, ६९ । का०, ७७, १५६, २८१, २८६, २८६ । चि०, ४७, ५६, ७०, ७४, १५१, १८६ । भ०, ४४ । प्रे०, ७, २२ । म०, १८ । ल०, १०, ४६, ७ ६।
[सं० पु०] (सं.)

आँख। देखने की शक्ति या दृष्टि। दो की संख्या।

दृगकञ्ज = का० कु०, १००।
[सं० पु०] (हि.) कमलवत आखें।
दृगकुम्भ = चि०, १७७।
[सं० पु०] (हि.) आँख रूपी घड़े।
दृगजल = आँसू १०, झ० १६, २६।
[सं० पु०] (हि.) आँसू।
दृग झरना = का० कु०, ७१।
[सं० पु०] (हि.) झरना के समान आखें। आँखों से आँसू बरसना।
दृगतारा = का० कु०, ५६, प्रे० २६।
[सं० पु०] (हि.) आँख की पुतली, अत्यन्त प्यारा।
दृग-द्वार = का० कु०, ६२।
[सं० पु०] (हि.) आँख के दरवाजे, पलकें।
दृग निलोल = चि०, ७०।
दृग बान = चि०, ५४।
[सं० पु०] (हि.) आँख का तीर, कटाक्ष।
दृगमींचि = चि०, ७०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) आँख मींचकर या मलकर।
दृढ़ = का० ३, ६३, १८१, १८२, १८३,
[वि०] चि०, ४१, ४६, ६७, ६६, १०३,
(सं.) १८७, म० २६।
प्रगाढ़। ठोस। हृष्ट-पुष्ट। ध्रुव, पक्का, निडर, ढीठ।
[सं० पु०] विष्णु, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
(सं.) संगीत के सात रूपकों में से एक। गणित में वह अंक जो दूसरे से विभाजित न हो।
दृढ़ करे = चि०, २४।
[क्रि०] (हि.) पक्का करके, मजबूत बनाये।
दृढ़ता = का० २६।
[सं० स्त्री०] (सं.) पक्कापन, अटलता।
दृढ़ प्रतिज्ञ = म० ११।
[वि०] (सं०) अपनी प्रतिज्ञा या बात पर अटल रहने वाला।
दृढ़ मूर्ति = का० ५६।
[सं० स्त्री०] (सं.) मजबूत प्रतिमा।
दृढ़ हृदय = म० ११।
[सं० पु०] (सं.) पक्का हृदय या विचार।
दृप्त = का० ८६, ११६। प्रे० २४। ल० ५२, ५७, ६३, ६७, ६६, ७१, ७६।
[वि०] (सं.) उग्र। प्रचंड। प्रज्वलित। तेजयुक्त, अभिमानी।
दृश्य = का० कु०, १३, ५७, ६८। का० ३५, ४६, ११६, २०६, २८४, २८६, २८६।
[वि०] (सं.) चि०, ४२, ६३। झ० १६, ६६।
[सं० पु०] (सं.) जो देखने में आ सके। जिसे देख सके। जो दिखाई देता या साफ समझने में आता हो। स्पष्ट देखने योग्य। दर्शनीय। सुन्दर।
देखने की वस्तु।
दृष्टि = का० कु०, १२१। का० १७, २०, ५१,
[सं० स्त्री०] ६३, १६४, १८१। चि०, २१, १४७,
(सं.) १५७। झ० ६०।
देखने की शक्ति। आँख की ज्योति। निगाह। नजर। परख। आशा। ध्यान। विचार। उद्देश्य। अभिप्राय।
दृष्टिते = चि०, ७४।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) आँख से।
दृष्टि पथ = का० कु०, ४१। का०, ८३। झ०, ५७।
[सं० पु०] (सं.) दृष्टि का फैलाव। नजर की पहुँच।
देना = आँ० , ८, १८। क०, ११ १७, १८,
[क्रि०] २५। का० कु०, ११, २१। का०, ४१,
(हि.) ८४, ६३, १८२, २१६, २३७, २५२, २५४, २६३, २८२। चि०, ५७, ६२, १७६, १८०, १८५। झ०, ६१। प्रे०, ११। ल०, ३५, ३७।
प्रदान करना।
देव कल्पना = का०, १६३।
[सं० पु०] (सं.) ईश्वरीय-कल्पना।
देव दम्भ = का०, ७।
[सं० पु०] (सं.) देवताओं का अहंकार।

देवदारु = का० ८८, २७६ । चि० ५५ ।
[सं० पु०] हिमालय पहाड़ पर पाया जाने वाला
(सं.) एक वृक्ष विशेष ।

देव दिनकर = का० कु०, २० ।
[सं० पु०] (सं०) सूर्य देव । दिन करनेवाले देव ।

देव-दूत-सा = प्रे० १६ ।
[वि०] सं.) अग्नि के समान । देवदूत के समान ।

देव द्वन्द = का०, २८५ ।
[सं०] (सं.) देवताओं का परस्पर युद्ध ।

देव प्रतिज्ञा = चि०, ६७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) दृढ़ प्रतिज्ञा । कठोर प्रतिज्ञा ।

देव प्रवृत्ति = का०, १५८ ।
[सं० पु०] (सं.) देवताओं का स्वभाव, सतोगुणी स्वभाव ।
अहंकारी स्वभाव ।

देवबालागन = चि० १५४ ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) देव कन्याओं का समूह ।

देवव्रत = चि०, ४१ ।
[सं० पु०] भीष्म पितामह जो गंगा के पुत्र थे ।
(सं.) जिनके पिता कुरुवंशी राजा शान्तनु थे ।
एक सामगान ।

देव मंदिर = का० कु०, ६६ । ल०, ६३ ।
[सं० स्त्री०](हि) हिन्दू-धर्म मतानुसार देव-पूजा का स्थान ।

देव यजन = का०, १३, ३१ ।
[सं० पु०] देवताओं का यज्ञ । यज्ञ की वेदी । वह
(सं.) स्थान जहाँ यज्ञ किया जाता है ।

देव लोक = लहर, १५ ।
[सं० ०] (सं.) स्वर्ग ।

देव शक्तियाँ का०, १८५ ।
[सं० स्त्री०] (सं०) देवताओं का बल ।

देवि = का० १६६ २११, २४४, २४१ २८६
[सं० स्त्री०] चि०, ४६, १६१ ।
(सं.) देवी । दुर्गा । कुल-लक्ष्मी । देवता का
स्त्रीलिङ्ग ।

देवी = का० कु० १२१ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'देवि' ।

देवेन्द्र = का०, १६७ ।
[सं० पु०] (सं.) देवराज । इन्द्र ।

देवेश = का० कु, २० ।
[सं० पु०] (सं.) परमब्रह्म । शिव । विष्णु । इन्द्र ।

देवों = का०, ७१, ७८, १०६ १२८, १६६,
[सं० पु०] १६७, २५७, २५८ २६५, २६६ ।
(हि.) 'देव' का बहुवचन ।

देश = का०, ३८, १८३ । प्रे०, १८, म०, ८१०,
[सं० पु०] १८, ४६, ५०, १६६, १८३ ।
(सं.) वह भूभाग जो एक प्राकृतिक सीमाओं
से बधा हो और उसमें अनेक प्रान्त,
नगर आदि हों । जनपद । एक शासन
के अन्तर्गत रहनेवाला भूभाग । राष्ट्र ।
स्थान । जगह ।

देश-काल का०, १८२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) देश की स्थिति ।

देश-भक्त = म० ६ ।
[सं० पु०] जो अपने देश की सच्ची निष्ठा के
(सं.) साथ उन्नति में लगा हो या प्रयत्न-
शील हो ।

देश-निकाला = क०, ३० ।
[सं० पु०] देश से निकाले जाने का दण्ड ।
(हि.) निर्वासन ।

देश-देश = क०, १३ ।
[सं० पु०] (हि.) विभिन्न देश । अनेक देश । प्रत्येक देश ।

देह = का०, १४२, १६१ । प्रे०, ११ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) शरीर । बदन । तन । जीवन । विग्रह ।

देह-गेह = का० १४४ ।
[सं० पु०] (सं.) शरीर तथा घर ।

देह मात्र = का० १६३ ।
[सं० पु०] (सं) केवल शरीर अर्थात् कंगाल ।

देहु = चि०, १२६, १८१, १६० ।
[क्रि०] (ब्र. भा) दे० 'देना' ।

देहू = चि०, ६४, १४८, १४६, १७१ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) दे० 'देहु' ।

देहै = चि०, १७२ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दे० 'देहु' ।

= चि०, १५७।

[अव्य०] (ब्र. भा.) से।

दैके = चि०, ३८।

[क्रि० पू०] (ब्र. भा.) देकर।

दैत्य = क० १२।

[सं० पु०] (सं.) राक्षस, नीच, असुर।

दैन = चि०, ५३, १४२।

[सं० पु०] दीनता। (वि०) दीन संबन्धी [सं० स्त्री०] (हि०) देने की क्रिया। [वि०] दायक, देनेवाला।

(ब्र. भा)

दैन्य = का० कु०, ११४।

[सं० पु०] दीनता। दुःख आदि के कारण अत्यन्त विनत होना।

(सं.)

दैव-बल = का० ११०।

[सं० पु०] (सं.) देवताओं की शक्ति।

दैहो = चि०, १५५।

[क्रि०] (ब्र. भा.) दे० 'देहु'।

दो = आँ० ४१, ५१, ५४, ५५, ६२, ७६।

[वि०] क० १८। का० ३, ७२, ८१, १२८,

(हि.) १३०। भ० ११। म० ६, ११। ल० १०, ३६, ४०, ४१, ७५।

एक और एक का योग। [क्रि०] 'देना'।

दोऊ = चि०, ६६।

[वि०] (ब्र भा.) दोनों।

दो-दो = का० ७३, २३७, २४०, २४५, २४६।

[क्रि०] (हि.) दे दो। दे० देना।

दोखै = चि०, ५७।

[सं०पु०] (ब्र.भा.) दोष को।

दोगे = क० १८, २६। का० कु०, ४४। ल० १० ७१।

[क्रि०]

(हि.) देखिये 'देना'।

दोना = आ० ७१,

[सं० पु०] पत्ता का बना कटोरे के आकार का

(हि.) पात्र।

दोनों = आ०, ८, ४६, ४२, ५०, ६६, ७१।

[वि०] का०कु०, २३, ३८, ७२, ७३, ७६, ७७,

(हि.) ८४, ८८, १२८, १६१, १६५, १७६, २०१, २०६, २१०, २१३, २४३, २५७, २६०। चि० ५८, ७४। प्रे०, ६, १०, ११, १२, १६, २२, २३, २५, २६। म०, ६, ८, ६। ल०, ४५, ६६, ७१, ७३।

वे विशिष्ट दो जिसमें से कोई छोड़ा न जा सके। उभय।

दोपहर = प्रे० १४।

[सं० पु०] हि.) मध्याह्न।

दोल = का०, २५३।

[सं० पु०] (सं.) झूला। हिंडोला।

दोला = का० १२८।

[सं० स्त्री०] (सं.) देखिए 'दोल'।

दोष = क०, १६। का०, २१०, २७१। चि०, ७२। भ०, ४२।

[सं० पु०] (सं.) बुराई।

दौड़ = का० कु०, ४१, ६४। का० १४४, २५८, २६७, २७३, २७८, २६८, २६२। भ०, ३३।

[सं०स्त्री०] (हि.) दौड़ने की क्रिया का भान।

दौड़-दौड़ = का० कु०, ६१।

[सं०स्त्री०] भ० ४६।

(हि.) बार-बार दौड़ने की क्रिया या भाव।

दौड़-धूप = का०, ५, २६।

[सं० स्त्री०] (हि) वह प्रयत्न जिसमें इधर-उधर दौड़ना पड़े

दौड़ना = का०, ४५, ४६, ७२, १७६, २०८, २१०। प्रे०, १२। ल०, ६०।

[क्रि०] बहुत जल्दी। जल्दी पैर उठाकर चलना।

(हि.)

दौरि चि०, १, १५, ४१, १०६।

[सं० पु०] चक्कर। भ्रमण। फेरा। उन्नति या

(अ) वैभव के दिन। बारी।

दौर्वृत्य = का० कु० ११२।

[सं० पु०] बुरा आचरण। बुरा व्यवहार। दुरा-

(सं.) चरण। दुश्चरिता।

द्युति = का०, ३१, ४७।

[स० स्त्री०] (सं.) कान्ति, शोभा। छवि।
द्युति-सी = का० १०४।
[वि०] (हि.) दीप्ति, चमक, शोभा।
द्युतिमय = का० २८५।
[सं० वि०] (सं.) कान्ति से युक्त। शोभा से युक्त। लावण्य मय। किरण मय। प्रभामय, दीप्तिमय।
द्युत-रचना = का० कु०, ११३।
[सं० स्त्री] (हि.) जूआ खेलने का उपक्रम करना।
द्रुत = ल०, ७१।
[वि०] (सं.) शीघ्रगामी, तीव्र।
द्रुतगति = भ० ३३।
[वि०] (सं.) शीघ्र गामी।
द्रुततर = ल०, ७२।
[वि०] (सं.) शीघ्रतर। अत्यन्त शीघ्रता से।
द्रुतपद = ल०, ७२।
[सं० पु०] (सं.) एक छन्द का नाम।
द्रुम = चि०, १५६।
[पु० स०] (सं.) वृक्ष। पेड़।
द्रुम-दल = आं०, २६। का०, ६। प्रे०, ३।
[सं० पु०] म०, २।
(सं.) पेड़ के पत्ते।
द्रुमन = चि०, १७१।
[स०पु०] (ब्र.भा.) पेड़ों।
द्रुम पत्र = म०, १६।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'द्रुम दल'।
द्रुम-वृन्द = भ० ३१।
[सं० पु०] (सं.) वृक्षों का समूह।
द्रव चन्द्रकान्त = का० कु०, १००।
[सं० पु०] (सं.) पिघलने वाली चन्द्रकान्त मणि।
द्रवमय = म० २२।
[वि०] (सं०) पिघलने वाली चीज से युक्त। सरसता से भरा हुआ। सरस।
द्रवत = चि० १४।
[क्रि०] (सं.) पिघलना।
द्रवित = का० कु०६६ का० २१३। चि० १७३।
[वि०] (सं.) पिघला हुआ।
द्रोह = का० १४७।
[सं० स्त्री०] (सं.) दूसरे का अहित चाहना। बैर, ईर्ष्या, द्वेष।
द्रौपदी = का० कु० ६४।
[सं० स्त्री०] (सं०) राजा द्रुपद की लड़की। पांडवों की पत्नी।
द्वंद = का० १६१, २५१। मु० ६।
[सं०] (सं) युग्म। जोड़ा। प्रतिद्वन्द्वी। द्वन्द्व युद्ध। झगड़ा। कलह। दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। उलझन। झंझट। बखेड़ा। कष्ट। उपद्रव। रहस्य। भय। आशंका। दुविधा। [सं० स्त्री०] हिं) दुन्दुभी।
द्वयता = का० १६४, १६२, १६३।
[सं० स्त्री०] (सं) दो भाव। द्वैत। अपनेपन और परायेपन का भाव। भेद-भाव।
द्वार = का० कु० ४। का० ११२, १४४, १६६, १७२, १८६, १८६, १६३, २३४। चि० ६७। प्रे० १३। ल० १२।
[सं० पु०] (सं.) दरवाजा। मुख। उपाय। साधन।
द्वारका = का० कु० ११२।
[सं०] (सं.) काठियावाड़ की एक प्राचीन नगरी। कृष्ण की जन्मभूमि।
द्रव = ल०, २१, ४३।
[वि०] (सं.) तरल, गलायमान।
द्विगणित = भ०, ५५।
[वि०] (सं.) दूना। दुगुना।
द्विज = चि०, २६, १०३।
[सं० पु०] (सं) पक्षी। ब्राह्मण। दो बार जन्मा हुआ।
द्विजकुल = चि०, ४५।
[सं० पु०] (सं.) ब्राह्मण परिवार। द्विजातीय वर्ग, पक्षीगण।
द्वितीय = का०, ८१।
[वि०] (सं.) दूसरा।
द्वितीया = म०, १६।

[वि०] (सं.) दे० 'द्वितीय'।
द्विधा-रहित = का०, १२।
[वि०] (सं.) पूर्ण। बिना खंड के। संशय रहित।
द्वीप = का०, ५६।
[सं० पु०] स्थल का वह भाग जो चारो ओर जल
(सं.) से घिरा हो। पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े भाग। आधार। टापू।
द्वेष = प्रे०, १७। म०, १२।
[सं० पु०] (सं.) शत्रुता, बैर, ईर्ष्या, चिढ़।
द्वेष-पंक = का०, १६३।
[स० पु०] (सं.) शत्रुता और ईर्षा रूपी कीचड़।
द्वैत = का०, १५३।
[सं० पु०] (सं.) दो का भाव अन्तर। भ्रम द्वैतवाद।

ध

धँधलापट = प्रे०, ३।
[सं०] (हि.) छल-छद्म रूपी वस्त्र। ढोंग का झूठा वस्त्र। कपट वस्त्र।
धँसता = का०, १४, ६६, २८६।
[क्रि०] दबाव के कारण किसी वस्तु का कोमल
(हि.) वस्तु में घुसना, गड़ना।
धक्के = का०, २६०।
[सं० पु०] एक वस्तु का दूसरे के साथ वेगपूर्ण स्पर्श।
(हि.) टक्कर। झोंका। दुःख, शोक, हानि आदि का आघात। विपत्ति, संकट।
धज्यो = चि०, १५०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) शोभित है।
धड़कन = का०, ३३, ८२।
[सं० स्त्री०] (हि.) हृदय का स्पन्दन। धक-धक करना।
धधक = १३६, १७६, २०६, २७३।
[सं० स्त्री०] (हि.) आग की लपट। लौ।
धधकना = का०, १४, ३१, ४७, ६२, ११६,
[क्रि०] २०१, २१४, २१५, २७३।
(हि.) आग का उस प्रकार जलना कि लपट ऊपर को उठे। दहकना। भड़कना।
धनंजय = का० कु०, ११४, ११७।
[सं० पु०] अर्जुन का एक नाम। अग्नि। विष्णु (सं.) का एक नाम। चित्रक वृक्ष। (वि०) धन को जीतनेवाली।
धनंजयादि = चि०, १४०।
[सं०] (सं.) अर्जुन आदि।
धन = आं०, १६, ४७। का०, ६६, २४६।
[सं०] चि०, ३४, ५५। ल०, १७, १८, २३।
(सं.) रुपया-पैसा, सोना-चाँदी आदि द्रव्य। दौलत। संपत्ति। स्नेह का पात्र। जोड़ का चिन्ह (+)। मूल। पूजी। जन्म कुण्डली में जन्म लग्न से दूसरा स्थान। कच्ची धातु। (सं० स्त्री०) युवती वधू। (वि०) धन्य।
धनधन = चि०, ७४।
[अव्य०] (ब्र. भा) धन्य-धन्य।
धनमद = प्रे०, २०।
[सं० पु०] (सं.) धन का घमण्ड।
धनरत्नादि = चि०, ५४।
[सं०] (सं.) आर्थिक सम्पन्नता के उपकरण। धन-रत्न आदि।
धनु = आ०, २३। का०, १४१, १५७,
[सं०] २००। चि०, ३१, ४१, ५३।
(सं.) धनुष, चाँप, कमान। ज्योतिष में बारह राशियों में से नवी राशि। हठ योग का एक आसन।
धनुनिज = चि०, २४।
[सं० पु०](सं) अपना धनुष।
धनुर्धर = का० कु०, ६७।
[सं० पु०] (सं.) धनुष धारण करने वाला। अर्जुन।
धनुर्वेदिक = का० कु०, ११४।
[सं० पु०] (सं.) धनुर्वेद शास्त्र का ज्ञाता।
धनुष = का० कु०, १०२, ११४, ११७। का०,
[सं०] २००। चि०, ३०, १६३। भ्रू०, ३६।
(सं.) म०, ५।
चाप। कमान।
धनुषाकृति = चि०, १६३।
[वि०] धनुष के आकार वाली। अर्द्ध चन्द्रा-

सं.) कार। धनुषाकार।

न्य = क०, ३०। का० कु०, १२१। का०,
वि० सं०] १४७, १५४, २२४, २३८, २८६।
सं) चि०,२६, ६६, ६७। झ०, ५०।
प्रसंशा या बड़ाई के योग्य। श्लाघ्य।
सुकृति। पुण्यवान। विष्णु। नास्तिक।
धनिया।

न्य-धन्य = का० कु०, ७१।
अ०] (सं.) अहो अहो।

न्यवाद = प्रे०, ५।
सं० पु०] साधुवाद, प्रसंशा। कृतज्ञता सूचक
सं.) शब्द। शुक्रिया।

मनी = आं० ७३। का० कु, १२०। का०,
सं०] ८६। ल०, २१।
सं.) शरीर के भीतर रक्त संचार करने वाली
छोटी नली। नस। नाड़ी।

र = का०, ८५। ल० ७२।
अ०] (हि.) धरने या पकड़ने का भाव।

रणी = आं०, १०, ३२, ४१, ४८। का०, ६,
सं० स्त्री०] १५, ४८, ६३, ७३, १२२, १८२।
(सं०) प्रे०, ३, १७, २०, २४, २५। ल०,
७७।
पृथ्वी। नाड़ी। शाल्मलीवृक्ष।

धरत = चि०, १६५, १६६।
[वि०] (ब्र.भा.) दे० 'धरना'।

धरति = चि०, २३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) धारण करती है।

धरती = १४, २५४। चि०, १५८।
[सं०स्त्री०](हि.) पृथ्वी। जमीन। संसार। (क्रि०) पकड़ती।

धरना = का० कु०, ६। का०, ५२, ११६,
[क्रि०] १६७।
(हि.) पकड़ना। ग्रहण करना, स्थापित
करना। रखना। धारण करना। अर्पित
करना। अंगीकार करना। अधिकार या
रक्षा में लेना। पल्ला पकड़ना। गिरवी
रखना। रेहन रखना।

धरनि = चि०, १४, २४।
[सं०] (हि.) दे० 'धरणी'।

धरनी = चि०, १४३।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) देखिये 'धरणी'।

धरा = का० कु०, २, ३, १३, २४, २७।
[सं० स्त्री०] का०, १४, १५, २४, ५१, ६६, १६५,
(सं.) २०६। चि०, २८, ३८, १०१, १५०,
१५४। झ०, २३, ३१, ५०, ५६।
पृथ्वी। धरती। संसार। गर्भाशय।
चार सेर की एक तौल। एक वर्ष वृक्ष
का नाम। नाड़ी।

धरातल = का०, २३, १४६।
सं०] (सं.) सतह। पृथ्वी। रकबा। क्षेत्रफल।

धराशायी = का० कु०, ११३। का०, २०१।
[वि०] पृथ्वी पर गिरा, पड़ा या लेटा हुआ।
(हि.) युद्धस्थल में युद्ध करते हुये प्राण
त्याग करने वाला।

धरि = चि०, २, ६, २५, ३६, ४१, ४२, ५८,
[क्रि०] ६१, ६६, ७०, १४७, १५१, १५४,
(ब्र. भा.) १५६, १६०, १६१, १६४, १६७,
१७१।
पकड़कर।

धरित्री = का०, कु०, २६।
[सं०] (सं.) पृथ्वी। धरती। जमीन।

धरे = क०, ९। का०, ६७, १६८, १७०,
[क्रि०] १८६। चि०, ३, ३५, ५२, १०१,
(हि.) १५१, १५६। प्रे०, २। म०, २०।
पकड़े। ग्रहण करे। रखे।

धरै = चि०, १५, १६६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) देखिये 'धरे'।

धर्म = क०, १२, २२, २६, २७, २८। का०
[सं०] कु०, ८८, ६०, ६४, ११६, १२०।
(सं.) का०, २७१, २७७, २८३। चि०, ३२,
४१, ५६, ६५, ७२, १०१, १०६,
१४०, ल०, ३३, ५१।
शुभ। कर्म। पुण्य। श्रेय। सुकृत।

आचार । उपमा । यज्ञ । अहिंसा । उपनिषद् । स्वभाव । पथ । मत । कर्तव्य । व्यवस्था । न्याय-बुद्धि । विवेक । धर्मराज, यमराज । धनुष, कमान । सोमपार्या ।

धर्म-घोषणा = का० कु०, ११८ ।
[सं०] (सं.) धर्म की पुकार ।

धर्मच्युत = का० कु०, ११५ ।
[वि०] (सं.) अपने धर्म से गिरा हुआ ।

धर्म-जन्य = का० कु० १०६ ।
[वि०] (सं.) धर्म से उत्पन्न । धार्मिक प्रवृत्ति वाला ।

धर्मान्धते = का० कु०, १२१ ।
[सं०] धर्म की आड़ में होनेवाले दुष्कर्मों
(सं.) का सम्बोधन । अन्ध विश्वसनीयते ।

धर्मराज = का० कु०, ११३, चि० ३१ ।
[सं०] धर्म पालन करने वाला राजा ।
(सं.) युधिष्ठिर । यमराज । न्यायाधीश ।

धर्मराज्य = का० कु०, ११३ ।
[सं०] धार्मिक सिद्धांतों द्वारा परिचालित राज्य ।
(सं.) धर्म प्रधान राज्य ।

धरयो = चि०, १४७, १७३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पकड़े, ग्रहण किए ।

धव = चि० ५५ ।
[सं.] एक जंगली पेड़ जो औषधि के काम में
(सं.) आता है । पति, पुरुष । धूर्त आदमी ।

धवल = का० ३४, ११६, २५४, २७१, २७७,
[वि०] २८३ । चि०, २१, ६६ । भ्रू०, २२ ।
(सं०) स्वच्छ, श्वेत, निर्मल । सुन्दर । [सं० पु०] (सं.) धव का पेड़ । चिनिया कपूर । सिन्दूर । सफेद मिर्च । धवर पक्षी । भारी बैल । छप्पय छन्द का एक भेद । अर्जुन वृक्ष । एक रोग का नाम ।

धाइ = चि०, ७१ ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) दौड़कर ।

धागो = आ० १४ । का०, ६६ ।
[सं०] (हि.) बटे हुये सूत या तागे ।

धाता = चि० १३४ ।
[सं०] (सं.) ब्रह्मा । (क्रि०) दौड़ता ।

धातु = का० १८१, २६८ ।
[सं०] अपार दर्शक, चमकीला खनिज पदार्थ ।
(सं.) शरीर को बनाये रखने वाले रक्त, मज्जादि पदार्थ । शुक्र, वीर्य ।

धातुहिं = चि० १६६ ।
[सं०] (ब्र. भा.) दे० धातु ।

धान्य = का० ८२ । चि०, १५४ ।
[सं०] एक तौल । धनियाँ । एक प्रकार का
(सं.) नागर मोथा । धान । अन्न मात्र । प्राचीन काल का एक अस्त्र ।

धाम = का० कु०, ५८, का० ८७ चि० ४६, भ्रू० ६३ ।
[सं०] एक प्रकार के देवता । विष्णु । घर ।
(सं.) देह, शरीर । देवस्थान या पुण्य स्थान । शोभा । प्रभाव । जन्म । ज्योति । ब्रह्म । चहार दिवारी । किरण । तेज । परलोक । स्वर्ग । अवस्था, गति ।

धाय = चि०, ३६, ३८, ४२ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) धात्री, दाई । (क्रि०) दौड़कर ।

धाये = का० कु०, ३८ । चि०, ४१, ६७ ।
[क्रि०] (ब्र.भा) दौड़े ।

धायो = चि०, ७५ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दौड़ा ।

धार = आ०, ४२ । का० कु०, १७, २८ । का०, ९७ । चि० १५४, १५७, १६४, १६६ ।
[सं०] औषध के काम के लिये इकट्ठा किया
(सं.) हुआ जल । उवार । ऋण । प्रान्त, प्रदेश । [सं० स्त्री०] धारा प्रवाह । पानी बरसने या गिरने का क्रम । लहर ।

धारण = का० कु०, ११५, ल० ६७ ।
[अ०] ग्रहण करने का भाव । पकड़ने का
(सं.) भाव ।

धारत = चि० १४, ३६, ६३, १५८ ।

[क्रि०] रखना। स्थापित करना। ग्रहण करना।
(ब्र.भा.) धारण करना।
धारति = चि० ५६, ५७।
[क्रि०] ब्र. भा.) धारण करती है।
धारन = चि०, १७४
[सं०] (ब्र. भा.) धार का बहुवचन।
धारनि = चि०, ४८।
[सं० स्त्री०] ब्र. (भा.) धाराएँ। दे० 'धारन'।
धारा = आं०, १७, ५६, ६६। का०, २६,
[सं०] ४५, ६५, ६७, १२८, १६७, २६३।
(हि.) चि०, १२, ७३, १५०, १५६। झ०, १६। प्रे०, १२, २४। ल०, ७२।
धार (पानी, हथियार आदि की), विधान आदि का वह विशेष या स्वतंत्र अंग जिसमें किसी एक विषय की सब बातें या आदेश होते हैं।
धारा-सा = ल०, ८०।
[वि०] (हि) गतिशीलता का द्योतक। प्रवाह के समान।
धारा-सी = का०, १८१, २२८, २३३, २४१, २४७।
[वि०] झ०, २९।
(हि.) धारा के समान।
धाराहिं = चि०, ३६।
[सं०] (ब्र. भा) 'धारा' को।
धारी = चि०, ४६, १४०, १७७, १६२, १०३।
[वि०] (हि.) धारण करनेवाला, धारवाली।
धारे = का०, २०२। चि०, ६४, १०६, १५३,
[क्रि०] १५८।
(हि.) ग्रहण किए।
धारो चि०, १८७।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पकड़ो, ग्रहण करो, स्वीकार करो।
धारौ = चि०, ६४।
[क्रि०] (हि.) ग्रहण करूँ। स्वीकार करूँ।
धावते = चि०, १७९।
[क्रि०] (हि.) दौड़ते।
धावा = चि०, ६५।
[सं०] (हि.) आक्रमण। चढ़ाई। शीघ्रता से जाना।
धावै = चि०, १६०।
[क्रि०] (ब्र.भा) दौड़े, भागे।
धावो = चि०, १४७।
[क्रि०] (ब्र.भा.) दौड़ो, भागो।
धिक्कार = क०, २८, चि० ४१।
[सं०] तिरस्कार या घृणा व्यंजक शब्द।
(सं.) लानत। फटकार।
धिक्कृत = का० कु० ९४।
[वि० सं] जिसे 'धिक्क' कहा जाय। जिसका
(सं.) तिरस्कार हो।
धीवर = ल०, ५७, ५६।
[सं०] (सं.) मल्लाह।
धीमें = का०, १२५।
[वि०] धीरे चलने वाले। मन्द। जो अधिक
(हि.) उग्र या प्रचंड न हो। जिसका जोर या तेजी घट गई हो।
धीर = का०कु०, २०, २१, ११४, ११८; का०,
[वि०] २६, ३१, ३६ ८६, २४८। चि०, ४३,
(सं.) १४७, १५०, १५४, १५६, १६७, १७२।
जिसमें धैर्य हो। शांत चित्त वाला। बलवान। विनीत। नम्र। गम्भीर। मनोहर। सुन्दर। मंद। (सं० पु०) केसर। ऋषभ औषध। मंत्र। राजा बलि। (हि०) धीरज। संतोष।
धीरे = चि०, १४७।
[अं०] (हि.) शनैः। अहिस्ता। सुस्ती से।
धीरे-धीरे = आं० ३१, ४७। क०, ५, ७, ८।
[क्रि०] का० कु०, ६५। का० २३, ३४, ७०,
(हि.) ११८, १२७, १५०, १७६, १७७, २४६, २७७, २८०, २६२। झ०, ६६। प्रे०१६, १७, १८, २५। ल०, १४, ७४। अहिस्ता अहिस्ता। शनैः शनैः।
धुँआ = का०, १६६।
[सं०] (सं) देखो धूआँ।
धुँधला = का० २६६।

[वि०] (हि.) अस्पष्ट, धुँआ के रंग का, धूमिल ।

धुँधला-सा = का० ४६, १८४ ।
[वि०] काला या धुँये के रंग के समान ।
(हि.) अस्पष्ट सा ।

धुँधले = का० १६, ११८, भ्रू० ५२,
[वि०] (हि.) अस्पष्ट । साफ न दिखाई देने वाला ।

धुँधली = आ० ३०, ६२ । का०१४, १२१, २१२ ।
[सं०] हवा में मिली हुई धूलि के कारण होने
(हि.) वाला अँधेरा । हवा में उड़ती हुई धूल । आंख का रोम ।

धुन = का० कु० २, ५७, चि० १५८, १७२,
[सं० पु०] १८०, प्रे० १३ ।
(सं.) काँपने की क्रिया या भाव । (सं० स्त्री०) (हि.) किसी काम को बराबर करते रहने की प्रवृत्ति या लगन । मन की तरंग या मौज । चिन्ता । गाने का तर्ज । सम्पूर्ण जाति का एक राग । आवाज ।

धुनि = चि० १५, ५१, १७६ ।
[सं०] (सं.) नदी । (सं० स्त्री०) (हि.) आवाज ।

धुलने = का० ८७ ।
[क्रि०] (हि.) 'धुलना' का बहुवचन ।

धुला = आ० ३७ ।
[वि० क्रि०] धुला हुआ । स्वच्छ । धुलना का
(हि.) भूतकालिक रूप ।

धूलि = का० कु० १०४ ।
[सं०] (सं.) मिट्टी के सूक्ष्माणु, रजकण ।

धुली = का० १२०, २२४ ।
[वि०] (हि) साफ की हुई ।

धू-धू = का०, २० ।
[सं०] (हि.) आग की लपटों का रव ।

धूनी = का०, १७६ ।
[सं०] (हि.) गुग्गुल, लोबान, आदि गंध द्रव्यों से उठा हुआ धुआँ । एक गंध द्रव्य । वह आग जिसे साधु लोग ठंढक से बचने के लिये अथवा तपस्या के लिये जलाते हैं ।

धूप = क०, १७ । का० कु०, २७ । का०, १८१, १८२ । भ्रू०, २६ ।
[सं०]
(सं.) कपूर, अगर, गुग्गुल आदि गंध द्रव्यों से उठा हुआ धुआँ । एक सुगन्धित वस्तु । घाम । सूर्य का प्रकाश । आतप ।

धूपछाँह = का०, २४१ ।
[सं०] मिली हुई धूप और छाँह । एक तरह
(हि.) का रंगीन कपड़ा ।

धूप-धूम-सुरभित = का०, १८२ ।
[वि०] सुगंधित द्रव्यों के जलने से उठे हुए
(सं०) धुँए से सुगन्धित ।

धूम = का०, १३, ६४, २३३, चि०, ४०,
[सं०] १४१ ।
(सं.) धुँआ । अपच के कारण आनेवाली डकार । धूमकेतु । उल्कापात । एक ऋषि विशेष । उपद्रव । उत्पात । कोलाहल । हलचल । ठाटबाट । प्रसिद्धि ।

धूमण्डल = का०, १२१ ।
[सं० पु०] (सं.) धूँए का घेरा या घनघोर धुँआ ।

धूमकेतु = का०, २०० ।
[सं०] अग्नि । पुच्छल तारा । केतु ग्रह ।
(सं.) शिव । वह घोड़ा जिसकी पूँछ में भँवरी हो ।

धूमकेतु-सा = का० कु०, १०८, का०, ५, २०२ ।
[वि०] पुच्छलतारे के समान, अत्यन्त भयानक
(सं.) कष्ट देनेवाले के समान ।

धूमगंध = का०, १८३ ।
[सं०] (हि.) सुरक्षित द्रव्य की सुगन्धि ।

धूम धाम = प्रे०, ७ ।
[सं०] (हि.) बहुत तैयारी । ठाटबाट । समारोह ।

धूम-धार = का०, २६६ ।
[वि०] (हि) धुआधार । तीव्रगति से, भयंकर धुआँ ।

धूमपट = का०, ३२ ।
[सं० पु०] (सं.) धूँए का परदा ।

धूम-रेखा = आं०, ३०, ल०, ७५ ।
[सं०] (सं.) धूँए की रेखा । हल्का धूँआ ।
धूम-सा = का०, १५६ ।
[वि०] (हि.) धूँए के समान ।
धूमिल = का०, का०, ६७, १५६ १७६, २३३ ।
[वि०] (हि) धूँए के रंग का । धुँधला ।
धूमिल-सा का०, २०६ ।
[वि०] (हि.) धुधला सा, धुएँ से अस्पष्ट सा ।
धूरि = चि०, ५, १५६ ।
[सं०] (सं.) धूल । गर्द ।
धूल = आं० १४, ३१, ४३ । क०, १४ । का०,
[सं०] कु०, २५, ६५ । का०, ३६, ५५, भ०,
(हि.) २, ३०, ३३, ६६, ८६ । म०, २ ।
ल०, ४६ ।
मिट्टी बालू आदि का बहुत महीन चूर्ण । रज ।
धूल उड़ाना = का० कु०, १०७ ।
[क्रि०सं०] [मु०] लांछन लगाना । बदनामी करना ।
(हि.) हँसी उड़ाना ।
धूल-धूल आं० ११ ।
[अ०] (हि.) बरबाद, खाक, विनष्ट ।
धूल-सदृश = म०, २ ।
[वि०] हि.) धूल के समान ।
धूलि = का०, १५२ । भ०, ६ । प्रे० १५ ।
[सं०] (सं) धूल । गर्द ।
धूलिकण = का०, कु०, २४ । का०, २५३ ।
[सं० पु०] (हि.) धूल के कण ।
धूलि-पटल = म०, ६, ल०, ५७ ।
[सं०] (सं.) धूल पट ।
धूसर = का०, ८२, ११७, २६१, वि०, १४१,
[वि०] (सं.) भ०, ३४, ल० ५६, ५६ ।
धूल या मिट्टी के रंग का मटमैला । खाकी । धूल से भरा हुआ ।
धूसरित = का० कु०, ८६ ।
[वि०] (सं.) धूल से भरा हुआ । मटमैला ।
धेनु-चारण-कार्य = का० कु० ११२ ।
[सं० पु०] (सं.) गाय चराने का काम ।
धैर्य = का०, ६२, १८६, १६७ ।
[सं०] चित्त की स्थिरता । धीरता । उतावला
(सं.) न होने का भाव । सब्र । चित्त में उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव ।
धैर्यमयी = ल०, ३३ ।
[वि०] (सं.) धीरता से युक्त । धीरज से भरी हुई ।
धैर्य-सा = का०, २१३ ।
[वि०] (सं.) धीरता के समान ।
धोकर = प्रे०, २४ ।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) साफ कर । पखार कर ।
धोखा = का० कु०, ८५ । का०, १२६ ।
[सं०] भ्रम में डालने वाला मिथ्या व्यवहार ।
(हि.) भुलावा । छल, दाग । मिथ्या प्रतीति । माया । भेड़ियों को डराने का एक पुतला, खटखटा । एक प्रकार का एक पकवान ।
धोती = का०, २३ ।
[क्रि०] (हि.) धोना का वर्त्तमान कालिक क्रिया ।
धोना = का०, ६, ११३, १७७ । म०, ८ ।
[क्रि०] पानी से रगड़ कर साफ करना ।
(हि.) प्रक्षालित करना ।
ध्रुव = चि०, १६६ ।
[सं०] (सं.) आकाश । कील, शंकु । पहाड़ । ध्रुपद ।
[वि०] भगवान के प्रसिद्ध भक्त का नाम । उत्तर में सदा एक ही स्थान पर रहने वाला तारा । अटल, सदा एक ही स्थान पर एक ही अवस्था में रहने वाला । स्थिर, अचल । पृथ्वी के उत्तरी, दक्षिणी सिरे ।
ध्रुव-सा = का० कु०, ६४ ।
[वि०] (सं.) अटल । दृढ़-निश्चय ।
ध्यान = क०, १५, २८, २६, ३१ । का० कु०,
[सं०] १३, १४, २७, २६, ३०, ३१, ५७,
(सं.) ८१, ६८, ११२, ११६ । का०, ८२,

८५, ११२, १८६, २८५। चि०, ६१, ६२, १४१, १५५, १८६। झ०, ३७, ४३, ५१, ५३। प्रे०, ६, १३, १८, २३। म०, ११। ल०, ६८।
सोच विचार। चिन्तन, मनन। भावना। समझ, बुद्धि। धारण। स्मृति, याद। चित्त को एकाग्र करने की बुद्धि।

ध्यान-विरत = का० कु०, १८, ३१, ३५।
[वि०] (सं.) ध्यान से अलग रहने वाला। ध्यान न लगाने वाला। चंचल स्वभाव वाला।

ध्वजा = चि०, ४६।
[सं०] (सं.) पताका, झण्डा।

ध्वंस = का०, १७, ५८, १०७, ११०, १६६।
[सं०] ल०, १३।
(सं.) क्षय, विनाश, बरबादी, हानि।

ध्वनि = आं०, ८। का० कु०, ३, ११४। का, ६८, ७०, ७७, १७६, १८१, १८२, २११, २५२, २६३, २८३, २६२। चि०, ४७। झ०, २४, ८५। म० ४। ल०, ३३, ३४, ४६, ५८।
शब्द, आवाज। आवाज की गूँज। लय। वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंगार्थ अधिक हो। गूढ़ अर्थ। आशय। मतलब।

ध्वनित = का० कु०, ३०। चि० १६१।
[वि०] (सं.) गूँजती हुई।

ध्वनि-सी = का० कु०, ४८।
[वि०] (सं.) ध्वनि के समान। अनश्वर।

ध्वनिसो = चि०, ४७।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) ध्वनि से।

ध्वान्त = का०, १६०, २४१, २४७। झ०, ७१, ८५।
[वि०] (सं.) अन्धकार, अँधेरा। मल, दोष।

ध्वस्त = का०, ८६।
[वि०] (सं.) विनष्ट हुआ। ढहता हुआ।

न

नई = आं०, ५८। का० कु०, ३६। का०, ८३, १४२, २६६। चि०, ३५। झ०, ८६, ८५। प्रे०, १, ४, १०।
[वि०] (हि.) नवीन, नवल।

नक्षत्र-मालिका= आं०, १०।
[सं०] (सं.) तारों की माला। तारों की पंक्ति (वि.) एक हार जिसमें सत्ताइस मोती होते हैं।

नक्षत्र-लोक= आं०, ६।
[सं०] (सं.) नक्षत्रों का लोक, चन्द्रलोक के ऊपर का एक संसार।

नक्षत्र मण्डल= का० कु०, ११२।
[सं०] (सं.) नक्षत्रों का समूह। तारामण्डल।

नक्षत्र-कुमुद आं०, ४८, ५८। का०, १६०। ल०, २५।
[सं०] (सं.) तारा रूपी कुमुदिनी।

नख = झ०, ६१।
[सं०] (सं.) नाखून, एक प्रसिद्ध गन्ध, द्रव्य, खंड, टुकड़ा। (गुड्डी) उड़ाने का डोरा।

नखत = आं०, २७। का० कु०, ४०, ४१।
[सं० पु०] (हि.) का०, ५०, ६१, १७०, १७६। चि०, २६। ल०, ३१।
नक्षत्र।

नखरेख = झ०, ८३।
[सं० स्त्री०] (हि.) नख की रेखा।

नग = का०, ५२, १०६, २३५, २४३, २८३, २६४। ल०, ५०।
[सं०] (सं.) पर्वत, पहाड़, वृक्ष, सात की संख्या। साँप सूर्य। (सं. पु) नगीना।
(वि.) (सं.) अचल, स्थिर।

नगण्य = का० कु०, ८३।
[वि०] (हि.) तुच्छ, नीच, जो गणना योग्य न हो।

नगर = का०, १८१, २०५, २८३। प्रे०, ७, १४। ल०, १७।
[सं०]

(सं.) मनुष्यों की वह बस्ती जो गाँव और कस्बे से बहुत बड़ी होती है। शहर

नगरि = का०, १६०। चि०, ५३।

[सं० पु०] (सं०) नगर के पास का स्थान, उपपुर। बहरी भाग।

नगरी = का०, १८५। चि०, ४५, ५०, ५१,

[सं०] प्रे०, ८।

(सं.) छोटानगर। कस्बा या टाउन। (सं.पु)

(हि.) नगर-निवासी, नागरिक, शहरी।

नगरेश = चि०, ६३।

[सं.] (सं.) नगर का स्वामी। जिला मजिस्ट्रेट। पुलिस का सबसे बड़ा अधिकारी। प्रशासक।

नगरोपकण्ठ = प्रे०, ७।

[सं०] (सं) नगर के आस-पास का बाहरी स्थान या प्रदेश।

नगीच = चि०, ६६।

[क्रि०] (हि.) नजदीक, निकट, कम दूर।

नगीची = निकट सम्बन्धी।

नगीना [वि०] (हि.) प्रे०, ११।

[वि०] (स०) पर्वत से उत्पन्न जड़ी-बूटी। रत्न। पार्वती।

नग्न = का०, १५१। झ०, ३५।

[सं०] (सं.) एक प्रकार के दिगम्बर जैन जिसे शास्त्र का ज्ञान न हो। जो बिना वानप्रस्थ के सन्यास ग्रहण कर लिया हो।

[वि०] (सं.) नंगा। आवरण रहित।

नचती = का०, ६, १६, १६३, २०६, २२३, २६४। चि०, १६७। ल०, ४६।

[क्रि०] (हि.) नाचती। नृत्य करती।

नटखट = का०, १७२।

[वि०] (हि.) जो कुछ न कुछ उपद्रव करता रहे। चंचल। चालाक। मक्कार। धूर्त।

नटराज = का०, २५२।

[सं०] (सं.) शंकर महादेव।

नटेश = का०, २५४।

[सं०] (सं.) महादेव शिव, शंकर।

नत = का० २७, ७५ २५०।

[वि०] (सं.) झुका हुआ। विनीत। प्रणाम करता हुआ।

नतसिर = ल०, ६०।

[सं०] (सं.) झुका हुआ शिर, बिनीत भाव।

नति = का०, २३५।

[सं०] (सं.) उतार झुकाव, नमस्कार, विनती, नम्रता। ज्योतिष की एक गणना।

नतु = चि०, २६, ५३।

[क्रि०] (हि.) अन्यथा, नहीं तो।

नद = आं० ४१। का०, ७, १२२, २५८।

[स०] (सं.) बड़ी नदी, एक ऋषि का आश्रम।

नदियों = का० कु०, २। का०, १५६। प्रे० प० २४।

नदी का बहुवचन।

नदी = आं० ७१। क०, ८। का०, ८१,

[स०] १७५, २५६,। चि० ११, १५६ झ०,

(सं.) ५५, ६६।

जल के उस प्राकृतिक धारा को कहते हैं जो किसी झील या पहाड़ से निकल कर एक निश्चित मार्ग से होती हुई समुद्र या किसी नदी में मिल जाती है, दरिया।

नन्हा-सा = झ० २३।

[वि०] (हि.) बहुत छोटा सा, सुकोमल, अबोध।

नवाब = म० १७।

[सं०] शहंशाह, एक पद जो अत्यन्त मान्य

(अ०) और शिष्ट मुस्लिम पदवी है।

नभ = आ० ६, ५, ६६। क०, ७, १३।

[सं० पु०] का०, २७, ३२, ४८, १२०, १२७,

(सं.) १५७, १५८, १५६, ८, १७१, १७६, १७८, १७६, १८०, २०५, २१६, २२१, २३४, २६५, २८५, चि०, २३, १४०, १५६, १६१ झ०, ४१, ४८। ल०, ३३।

आकाश, शून्य, स्रावण और भाद्र

पद महीने, राजा नल के एक लड़के का नाम, शिव, जल, अभ्रक, जन्म कुण्डली का दसम् स्थान, वर्षा, बादल।

[वि०] (सं.) हिन्सक।

नभ-कुसुमों = ल०, ३८, ३६, ४०, ४४।

[सं०] (हि.) आकाश के तारे। आकाशपुष्पों।

नभ-गामी = चि०, १६१।

[सं०] (सं.) देवता, सूर्य, चन्द्र, वायु, पक्षी, तारा।

नभलोजाहिं = चि०, ६६।

[क्रि०] (ब्र. भा.) नभ तक जाता है।

नभ-सागर = का०, १६७।

[सं०] (हि.) आकाश रूपी समुद्र।

नभ-हृदय = झ०, ४६।

[सं०] (हि.) शून्य हृदय।

नमस्कार = का० कु०, ४, ६२, ६४।

[सं०] (सं.) झुककर प्रणाम करना, एक प्रकार का विष।

नमामि = चि०, १५३।

[क्रि०] (सं.) प्रणाम करता हूँ।

नमूने = का० कु०, ६।

[सं०] (हि.) बानगी, ऐसी वस्तु जिससे दूसरी वस्तु का ज्ञान हो जाये, ढाँचा, खाका, आदर्श।

नयन = आ०, ३२। का०, ११, पृष्ठ से नवद्वार २४७। चि०, ६६ ,७२, ७३,। ल०, १४, २४, ३०।

[सं० पु०] (सं.) चक्षु, नेत्र, आँख। (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली।

नयनों = आ०, ७१। का०, ६८, १०१, १५२, प्रे०, १७, १८। ल,० ४०, ४४।

दे० 'नयन' (बहुवचन)

नया = का० कु०, १२५। का०, ३४, १५०, १८४, २१५। प्रे०, १।

[वि०] (हि.) नूतन, नवीन, ताजा।

नयी = का० कु० २१। ल० २१, २२।

[वि.] (हि.) दे 'नई'

नये = आ० ५१, का० ३३, १६४, १८१, २७५, झ० ५१, प्रे० १३।

[वि०] (हि.) दे 'नई'।

नये सिर से = का० २३

[मुहा] (हि.) = किसी कार्य को पुनः आरम्भ करना।

नर = का० ७७, १६४, १७०, १७१, १८२।

[सं०] चि० ५०, ६६, ७२, १४०, १४२। झ० ४१। म० १४।

विष्णु, शिव, अर्जुन, एक ऋषी का नाम जो ईश्वर का अवतार माने जाते हैं, पुरुष। गय राक्षस का एक पुत्र, सुधृति के पुत्र का नाम।

नरक = प्रे० २१।

[सं० पु०] (सं.) धर्म और पुराणों के अनुसार पापी मनुष्यों को दण्ड देने का स्थान। गंदी जगह। नरकासुर।

नरगन = चि० ६४।

[सं०] (हि.) मानव समुदाय।

नरन = चि० १४१।

[सं० पु०] (ब्र. भा.) मनुष्यों।

नर नाह = चि० ६४।

[सं०] (हि.) राजा, मनुष्यों का स्वामी, नृप।

नर-नारी = प्रे० १३। म० १७। चि० ६५।

[सं०] (हि.) पुरुष स्त्री। मानव मात्र। मनुष्य और स्त्री।

नरपति = चि० ६८।

[सं०] (सं.) राजा, नृपति, भूपति, नरेश।

नरपतिगण = म० २०।

[सं०] (सं.) राजाओं का समूह। सभी नरेश।

नर पशु = का० १८४।

[सं०] (हि.) दुष्ट, नीच, मानव होकर भी पशु सदृश (सं.) कार्य करना।

नर-पिशाच = प्रे० २१।

[सं० पु०] (सं०) मनुष्य होकर भी राक्षसों का कार्य करने वाला अत्यन्त दुष्ट मनुष्य। नर-राक्षस।

नरमेध = क० १८।

[सं०] (सं) एक प्रकार का यज्ञ जिसमें मनुष्यों के मांस की आहुति दी जाती थी। यह यज्ञ चैत्र सुदी दशमी से शुरू होकर चालिस दिन में समाप्त होता था।

नराधम = क०, २६।
[सं०] (सं.) नीच व्यक्ति, अधम जीव।

नराच = चि०, ५३, ६७।
[सं०] (हि.) तीर, बाण, शर, एक वर्ण वृत्त जिसे पंचचामर और नगराज भी कहते हैं।

नरी = ल० ६।
[सं०] (फा.) बकरी या बकरे का रेंगा हुआ चमड़ा। सिझाया हुआ चमड़ा। सूत लपेटी जाने वाली नली। नए। ताल (सं० स्त्री० हि०) नदी के किनारे होनेवाली घास। नाली (सं०) नारी। स्त्री।

नरेन्द्र = क० २१। चि०, ५०।
[सं० पु०] (सं.) राजा, नरेश वैद्य, हकीम। एक छन्द का नाम जिसे सार या ललित पद कहते हैं।

नरेश = का० कु०, ११३, चि०, ६३।
[सं० पु०] (हि.) राजा, महाराजा, नरों में जो ईश सदृश्य हो।

नर्तन = का० १, ११, ७२, १२३, २५४, २६४। ल० २१, २२, ४६।
[सं०] (सं.) नृत्य, नाच।

नर्तित = का० २५४। ल० ६।
[वि०] (स०) नृत्य या नाच करता हुआ। नाचता हुआ।

नलनीगन = चि०, १४६।
[सं०] (ब्र. भा) कमलिनियों का समूह।

नलिन = आं० ३६, ५५, का० १६८। चि० २६, १५७। ल० ४०।
[सं० पु०] (सं.) कमल। जल। सारस। नीली कुमुदिनी।

नलिनी = का० कु० ३६, ४०, ६५। चि० २६, ३३, ६३, १६१।
(सं.) कमलिनी। कमल वाले प्रदेश। गंगा की एक धारा का नाम। नदी। नारियल की शराब।

नव = क० १३, १६। का० ८, २३, २७, ३२, ३५, ३७. ३६, ४७, ५०, १०६, १३०, १४०, १४२, १४८, १५६, १६८, १७६, १८३, २०६, २१३, २३०, २६३, २६४, २८४, २६०। चि०, १, २, १५, २१, २८, ३६, ४६, १०५, १४७, १४६, १५०, १५६। झ० २४, ३३, ३४। प्रे० १०, १२। ल० ६, २८।
[वि०] (सं०) नवीन। आधुनिक (सं० पु०) (सं.) स्तोत्र। उसी नर राजा के लड़के का नाम।

नव एकान्त = का० कु०, २३, ३०, ४०, ४९। का० २४। ल० २८, ३०, ३३, ४३।
[सं०] (सं.) नवीन ढंग का अकेलापन।

नव कल्पना = का० १५६।
[सं० स्त्री०] (सं.) विचार एवं बुद्धि द्वारा नई भावनामयी कल्पना।

नवचन्द्र = चि०, ७५।
[सं० पु०] (सं.) नया चंद। शुक्ल पक्ष के द्वितीया का चांद।

नव जलद = का० ८१।
[सं०] (सं.) नया बादल। वर्षा ऋतु का प्रथम बरसने वाला मेघ।

नव-जलधर = ल० २७।
[सं०] (सं) नवीन समुद्र। नवीन बादल।

नवजीवन = प्रे० १०, ११।
[सं०] (सं.) नई जिन्दगी। नया जल।

नव ज्योति = आं० ६७।
[सं० स्त्री०] (सं.) नया प्रकाश। प्रातःकाल की प्रथम किरण।

नवत = चि० १६३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) झुकत, झुकता है।

नव तमाल = चि०, ४५।

[सं०] (सं.) तमाल का नया वृक्ष ।

नव-नव = का० १६१ ।

[वि०] (सं) नया, नया ।

नवनिधि = का०, १६६ ।

[सं० स्त्री०] (सं.) नव प्रकार की कुबेर की निधि, सम्पति ।

नव-नीर = चि०, १५७ ।

[सं० पु०] (सं.) नया जल ।

नव-नील = का० कु०, ३८ । का०, ६५ ।

[वि०] (सं.) अनुपम नीलिमा ।

नवनीत रचित = चि०, १६१ । प्रे०, २० ।

[क्रि०] (ब्र. भा. नवनीत सदृश रचित ।

नवमण्डप = का०, १८३ ।

[सं० पु०] (सं. नया मंडप ।

नवमधुमय = का०, १५२ ।

[वि०] (सं.) नवीन मादकता से पूर्ण ।

नव-मल्लिका = चि०, ५५ ।

[सं० स्त्री०] (सं.) नवीन मोतिया ।

नवमोद = चि०, १६५ ।

[सं०] (हि.) नवीन आनंद ।

नवरंग = चि०, १७५ ।

[सं०] (हि.) नवीन-रंग ।

नववसंत विलास = का० कु०, १६ ।

[वि०] (हि.) नये वसंत का विलास । नवीन मधु ऋतु का आनन्द ।

नव-हास = च०, ५६ ।

[सं० पु०] (सं.) नई मुस्कराहट ।

नवल = का०, २८ । का० कु०, २३, ६६, ६६, १०४, का०, ४८, ६३, १४२, १६८ १५६ चि०, ३२ , १०१, १३७, १४६, १५७, १६१, १६५, १७१, झ०, ४०, ४१, ७६ । प्रे०, ५०, ४७ । ल०, १६ ।

[वि०] (सं.) नवीन । नया ।

नवल-ज्योति = का० कु०, १२६ ।

[सं० पु०] सं.) नवीन ज्योति, नया प्रकाश ।

नवल-प्रभात = का०, ५३, ८१ ।

[स० पु०] (सं.) नया प्रातःकाल ।

नव विचार = का०, १६१ ।

[सं० पु०] (हि.) नई समझ । किसी बात को नये ढंग से सोचना । नये विचार ।

नवविद्या = चि०, ७४ ।

[वि०] (सं) नौ प्रकार का ज्ञान । सब तरह की विद्या ।

नवाते = का० कु०, ५ ।

[क्रि०] (हि.) झुकाने । विनम्र होते ।

नवाब = म०, १४ ।

[सं० पु०] (अ०) मुसलमानी बादशाहत में एक प्रदेश का शासक । मुसलमान रईस की उपाधि । शान शौकत से रहने वाला ।

नवाब-पत्नी = म०, १० ।

नवाब की बेगम ।

नवीने = चि०, १५३ ।

[सं०,] (हि.) नवीन का संबोधन ।

नवीन = का० कु०, १५, ४२, ५५, ७३, १०१, ११४, का०, ३३, ८१. ६४, १३६, १४०, १६२, २६१ ।

[वि०] (सं०) चि०, १०, १४८, १५१ । झ०, १६ । म०, १६ । ल०, ४८ ।

नया, ताजा, अपूर्व, विचित्र, तरुण जो पहले पहल मूल रुप में अभी तैयार बना हो । नूतन, नवल ।

नवीना = का०, १२३ ।

[वि०] (सं.) युवती, सुन्दरी । तरुणी ।

नशीली = झ०, ४८ ।

[वि०] (फा.) मादक । जिससे नशा होता है ।

नश्वर = का०, १६५ । झ०, २०, ३० । ल०, ७६ ।

[वि०] (सं.) जो शीघ्र नष्ट हो जाय । नष्ट हो जाने वाला ।

नश्वरता = ल०, १२, ४६ ।

[सं० स्त्री०] (सं) नष्ट होने का भाव ।

नष्ट = कु०, १०६ । का० १६४, १६२ ।

[वि०] चि० ३५ ।

(सं.) जिसका नाश हो गया हो। बरबाद। निस्फल। व्यर्थ।

नस-नस = का० १०१, २३५। ल० ३०।

[मु०] (हि.) सारा शरीर।

न-सीतल = चि०, १८१।

[वि०] तप्त। जो शीतल न हो। अशीतल।

(ब्र. भा) गर्म।

नसात = चि०, १७८।

[क्रि०] (ब्र. भा.) नष्ट होता है।

नसे में चूर = चि०, २।

[मु] इतना अधिक नशे का सेवन कि व्यक्ति

(हि) मर्यादा ध्यान से रहित हो जाय।

नसैहौं = चि०, १५५।

क्रि०] (ब्र.भा.) नष्ट होऊँगा।

नहला = आं०, ७०। ल०, ३८।

[पूर्व०क्रि०] (हि.) भिगोकर, स्नान करके।

नहलाना = प्रे०, २०।

[क्रि० स] हि.) किसी दूसरे को स्नान करना।

नहाकर = का०, २६१।

[पूर्व० क्रि०] (हि.) स्नान करके।

नहिं = का० कु० ६। १४। चि० ८, ६, १५

[क्रि०वि०] २६, ३४, ३६, ४७, ४६, ५३, ५४,

(हि.) ६४, ६५, ६७, ६८, ७२, ७४, ६२, १०५, १४१, १४२, १७४, १८६, १८७, १९०।

नकारात्मकता का सूचक।

नहीं = आं, ३७, ४०। का० ६, ११, १४,

[क्रि० वि०] १८, २२, २४, २५, २७, २९ ३१।

(हि.) का० कु०, ५, ६, ७, १०, १२, १४, ३५, ४, ४५, ५७, ६४, ६५, ७४। का० ५२, ५४, ५५, ५७, ११८, ११९, १२६, १३०, १३१, १३३, १४३, १४५, १४६, १४७, १६२, १७५, १७६, १७७, १८५, १८६, १८६, ११३, १६४, १६५, २०६, २०८, २०६, २१०, २२०, २२८, २३०, २३४, २३८, २४०, २४१, २४३, २४८, २४६, २६१, २६६, २६७, २७८, २८८, २६६। चि०, ३१, ३५, ४८, ६५, १८३, १८४। प्रे०, ६, १३, १५, १६, १०, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २६। म०, २, ७, ८, ६, ११, १२। ल०, १०, ११, १६, ३६, ४५, ४७, ७९। दे० 'नहिं'।

नाक चढ़ावत = चि० ५६।

[मुहा०] (हि.) क्रोध करना। अप्रसन्न होना।

नाको = चि० ६५।

[सं०] (ब्र. भा.) नासिका भी।

नाग = चि० ५१।

[सं०] (हि.) पर्वत, सर्प, सांप, भुजंग।

नाग-कुल = चि० ५०।

[सं०पु०] (हि.)= भुजंग वश।

नाचना = आं० ५, ४६ का० कु० ८६, ६३,

[क्रि०अ०] का० १६३ भ० ३५, ल० ५१, ६७।

(हि.) = ताल एवं हाव-भाव के साथ थिरकना। नृत्य करना। चक्कर लगाना। मंडराना।

नाचै = चि० ४५।

[क्रि०] (ब्र भा.)= नृत्य कर रही है।

नाच्यो = चि० ५७।

[क्रि०](ब्र.भा.) = नाच चुका। दे० 'नाचना'।

नाता = का०, १२६, २३६।

[सं०] (हि.) सम्बन्ध। रिस्ता। लगाव।

नाते = का०, १२६। चि०, ६१।

[सं०] (हि.) 'नाता' का बहुवचन।

नाथ = का० कु०, ८, ४६, ६७। चि०, ७४,

(सं.) ६१, १५५, १७८, १८२, १८७। भ०, ३७, ७६। प्रे०, २१।

[सं० पु०] प्रभु, स्वामी, मालिक, पति।

नाद = का०, ८, १६७, २५३, २६६। चि०,

(सं.) ६६, १५४,। भ०, ३५, ५६। म०, ७।

[सं०] शब्द, आवाज, बोली, वाणी, संगीत।

काव्य के मूल रूप अनुस्वार के अनुसार उच्चरित होने वाला वर्ण।

नाना = चि०, १।
[वि०] (हि.) अनेक।

नाप = का०, १८५।
[सं० स्त्री०] (हि.) माप, परिमाण।

नाभि-सौरभ = का० कु०, ७३।
[सं० पु०] हि.) नाभि की सुगंधि।

नाम = क०, १३, २८। का० कु०, १३, ३५, १०६। का०, ६, ६२, १६२, १६६, २७५, २७८। चि०, ४८, ४६, ५१, ५६, ५७, १५५। प्रे , २१। म०, ६। ल०, ७८।
[सं०] (सं.)
किसी वस्तु या व्यक्ति आदि के उच्चारण का शब्द।

नाम-निरूपण = का० कु०, ८६।
[क्रि०] (स.) नाम रखना। नाम ज्ञात करना।

नाम-मणिदीपक = का० कु०, ८६।
[सं०] (हि.) नाम का मणि रूपी दीप।

नायक = म०, ५, १२।
[सं० पु०] (सं.) नेता, अगुआ, स्वामी, श्रेष्ठ पुरुष जो नाटक आदि का प्रधान पात्र होता है। माला के बीच का नग। कलावन्त। एक राग।

नारकी = चि०. १०३।
[वि०] (ब्र. भा.) नरक में जाने योग्य। पापी। नरक भोगी।

नाराच = का०, २००, २०२। चि०, ६६।
[सं०] (सं.) दे० नराच।

नारि = क०, २६। चि०, ४६, ५०।
[सं० स्त्री०] (हि.) स्त्री। नारी।

नारी = आं०, ६८। का० कु०, ६७। का०, ६३, ६४, १०४, १०६, १२५, १६२, १८५, २०७, २३८। चि०, ६१, १०३। ल०, ७६।
दे० 'नारि'।

नारी-जीवन = का०, १०५।
[सं०] (सं.) स्त्रियों की जिन्दगी।

नारी-सा = का०, २४६।
[वि०] (सं०) स्त्री के समान।

नाल = का० कु०, ३८, १२१। चि०, २६।
[सं० स्त्री०] (सं.) कमल का डंठल। पौधे का डंठल। नली। बन्दूक की नली सोनारों की फुकनी। तलवार के म्यान की खोली।

नालों = का०, १७५।
[सं० स्त्री०] (सं.) दे० 'नाल' (बहुवचन)।

नाव = आं०, २२। क०, ८, ६, १०, ११। का० कु०, ८। का०, १५, ६२, १६५। चि०, १६८, १८७। झ०, ५५, ६०। ल०, ५६।
[सं० स्त्री०] (हि.)
जल में चलने वाली लकड़ी लोहे आदि की बनी हुई सवारी। जलयान। नौका। किश्ती।

नाविक = आं०, ४०, ४१। चि०, १६१। झ०, १६। ल०, १४, ४३।
[सं०] (सं.) मल्लाह, केवट। जहाज चलाने या जहाज पर काम करने वाला व्यक्ति।

नाश = का० कु०, १०६। का०, १८, ७३, १३२, १४८। ल०, १३।
[सं०] (स.) अस्तित्व रहित। ध्वंस। बरबादी। गायब होना। पलायन। अदृश।

नाशक = का० कु०, ८८।
[वि०] (सं.) नाश करने वाला। हटाने वाला। मारने वाला। दूर करने वाला।

नाश-मयी = का०, १७०।
[वि०] (सं.) नाश से युक्त। नष्ट होने वाली।

नाशिका = का०, १६६।
[वि०, सं.] (सं) 'नाशक' का स्त्रीलिंग नाम।

नसना = चि०, १०६, १३२।

[क्रि०] (ब्र.भा.) नष्ट होना। बरबाद होना। बधवाना।

नासा = भ०, २२।
[सं०] नासिका, नाक, सूँड, नाक का छेद।
(सं.) चौकठ के ऊपर का भाग।

नासिका = का०, ६४।
[स० स्त्री] (सं.) नाक (वि. स.) श्रेष्ठ, प्रधान।

नास्ति = का०, २७०।
[वि०] (हि.) ईश्वर के प्रति अविश्वास की भावना।

नाहक = चि०, १७६।
[क्रि० वि०] (फा.) वृथा। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। बेमतलब

नाहर = चि०, २६। भ० ८३।
[सं०पु०] (हि.) सिंह। शेर। टेसूँ का फूल।

नाहि = चि०, १५, ३२, ४०, ५०, ६७, १४५,
[अ०] १६६, १७६।
(ब्र. भा.) नहीं।

नाहीं = का० कु०, ६१, चि०, ६७, १४५,
१४७, १७६, १८०, १६०।
दे० 'नहिं'।

निकट = का० १५, २८५। चि० १७५ ल०,
[वि०] १७।
(सं.) पास का। समीप का। जिसमें विशेष अन्तर न हो। (क्रि. वि.) (सं.) समीप, नजदीक।

निकर = का०, कु०, ८। चि० १४६। भ० ३८
[सं०पु०] (सं०) समूह, झुण्ड, राशि, ढेर, निधि कोश।

निकरिहैं = चि०, १७२।
[क्रि०] (ब्र.भा.) निकालेंगे।

निकल = का० कु०, ३७, ४६। का० ६२
[पूर्व० क्रि०] २६०, प्रे०, २१।
(हि.) विलग होना।

निकल-निकल = प्रे०, २१, म०, ७।
[पू० क्रि०] (हि.) दे० निकल।

निकलना = का० कु०, १०। का०, ४, १६, २६,
१०१, १४५, १५७, १८२, १७६,
१६६, २०६, २२५। प्रे० १८, २२।
म०, ४। ल०, ५१।

निकष = ल०, ५७।
[सं० पु०](सं.) कसौटी का पत्थर। तलवार की म्यान।

निकाम = चि०, १६०।
[वि०] (ब्र.भा) बेकार।

निकाय = चि०, २६।
[सं० पु०] समूह, किसी विशेष आपके लिये व्य-
(सं.) क्तियों का समूह या झुण्ड।

निकास = का०, १०६।
[सं० प०] निकालने की क्रिया का भाव। निकालने
(हि.) का स्थान। वंश का मूल। निर्वाह
[सं. स्त्री.] का ढंग। आमदनी। चुंगी। बिक्री।

निकाला = का०, १६६।
[क्रि] (हि.) चलाना। आविष्कार करना।

निकुंज = का०, ८८, १७७, १७८।
[सं०पु०] लता-मंडप। घनी लतिकाओं से छाया
(सं.) हुआ स्थान।

निकुंजन = चि०, १।
[सं०पु०](ब्र.भा.) लता मंडपों में।

निकेत = चि०, १७१। भ०, ३३।
[सं०पु०] (सं.) घर। स्थान। आगार। भन्डार।

निखर = आं०,७४। का०,१५१, २७३। ल०,३०।
[क्रि०अ०](हि.) स्वच्छ होकर।

निखरना = का०, ६७, १००, १०१, १८१। भ०,
[क्रि० अ०] ७१, २३।
(हि.) स्वच्छ होना। रंग का खुलना या साफ होना।

निखिल = का०, १५६।
[वि०] (सं.) सम्पूर्ण, सब, समस्त।

निगम = चि०, १५५।
[सं० पु०] वेद। मार्ग, बाजार, मेला। निश्चिन्त,
(सं.) बेफिक्र।

निगूढ़ = का०, ६। भ०, ३८।
[वि०] (सं.) अत्यन्त गुप्त।

निच = चि०, १७६।
[वि०] (सं.) तुच्छ, अधम, निकृष्ट, बुरा।

निचय = का०, २४४।

[सं० पु०] (सं) ढेर, समूह, समुदाय। संचय, किसी कार्य विशेष के लिए इकट्ठा किया जानेवाला।

निचले = का० २४३।

[वि०] (हि.) नीचे के, नीचे वाले।

निचोड़ = आं०, ७६।

[सं० पु०] (हि.) निचोड़ने की क्रिया या भाव। निचोड़ने पर निकलने वाला अंश। सार। कथन। कथन का सारांश।

निछावर = का०, १३०। भ०, ५६।

[सं० स्त्री०] (हि.) उतारा। उत्सर्ग। नेग। किसी वस्तु के ऊपर घुमा कर दान दी हुई वस्तु।

निज = आं०, १४, ३८। क०, १५, २२, २८, ३६। का० कु०, ५६, ६१। का०, १६, ३०, ३३ ७३, ७६, ८३, ८४, ८५, १३५, १४०, १७०, १८१, १८३, १६३, १६५, १६७, १६६, २१०, २१३, २५१, २५४, २६८, २७१, २८६, २९२, २६४। चि०, ६, ६, १५. १६, २३, २४, २५, २६, ३१, ३२, ३५, ३६, ३८, ४१, ४३, ४५, ४६, ४७, ४८, ४६, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६१, ६२, १५२, १६१, १६३, १६५, १७३, १७८, १८५। भ०, २१, ३५, ३८। प्रे०, २, ६, १४, १७, २२, ३३, ३४, ४५। म०, १, ५ ६, १४, २०। ल०, १०, ११, २६, ४३, ५३।

अपना, खास, प्रधान, वास्तविक (अ०) निश्चय, ठीक ठीक, सही। खास कर। विशेष कर।

निजकर = चि०, १६१।

[सं०पु०] (सं.) अपना हाथ।

निज खबर = चि, ५७।

[सं० स्त्री] (हिं.) अपना समाचार। अपना ख्याल।

निज चौकड़ी = का० कु०, ७३।

[सं० स्त्री०] (हिं.) अपनी चौकड़ी, अपना छक्का पंजा, अपनी चालाकी।

निज दोष = का० कु०, १०२।

[सं०पु०] (सं.) अपना दोष या दुर्गुण, अपनी भूल।

निज नव = चि०, ६३।

[सं०] (सं.) अपना नयापन।

निज नामते = चि०, ६६।

[सं०पु०] (ब्र.भा) अपने नाम से।

निज-निज = चि०, १८६।

[वि०] (सं.) अपना-अपना।

निज-पशुगन = चि०, ७३।

[सं०पु०] (ब्र.भा.) अपने पशुओं का समूह।

निज-प्रियतम = का० कु, ६६।

[सं०पु०] (सं.) अपना प्रिय, अपना परम प्रिय।

निज-मुखवर = चि० ७१।

[सं०पु०] (स.) अपन प्रिय मुख या श्रेष्ठ मुख।

निज सीम = का० कु०, ७५।

[सं०स्त्री०] (ब्र.भा.) अपनी सीमा, अपना हद।

निजसुत = चि०, ५८।

[सं० पु०] (सं.) अपना पुत्र।

निजसुतहि = चि०, ७४।

[स० प०] (ब्र.भा.) अपने पुत्र को।

निजस्व = का० कु०, ८१। का०, २७१।

[सं० पु०] (सं.) अपनापन, निजता। मौलिकता।

निजहिं = चि०, ७०।

[वि०] (ब्र. भा.) अपने को, स्वयं को।

निजु = चि०, १४३।

[वि०] (ब्र. भा.) दे० 'निज'।

निजै = चि०, २६८।

[वि०] (ब्र. भा.) अपना हीं, स्वयं का ही। निजी।

निठुर = चि०, १५७, १८८।

[वि०] (हि.) कठोर, हृदय, क्रूर, निर्दय।

निठुरता = चि०, १८४।

[सं० स्त्री०] (हि.) निर्दयता, क्रूरता, हृदय की कठोरता

निठुर-नर = चि०, ६१।

[सं० पु०] (हि.) क्रूर मानव, निर्दय व्यक्ति, कठोर हृदय वाला मनुष्य।

नित [अव्य०] (सं.) = नि०, ६६, ७३, १०० १०६, १४८, १५३, १७८, १८४, १६०। प्रति दिन, हर रोज, सदा।

नितहिं [अ०] (ब्र. भा.) = चि०, १२। प्रति दिन, हर रोज, सदा।

नितहि [अ०] (ब्र. भा.) = चि०, १८८। दे० 'नितहिं'।

नितांत [वि०] (सं) = का०, १४४, १५८, १६०, २४०, २४२। प्रे०, १४। बिलकुल, एकदम, परम, बहुत अधिक।

नित्य [वि०] (सं.) = का० कु०, ११। का०, १०, १६, २३, ४७, ४६, ५१, ५४, ५८, ७४, ८१, १२३, २१६, २३६, २४२, २५०, २६२। चि०, ६६, ६४, १०९, १५३, १८६। भ्रे०, ५८। प्रे०, ८, १०, १४, २३। ल०, २३, ६०, ७०।

[अ०] (सं.) अनश्वर, शाश्वत, अविनाशी। दे० 'नित'।

नित्य-नूतनता = का० कु०, । १। का०, ५५। [सं० स्त्री०] (सं.) सदैव नवीनता।

नित्यकृत्य = का० कु०, १००। [वि०] (सं.) सदा किया जानेवाला नित्य का कार्य।

नित्य-नवल-सम्बन्ध-सूत्र = का० कु०, ६४। [सं०] (सं.) सर्वदा नवीन सम्बन्ध स्थापित करने वाला साधन, वह उपाय जिससे सम्बन्ध नवीन बना रहे। शाश्वत संबंध।

नित्य-परिचित = का० कु०, १००। [वि०] (सं.) सर्वदा से परिचित, चिर-परिचित।

नित यौवन शक्ति = का० कु०, ६०। [वि०] (सं.) सर्वदा यौवन पूरित। पूर्ण युवा।

नित्यता = का०, १६५। [सं०] (सं.) नित्य होने का भाव, अनश्वरता।

निदाघ = का०, २७०। [सं०] (सं.) गर्मी, ताप, घाम।

निदान = का०, २६। ल०, १२। [सं०] (सं.) चिकित्सक द्वारा रोग के निर्णय करने की मीमांसा। रोग निर्णय, रोग पहचान, रोग लक्षण। पवित्रता। बछड़ा बाँधने की रस्सी, बागडोर।

[अव्य०] (सं.) अन्त में। आखिर।

निद्रा = आं०, ५४। का०, २६, १४८, २२६। [सं० स्त्री०] (सं.) भ्रे०, २६, ८८। प्रे०, ५, १८। म०, १८। प्राणियों की वह अवस्था जिसमें चेतन वृत्तियाँ बीच-बीच में कुछ समय के लिए निश्चेष्ट रहती हैं और उन्हें शारीरिक तथा मानसिक विश्राम मिलता है। तन्द्रा।

निद्रित = चि०, ४६। [वि०] (सं.) सोया हुआ।

निधरक = ल०, ४२। [क्रि० वि०] (ब्र. भा.) निः सङ्कोच, बेधड़क।

निधान = का०, २६। [सं०] (सं.) आगार, निधि या कोश, वह जिसमें गुण की परिपूर्णता हो।

निधि [सं० स्त्री०] (सं.) = आं०, ६८। का० कु०, ६६। का०, ३७, ५७, ६६, २४२, २८६। चि०, १४६, १५३, १५७, १७०, १८५। म० ७। गड़ा हुआ खजाना, कुबेर के नौ प्रकार के खजाने, नौ संख्या का सूचक शब्द, कोण, समुद्र, घर, विष्णु, एक औषधि विशेष, एक गंधद्रव्य विशेष।

निनाद [सं० पु०] (सं) = का० कु०, २। का०, २७३। चि०, ११, १६०। शब्द, आवाज, ध्वनि, जोरका और प्रिय शब्द। मनरंजन समवेत मधुर स्वर।

निनादिनी = चि०, १६७।

[वि०] (सं.) शब्द करने वाली, ध्वनि करने वाली।

निपात = का० कु०, ११२। का०, १४।
[सं० पु०] (सं.) पूर्ण पतन, अधःपतन, विनाश, क्षय, व्याकरण के नियमों से न बनने वाला और न सिद्ध होने वाला शब्द।

निबटना = का० कु०, १२४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) छुटकारा पाना, निर्वाह होना, निभना। व्यवहार तथा आचरण का बना रहना।

निबल = का०, २५।
[वि०] (हि.) कमजोर, बल से रहित।

निबही = चि०, १८।
[क्रि०] (ब्र.भा.) 'निबहना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

निबाहे = का०, १६२।
[क्रि०] (हि.) 'निबाहना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप। निर्वाह करे।

निबाह्यौं = चि०, १८४।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) दे० 'निबाहे'।

निभृत = का०, ८७, १३६। भ्रू०, ३०।
[वि०] (सं.) एकान्त, गुप्त, शान्त, दृढ़ संकल्प, निर्जन।

निमित्त = का० कु०, ११६।
[सं० पु०] (सं.) हेतु, कारण, वह जो नाम मात्र के लिए आधा हो, वास्तविक कर्ता न हो, शकुन, उद्देश्य।

निमीलन = का०, २३। भ्रू०, २५।
[सं० पु०] (सं.) पलक मारना या झपकी, निमेष, मूँदने का भाव।

निम्न = का०, २५८।
[वि०] (सं०) नीचा।

नियत = का०, १६३। ल०, १५।
[वि०] (सं.) निश्चित, ठीक। विधान, आज्ञा, नियो-
[सं० पु०] (सं.) जन। विष्णु, शिव। उद्देश्य, आशय,
[सं० स्त्री०] अ.) मंशा, दियानत।

नियंता = क० २५।
[सं० पु०] (सं.) नियम बनाने वाला, शासन के नियम के अनुसार चलने वाला।

नियति = आं०, ५१, ६०। का० कु०, ११६।
[सं०स्त्री०] का० १६, ३४, ८१, ८३, १६५, २१०,
(सं.) २६०, २६७। चि०, १४२, ल०, ६७।
बंधेज, होनी, भाग्य, स्थिरता, जड़ प्रकृति (जैन)।

नियति-चक्र = का०, १६३।
[सं०पु०] (सं०) भाग्य चक्र, भाग्य की हीन दशा, दैव।

नियति-जाल = का०, १७०।
[सं० पु०] (सं.) भाग्य का जाल, भाग्य बंधन, दुर्भाग्य में फंसना।

नियति-नटी = का०, १५८। ल०, ५७।
[सं० स्त्री०] (सं.) भाग्य रूपी नटी या नाना प्रकार का खेल करने वाली, भाग्य दशा के खराब होने पर स्थिर चित्तका न होना। माया।

नियन्ता = क० २५।
[सं० पु०] (सं.) नियन्त्रण या व्यवस्था करने वाला, कार्य चलाने वाला, नियम के अनुसार चलने वाला।

नियति-प्रेरणा = का०, २६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) भाग्य या दैव की प्रेरणा या इच्छा, दैव के द्वारा प्राप्त प्रोत्साहन।

नियम = का०, १६१, १८६, १६१, १६२, १६६, २३६, २६५, २६६, २६३। भ्रू०, ३८।
[सं० पु०] (हि.) धार्मिक सिद्धान्त या प्रतिबन्ध, वे निश्चित बातें जिनके अनुसार कोई संस्था चलती है, परम्परा, दस्तूर, योगशास्त्र में ईश्वराधन के लिए आठ अंशों में से एक। विष्णु, शिव।

नियमन = का०, १७१, १८५, १८६, २०९।
[सं० पु०] (सं.) नियम बद्ध करने वाला कार्य, किसी विषय या कार्य को नियमों में बाँधने की क्रिया या भाव, शासन, नियंत्रण।

नियम-परतंत्र = का०, १६०।

[सं० पु०] (सं.) नियमों में बंधकर स्वतन्त्रता छीन जाने का भाव।

नियमित = का०, ३३।
[वि०] (सं.) नियमों में बँधा हुआ, नियमबद्ध, कानून के अनुसार बना हुआ। ठीक समय पर होने वाला।

नियामक = का०, १६१, १६२।
[सं०] (सं.) नियम बनाने वाला, व्यवस्थापक। मारने वाला, माँझी।

नियोजित = चि०, १६५।
[वि०] (सं.) नियुक्त किया हुआ, लगाया हुआ, तैनात, मुकर्रर। निश्चित।

निरंकुश = का०, २७०।
[वि०] (सं.) जिसके लिए कोई अंकुश या रुकावट न हो, या जो कोई बंधन या नियम न माने। बंधन-रहित। विशृंखल।

निरंतर = का०, ३१, १६४, १६५, १६६।
[वि०] (सं.) बिना अन्तर का, लगातार होने वाला, अविचल। स्थायी।
[क्रि०वि०] (सं.) सदा, हमेशा, लगातार, बराबर।

निरंतरता = का०, १६७।
[सं०स्त्री०] (सं.) अन्तर या भेदपन का न होना, अविचलत्व, स्थायित्व।

निरखत = चि०, ३८, १४९।
[क्रि०] (ब्र.भा.) देखता, देख रहा।

निरखता = आ०, ३२, का० कु०, ४३। का०, ७, ११०। प्रे० ७, १८ ल०, ७६।
[क्रि०] (हिं.) 'निरखना' क्रिया का सामान्य वर्तमान रूप।

निरखना = आ०, १८, का० कु०, २, ३६,१००।
[क्रि०] (हिं.) का०, ४५, ६१, ११६। भ०, ६८। प्रे० ५, १७। ल० ३१। देखना, ताकना, अवलोकन करना।

निरखि = चि०, ६, १४।
[क्रि०] (हि.) 'निरखना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप, निरखकर, देखकर।

निरत = का०, ३३, १६१, २५४, २८५, २९०।
[वि०] (सं.) किसी काम में लगा हुआ, लीन,
[सं०पु०] (ब्र.भा.) नृत्य।

निरतन = चि०, १।
[क्रि०] (ब्र.भा.) 'निरतना' क्रिया का सामान्य वर्तमान रूप। नाच करने की क्रिया।

निरधारिकै = चि०, १७२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) 'निरधारना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप, निरधारण करके, निरचय करके। मनमें धारण करके।

निरधारी = चि० १७६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) 'निरधारना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

निरधारौं = चि० ६४।
[क्रि०] (ब्र.भा.) निश्चित करूँ। मनमें धारण करूँ।

निरपेक्षस्तावकीनं = चि०, १३२।
[सं० स्त्री०] (सं.) तुम्हारी बिना स्वार्थ की कामना, तुम्हारी इच्छा या कामना का अभाव।

निरमलता = आं०, ६८, ७४।
[सं० स्त्री०] = स्वच्छता, दोषहीनता, शुद्धता,
(हि.) पवित्रता।

निरमय = का० कु०, ४।
[वि०] (हि.) रोगरहित, निष्कलंक, पूर्ण, अचूक।

निरय = का०, २२।
[सं० पु०] (सं) नरक, दोजख।

निरर्थक = का०, १२।
[वि०] (सं.) बिना अर्थ का, व्यर्थ, बिना मूल्य का, निर्मूल्य।

निरलम्ब-सा = ल० ५६।
[वि०] (सं.) सहारा हीनता सा। निराश्रित।

निरवधि = ल०, २६।
[वि०] (सं.) अवधि या सीमा रहित, जिसकी कोई अवधि हो।
[क्रि० वि०] निरन्तर, लगातार।

निखारिये = वि०, १७१ ।
[क्रि० (सं०) (हि.) 'निरखना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप ।

निरा = क०, २८ ।
[वि०] (हि.) विशुद्ध, खालिस, केवल, एक मात्र, निपट, नितांत, एकदम ।

निरादर = का० कु०, ११५ ।
[सं०, पु०,] (सं.) अपमान, बेइज्जती । अनादर । तिरस्कार ।

निराधार = का०, २६०, २६१ । प्रे० १० ।
(वि.) (सं०) जिसका कोई आधार न हो, मिथ्या, बिना सहारे का । निरावलम्ब । निराश्रित ।

निरानन्द = वि०, १३२ ।
[वि०] (सं०) आनन्द रहित । परम आनन्द ।
[सं० पु०](सं.) दुःख । सुख ।

निरापद = म०, ३ ।
[वि०] (सं.) आपत्ति तथा बाधा रहित, भय रहित, आशंका से शून्य । निष्कंटक । अकंटक ।

निरालस = का० कु०, १०० ।
[वि०] (सं.) आलस्य रहित, तत्पर ।

निराला = का० कु०, ३६, ६० । का०, २०१, [वि०] २८४ ।
(सं.) अद्भुत, विचित्र, अपने ढंग का अकेला, अनूठा, अपूर्व ।

निराली = आं०, २२, २६ । का० कु०, ३६ ।
[वि० स्त्री०] का०, २८४ । वि०, ८ ।
(सं.) दे० 'निराला' ।

निराश = आं०, ७८ । का०, २०, १५८, १६६ ।
[वि०] वि०, १६०, १६२, १६६, १६६ ।
(सं.) भ्र०, ३७, ६१ । प्रे०, ५ ।
आशा रहित, जिसे आशा न हो ।

निराशा = आ० ५२ । का०, १६, ५४, १६४, [सं० स्त्री०] ६१, २१७ । ल०, ३०, ५६ ।
(सं.) आशा का अभाव । नाउम्मीदी ।

निराशा पूर्ण = का०, ७ ।
[वि०] (सं.) दे० 'निराशामय' ।

निराशामय = प्रे० २० ।
[वि०] (सं.) निराशा से युक्त या भरा हुआ, हताश ।

निरीक्षक सा = का०, २०६ ।
[वि०] (सं.) निरीक्षण या देख-रेख करने वाले के समान ।

निरीह = का०, ६२, १४५, १४६, २७१ ।
[वि०] वि०, १७६ ।
(सं.) सीधा-सादा, बेचारा, तटस्थ, शान्ति-प्रिय ।

निरीहता = का०, १०४ । ल०, ३१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) निरीह होने का भाव ।

निरुपम = का० कु०, ४ ।
[वि०] (सं.) जिसकी उपमा न हो, उपमा रहित । अनुपमेय ।

निरुपाय = का०, २५, ४८, ५२, ५४, ५६ ।
[वि०] म०, १४ । ल०, ६६ ।
(सं.) जिसका उपाय न हो, जो उपाय से रहित हो ।

निरेखत = वि०, १५२ ।
[क्रि०] (हि.) दे० 'निरखत' ।

निरेखि = वि०, १०३, १७२ ।
[क्रि०] (हि.) दे० 'निरखि के' ।

निरोगिता = प्रे०, ७ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) रोग रहित रहने का भाव, स्वस्थता । आरोग्यता ।

निर्जन = आं०, १७, २३, ७६ । का०, ४१, ८२, [वि०] ११३, १२०, १२७, १३३, २३३, (सं.) २४७, २५० । भ्र०, १७, १८, ३०, ३५, ५२ । ल०, १४, ५६ ।
जहाँ कोई न हो । एकांत, सूनसान ।

निर्जनता = का०, १६, ११५, १५० । ल०, ४८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) निः जनता । सूनापन ।

निर्झर = का०, ४८, ८६, ६६, १४५, २५८, २७०, २८१ । भ्र०, ३१, ३४ ।

[सं० पु०] (सं.) झरना, सोता, पानी का अपने आप निकलकर ऊँचाई से गिरना।

निर्झर-सा = आं०, १८।

[वि०] (सं०) झरने के समान, अपने आप द्रवित होने वाला, कारुणिक।

निर्झरिणी = प्रे०, २४।

[सं० स्त्री०] (सं.) नदी, पानी का सोता या झरना।

निर्दय = आं०, ६६। का०कु०, २३,७६। का०, २४८। झ०, ३७, ४४, ६६। म०,१४।

[वि०] (सं.) दया रहित, निष्ठुर, बेरहम।

निर्दयता = ल०, ४६।

[सं० स्त्री०] (सं.) निर्दय होने की क्रिया या भाव, निष्ठुरता।

निर्दिष्ट = का० कु०, ११६।

[वि०] (सं०) निश्चित किया हुआ, जो निश्चित किया गया हो, ठहराया हुआ।

निर्धार = क०, ३२। झ०, २१।

[पूर्व० क्रि०] (सं.) बात का निश्चय, न्याय में गुण, कर्म आदि की समानता के विचार से अलग वर्ण बनाना, किसी का मूल्य या महत्व निश्चित करना, निश्चित करना। [अं०] किनारे।

निर्धूम = ल०, ५६।

[वि०] (सं.) जहाँ धूँआं न हो, धूँआँ रहित।

निर्निमेष = का० कु०, २५, ५६, ६८। का०,१६०, २५१। प्रे०, २, १६। म०, १४।

[वि०] सं.) बिना पलक गिराए हुए, जिसमें पलक न गिरे।

[क्रि० वि०] (सं.) बिना पलक झपकाए, एकटक। लगातार। अविरल।

निर्बल = का०, २४०।

[वि०] (सं.) बलहीन, कमजोर।

निर्बीज = क० १०।

[वि०] (सं.) बिना बीज का, तत्व रहित।

निर्भय = का० कु०, ८७, ६८, ११६। का०, १६६, २८३, २६३। चि०, १, ७२।

[वि०] (सं.) प्रे०, २१।

निडर, भयरहित। साहसी, निर्भीक।

निर्भीक = का० कु०, ३०, १०६।

[वि०] (सं.) दे० 'निर्भय'।

निर्मम = आं०, ६३। का०, ११६, १६८, २००, २६७, २६६। ल०, ७८।

[वि०] (सं.) निर्मोही, ममता रहित, निर्दय।

निर्म्मम = का० कु०, १२०। का०, १३२।

[वि०] (सं.) दे० 'निर्मम'।

निर्ममता = का०, १२१, १२४।

[सं० स्त्री०] (सं.) ममता या वासना का अभाव।

निर्मल = क०, ७। का० कु०, ५५, ६१, ६५।

[वि०] (सं.) का०, १३५, २१४, २८२, २८५। चि०, ६३, १५४। झ०, २३, ३४, ५५। प्रे०, १२, १५, १६। ल०, २५, २६, ३६।

मल रहित, स्वच्छ,दोष रहित, निर्दोष।

निर्मलता = का०, २४८।

[सं०स्त्री] (सं.) स्वच्छता, शुद्धता, निष्कलंकता, पवित्रता।

निर्माण = का०, १५७, १६१।

[सं० पु०] (सं०) किसी वस्तु का बनाया जाना, बनाने का कार्य, रचना।

निर्मित = का० कु०, ६। ११०। का०, १६७, १९०, २०६,२८८। म०, ८।

[वि०] (सं.) बनाया गया, रचित।

निर्मोक = का०, ५५।

[सं० पु०] (सं.) सांप की केचुली, शरीर का ऊपरी खाल। केचुल।

निर्मोही = आं०, ४५, ७०। का०, १५४, १५७।

[वि०] (हि.) निर्दय, कठोर हृदय।

निर्लिप्त = का०, १६७।

[वि०] (सं.) राग द्वेषादि से मुक्त।

निर्वात = ल० ४३।

[वि०] (सं.) जहां हवा न हो, वायु से रहित।

निर्वाध = का०, १२, ८४।

[वि०] (सं.) बिना बाधा या बन्धन के । स्वतन्त्र ।

निर्वसना = का०, १५१ ।
[वि०] (सं.) बिना वस्त्र की, नंगी ।

निर्वासना = का०, १५१ ।
[सं० पु०] (सं.) निकलना, विसर्जन ।

निर्वासित = का० कु०, ६६, १२१ । का०, १५८,
[वि०] १६२, २०८, २४४ ।
निकाला हुआ, विसर्जित ।

निर्विकार = का० कु०, ३ । का०, १५२, १५६,
[वि०] २४६, २८६ ।
(सं.) विकार रहित, जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न हो, अपरिवर्तनशील ।

निर्विघ्न = चि०, ६७ ।
[वि०] (सं.) विघ्न या बाधा से रहित ।

[क्रि० वि०] सं. बिना विघ्न-बाधा के ।

निर्विवाद = का०, १६७ ।
[वि०] (सं.) विवाद या झगड़ा से रहित ।

निर्वेद = का० कु०, ८७ । चि०, १४३ ।
[सं० पु०] (सं.) वैराग्य, अनुताप ।

निलज = चि०, १६० ।
[वि०] (ब्र. भा.) लज्जा से रहित, निर्लज ।

निलज्ज = चि०, १७० ।
[वि०] (हि.) दे० 'निलज' ।

निलय = आ०, ६ । का०, ८२, १८० । का०
[सं० पु०] कु०, ३६ ।
(सं) घर, छिपने का स्थान, जानवरों का बिल या भीटा, घोंसला ।

निवारि कै = चि०, १४० ।
[पूर्व० क्रि०] 'निवारना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप,
(ब्र. भा.) निवारण करके या मना करके ।

निवारी = चि०, ५० ।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.) एक पुष्प विशेष का नाम । निवारण करके ।

निवास = का०, १५८, २३६ । का० कु०, ३६ ।
[सं० पु०] चि०, ५३, १५२, १५५, १७०,
(सं.) १७७ । प्रे० ४ ।
रहने का स्थान, आवास ।

निवासी = का०, २८३ ।
[सं० पु०] (सं.) रहने वाला, बसने वाला, बासी ।

निविड़ = का०, १०३ ।
[वि०] (सं.) घनघोर, घना, गहरा ।

निवेदन = भ्र०, ४६ ।
[सं० पु०] नम्रता पूर्वक कुछ कहना, विनती,
(सं.) प्रार्थना ।

निशंक = चि०, ६, ६०, ६७ ।
[वि०] (सं.) निर्भय, निडर, निःशङ्क ।

निशब्द = चि०, १५३ ।
[वि०] (सं.) जहाँ आवाज न हो, चुप-चाप, शान्त ।

निशा = आ०, ५६ । का०, ८ । का०, २०, ६७,
[सं० स्त्री०] १०३, १३६, १६०, १६७, २११ । चि०,
(सं.) २३, ७१, १०१, १४०, १६२ । भ्र०, २३, ४८, ६३ । प्रे०, ५ । ल०, ४४ ।
रात, रजनी । हल्दी । फलित ज्योतिष में मेष वृष आदि छः राशियाँ ।

निशाकर = का० कु०, ६६ । चि०, २३ ।
[सं० पु०] चन्द्रमा । महादेव । कपूर । एक ऋषि
(सं.) का नाम ।

निशाच्छादित = चि०, २३ ।
[वि०] रात्रि से घिरा हुआ, अंधकारमय,
(सं.) अज्ञानमय ।

निशा-तापसी = का०, १७६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) रात्रि रूपी तपस्विनी ।

निशानाथ = चि०, २५ ।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा ।

निशामुख = का०, ८७ ।
[सं० पु०] (सं.) रात्रि का मुख, संध्या ।

निशारानी = चि०, ७१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) निशा रूपी रानी ।

निशा-सखी = का० कु०, ३५ ।
[सं० स्त्री०] निशा नायिका की सखी, रजनी गन्धा
(सं.) नामक फूल ।

निशा-सी = का०, १२५ ।

[वि०] रात्रि के समान, चाँदनी के समान।
(सं.) सुन्दरी, रूपवती।

निशि = आं०, ५४। का०, २३४, २८६।
[सं० स्त्री०] चि०, १४, २५, १६२। ल०, ४१।
(सं.) दे० 'निशा'।

निशि-चारी = का०, २०५।
[सं०स्त्री०] (सं.) राक्षसी, निशा में गमन करने वाली। चन्द्र।

निशीथ = का०, ३४, ९४, ६७, ११४।
[सं० पु०] ल०, ३६।
(सं.) अर्द्धरात्रि।

निशीथिनी = का०, ११८। चि०, ४६।
[सं० स्त्री०] (सं) दे० 'निशीथ'।

निश्चय = का०, १४८, १६२।
[सं० पु०] (सं.) विश्वास, दृढ़ सङ्कल्प, पक्का विचार।

निश्चल = चि०, १३३।
[वि.०] (सं) अचञ्चल, अचल, अटल स्थायी।

निश्चित = क०, १०। कु०, ११२। का०, ३२।
[वि०] जिसके विषय में निश्चय हो चुका हो,
(सं.) जो निश्चय किया गया हो, निर्णीत पक्का।

निश्छल = का०. २३८, २५०। ल०, १४।
[वि०] (सं.) छल या कपट से रहित, निष्कपट।

निश्शेष = म०, १४, १६।
[वि०] (सं.) निश्चल, चेष्टा रहित, बेहोश।

निःशल्य = भ० ८२।
[वि०] (सं.) काँटों से रहित, निर्विघ्न।

निःमेष = का० कु०, ७७। भ० ४४।
[वि०] (सं.) सम्पूर्ण, जिसमें कुछ शेष न हो।

निःश्वास = आं०, २७, ३१, ४२,। का० कु० ८६।
[सं० पु०] का०, ८, १४, ६४, ६०, १७७। भ०,
(सं.) ३६, ६०।
श्वाँस, साँस।

निश्वासों = का० ६६, १२५।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'विश्वास' का बहुवचन।

निश्वास पवन= आं १२।
[सं० पु०] (सं) पवन की श्वाँस या पवनरूपी श्वाँस।

निश्शेष = का०, ५२। म०, १४।
[वि०] (सं.) सम्पूर्ण। पूर्ण। अपूर्ण। जो शेष न हो।

निषंग = चि०, २२। ल०, ४८।
[सं० पु०] (सं.) तरकश, तुणीर, तूण।

निषाद-पति = का० कु०, ६६।
[सं०] सं) निषादों का स्वामी या राजा।

निषिद्ध = का० कु०, ८८। का०, २३९।
[वि०] (सं.) वर्जित, मना किया हुआ, बुरा, दूषित।

निष्काम = प्रे०, २४।
[वि०] काम या वासना रहित, स्वार्थ रहित।
(सं.) अनासक्त।

निष्किञ्चन = भ० ३८।
[वि०] (सं.) अकिञ्चन, जिसका कोई मूल्य न हो।

निष्क्रिय = का० कु०, १०६।
[वि०] (सं.) क्रिया या व्यापार से रहित, निश्चेष्ट।
[सं० पु०] (सं.) ब्रह्म।

निष्ठुर = आं, ३६। क०, १८, २४। का० कु०,
[वि०] १२०। का०, १२२, १६७, १७०,
(सं.) १७७। भ०, ३२, ६१। ल०, ३२, ३३।
कठोर हृदय वाला, क्रूर, नृशंस।

निष्ठुरता = ल०, ३२।
[सं० स्त्री०] निष्ठुर होने का भाव, कठोरता, निर्दयता,
(सं.) क्रूरता।

निष्फल = का० ३३, १३६। ल०, ३४।
[वि०] (सं) फल रहित, व्यर्थ, निरर्थक।

निसर्ग = आं० ६८।
[सं० पु०] (सं.) स्वभाव, प्रकृति, सृष्टि, दान।

निशानी = चि०, ७४।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) स्मृति, चिह्न, यादगार।

निसाने = चि०, ६।
[सं० पु०] (ब्र भा.) लक्ष्य, वार किया जाने वाला।

निसापति = चि० १५६।
[सं० पु०](ब्र.भा.) चन्द्रमा।

निसि = चि०, १४६।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) दे० 'निशा'।

निसदिन = चि०, १२।
[अव्य०] (ब्र. भा.) रात-दिन। प्रतिरोज।

निसिनाथ-कला=चि०, १४६ ।
[सं० स्त्री०](ब्र. भा.) चन्द्रमा की कला ।

निस्तन्द्र = का० कु०, ८६ ।
[वि०] (सं०) निरालस्य, जागृत या जगा हुआ ।

निस्तब्ध = आं०, ६० । का० कु०, ६६ । का० १६०, १६७, १६६, २११, २४५, (सं.) २५० ।
विलकुल शान्त, निश्चेष्ट ।

निस्तब्धता = का० कु०, १२० ।
[सं० स्त्री०] स्तब्ध होने का भाव, खामोशी,
(सं.) सन्नाटा ।

निस्तरंग = का०, १६६ ।
[वि०] (सं.) तरंग रहित, शांत, गतिहीन ।

निस्तार = का०, १६६ । चि०, ५४ ।
[स० पु०] पार होने का भाव, छुटकारा, उद्धार,
(सं.) मुक्ति ।

निस्वन = का०, ६८, १६०, २६० । ल०, २३ ।
[सं० पु०] (सं.) शब्द, ध्वनि ।

निस्संग = का०, २७० । भ्रू०, ५२ ।
[सं० पु०] (सं.) किसी को साथ न रखने वाला, किसी में लिप्त न होने वाला, ब्रह्म ।

निस्संबल = का०, १०५, १७७, २५६ ।
[वि०] (सं.) आधार या सहारा रहित, असहाय ।

निस्सहाय = का०, १६७ ।
[वि०] (सं.) विना सहारे का, असहाय ।

निस्सीम = आं०, २० । ल०, १६, २१ ।
[वि०] (सं.) अपार, अनंत, सीमा रहित ।

निस्तेज = का०, ८२ ।
[वि०] सं० प्रकाशहीन, कान्तिरहित ।

निस्पन्द = ल०, ७६ ।
[वि०] (सं.) निश्चल, निश्चेष्ट ।

निस्वन = का०, २८७ ।
[सं० पु०] (सं.) शब्द, ध्वनि ।

निहार = का० ८३, १७२, २३८, २४६ । चि०,
[क्रि०] (सं.) ४६ । ल०, ३४ ।
(हि.) 'निहारना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप निहार कर, देखकर ।

निहारि = चि०, १४६, १५५, १६४ ।
[क्रि०] (ब्र भा.) दे० 'निहार' ।

निहारिये = चि०, १७१ ।
[क्रि०] (हि) 'निहारना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप ।

निहारी = का०, १५३ । चि०, १४८ ।
[क्रि०] (हि.) 'निहारना' क्रिया का भूतकालिक रूप ।

निहारो = चि०, ५७, १६० ।
क्रि०] (हि.) देखो ।

निहित = प्रे०, २० ।
[वि०] (सं०) स्थापित, छिपा हुआ ।

निहोरि = चि०, ५४ ।
[क्रि०] 'निहोरना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप
(ब्र. भा.) निहार कर, विजय कर ।

निहोरे = चि०, ६० ।
[सं० पु०] हि.) अनुग्रह, कृतज्ञता, प्रार्थना, भरोसा ।

नीके = चि०, १६० ।
[वि०] (ब्र. भा.) उत्तम, अच्छे ।

नींद = का०, ७०, १८०, २१६, २२४, २३५ ।
[सं० स्त्री०] चि०, १४, ४६ । प्रे०, १ ।
(हि) सोने की अवस्था, निद्रा ।

नींद-जाल = का०, २३५ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) नींद रूपी जाल, घोर निद्रा ।

नीच = का०, २८ । का०, ८४ । चि०, ६६,
[वि०] १०५, १२६, १६० । का०, ८४ ।
(सं.) ल०, ७६ ।
तुच्छ, अधम, निकृष्ट ।

नीचा = का० कु०, ७० । का०, ४५, ६७, १२५,
[वि०] २८३ ।
(हि.) गहरेपन का भाव, झुका हुआ ।

नीचे = आं०, ६६ । क०, २६ । का०, ३, ३५,
[क्रि०] १२७, १८६, २०६, २१६ । चि०,
(हि.) ७० । प्रे०, १४, २४ । ल०, ४०,
४५, ८० ।
नीचे की ओर, अधो भाग में ।

नीड़ = क०, १६ । का० कु०, १५, ३३, ६६ ।
[सं० पु०] का०, ७५, १५०, २३६, २८६ । भ्रं०, १६ । म०, ७ । ल०, ४० ।
(सं०) घोंसला । रथ में बैठने का स्थान । निवास स्थान ।

नीड़-सा = का०, १२० ।
[वि०] (सं०) नीड़ के समान ।

नीड़ों = का०, १४४ ।
[सं० पु०] (हि.) घोंसलों ।

नीति = का० कु०, ८६ । चि०, १८, ६८, १०६,
[सं० स्त्री०] १६७ । म०, २, १४ ।
(सं.) व्यवहार की रीति, आचार-पद्धति ।

नीर = का० कु०, ४८, १२३ । का०, १३,
[सं० पु०] १५७, २१४ । चि०, ५३, ६४, १५७,
(सं.) १६४, १६६ ।
जल ।

नीरद = आं०, १५ । का० कु०, ५०, १२३,
[सं० पु०] १२६ । का०, १६४ । चि०, ७१,
(सं.) १६७, भ्रं०, २४ । प्रे०, १५ ।
बादल, मेघ ।

नीरद-जाल = का० कु, ११४ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) बादलों का समुदाय ।

नीरद माला = भ्रं०, ६० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) बादलों का समूह ।

नीरद-विन्दु = का० कु, १२४ ।
[सं० पु०] (सं.) बादल से टपकने वाली बूँद, ओस कण । शबनम ।

नीरधर = का० कु०, ११४ । का० २१७ । चि०,
[सं० पु०] २२ ।
(सं.) बादल, मेघ, समुद्र ।

नीरव = आं०, ३१ । का० कु०, ५६ । का०
[वि०] ६७, २०, १६८, २१६, २७८ ।
(सं.) चि०, ४७, ४६, १६५ १:६ । भ्रं०, १७, १८, ३०, ५५, ६६ । ल०, ३१, ४८ ।
निःशब्द, चुप, मौन ।

नीरवता = का०, ६, २६, ३२, ६३, ६७ ।
[सं०स्त्री०](सं.) निःशब्दता, चुप्पी, मौनता ।

नीरवता-सी = का०, ३, १२० ।
[वि०] (सं.) नीरवता के समान, मौन, निस्पंद ।

नीर-विन्दु = चि०, २२ ।
[सं० पु] सं.) जल की बूँदें, ओस-कण ।

नीरस = का० कु०, ३३ । चि०, १५१ । प्रे०,
[वि०] २० ।
(सं.) रसहीन, शुष्क ।

नीरज = का० कु०, ४३ ।
[सं० पु०] (सं) कमल, मोती, जलजीव, शिव ।

नीराजन = चि० १५४, १६७ ।
[सं० पु०] (सं.) आरती ।

नील = आं०, ६, ५३, ५५, ६८ । क० १२ ।
[वि०] का० कु, ४३, ५२, ६८ । का०, २६
(सं.) ३५, ४६, ४७, ५३, ६५, १२२,
[स० पु०] १२३, १४३, १५६, १७५, १७६, १८०, २०६, २५७, २६८ । भ्रं०, ४१, ५६, ६६ । ल० १४, १५, १६, २०, ४४, ४८ । चि० २१, २१, ४६, ७१, ६३, १४१, १५४, १६०, १६३ ।
नीले रंग का । आसमानी रंग का । राम की सेना का एक बानर, नीला रंग ।

नील कमल = का० कु०, ६५ ।
[सं०पु०] (सं.) नीले रङ्ग का कमल ।

नील-गगन = का० कु०, ६७ । का०, ४६, २३४ ।
[सं० पु०] भ्रं०, १६ ।
(सं.) नीला आकाश ।

नील-गगन मण्डल= प्रे०, २४ ।
[सं० पु०] (सं.) सम्पूर्ण नीलाकाश ।

नील-गगन सा= का० कु०, १५ ।
[वि०] आकाश के नीले रङ्ग के समान ।
(सं.) नीलाभ सदृश ।

नील-घन = का० कु०, ११५ । का०, ४७ ।
[सं० पु] (सं.) नीले या काले बादल ।

नील नभ = का०, २१६ ।
[सं०पु०] (सं.) नील गगन, नीलाकाश ।
नील नलिन = का०, १२ । झ०, २२ ।
[सं०पु०] (सं.) नील कमल ।
नीलम = आं०, २१, २२ । का०, १०१ । चि०,
[सं०पु०] २३, ६८ ।
(सं.) नीले रङ्ग की एक मणि ।
नील मधुप = का० कु०, ६६ ।
[सं०पु०] (सं०) नीला या काला भौंर ।
नीलमणि = का० कु०, २६ । ल०, ४३ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) दे० 'नीलम' ।
नीलमनि = चि०, १५६ ।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.) नीलमणि ।
नीलमनी = चि०, ६ ।
[सं०स्त्री] (ब्र.भा.) नीलमणि ।
नील-निशा = झ०, ३८ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) अन्धकार पूर्ण रात ।
नील-लता का०, १५८ ।
[सं०स्त्री०] सं.) नीली लता या लता विशेष का नाम ।
नील-वसन = का०, ४० ।
[सं०पु०] (सं.) नीला वस्त्र ।
नील-व्योम = का०, १४ ।
[सं०पु०] (सं.) नीला आकाश ।
नीला = आं०, ६६ । का०, २५१ । प्रे०, ६ ।
[वि०] (हि.) एक रंग ।
नीलाकाश म०, ८ । झ०, ३ ।
[सं० पु०] (सं.) नीला आकाश ।
नीलाम = चि०, १ ६ ।
[सं० पु०](हि.) बोली बोलकर माल बेचने का ढंग ।
नीलाम्बर = चि० २५ ।
[सं०पु०] (सं.) नीला आकाश, नीला वस्त्र ।
नीलाम्बर मध्य= प्रे० १६ ।
[वि०] (सं.) नीले आकाश के बीच में, नीले वस्त्र के बीच में ।
नीलिमा = आं० ५५ । क० ७ । का० ३०, ६३, १२१, ल० ११ ।
[स० स्त्री०](हि०) नीलापन, श्यामता ।
नीली = का० ५४, ६८ । ल० ५६ ।
[वि०] (हि.) दे० 'नीला' ।
नीले = का० १८६, २११ ।
[वि०] (हि.) दे० 'नीला' ।
नीले अंचल = का०, २६ ।
[सं० पु०] (सं०) नीले रंग का अंचल ।
नीलोज्ज्वल = का० कु० ६७ ।
[सं० पु०] (सं०) नीला-श्वेत ।
नीलोत्पल = प्रे० २२ ।
[सं० पु०] (सं) नील कमल ।
नींव = का० ५, ७५ ।
[स० स्त्री०] जड़, जिस पर मकान की भित्ति खड़ी
(हि.) होती हैं । किसी कार्य का आरम्भ ।
निहार = का०, १६६ ।
[स० पु०] (सं०) कुहरा, पाला, हिम ।
नुकीली = का०, १६६ ।
[वि०] (हि.) दे० 'नुकीले' ।
नुकीले = का०, २०० ।
[वि०] (हि.) नोंकदार ।
नूतन = का०, १२७, १२६, चि०, ६४ ।
[वि०] (सं.) नवीन, ताजा ।
नूतनता = का०, ११५, १४० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) नवीनता, ताजापन ।
नूपुर = का०, कु०, १६, ६७ । का०, ११,
[सं० पु०] २६२ । चि०, १७६ । झ०, १८, ३२ ।
(सं.) ल०, ४८, ६० ।
एक आभूषण विशेष जो पैर में पहना जाता है ।
नूपुरों = ल०, ६६ ।
[सं० पु०] (हि.) नूपुर का बहुवचन ।
नूपुर-सी = का०, १०३ ।
[वि०] (सं.) नूपुर के समान; मधुर शब्द या ध्वनि करने वाली ।
नृत्य = आं०, ६४ । का० कु०, ९६ । का०,
[सं० पु०] १५, २०, ६६ ८६, १८६, १६०,

(सं.) २६२, २७३। भ०, २८। ल०, ४४। संगीत के ताल और गीत के अनुसार हाथ-पाँव हिलाने, उछलने-कूदने का मुद्रामय व्यापार।

नृत्यमयी = का०, १४०।
[वि०] (सं.) नृत्य युक्त, क्रीड़ामयी। नित्य क्रिया से परिपूर्ण।

नृत्य निरत = का०, २४२, २५२।
[वि०] (सं.) नाच में लीन, संलग्न।

नृत्य-विकम्पित = का०, १८५।
[वि०] (सं.) नाच में काँपता हुआ, जो नाच नाचने से काँप उठे।

नृप = चि०, ३१, ५२।
[सं० पु०] (सं.) राजा, नरपति।

नृप-चूड़ामणिवर्य = का० कु०, ६८।
[वि०] (सं.) राजाओं में शिरोमणि। चक्रवर्ती राजा।

नृशंस = ल०, ७६।
[वि०] (सं.) क्रूर, निर्दय, अत्याचारी, अनिष्टकारी।

नृशंसता = ल०, ७७।
[सं० स्त्री०] (सं.) क्रूरता, निर्दयता।

नेक = चि०, ८, ६१, ६४, १४७, १४८, १५७, १५८, १७१, १७२, १७४, १८०।
[वि०] (फा.) अच्छा, शिष्ट, सज्जन।

नेकहु = चि०, ५२, १४७।
[अव्य०] (ब्र.भा.) तनिक-सा, जरा-सा।

नेकहू = चि०, १७५।
[अव्य०] (ब्र. भा.) तनिक भी।

नेकौ = चि०, १४।
[अव्य०] (ब्र. भा.) एक भी नहीं।

नेता = का०, २०१।
[सं० पु०] (हि.) नायक, अगुआ। स्वामी, विष्णु।

नेत्र = का० कु०, १०, १३, ५२, ६८। का०, २३, २६। भ०, २२, २५।
[सं० पु०] (सं.) आँख, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, नाड़ी, जटा।

नेत्र-तारा = का० कु०, ४३।
[सं० पु०] (सं.) आँख की काली पुतली।

नेत्राभिदरे यावत = चि०, १३४।
[क्रि०] (सं.) जब तक नेत्र का अति रक्षन करे।

नेम = चि०, १६५, १७३।
[सं० पु०] (सं.) समय, अवधि। खण्ड, प्रकार। छल। सायंकाल।

[सं० पु०] (हि.) नियम, धार्मिक क्रियाओं का पालन।

नेह = चि०, १६, १६५, १७६, १८०, १६०।
[सं० पु०] (हि.) स्नेह, प्यार। चिकना, तेल या घी।

नेहरस = चि०, १५६।
[सं० पु०] (हि.) प्रेमरस, स्नेहरस।

नेही = चि०, १८६, १६०।
[वि०] (ब्र. भा.) स्नेह करने वाला, प्रेमी।

नेहु = चि०, १५।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) दे० 'नेह'।

नैतिक = म०, ११।
[वि०] (सं.) नीति सम्बन्धी, नीतियुक्त।

नैन = आं०, १८। चि०, २, ४, ६, ८, ४६, ५३, ५६, ६६, १४१, १५२, १७२, १७४, १७५, १६०।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) दे० 'नेत्र'

नैनन = चि०, ४७, १७६।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) 'नैन' का बहुवचन।

नैया = आं०, ४२। चि०, १८२।
[सं० स्त्री०] (हि.) नाव, नौका।

नैसर्गिक = का०, कु०, ६८। भ०, ६७। प्रे०, २, २०।
[वि०] (सं.) स्वाभाविक, प्राकृतिक।

नोंक-झोंक = का०, ६४, ११७, २३५।
[मुहा०] (हि.) व्यंग्य, ताना, कहा-सुनी।

नोखी = चि०, ४६।
[वि०] (ब्र.भा.) अनोखी। विचित्र, अद्भुत।

नोचते = आं०, १५ । का०, १८३ ।
[क्रि०] 'नोचना' क्रिया का भूतकालिक रूप,
(हि.) (किसी वस्तु की खींचातानी करके उसके असली रूप को बरबाद कर देना ।)

न्योंछावर = प्रे०, २५ ।
[सं० स्त्री०] मंगल कामना से उतारा करके दान
(सं.) करने का भाव, नेग, पुरस्कार के रूप में कुछ देना ।

न्हाय = चि०, १८३ ।
[पू०क्रि०] ब्र.भा.) नहाकर ।

प

पङ्क (पंक) = का० कु०, ४२ । का०, १८६, २०५,
[सं० पु०] २६० । भ्रु०, २२, ६६ । ल०, ७६ ।
(सं.) कीचड़, कींच ।

पङ्कज = ल०, ६, ३२ ।
[सं० पु०] (सं.) कमल ।

पङ्किलता = आं०, ७२ ।
[सं० स्त्री०] (सं) मलीनपन, गन्दगी ।

पंक्ति = का०, ५६, १४२, १७६ । ल०, ६८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) श्रेणी, कतार । पाँत ।

पंक्तियाँ = भ्रु०, ७१ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) पंक्ति का बहुवचन ।

पङ्खड़ियाँ = भ्रु०, ३९ ।
[सं० स्त्री०] पुष्प-दलों । पुष्प के वे रङ्गीन पटल
(हि.) जिनके छितराने पर फूल अपना रूप पाता है ।

पङ्ख-युत = भ्रु०, ८६ ।
[वि०] (सं०) परवाला । डैनोंवाला ।

पङ्खा = प्रे०, ७ ।
[सं० पु०] (हि.) बेना ।

पङ्खा-झले = का० कु०, ९८ ।
[क्रि०] (हि.) बेना डुलाये ।

पंखुरियाँ = ल०, १७, ३० ।
[सं० स्त्री०] हि.) दे० 'पंखड़ियाँ' ।

पंगु = का०, १६८ ।
[वि०] (सं.) जो पैरों से न चल सके । लँगड़ा ।

पंगु-सा = का०, १४५ ।
[वि०] (हि.) लगड़े के समान ।

पञ्च = चि०, १७६ ।
[सं० पु०] (हि.) समुदाय,समाज,जनता। निर्णायक पाँच।

पंचतत्व = का० कु०, ६ ।
[सं० पु०] (सं.) पंचभूत ।

पंचन = चि०, १४७ ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) दे० पंच ।

पंचनद = ल०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६ ।
[सं० पु०] (हि.) पाँच नदियों का प्रदेश, पंजाब ।

पंच-भूत = का०, १४, १५, १५३, २६७ ।
[सं० पु०] पंचतत्व । पृथिवी, जल, पावक, गगन,
(सं.) समीर ।

पंच-भूतों = का० कु०, ८६ ।
[सं० पु०] (सं.) पंचतत्वों ।

पंचम = चि०, ४७ । भ्रु०, ५७ ।
[वि०] (सं.) पाचवां । दे०, पंचम स्वर ।

पंचम-स्वर = का० कु०, ६६ । का०, १०१ । भ्रु०,
[सं० पु०] ३६ ।
(सं.) सात स्वरों में से पाँचवाँ जो कोकिल के स्वर के समान माना जाता है ।

पंचमी-स्वर लहरी = भ्रु०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) पंचम स्वर की तरंगें ।

पंथी = ल०, ३१ ।
[सं० पु०] राही, बटोही । किसी मत या सम्प्रदाय
(हि.) को मानने वाला ।

पकड़ = का०, ६२, १००, १७६ ।
[सं० स्त्री०] ग्रहण । भिड़न्त । सत्य का साक्षात्कार
(हि.) कराने वाली तत्वात्मक बात ।

पकड़ना = का०, ८८, १५८, २१३, २१६, २२७,
[क्रि०] २४१, २४४, २७८ । ल०, १०, ७३ ।
(हि.) थामना, ग्रहण करना, धारण करना, धरना ।

पका = का० कु०, १०१ ।

[वि०] (हि.) तैयार । रसपूर्ण । वृद्ध ।
पके = का०, १८० ।
[वि०] (हि.) पका का बहुवचन ।
पखान = चि०, ५, १६, १७२ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) पाषाण, पत्थर, प्रस्तर, जड़ ।
पग = क०, १४ । का०, १०३, १०६ । चि०,
[सं० पु०] २, १५ । ल०, ५० ।
(हि.) पैर, पाँव, डग ।
पग-चापि के = चि०, ७० ।
[पू० क्रि०] (ब्र. भा.) पैर दबाकर ।
पग-पग = का० कु०, १४ ।
[अव्य०] (हि.) डग-डग । प्रत्येक पग पर ।
पगली = आं०, ८, ५५ । का०, १६, ४० ।
[वि०] (हि.) पागल का स्त्रीलिंग ।
पगली-सी = का०, १०४ ।
[वि०] (हि.) सुधि-बुधि-खोयी-सी । पगली के समान।
पगि = चि०, १८४ ।
[पू० क्रि०] (ब्र. भा.) पग कर, सन कर ।
पगे = का०, २७० ।
[क्रि०] (हि.) पगना की भूतकालिक क्रिया ।
पगैहौ = चि०, १०० ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पगना की भविष्यत कालीन क्रिया ।
पगोड़ा = का० कु०, ६ ।
[सं० पु०] (सं.) ब्रह्मदेशीय मंदिर ।
पचीसी = प्रे०, ४ ।
[सं० स्त्री०] एक ढंग के पचीस वस्तुओं का समूह ।
(हि.) पचीसवाँ वर्ष । चौसर के खेल का एक प्रकार ।
पछतात्रिं = चि०, १५८ ।
[क्रि०] (हि.) पश्चात्ताप करते हैं ।
पट = आं, २७, ४५ । का० कु०, ५२ । का०,
[सं० पु०] २८, ३२, ६७, १७०, १७६, १८४,
(सं.) २६३ । चि०, ३८, १५०, १६३ । ल०,
४३, ४६ ।
कपड़ा, ओहार, पर्दा ।
पटक रहा = का० ६८ ।
[क्रि०] (हि.) पछाड़ रहा है । गिरा रहा है ।

पटल = आं०, ३८ । का०, १७१, २३३, २५१,
[सं० पु०] २५२, २६२ । ल०, ७२ ।
(हि.) पर्दा, परत, तह ।
पटली = चि०, १५७ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'पटल' ।
पटी = का०, १७६, १८६, १६३. २५६ ।
[सं०स्त्री०] भू०, ५६, ६६ ।
(सं.) दे० 'पट्टिका' ।
पट्टिका = का०, १४२ ।
[सं० स्त्री०](सं) पट्टी ।
पड़ना = आं ६८ । का०, १०, ४८, ८८, ६६ ।
[क्रि०] प्रे०, ७ । ल०, ७७, १४६ ।
(हि.) ऊँचे से नीचे आना, पतित होना, कष्ट या दुख में आना ।
पड्यो = चि०, ११ । का०, १४६ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) पड़ा ।
पढ़कर = का०, ३२ ।
[पू०क्रि०] (हि.) अध्ययन कर ।
पढ़ना = का, ६७ ।
[क्रि०] (हि.) सीखना । पाठ करना ।
पढ़ब = चि०, १६, ६८, १०८ ।
[क्रि०] (ब्र भा.) दे० 'पढ़ना' ।
पढ़ि = चि०, १७१ ।
[पू०क्रि०] (ब्र. भा.) पढ़कर ।
पढ़ी हुई = का०, ३६ ।
[क्रि०] (हि.) जो पढ़ ली गई हो ।
पट्यो = चि०, ५३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पट गया ।
पण = ल०, ५३ ।
[सं० पु०] पासा खेलना । कोई खेल जो दाँव लगा
(सं.) कर खेला जाय । द्यूत । प्रण । प्रतिज्ञा ।
पण्यवीथिका = प्रे०, ७ ।
[सं० स्त्री०] बाजार में बनी हुई गली । बाजार में
(सं.) जाने वाली गली ।
पतंग = आं०, ४४ । का० कु०, ७६ । का०,
[सं० पु०] १५७, १६४ । चि०, १६ । भू०, ६३ ।
(सं.) ल०, ४६, ५० ।

चिड़िया। भुनगा। गेंद। शरीर। सूर्य। नौका।

पतझड़ [सं०स्त्री०] (हि.) = आ०, १६, ६१ का०, ३३, ५०, २२३ झ०, २७, ६१, प्रे०, १७, म०; १, ल०, ३७, ४०। पत्तों का झर जाना। वह ऋतु जिसमें पत्ते झर जाते हैं।

पतझड़ से [वि०] (सं.) = का०, १६४। पत्ते झरने के समान। पतझड़ ऋतु के समान।

पतझर [सं० स्त्री०] (हि.) = का०, २६५, चि०, १७१। दे० पतझड़।

पतन [सं०पु०] (सं.) = आं० ५८। नीचे गिरना, नाश या अस्त होना। पाप।

पतन-मय [वि०] (सं) = का०, २३५। नाशवान। गिरने की ओर बढ़ा हुआ।

पतनोन्मुख [वि.] (सं.) (सं.) = का० कु०, २८। जिसका धीरे-धीरे नाश हो रहा हो। पतन की ओर बढ़ता हुआ।

पतले [वि०] (हि.) = का०, १६६, २७२। क्षीण। बारीक। दुबला। हलका।

पतली [वि०] (हि.) = का० कु०, ३६, का० ११८। दे० पतले।

पतवार [सं० पु०] (हि.) = का०, १६, ५७। चि०, १८२। ल०, ५७। कर्ण। नाव के पिछले भाग में लगी हुई एक त्रिकोनी लकड़ी जिससे नौका इधर-उधर घुमाई जाती है।

पता [सं० पु०] (हि.) = का० कु०, २१४। का०, १२, १६। चि०, ५०। ल० ६६। ठिकाना। पत्ता।

पति [सं० पु०] (सं.) = क०, ३०, का० कु०, ६१, १०६, का०, २८४, चि०, ६७, ६८, प्रे०, २०। स्वामी। मालिक। दूलहा। मर्यादा। प्रतिष्ठा।

पतित [वि०] (सं.) = का० कु०, ६४। चि०१२, १०१, १७६। गिरा हुआ। नीच। पापी।

पतितन (ब्र. भा.) = चि० १८५। पतित का बहुवचन।

पति-सुख [सं० पु०] (हि.) = चि० ५८। स्वामी का सुख।

पतियाँ [सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) = चि०, १५१। पतियाँ। चिट्ठियाँ। चिट्ठी।

पत्तन [सं० पु०] (सं.) = ल०, ३२। नगर।

पत्ता [सं० पु०] (हि.) = प्रे०, ४, २२, म०, १, २। वृक्षों में हरे रङ्ग का वह अवयव जो उसके तने से निकलता है। पर्ण।

पत्तियाँ [सं० स्त्री०] (हि.) = का० कु०, २८। ल०, ११। छोटे-पत्ते।

पत्ते [सं० पु०] (हि.) = का० कु०, २५, झ०, ५१, म०, १५। दे० पत्ता।

पत्थर [सं० पु०] (सं०) = का० कु०, ६, ११०। का०, ३। प्रे०, १६। पृथ्वी का ठोस स्तर जो चूने या बालू के जमने से बना हो। शिला-खण्ड।

पत्नी [सं० पु०] (सं०) = चि०, ७४। प्रे०, १६, २०। भार्या। दारा। वधू। सहधर्मिणी।

पत्र [सं० पु०] (सं.) = का० कु०, ३६, ७६ १२४, का०, १६०, २१२, २८०। चि०, ६८, झ०, ३३, ४४, प्रे०, १। म०, २। पत्र, लिखा हुआ कागज। चिट्ठी, खत।

पथ [सं० पु०] (सं.) = आं०, ३२, ३८, ४१, ४२, ६६, ७२, ७६। क०, ३१ ३२। का०, १६, ७४, ७६, ११२, ११४, ११७, ११८, १२३, १४४, १५८, १५६, १६०, १६५, १६७, १८१, १८२, २१०, २४१, २६७, २७७, २८३। झ०, ७३। प्रे०, ४, ५, २३। ल०, २६, ३१, ४५, ५३।

रास्ता। मार्ग। रीति। (हि०) रोगी के लिए हलका आहार पथ्य।

पथ-पथ = का०, १६०, प्रे०, २३।
[अ०] (सं.) प्रत्येक रास्ता।

पथिक = का०, १५, का०, कु०, १२, १४, २५, ५१। का०, ८१, १६७, १७८, २५७, २५६। ल०, ११, ३३। चि०, १५, १४६, १५८, १६४, १७४। झ०, २४। प्रे०, ५, ६, ७, ८, १४, १६। म०, ५।
[सं० पु०] (सं.) राही। बटोही। मार्ग चलने वाले।

पथिकन-सो = चि०, ७९।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) बटोहियों को। मुसाफिरों को।

पद = का०, ८६, १८५, १६८। चि०, १५५। प्रे०, २३। म०, १७। ल०, ५।
[सं० पु०] (स.) दर्जा। ओहदा। श्रेणी। पदवी। पाँव। चरण।

पदकमल = चि०, १७५।
[सं० पु०] (सं.) कमल के समान सुन्दर चरण।

पद-चिह्न = आं०, ४१, का०, कु०, ७३। का०, ५६। ल०, ६।
[सं० पु०] (सं.) चरण की छाप। पैर का निशान।

पदतल = का०, ६, ५७, २६०, २६७। ल०, ४३।
[सं० पु०] (सं.) पैर का तलवा।

पददलित = का०, २००, चि०, १०५।
[वि०] (सं.) पैरों से रौंदा हुआ। दबाया हुआ। सताया हुआ।

पददलिता = का०, ६३, प्रे०, ४७।
[वि०] (हि.) सतायी हुई। पैरों से रौंदी गयी।

पद-पद = का०, १६३।
[अ०] (सं.) दे० 'पग-पग'।

पदाग्र = का०, २८०।
[सं०] (सं.) चरण का अगला भाग।

पदार्थ = प्रे०, १६।
[सं० पु०] (सं.) शब्द समूह या पद का अर्थ। वह जिसका कोई 'आकार' या रूप हो। वस्तु, चीज। पुराण के अनुसार — धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

पदपद्म = ल०, २६।
[सं० पु०] (सं.) कमल के समान चरण। कमल रूपी चरण।

पद्मा = चि० १३२।
[सं० स्त्री०] (सं.) लक्ष्मी।

पद्मपलाश = का०, १६८।
[सं०पु०] (सं.) कमल के पत्ते की तरह।

पद्मराग-उद्गम = ल०, ७६।
[सं०पु०] (सं.) पराग या पुखराज नामक रत्न के निकलने का स्थान।

पद्मिनी = ल०, ७१।
[सं०स्त्री०] (हि.) कमलिनी, लक्ष्मी। रतिशास्त्र के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में से एक जिसके शरीर से कमल की सुगन्ध निकलती है।

पद-ध्वनि = का०, १४४, ल०, ३३।
[सं० स्त्री०] (सं.) पैर की आवाज। चलने से जो ध्वनि उत्पन्न होती है।

पद-पराग = ल०, ३३।
[सं० पु०] (सं.) चरण-धूलि। पैर की धूल।

पद-शब्द = झ०, २१, ८२।
[सं० पु०] (सं.) दे० पद ध्वनि।

पधारे = प्रे०, ६।
[क्रि०] (हि.) आये। कृपाकर उपस्थित हुए।

पनघट = ल०, १५।
[सं० पु०] (हि.) वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हैं।

पन्नग = चि०, ६५, ७२।
[सं० पु०] (सं.) सर्प, पन्ना, मकरंद।

पपीहा = का०, १८०। चि०, १, ३६। झ०, २४, ४६।
चातक। वर्षा और वसंत में मीठे स्वर में बोलने वाला एक पक्षी।

पपिहा-पुकार सा= का० कु०, १२६। ल०, २७।

पपीहा की पुकार-'पी कहाँ', 'पी कहाँ' के समान।

पय = चि०, ८। ल०, ६८, ७०।
[सं०] (सं.) पानी, दूध, रस।

पयानो = चि०, ५२।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) गमन, यात्रा, रवानगी।

पयोधर = का० कु०, ३८। का०, ४४, १४२।
[सं०] स्थन, बादल, नागरमोथा, नारियल,
(सं.) पर्वत, पहाड़, मंदार, आक, कसेरू, तालाब, तड़ाग, दुग्ध वृक्ष। 'दोहा' छंद का ग्यारहवाँ भेद। समुद्र, एक प्रकार की ईख, छप्पय छन्द का सत्ताइसवाँ भेद, गाय का स्थन।

पयोधि = का० कु०, १०७। भ०, ६२।
[सं० पु०] (सं.) समुद्र। जलधि।

पयोनिधि = चि०, १६।
[सं० पु०] (सं.) समुद्र।

पर = आं०, ८, १४, २०, ३५, ३८, ४०,
[वि०] ४५, ४६, ५१, ५५, ७२। क०, ८, ६,
(सं.) १०, १२, १८, २५। का० कु०, ५, ७, १०, १२, १३, १४। का०, ११४, ११६, १२३, १२६, १२८, १३३, १३६, १४१, १४४, १४६, १४८, १५०, १५२, १५८, १६३, १६४, १६५, १६६, १७५, १७६, १८०, १८६, १६३, १६८, २०२, २५७, २५८, २५६, २६३, २६६, २७०, २७२। चि०, ४६, ५६, ५७, ६०, ६३ ६५, ६६, ७४, ११०, १५३, १६३, १६६, १७४, १८५। प्रे०, १०, १२, १४, १५, १६, १७, १८, २०, २२, २५।
दूसरा, अन्य, गैर, परलोक, पराया, जो अपना न हो, दूसरे का, अतिरिक्त, भिन्न, जुदा, अलावा, पीछे का, बाद का, जो परे हो, दूर, अलग, जो सीमा के बाहर हो, तटस्थ, अधिकरण का एक चिन्ह। पाँख।

परख = ल०, ५७।
[सं० स्त्री०] गुण-दोष की ठीक-ठीक जाँच। परीक्षा,
(हि.) पहचान।

परखते = ल०, ७७।
[क्रि०] (हि.) पहचानते।

परखा = का०, १६१।
[क्रि०] (हि.) पहचाना।

परचागे = चि०, ७४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्रचार करो।

परछाईं = आं०, ३३। ल०, ४३। का०, १६२,
[सं०] झरना १६।
(हि.) प्रकाश के सामने आने से पीछे की ओर अथवा पीछे की ओर प्रकाश होने से आगे की ओर पड़ी हुई किसी वस्तु की छाया। प्रतिबिंब।

परछाईं-सी = ल०, ६।
[वि०स्त्री०] (हि.) परछाईं के समान।

परत = चि०, १५८, १७६।
[सं० स्त्री०] सतह, फैली हुई वस्तु, मोटाई, तह,
(हि.) कपड़े के लपटने या मोड़ने पर हर भाग
[क्रि०] में पड़ने वाला मोड़।
(ब्र.भा.) पड़ता है, पड़ती है।

परतन्त्र = का०, १६३।
[वि०] पराश्रित, दूसरे के सहारे रहने वाला,
(सं.) पराधीन, परवश।

परताप = चि०, ५४।
[सं० पु०] पौरुष, मर्दानगी, वीरता, शक्ति, आतंक,
(हि.) मंदार का वृक्ष, रामचंद्र के सखा का नाम। ताप, गर्मी, युवराज का छत्र।

परदा = आं०, ३३, का० कु०, ६२, १२२,
[सं० पु०] १२४। का०, ५३, ६६, ६७। प्रे०,
(फा०) १६।
आड़ करने के लिये लटकाया हुआ कपड़ा, चिक। व्यवधान, रोक, ओट,

ओझल, छिपाव। आड़ में रखने का नियम, तल, तह, परदा, वह झिल्ली या चमड़ा जो आड़ या व्यवधान के के लिये हो। पतवार।

परदेशी = का०, २०६।
[वि०] देखिये विदेशी, अपने देश से भिन्न
(सं) देश का।

परदेसी = का०, १७८। झ०, ९१।
[वि०] (सं.) देखिये 'परदेशी'।

परन्तु = का०, १०४।
[अ०] लेकिन, किन्तु, दो चीजों को अलग
(सं०) करने वाला चिह्न।

परन = चि०, १५८।
[सं० पु०] (हि.) प्रतिज्ञा, टेक, पक्ष।

परनारी = चि०, ४६।
[सं०स्त्री०] (सं.) परायी स्त्री, दूसरे की स्त्री।

परंपरा = का, ७५।
[सं०स्त्री०] (सं०) चाल, वंशानुक्रमत्व। प्रथा।

परंपरागत = का०, ११५।
[वि०] (सं.) परंपरा से प्राप्त या आया हुआ।

परपीर = चि०, ५७।
[सं० स्त्री० (हि.) दूसरे का दुख। पराई पीड़ा।

परम = का० कु०, २१, २२, का०, २०, २६,
[वि०] १२१, १७१। चि०, ५७, ७३, १४६,
(सं) १७३, १८६। झ०, ६३। प्रे०, २१,
२२। म०, १२।
जिससे अधिक या आगे और कोई न हो। सबसे बढ़कर उत्कृष्ट सर्वश्रेष्ठ, मुख्य, प्रधान। आद्य, आदिम।

परम गुरू = क०, १२।
[सं० पु०] सबका गुरु, सर्व श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ज्ञानी,
(सं.) ईश्वर।

परम-धार्मिक= चि०, ६०।
[वि०] (सं.) सर्वश्रेष्ठ धार्मिक।

परम-पिता = म०, १८।
[सं० पु०] (सं.) ईश्वर।

परमा = चि०, ५४।
[वि०] अत्यधिक, श्रेष्ठतमा।

परमाणु = का० कु०, २६, का०, ४८, ७२,
[सं० पु०] १२५, २००, ३५२, झ०, २८। ल०
(सं०) ६३।
पृथ्वी, जल, तेज और वायु इन चार भूतों का वह छोटे से छोटा भाग पुनः जिसके विभाग नहीं हो सकते। अत्यन्त सूक्ष्म अणु, किसी तत्व का वह सूक्ष्म भाग जिसका विभाग न हो सकता हो।

परमाणु-पुंज= का०, १५७।
[सं० पु०] (सं.) परमाणुओं का समूह। घनीभूत परमाणु।

परमात्मा = का० कु०, ६, १२०।
[सं० पु०] (सं.) ईश्वर।

परमात्मा-प्रभुता= का० कु०, ९४।
[सं० स्त्री०] (सं) ईश्वर की सत्ता, ईश्वर की महत्ता।

परमानन्द = झ०, २८।
[सं० पु०] (सं.) सर्वोत्कृष्ट आनन्द।

परमानन्दमय = का० कु०, १२५।
[वि०] (सं.) परमानन्द से पूर्ण।

परमारथ = चि०, ११५।
[सं० पु०] सर्वोत्कृष्ट सत्य, आत्मज्ञान, जीव और
(सं.) ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान, कोई भी उत्तम आवश्यक वस्तु परमार्थ।

परमेश्वर = चि०, १५३।
[सं० पु०] (सं०) सर्वश्रेष्ठ सत्ता, भगवान।

परमोज्वल = का० कु०, १२५।
[वि०] (सं.) अति स्वच्छ, अति सुन्दर, महान।

परलोक = आं०, ५७। का०, १५४, १९०।
[सं० पु०] दूसरा लोक, शरीर छोड़ने के बाद
(सं.) मिलने वाला लोक, मरणोपरान्त आत्मा को दूसरी स्थिति की प्राप्ति का स्थान।

परवशता = का०, ६६, १५४। क०, १६०। आं०,
[सं० स्त्री०] ५७।
(सं.) परतंत्रता, पराधीनता, परमुखापेक्षित्व।

परवाह = चि०, १७१। प्रे० २।

[सं० स्त्री०] चिन्ता, व्यग्रता, खटका, आशंका, ध्यान,
(फा.) आसरा, भरोसा।
[सं० स्त्री०] (हि.) बहाना, धारा में छोड़ना।
परस = आं०, ३६। का०, ३६। चि०, ४,
[पू० कि०] १८१।
(हि.) स्पर्श कर, छूकर।
परस्पर = का०, १६४। चि०, ६२, ७३, ७५।
[क्रि० वि०] प्रे०, ८।
(सं.) एक साथ, आपस में।
परसत = चि०, ११, ६६।
[क्रि०] (हि.) स्पर्श करते हैं। छूते हैं।
परसि = चि०, ४, ५, ११, ६८, १७५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) स्पर्श कर, छूकर।
परसित = चि०, ६२।
[वि०] (ब्र. भा.) स्पर्श किया, छुआ हुआ।
परा = का० कु०, ६४।
[सं० स्त्री०] चार प्रकार की वाणियों में नाद स्वरूप
(सं.) वाणी। परमार्थ बोधक की विद्या।
ब्रह्म विद्या।
पराई = का०, २८६।
[वि०] (हि.) दूसरे की, अन्य की। दूसरी।
पराग = का० कु०, ३४, १०४। का०, ११.
[सं० पु० २३, ४८, १६८, १७६, १७७, १८२,
(सं.) २६२, २६१। चि०, २, ५, ६, १४६,
१५४, १५६। भ्रं०, ७६। म०, ३।
फूलों के लंबे केसरों पर जमी हुई धूल
या रज। पुष्प रज, नहाने के पहले
शरीर में मलने वाला चूर्ण। चंदन,
अंगराग।
परागमय = का० कु०, ३७।
[वि०] पराग से युक्त, जिसमें पराग हो पराग
(सं.) से भरा हुआ। दे० —'पराग'।
पराग-सी = का०, ३६।
[वि०] पराग के समान। सुगंधित सूक्ष्म द्रव
(हि.) कण। अतिशय सौन्दर्य एवं सुकुमारता
का बोधक।

परागहि = चि०, ११।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) पराग को।
पराजय = का०, ५६। चि०, ६७। ल०, ४७।
[सं० पु०] हार, पराभव, शत्रु का मातखाना।
(सं.) हार जाने की क्रिया का भाव।
पराजित = का०, ७, ३३। चि०, ५। ल०, ५२,
[वि०] ७५।
(सं.) हारा हुआ।
पराधीनता = ल०, ७४।
[सं० स्त्री०] (हि.) परवशता, परतन्त्रता, परमुखापेक्षिता।
पराया = का०, २८७।
[वि०] दूसरा, अन्य का, जो अपना न हो।
(हि.) दूसरा, गैर।
पराये = का०, २०६।
[सं० पु०] (हि.) दूसरे, अन्य।
पराशक्ति = चि०, ७२।
[सं० स्त्री०] अलौकिक शक्ति, परा विद्या के द्वारा
(सं.) प्राप्त शक्ति, अद्वितीय शक्ति।
परि = चि०, १४३।
[अ०] एक संस्कृत उपसर्ग, जो शब्दों के
(सं.) पहले लगकर उनमें निम्न अर्थ बढ़ाता
है—चारों ओर, अच्छी तरह, अतिशय
पूर्णता, दूषण।
परिकर = का०, १७१।
[सं० पु०] पर्यंक, पलंग, परिवार, समूह, झुण्ड,
(सं.) अनुचर वर्ग, कमर बंद, पटका।
परिकर-सा = का०, १२४।
[वि० पु०] (हि.) परिकर के समान। दे० —परिकर।
परिचय = आं०, १८, ६२, ६७। का० कु०, ६८।
[सं० पु०] का०, २७। भ्रं०, ११।
(सं.) जानकारी, अभिज्ञता, पहचान, लक्षण,
किसी व्यक्ति के नाम-धाम गुण कर्म
आदि से संबंध रखने वाली सब या कुछ
बातें जो किसी को बतलाई जायँ।
जान-पहचान।
परिचारक = म०, १८।

[वि०] (सं.) परिचय करने वाला ।

परिचालित = का०, २६८ ।

[वि०] (सं.) चलाया हुआ, हिलाया हुआ ।

परिचित = क०, २८ । का०, कु०, ७२ । का०, ८१ । भ्र०, ४० । प्रे०, ८, १०, १३, १४ । म०, १८ ।

[वि०] (सं.) जाना हुआ, ज्ञात, जिसका या जिससे परिचय हो, जिससे जान-पहचान हो ।

परिचित-सा = का०, ३५ ।

[वि०] (हि.) पहचाना हुआ सा ।

परिचित-से = आं०, १६ ।

[वि०] (हि.) पहचाने हुए से ।

परिणत = का०, २४५ ।

[वि०] (सं.) एक रूप से दूसरे रूप में आया हुआ । रूपांतरित, पका या पचा हुआ ।

परिणति = आं०, ४६, ६२ । का०, १६३ । चि०, ५४ ।

[सं० स्त्री०] (सं.) रूप में परिवर्तन होना, परिपाक, प्रौढ़ता पुष्टि, समाप्ति, अंत ।

परिणाम = का०, ५३, ५४, ७५, ६३ । भ्र०, ७६ । ल०, ४४ ।

[सं० पु०] (सं.) बदलने का भाव या कार्य, विकार, रूपान्तर, विकास, वृद्धि, परिपुष्टि, समाप्त होना, बीतना, किसी कार्य के अंत में उसके फलस्वरूप होनेवाला कार्य, नतीजा, फल ।

परिणाम-स्थिति = प्रे०, २३ ।

[सं० स्त्री०] (सं.) फल प्राप्ति की अवस्था ।

परितृप्त = चि०, २५ ।

[वि०] (सं.) हर प्रकार से संतुष्ट । जिसको अत्यधिक संतोष प्राप्त हो चुका हो ।

परितापित = प्रे०, २२ ।

[वि०] (सं.) दुःखी, संतप्त, जलता हुआ ।

परितोष = भ्र०, ६४ ।

[सं० पु०] (सं.) संतोष, जिसके बाद सामयिक शांति का अनुभव हो । तुष्टि ।

परितोषों = का०, २७१ ।

[सं० पु०] (सं.) 'परितोष' का बहुवचन । दे० 'परितोष' ।

परिधान = का०, ४६ ।

[सं० पु०] (सं.) वस्त्र, पोषाक, पहनावा, पहनने का वस्त्र ।

परिधि = का०, ८६, ६० ।

[सं० स्त्री०] (सं.) वृत्त को घेरनेवाली रेखा, नियत अथवा नियमित और प्रायः गोलाकार वह मार्ग जिसपर कोई चीज़ चलती-घूमती या चक्कर लगाती है । परिधान । सीमा ।

परिनाम = चि०, १८३ ।

[सं०पु०] (ब्र.) देखें 'परिणाम' ।

परिनीता = म०, ११ ।

[वि०] (ब्र. भा.) परिणीता, विवाहिता ।

परिपाटी = का०, २६४ ।

[सं०स्त्री०] (सं.) क्रम । सिल-सिला । चली आई हुई प्रणाली । पद्धति । शैली । रीति । प्रथा ।

परिपालक = क०, ३१ ।

[सं० पु०] (सं.) हर प्रकार से पालन करने वाला ।

परिपूर = चि०, २, २३ ।

[वि०] (ब्र.भा.) परिपूरित, अच्छी तरह से भरा हुआ । पूर्ण तृप्त, समाप्त किया हुआ ।

परिपूरित = चि०, १८० ।

[वि०] (ब्र.भा.) दे० 'परिपूर' ।

परिपूर्ण = का० कु०, ५ ।

[वि०] (सं.) दे० 'परिपूर' ।

परिभाषा = का०, १६०, १८५ ।

[सं०स्त्री०] (सं.) किसी शब्द या पद का अर्थ या भाव प्रकट करने वाला स्पष्ट कथन । व्याख्या । वह शब्द जो किसी शास्त्र या विज्ञान में किसी एक कार्य या भाव का सूचक मान लिया गया हो तो जैसे जीव विज्ञान की परिभाषा (टेक्निकल टर्म) । किसी शब्द की वह व्याख्या या स्पष्टीकरण, जिससे उसकी विशेषता और व्याप्ति पूरी तरह से निश्चित या स्पष्ट हो जाय ।

परिमल = क०, १५, का० कु०, ३७, ५७, ६६,

सं० पु०] ८३ । का०, १६८, १९१, २९२,
सं.) २९४ । चि०, ५ । भ्रु०, ११, २८,
३९, ४५, ५५, ५६, १५८, १७३ ।
सुवास, सुगन्ध ।

परिमल-घूँघट = ल०, २५ ।
[सं० स्त्री०] परिमल रूपी घूँघट । परिमल से आव-
(हि.) रित । सुगन्धित ।

परिमल-परिपूरित=चि०, १०५ ।
[वि०] (सं०) सुगन्धित । सुवासित । परिमल से पूर्ण ।

परिमलपूर = चि०, ५६, ६९ ।
[वि०] (ब्र.भा.) सुगन्धित, सुवासित । परिमल से पूर्ण ।

परिमल-पूरित= भ्रु०, ५ ।
[वि०] (ब्र.भा.) दे० 'परिमलपूर' ।

परिमलमयमन्यो=चि०, १३२ ।
[वि०] (सं.) सुवासितों में श्रेष्ठ ।

परिमल-मिलित=क०, २५ ।
[वि०] (सं.) सुगन्धि से सना हुआ ।

परिमलवाही = प्रे०, ६ ।
[वि०] (सं.) सुगंधि वाहक (वायु) (भ्रमर) ।

परिमल-सा = क०, ८ ।
[वि०] (हि.) परिमल के समान ।

परिमित = का०, २७० । भ्रु०, ४१, प्रे०, १६,
[वि०] २४ ।
(सं०) सीमित ।

परिमितता = ल०, ३३ ।
[सं० स्त्री०] (सं) ससीमता । सीमित होने का भाव ।

परिमिलित = का० कु०, ५५ ।
[वि०] (सं.) विशेषतया मिली हुई । हर प्रकार से
सम्मिलित ।

परिरम्भ = आं०, २७ ।
[सं० पु०] (सं.) आलिंगन, गले या छाती से लगा कर
मिलना ।

परिवर्तित = का०, १६१ ।
[वि०] (सं.) बदला हुआ ।

परिवर्तन = क०, २८ । का०, २१, ५५, १२९,
१५९, १६६, १७७, १९०, २४९,
२५३, २७०, २९१ । चि०, ७५ ।
भ्रु०, ५५ । प्रे०, २२, म०, १७ ।
ल०, ४९, ७४ ।
[सं० पु०] (सं.) घुमाव, चक्कर, कुछ घटा बढ़ा कर रूप
बदलना । उलटफेर, एक चीज के
बदले में दूसरी चीज लेना या देना ।
विनिमय, तबादला ।

परिवर्तनमय = का०, २३६ ।
[वि०] (सं.) परिवर्तनशील ।

परिवर्तनशीलता = का०, १३ ।
[सं० पु०] (हि.) बदलने का भाव ।

परिवर्धमान = चि०, १३२ ।
[वि०] बढ़ा हुआ । बढ़ता हुआ, उन्नतिशील,
(हि.) उन्नतोन्मुखी ।

परिवर्द्धित = प्रे०, १ ।
[वि०] (सं.) दे० 'परिवर्धमान' ।

परिवार = का०, कु०, ११५ । का०, २१६ ।
(सं० पु०) कुटुम्ब, आवरण, म्यान, कोष, किसी
(सं.) राजा या रईस के साथ उसे घेर कर
चलने वाले लोग, परिषद, घर के लोग,
वंश, खानदान, बाल बच्चे, एक ही
तरह की वस्तुओं का वर्ग, कुल,
जाति ।

परिवारी = ल०, ७८ ।
[वि०] (सं०) परिवारवाला ।

परिवेष्टित = चि०, १४५ ।
[वि०] (सं.) घिरा हुआ, सुशोभित ।

परिश्रम = का० कु०, १३ । का०, ६३, १८२ ।
[सं० पु०] भ्रु०, २६ । प्रे०, ७ ।
(सं.) ऐसा काम जिसे करते-करते थकावट
आने लगे । श्रम । मेहनत । थकावट ।

परिषदें = ल०, १२ ।
[सं० स्त्री०] विद्वान् ब्राह्मणों की वे सर्व मान्य सभाएँ

(सं.) जिसे प्राचीन काल में राजा किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिए बुलाता था। सभा, समाज चुने हुए या नियुक्त किए हुए सदस्यों की सभाएँ।

परिस्थितियों = का० २८६।
[सं० स्त्री०] किसी घटना, कार्य आदि के आसपास
(सं.) या चारो ओर की वास्तविक या तर्क संगत स्थिति या अवस्था। वे बातें या अवस्थाएँ जो किसी व्यक्ति या घटना के चारो ओर होती या रहती हैं।

परिहास = का० ६८, झ०, ३३।
[सं० पु०] हँसी, दिल्लगी, ईर्ष्या, डाह, निन्दा
(सं.) उपहास, व्यंग्य।

परिहासपूर्ण = का०, २६३।
[वि०] (सं.) परिहास से भरा हुआ। व्यंगपूर्ण।

परिहास भरी = का०, ६६।
[वि०] (हि.) दे० परिहास पूर्ण।

परिहास-शील = ल०, ६८।
[वि०] (सं.) परिहास्य।

परित्राण = का०, १८५, १८६।
[सं० पु०] (सं.) रक्षा।

परीक्षक = प्रे०, २१।
[सं० पु०] (सं.) परखने वाला। परीक्षा लेने वाला।

परीक्षा = झ० ५३।
[सं० पु०] हस्तलाघव, योग्यता, विशेषता, सामर्थ्य,
(सं.) गुण आदि जानने के लिए अच्छी तरह से देखने या परखने की क्रिया का भाव। समीक्षा। वह प्रयोग जो किसी वस्तु के गुण-दोष आदि का अनुभव करने के लिए हो, आजमाइस। वह प्रक्रिया जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का पता लगाते थे। जाँच-पड़ताल, देखभाल।

परे = का० कु०, ६४। का०, ११७, २१६।
[अ०] चि०, १५, ६५, १५३, १५६, १८४।
(सं.) अलग। उस ओर, उधर दूर, ऊपर, आगे, बाद।

परै = चि०, १६, २२, २३, २४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पड़े, गिरे।

पर्जन्य = का० कु०, ११२।
[सं० पु०] (सं.) बादल, मेघ।

पर्ण = प्रे०, १०।
[सं० पु०] (सं.) पत्ता, पान।

पर्ण-कुटीर = का० कु०, ५७, ६६, १००, १०१।
[सं० पु०] प्रे०, ४।
(सं.) पत्तों से बनी कुटी। झोपड़ी।

पर्णमय = का०, १४६।
[वि०] (सं.) पत्तों से ढका हुआ। पत्तों का बना हुआ।

पर्दा = झ०, ४५।
[सं० पु०] पट, आवरण। खिड़की, दरवाजों पर
(हि.) लटकाया जाने वाला वस्त्र।

पर्य्यटन = चि०, ३२।
[सं० पु०] (सं.) भ्रमण। घूमना-फिरना। देशाटन।

पर्याप्त = का० कु०, १११।
[वि०] (सं.) अधिक, काफी, काम भर। आवश्यकता पूर्ति के अनुरूप।

पर्व = आं, २४, प्रे०, ८।
[सं० पु०] उत्सव, चातुर्मास्य। ग्रंथ का विभाग
(सं.) या खण्ड। त्यौहार। व्रत।

पर्वत = म०, २२।
[सं० पु०] = पहाड़।

पल = आं०, २३, ४७। का०, ८४, १३५, १६०,
[सं. पु.] १६१, १६२, २१३, २६०। ल०, ४६।
(सं.) समय का एक सूक्ष्म भाग जो २५ सेकेण्ड के बराबर होता है। क्षण। तराजू, एक पुरानी तौल का मान।

पलक = आं०, ३२। का० कु०, ६२। का० १२०,
[सं० स्त्री०] १७७। झ०, ३१। ल० ४७।
(सं.) आँख के ऊपर के चमड़े का परदा।

पलकन = चि०, ८, ७२।

(ब्र. भा.) पलक का बहुवचन।

पलकों = आं०, ११, ४७, ७१। का०, २८६।
[सं० स्त्री०] ल०, ४७।
(सं.) पलक का बहुवचन।

पलने = ल० ७४।
[क्रि०] पाल-पोसकर बड़ा करने। बच्चों को
(हि.) झूलाने वाला झूला।

पल-पल = का०, ३३, ५५, १३६, १६५।
[अ०] (हि.) प्रति-क्षण।

पलित = का० कु०, १०६। का०, १८०, २४३।
[क्रि०] (हि०) चि०, १०१।
पोसी गयी। जिसका पालन किया गया हो।

पल्लव = आं०, ५४। का०, १२७, २१०, २८१। ल०, ४०।
[सं०पु०] (सं.) कोपल। नया निकला हुआ कोमल पत्ता। हाथ में पहनने का कंगना।

पल्लवित = का० कु०, ३४ चि०, १४६, १५०।
[वि०] (हि.) हरा-भरा, नयी कोपलों से युक्त हरा-भरा। जिसे रोमांच हुआ हो।

पवन = क०, ८, ६, १४, १५। का० कु०,
[सं०पु०] ६, ४०, ४६, ५०, ५५, ६६। का०,
(सं.) १५, १७, १६, २४, २८, २६, ३४, ४६, ४८, ८८ ८६, १०६, ११०, ११२, १२०, १६८, १८०, २५७ २५६, २६०। चि०, १५, २३, ६६, ६३, १५८। झ०, ३३, ५२। प्रे०, १०, ११, १४। म०, ७, ११, १८, १६।
वायु। चलती हुई हवा। श्वाँस। प्राण।

पवन-कण्ठ = झ०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) पवन रूपी कण्ठ। प्राण-कंठ।

पवन-तड़ित = का० कु०, २८, ४२, ६३, १०२।
वायु से सताया हुआ। जिसे पाला मार जाय।

पवन-परिमल-परिपूरित = झ०, ४८।
[वि०] (सं.) सुगन्धिवाही पवन।

पवन वेग = का०, २५७।
[सं० पु०] (सं.) वायु का तेजी। हवा की गति।

पवन-संसृति = का० कु०, ७४।
[सं० स्त्री०] (सं.) वायुरूपी संसार।

पवन सा = का० कु०, १६, ७३।
[वि०] (हि.) हवा के समान।

पवनहू = चि० १।
[सं०] (ब्र. भा.) पवन को, पवन भी।

पवनों = का० १६०।
[सं० पु०] (हि) पवन का बहुवचन। पवन ४६ प्रकार के होते हैं।

पवमान का०, ३, ५५, २७।
[सं० पु०] (सं.) हवा। वायु। आँधी।

पवि = का० कु०, ३१।
[सं० पु०] (सं.) इन्द्र का वज्र जो दधिचि की हड्डी से बना था।

पवित्र = का० कु०, ११६, १२५। का०, ३४७,
[वि०] चि०, ५६। झ०, १६, २०। प्रे०,
(सं.) ४, १६। म०, १७६।
निर्मल, स्वच्छ। शुद्ध। शुचि।

पवित्रता = ल०, ७६।
[सं० स्त्री०] (हि.) शुचिता। निर्मलता।

पश्चिम = का०, ४६, १४२। चि०, २८, १०१,
[सं० पु०] १६३। झ०, २१। म०, ७, ल०, ५६,
(सं.) ५६।
पूर्व के सामने की दिशा। सूर्य के अस्त होने की दिशा।

पश्चिम-जलधि = ल०, ७२।
[सं० पु०] (सं.) पश्चिम का सागर।

पश्चिमहिं = चि०, २८।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) पश्चिम में। पश्चिम को।

पशु = का० कु, १६, २१, २२, २४। का०,
[सं० पु०] ८४, ८५, १११, ११६, १४७।
(सं.) चौपाया। जानवर।

पशुओं = का०, १७।
[सं० पु०] (हि.) पशु का बहुवचन।
पशुपति = चि०, ७३।
[सं० पु०] (सं.) शिव। महादेव।
पशु-सा = का०, १५१।
[वि०] (हि.) जानवर के समान।
पशुहूँ = चि०, ६३।
[ब्र. भा.] जानवर भी।
पसार = का०, १६०।
[सं० पु०] (हि.) प्रसार, फैलाव, दालान।
पसारकर = ल०, ७०।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) फैलाकर।
पसारत = चि०, १४३।
[क्रि०] (ब्र.भा.) फैलाता है।
पसारा = का०, कु०, ८६।
[क्रि०] (हि.) फैलाया।
पसारि = चि०, २३, ४२।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) फैलाकर।
पसारि कै = चि०, १४०, १७२।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) फैलाकर। प्रसारित होकर।
पसारित = चि०, ५७, १५१।
[वि०] (ब्र. भा.) प्रसारित, फैलाया हुआ।
पसारे = चि०, १५३।
[क्रि०] (हि.) फैलाये।
पहचान = क०, २८। का०, ४, १६४, १६२,
[सं० स्त्री०] २२२, २८५। चि०, ३८, १५६,
(हि.) १७६, १७७। चि०, १७६। ल०, १०
प्रे०, २२।
किसी का गुण मूल्य या योग्यता जानने की क्रिया का भाव। परिचय।
पहचानने = क०, २८। का०, ८५, २६४।
[क्रि०वि०] (हि.) किसी का गुण मूल्य या योग्यता जानने।
पहचानी-सी = का०, ४।
[वि०] (हि.) जानी-बूझी-सी।
पहन = क०, १३।
[पूर्व० क्रि०] शरीर पर धारण कर।
पहनते = ल०, ७७।
[क्रि०] (हि.) शरीर पर धारण करते।
पहनना = क०, १०। का० कु०, ३६। का०,६८।
[क्रि०] ल०, १८, ७८।
(हि.) शरीर पर धारण करना।
पहनाते = आं०, ३७।
[क्रि०] (हि.) शरीर पर धारण कराते।
पहने = आं०, ६०। का०, १२१, २५२।
[क्रि०] ल०, ३७।
(हि.) शरीर पर धारण किये।
पहर = का०, ४१। प्रे०, १२।
[सं० पु०] पूरे दिन का आठवाँ भाग, तीन घण्टे
(हि) का समय।
पहरों = आं०, ३१। का०, ६३, ७०।
[सं० पु०] (हि.) पहर का विशेषण।
पहल = भ्रु०, ७३।
[सं० पु०] बगल। पहलू। पृष्ठ। जमी हुई रूई अथवा
(फा.) ऊन। किसी घन पदार्थ की सतह। तह।
पहला = का० ३१, ७२, १६३।
[सं० पु०] (हि०) प्रथम। आरम्भका।
पहली = का० कु०, ७३, का०, ५,४७। ल०,७३।
[वि०] (हि.) दे० पहला।
पहले = आ०, १७। क०, ६, १६, २५। का,०
[वि०] कु०, ११६,११७। का०, १०६, १६७,
(हि.) चि०, १०१, १६०। प्रे० ७,२०। १७७।
पूर्व। प्रथमही।
पहली = का०, ४७, ल०, ७३।
[वि०] (हि.) आरम्भ की।
पहाड़ी = का० कु०, ६६।
[वि०] (हि.) पहाड़ पर रहने वाला। पहाड़ का।
पहाड़ी-रागिनी = भ्रु०, ५२।
[सं० स्त्री०] पहाड़ पर के लोगों का गीत। पर्वत का
(हि.) प्राकृतिक संगीत। एक रागिनी का नाम।
पहिरतही = चि०, ७५।
(ब्र. भा) पहनते ही।
पहिराई = चि०, ७१।

[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) पहनाकर।

पहिरावत = चि०, ४२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पहिनाता है। पोशाक पहिनाता है।

पहिरावहीं = चि० ७०।
[क्रि०] (ब्र भा.) पहिनाते हैं।

पहिरि = चि०, ७०।
[पूर्व० क्रि०](ब्र.भा.) पहनकर।

पहिले = चि०, १०१। ल०, १०।
[वि०] (हि,) दे० पहिली।

पहुँच (पहुँचकर)=का०, ८४, २०१, २७६। ल०, ६६,
[पूर्व० क्रि०] एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर
(हि.) आकर।

पहुँचा = का०, २६१। प्रे०, १५। म०, १५।
[क्रि०] ल०, १७, ७२।
(हि.) कलायी। बाह। पहुँचना क्रिया का भूत कालिक पुलिंग रूप।

पहुँचाना = का०, ७७। प्रे०, १६।
[क्रि०] एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाना।

पहुँची = का०, १८२, २१३, २१४। चि०,५८।
[क्रि०] पहुँचना का भूतकालिक स्त्रीलिंग रूप।
(हि.) कलाई पर पहनने का एक गहना। युद्ध मे कलाई पर पहना जाने वाला एक आवरण।

पहेली = का०, २११, २२६।
[सं० स्त्री०] घुमाव-फिराव की बात। समस्या।
(हि.) बुझौवल। ऐसी जटिल बात जो जल्दी किसी के समझ न आवे।

पहेली-सा = का०, ४६।
[वि०] = बुझौवल के समान जटिल।

पाण्डव = चि०, ४८। का० कु०, ११२, ११३।
[सं० पु०] (सं.) राजा पांडु के पुत्र।

पाखंड = क०, १० का० ४८।
[सं० पु०] वेद विरुद्ध आचरण, आडंबर, धूर्तता,
(हि.) चालाकी।

पाँखें = का० २५।
[सं० पु०] (हि.) पक्षी के पर, डैनें या पंख।

पाण्डवहिं = चि०, ४१।
[सं० पु० (ब्र. भा.) पांडवों को।

पाण्डित्य = म०, १४।
[सं० पु०] (सं.) पण्डिताई, प्रवीणता। विद्वत्ता।

पाँच = चि०, ६३।
[वि०] (हि.) चार के बाद की संख्या।

पा = का०, १७।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) प्राप्त कर।

पाईंबाग = भ्रु०, ५१।
[सं० पु०] महलों में चारों ओर बना हुआ बगीचा
(फा०) या छोटा बाग जिसमें राजा-परिवार की स्त्रियाँ रहती हैं। अन्तःपुर का उपवन।

पाऊँ = आं०, ६६।
[क्रि०] (हि.) प्राप्त करूँ।

पाऊँगा = आं० ४३।
[क्रि०] (हि.) 'पाना' का भविष्यत्कालिक रूप।

पाऊँगी = का०, २१२।
[क्रि०] 'पाना' क्रिया का भविष्यत्कालिक स्त्री-
(हि) लिङ्ग रूप।

पाओ = का०, १३२।
[क्रि०] (हि.) प्राप्त किया।

पाओगे = आं०, ५१। का० १३३।
[क्रि०] (हि.) प्राप्त करोगे।

पाक = का०, ३२।
[सं० पु०] भोजन बनाने की क्रिया। पकाने की
(सं.) क्रिया, श्राद्ध यज्ञादि के हेतु बनाई गई खीर या अन्य भोज्य पदार्थ।

[वि०] शुद्ध, जिसका कोई अंश शेष न हो।
(फा.) स्वच्छ, साफ।

पाकर = आं०, १५, ६०, ६२। का० कु, २२,
[क्रि०] ३३, ३४, ६१, ८१, ८३, ६८।
(हि.) का०, ११८, १३४। भ्रु०, २१, २३, ४२, ५१।
'पाना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप।

पागल = का० १२६, १५८, १७० २०१ । ल० १७, २१, २६, ३७, ४७, ५६ ।
[वि०] (सं.) जिसका दिमाग खराब हो गया हो । विक्षिप्त, नासमझ ।

पागी = चि० ५६ ।
[वि०] (ब्र.भा) पगी हुई, सराबोर ।
[क्रि०] (हि.) गुड़ या चीनी में किसी वस्तु को पागने
(ब्र भा.) का भाव ।

पागे = चि० ६३ ।
[वि०] ब्र.भा. सरस बने, तन्मय हुए ।
[क्रि०] (हि.) 'पागना' का वर्तमान कालिक रूप ।

पागै = चि०, ५७ ।
[क्रि०] (ब्र.भा) 'पागना' का वर्तमानकालिक रूप ।

पाग्यो = चि०, ६७ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) पागना' का भू० का० रूप ।

पाजाना = क०, २६ । का० कु०, ७१ ।
[क्रि०] (हि.) प्राप्त कर लेना या गंतव्य या इष्ट तक पहुँचने का भाव ।

पाठ = चि०, ६३ ।
[स० पु०] (सं.) पढ़ने की क्रिया एवं भाव ।

पाणि-पाद-मय= का०, २६७ ।
[वि० पु०] (हि.) हाथ, पैर से युक्त । (मनुजाकृत) ।

पात = का०, १६ । चि०, ७०, १४२, १५६, १७१ । ल०, २५, ३१ ।
[सं० पु०] (हि.) पत्ते, पत्र । पतन ।

पातकी = चि०, १५५ ।
[वि०] (हि.) पापी, निकृष्ट ।

पाता = क०, १४, २२ । प्रे०, १०, १३, १४ ।
[क्रि०] (हि.) का० २८२ । ल० १८ । प्राप्त करते ।

पाताल = का० कु०, १२१ ।
[सं० पु०] (सं.) नीचे के सात लोकों में से अन्तिम लोक का नाम । छन्द शास्त्र में वह चक्र जिससे मात्रिक छन्द की संख्या, लघु, गुरु, की कला आदि का ज्ञान होता है ।

पाती = आं०, ७८ । का० कु०, ३६, ५४, [क्रि०] का०, २०, १७५, २३७, २४० ।
(हि.) चि०, ७१ । प्रे०, २१ । ल०, ४६ । 'पाना' का वर्तमान कालिक रूप ।

पाते = क०, १४, २२ । प्रे०, १०, १३, १४ ।
[क्रि०] (हि.) 'पाना' का वर्तमान कालिक रूप ।

पाते थे = का०, ३२ ।
[क्रि०] (हि.) पात्र का भूत कालिक रूप ।

पात्र = आं०, २८ । का० कु०, ७, ११५ ।
[सं० पु०] ल०, १७ । का० १३४, २७० ।
(सं.) भ्र०, ३८ । बर्त्तन ।

पात्र-मय-सा = का०, १८ ।
[वि०] (सं.) पात्र के समान ।

पार्थ = का० कु०, ११२, ११५, ११७, १३३ ।
[सं० पु०] चि० ३५ ।
(सं.) अर्जुन ।

पाथेय = भ्र०, ३८, ल०, ११ ।
[सं०पु०] वह खाद्य पदार्थ जो रास्ते में काम आता
(सं.) है । राह खर्च । कन्या राशि ।

पाद = का० कु०, २६ । का०, २५३ ।
[सं० पु०] चरण, पैर । मन्त्र, श्लोक । किसी
(सं.) वस्तुका चौथाई भाग । शिव । किरण ।
एक ऋषि का नाम । अपान वायु ।

पादप = चि०, ६६ । ल०, १२ ।
[सं०पु०] (सं.) वृक्ष । पेड़ ।

पाद-पूर्ति-सा= म०, १४ ।
[वि०] (हि.) चरण की पूर्ति करने के समान ।

पान = का० कु०, ३४ । का०, ११७ । चि०
[सं०पु०] १००, भ्र०, ७७ । त० ६६ ।
(सं.) पीना ।

पान करत = चि०, ७३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पीते हैं ।

पान-पात्र = म०, १४ ।
[सं०पु०] (सं.) पीने का बर्त्तन । गिलास आदि ।

पाना = का०, ७७, ६३, ६४, १०१ २२८, २३० । भ्र०, ५ । म०, ५ ।

[क्रि०] (हि.) प्राप्त करना, मिलना।

पानी = का० १५२, २७१, २८४। चि०, ५७।
[सं० पु०] ल०, ५१।
(हि.) जल।

पानी-सा = भ्र०, ४०।
[सं० पु०](हि.) पानी के सदृश।

पाने = का० कु०, २४। का०, १२३, १५४,
[क्रि०] १६२, १८५, १६४।
(हि.) पाना क्रिया का एक रूप।

पान्थ = का०, ११६, १६३। चि०, १४०।
[सं०पु०] (हि.) पथिक। वियोगी। विरही।

पाप = का० कु०, ११३। का०, ५, १८१,
[सं०पु०] (सं.) १६१, २६४। चि०, ३८, १८५।
भ्र०, ७८।
बुरा कार्य। अधर्म।

पाप घनेरे = चि० ७४।
[सं०पु०](ब्र.भा.) बहुत से पाप।

पाप-पुण्य = आं, ७४, का० २५४।
[सं०पु०] (सं.) सत्कार्य और दुष्कार्य।

पापन = चि०, १५३।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) पाप का बहुवचन।

पापी = का०, २६८।
[वि०] (हि.) पाप करने वाला।

पामर = चि०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) नीच।

पाँयन = चि०, ३६।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) पैर।

पाय = आं०, ७४। का० कु०, ३५। चि०,
[पूर्व० क्रि०] ४, ५८, ७२, १४१, १७२, १८२।
(ब्र. भा.) पाकर।

पाया = क०, ३०। का० कु०, ७३। का०,
[क्रि०] १६२, १६३, १७२, २४१, २५६।
(हि.) प्रे०, २१, ३४, ४६।
सामान्य भूत में पाना क्रिया का रूप।

पायो = चि०, ८१८, ५३, ५८, ५६, ६१, ७१,
[क्रि०] १६४।
(ब्र. भा.) प्राप्त किया।

पार = आं०, ४०। क०, ३१। का० कु०, ३,
[सं० पु०] ८। का०, ३६, १७५, १७७, २५१।
(हि.) चि०, ३०, १५३, १८७। भ्र०, ४२।
प्रे०, १०। ल०, ३४, ३७।
नदी या समुद्र का सामने वाला तट,
किसी वस्तु के आगे या सामने की ओर।
अन्त, शिरा।

पारत = चि०, २३।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) पारा, पारद।

पारदर्शिका = ल०, ४३।
[वि०] (सं.) दूर तक देखनेवाली।

पारदर्शिनी = का०, २६२।
[वि०] (सं.) दूरदर्शिणी।

पारदर्शी = का० १७८।
[वि०] (सं.) दूरदर्शी।

पारावार = आं०, ४२। का०, ८। ल०, ४४, ५७।
[सं० पु०] (सं.) समुद्र।

पारिजात = का० कु०, १०४।
[सं० पु०] (सं.) एक देव वृक्ष का नाम जो स्वर्ग लोग में इन्द्र के कानन में है। यह समुद्र मन्थन के समय निकला था। हरसिंगार।

पारिजात-कानन = का०, २२४।
[सं० पु०] (सं.) परजाता का जंगल। परजाता का बन। हरसिंगार का जंगल।

पार्थिव = ल०, १२।
[वि०] (सं०) मिट्टी का। पृथ्वी सम्बन्धी (स०) एक सम्वत्सर। मिट्टी का शिवलिंग।

पार्श्व = का०, २७७।
[सं० पु०] (सं.) शरीर के बगलों के नीचे का भाग जहाँ पशलियां है। टेढ़ी चाल। बगल। कोंख।

पाल = का० कु० ३६।
[सं० पु०] (सं.) रक्षक। रखाला। बंगाल का प्रसिद्ध राजवश। पालकी, गाड़ी। तंबू। पोला।

नाव को तीव्रगामिनी बनाने के लिये टंगा हुआ पर्दा।

पालक = चि०, ५, ६, ६४, ६८. ७१, ७३,७४।
[सं० पु०] (सं.) पालने वाला। पालनहार।

पालत = चि०, १०६, १५३।
[क्रि०] (हि.) पालन करता है।

पालन = आं० २२। क०, १२, १५। का०, १११, १४७ २४३। चि०, ६०, ६६,।
[सं० पु०] (सं) भोजन वस्त्र आदि द्वारा की जाने वाली रक्षा। भरण-पोषण।

पालन को = चि०, ६४।
[क्रि० वि०](ब्र.भा.) पालने के लिये।

पाल्यो = चि०, ५८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पालन करो या पालन किया।

पावक = आं०, ३८। का० कु०, २४। का०, २७३। चि०, ४०।
[सं० पु०] (सं.) अग्नि, अनल।

पावत = चि०, ४, २२, ३०, १६६, १७२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्राप्त करता है।

पावन = आं०, २४, ३६, ६१, १, ६८, ७४।
[वि०] का० कु०, ६४, ६५, ६७। का०,
(सं.) १६०, २२४, २५४, २७६, २८०। चि०, १२३, १२५। भ्रू०, ७७।
पवित्र।

पावस = का०, १७। चि० १६३। ल० ३३।
[सं०पु०] (सं.) वर्षा ऋतु।

पावस-काल = का० कु०, ७५।
[सं०पु०] (सं.) वर्षा का समय।

पावस-निर्झर = का०, २३८।
[सं० पु०] (सं.) बरसाती झरना।

पावस-प्रभात = भ्रू०, २५।
[सं०पु०] (स.) वर्षा का सबेरा।

पावस-भूप = का० कु०, ५२।
[सं० पु०] वर्षा ऋतु रूपी राजा।

पावस-रजनी = का०, १५८।
[सं०स्त्री०](सं.) वर्षा की रात।

पावही = चि०, ५१, १०१।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्राप्त करते हैं।

पावेगा = का०, १२४। चि०, १५५। प्रे०, २५।
[क्रि०] ल०, ११।
(ब्र. भा.) प्राप्त करेगा।

पावै = आँ, ७४। क० ३१। का० ११६, १३०।
[क्रि०] चि०, १५३, १६२, १८७, १६०।
(ब्र.भा.) प्राप्त किया।

पावैगी = प्रे०, २।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्राप्त करेगी।

पाश = का०, ८१।
[सं०पु०] (सं०) बन्धन, जाल।

पाषाण-हृदय = चि०, ७२, म०, २२।
[वि०] (सं.) कठोर हृदय।

पाषाणी = का०, २६४।
[वि०] (सं.) पाषाणमयी।

पास = क०, १३, १६, ३०। का० कु०, ३३, ३६, ४५, ६०, ६७, ६८। का०, १६, ३१, ३३, ३६, ४७, ५७, ६७, ८४, ८५, १६४, १६५, १६६, २१३, २३४, २६४। चि०, ५, १६, १०७, १४७, १५७। भ्रू०, ५४, ६४। प्रे०, ४, २०। म०, १२, १७, २३। ल०, ४४।
(अ.) बगल, ओर, तरफ, सामीप्य, निकटता, समीपता, अधिकार, कब्जा। निकट, नजदीक।

पाहन हूं = चि०, १८४, १८६।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) पत्थर को, पत्थर भी।

पाहन = चि०, १७८।
[सं० पु०] (हि.) पत्थर।

पात्र = का०, २२८। ल०, ७५।
[सं० पु०] वह जिसमें कुछ रखा जा सके, आधार, बरतन, कुछ पाने या लेने के योग्य व्यक्ति, नाटक में अभिनय करने वाला, अभिनेता, नट, नाटक या उपन्यास का

वह व्यक्ति जिसका कथा वस्तु में कोई स्थान हो या कुछ चरित्र दिखाया गया हो।

प्यार = ल०, ७७।
[सं० पु०] (हि.) प्रेम, मुहब्बत, स्नेह, प्रेम-प्रदर्शन के लिए किये गये स्पर्श-चुंबनादि। 'पियार'। वृक्ष विशेष (चिरौंजी)।

प्यारी = चि०, ७०।
[सं० स्त्री०] (हि.) 'प्यारा' का स्त्रीलिंग। प्रिया। जिससे प्रेम किया जाय, प्रेम पात्र अच्छी लगने वाली वस्तु।

प्यारी-प्यारी = आं०, २०।
[वि०] (हि.) अच्छी। भली लगने वाली।

प्यारे = का० कु०, ५।
[सं० पु०] (हि.) प्रियतम।

प्यारो = चि० १७६।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) जिसमे प्रेम हो।
(फा.) 'प्याला' का स्त्रीलिंग।

प्याला = का० कु०, ७८।
[सं० पु०] (फा.) छोटा कटोरा, गर्भाशय, खप्पर, जुलाहों के नरी भिगोने के पात्र।

प्याली = आं०. २१, २८, ३२, ६६। का०, २७६।
[सं० स्त्री०]

प्याले = आं०, ३२।
[सं० पु०] (फा.) दे०—'प्याला' का बहुवचन।

प्यास = आं०, २८। का०, २८२। ल०, ६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) जल पीने की इच्छा, तृष्णा, पिपासा। किसी अप्राप्त को प्राप्तकरने की कामना।

प्यासे = आं०, ७१।
[वि०] (सं.) जिसे प्यास लगी हो, तृषित।

पिक = आं०, १५६। चि०, १७२। का०, २०, ५७।
[सं. स्त्री.] (सं.) कोयल।

पिकपाँती = चि०, १८०।
[स० स्त्री] (ब्र.भा.) कोयलों की पंक्ति।

पिक-पुंज = का० कु०, १३।
[सं०पु०] सं.) कोयलों का समूह या झुण्ड।

पिक-सा = का०, १०१।
[वि०] (हि.) कोयल के समान। मधुर ध्वनि का बोधक।

पिंग = का०, २३।
[वि०] (सं.) पिलापन लिये हुए, भूरा, तामड़ा।

पिंगल = का०, २०७, २६१। ल०, १५, ४६।
[वि०] (सं.) पीला लिये हुये, भूरापन लिये हुए लाल, तामड़ा। अग्नि। छंद-शास्त्र।

पिघलि है = चि०, १७२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पिघलना क्रिया का भविष्यत् कालिक रूप। पिघलेगा, दयार्द्र होगा, मेरे अनुकूल बनेगा।

पिचुकारियाँ = चि०, १८०।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) एक उपकरण या यंत्र विशेष जिससे कोई द्रव पदार्थ धार या फुहारे के रूप में छोड़ा जाता है।

पिच्छल = का०, ८४। झ०, ८०।
[सं० पु०] (सं.) आकाशबेल, शीशम, वासुकि के वंश का एक सर्प।
[वि०] (हि.) फिसलनमयी। बिलबिल।

पिच्छ-सी = ल०, ७४।
[सं०पु०] (सं.) पिच्छल के समान।

पिछड़ा = का०, ११।
[वि०] (हि.) पीछे छूटा हुआ। निर्बल।

पिछली = का०, ५३।
[वि०] (हि.) पिछड़ी, पीछे वाली, बीती हुई, गत बातों में अन्तिम। पीछे की ओर वाली।

पिछले = का०, ६३, ७०।
[वि०] (हि.) गत हुये, बीते हुए।

पिण्ड = क०, २२। ल०, ५६।
[सं० प०] (सं.) गोल पदार्थ, ठोस गोलाकार कोई वस्तु। श्राद्ध में दिया जाने वाला वस्तु विशेष का गोला।

पितहिं = आं०, ३१, चि०, ४८।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) पिता को।

पिता = का०, १८, २१, २२, २४, २५, ३१, [सं० पु०] का० कु०, ६४, ६० । का०, ५१, (हि.) १७६, २१०, २३० । चि०, ४१, ६१ । प्रे०, ८, ६, १०, २१ । ल०, १२ । बाप, पुत्र पैदा करने वाला ।

पिता-माता का० कु०, ७ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) पिता और माता । बाप और माँ ।

पिता मित्र = प्रे०, १० ।
[सं० पु०] (हि.) पिता का मित्र ।

पितु = चि, १४१ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा) पिता, बाप ।

पितु-मात = का० कु०, ११२ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) पिता और माता ।

पितुहौं = चि०, ४१ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) पिता भी ।

पिन्हा = का० कु०, ४५ ।
[क्रि० पु०] (हि.) पहना ।

पिन्हायों = चि०, ७५ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पहनाया, पहना दिया

पिपासा = का०, २६७, चि०, ६७ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) प्यास, तृष्णा ।

पिय = चि०, ५८ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.)प्रिय, जिससे प्रेम हो । दे०–'प्रिय' ।

पियगोद = का० कु०, ६७ ।
[सं०स्त्री०] (ब्र. भा.) प्रिय का अंक ।

पिया = चि०, ३४, ५८ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) प्रिया, जिस स्त्री के प्रति प्रेम हो, प्रेयसी । पति ।

पियारो = चि०, १६० ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) प्यारा, प्रिय ।

पियूष = चि०, १८१ । झ०, ५७ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) अमृत ।

पिये = क०, ८ । का०, १२२, १२३, २२६, [क्रि०] (ब्र.भा.) २३६ । चि०, १८६ । ल०, १६ ३७,४३। पीते हैं । सामान्य-भूत में 'पीना' क्रिया का रूप ।

पिये-सी = का०, २८६ ।
[वि०] पिये हुए के समान ।

पिरोती = का०, १२६ ।
[क्रि०] (हि.) गूँथती ।

पिरोना = आं०, ७७ ।
[क्रि०] (हि.) गूँथना । पहराना । सूई में धागा डालना ।

पिलाना = का० कु०, ७८ ।
[क्रि०] (हि) पीने का काम दूसरे से कराना । पान कराना, पीने के लिए देना, अंदर भरना ।

पिशाच = क०, १८, ल०, ५७ ।
[सं० पु०] = एक निम्न योनि में उत्पन्न वीभत्स (सं.) कर्म करनेवाला पुरुष । भूत प्रेत । राक्षस

पिशाच-सी = ल०, ७६ ।
[वि०] अत्यन्त निम्न योनि में उत्पन्न क्रूर । (सं.) पुरुष के समान ।

पिसपिसकर= का०, २५० ।
[क्रि०] (हि.) विपत्तियाँ झेलकर ।

पी = आं०, २५, ५७ । चि०, १६० ।
[सं० पु०] झ०, ४६ । प्रे०, १४ । ल०, ६० ।
(हि.) प्रिय, जिसके प्रति प्रेम हो । हे प्रिय ।

पीऊँ = का०, १११ ।
[क्रि०] (हि.) पीना क्रिया का एक रूप ।

पीकर = आं०, २८ । का०, २१६ । ल०, ४७ ।
[पू०क्रि०] (हि.) 'पीना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप ।

पीके = चि०, ४५ ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) पीकर ।

पीछा = ल०, ६६, १२४ ।
[सं० पु०] पीछे की ओर का भाग । आगे का (हि०) उलटा, पीठवाला हिस्सा ।

पीछे = क०, १४ । का०, १४०, २००, २३६, [अ०] २५७, १६६, २८४, २८६ । चि०, (हि.) ६१, २८८ ।
पीठ की ओर, दूसरी ओर, पृष्ठ भाग में ।

पींजरा = ल० ७१ ।
[सं० पु०] लोहे या बांस की तीलियों का बना वह

झावा, जिसमें पक्षी बंद करके रखे जाते हैं।

पीटे = का०, ६६।
[क्रि०] 'पटना' क्रिया का भूतकालिक रूप।
(हि.) मारे, प्रहार किए। चोट देकर किसी वस्तु को चिपटी किया। किसी न किसी प्रकार से किसी वस्तु को प्राप्त कर लिया। पुन केन प्रकारेण किसी काम को समाप्त अथवा निपटा लिया।

पीठ = म०, ११। ल०, ५१।
[सं० पु०] पीढ़ा, सिंहासन, शरीर में पेट की दूसरी
(हि.) ओर का भाग।

पीढ़ी = का०, ११०।
[सं० स्त्री०] कुल में वंश-परंपरागत कोई स्थान,
(हि.) पुश्त। किसी विशेष समय में होने वाली व्यक्तियों की समष्टि।

पीड़नमय = का०, २६६।
[वि०] (हि.) पीड़ित, पीड़ा से युक्त।

पीड़ा = आं०, १, १२, १४, ३८। का० कु०, २२, २३। का०, ११, ५४, ८३, ११६, १२१, १३३, १४३, १५२, १६४, २२३, २८३। भ०, ८६। ल०, ३५, ४६, ५२।
[सं० स्त्री०] वेदना, व्यथा, दर्द, कष्ट, तकलीफ।
(सं.) रोग, व्याधि।

पीड़ित = क०, १८। ल०, १३।
[वि०] जिसे पीड़ा हो, सताया हुआ, रोगी,
(सं.) बीमार, व्यथित।

पीत = का०, ११। चि०, ६, २६, १४३
[वि०] प्रे०, २६।
(सं.) पीला, भूरा।
[सं० पु०] (सं.) पीला रङ्ग। भूरा रङ्ग।

पीतम = चि०, ६।
[वि० पूर्व०] (सं.) दे० "प्रियतम"
[सं० पु]० (सं.)।

पीत-पटी = चि०, १७८।
[सं० स्त्री०] पीले या भूरे रङ्ग का रंगशाले का पर्दा,
(सं.) पीला वस्त्र।

पीता = आं०, ५८। का०, ६०, १६६, २२१।
[सं०, स्त्री०] हल्दी, बड़ी मालकगनी, दारु हलदी,
(सं.) देवदार, राल, असगन्धा, शालिपर्णी, अकास बेल, गोरोचन, अतीस, पीला-केला बिजोर नीबू, जरद चमेली।

[वि०] (सं.) पीले रङ्ग वाली।

पीताम्बर = प्रे०, २५।
[सं० पु०] पीले रङ्ग का वस्त्र। रेशमी धोती जो
(सं.) पूजा पाठ के समय पहनी जाती है। श्रीकृष्ण, नर, अभिनय करी।

[वि०] (सं.) पीले कपड़े वाला।

पीते = का०, १२२। भ०, ४६।
[क्रि०] दे० "पीना"

पीते-पीते = भ०, ४७।
[क्रि०] (हि.) पी-पी कर।

पीन = का०, १४, १४२।
[वि०] मोटा, स्थूल। पुष्ट, प्रवृद्ध, परिवर्धित।
(सं.) सम्पन्न, भरपूर।
[सं० पु०] (सं.) स्थूलता, मोटाई।

पीना = का०, १९, १३४। भ०, ४८।
[क्रि०] द्रव्य पदार्थ को मुख द्वारा ग्रहण
(हि.) करना। पेय पदार्थ को घूंट-घूंट कर गले से उतारना। पान करना। किसी बात को दबा देना। किसी विचार या मनोविकार को मन ही मन दबा देना। सह जाना, बर्दाश्त कर लेना। कुछ भी शेष या बाकी न छोड़ना। मद्यपान करना, शराब पीना। धूम्रपान करना। सोखना या जज्ब करना, शोषण करना।

[सं० पु०] (हि.) तीसी या तिल की खली।

पी-पीकर = का०, १८३।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) पीते-पीते।

पीय = चि०, १५२।

[सं० पु०] (हि.) दे० 'प्रिय'।

पीयूष-स्रोत-सी=का०, १०६।

[वि०] (सं.) अमृत के सोते के समान।

पीर = का० कु०, ५६। का०, ५१। नि०,
[सं० स्त्री०] ५५, १७६। ल०, ३७।
(हि.) पीड़ा, दुःख, दर्द। दूसरे की पीड़ा देखकर उत्पन्न होने वाली व्यथा, सहानुभूति, करुणा, हमदर्दी, दया। प्रसवकाल की पीड़ा।

[वि०] वृद्ध, बुजुर्ग। सिद्ध, महात्मा। धूर्त,
(फा.) चालाक।
[सं० पु०] परलोक का मार्ग बतलाने वाला, मुसलमानों का धर्म गुरु।

पीरा = चि०, ५७।
[सं० स्त्री०] (हि.) पीड़ा।
[वि०] (हि.) दे० 'पीला'।
पीला = आं०, ३२। का० कु०, २८। का०,
[वि०] १४२। ल०, ४६।
(हि.) हलदी या केसर के रंग का। पीत, निस्तेज, कान्तिहीन।

पीलापन = का०, १४६।
[सं० पु०] (हि.) पीला होने का भाव। पीतिमा। ज़र्दी।
पीला-पीला = का०, १४४, १८६।
[वि०] (हि.) पीला होने का भाव।
पीले-कागज = भ्र०, ५१।
[सं० पु०] (हि.) पीले रंग का कागज।
पी लेना = का० कु०, ८६।
[क्रि०] (हि.) दे० 'पीना'।
पीवत = चि०, ८।
[क्रि०] (हि.) पीते हैं।
पीवर = का० कु०, ११२।
[वि०] (सं.) मोटा, मांसल, तगड़ा। भारी।
[स० पु०] (सं.) जटा। कछुवा। एक ऋषी का नाम।
पुंज = चि०, ५। भ्र०, ६०। ल०, १२, ३२।
[सं० पु०] (सं.) समूह, ढेर।
पुआलों = का०, १४६।

[सं० पु] सूखी घास। धान के सूखे तने और
(हि.) पत्तियाँ।

पुकार = का० कु०, २। का०, २४, १०६,
[सं० पु०] १४०, १५८, १५६, १६१, १७०,
(हि.) १७२, १६२, २४४, २५४। चि०, १, ३१, १०६, १२७। ल०, १३, २६, ३४, ३५, ३७, ४५, ५२, ७३, ७७, १७२।
किसी को बुलाने या पुकारने की क्रिया का भाव। हाँक। किसी की रक्षा, सहायता या प्रतिकार आदि के लिए बुलाना, दुहाई। किसी वस्तु की बहुत अधिक माँग।

पुकरिहैं = चि०, १८५।
[क्रि०] (हि.) दे "पुकारना"।

पुकारत = क०, २५। चि०, १७८, १७६।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) दे "पुकारना"।

पुकारत = क०, २५।
[क्रि० सं०] (हि.) दे "पुकारना"।

पुकारना = का० कु०, १२४। का०, २७।
[क्रि०] प्रे०, १४।
(हि) नाम लेकर बुलाना या आवाज देना। ऊँचे स्वर में संबोधित करना। नाम उच्चारण करना, नाम रटना। चिल्ला, चिल्लाकर कहना। माँगना, सुनना अथवा बुलाना। फरियाद करना।

पुकार-सी = का०, १६१, २०५। ल०, ५६।
[वि०] (हि.) पुकार के समान।
पुकारा = का० कु०, ७।
[क्रि०] पुकारना क्रिया का भूतकालिक रूप।
हि.) नाम लेकर बुलाया या आवाज दिया। नाम लिया। फरियाद किया। अभियोग लगाया।
पुकाखो = चि०, १५६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दे० 'पुकारना'।

पुकारे = आं०, १३ ।
[सं० पु०] (हि. पुकार का बहुवचन ।

पुखराज = चि०, ४७ ।
[सं० पु०] एक प्रकार का रत्न जो पीले रंग का
(हि.) होता है । पीतमणि ।

पुचकारने = का०, ८४ ।
[क्रि०] चूमने का सा शब्द करते हुए प्यार
(हि०) करना । चुमकारना ।

पुच्छलतारा = म०, ७ ।
[सं० पु०] (हि.) पूँछवाला तारा ।

पुच्छमर्दिता = म०, १३ ।
[सं० पु०] (सं.) पूँछ से रौंदी हुई ।

पुजाया = का० कु०, ६ ।
[क्रि०] पूजा कराया । अपना आदर या सम्मान
(हि.) कराया । किसी को दबाकर पैसा वसूल
किया ।

पुजारी = का० कु०, ६२ । झ०, ७८ । प्रे०,२० ।
[सं० पु०] वह जो मन्दिर में देवता की पूजा के
(हि.) लिए नियुक्त हो । पूजा करने वाला
किसी को देव तुल्य मानकर उसकी
पूजा करने वाला । उपासक ।

पुञ्ज = आं०, ३८ । चि०, ६, २३, ३६ ।
[सं०] (सं०) प्रे०, १५ । ल०, ४६, ४७ ।
दे० पुञ्ज ।

पुञ्जीभूत = का०, १६७, २६६ ।
[सं० पु०] (सं.) केंद्रीभूत ।

पुटक = का०, ५ । चि०, १५३ ।
[सं० पु०] (सं.) पोटली, गठरी ।

पुण्य = का०, ५ चि०, १५३ ।
[वि०] पवित्र, शुभ, धार्मिक दृष्टि से शुभ फल
(सं.) देने वाला । धर्म कार्य । परोपकार
आदि का काम ।

पुण्य-पुरोहित= क०, २२ ।
[सं०पु०] (हि.) पुण्य के लिए कार्य कराने वाला पुरो-
हित ।

पुण्य प्राप्य = का०, ११३ ।
[सं० पु०] प्राप्त होने वाला पुण्य या मिलने के
(सं.) योग्य पुण्य या पवित्रता ।

पुण्यमयी ल०, ३३ ।
[वि०] पुण्य से युक्त या भरी हुई पवित्र एवं
(सं) मांगलिक ।

पुतरिन = चि०, १५७ ।
[सं० स्त्री०] स्त्री की आकृति की पुतलियाँ या गुड़िया
(ब्र. भा.) आँख की पुतलियाँ ।

पुतरियाँ = चि० १६० ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'पुतरिन'

पुतलियाँ = का० २६२ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'पुतरिन'

पुतली = आं०, १६, का० कु०, ३०, ७७, ६२ ।
[सं० स्त्री०] झ०, ४४ । प्रे०, ६, १२, १३, १८,
(हि.) १६, २२, २३ । ल०, २८, ४६, ५४,
६० ।
छोटा पुतला, गुड़िया, आंख के बीच
का काला दाग, कपड़ा बुनने की मशीन,
नारियों की सुकुमारता एवं सुन्दरता में
व्यवहृत होने वाला शब्द, घोड़े के टाप
का मांस जो मेढ़क के समान निकला
होता है ।

पुतले = का०, २५ ।
[सं० पु०] (हि.) दे० 'पुतलों' ।

पुतलों = का०, ७ ।
[सं० पु०] कपड़े आदि की बनी हुई मनुष्य के
(हि.) आकार की मूर्तियाँ ।

पुत्र = क०, ११, १६, १८, १६, २१, २२,
[सं० पु०] २४, २६, २८, २६, ३१, ६४। चि०,
(सं.) ३८ । प्रे०, ६ । म०, १५ । ल०, १२ ।
बेटा, पुत्र, लड़का ।

पुत्र-बलिदान = क०, ११ ।
[सं० पु०] पुत्र का बलिदान, पुत्र को अपने हाथ
(सं.) से ही काट कर किसी देव, देवी या
अन्य किसी सम्मानित व्यक्ति को प्रसन्न
करना या उसकी इच्छा की पूर्ति करना

पुत्र वत्सला = ल०, ५२ ।
[वि०] (सं.) पुत्र को प्यार प्रदान करने वाली (मां) ।

पुत्राधम = क०, २१ ।
[सं०पु०] (सं) नीच पुत्र , पापी पुत्र ।

पुत्री = प्रे०, २१ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) लड़की । बेटी ।

पुनः = का०, २६८ ।
[अव्य०] फिर, दूसरी बार, दोबारा, पीछे. उप-
(सं.) रान्त, अनन्तर ।

पुनरावर्त्तन = का०, १६१ ।
[सं० पु०] लौट कर आना, बराबर संसार में जन्म
(सं.) ग्रहण करना ।

पुनीत = का०, १६५ । चि०, १७३ । ल०, ३३ ।
[वि०] (सं.) पवित्र, शुभ, मांगलिक ।

पुन्य-पाप = चि०, ६६ ।
[वि०] (हि.) पवित्र-अपवित्र, शुभ-अशुभ, मांगलिक-
[सं० पु] (हि.) अमांगलिक, धर्म-अधर्म, परोपकार-
अपकार ।

पुर = का० कु०, ६७ ।
[सं० पु०] (सं.) नगर, शहर । आगार, घर । लोक,
[वि०] (फा.) भुवन । राशि, ढेर । भरा हुआ, पूर्ण ।

पुरवैया = चि०, १८२ ।
[सं० स्त्री०] (देश.) पूरब से आनेवाली वायु ।

पुल = ल०, ५३ ।
[सं० पु०] नदियों और नालों को पार करने के
(फा.) लिए बनाया गया मार्ग, सेतु ।

पुलक = का० १२, ८६, ११५, १६६, २८६ ।
[सं० पु०] (सं) भ्र०, २३ । ल०, ६, ३७, ४५ ।
प्रेम, हर्ष आदि के अतिरेक से शरीर के
रोंगटे खड़े होना, रोमांच, एक प्रकार का
पत्थर का रत्न, खनिज पदार्थ, रत्नदोष,
हाथी का रातिब, शराब पीने की काँच
की गिलास, एक प्रकार की राई, एक
प्रकार का गेरू, एक प्रकार का कंद,
एक प्रकार का मोटा अन्न, एक प्रकार
का शरीर में पड़ने वाला कीड़ा ।

पुलक कर = का० कु०, ७६, ६४ ।
[पूर्व क्रि०] 'पुलकना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप,
(हि.) प्रेम, हर्ष आदि से प्रसन्न हो कर,
पुलकित होकर ।

पुलकावलि = आँ०, ६४ ।
[सं० स्त्री०] हर्ष या प्रेम के अतिरेक के कारण
(सं) प्रफुल्ल या खड़ी होनेवाली रोमावलि ।

पुलकि = चि०, १५८ ।
[पूर्व० क्रि०](ब्र. भा.) दे० 'पुलक कर' ।

पुलकित = आँ०, ६४ । का०कु०,३,६६ । का० १०,
[वि०] ६, ३४, ३६, ३७, ६७, ८३, १२७,
(सं.) २८६, ८८, २६० । चि० ७३, १४६,
१५०, १६० । भ्र० २७, ३२, ४० ।
प्रे० ८, १२, २४ । ल० ३२, ४० ।
जिसे प्रेम या हर्षातिरेक के कारण
पुलक हुआ हो, रोमाञ्चित, आनन्दित ।

पुलकित तनु = का० क० ६७ ।
[सं०पु०] (सं) पुलकित शरीर, आनन्दित शरीर ।

पुलिन = आँ० ३१ । क० ८ । का० १७६,
[सं० पु०] २७७ । चि० ७१ । म० ४ । ल० ९ ।
(सं.) नदी का रेतीला तट, नदी का किनारा,
एक वृक्ष का नाम ।

पुष्टि = का० ११० । प्रे० २४ ।
[सं० स्त्री०] पोषण, मोटाताजा, पीन, दृढ़ता, बात
(सं.) का समर्थन ।

पुर = का०, १८१, २४५ ।
[सं० पु०] नगर, घर, आगार, जैसे अन्तःपुर ।
(सं०) कोठा, लोक । शरीर । मोथा, गुग्गुल ।
नक्षत्र, पुरवट या मोट । पीली कटसरैया ।
दुर्ग ।
[वि०) (फा.) पूर्ण ।

पुर-लक्ष्मी = का०, २०६
[सं० स्त्री०] नगर की लक्ष्मी, घर की लक्ष्मी, पुर
(सं०) का सौन्दर्य या शोभा ।

पुरइन = आँ०, १३ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) कमल का पत्ता । कमल ।

पुरइन पत्रों = का० कु०, ३६ ।
[स०] (हि.) कमल के पत्तों ।

पुन्य = चि०, १८५ ।
[वि०] (ब्र. भा.) (सं.पु.) दे० 'पुण्य' ।

पुरस्कार = चि०, ६७ ।
[सं० पु०] आगे लाने की क्रिया । आदर । स्वीकार ।
(सं) वह धन या द्रव्य जो किसी अच्छे काम के लिए सादर दिया जाय ।

पुरातन = का० कु०, ६३ । का०, १८, २८६, २६४ ।
[वि०] प्राचीन, पुराना, जीर्ण, घिसा हुआ ।
(सं.)
[सं० पु०] (सं.) विष्णु का एक नाम ।

पुरातनता = का०, ५५ ।
[सं० स्त्री०] प्राचीनता, पुरानापन, जीर्णता, घिसावट ।
(सं.)

पुरारी = चि०, १५५ ।
[सं० पु०] पुर नामक राक्षस का शत्रु, शिव, महादेव ।
(हि.)

पुरोडाश = का०, ११६, ११७ ।
[सं० पु०] जौ के आटे की टिकिया जो कपाल में पकाई जाती थी । यज्ञ में इसके टुकड़े काट-काट कर और मंत्र पढ़-पढ़कर देवताओं को किसी उद्देश्य से आहुति दी जाती थी । हवि, यज्ञ से बची हुई हवि । यज्ञ में होम की जाने वाली वस्तु । यज्ञ भाग । सोमरस, पुरोडाश बनाते समय बोले जानेवाले मंत्र ।
(सं.)

पुरोहित = क० २७ । का० १११, ११३, ११४, २०१ ।
[सं० पु०] वह ब्राह्मण जो यजमान के यहाँ कर्मकाण्ड के सब कृत्य तथा संस्कार कराता है ।
(सं.)

पुरुष = का०, ३, ६३ ६४, १४५, १८३, २५२, २८६, २६४ । म० ८ ।
[सं० पु०] मनुष्य, नर, किसी पुश्त या पीढ़ी का प्रतिनिधि, सांख्य में अकर्त्ता तथा असंग चेतन पदार्थ जो प्रकृत से भिन्न तथा उसका पूरक अंग माना जाता है । आत्मा, विष्णु, सूर्य, जीव, परमात्मा, शिव । पुन्नागवृक्ष । पारा । घोड़े के खड़े होने की एक स्थिति त्रिशेष । व्याकरण में क्रिया का एक भेद, पति, पूर्वज ।
(सं.)

पुरुषत्व = का० १६२ ।
[सं० पु०] (सं.) पुरुषता, मर्दानगी, वीरता ।

पुरुषार्थ = क०, १५ ।
[सं० पु०] पुरुष का अर्थ या प्रयोजन जिसके लिए वह प्रयत्नशील रहता है, पुरुष के प्रयत्न का विषय या कार्य । पौरुष, पराक्रम, पुंसत्व, शक्ति, सामर्थ्य ।
(सं.)

पुष्प = का० कु०, ६६ । चि० ४६ ।
[सं० पु०] फल, सुमन, रजस्वला का रज । घोड़े का एक लक्षण । लवंग । मांस ।
(सं.)

पुष्पपात्र = प्रे० २ ।
[सं० पु०] (सं.) फूलों से सजाया हुआ बर्तन ।

पुष्पलावियाँ = का०, १८१ ।
[सं०स्त्री०] फूल चुनने या इकट्ठा करने वाली, मालिन ।
(हि.)

पुष्पवती = का०, २७ ।
[वि०] (सं.) फूलवाली ।
[सं० स्त्री०] (सं.) रजस्वला स्त्री ।

पुष्पाधार = म० २० ।
[सं० पु०] (सं.) कुसुमों पर आधारित या आश्रित ।

पुहुप = चि०, ३६ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) फूल, । पुष्प ।

पुहुमी = चि०, २३, १०६ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) पृथ्वी ।

पूँछ = का०, २०२ ।
[सं० स्त्री०] जन्तुओं पक्षियों आदि के शरीर के पीछे
(हि.) का एक पतला लम्बा भाग । पुच्छ, दुम । पुछिल्ला । पिछलग्गू ।

पूछत = चि०, ३५ । ल०, ३३, ५६ ।
[क्रि० पु०] (ब्र. भा.) दे० पूछना ।

पूछना = का० कु०, ६६। का०, ७७, ६१, १८३, २१३। चि०, ५८, ६०। [क्रि० पु०] (हि.) जानने के लिए प्रश्न करना। जिज्ञासा करना। खोज खबर लेना। दरियाफ्त करना। सत्कार या सम्मान का भाव प्रकट करना।

पूछने = भ्रु०, ४७। [क्रि०] (हि.) 'पूछना' क्रिया का रूप।

पूछ्यो = चि०, ५८। [क्रि०] (ब्र.भा.) पूछना क्रिया का भूतकालिक रूप।

पूजत = चि०, ६१, १७७। [क्रि०] (ब्र. भा.) पूजा करता है।

पूजता = का०, १६१। [क्रि०] (हि.) दे० 'पूजत'।

पूजन = का०, १६१। चि०, १५४, २०८। [सं० पु०] (हि.) देवता की पूजा सेवा आदि करना। अर्चन। आदर-सम्मान।

पूज्य = क० २६। ल० ७६। [वि०] (हि.) श्रेष्ठ, पूजने योग्य, अनिर्वचनीय, आदरणीय, सम्मान के योग्य।

पूजा = आं०, ६८। का० १६१। चि० १०५। प्रे० २०। [सं० पु०] (हि.) वह कार्य जो ईश्वर या देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिए, श्रद्धा भक्ति करने के लिए किया जाय। खातिर, सत्कार। किसी को प्रसन्न करने के लिए कुछ देना। दण्ड, सजा।

पूजित = चि० ६०१। [वि०] (हि.) पूजा गया।

पूतरी = चि० २। [सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) पुत्तलिका, पुतली, आँख के बीच का काला दाग। पुतली।

पूरन = चि० ४२, १५६, १६८, १७७। [सं० पु०] (हि.) पूरा करने या भरने की क्रिया का भाव। समाप्त करना। पूर्ण।

पूरब = चि० १५६, १७०, १७१। [सं० पु०] (हि.) वह दिशा जिसमें सूर्य निकलता है। पूर्व, प्राची।

पूरा = क०, ३१। का० कु०, १५। का० १६३। प्रे० ६, १२। ल० १३, ३५। [वि०] (हि.) जो खाली न हो, भरा हुआ। परिपूर्ण। समूचा, सारा, समस्त। जिसमें कोई त्रुटि या कोर कसर न हो। पूर्ण। भरपूर, यथेष्ट, काफी।

पूरि = चि० ५, २३, २८, १०६। [वि०] (ब्र.भा.) पूरा किया हुआ। परिपूर्ण। गुणा किया हुआ। गुणित।

पूरित = आँ०, ३५। का०, ११, ६६, १६४, २४६, २५२। चि० ७२, १४६, १७५। ल० १४६। [वि० स्त्री०] (हि.) पूरा किया हुआ। परिपूर्ण। गुणा किया हुआ।

पूरी = का० ११४, १३१, १७८, २७२। प्रे० २३। [सं० स्त्री०] (हि.) खौलते हुए घी में छानकर बनाई हुई रोटी की तरह का एक प्रसिद्ध खाद्य। मृदंग, तबला, ढोल आदि के मुंह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा या उस पर लगी हुई गोल काली टिक्की।

पूरो = चि०, ४५, १४३, १५५। [वि०] (ब्र.भा.) देखे "पूर्ण"। [क्रि] (ब्र. भा) पूर्ण किया, पूरा किया, सम्पन्न किया।

पूर्ण = क०, ८, ६, २६। का० कु०, २, ५२, ५३, ८०, ६३, ६४, १०६, १२०, १२२। का०, १०, ४७, ५८, १६२, १६३, २४२, २६४, २६०। भ्रु० ४७, ५४, ६३। प्रे० १२, १५। म०, २, ८, १६। ल०, २२। [वि०] (सं) जो सब दृष्टियों से पूरा हो। और अपने अस्तित्व तथा कार्य आदि के लिए किसी की अपेक्षा न रखता हो। तृप्त, आप्तकाम,

भरपूर, समस्त, सिद्ध, सफल, जो काम पूरा हो चुका हो। समाप्त।

पूर्ण-काम = का० कु० ५८, का० १६२।
[वि०] (सं.) जिसकी सब कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हैं।

पूर्ण चन्द्र = प्रे० १५।
[सं० पु०] (सं.) पूर्णिमा का चन्द्रमा।

पूर्णता = का० १२३, १६३।
[सं० पु०] (हि.) सब प्रकार से पूर्ण होने की अवस्था या भाव।

पूर्णाहुति = का० १३।
[सं० पु०] (सं.) यज्ञ या होम समाप्त होने पर अन्त में दी जाने वाली आहुति। किसी कार्य की समाप्ति के समय होनेवाला अन्तिम कृत्य।

पूर्णिमा = आँ० ३३। का० कु०, ८, १७।
[सं० स्त्री०] (सं.) चान्द्र मास के शुक्ल पक्ष की अन्तिम तिथि जिसमें चन्द्रमा अपनी सब कलाओं से युक्त होकर पूरा दिखाई देता है।

पूर्व = का० कु०, १०, ४६। का० ८६, १६१, चि०, ३६, ६०। भ्र० ४३।
[सं० पु०] (सं.) वह दिशा जिधर सूर्य उदित होता है। पश्चिम के सामने की दिशा।

[वि०] (सं.) जो पहले हुआ हो। पहले का। पहले से होनेवाला। प्राचीन, पुराना पीछे का।

पूर्वज-गन = चि०, ५८।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) पूर्व पुरुषों का समुदाय।

पूषा = का०, २५।
[सं० स्त्री०] (सं.) सूर्य। हठयोग में दाहिने कान की नाड़ी

पृथासुत = का० कु०, ११४।
[सं० पु०] (सं.) पार्थ, अर्जुन।

पृष्ठ = चि०, २२।
[सं० पु०] (सं.) पिछला भाग।

पेंगों = का०, १६५।
[सं० स्त्री०] पेंग मारना। हिंडोले को दोनों ओर से झुलाने का भाव।

पेट = का०, १८०।
[सं० पु०] (हि.) शरीर में छाती के नीचे का वह अंग जिसमें पहुँच कर भोजन पचता है। उदर।

पेय = भ्र०, ४७।
[वि०] (ब्र.भा.) पीने की वस्तु।

पेश = प्रे०, १४।
[क्रि० वि०] (फा.) सामने, आगे, सम्मुख।

पै = चि०, १४३, १५५, १५७।
[अ०] (ब्र. भा.) ऊपर।

पैठ = का०, १५०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) बैठने या घुसने की क्रिया का भाव। प्रवेश। दखल, गति, पहुँच।

पैतृक-रक्त-प्रवाह-पूर्ण = का० कु०, १२०।
[वि० पु०] (सं) पूर्वजों के रक्त की ओजस्विता से पूर्ण।

पैनी = ल०, ४६।
[वि० स्त्री०] हि.) तीखी, तीक्ष्ण, तेज।

पैर = का० कु०, १२। का०, ५१, १६७।
[सं० पु०] ((हि.) पाँव, शरीर का वह अंग जिससे प्राणी खड़े होते और चलते-फिरते हैं।

पैरों = क०, १४। का०, १७०, २३३। प्रे०, १५। म०, २।
[सं० पु०] (हि.) पैर का बहुवचन।

पैहैं = चि०, ६१, ६४।
[क्रि०] (ब्र.भा.) पायेंगे।

पोखे = चि०, १७३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पालन करे।

पोखौ = चि०, ६८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पालन करो।

पोत = का०, १७।
[सं० पु०] (सं.) तह पशु या पक्षी का छोटा बच्चा। कपड़ा। सफ या भीनी बुनावट। बड़ी नाव, जहाज।

पोपत = चि०, ७३।
[वि०क्रि०] (ब्र. भा.) पालन करता है।

पौन = चि०, ६, ४५, ४६ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) पवन, वायु, हवा ।

पौरुष = का०, ४, २०० ।
[सं० पु०] (सं.) पुरुषार्थ, बल, ताकत ।

प्यार = का०, ८६, १७७, १८२, २१० ।
[सं० पु०] चि०, १४१ । ल०, ६, १२, १३, ३४,
(हि.) ३५, ३७, ३८, ४४ ।
मुहब्बत, प्रेम ।

प्यारी = का०, ५१, १४४ । चि०, ६, ५७,
[वि०] ५८, १६१ ।
(हि.)
प्रेयसी, प्रिय, अच्छी अथवा सुखद वस्तु । जिससे प्रेम किया जाय, जिसको अलग न किया जा सके ।

प्यारे = का कु०, १, ४०, ६३ । चि०, ६४,
[वि०] ७१, १७५, १६० । भ्रु०, ४६, ६३ ।
(हि) प्रिय, प्यार करने वाला, अच्छे लगने वाले ।

प्याला = का०, १३८, २२१, चि०, ६, २, १७५,
[सं० पु०] ल०, ४२, ४५, ४७ ।
(फा०) छोटा कटोरा ।

प्यास = का०, ७४, १२१, १८३, २७० । चि०,
[सं० स्त्री०] १७१ । भ्रु०, ४ ७ । म०, ४ । ल०,
(सं०) २१, ४२ ।
जल पीने की प्रवृत्ति या इच्छा । तृष्णा ।

प्यासा = का०, ७१ ।
[वि०] (हि.) जिसे प्यास लगी हो । (पुल्लिंग)

प्यासी = का०, १०६ । चि०, १७१, १८१ ।
[वि०] ल०, ४६, ४७ ।
(हि.) जिसे प्यास लगी हो (स्त्रीलिंग) ।

प्यासे = का०, २१६, २६८ । चि०, ८, १७५ ।
[वि०] (हि.) देखे 'प्यास' ।

प्यासो = आँ०, १० । चि० ८ ।
[वि०] (ब्र.भा.) दे० प्यासा हुआ ।

प्लावित = प्रे०, २४ ।
[क्रि०] (सं.) डूबा हुआ । मग्न । निमग्न ।

प्रकंपन = का०, १३ ।
[सं० पु०] सं.) कँपकँपी ।

प्रकट = का० कु, १६, २८, ७४, ११३, ११७,
[वि०] १२४ । का० १८, ४७, १२३, १३१,
(सं) १६२, १८९, २१० । चि०, २१, ३६ ।
भ्रु०, ६५ । प्रे०, ५, ५१ । म०, २ ।
जो सबके सामने हो । सामने आया हुआ । जाहिर । आविर्भूत । स्पष्ट । साफ ।

प्रकटित = का० कु०, १०, ३४, ८१, १२४, १२६ ।
[वि०] भ्रु०, ४० । प्रे० ६, २०, २४ ।
(सं) प्रगट हुआ । सामने आया हुआ । प्रत्यक्ष हुआ । उत्पन्न हुआ ।

प्रकार = का०, ११५, ९५३ ।
[सं० पु०] (सं.) भेद, किस्म, तरह, भांति । चहार
[सं० स्त्री०] दीवारी, परकोटा ।

प्रकाश = आ०, ६२, ७५, । का०, २०६, २४२
[सं० पु०] २५२ । चि०, १४०, १५५, १७० । भ्रु०
(सं) २१, ३५, ६३, ६५, क०, १३, २५ ।
का०, कु०, १, २, ३४, ३६, ४०,
१०३ । का०, ३५, १२६, १५१, १५८,
१७२ २४१, २५४ । चि०, ६, १५२ ।
प्रे० १५ । ल०, ३४, ४८ ।
वह शक्ति या तत्व जिसके योग से वस्तुओं का रूप आखों को दिखाई देता है । आलोक । ज्योति । प्रकट या गोचर होना । अभिव्यक्ति । पुस्तक का खण्ड । धूप । घाम । विकास, स्फुटन, ख्याति, प्रसिद्धि । खुलना । खुला हुआ ।

प्रकाश-बालिके = का०, १८४ ।
[सं० स्त्री०] प्रकाश रुपिणी बालिके । अतीव सुन्दर
(सं.) बालिका ।

प्रकाशमय = क०, ३१ । प्रे० ११ ।
[वि०] (सं.) प्रकाश से युक्त ।

प्रकाशयुत = चि०, २२ ।
[वि०] (ब्र.भा.) प्रकाशमय । प्रकाश युक्त ।

प्रकाशानुभवमूर्ति = का०, कु० ६२।
[सं० स्त्री०] (सं.) ज्ञान और अनुभव का मूर्त रूप। ज्ञान और अनुभव का प्रत्यक्षीकरण।

प्रकाशि = चि०, १६४, १७०।
[वि०] (ब्र.भा.) दे० प्रकाशी।

प्रकाशित = म०, १६।
[वि०] (सं.) चमकता हुआ। प्रकाश में आया हुआ। जिससे प्रकाश निकल रहा हो।

प्रकाशी = चि०, १६१।
[वि०] (ब्र.भा.) प्रकाशित। चमकता हुआ। जिसमें प्रकाश हो।

प्रकाशै = चि०, ४६, १०७।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) प्रकाश करे।

प्रकासि के = चि०, १४०।
[पू०क्रि०] (ब्र.भ.) प्रकाशित करके।

प्रकासिता = चि०, ५०।
[वि०] (ब्र. भा.) प्रकाशित किया हुआ।

प्रकृति = क०, ७, ८, ६, १२, १३, ७२, १५६, १५६, १६१, १६६, १६८। का०, कु० ११, १३, १५, ६२, ६८, ११६। का०, ७, ६, २३, २५, २८, ३३, ५५, ५६, ७२, ८८, ६१, ११६, १५१, १६४, १७१, १८५, १८६, १८६, १६४, १६५, १६६, १६६, २००, २२७, २५८, २८४, २८६, ३१४, ३१६। चि०, १, १०५, १८२, भ्र०, १६, २८, ३३। प्रे०, २ १५, १४, म० २।
[सं०स्त्री०] (सं.) वस्तु या व्यक्ति का मूल भूत स्वभाव। मिजाज। वह मूल शक्ति जिसने अनेक रूपात्मक जगत का विकास किया है और जिसका रूप दृश्यों में दिखाई देता है। कुदरत।

प्रकृति-कर = म०, ८।
[सं० पु०] (सं.) प्रकृति रूपी हाथ। प्रकृति की बाहें।

प्रकृति-कला = प्रे० १२।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रकृति की कला या सौन्दर्य। प्रकृति के द्वारा होने वाला वैचित्र्य पूर्ण कार्य।

प्रकृति-कानन = का०, कु० ४।
[सं० पु०] (सं.) प्रकृति द्वारा निर्मित कानन।

प्रकृति-कृत = का०, १६६।
[वि०] (सं.) प्रकृति का निर्माण।

प्रकृति-पद्मिनी = का०, कु०, २।
[सं०स्त्री०] (सं.) = प्रकृति रूपी कमलिनी।

प्रकृति-लीला = चि०, २३।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रकृति की लीला।

प्रकृति-विहार = प्रे०, १५।
[सं० पु०] (सं.) प्रकृति का विहार।

प्रकृति-संग = का० १६७।
[सं० पु०] (सं.) प्रकृति के साथ।

प्रखर = का०, १७, २८, १२३। म०, ४।
[वि०] (सं.) तीक्ष्ण। तीव्र।

प्रगट = का० कु०, ५१। का०, ११४, १८६, २५७। चि०, ७०, १६६। ल०, ५२।
[सं० पु०] (हि.) जाहिर। प्रत्यक्ष। जो सामने हो, स्पष्ट, साफ। आविर्भूत।

प्रगति = का०, ६४, ७६, ८१, १२४, १३५, १६८, २००।
[सं० स्त्री०] (सं.) आगे की ओर गति। अग्रसर। उन्नति।

प्रगतिशील = का०, १६१।
[वि०] (हि.) वह व्यक्ति जो आगे की ओर बढ़े। या उन्नतिशील। वस्तु या भाव।

प्रगाढ़ = का०, ६१।
[वि०] (सं.) बहुत गाढ़ा अथवा गहरा। बहुत अधिक। कड़ा, घना, कठोर।

प्रज्ञा = ल० ३३।
[सं० स्त्री०] (सं.) बुद्धि, ज्ञान, एकाग्रता, सरस्वती।

प्रचण्ड = का०, १८१। चि०, ६६, १०६। ल०, ७८।
[वि०] (सं.) अत्यन्त तीव्र, तेज, उग्र, प्रखर, भयंकर,

कठिन, वेगवान, असह्य, बहुत गरम।

[सं० पु०] (सं.) शंकर के एक गण का नाम। सफेद कनेर।

प्रच्छन्न = का० कु०, १५।
[वि०] (सं.) छिपा हुआ। अव्यक्त।

प्रचार = का० २६,१६१,२४४। ल०, १३,५१।
[सं० पु०] (सं.) किसी वस्तु या बात का निरंतर व्यवहार या उपयोग। चलन, रिवाज। घोड़ों की आँख का एक रोग।

प्रचारक = का० कु०, ८७।
[वि०] (सं.) प्रचार करनेवाला।

प्रचार-सी = का० १६१।
[वि०] (सं.) प्रचार के समान। विकसित। प्रचारित।

प्रचारिके = चि० १४०।
[क्रि०] (सं.) प्रचार करके। प्रज्वलित करके। ललकार करके।

प्रचुर = का० ५८, ६१, २०८। झ०, ८०।
[वि०] (सं.) अधिक, बहुत।

प्रज्वलित = का० २१४।
[वि०] (सं.) प्रदीप्त, प्रकाशित, जाज्वल्यमान।

प्रजा = का० कु०, ६६। का०, १६६, १८६, १६५, १८४, १८५, १८६, १०२, चि०, ४६, ५२, ७१, १०६। प्रे० ६। संतान, औलाद, किसी देश या राष्ट्र में रहने वाला जन समूह। रियाया या रैयत।
[सं० स्त्री०] (सं.)

प्रजा-तंत्र = का० १६३।
[सं० पु०] (सं.) वह शासन पद्धति जिसमें प्रजा ही समय-समय पर अपने प्रतिनिधि तथा प्रधान शासक चुनती है।

प्रजापति = का० १८४, १८५, १६२, १६४।
[सं० पु०] (सं.) सृष्टि उत्पन्न करने वाला। सृष्टि कर्त्ता। ब्रह्मा, मनु। सूर्य। आग। पिता। बाप। विश्वकर्मा। जमाई। एक प्रकार का यज्ञ। साठ सम्वत्सरों में से पांचवाँ एक प्रकार का विवाह। एक तारा।

प्रजा-पक्ष = का० १०१।
[सं० पु०] (सं.) प्रजा का पक्ष। प्रजा की ओर से।

प्रजावृन्द = क० २६।
[सं० पु०] (सं.) प्रजा का समूह।

प्रजा-सृष्टि = का० १६४।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रजा की सृष्टि। प्रजा को उत्पन्न करने का भाव।

प्रण = का० ३१। का० १६१, २४३।
[सं० पु०] (सं.) प्रतिज्ञा, टेक, एक विश्रित तथ्य।

प्रणत = का० २४४, झ० ३८।
[वि०] (सं.) झुका हुआ, विनम्र, विनीत, विशेष दैन्य प्रदर्शित करता हुआ।

प्रणति = का० कु० ३। का० २४०, २८५।
[सं० पु०] (सं.) प्रणाम, प्रणिपात, दंडवत। नमन।

प्रणय = का० कु०, ४५। का० १८, ६२, १४०, १६३, १८४, २२६। झ० २७। प्रे० १४। ल० ५३।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम, विश्वास, भरोसा, निर्माण, मोह श्रद्धा।

प्रणयनी = ल० ५४।
[वि०] (हि.) प्रणयी का स्त्री-लिंग।

प्रणय-प्रकाश=का० १६३।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम रूपी प्रकाश, प्रेम-प्रज्वलित। चित्त का विशेष आनंद। प्रणयालोक।

प्रणय-शिला = का०, १२७।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रणय रूपी शिला। प्रणयाधार।

प्रणय-स्मृति-सूर्य्य= चि०, ३६।
[सं० पु०] (सं.) प्रणय सम्बन्धी स्मृतियों को प्रकाशित करने वाला। (प्रिय)

प्रणय-सिंधु = आँ०, १०।
[सं० पु०] (सं.) प्रेमरूपी सागर। 'प्रेम की अगाधता का द्योतक'।

प्रणयांकुर = प्रे०, १०।
[सं० पु०] (सं.) प्रणय का अंकुर।

प्रणयानिल = प्रे०, १०।

[सं०पु०] प्रणय की वायु। प्रणय को विकसित
(सं.) करने वाला वातावरण।
प्रणयी = झ०, ३८।
[वि०] (सं.) प्रेमी, प्रणय जिसमें हो।
प्रणयोच्छ्वास= प्रे०, २४।
[सं० पु०] (सं.) प्रणयी के विरहोच्छ्वास।
प्रणत = का० कु०, १२२।
[सं० पु०] ओंकार, ओंकार मंत्र, परमेश्वर। त्रिदेव,
(सं.) विष्णु, महेश (वि० झुका हुआ। नम्र
प्रणाम = क०, १५। का० कु०, ८६। चि०,
[सं०पु०] ५८, ६०, ६१।
(सं.) झुक कर अभिवादन करना, दंडवत।
नमस्कार।
प्रताप = चि०, १५५ २४६। म०, ६, ११,
[सं० पु०] १५, १६, १७। ल०, ५८।
(सं.) पौरुष, मर्दानगी। वीरता, शक्ति का
ऐसा प्रभाव या आतंक जिससे विरोधी
दबे रहें, मंदार का पेड़, रामचन्द्र के
एक सखा का नाम, ताप, गर्मी, युव-
राज का छत्र। तेज।
प्रतारणा = ल०, ५४।
[सं०स्त्री०] (सं) धोखा, ठगी, वंचना।
प्रति = का० कु०, २६, ७६, १२१। का०, ६६,
[अं० सं०] १२४, २५७। चि०,१८५। झ०, ४४।
(सं०) प्रे०, १३, ३२, २३। म०, ६, २०।
ल० ५०।
एक उपसर्ग जो शब्द के आरम्भ में लगता
है और निम्न अर्थ देता है—विरुद्ध,
विपरीत, सामने, बदले में, हर एक, एक
एक, समान, सदृश, जोड़ की तोड़। तरफ।
[सं०स्त्री०](सं) प्रत्येक वस्तु, प्रतिलिपि।
प्रतिकार = का०, १६६, चि०, १८२।
[सं० पु०] प्रतिशोध, बदला चुकाने के लिये किया
(सं.) गया कार्य
प्रतिकूल = का०, १०६, २५७, २६०।
[वि०] विपरीत, विरुद्ध, खिलाफ। जो अनुकूल
(सं.) न हो, विरुध।
प्रतिकृति = का० १०३, २६४।
[सं० स्त्री०] (सं.) मूर्ति, प्रतिमा। अनुकृति, प्रतिलिपि।
प्रतिकृतियों = का० २५८।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रतिकृति का बहुवचन।
प्रतिकृति-सी = ल० ६७।
[वि०](हिं०) प्रतिकृति की तरह या समान।
प्रतिक्षण = का० कु०, २६, का० २६७।
[सं० पु०] (सं.) प्रतिपल, हर समय।
प्रतिघात = का० १५, ल० ७८।
[सं० पु०] प्रतिकृत घात, प्रतिकार स्वरूप किया
(सं.) जाने वाला आक्षेप या प्रहार।
प्रतिज्ञा = क० ११। चि० ३१। झ० ६४। म०
[सं० स्त्री०] ६७।
(सं.) प्रण, टेक।
प्रतिच्छादित = का० २१७।
[वि०] (सं.) चारो तरफ से ढँका हुआ।
प्रतिदान = का० ८५।
[सं पु०] (सं.) ली अथवा रखी हुई वस्तु को लौटाना।
प्रतिदिन = का०, ६, १६४। ल०, ३४।
[सं० पु०] (सं.) प्रत्येक दिन, हर रोज।
प्रतिध्वनि = ओं०, ८। का० ७, १६, ६३, ११०,
[सं० स्त्री०] १५६, १६७, २७७, २८५। म०, १७।
(सं.) ल०, १३।
अपने उत्पत्ति स्थान पर फिर से सुनाई
पड़ने वाला शब्द, गूंज, प्रति शब्द।
शब्द से व्याप्त होना, गूँजना।
प्रतिनिधि = आं०, ६६। का०, ११, ३०, ११४,
[स० पु०] १७६, २६० २८३। ल , ७१।
(सं.) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति। वह व्यक्ति जो दूसरे
के बदले कोई काम करने को नियुक्त
किया जाय।
प्रतिपक्षी = चि० ६३।
[सं० पु०] (सं.) विरुद्ध पक्ष वाला। विपक्षी, विरोधी।
प्रतिपग = का० १५७।
[अ०] (सं०) पग-पग पर।

प्रतिपद = का०, १५७, १५८, १८४। भ०, ४५।
[सं स्त्री०] रास्ता, मार्ग, आरम्भ। पक्ष की पहली
(सं.) तिथि। बुद्धि। पंक्ति अग्नि की जन्म-
तिथि।

प्रतिपल = का० १५६, १८०, १६० २५८।
[अ०] (सं.) प्रतिक्षण, हर समय।

प्रतिपालक = क०, २५।
[वि०] (सं.) पालन पोषण करनेवाला, पोषक।

प्रतिपालत = चि०, ७३।
[क्रि०] ब्र. भा.) पालन करता है।

प्रतिफल = का०, २६४। म०, ५।
[सं० पु०] छाया, प्रतिबिम्ब, परिणाम, बदले में
(सं.) मिली हुई वस्तु।

प्रतिवार = का०, कु० ६६।
[अ०] (सं.) हर रोज, प्रतिदिन।

प्रतिबिम्ब = का० कु०, ४३, ८०, ६३। का०, ४८,
[सं० पु०] ४६, १७६। चि०, २३, ७१।
(सं.) परछाईं, छाया। मूर्ति, चित्र। दर्पण,
शीशा।

प्रतिबिम्ब पूरित = का० क०, १७।
[वि०] (सं.) परछाईं से युक्त। जिसमें परछाईं
पड़ी हो।

प्रतिबिम्बित = आं०, ६७। का०, १४७, १७६, २३३,
[वि०] २४१। प्रे०, १६।
(सं.) जिसकी परिछाईं या प्रतिबिम्ब पड़े।
जो परछाईं पड़ने के कारण दिखाई देता
हो। जो झलकता हो।

प्रतिभा = आं०, १८। क०, १५। का०, ८७,
[सं० स्त्री०] १६६, २६२, चि०, १५२।
(सं.) बुद्धि, समझ, असाधारण मानसिक
शक्ति। असाधारण बुद्धि बल।

प्रतिमा = आं०, ३०। का०, १००, २०२, २३०।
[सं० स्त्री०] चि०, १५२, १६६। ल०, ३३।
(सं.) प्रतिकृत, मूर्ति, अनुकृति।

प्रतिरूप = चि०, २२।
[सं० पु०] (सं.) प्रतिमा, मूर्ति, चित्र, तसवीर।

प्रतिरोध = का० कु०, १०६।
[सं० पु०] विरोध, बाधा। रोक, रुकावट, पुरस्कार,
(सं.) प्रतिबिम्ब।

प्रतिवर्त्तन = का०, ७६, १५०। ल०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) लौट आना, वापस आना।

प्रतिवर्ष = का०, २८४।
[सं० पु०] (सं.) प्रत्येक साल।

प्रतिशोध = का०, १८५, २०७, २३०। ल०, ६८,
[सं० पु०] ७४, ७५, ७७, ७८।
(सं.) बदला चुकाने की भावना से किया
जानेवाला काम। बदला।

प्रतिशोध-अधीर = का०, १०१।
[वि०] प्रतिशोध करने के लिये विकल।
सं.) अथवा प्रतिशोध के कारण विकल।

प्रतिष्ठा = का०, १५७, प्रे०, १०।
[सं० स्त्री०] स्थापना, अवस्थान, रखा जाना, देव
(सं.) प्रतिमा की स्थापना। सम्मान।

प्रतिष्ठित = का० कु०, ११३।
[वि०] जिसकी प्रतिष्ठा हो। सम्मानित। जिसकी
(सं.) स्थापना की गई हो। स्थापित।

प्रतिहारीगण = म०, ३०।
[सं० पु०] राजाओं के यहाँ के द्वारपालों अथवा
(सं.) सन्देशवाहकों का समुदाय।

प्रतिहिंसा = का० कु०, १०६। का०, २३०।
[सं० स्त्री०] ल०, ७६।
(सं.) बदला चुकाने के हेतु की जाने वाली,
हिंसा, बैर चुकाना, बदला लेना।

प्रतिहिंसा-पूर्ण = का० कु०, १०८।
[वि०] प्रतिहिंसा की भावना से भरा हुआ
(सं०) व्यक्ति। प्रतिकारिता से पूर्ण।

प्रतिहिंसा-पूरित = का० कु०, १०८।
[वि०] ब्र. भा.) प्रतिकारिता से भरा हुआ।

प्रतीक = आं०, ६८। का०, १५७, १६६,
[सं० पु०] १६७, १६८, २५१।
(सं.) प्रतिमूर्ति, प्रतिकृति, अनुकृति मूल वस्तु

(वि.) का दूसरा आकार। उलटा, स्थानापन्न वस्तु, प्रतिनिधि।

प्रतीक्षा = आँ०, ३६, ५२। का०, १७७, १७८।
[सं० स्त्री०] भ०, २५।
(सं.) आसरा इन्तजार। प्रत्याशा।

प्रतीची = का० कु०, ३३। चि०, १०१, १०६।
[सं० स्त्री०] (सं.) पश्चिम दिशा।

प्रतीत = भ०, ६४।
[वि०] ज्ञात, विदित, जाना हुआ। विख्यात
(सं.) प्रसिद्ध, मशहूर। प्रसन्न, खुश।

प्रतीप = का०, ३८।
[वि०] विरुद्ध, विलोम। एक अर्थालङ्कार जिसमें।
(सं.) उपमेय को उपमान मान लेते हैं।

प्रत्न-तत्व = प्रे०, २०।
[सं० पु०] वह विद्या जिसमें प्राचीन काल की बातों
(स.) का विवरण या विवेचन हो। प्राचीनता का तत्व। पुरानेपन का सार।

प्रत्यक्ष = का०, ६८, १६२। चि०, १४१,
[वि०] प्रे०, ७।
(सं.) आखों के सामने वाला। नयनगोचर। जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो। इन्द्रियगोचर।

[सं० पु०] चार प्रकार के प्रमाणों (दार्शनिक)
(सं.) में से वह प्रमाण जिसका आधारी देखी जानी हुई बातों में से होता है। अनुभूत प्रमाण।

प्रत्यंचा = का०, १४१। चि०, ६७। भ०, ३६।
[सं० स्त्री०] धनुष की डोरी जो कमान के दोनों सिरों
(सं.) से बँधी होती है।

प्रत्यावर्तन = आँ०, ४१। का०, ७, १२७। ल०,
[सं० पु०] ५३, ७५।
(सं.) लौटकर वापस आना। वापस आना। लौटना।

प्रत्याशा = आँ० ३६। भ०, ५१, ५४।
[सं० स्त्री०] (सं.) आशा, भरोसा, उम्मीद, सहारा।

प्रत्याश्य = आं०, ३०।
[वि०] (सं.) जिस वस्तु की आशा की जाय।

प्रत्युत = प्रे०, १७, २६।
[सं० पु०] (सं.) विपरीतता।
[अ०] (सं.) बल्कि, वरन्, इसके विरुद्ध।

प्रत्युत्तर = म० १४।
[सं० पु०] (सं.) उत्तर मिलने पर दिया गया उत्तर।

प्रत्येक = का०, ७३, २४१।
[वि०] (सं.) बहुतों में से हर एक।

प्रथम = क० ११। का० कु, ३६, ६३, १०६,
[वि०] का०, ५, १८, ४५, ०४। चि०, ३६,
(सं.) ६८, १६५, भ०, १५। प्रे० ११।
गिनती में पहले आने वाला, पहला। सबसे अच्छा, सर्व श्रेष्ठ। प्रधान, मुख्य।
[क्रि० वि०] पहले, पेश्तर, आगे आदि में।

प्रथम-स्पर्श = का० कु०, १००।
[वि०] पहला स्पर्श। नव मिलन। सुहागरात
(सं.) का प्रथम आलिंगन।

प्रथा = का० कु०, ११५।
[सं० स्त्री०](सं.) रीति, रिवाज, प्रणाली। रियाज, प्रसिद्धि।

प्रदर्शन = का०, १३३।
[सं० पु०] दिखाने का काम। नाना प्रकार की
(सं.) वस्तुओं को दिखाने के लिए एक स्थान पर रखना।

प्रदर्शिका = का०, २८०।
[सं० स्त्री०] वह पुस्तक जिसमें किसी स्थान विषयक
(सं.) सब बातों का वर्णन हो, ताकि उस स्थान के सम्बन्ध में जानकारी हो जाय।

प्रदेश = का०, २८०, म०, १७।
[सं० पु०](सं०) स्थान, किसी देश का छोटा हिस्सा।

प्रदोष प्रभा = का०, २८४।
[सं० पु०] सायंकालीन आभा, संध्या की छवि।
(सं०) संध्या की लाली।

प्रधान = चि०, ८५।
[वि०] मुख्य, खास, सर्वोच्च, श्रेष्ठ, (सं०)
(सं.) मुखिया, नेता, सरदार, मंत्री, सचिव

संसार का उपादान कारण, एक राजर्षि का नाम, किसी संस्था का मुख्य अधिकारी।

प्रधानता = का०, ३।
[सं० स्त्री] (सं.) प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य, पद।

प्रपंच = का० १६६।
[सं० पु०] संसार और उसका जंजाल। भवजाल।
(सं.) आडम्बर, ढोंग।

प्रपूरिता = चि० १३९।
[सं० स्त्री०] (सं.) भरा हुआ। परिपूर्ण।

प्रफुल्ल = का० २६३। चि० ६६। प्रे० ७।
[वि० पु०] (सं.) प्रसन्न, पूरा खिला हुआ, विकसित।

प्रफुल्लित = का० कु०, ३५। का० १८२, २६०।
[वि०] चि०, ११, २३, ५९, ६३, १६४।
(सं.) भ्रु०, ११।
फूला हुआ, खिला हुआ, प्रसन्न।

प्रफुल्लित-गात = का० कु०, ६७।
[सं० पु०] (सं.) प्रसन्न शरीर।

प्रबंध = क० १६।
[सं०] किसी कार्य को भली प्रकार से करने
(सं.) की व्यवस्था। आयोजन, उपाय, बाधने की डोरी, क्रमबद्धता, गद्य या पद्य में सम्बद्धिता का भाव।

प्रबल = क० २४४, चि०, १५८। का० कु०,
[वि०] ८, ७३, ७४, ७५, ८७, १२१, १२६।
(सं.) का० १६। चि०, १२, ५३, ६५। प्रे०, ४२४, म० २, ६।
तीव्र, बलवान, उग्र, घोर, महान।

प्रबञ्चकों = ल० ५३।
[सं० पु०] (सं.) धूर्तों, ठगों, मक्कारों।

प्रबुद्ध = का०, २३। ल०, ५३।
[वि०] (सं.) जागृत, जगा हुआ। ज्ञानी।
[सं० पु०] (सं.) नवयोगेश्वरों में से एक।

प्रभञ्जन = का० कु०, ५३, चि०, ६६। क० ६।
[सं० पु०] भ्रु० ६५। म० २।
अत्यधिक तोड़-फोड़, टुकड़े टुकड़े कर
(सं.) डालना। पवन, वायु विशेषकर आँधी। महाभारत के अनुसार मणिपुर के एक राजा का नाम।

प्रभा = का० कु०, १६, १८, ५१। कु० ८।
[सं० स्त्री०] का०, ४५, १६३। चि०, १३६, १४०, १५३। भ्रु०, ३५। म०, १६। ल० ७०।
(सं.) आभा, चमक, सूर्यबिम्ब, सूर्य की पत्नी का नाम, एक अप्सरा का नाम। मन्दाकिनी। द्वादशावृत्ति।

प्रभात = आं० ७४, ७६। क०, १३। का० कु०,
[सं० पु०] १०४। का० २७, १५१, १६२, १७५, २१८, २२६, २३०। चि०, १४०, १५६, १६०। प्रे० ५, ७, ११, १५, १८। चि०, १४३, १४५।
(सं.) प्रातःकाल, सबेरा।

प्रभात समीर = का० कु०, १०१।
[सं० पु०] प्रातःकालीन वायु, शीतल मन्द सुगंधित
(सं.) पवन।

प्रभातिक = चि० १५२।
[वि०] (सं.) प्रातःकालीन।

प्रभा-पुंज = का० २५३।
[वि० पु०] सं) प्रभा का समूह। अत्यधिक प्रकाशवाले।

प्रभा-पूरित = का० कु०, १०।
[वि०] (सं.) प्रभा से भरा हुआ।

प्रभा-पूर्ण = का० १८४, २३८।
[वि०] (सं.) प्रभा से पूर्ण।

प्रभा-भरी = का०, २२५।
[वि०] (हि.) प्रभा से भरी हुई।

प्रभाव = का० कु०, ८८। चि० ३२, १७७।
[सं० पु०] प्रे०, ३, १७। ल०, २४।
(सं.) किसी वस्तु या बात पर किसी क्रिया का होने वाला परिणाम, असर, प्रादुर्भाव, अन्तःकरण को किसी की ओर करने का गुण। सूर्य के एक पुत्र का

नाम। सुग्रीव के एक मंत्री का नाम, महात्म्य।

प्रभावती = चि०, १४०।
[वि०] (सं.) प्रभावाली।
(सं स्त्री०) (सं.) सूर्य की पत्नी का नाम, प्रभावती नामक राग।

प्रभावशाली = म०, २०।
[वि०] (स.) प्रभाव पूर्ण, प्रभावित करने वाला। जिसमें प्रभाव हो।

प्रभु = का० कु०, ३, ५८, ८०, १२०, १२१, १२२। चि०, १५४, १८६। प्रे०, ६।
[सं०पु०] (सं.) ईश्वर, भगवान। वह जो अनुग्रह या निग्रह करने में समर्थ हो। अधिपति। श्रेष्ठ पुरुष के लिए सम्बोधन। बम्बई राज्य के कायस्थों की उपाधि।

प्रभु-चरण = प्रे०, २१।
[सं० पु०] (सं.) प्रभु के चरण।

प्रभुत्व = का०, १३६, ल०, ७८।
[सं०स्त्री०](सं.) प्रभुता।

प्रभुता = का०, कु०, ८७।
[सं० स्त्री] (स.) अधिकार, प्रभुत्व।

प्रभुपद = प्रे०, २१।
[सं० पु०](सं.) प्रभुतुल्य पद।

प्रभु-स्मरण-कार्य = का० कु०, १२२।
[सं० पु०](सं.) प्रभु के स्मरण का कार्य।

प्रभो = का०, ६, १०, १५, २३, २५, २६, ३०। का० कु०, १, २, ८, ६२, ६३, ८७, ६६,। चि०, १४०। म०, १०, २२।
[सं० पु०] (सं.) प्रभु का सम्बोधन।

प्रमत्त = का० कु०, १८।
[वि०] (सं.) नशे में चूर। मस्त, पागल, उन्मत्त, असावधान।

प्रमाण = का०, ११०, चि०, १८६।
[सं० पु०] (सं.) वह कथन या तथ्य जिससे कुछ सिद्ध हो। सबूत, सत्यता, निश्चय, प्रतीति, मर्यादा। प्रामाणिक बात या वस्तु। इयत्ता। एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का उल्लेख होता है। मान्य, स्वीकार करने योग्य।

प्रमाता = भ्रू०, १७५।
[सं० पु०] (सं.) प्रमाणों द्वारा प्रमेय के ज्ञान को प्राप्त करने वाला। ज्ञान का करता आत्मा द्रष्टा। साक्षी।
[सं०स्त्री०] (सं.) पिता की माता। माता की माता।

प्रमाद = का० कु०, १०२। का०, १६७। चि०, १८६।
[सं० पु०] (सं०) उन्माद। किसी कारण-वश कुछ को कुछ समझना। भ्रान्ति। भूल-चूक। अन्तःकरण की दुर्बलता।

प्रमुदित = का० कु०, ३३, ४६, ५१। का०, १८१। चि०, ६१।
[वि०] (सं.) विशेष, प्रसन्न।

प्रमोद = का० १३३। चि० ६, ३१, १७३।
[सं० पु०] (सं.) हर्ष, आनन्द।

प्रयत्न = का० ६२, १८२, १८६। प्रे० २१।
[सं० पु०] (सं.) कार्य का उद्यम, जो कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किया जाय, प्रयास, चेष्टा, कोशिश।

प्रयत्न-प्रथा = का० १८१।
[सं० पु०] (सं.) औद्योगिक-व्यवस्था उद्योग परम्परा।

प्रयास = का०, १८१।
[सं० पु०] (सं.) दे, "प्रयत्न"।

प्रलय = आँ०, ५६, ७८। का०, १५, २५, १८२, १६४, २७३। म०, ६२, १०७। ल०, ८०।
[सं० पु०] (सं.) लय को प्राप्त होना। कालान्त में संसार का नाश। मृत्यु। साहित्य में एक सात्विक भाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने के कारण स्मृति नष्ट हो जाती है। अचेतनता।

प्रलयंकर = का०, २०२।
[वि०] (सं.) प्रलय करने वाला।

प्रलयकारिणी= का०, १२ ।
[वि०] (सं.) प्रलय करने वाली ।

प्रलय घटायें = आं०, १६ ।
[सं० स्त्री] (सं.) प्रलय करने वाली घटाएँ ।

प्रलय-जलधि = का०, १० ।
[सं० स्त्री०] सं.) प्रलय रूपी जलधि ।

प्रलय निशा = का०, २०. २३ ।
[सं० स्त्री] (सं.) प्रलयकालिक रात्रि ।

प्रलय नृत्य = का०, १४८ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रलयकालिक तांडव ।

प्रलय पयोनिधि=का०, १८५ ।
[सं० स्त्री०] सं.) प्रलयकालिक समुद्र ।

प्रलय-भीत = का०, १६१ ।
[वि०] (सं.) प्रलयकालिक उपद्रवों से डरा हुआ ।

प्रलयमयी-क्रीड़ा=का० १८५ ।
[सं० स्त्री०] सं.) संघारक खिलवाड़ ।

प्रलयोल्का खण्ड=ल० ५७ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रलयकर उल्का-खंड ।

प्रलाप = का० कु० ११८ ।
[सं० पु०] व्यर्थ की बातें, बकवास, अनर्थकारी
(सं.) वचन ।

प्रलोभन = क०, १३ । का०, २ ८ । भ० ६०.।
[सं० पु०] ल० २६८ ।
(सं.) लालच, लोभ ।

प्रलोभन-मय = क०, २६ ।
[वि०] (सं.) प्रलोभन से युक्त । प्रलोभन के कारण ।

प्रवंचना = क०, २८ । का० कु०, ८२ । का०,
[सं० स्त्री.] १३५ । ल०, ११ ।
(सं.) ठगी, धूर्तता, छल ।

प्रवचन = का० २६ ।
[सं० पु०] उपदेश, भलीभांति समझा कर कहना ।
(सं.) धार्मिक या नैतिक बातों की की जाने
वाली व्याख्या । वेदांग ।

प्रवर्त्तक = ल०, ३३ ।
[सं० पु०] संचालक । हार जीत का निर्णय करने
(सं.) वाला । पंच प्रचलित करने वाला ।

प्रवर्त्तन = का० १६३, २६६ । ल०, ३३ ।
[सं० पु०] कार्य आरम्भ करना । कार्य संचालन
(सं.) करना । प्रचलित करना । प्रवृत्ति, किसी
को अनुचित कार्य करने के लिए प्रेरित
करना और सहायता देना ।

प्रवहमान = का०, २५८ ।
[वि०] (सं) तीव्रगति से चलता या बहता हुआ ।

प्रवास = का०, १७८ । चि०, १४३, १५२ ।
[सं पु०] प्रे , १४ ।
(सं.) अपना देश छोड़ कर दूसरे देश जा
बसना । विदेश यात्रा ।

प्रवासी = का० २११ ।
[वि०] (सं.) प्रवास करने वाला ।

प्रवाह = का० कु०, १२५ । का०, १०, २४१,
[सं० पु०] २४८ । चि०, २६, ५५, ६६ । प्रे०,
(सं.) ११ ।
जल का बहाव, बहता हुआ जल, काम
का चलना झुकाव, प्रवृत्ति । उत्तम घोड़ा ।

प्रवाहिका = का०, २६३, ।
[सं० स्त्री०](सं०) बहाने वाली, दस्त की बीमारी ।

प्रविसि = चि०, १६६ ।
[क्रि०] (अ.) घुस कर ।

प्रवीण = का० १६१ ।
[वि० पु०] (सं.) कुशल, मर्मज्ञ ।

प्रवीन सों = चि०, १४८ ।
[वि०] (ब्र.भा) प्रवीण के समान ।

प्रवीर = का० कु०, ६७, १०६, ल०, ५५ ।
[सं० पु०] (सं बहादुर, वीर, साहसी ।

प्रवेश = चि०, २६ ।
[सं० पु०] भीतर जाना, घुसना, गति, पहुँच,
(सं.) किसी विषय की जानकारी, किसी क्षेत्र,
वर्ग आदि में उसके विशिष्ट नियम
पालते हुए घुसना या लिए जाना ।

प्रशंसा = का० कु०, १, ल०, ५२ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) गुण वर्णन, श्लाघा स्तुति, तारीफ ।

प्रशांत = का० कु०, ३६, ४२, ५२ । का०,

[वि०] (सं.) १४८, १६०, २४२। झ०, ६६। ल०, ७२। स्थिर, अचंचल, निश्चल। वृत्ति। वाला।

[सं० पु०] (सं.) एशिया और अमेरिका के बीच का सागर।

प्रशान्ति = [सं० स्त्री] (सं.) ल०, ३१। पूर्ण शान्ति, निश्चल होने का भाव। आन्दोलन आदि के अभाव की परिचायिका।

प्रश्न = [सं० पु०] (सं.) का० कु०, १२०। का० २४, ३३, ५१, ८१, ११३, १२४। झ०, ३१, ४७। जिज्ञासा, वह बात जो कुछ जानने अथवा जानने के निमित्त कही जाय। एक उपनिषद। विचारणीय विषय।

प्रसंग = [सं. पु०] (सं.) का०, ७४। ल० ४७। मेल। बातों का परस्पर संबंध। पूर्वापर सम्बन्धी। व्याप्ति रूप सम्बन्ध। स्त्री-पुरुष का संयोग, विस्तार।

प्रसन्न = [वि०] (सं.) [सं० पु०] आँ०, ७१। क०, १५, २२, ३२। का०, कु०, ६१, ११२। का० ११७, १६६, १८०, २२४, २४२, २४६। चि०, ४। झ०, ३७, ६१। ल०, ३३, ६६, ७६। चि० ६७। खुश, आह्लादित, सन्तुष्ट, अनुकूल। स्वच्छ। महादेव।

प्रसन्नता = [सं० पु०] (सं.) का०, ११५, ११६, १६७ १७२। म०, १५, २२। सन्तोष, तुष्टि, हर्ष, अनुग्रह, निर्मलता।

प्रसव = [सं० पु०] (सं.) का०, ३२। बच्चा जनने की क्रिया। प्रसूति। जनन। जन्म। उत्पत्ति। बच्चा। सन्तान।

प्रसव-समर्पण [सं० पु०] (सं.) का० ३०। प्रसव होने वाले का समर्पण।

प्रशंसा = प्रे०, २२। स्तुति, तारीफ, बड़ाई।

प्रसाद = [सं० पु०] (सं.) का० कु०, ३७। का०, १५२। चि०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १८४, १८८, १८६, १६०। प्रसन्नता। निर्मलता। स्वास्थ्य। कोई वस्तु जो देवता को समर्पण किया जाय। बड़े लोगों के द्वारा प्रसन्न मुद्रा में छोटों को दी गयी। उपहार, काव्य का वह गुण जिससे भाषा स्वच्छ और साधु होती है। शब्दालंकार के अन्तर्गत कोमल वृत्ति। धर्म की पत्नी। मूर्ति से उत्पन्न एक पुत्र।

प्रसाधन = [सं० पु०] (सं.) का०, १८१। शृंगार करना। शृंगार की सामग्री। कार्य पूरा करना। कंघी से बाल सँवारना।

प्रसार = [सं पु०] (सं.) का० कु०, १, ३६, ४३। विस्तार, संचार, गमन, किसी बात को चारो ओर फैलाना या सुनाना।

प्रसारित = [वि०] (सं.) का०, १८०। फैलाया हुआ। (संगीत भाषण आदि की ध्वनि का रेडियो द्वारा फैलाया जाना) किया हुआ।

प्रसिद्ध = [वि० पु०] (सं.) का०, २३६। विख्यात, मशहूर, भूषित, अलंकृत।

प्रसूती = [सं० स्त्री०] (सं.) चि०, ३८। प्रसव। जनन। करण। प्रकृति। उत्पत्ति-स्थान। सन्तति। वह स्त्री जिसने प्रसव किया हो। जच्चा।

प्रस्तार = [सं० पु०] (सं.) झ०, ५७। विस्तार, फूलों और पत्तों की सेज या सैय्या। आधिक्य। परत। घास का जंगल। छन्द शास्त्र के अनुसार नव प्रत्ययों में से प्रथम इससे छन्दों के भेद की संख्या, उनके रूपों का वर्णन होता है। वस्तुओं, अंकों आदि के वर्गबद्ध समूहों या वर्गों के क्रम या विन्यास

में संगत तथा संभव परिवर्तन करना ।

प्रस्तुत = का० कु०, ८१, १०१, ल० ७३ ।
[वि०] प्रे०, ४, ६७ ।
(सं.) जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई हो । जो कहा गया हो । कथित । प्रासंगिक । उद्यत । निस्पन्न, उपयुक्त ।

प्रस्फुटित = का० कु०४५, २७७, का०, ३३ ।
[वि०] (सं.) विकसित, खिला हुआ । प्रगट ।

प्रहर = का०, १७, ३४ ।
[सं० पु०] = दिन रात का आठवाँ भाग । तीन
(सं.) घंटे का समय ।

प्रहरियों = का०, १८१ ।
[सं० पु०] पहरेवाला । पहर पहर पर घंटा बजाने
(हि.) वाला, घड़ियाली ।

प्रहरी = का० कु०, ६८ । का०, १८५, १८६,
[सं पु०] २०५ । चि०, ९६ ।
(सं.) पहरे वाला । पहर पहर पर घन्टे बजाने वाला द्वारपाल ।

प्रहरी-सा = का० कु०, ६६ ।
[सं० पु०] सं.) प्रहरी के समान ।

प्रहलाद सदृश = का० कु०, ६४ ।
[वि०] सं.) प्रहलाद के समान ।

प्रसित = का०, २५२ ।
[वि०] (सं.) आनन्दित, हर्षित, खुश ।

प्रांत = का०, १४, ३०, २१७, २२१, २३३,
[सं० पु०] २४२, २४५ । म०, १७ ।
(सं.) अन्त, सीमा, सिरा, दिशा, खण्ड, प्रदेश, किसी बड़े देश का कोई शासनिकभाग । एक ऋषि का नाम ।

प्राकार = प्रे०, ४ ।
[सं० पु०] (स) परकोटा । चहारदीवारी ।

प्राकृतिक = का० कु०, ५१ । का०, ३५ ।
[वि०] जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो । प्रकृति
(सं.) के विकार । साधारण, भौतिक, सहज, स्वाभाविक ।

प्रांगण = का० कु०, १०८ । का०, कु०, १०८, ।
[सं० पु०] (सं.) का०, ३०, १७६ । ऋ७, २५ ।
आंगन, सहन, एक प्रकार का ढोल ।

प्राची = आं०, ३२, ६७ । का०, कु०, ८, १०,
[सं०स्त्री०] ६५ । का०, ७७, १६८, १८१, १८४,
(सं.) १६७, २१८ । चि०, १८, २८, १६०, १६३ । ऋ०, ११, २५, ४८ । प्रे०, १५ । ल०, १० ।
पूर्व दिशा ।

प्राचीदिशा = चि०, ६ ।
[सं० पु०] (हि) वह दिशा जिसमें सूर्य निकलता है ।

प्राची नभ = का०, १७१ ।
[सं० पु०] (सं.) पूर्वी आकाश ।

प्राचीर = का०, १४६, २१७ ।
[सं० पु०] (सं.) चारो ओर से घेरने वाली दीवाल । चहार दीवारी, परकोटा ।

प्राण = क०, १२, १८, २६ । का० कु०, ७,
[सं०पु०] ७३, ६३ । का०, ६६, ११७, १३६,
(सं.) १४०, १५१, १६६, १६२, २६६, २६८ । ऋ०, २४, ३३, ६१, ८८ । म०, ५ । ल २७, २६, ५३, ५४, ५५ ।
वायु । शरीर की वह हवा जिससे नर जीवित कहलाता है । सांस । परब्रह्म इन्द्रिय । प्राण समान कोई पदार्थ या व्यक्ति । प्रेम पात्र । काव्य की वह क्रिया जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके ।

प्राण-अधार = का० कु०, २० ।
[सं० पु०] (हि.) प्राण का आधार । प्राण रक्षक ।

प्राण घातक = ऋ०, ४६ ।
[वि०] (सं.) प्राण हरण करने वाला ।

प्राण धन = का० कु०, ६३ चि०, १८६ । ऋ०,
[सं०पु०] (सं.) प्रिय । प्राण रूपी धन ।

प्राणधारी-गन = चि०, १४० ।
[सं० पु०] (सं.) प्राणिवर्ग ।

प्राणनाथ = क०, १७ ।

[सं०पु०] (सं.) प्राणों का स्वामी। प्रिय, पति।

प्राणपपीहा = का० कु०, १६।
[सं० पु०] (सं.) प्राण रूपी पपीहा। प्रिय से वियुक्त प्राण। प्रिय वियोग में आकुल प्राण।

प्राणप्यारे = भ्रू०, ४३।
[वि०] (सं०) प्राणों को प्रिय लगने वाले। प्रिय।

प्राणप्रिय = का० कु०, २२। का०, २१४। चि०, १८७। प्रे०, १।
[वि०] (सं.) प्राण तुल्य प्रिय। प्राणों के प्रिय।

प्राणभरी = ल०, ५२।
[वि०] (हि.) प्राणी। प्राण से पूर्ण।

प्राणमयी = का०, १६३।
[वि०] (सं.) प्राण से युक्त।

प्राण-सदृश्य = का०, १६३।
[वि०] (सं.) प्राण के समान प्रिय।

प्राण-समीर = का०, २७।
[सं० पु०] (सं.) प्राण प्रदान करने वाली वायु। चेतना लाने वाली वायु।

प्राणाधार = का० कु०, ६३। चि०, १२२।
[सं० पु०] (सं.) जिसके कारण प्राण रहें। परम प्रिय।

प्राणियों = का०, १३३। ल०, १२, १३।
[सं०पु०] (सं.) प्राणी का बहुवचन।

प्राणी = क०, ३८। का०, १६, ११६, १२४, १२६, १५७, १६०, १७०, २०१, २१०, २२२, २४०, २७०। प्रे०, १०, १८। ल०, ३२, ४७, ७७। जिसमें प्राण हो। जीव। प्राण वाले।
[सं०पु०] (सं.)

प्राणेश = भ्रू०, ५८।
[सं० पु०] (सं.) प्राणों के स्वामी (प्रिय, पति, ईश्वर)।

प्राणों = का०, १४५, १५६, १६१, १६९, १७७, २००, २५७, २८८। म०, ५। प्राण का बहुवचन।

प्रात = आ०, ३१, ३२। ल० ३१, ४६।
[सं० पु०] (सं.) प्रभात, प्रातःकाल, सवेरा।

प्रातःकर्म = का० कु०, १०१।
[सं० पु] (सं.) प्रातः क्रिया।

प्रात-सा = का०, १०१।
[वि०] (ब्र. भा.) प्रातःकाल सा रक्तिम कर्त्तव्योन्मुख कराने वाले के समान।

प्रात-हिमकन सों= चि०, १८१।
[वि०] (ब्र. भा.) प्रातःकालीन ओस कणों के सदृश्य।

प्रादुर्भाव = ल०, १२।
[सं० पु०] (बु० आ०) आविर्भाव।

प्रान = का०, ६४। चि०, ३५, १४०, १४१, १५६, १६५, १८६। भ्रू० ३७। ल०, २८। दे० प्राण।
[सं० पु०] (ब्र. भा.)

प्रानन = चि०, ११, १७५।
[सं० पु.] ब्र. भा.) प्रान का बहु वचन। दे० प्राण।

प्रान प्यारे = चि०, १७४, १७५।
[सं० पु०] (बु० आ०) प्राणों को प्रिय लगने वाले 'प्रिय'।

प्रान्त = क०, ७ का० १५८, १६७। आ० ७२।
[सं. पु०] (सं.) प्रदेश।

प्राप्त = का० कु०, ३५, ४२, १११। का०, १८६। म०, १५।
[वि०] (सं) लब्ध, पाया हुआ, उत्पन्न, समुपस्थित।

प्राप्ति = का० कु०, ३०। का०, २६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) उपलब्धि, प्राप्य, मिलना, रसीद, पहुँच, आगमन, अष्टसिद्धियों में पाँचवी सिद्धि, फलित ज्योतिष के अनुसार ग्यारहवाँ स्थान, भाग्य, व्याप्ति, प्रदेश, संगीत, मेल।

प्राप्य = का०, १६५, २७०। भ्रू०, २१।
[वि०] (सं.) पाने या प्राप्त करने योग्य, बकाया जो किसी से मिलने वाला हो।

प्रायः = प्रे०, ५।
[अ०] (सं.) अक्सर, अधिक अवसरों पर, लगभग, करीब-करीब।

प्रायश्चित्त = चि०, ३२।
[सं० पु०] (सं.) वह शास्त्रीय कृत्य, जिससे कर्ता का पाप छूट जाता है, जैन मतानुसार नौ

प्रकार के कृत्य जिनके करने से पाप छूट जाते हैं। आलोचना प्रतिक्रमण, विवेक व्युत्सर्ग, तप, छेद, परिहार और उपस्थान दोष।

प्रारब्ध = का० कु०, ६६।
[वि०] (सं.) आरम्भ किया हुआ।
[सं. पु०] (सं.) वह कर्म जिसका फल आरंभ हो चुका हो। भाग्य, किसमत। भाग्य।

प्रारम्भ = का० कु०, ४७। का०, ७३।
[सं. पु०] (सं.) आरम्भ, आदि।

प्रार्थना = का० कु०, ८१। का०, १८६। चि०, ७४। भ्र०, १८, ६७। म०, २१। ल०, ७१, ७३।
[सं० स्त्री०] (सं.) किसी से कुछ माँगना या चाहना, सविनय कथन, विनय, एक तांत्रिक मुद्रा।

प्रालेय = का०, १३।
[वि०] (सं.) प्रलय कालिक, प्रलय वाला, प्रलय का।

प्राह् = चि०, ६६।
[क्रि०] (सं.) बोला।

प्रियंगौ = चि०, १३२।
[सं० पु०] कंगाली नामक मन्त्र, (टाँगुन) पीपल, (सं.) कुटकी, राजिका।

प्रिय = का० कु०, २४, ७५, ६३। का०, १२७, १३५, १५०, २४६। चि०, २४, ६४, १५६, १७०, १७४, १२७, १८६। भ्र०, ५१। म०, १६।
[वि०] (सं.) जिसमें प्रेम हो, प्यारा। मनोहर, पति, स्वामी, कार्तिकेय, एक प्रकार का हिरन, ऋद्धि, कँगनी, हित, भलाई, वेत, हरताल, धर्मात्मा। सुन्दर। ईश्वर।
[सं० पु०] (सं.)

प्रिय अनुशीलन = प्रे०, १५।
[सं० पु०] (सं.) प्रिय का सेवा व्रत।

प्रिय-कर = प्रे० १८।
[सं० पु०] प्रिय का हाथ। आनंद दायक, हर्ष
(सं.) प्रद।

प्रियतम = आँ०, १७। का०, कु०, २०, २३, ७७, ८३। का० २५०, २६६। चि०, १८८, १६०। भ्र०, २१, ४४। प्रे०, १६, १७। म०, १७।
[वि० पु०] (सं.) सबसे बढ़कर प्यारा। परम प्रिय। पति, स्वामी।

प्रियतम-मय = प्रे०, १७, १८।
[वि०] (सं.) प्रियतम का स्वरूप। कण कण में प्रिय का आभास होना।

प्रिय-दर्शन = का० कु०, ५१। प्रे०, ६।
[वि०] (सं.) प्रिय लगने वाला दर्शन। जिसके दर्शन से प्रसन्नता हो। प्रिय का दर्शन।

प्रिय प्रान = का० कु०, ६७। चि०, १८०।
[वि०] (सं.) प्राण तुल्य। प्रिया, प्रिय का सम्बोधन। अत्यधिक अच्छा लगने वाला व्यक्ति या रूप।

प्रिय मनोरथ = का० कु०, ७५।
[सं० पु०] (सं.) प्रिय की इच्छायें। अत्यन्त रुचने वाली अभिलाषायें प्रिय संबंधी हार्दिक शुभ, सुखद कामनायें।

प्रियम्वदा = चि०, ५६, ५६, ६७।
[सं० स्त्री०] (सं.) एक 'पात्रा' का नाम।
[वि०] (सं) प्रिय बोलने वाली।

प्रियलक्ष्य = का० कु०, ७५।
[सं० पु०] (सं.) सुखद लक्ष्य, जिस लक्ष्य में प्रियता निहित हो।

प्रिय-वदन = का० कु०, १८।
[सं० पु०] (सं.) प्रिय का मुख।

प्रियवर = चि०, ५८, भ्र०, २१, प्रे०, २१।
[सं० पु०] सं) सर्वाधिक प्रिय। जिससे बढ़कर और कोई न हो।

प्रियव्रत = चि०, ६६।
[सं पु०] (सं.) एक राजा का नाम।

प्रिय संगम = का० कु०, ३३।
[सं० पु०] (सं.) प्रिय का मिलन। प्रिय के आलिंगन,

संभाषण एवं संयोग से मिलने वाले का भाव।

प्रियहिं = चि०, १५।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) प्रिय को।

प्रिया = चि०, १६२।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रिय का स्त्रीलिंग।

प्रिये = क०, १६, १७, २६। का० कु०, ६७। म० १४।
[सं० स्त्री०] (सं.) 'प्रिया' का सम्बोधन सूचक शब्द।

प्रीत = का० कु०, ११२, ११३। चि०, १८५, १८६, १८८। झ०, ६१।
[वि०] (सं.) प्रणय, आह्लादमय, संपुष्ट, धारा।

प्रीति = चि०, १५, ३१, १०६, १५७, १७२, १८३।
[सं० स्त्री] (सं.) हर्ष, आनंद, प्रेम, कामदेव की स्त्री का नाम जो रति की सौत थी।

प्रेम = आँ, ३२, ४२, ६४। क०, ८, १४, २१, २८, का० कु०, २६, ३१, ६५, ७६, ८५, ६३, १११, १२४। का०, ४०, १५३, १६५, २४३, २६४। चि०, १८, १६, ५८, ७३, ७४, ११० १५६, १६२, १६५, १६८, १७३, १७४, १७५, १८१, १८३, १८४, १८६, १६०। झ०, ११, १६, २४, ३४, ३८, ४४, ४६, ८६। प्रे० २, १३, १६, १७, १६, २०, २२, २३, २४। म०, १७। ल०, ४३, ७५।
[सं० पु०] (सं.) मन की वह आनंदमयी वृत्ति जो किसी को सर्वोत्कृष्ट समझकर सदैव उसके साथ रहने के लिये प्रेरित करती है। मुहब्बत, प्रीति, प्यार, स्त्री और पुरुष का ऐसा पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप, गुण एवं वासना सान्निध्य के कारण होता है।

प्रेम-कंज-किंजल्क=का० कु०, २०।
[वि०] (सं.) प्रेम रूपी कमल का पराग। अतिशय सौंदर्यानुप्राणित। आनंदयुक्त सरसता का भाव।

प्रेम कथा = ल०, १४।
[सं० स्त्री] (सं.) प्रेमियों की कहानी। प्रणयदायिनी। कथा।

प्रेमकला = का०, ७६।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रेम व्यापार में होनेवाले नैपुण्य का भाव।

प्रेम कुञ्ज = चि०, १८०।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम संबंधी अभिलाषाओं को पूर्ण करने का वृक्षों और लताओं से घिरा हुआ स्थान जहाँ प्रणयी बैठकर स्नेहालाप किया करते हैं।

प्रेमचन्द्र प्रतिविम्ब= प्रे०, ११।
[वि०] (सं.) प्रेम रूपी चन्द्रमा की परछाई। प्रेमियों का अति सरस शांति दायिनी स्निग्धता का भाव।

प्रेम-जलद-माला= झ०, ३६।
[वि०] (सं.) प्रेम रूपी बादलों की माला। प्रिय संमिलनात्मक अभिलाषाओं की तीव्रता का भाव।

प्रेम जान्हवी= प्रे, २२।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रेम रूपी गंगा, प्रेम की पवित्रता का भाव।

प्रेम-तीर्थ = चि०, १५।
[सं पु०] (सं.) प्रेम रूपी तीर्थ, प्रेम में मनोमल हारिता का भाव।

प्रेमधारा-पाश = का० कु०, ६३।
[सं०पु०] (सं.) प्रेम की धाराओं का बन्धन। प्राणियों की प्रणय की वृत्तियों का पारस्परिक बन्धन।

प्रेम नाव = प्रे०, १०।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रेम रूपी नाव। (जीवन के दुःख-सागर से पार करने वाली आनन्द रूपिणी नौका)

प्रेम निकेतन = झ०, २६।

[सं०पु०] (सं.) प्रेम रूपी घर, प्रेम का आवास।

प्रेम निधि = का० कु ३।

[सं०पु०] (सं.) प्रेम का खजाना। प्रेम का आश्रय स्थल।

प्रेमनिधि-जल = का० कु०, ३१।

[सं० पु०] (सं.) प्रेम रूपी सिंधु का जल। प्रेम में मिलने वाला दिव्यानन्द।

प्रेम पताका = भ्र०, ६५।

[सं० स्त्री०] (सं.) प्रेम रूपी ध्वजा प्रेम के महत्राम उद्देश्य का भाव)

प्रेम पथ = का० कु०, ६३। प्रे० १४।

[सं०पु०] (सं.) प्रेम रूपी पथ। वह पथ जिसमें संसारिक जीवन के क्लेश दुखः न दे सके और प्रेमी दुःखार्तिक में भी परमानन्द का अनुभव किया करे।

प्रेम-पथिक = प्रे०, १, १८।

[वि०] (सं.) प्रेम-पथ का राही, प्रणयी प्रेमी।

प्रेम परिपूर्ण = भ्र०, ५३।

[वि०] (सं.) प्रेम से भरा हुआ।

प्रेम-परिपूरित=चि०, ६२।

[वि०पु०] (ब्र.भा.) दे०—प्रेम परिपूर्ण।

प्रेम-प्रवाह = चि०, ५६।

[सं०पु०] (सं.) प्रेम रूपी प्रवाह (प्रिय से मिलने की सदृश आनन्द युक्त उत्कंठा की तीव्रता)

प्रेम पिपासा= भ्र०, ४६।

[सं० स्त्री] (सं.) प्रेम की प्यास। प्रेमी से मिलने की अभिलाषाओं का औत्सुक्यतिरेक।

प्रेम-पुत्तली = प्रे०, ८।

[सं०स्त्री०] (सं.) प्रेम की पुतली। प्रेम की मूर्तिमती प्रतिमा।

प्रेम-पुलकित-गात = का०, कु०, ३१।

[वि०] (हि.) प्रणयी की उस स्थिति का भाव जब वह आनंदातिरेक अथवा विरह जन्य दुःखाधिक्य के कारण विभोर हो जाता है और शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

प्रेम-बिम्ब = प्रे०, १७।

[स० पु०] (सं.) प्रेम का मूर्त रूप अथवा विग्रह धारी प्रेम।

प्रेम-भर = चि०, ६२।

[सं० पु०] (सं.) प्रेम से।

प्रेमभरा = का०, कु०, १३, ६१, ६६, १०१।

[वि०] (हि.) पेम से पूर्ण।

प्रेम-मदिरा = क०, ८।

[सं० पु०] (सं.) प्रेम रूपी मादक द्रव पदार्थ (प्रेम की आत्म विस्मृति का भाव)

प्रेममय = क०, ८। का० कु०, २, ३१, ५६, १२२। चि०, १४१।

[वि०] (हि.) प्रेम से युक्त।

प्रेम-मयी = का० कु०, २३।

[वि०] (हि.) प्रेम से युक्त।

प्रेममहान = का० कु०, ७५।

[सं० पु०] (सं.) प्रेम की महत्ता का भाव।

प्रेमयज्ञ = प्रे०, १६।

[सं० पु०] (सं) प्रेम रुपी यज्ञ। (प्रेम की उस भावना का भाव जिससे मिटने की आनन्द दायिनी प्रेरणा मिलती है।

प्रेम-रङ्ग = चि०, १८२।

[सं० पु०] (सं.) प्रेम रूपी रङ्ग मिलन का वह आनन्द जिसमें दो सत्ताएँ एक ही बनकर रहती है।

प्रेम-राज्य = चि०, ७५।

[सं० पु०] (सं.) प्रेम का राज्य। प्रेम मय वाता वरण।

प्रेम-लता = चि० ७५।

[सं० स्त्री०] (सं.) प्रेम रूपी लता। वह विशुद्ध आकर्षण जो गुण दोष की परीक्षा या समीक्षा किये बिना ही केवल रूप रस, गन्ध, शब्द एवं स्पर्श के सानिध्य की प्रेरणा से उत्पन्न होता है।

प्रेम वारि = का० कु०, २७।

[सं० पु०] (सं.) प्रेम रूपी जल। शान्तिदायकता का भाव।

प्रेमवेणु = ल०, २६ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम रूपी बंशी ।
प्रेमसहित = चि०, १४, ७३ ।
[वि०] (सं.) प्रेम से युक्त ।
प्रेमसागर = का० कु०, ६५ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम रूपी सागर ।
प्रेम-सिन्धु = प्रे०, १६ ।
[सं० पु०] (सं) प्रेम रूपी समुद्र ।
प्रेम-सुतीर्थ = का० कु०, १६ । भ०, २० ।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम रूपी सुन्दर तीर्थ ।
प्रेम-सुधा = का० कु०, १२४ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम रूपी अमृत ।
प्रेम-सुधाकर = प्रे०, १७ ।
[सं० पु०] (सं) प्रेम रूपी चन्द्रमा ।
प्रेम-सुधामय = का०, ६ ।
[वि०] सं.) अमरता से निष्पन्न प्रेम । विशुद्ध प्रेम ।
प्रेम-सुधा-सोता = का० कु०, ६१ ।
[सं० पु०] (सं) प्रेम रूपी अमृत का तालाब ।
प्रेमहिको = चि०, ७४ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) प्रेमही को ।
प्रेमालिंगन = का०, १० ।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम जतानेवाला आलिंगन ।
प्रेमास्पद = का०, १८० । चि०, १८४ ।
[वि०] (सं.) प्रेम किये जाने योग्य ।
प्रेमिका = चि०, १४१, म०, ६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रेयसी, प्रेम पात्रा ।
प्रेमी = का० कु०, ६३ । प्रे०, ५, २२ ।
[वि०] (सं.) प्रेम पात्र, जो किसी से प्रेम करे ।
प्रेमी-गन = चि०, १५८ ।
[वि०] (ब्र. भा.) प्रेमियों का समूह ।
प्रेमोद-पूरित = का० कु०, ३७ ।
[वि०] (ब्र. भा.) प्रेम रूपी जल से पूर्ण ।
प्रेयसी = का०, १२८ । प्रे०, १८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रेम पात्रा ।
प्रेरक-शक्ति = का० कु०, ११६ ।
[वि० स्त्री०] (सं.) प्रेरणा देनेवाली शक्ति ।
प्रेरणा = का०, ७६, १०६, १६५, २६१, २६८, २८१ ।
[सं० स्त्री०]
(सं.) वह शक्ति जो किसी कार्य विशेष से अनुरक्त करा दे ।
प्रेरणामयी = का०, ११ , १६३ ।
[सं०] (सं.) प्रेरणा देनेवाली ।
प्रेरित = का० कु०, ६१ । का०, ४८, २६७ ।
[वि०] चि०, ५५ । प्रे०, २१ । ल०, २६, ७५ ।
(सं.) प्रेरणा प्राप्त । प्रेरणा पाया हुआ ।
प्लावित = का०, ६४, २६६ । भ०, १६, ३२ ।
[वि०] (सं.) डूबा हुआ ।

फ

फँसा = क० २७ ।
[वि०] (हि.) फँसा हुआ । बँधा हुआ ।
फँसे = क० १३ ।
[क्रि०] (हि.) बँधे, फँस जाये ।
फटकना = का०, ४० । प्रे० २५ ।
[वि०] (हि.) फट-फट शब्द करना, अस्त्र आदि फेंकना, साफ करना ।
फण = का० ८५ ।
[सं० स्त्री०](सं.) सर्प का फण ।
फणियों = आं० २१ ।
[स० पु०] (हि.) सर्प ।
फन = का०, १४, ६८ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० फण ।
[सं० पु०](फा०) बाज, विद्या, हुनर, छलने का ढंग ।
फफोले = प्रे० १५ ।
[सं० पु० (हि.) छाले, झल्लका ।
फरकत = चि० ८, ६५ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) फड़कना ।
फल = क०, ६, १४, १६, ३१, का० कु०, [सं० पु०] १०१ । चि०, ६, ६४, १५३, १५४,

(सं.) १७२,१८५,१८६। झ०, ६४। म०, १८। वनस्पति में होने वाला। गूदे या बीज से भरपूर बीज-कोश जो किसी विशिष्ट ऋतु में फूल आने के बाद उत्पन्न होता है। कर्म भोग। नतीजा, परिणाम।

फलंक = ल०, ४३।

[सं० पु०] (अ) स्वर्ग, आकाश।

फल ढेर से = का० कु०, १०१।

[वि०] (हि) फूलों के समूह के समान।

फल-फूल = क०, १७। म०, २२।

[सं० पु०] (हि.) फल और फूल।

फल भरता = का० ९८।

[सं०स्त्री०] (हि) फलों से लदे होने का भाव।

फल भोक्ता = का० कु०, ११६।

[वि०] (सं.) फल का भोगने वाला।

फल-मूल = का० कु०, १००।

[सं० पु०] (सं.) फल और जड़। फल और खाने योग्य कंद।

फलवती = म०, २४।

[वि०] (सं.) फल वाली, फल से भरी हुई।

फल्गु-सदृश = का० कु०, ७१।

[वि०] (सं.) गया तीर्थ के निकट बहनेवाली फाल्गु नदी के समान। व्यर्थ सा, निरर्थक सा, सामान्य-सा।

फसना = का०, २६४।

[क्रि०] (हि.) अनायास ही बँध जाना, छल-छन्द का शिकार हो जाना।

फहरत = चि० १६३।

[क्रि०] (व्र. भा.) फहरता है, लहरता है।

फहराती = क०, १०।

[क्रि०] (हि.) लहरती, लहरती है।

फाँस = का०, ८।

[सं०स्त्री०] (सं.) पाश, फन्दा, बेंत।

फाँसना = चि०, २३।

[क्रि०] (हि.) फँसाना, जाल में फँसाना।

फाँसी = चि०, ३, ४८, १४३।

[क्रि०] (हि.) बाँधे, फसायें। (सं.) मृत्युदण्ड।

फाड़ना = का०, ३८, झ०, ४०।

[क्रि०] (हि.) किसी चीज को टुकड़े-टुकड़े करना, फाड़ देना, चीर देना, चीर लगा देना।

फार-सी चि०, १०१।

[वि०] (व्र.भा.) हल के फल के सदृश।

फारिकै = चि०, १७२।

[पूर्व०क्रि०] (व्र.भा.) फाड़ कर।

फिटकार = का० कु०, ८०।

[सं० स्त्री०] (हि.) धिक्कार, लानत, कोसना। डाट डपट। झिड़की।

फिर = आँ०, ११, २७, ४०, ५३, ५६, ६४, ६६, ६७७१, ७४, ७७, ७९। क०, ११, १५, १७, २२, २३, २६, २८, ३०। का० कु०, ५,६, ७, ८, १४, १६, २५, ३२, ३५। का०, ११, १५, १७, २३, २५, २८, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ६४, ७१ ८३, ८५, ९०, ९२, १०१, १०५, १०७, ११०, ११३, ११४, ११८, १२२, १२९, १३२, १३३, १६०, १६१, १६२, १७९, १८०, १८४, १८५, १८६, १९१, १९ , १९३, १९४ १९५, १९६, १९७, १९८, १९९ २००, २०१, २१३, २१८, २३०, २३६ २३८, २४३, २४७, २४८, २५७, २६३ २६७, २७३, २८१, २८५।

एक बार हो चुकने पर एक-बार और दुबारा, पुनः, पुनि, बाद।

फिरना = आ० १६, ६८। का० कु०, ७५, ६६ का०, ३, ४८, ११७, १३१, १३४, १४८, १५०, १७९। चि०, ४८, १५२ १६६, १७७, १८३। प्रे० ६, २०, २४ ल० ६९।

[क्रि०] (हि.) चलना, डोलना, घूमना। चक्कर खाना।

फीकी = का० कु०, ३५। चि०, १८६। प्रे०, २३

[वि०] (हि.) नीरस, स्वादहीन ।

फीके = का० १२६ ।
[वि०] (हि.) जिसमें रस न हो, स्वाद रहित ।

फुलवारी = आ० १९ ।
[सं० स्त्री०] (हिं.) फुलवाड़ी, उपवन, बगीचा ।

फुल्ल = का० कु०, ११४ । का० १५१ । चि०,
[वि० पु०] १४७ ।
(सं.) फूला हुआ, खिला हुआ, प्रसन्न ।

फुल्ल-मल्लिका = झा० ४८ ।
[वि०] (सं.) खिला हुआ बेला का पुष्प ।

फुहारे = का० २६३, चि०, १५८ ।
[सं० पु०] एक उपकरण विशेष जिससे
(हि.) दबाव के कारण जल की पतली धार अथवा छींटें जो चारो ओर निकल कर गिरते हैं । जल का महीन छींटा। हल्की बरसात (झींसी) ।

फूँक = का० कु०, १११ ।
[सं० स्त्री०] फूत्कार हुए गालों से सवेग छोड़ी हुई
(हि.) हवा, मुँह की हवा, साँस यंत्रादि पढ़कर छोड़ी हुई हवा ।

फूट-चली = का०, २६ ।
[क्रि०] (हि.) तोड़कर बह चली ।

फूटना = का० २२६, २६८ ।
[क्रि०] (हि.) भग्न होना, दरकना, टूट जाना । भेद कर निकलना ।

फूटी = आ० २६ । का० २८१ ।
[क्रि०] (हि.) फूट गई ।
[वि०] (हि.) टूटी हुई, भग्न ।

फूटे = आ० १०, का० ५६ ।
[क्रि०] (हि.) फूटना का एक रूप ।
[क्रि०] (हि.) टूटे हुए, अलग हुए ।

फूत्कार = ल० ५७ ।
[सं० पु०] (सं.) मुँह से हवा छोड़ने का भाव, फुफकार ।

फूल = आ० २६, ४४ । क० ६, १४ । का०
[सं०पु०] कु०, ६, १५, ३८, ७३, ८२, ८३ । का० ४६, ५५, ६३, ६४, ६५, ७३, (हि.) ७७, ६२, ६७, १५१, १७८, १६६, २४४, २४६ । चि०, २२, ६३, १५१, १५२, १६६, १७०, १७७ । झ० १६, ३३ । प्रे० २, १३ । ल० १७, ३२ । पुष्प, कुसुम, सुमन । गर्भाशय । बेलबूटे ताम्र मिश्रित रांगा । रोग विशेष ।

फूलना = का० कु०, ४४, ५४ । का० १५३,
[क्रि०] २६४, २६१ । चि०, २२, ६३, १५३,
(हि.) १७७ । झ० ५४ । प्रे० ३ ।
कुसुमित होना, खिलना, विकसित होना । सूजना, स्थूल होना । रूठना । प्रसन्न होना ।

फूलि चि०, १८ ।
[पू०क्रि०] (हि.) फूलकर, प्रसन्न होकर, खिलकर ।

फूली = चि० ६३ ।
[वि०] (हि.) फूली हुई । खिली हुई ।

फेंकना = का० ४५ ८४, ६३, २४७, चि०, ६,
[क्रि०] झ० ३३ ।
(हि.) झोंके से एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर गतिमय करना ।

फेन = का० १४ । चि० १५३ ।
[सं० पु०] पानी के छोटे-छोटे बुलबुलों का कुछ गठा
(सं.) या सटा समूह । झाग ।

फेनिल = आँ० ४२, ७१, का० कु० ५७, चि०
[वि० पु०] १६०, ल० १५ ।
(सं.) फेनसंयुक्त, फेनवाला ।

फेनिल-फन = का० ६८ ।
[वि० पु०] (सं.) झागदार फण ।

फेनिल-लहर = का० ३६ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) झागदार लहरें ।

फेनोपम = का० १६७ ।
[वि०] (सं.) फेन के सदृश (झागदार) ।

फेरत = चि० १६३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) फेरते हैं ।

फेरा = का० २११ । चि० १७७ । प्रे० १७ ।
[सं० पु०] चारों ओर घूमने की क्रिया । चक्कर,

(हि.) बार-बार आना जाना।
फेरि = चि० ६, १५०, १५७, १७०, १८८।
[अ०] (ब्र. भा.) फिर, पुनः, दुबारा।
फेरी देना = आं०, ३६। का० ६५, ११४।
[क्रि०] (हि.) बार-बार आना जाना।
फेरी = आ० ८।
[सं० स्त्री] (हि.) परिक्रमा, प्रदक्षिणा।
फैलना = आँ० ७३। क० ७, १६, १७, १८।
[क्रि०] का० कु० ८८, १०७। का० १४, २८,
(हि.) ५७, ६१, १२१, १२६, १५२, १६४, १६८, १७८, १८०, १८४, १८६, १६१, २०२, २४३, २८१। चि० ४५, ४६, १४६, १८२। प्रे० १०, १६। म० १। ल० ३६।
अधिक जगह घेरना, पसरना। प्रसरित होना।
फैलाना = आं० ६, ४१, ६५। का० कु०, ३४,
[क्रि.] ४२, ५५, ७८। का० ११६, १५६,
(हि.) १६०, १६८, १७०, २५६, ३७२। प्रे० १५, १८। ल०, ३५, ४४।
पसारना, बिखेरना, छितराना, प्रचलित करना।
फैलाये-सी = का० ६७।
[वि०] (हि.) प्रसरित हुई सी।
फोड़कर = का० ४७।
[क्रि०] (हि.) तोड़कर, टुकड़े-टुकड़े करके।
फोड़े = आँ० ११।
[क्रि०] (हि.) तोड़ दिये, नष्ट कर दिये।
फौजें = चि० ६५।
[सं०पु०] (अ.) सेना झुण्ड।

ब

बंक = = का० कु०, ३०।
[वि०] (हि.) टेढ़ा, तिरछा।
बंकिम भ्रू = भ्रू० २२।
[वि०] (सं.) टेढ़ी भौंहें। तिरछी भौंहें।

बन्द = आं०, २५, का०, ६५, ६७, ७१, ८२, १४०, १६५, १८१, १८६, १८६, २१८, २६०। चि०, ३२, ल०, १६।
[सं० पु०] (फा.) वह पदार्थ जिससे कोई बाँधा जाय, बाँध, शरीर के अंगों का जोड़।
[वि०] जिसके चारो ओर कोई अवरोध हो। स्थगित। थमा हुआ।
बंदिगी = का० १६६।
[सं०स्त्री०] (फा०) प्रणाम, ईश्वरोपासना, भगवान की प्रार्थना।
बन्दी = आं०, ४६, ६। म०, ७, १०, ११, २०, २३। ल०, ६७।
[सं० पु०] (सं.) चारण, भाट।
[सं० स्त्री०] (हि.) आभूषण विशेष।
[सं० स्त्री०] (फा०) कैदी, जो बंद किया गया हो।
बन्धन = आं०, २१, ७३,। क०, २२। का०,
[सं० पु०] १३४, १६४, १८०, २४६। चि०,
(सं.) २६। भ्रू०, ६४। ल० १५, २१।
वह रस्सी जिससे बाँधा गया हो। पाश, बाँधने की क्रिया या भाव। कैद खाना, शिव।
बंधन-मुक्त = का०, ८३।
[वि०] (सं.) मुक्त, छूटा हुआ, स्वतंत्र।
बंधन-विहीन = का०, १६०।
[वि०] (सं) मुक्त, स्वतंत्र।
बन्धु = का०, ६४।
[सं०पुं०] (सं.) भाई, गोत्रज, सहायक व्यक्ति।
बन्ध्यो = चि०, १८२।
[क्रि०] (ब्र.भा.) बँध गया।
बधाँ = का०, १६३।
[वि०] (हि.) बंधन में पड़ा हुआ। बँधा हुआ।
बंश = चि०, ४८। ५१।
[सं० पु०] (सं.) कुल, कुटुंब, परिवार, खानदान।
बंशी = प्रे०, १०।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'बंसी'।
बंसी = का० कु०, ८। का०, ६८। भ्रू०, ३०।

[सं० स्त्री०] (हि.) मुरली, बाँस का बना हुआ, मुँह से बजाने वाला वाद्य यंत्र।
बकत = चि०, ५१, १४७।
[क्रि०] (ब्र. भा.) बोलता है। बक-बक करना।
बकना = का०, ३७, १०५।
[क्रि०] (हि.) बक-बक करना, बकवाद करना। अंड-बंड कहना। बोलना।
बक-बक = का० कु०, ४४।
[सं० पु०] हि.) बकवास।
बकुल = चि०, ५५, १८४।
[सं० पु०] (सं.) मौलसिरी का पेड़ या फूल। शिव। एक प्राचीन देश का नाम।
बकुलतर = चि०, ७०।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) बकुल के नीचे या तले।
बघारना = म०, ४।
[क्रि०] (हि.) छौंकना, तड़का देना, योग्यता-प्रदर्शन के लिये बढ़-बढ़ कर या आवश्यकता से अधिक बोलना।
बचकर = का०, १११।
[क्रि०] (हि.) 'बचाना' का पूर्वकालिक रूप।
बचन = चि०, ४९, ५४, ६४, १६४।
[सं० पु०] (सं.) बात, वाणी।
बचना = म०, १
[क्रि०] (हि.) कष्ट आदि से अलग रहना। सुरक्षित रहना। कार्योपरांत अवशेष रहना।
बचपन = ल०, २३।
[सं० पु०](हि.) लड़कपन, बाल्यावस्था।
बचपनसी = ल०, ६
[वि०] (हि.) लड़कपन के सदृश, निश्छल, सरलता-सूचक भाव।
बचाना = आं०, ३०। क०, २६। का० कु०, ८, का०, ३२, ६२, १२४, १३२, २६१।
[क्रि०] (हि) म०, ७।
रक्षा करना।
बचि = चि०, ५२।
[पूर्व क्रि०] (ब्र. भा.) बचकर।
बचेहुयेहैं = का०, १२६।
[क्रि०] (हि.) 'बचाना' का आसन्न भूतकालिक रूप।
बच्चे = का० कु०, १०६।
[सं० पु०] (हि.) १ से ५ वर्ष तक की आयु वाले लड़के।
बच्यो = चि०, ४८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) बचे हैं, बचा है, रक्षित है।
बज = का० कु०, ११।
[सं० पु०] (हि.) बज्र, बिजली, हीर, । इन्द्र का प्रधान अस्त्र। हीरा।
बजाना = आं०, १४, २३, २६। का० कु०, ६३। का०, ३५, ६८, ११२, २७७, २६३। चि०, २३, ३०, १७६। झ०, ३६, ५२। प्रे०, १०, ११, १३। ल०, ४८, ५७, ७६, ६३।
[क्रि०] (हि.) आघात करके शब्द उत्पन्न करना। आघात करना, हवा के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न करना। पालन करना।
बजावती = चि०, ४७।
[क्रि०] (ब्र. भा.) ध्वनि करती है। बजाती है।
बजावहु = चि०, १००।
[क्रि०] (ब्र. भा) बजाओ।
बटमारहूँ = चि०, १६१।
[सं० पु०](ब्र. भा.) लुटेरे, डाकू।
बटा = का०, १६६।
[सं० पु०] (हि.) गोल वस्तु, गोला, गेंद, रोड़ा पथिक, यात्री।
बटोरना = ल०, १८, २४।
[क्रि०] (हि.) बिखरी वस्तुओं को एक स्थान पर रखना, समेटना, इकट्ठा करना।
बटोही = का०, २१३, २५७।
[सं० पु०] (हि.) राही, पथिक, मुसाफिर।
बड़भागी = चि०, ३३।
[वि०] (अवधी) अत्यधिक भाग्यशाली।
बड़वानल = आं०, ४२, ६१।
[सं० पु०] (सं.) वह आग जो समुद्र के ऊपर जलती हुई मानी जाती है।
बड़ा = का० कु०, २३, ३१, ३२। का०, १६७,

[वि०] (हि.) २०६, २२८, २६८। चि, ७० प्रे०, १०। म०, २२।
अधिक विस्तार वाला, अधिक अवस्था वाला, श्रेष्ठ।

बड़ाई = चि०, ४१, ८३।
[सं० स्त्री०] उच्चता, महत्ता, श्रेष्ठता।

बड़ी = क० १५। का० कु०, २३।
[वि०] (हि.) दीर्घ, दीर्घता का भाव। छोटी का विलोम 'बड़ी'।

बढ़ती = का०, १२१, १३४, १३६। प्रे०, १५।
[सं०स्त्री०] (हि.) उन्नति, अपेक्षाकृत अधिकता।

बढ़ाना = आं०, १४, १५, ५२। क, १४,
[क्रि०] (हि.) १५। का० कु०, २६, ६६, ७३। का०, १५, ४६, ५१, ५६, ६८, ६७, ६६, १२१, १३४, १३६, १४१, १५०, १६४, १७१, १७२, १८०, १८२, १८६, १६०, १६३, १६७, २००, २०६, २१०, २५०, २५७, २७८, २८६। चि०, १२, ४७, ५३, ५६, ६१, ६२, १०१, १०६, १५५। प्रे० १०। म०, ३, ५, १७।
अधिक विस्तार करना, विस्तृत करना, फैलाना, दुकान आदि बन्द करना।

बढ़ावन = चि०, ६१, १०१।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दे०–'बढ़ाना'।

बतरावत = चि०, ५८।
[क्रि०] (ब्र.भा.) बात करते हो।

बतलाती = का०, २६३।
[क्रि०] (हि.) कहती है, जताती, निर्देश करती, नृत्यादि में आंगिक चेष्टायें करती, मार-पीट कर ठीक रास्ते पर लाती।

बताना = आं, ७६। क० १८, २६। का० कु०,
[क्रि०] (हि) १, २, ५, ३६, ५१ का०, १७, २८, ४६, ५२, १०४, १४६, १६६, १८४, १६२, १६८, २२६, २६१, २६५, २७२, २८०। चि०, १६, ४६, ६६, ९८, १५५। प्रे० २, ५, ८, २१। ल०, १०। दे०, 'बतलाना'।

बतावत = चि०, ३०, १७८, १७६।
[क्रि०] (ब्र.भा) बताती है।

बदन = का०, कु०, ३४, ६७, १००। का० ८३,
[सं०पु०] (सं.) १५२, १८६। चि०, २८, ४०, ५६, ६५, ७०, १७७, १८२। म० ५, ८।
देह, शरीर।

बदनाब्ज = चि०, १३४।
[सं० पु०] (सं.) मुख रूपी कमल।

बदला = क०, १३, २२। का०, ३३, १३५,
[सं० पु०] (हि.) १६४, १६०, २३५, २६६। झ०, ८६। प्रे० १६, २५।
परस्पर कुछ लेने-देने का व्यवहार, पलटा, विनिमय, प्रतिकार।

बधाई = चि०, ५२।
[सं० स्त्री०] (हि.) किसी शुभ अवसर पर दिया जाने वाला या आनंद प्रकट करने वाला वचन। मुबारकबाद। वृद्धि, मंगल, उत्सव।

बधू = चि०, २१।
कुल बाला। गृह-लक्ष्मी। नव-विवाहिता-पत्नी।

बध्य-पशु = का०, कु०, ११४।
[सं० पु०] (सं.) बलि का पशु।

बन = आं०, २२, ३०, ३८, ६६, ७३,
[सं० पु०] (सं०) ७६। क०, २६। का०, कु०, ८, १६, ३६, ६५, ७०, ७२, ७३, १२२, १२४, १२८, १२६, १३१, १३४, १३५, १३६, १४५, १४६, १६०, १६४, १७०, १७१, १७६। का०, १३, ३५, ५८, ८४, ८६, १७८, १६६, २००, २६४, २६६, २६८, २८१, २८६, २६०, २६३। चि०, १, २२, ५५, ५७, ६०, ७२, १०६, १५७। झ०, ८५। प्रे०, १५, म०, ११, १८। ल०,

२५, ३०, ३५, ३६, ४२, ४३; ४६, ४६, ५०।
कानन, जंगल। पानी। बगीचा।
(क्रि०) 'बनना' क्रिया का एक रूप।

बनकर = [पूर्व० क्रि०] (हि.) का०, कु०, १०। का०, २७, ४८, ५२, ५६, ६०, ७०, १६५, १६६, १६६, १७८। ल, १०, ३६।
रच कर। बनना क्रिया का एक रूप।

बन गया = [क्रि०] (हि.) का०, १५०। ल०, २६।
बनना क्रिया का भूतकालिक रूप।

बनचर = [सं० पु०] (हि.) का० १७६।
जंगली आदमी। वन-पशु।

बनचारी = [सं० पु०] (हि.) चि० १६१।
वन में विचरण करनेवाला बनवासी।

बनत ही = [क्रि०] (हि.) चि० ७०।
बनते ही।

बनदेवी = [सं०स्त्री०] (हि.) चि० ७३।
बन की अधिष्ठात्री देवी।

बनना = [क्रि०] (हि.) आं० १४, ३८, ५३, ५४ का० कु०, ८४। का०, ३, ८ १८, १६, २०, २७, ४६, ५७, ५६, ६५, ६६, ६६, ७१, ७२, ७५, ७६, ८६, ६८, ११०, १११, ११३, ११५, १२३, १२६, १४४, १४७, १५८, १६०, १६४, १७०, १७६, १८०, १८१, १८२, १८४, १८५, १८६, १९०, १६२, १६४, १६७, २०५, २०८, २०६, २१०, २१४, २१६, २१८, २२३, २२६, २२८, २३५, २३८, २३६, २४१, २४३, २४४, २४८, २४६, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २६३, २६८, २७३। चि०, ६०, १७०, २७१। प्रे०, १६। म०, ६, २४। ल० १०, ११, १५, ३४, ६७।
तैयार होना, रचा जाना। निभना। मरम्मत होना, प्राप्त होना। सुअवसर मिलना। मूर्ख या हास्यास्पद सिद्ध होना।

बन-बागों = [सं० पु०] (हि.) प्रे० १४।
जंगल और बगीचों। (बहुवचन)।

बनबाला = [सं०स्त्री०] (सं) चि० ५६, ५८, ६६।
जंगल की रमणी।

बनवास = [सं० पु०] (हि.) चि० ३५, १०७।
बन में जाकर निवास करना। जंगल में बसना।

बन-वासिनी = [सं० स्त्री] (हि.) चि० ६०।
जंगल में वास करने वाली।

बनवासी = [सं० पु०] (हि.) चि० ५७।
कानन में रहने वाला।

बन-माला = [सं० स्त्री०] (हि.) चि० १।
जंगली फूलों की माला।

बन रहा = [क्रि०] (हि.) का० ८७, ६३, ६४, ६८, ६६, १०१, १०३। १४५।
बनना क्रिया का एक रूप।

बनराजी = [सं०स्त्री०] (ब्र.भा.) चि० ६६। ल० ७०।
बन में सुशोभित।

बन-विहंग = [सं० पु०] (सं.) प्रे० १२।
जंगल के पक्षी। कानन-विहंग।

बनाता = [क्रि०] (हि.) आं०, ३२ का०, ३३, ४८, ६४, ७३, ११४, १२०, १२४, १२६, १८६, १६७, १६६, २६७, २८७, २८८, २६४। चि०, १६४। प्रे०, २१। म० २१। ल०, ८, ४३।
बनाना क्रिया का एक रूप।

बनाना = [क्रि०] (हि.) आं०, १२, ४८। क० १८, २८। का० कु०, ६, ११, ३३, ३६। का० १६, ८३, ६३, १६३, १८०, १८१, १६०, २४५, २५०, २५७। चि०, ६६। प्रे०, १०, १४, १६, १८, २४, २६। ल० ६, ४८, ७०।

रचना। अस्तित्व में लाना। तैयार करना।

बनाया = का० कु०, ६, ५२। का० ३०, ८६, [क्रि०] १२७, १३२, १४२, १४६, १६७, (हि.) १६६। चि०, २, ४२, ७१, १०४। ल० ३३, ७५।
बनना क्रिया का भूतकालिक रूप।

बनाली = का० १६५। चि० १४३, १७१।
[क्रि०] (हि.) बना लिया। (सं.) बन की पंक्ति।

बना-सा = का० १४२, २००। ल० ७१।
[वि०] (हि) बने हुए के समान।

बनि = चि०, १७४।
[वि०] (हि.) सब, कुल। (अव्य०) बनकर।

बनि सीपी = चि०, १७२।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) सीपी बनकर।

बनी = आं० ३२, ३३। क० ३०। का० कु०, ८, ३१। का० १३, १६, १६, २०, ७०, ७३, ७४, १०६, १२६, १३१, १४७, १६०, १६२, १७२, २६५, २६६, २७१, २७२, २८५, २६४। चि०, ४५, ४७, ४६, ७३, ६५। ल० १०, १४।
'बनना' क्रिया का एक रूप।

बनी सी = का० १६३, १६६।
[वि०] (हि.) बनी हुई के समान।

बनेगी = चि०, ७३। ल० १६।
[क्रि०] (हि.) दे० 'बनना'।

बन्हि = चि०, ६१।
[सं० स्त्री०] (सं.) आग।

बयार = का० १६६। चि०, १७६, १८७।
[सं०स्त्री०] (देश०) हवा। वायु।

बर = चि०, १४६।
[सं० पु०] (हि.) श्रेष्ठ। वर। वटवृक्ष। दूल्हा।

बरजोर = चि०, १५।
[वि०] (हि.) जबरदस्त। बलवान, अत्याचारी।

बरजोरी = चि०, १८२। भ०, ७०।
[सं० स्त्री०](सं.) जबर्दस्ती। अत्याचार, छेड़छाड़।

बरतै = चि०, १०६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) काम में ले आवें। व्यवहार करें।

बरबस = आं० ५५। का० १२८। चि० १४७।
[क्रि० वि०] भ० ६४। ल० १७।
(हि.) अनायास। व्यर्थ। बलपूर्वक।

बरबस ही = चि०, १७६।
[क्रि० वि०] (हि.) अनायास ही। व्यर्थ ही।

बरषी = चि०, ५६।
[सं० स्त्री०] मृतक का वार्षिक श्राद्ध। (वि०) (हि.) सम्बन्धी।

बरस = आं० ५५, ७८। का० कु० ११३।
[सं० पु०] का० २२५।
(हि.) वर्ष, साल। बरस कर।

बरसता = आं० ३५, ६७। का० ८६, ६१।
[क्रि०] चि०, १, ५, १६, २२, ५७, ५६, (हि.) ६०, १४६, १५६, १७४, १७५। ल० २१, २७।
आकाश से गिरता। ऊपर से गिरता।

बरसहु = चि०, १५६, १६८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) बरसो (सं०) वर्ष भी।

बरसा = आं० ३६। चि० १८०।
[क्रि०] (हि.) ऊपर से गिरा।

बरसात = आं०, ५८। का०, २१७।
[सं० स्त्री०] (हि) वर्षाऋतु। वर्षाकाल। वर्षा।

बरसाती = का० कु०, ३। चि०, ११।
[वि०] वर्षा ऋतु की (क्रि०) 'बरसाना' क्रिया (हि.) का रूप।

बरसाना = का० कु०, ७२। का०, १३, २३।
[क्रि०] भ०, ६२।
(हि.) ऊपर से गिरना।

बरसि = चि०, ३६।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) बरस कर।

बरसे = का०, २३६, २६३। चि०, १४६।
[क्रि०] (हि.) आकाश से गिरे।

बराबर = का० कु०, २। भ०, ६१, ८१।
[वि०] (हि.) समान। तुल्य। एक सा।

बरुणा = ल०, १२ पर तीनबार, १३ पर तीनबार, ३१।

[सं० स्त्री०] (स.) काशी में सारनाथ के समीप से बहने वाली नदी जो गंगा में मिलती है।

बरौनी = आं०, २२। का० कु०, ७७। भ्रं०, ४४। [सं०स्त्री०] (हि.) पलकों के आगे के बाल।

बर्फ = का० कु०, ७१। [सं०स्त्री०] (फा.) पानी का जमा हुआ शीतल रूप।

बर्बरता = ल०, ३३। [सं०] (हि.) क्रूरता। जंगलीपन।

बल = आं०, २२। क०, १४। का० कु०, ३८। [सं० पु०] (हि.) का०, ६, ३६, ५६, ७०, ८७, १७०, १७८, १८७, १६६, २२०, २३८, २३६, २४०। चि०, ६६। भ्रं०, ८१। ल०, ७६। शक्ति। पराक्रम। शौर्य। फेरा। लपेट।

बलखाता = आं०, १५। [क्रि०] (हि.) लचकता हुआ।

बलखाना = का०, ६८। [क्रि०] (हि.) टेढ़ा होना। दबजाना।

बलभीयुत = का०, १८२। [वि०] (हि.) मकान में बनी ऊपर की कोठरी के सहित। चौपारा के सहित।

बलवान = चि०, ६५। [वि०] (हि.) बलवाला। शक्तिशाली।

बलवैभव = का०, ६६। [सं० पु०] (सं.) शक्ति और ऐश्वर्य।

बलशाली = का० कु० ६६, १०६। [वि०] (हि.) दे० बलवान।

बलाका = का० कु०, १ ४। [सं० पु०] (सं.) बगला। बकुला।

बलि = क०, ११। का०, ५२, १२६। [सं० पु०] (सं.) एक भूत यज्ञ, भक्ष्य, देवभोग

बलि कर्म्म = क०, ३१। [सं० पु०] (सं.) बलिदान।

बलिवेदी = ल०, ५४। [सं० स्त्री०] (सं.) बलि चढ़ाने का स्थान।

बलिहारी = भ्रं० ६३। [सं० स्त्री०] (हि) निछावर होना, चढ़ाना।

बली = आं०, १५, २०, ४३। चि० १४६। [वि०] (हि.) बलवाला, शक्तिशाली। (सं.) एक नरेश।

बलै = चि० १०६। [सं० पु०] (ब्र. भा.) मंडल, घेरा।

बल्लरियों = प्रे० ३। [सं० स्त्री०] (हि०) मंजरियाँ, लतायें।

बसन्त = का० कु०, ११६। चि०, १७१, १८०। [सं० पु०] प्रे०, ६। ल, २३। (सं.) एक ऋतु का नाम जिसे ऋतुराज कहा जाता है।

बसंतहि = चि० १७२। [सं० पु०] (ब्र. भा.) बसंत को।

बस = आं०, ६, २०, २५। क०, १३, १६। का० कु०, ८२। का०, ६, १५, १२४, १७१, १८६, २००, २०५, २१०, २२८, २३३, २३६, २४२, २४५, २६६, २७१, २७३, २७८, २८६। चि०, ६, २०, ६५, १५०। भ्रं०, २१। ल०, ५२। [वि०] (हि.) पूरा, बहुत, पर्याप्त।

बस कर = का०, १७१। [क्रि०] (हि.) 'बसना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप।

बसन = का० कु०, ३६। चि०, ५, १५६। [सं० पु०] (हि.) वस्त्र, निवास, स्त्रियों के कमर का आभूषण।

बसना = आं०, २४, २६। का०, ८६, ८७, १२४, १८१। चि०, ८, १७६। [क्रि० अ०] (हि.) निवास करना। किसी स्थान पर टिकना।

बसाऊँ = भ्रं०, ८२। [क्रि० स०] (हि.) 'बसाना' क्रिया का सामान्य वर्तमान-कालिक रूप।

बसाया = का०, १८३। [क्रि० अ०] (हि.) 'बसना' क्रिया का सामान्य भूतकालिक रूप।

बसायो = चि०, ६६। [क्रि० स०] (ब्र. भा.) 'बसना' क्रिया का सामान्य भूत-कालिक रूप।

बसुधा = का०, १७५, १८२, १८५। चि०, १६३। ल० २४, ३०, ४०, ४२।
[सं० स्त्री०] (सं.) [वि०] (सं.) पृथ्वी। धन को धारण करने वाली। पृथ्वी का सूचक अर्थ।

बस्ती = आं०, ६।
[सं० स्त्री०] (हि.) वह स्थान जहाँ व्यक्ति निवास करते हैं, लोगों के रहने का स्थान, गाँव।

बहकती = भ्रु०, ५५।
[क्रि० अ०] (हि.) 'बहकना' क्रिया का सामान्य वर्तमान कालिक रूप।

बहना = क०, १५। का० कु०, २६। का०, ४, १२८, १२६, १४२, १४८, १६०, १६७, १८०, १६०, २०१, २३३, २३८, २४६, २६१। चि०, १, ११, २६, १५४। भ्रु०, ३४, ५५। प्रे०, ११, १५। ल०, ७२, ७६।
[क्रि० अ०] (हि.) द्रव पदार्थों का स्रवित होना, हवा का चलना।

बहरी = का०, ५।
[वि०] (हि.) न सुनने वाली।
[सं०स्त्री०] (सं.) एक शिकारी चिड़िया।

बहलाती = का०, १७५।
[क्रि० स०] (हि.) बहलाना क्रिया का सामान्य वर्तमान रूप।

बहलाना = आं०, १२।
[क्रि० स०] (हि.) चित्त हटाना, भुलावा देना, मन प्रसन्न करना।

बहाना = आं०, ३१, ४२। का०, १०६। भ्रु०, ४३। प्रे०, २४। ल०, ७६।
[क्रि० अ०] (हि.) प्रवाहित करना, पानी की धारा में किसी चीज को डालना, फेंक देना।

बहार = ल०, ३६।
[सं०स्त्री०] [फा०] वसन्त ऋतु, मौज, रमणीयता।

बहावो = का० कु०, ४६।
[क्रि० स०] (हि.) 'बहाना' क्रिया का आज्ञार्थक रूप।

बहिनें = चि०, १२। प्रे०, २२।
[सं०स्त्री] (हि.) बहनें। भगिनियाँ।

बही = आं०, १८। का०, १८१। ल०, १०।
[क्रि० अ०] (हि.) 'बहना' क्रिया का भूतकालिक रूप।
[सं०स्त्री०] (हि.) लेखा जोखा रखने की पुस्तिका।

बहु = का० कु०, ७४, ६८। चि०, २४ बार। भ०, १४।
[वि०] (सं.) अधिक, बहुत, अनेक।

बहुत = क०, २६। का०, ११२, २१६। चि०, ५७, ५८। प्रे०, १३। भ०, ५।
[वि०] (हि.) दे० 'बहु'।

बहुनाको = चि०, ६३।
[सं०पु०] (हि.) बहुत से नाके। वह स्थान जहाँ से शत्रुओं को घेरकर पराजित किया जा सकता है।

बहुमति = चि०, ४६, ५५।
[अव्य०] (हि.) सब तरह से।

बहुमूल्य = क०, १८।
[वि०] (सं.) मूल्यवान, कीमती, अधिक मूल्य वाला।

बहुरंग = का०, १८२।
[वि०] (सं.) अनेक रंगों वाला, रंगविरङ्गा।

बहुरुपिया = भ्रु०, ६४।
[सं०पु०] (हि.) वह जो तरह-तरह का रूप धारणकर लोगों को प्रसन्न कर अपना जीवन निर्वाह करता है।

बहुल = चि०, १६५।
[वि०] (सं.) अधिक, ज्यादा विशेष।

बहे = का० १२८, १६५।
[क्रि० अ०] (हि.) 'बहना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

बाँकी = का० कु०, ४३।
[वि०] (हि.) सुन्दर और बनी ठनी हुई, छैली।
[सं० स्त्री०] हि. बाँस काटने का टेढ़ी एक औजार।

बाँटती = का०, २७०।
[क्रि० स०] (हि.) 'बाँटना' क्रिया का सामान्य वर्तमान कालिक रूप।

बाँध = का०, १६६।

[सं० पु०] पानी के बहाव को रोकने के लिए मिट्टी
(हि.) चूने आदि का बना हुआ पुस्ता।

बाँधता = का०, ६२।
[क्रि० स०] 'बाँधना' क्रिया का सामान्य भूतका-
(हि.) लिक रूप।

बाँधना = का० कु०, ८८।
[क्रि० स०] कसने के लिए घेरकर रोकना, पाबन्द
(हि.) करना, प्रेम पाश में बद्ध होना।

बान्धवों = चि०, १३२।
[सं० पु०] (हि.) भाइयों, बन्धुओं, मित्रों, रिश्तेदारों।

बाँधि = चि०, २६ । ७३,
[क्रि०सं०](व्र.भा.) बाँधकर।

बाँधि-पराजे चि०, ६३।
[क्रि० स०] पराजय को अवरुद्ध कर, विजय की
(व्र.भा.) कामना साथ लेकर।

बाँधो = चि०, ७४।
[क्रि० स०](हि.) बाँधना क्रिया का आज्ञार्थक रूप।

बाग = चि०, १८०।
[सं० पु०] (अ.) उद्यान, बाटिका, उपवन।[स्त्री०] लगाम।

बाजी = भ्रु० ५१।
[वि०] (हि.) कोई।
[सं० स्त्री०](फा० शर्त, दाँव। [पु०] (हि.) घोड़ा।
[क्रि० अ०] (हि.) 'बजना' क्रिया का पूर्णभूत कालिक रूप।

बाजी जीतना = का० ६३।
[क्रि० स०] दाँव को जीत लेना, शर्त में जीत
(हि.) जाना। [मुहा०] विजय प्राप्त करना।

बाटने = का०, ८७, १५३।
[क्रि० स०] किसी वस्तु का भाग अलग करने के
(हि.) लिए, वितरण करने के लिए।

बाट्यो = चि०, ६६।
[क्रि० स०](व्र. भा.) बाट दिया। वितरित कर दिया।

बाड़व = का०, १६, २०७।
[सं० पु०] (सं.) बड़वानल, ब्राह्मण, घोड़ियों का समूह।

बाड़वरूप = का० कु०, ७५।
[सं० पु०] (सं.) बड़वानल का रूप या स्वरूप।

बाढ़ = का० २०२। चि० १८१। ल० १३।
[सं०स्त्री०] नदी के पानी का अपनी सीमा से
(हि.) ऊपर आकर चारो तरफ फैल जाना, बढ़ने की ओर अग्रसर होना।

बाढ़ी = चि० १२ ५३।
[क्रि०] (व्र. भा.) बढ़ गई।

बात = आं० ८ क०, १, १८, १६, २२,
[सं०स्त्री०] २८। का० कु० ४७, ८४। का०,
६४, ८६, १११, १३४, २७८। चि०,
३, ८, १८, २६, ३१, ३५, ६०, ६१,
७२, ६०, १०३, १०५, १६०, १७२,
१८७, १६०। प्रे०, ११, १६, १६,
२४। म० १०, १४, २४। ल०, ११।
कथन, वार्णी, वचन, [पु०] वायु।

बातन = चि० ६१।
[सं० स्त्री०] 'बात' का बहुवचन।
(व्र. भा.)

बाद = ल०, १३, ३१।
[सं० पु०] (सं.) तर्क, झगड़ा, उपरांत। मामला।

बादल = भ्रु० ३१, ५४। ल० ३७।
[सं०पु०](हि.)= मेघ, घन।

बाधक = का०, ११७।
[वि०] बांधने वाला, बाधा पहुँचाने वाला,
(सं.) रोकने वाला। प्रतिबन्धक।

बाधा = आं०, २१। क०, १४। का० कु०,
[सं०, स्त्री०] १०६। का०, १३६, १८६, १ ६।
(सं.) भ्रु०, ७७, ८२। ल०, ६६।
अड़चन। रुकावट।

बाधायें = का०, ६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) रुकावटें। अड़चनें। विघ्न।

बाधाओं = का०, २०७।
[सं० स्त्री] (हि.) रुकावटों। कठिनाइयों। विघ्नों। अवरोधों।

बाधामय = का०, १६५।
[वि०] विघ्नों से भरा हुआ। कठिनाइयों से
(सं.) परिपूर्ण। अवरोधमय।

बान = चि०, ३, १६३, १७८, १७६, १८६।
[सं० पु०] तीर। आदत। पानी की ऊँची लहर।
(हि.) बनाव। शृंगार।

बानन = चि०, ४२।
[सं० पु०] ब्र.भा.) बान का बहुवचन।

बानि = चि०, १८६।
[सं० पु०] (हि.) दे 'बान'।

बानी = चि०, ५०।
[सं० स्त्री०] वाणी। वचन। सरस्वती। साधुओं के
(ब्र. भा.) उपदेश।

बाबा = क०, १६।
[सं० पु०] बाप का बाप। दादा। साधु। सन्यासी
(हि.) बड़े बूढ़ों के लिये आदर सूचक संबोधन।

बारम्बार = का० कु०, ६४। का०, १६। झ०, ८१।
[क्रि०वि०] ल०, १३।
(हि.) बारबार। लगातार।

बार = क०, ३०। का०, ८६। चि०, ४१,
[सं० पु०] ४२, ६९। म०, १०। ल०, ३५।
(हि.) द्वार। राजसभा। समय। काल।
बाल। बारी।

बार-बार = क०, ११, का०, १३, १४, २३,
[क्रि०वि०] १६६। चि०, ६, प्रे०, ६। ल०, ३५।
(हि.) दे० 'बारम्बार'।

बारिधि = चि०, १४६।
[सं०पु०] (सं०) समुद्र।

बारूद = ल०, ६५।
[सं० स्त्री०] प्रसिद्ध विस्फोटक चूर्ण जो आग लगने
(ब्र. भा.) से भड़क उठता है।

बाल = का० कु०, १०६,१२१। का०, ४७,७२,
[सं०पु०] १५२। चि०, ५७, ६३, ६६, ७०,
(सं) १४१। झ०, ६१, ८१। प्रे०, १८।
बालक। नासमझ। केश।

बाल अरुण-सी= का०, २४८। झ०, २०।
[वि०] बाल सूर्य के समान या उगते हुए सूर्य
(सं०) के समान।

बालक = का० कु०, ४२, १०५, १०६। का०,
[सं० पु०] २७६, २८०। चि०, ६४, ७१, ७३,
(हि.) ७४, ७५। झ०, ६।
लड़का, बेटा, पुत्र।

बालक युगल-करस्थ = का० कु०, ७, ११६।
[सं० पु०] (हि.) बालक के दोनों हाथों में।

बालक-कोमल-कंठ = का० कु०, ११८। का०, २४३।
[सं० पु०] चि०, ४२, ६३, ७०। प्रे०, १०।
(सं.) बालक का सुरीला गला।

बालक्रीड़ा भूमि = का० कु०, ११२। म०, २२।
[सं०स्त्री०] (सं.) बालक के खेलने की जगह।

बालपन = ल०, ७२।
[सं०पु०] (सं.) लड़कपन। बचपन।

बाल-बकुले = चि०, १३२।
[सं० पु०] (सं.) बकुले के बच्चे।

बाल-सखी = चि०, ५६।
[सं०स्त्री०] (सं.) बचपन की सखी।

बाला = आं० ६१। का० कु०, ८६। का०, ३६,
[सं० स्त्री०] ६२, ११६, १६८, १७१, १७८। चि०,
(सं.) ५८, ६७, ६८, ६६, ७०, ७५। ल०,
४८।
बालिका। तरुणी। पुत्री। भार्या।

बालिका = का०, ५, ४३। ल०, १५।
[सं०स्त्री०] (सं.) लड़की। बाला।

बालिकायें = ल०, ६०। प्रे०, १०।
[सं० स्त्री०] (हि.) लड़कियां। बालायें।

बालिका-सी = का०, ६३।
[वि०] (हि.) लकड़ी सी।

बालिके = का०, १६५।
[सं० स्त्री०] (सं.) बालिका का सम्बोधन।

बालुका = चि०, १७०।
[सं०स्त्री०] (सं.) रेत, बालू।

बालू = का० कु०, १२। का०, १८२। झ०,
[सं० पु०] ३२। प्रे०, १५।
(सं.) रेत। चट्टान का चूर।

बालू की दीवाल = का० कु०, १०८।

[मुहा०] (हि.) जल्दी नष्ट हो जाने वाला। अविश्वसनीय।

बाले = का०, १००, १६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) बाला का सम्बोधन।

बाल्य-सखी = प्रे०, १६।
[सं० स्त्री०] (हि.) बचपन की सहेली।

बावली = का०, ३०।
[सं० स्त्री०] (हि.) पगली। छोटा-गहरा तालाब।

बावले = का०, २११।
[सं० पु०] (हि) पगले। विक्षिप्त।

बास = चि०, २७।
[सं० पु०] (हि.) सुगन्ध। स्थान। निवास स्थान। अग्नि। वस्त्र।

बासर = चि०, ३५।
[सं० पु०] (सं.) दिन।

बासी फूल = का०, ५५।
[वि०] (हि.) पुराना फूल। विगत कल का फूल।

बासुरी = का० कु०, १११।
[सं० स्त्री०] (हि.) वेणु। मुँह से फूँककर बजाया जाने वाला एक वाद्य।

बाहु = का०कु०, १६, ल०, ५२।
[सं० स्त्री०] (हि.) भुजा। बांह।

बाहन = चि० १५७, १८६।
[सं०पु०] (हि.) सवारी।

बाहनहूँ को = चि० ७२।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) सवारी को भी।

बाहनि = चि०, ५७।
[सं० स्त्री०](सं.) सवारी। सेना।

बाहर = का०, २१६, २३४, २३८, २५१।
[क्रि०वि०] झ०, ४३।
(हि.) सीमा के उस पार। सीमा। अन्दर का उल्टा।

बाहुपाश = ल०, ५४।
[सं०स्त्री०](सं.) हथकड़ी। भुजबन्द।

बाहु-लता = आं, २४। ल०, १०।
[सं०स्त्री०](सं.) भुजा रूपी लता।

बाहें = का०, का० ६७, १७६, १६८।
[सं०पु०] (हि.) भुजाओं।

बिन्दी = का०, कु०, ११।
[सं० स्त्री०] (सं.) सौभाग्यवती के मस्तक पर सिन्दूर का गोल टीका। शून्य का सूचक।

बिन्दु = का०, २१५, २७२। चि०, १६२, १८१ ल०.३५।
[सं० पु०] (सं.) पानी की बूंद। बिन्दी, शून्य।

बिंध जाती = का०, ११२। झ० २१।
[क्रि०] (हि.) फंस जाती। उलझ जाती।

बिंधे = का०, १६३।
[क्रि०] (हि.) छिपे हुए। फँसे हुए।

बिम्ब = का० २३३। चि० २१, १६२।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा। मण्डल। छाया।

बिकल = चि०, १७६।
[वि०] (हि.) व्याकुल। व्यग्र। व्यथित। घबड़ाया हुआ।

बिकसाया = का० कु० ३४।
[क्रि०] हि.) प्रफुल्लित किया। प्रसन्न किया।

बिकसित = का० कु० ३४, ३६, ४२।
[वि०] (हि.) उगा हुआ। प्रफुल्लित। खिला हुआ।

बिकसे = का० कु०, ४८।
[क्रि०] (हि.) खिले। प्रसन्न हुए।

बिकास = का० कु० १८।
[सं० पु०] (हि.) फैलाव। उन्नति। प्रगति।

बिखरती = का०, ८४, ६१।
[क्रि०] (हि.) चारो तरफ छिटकती।

बिखरना = आं०,२५,३८,५४.का० कु० ९१। का० २३, २५, ३६, ४०, ५४, ५८, ५६, ६५, ७०, ७५, ६१, १४३,१५१,१५८, १६७, १६८, १६६, १७६, १७७, १७९, १८३, १६७, २१३, २१८, २२१, २७१, २७३। चि०, ४६। झ०, २५, २८, ३३। प्रे०, २५। ल०, १५, २१, २४, ३०, ३५, ४२, ४३, ५०, ५६, ७६।
[क्रि०](हि) चारो तरफ छिटकना।

बिखरा = आं, ४१, ४८। का०, ८६, २६२।
[क्रि० अ०] (हि.) ल०, ३६, ४५।
तितर-बितर हुआ, फैला।

बिखराये = आं०, ३८।
[क्रि० स०] (हि.) छिटकाये गये।

[वि०] (हि.) बिखरे हुए।

बिखराता-सा= का०, १८५, ६५, २१०।
[वि०] (हि.) बिखराते हुए के समान।

बिखरावत = चि०, ६२।
[क्रि० अ०] (हि.) बिखेर देता है। बिखराता है।

बिखेरत = का०, २८५, २८८। चि०, १५६।
[क्रि० अ०] (हि.) बिखेरता है।

बिगड़ता = का०, १२६।
[क्रि० अ०] (हि.) खराब हो जाता, क्रोध में आकर कुछ कहता।

बिगड़ते-बनते = का०, १०६। ल०, ७६।
[मु० हा०] (हि.) उत्थान और पतन की स्थिति में समान रूप से आगे बढ़ना, गुस्सा होना।

बिगखो = चि०, ४८।
[क्रि० अ०] (ब्र. भा.) बिगड़ गया, खराब हो गया, नष्ट हो गया।

बिचारि = चि० ४२, ४६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विचार कर।

बिचारी = चि०, ५०, ५६।
[सं० पु०] (हि.) विचारणीय। (स्त्री.) दीन, असहाय स्त्री।

बिचारे = प्रे०, ५।
[वि०] (हि.) जिसका कोई साथी न हो,। गरीब, दीन। (बहुवचन।)

बिछ = का० कु०, १३। का०, ११८।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) बिछना क्रिया का रूप।

बिछड़ना = का० कु०, १०६। झ०, ६३।
[क्रि०] प्रे०, २।
(हि.) अलग या जुदा होना। वियोग होना।

बिछड़े = का०, १२।
[वि०] (हि.) छूटे। (क्रि०) बिछड़ना क्रिया का एक रूप।

बिछती = प्रे०, २५।
[क्रि०] (हि.) बिछना क्रिया का एक रूप। छितराती।
भूमि पर गिरती।

बिछना = का० कु०, १०१।
[क्रि०] (हि.) फैलना।

बिछरहा = का०, १४६।
[क्रि०] (हि.) बिछना क्रिया का एक रूप।

बिछलता = का०, ११, १०१। झ०, २४।
[क्रि०] ल०, २३।
(हि.) फिसलना। बिछलना क्रिया का एक रूप।

बिछलन = का०, ६३।
[सं० स्त्री०] (हि.) सरकन। फिसलन।

बिछली = ल०, ४४।
[क्रि०] (हि.) बिछलना क्रिया का भूत कालिक रूप।

बिछाइ = चि०, ७०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दे० बिछाकर।

बिछाकर = आं०, १४।
[क्रि०] (हि.) बिछाते हुए। फैलाकर। (पूर्वकालिक)

बिछुड़ना = का० कु०, १०१। प्रे० १३।
[क्रि०] (हि०) अलग या जुदा होना,। वियोग होना।

बिछुड़े = का०, २२७।
[वि०] (हि.) छूटे। अलग हुए।

बिछुरन = चि०, १८१।
[क्रि०] (ब्र.भा) दे० बिछुड़ना।

बिछुरे = चि०, ६१, ६२, १८१।
[वि०] (हि.) दे० बिछुड़े।

बिछे = क०, १५। प्रे०, १६।
[वि०] (हि.) फैले। बिखरे।

बिजली = का०, ७, ४६, ८१,२२४, २२६।
[सं० स्त्री०] विद्युत। चमकीला। चपला। अतिशय।
(हि.) चञ्चल।

बिजली-सी = झ०, ६२।
[वि०] (हि.) अत्यन्त चंचल सी। बिजली के समान, चमकीली सी, विद्युत सी।

बिज्जुलता = चि०, १३।

[सं०स्त्री०] (अप.) विद्युत-लता। बिजली की बेलि।
बिज्जुली = चि०, १५०।
[सं०स्त्री०](अप०) दे० बिजली।
बिठलाया = प्रे०, २०।
[क्रि०] (ब्र.भा.) बैठाया। बैठाना क्रिया का एक रूप।
बिठा = का० कु०, ४५।
[पूर्व०क्रि०](हि.) बैठाना क्रिया का एक रूप।
बिठाता = प्रे०, २१।
[क्रि०] (हि.) बैठाता। बैठाना क्रिया का एक रूप।
बिडम्बना = ल०, ११।
[सं०स्त्री०] (हि.) दे० बिडम्बना।
बितरहु = चि०, ६१।
[क्रि०] बितरण करो। बाँटो। बाटना क्रिया
(ब्र.भा.) का एक रूप।
बिताना = का० कु०, ३३। का०, १७५। प्रे०,
[क्रि०] २१। ल०, ३५।
(हि) गुजारना। व्यतीत करना।
बितै = चि०, १७१।
[पूर्व०क्रि०] बिता कर। व्यतीत हुआ। बीता क्रिया
(ब्र. भा.) का एक रूप
बिदा = का० कु०, ६६। प्रे०, १४।
[सं० स्त्री०] आये हुए का लौट जाना। गमन। जाना।
(हि.) जाने की आज्ञा।
बिदाई = प्रे०, १४।
[सं० स्त्री०] (हि.) जाने का भाव (जुदाई)।
बिधान = चि०, ६८।
[सं० पु०] (सं.) कानून। नियम।
बिधि = चि०, ६६, ७३, ७४, १३३, १४३।
[अव्य०] (हि.) प्रकार।
बिधु = प्रे०, १६।
[सं० पु०] (हि.) चन्द्रमा।
बिधुकर = का० कु०, ३४।
[सं०पु०] (सं) चन्द्र किरणें।
बिधुकला = चि०, ४५।
[सं०पु०] (सं) चन्द्र किरणें। चन्द्रमा की कला।
बिद्धयो = चि०, १८४।
[वि०] (ब्र भा.) छिदा। विधा।
बिन = आं०, ५१। चि०, ३४, ५७, १६६।
[अव्य०] (हि.) बिना।
बिनती = का० कु०, ८४।
[सं० स्त्री०] (हि.) प्रार्थना, विनय, निवेदन।
बिना = का० कु०, ४३। का०, ५६। चि०,
[अव्य०] २१,३४, ६१, १७१। प्रे०, २, २३।
(सं.) म०, १२।
बिन, छोड़कर।
बिनु = चि०, १७४।
[अव्य०] (ब्र भा.) दे० 'बिना'।
बिनोद = चि०, १६७।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'बिनोद'।
बिनोदमय = का० कु०, ४८।
[वि०] (हि.) विनोद युक्त। मनोरंजनयुक्त।
बिप्रन = चि०, ३१, ५३।
(सं० पु०) (ब्र.भा) बिप्रों, ब्राह्मणों, द्विजों।
बिभात = चि०, ७०।
[वि०] (ब्र.भा.) चमकता हुआ। ज्योतित।
बिमल = का० कु० १६। चि०, ४५, १६५।
[वि०] (सं.) दे० 'विमल'
बिरल = का०, १७७।
[वि०] (सं.) दे० 'विमल'।
बिरह = चि०, १४, १७१, १६०।
[सं० पु०] (हि.) दे० 'विरह'।
बिरहाग्नि-ज्वाला = चि०, ३६।
[सं० पु०] (सं.) विरह के अग्नि की ज्वाला।
बिराजहिं = चि०, ४७।
[क्रि०] (ब्र.भा.) विराजमान हों।
बिलखता = का० कु०, ६४।
[क्रि०] (हि.) विलाप करता।
बिलखाता = आं०, ३१, भू०, ३१।
[क्रि०] (ब्र.भा.) दे० 'बिलखाना'।
बिलखाती = आं० ८। का०, ११८, १६४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दे० 'बिलखना'।
बिलसै = चि०, १४६।

[क्रि०] (ब्र.भा.) प्रमुदित होता है। विलास करता है।
बिलोकत = चि०, १७६।
[क्रि०] (ब्र.भा.) देखता है।
बिलोकै = चि०, १८२।
[क्रि०] (ब्र. भा.)दे० 'बिलोकत'।
बिलोल = चि०, १४३।
[क्रि०] (सं.) हिलना।
बिशेश्वर = का० कु०, ३१।
[सं० पु०] (सं०) ईश्वर, प्रभो।
विश्व = चि०, १६।
[सं०पु] (ब्र.भा.) संसार।
बिसरत = चि०, ३
[क्रि०] (ब्र भा.) भूल जाता है।
बिसरायो = चि०, ३४, १६६।
[क्रि०] (ब्र.भा) भुला दिया।
बिसारी = चि०, ३५, ५७, १७६, १८३ १८४।
[क्रि०] (ब्र.भा.) बिसार दिया। भुला दिया।
बिसेखि = चि०, १७२।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा.)विशेषता से युक्त होकर।
बिस्तृत = का० कु०, ३६।
[वि०] (हि.) फैला हुआ। दे० 'विस्तृत'
बिहंगम = का० कु०, ३३, ४२।
[सं० पु] (हि.) पक्षी। चिड़िया। दे० 'विहंगम'
बिहसती = आं०, २५।
[क्रि०] (हि.) प्रमुदित होती, प्रसन्न होती।
बिहरण को= चि०, ६६।
[क्रि० वि०] विचरण करने के लिए। विहार करने
(ब्र. भा.) के लिये।
बिहरत = चि०, १४३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विहार करता हुआ। विहार करता है।
बिहरन = चि०, ६०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विचरण। विहार करना।
बिहरै = चि०, १४६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विहार करै।
बिहारथल = चि०, १८८।
[सं० पु०] (हि.) विहार करने का स्थान। अभिसार स्थल।
बिहारि = चि०, ५१।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) विहार कर।
बिहारी = प्रे०, १६।
[वि०] (हि.) विहार करने वाला।
बिहाल = चि०, १७१, १७७।
[वि०] (हि.) प्रसन्न, कामुक, व्यग्र।
बीच = आ०, २५। का० कु०, ३६। का०, ४६,
[अ०] ४८,५३, ५४, १३६,१५०, १८१, १८२,
(हि.) २६१। चि०, २, ११, २४, ५६, ६६,
६७। भ्रु०, ११, ५५। प्रे०, १४,
२१, २२। म०, ४।
मध्य।
बीच-बीच = का०, १८२।
[अ०] कुछ अन्तर पर।
बीचि = का० कु०, ३४। चि०, १४६।
[सं० स्त्री०] (हि.) लहर, तरंग।
बीचिन = चि० १७०।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.)छोटी छोटी लहरें।
बीचियाँ = का०, १६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) छोटी छोटी लहरियाँ।
बीचियों = भ्रु०, ३५।
[सं० स्त्री०] (सं.) लहरों।
बीज = का०, १४१, १४६, १८२। म०, २४।
[सं० पु०] (हि.) मूल। गुठली। बीया।
बीणा = चि०, १४, ३०। भ्रु०, ३४।
[सं० स्त्री०](सं)एक प्रकार का वाद्य यन्त्र। दे० वीणा'
बीण-स्वर = चि०, ४७।
[सं० पु०](सं.) वीणा का स्वर।
बीत चली है = का० १८६। ल०, १०।
[क्रि०] (हि.) समाप्त हो चली है।
बीतत = चि०, ८।
[क्रि०] ब्र भा) व्यतीत होता है।
बीतना = आं०, ८, ५५, ७०। का०, १७, २४,
[क्रि०] ६०, १६२, १६४, १६५, १६६,
(हि.) = १६७, २०७, २२२। चि०, १८, ५७,
६०। प्रे०, १६, १८, १६, २०, २२।

ल०, ३२।
व्यतीत होना।

बीती = का०, २३, १७७। प्रे०, १२, १६, १६, २३। ल०, १६।
[क्रि०] (हि.) व्यतीत हुई।

बीन = का०, १०, ६६, ११२, १६३। चि०, ४७, १००, १६७। ल०, ७६।
[सं० पु०] मुँह से फूककर बजाया जाने वाला एक वाद्य यन्त्र। वीणा।

बीनकर = का०, १४१।
[पूर्व० क्रि० (हि.) छाँटकर। चुनकर।

बीनती = का०, १४६।
[क्रि०] (हि.) छाँटती। चुनती।

बीर = चि०, ३८, ४१, ५१, ६५, ७०, ७२, ६७, १०५।
[सं० पु०] (हि.) भाई। (स्त्री०) सखी। (वि०) शक्तिशाली। बहादुर।

बीर-कर्म = चि०, ६३, ६६।
[सं० पु०](हि.) बहादुरी का काम।

बीरन-गले = चि०, ४२।
[सं० पु०] (हि.) वीरों के गले।

बीर-पथ = चि०, ६५।
[सं०पु०] (सं.) वीरों का मार्ग।

बीहड़ = आं०, ४०। का०, १५८।
[वि०] (हि.) उजाड़। वीरान।

बुझ न जाय = का०, १७६।
[क्रि०] (हि.) ठंढा न हो। प्रकाश समाप्त न हो जाय।

बुझना = का०, ११८, १२०, १३६, १६०, १७६, १८३। झं०, ४७।
[क्रि०] (हि.) जलने के बाद समाप्त हो जाना।

बुझी न प्यास = चि० १५, १०३।
[सं०स्त्री०] (हि) प्यास समाप्त न हुई। इच्छा नष्ट न हुई।

बुद-बुद = का०, १७, १७६, २२३, २७०। म० ४।
[सं० पु०] (हि.) पानी का बुलबुला।

बुद-बुद-सा = का०, २८८।
[वि०] (हि.) बुलबुले के समान। क्षणभंगुर।

बुद्ध = प्रे०, २१।
[वि०] (हि.) जागा हुआ। ज्ञानी (सं०) गौतम बुद्ध।

बुद्धि = का० कु०, ८, १२२। का०, ६, ११०, १३४, १६६, १७१, १७२, १६३, २७०। झं०, ६३। ल०, २१।
[सं० स्त्री०] (सं.) सोचने समझने और निश्चय करने की शक्ति। अक्ल।

बुद्धि-चक्र = का०, २६६।
[सं० पु०] (सं.) बुद्धिरूपी चक्र।

बुद्धि-बल = का०, १८६।
[सं० पु०] (सं.) बुद्धि की शक्ति।

बुद्धिवाद = का०, १७२।
[सं० पु०] (हि.) वह सिद्धान्त जिसमें केवल बुद्धि सम्मत या समझ में आनेवाली बात ही मानी जाती है।

बुधजन = म०, १२।
[सं० पु०] (हि.) विद्वान लोग। बुद्धिमान लोग।

बुधि = चि०, ३५।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) दे० 'बुद्धि'।

बुनते = आं०, १४। का०, १७६।
[क्रि०] (हि.) बुनना क्रिया का एक रूप।

बुनदे = का०, १५०।
[क्रि०] (हि.) काढ़ दे। बना दे।

बुनना = का०, ३२, ६५, ७५, ६८ १४३, १४४, १६८।
[क्रि०] (हि.) लोगों की सहायता से कर्घे पर कपड़ा तैयार करना।

बुरा = का०, १८६।
[वि०] (हि.) मन्द। खराब। निकृष्ट।

बुराई = का०, १६५।
[सं० स्त्री०] (हि.) खराबी। दोष। अवगुण।

बुरी-दशा = का०, २५।
[सं० स्त्री०] (हि.) खराब हालत। दयनीय स्थिति।

बुलाई = चि०, ५२ ।
[क्रि०] (हि.) पुकारी ।
बुलाता है = का० कु०, ४६, का०, ६७, ८६ ।
[क्रि०] (हि.) पुकारता है ।
बुलाती = क०, ८ ।
[क्रि०] (हि.) पुकारती ।
बुलाना = क०, १६ । का०, ८६, ८७ ।
[क्रि०] भ०, ६४ ।
(हि.) पुकारना ।
बुल्ले = का०, ६७ ।
[सं०पु०] (हि.) पानी के बुल-बुले ।
बूझि = चि०, ५३ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) समझकर ।
बूँद = आं०, ६६, ७२, । का० कु०, २१,
[सं० स्त्री०] ३१, ४५ । का०, १६, २३, २६३,
(हि.) २६१ । चि०, ५७, ७०, ७१, १७२ ।
भ०, २१ । प्रे०, ९,२२, २६ ।
पानी का कतरा । गिरते समय किसी
द्रव पदार्थ का सबसे छोटा कण ।
बूँद-सदृश्य = प्रे०, १६ ।
[वि०] (हि.) बूँद के समान ।
बृन्दावन = ल०, २६ ।
[सं० पु०] मथुरा के निकट एक नगरी जहाँ कृष्णने
(हि.) प्रेम लीला की थी ।
बृद्ध = प्रे०, २१ ।
[वि०] (हि.) बुजुर्ग । बूढ़ा ।
बृद्धि = का० कु०, ४७ ।
[सं० स्त्री०](हि.) बढ़ती । बढ़ावा । ब्याज ।
बृष = का०, २७७ ।
[सं०पु०] (सं.) बैल, सांड़ ।
बेग = चि०, १२ ।
[सं० पु०] (हि.) गति । तेज । प्रवाह । बहाव ।
बेगसहित = का० कु०, ४० ।
[वि०] (हि.) प्रवाह के सहित ।
बेगार = आं०, १२ ।
[सं०पु०] (हि.) बिना कुछ दिये हुए लिया गया काम ।
बेगि = चि०, १४७, १ ७५ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) दे० बेग ।
बेगिहि = चि०, ४२ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) जल्दी से ।
बेगुन = आं०, ४२ ।
[वि०](हि.) गुण रहित । विनाडोरी का ।
बेगे = चि०, ६६ ।
[वि०] (ब्र. भा.) जल्दी ही ।
बेचारी = चि०, ५८ ।
[वि०] (हि.) निस्सहाय । संबलरहिता ।
बेटे = का०, २१३ ।
[सं० पु०] (हि.) पुत्र ।
बेड़ी = भ०, ५१ ।
[सं० स्त्री०] लोहे की जंजीर जिसे कैदियों को पह-
(हिं.) नाते हैं ।
बेदी = चि०, ६८ ।
[सं० स्त्री०] (हिं.) हवन कुन्ड । वेदी ।
बेधो = चि०, १७२ ।
[क्रि०] (हिं.) विधो । तोड़ डालो ।
बेमन की = आं०, ४४ ।
[वि०] (हि.) अन्य मनस्क, बे मन की ।
बेर = चि०, ६० ।
[सं० पु०] (हिं०) एक वृक्ष । बार, दफा ।
बेरोक टोक = का०, ६४ ।
[वि०] बिना किसी रोक टोक के । निर्विघ्न ।
(हि.) व्यवधान-रहित ।
बेल = का०, ५७, ७८ । भ०, ६६ ।
[सं० पु०] (सं.) श्री फल, लता ।
बेला = ल०, १० ।
[सं० पु०] चमेली की भांति का का एक सुगन्धित
(सं.) फूल । लहर , किनारा, तरङ्ग । समय ।
बेलि = का० कु, ८६ । चि०, ५ ।
[सं०स्त्री०](हि.) लता ।
बेली = का०, १२६, २६० ।
[सं०स्त्री०] (सं.) लता । (पु०) साथी, सङ्गी ।
बेसुध = आं०, ११, १३ । का०, ४० ।
[वि०] (हि.) अचेत, बदहवास ।

बेहाल = चि०, ५६ ।
[वि०] (फा.) व्याकुल. बेचैन ।
बैठता = आं, २५ । का०, २६१, २६५ ।
क्रि०] (हि.) बैठना क्रिया का एक रूप ।
बैठना = आं०, २५, ३८, ४३, ५५ । का०,१४ ।
[क्रि०] का० कु , ३६ । का०, २४, ३३, ८५,
(हि.) ६१, १०५, ११६, १२३, १४१, १८३,
१८६, २०६, २११, २१३, २१५,
२१६, २१८, २३०, २७८, २८४,
२८५, चि०, २, १३, २४, ५५, ५६,
५८, ६६,१ ८० । प्रे०, १६ । म०, ७,
८ । ल०, ६६, ७२ ।
आसीन होना, आसन जमाना ।
बैठी सी = २३० ।
[वि०] (हि.) बैठी हुई के समान ।
बैठ्यो = चि०, ७२ ।
[क्रि०](ब्र.भा.) बैठा ।
बैनन = चि०, १७६ ।
[सं० पु](ब्र. भा.)बातों, बचनो ।
बैरिन = चि०, ३५।
[वि०] (हि.) शत्रु । दुश्मन । वैर रखने वाली ।
बैरी = चि०, १०६ ।
[वि०] (हि.) दे० बैरिन ।
बोझ = का० कु०, १२ ।
[सं० पु०] (हि.) भार, वजन ।
बोझ-सी = का०, ११८ ।
[वि०] (हि.) भारमय ।
बोध = का०, २३० ।
[सं० पु०] (सं.) ज्ञान । धैर्य । सांत्वना ।
बोलकर = का० कु०, ५१, ६६ ।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) कहकर ।
बोलत-बोली चि०, ५८ ।
[क्रि०] (ब्र.भा) व्यङ्ग करती है ।
बोलति = चि०, १४, ४५, १५१ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) बोलती है ।
बोलना = आं०, ६५ । क०, १६ । का० कु०,
[क्रि०] ४५, १२६, १२८, १३२ । का०,
(हि.) ३६ से २८७ तक २६ बार । चि०,
१, ४६, ५२, ५३, ५६, ६१, ७०,
१५६ । प्रे०, १२, १४ । म०, १४ ।
ल०, १६, ५७ ।
मुह से शब्द निकालना । उच्चारण ।
कुछ कहना । बाकी न रहना । हार
मान लेना ।
बोली = का० कु०, ४५ । का०, ६३, १२८,
[सं० स्त्री०] १३२, १६६, २६० । चि०, ५६, ५७,
(सं.) प्रे०, ११, १८, ६१ ।
वाणी । सार्थक बात । किसी प्राणी के
मुँह से निकला हुआ शब्द ।
बोलु = चि, १४७ ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) बोला, बोलकर ।
बोल्यो = चि०, ५४, ५८, ७२, ७३, १८४ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) बोला । कहा ।
बौने = आं०, ७७ ।
[स० पु०] नाटे, कद में छोटे । बावन अंगुल का,
(सं.) ठिगने ।
व्यंजक = चि०, ७७ ।
[वि०] (सं.) अभिव्यक्त करने वाला ।
व्यधत = चि०, १३४ ।
[क्रि०] बेधता है । कष्ट देता है । मारता है ।
(ब्र. भा.) प्रहार करता है ।
व्याकुल = का०, १४० । ल०, २६ ।
[वि०] (सं.) घबड़ाया हुआ । बेचैन ।
व्याह = प्रे०, १२ ।
[सं० पु०] (हि.) विवाह, शादी, पाणिग्रहण ।
व्याही = प्रे०, १३ ।
[वि०] (हि.) विवाहिता ।
व्योम-मध्य = का० कु०, ४३ ।
[सं० पु०] (हि.) बीच आकाश में ।
ब्रजबाला = चि०, १६२ ।
[सं० स्त्री०] ब्रज की युवती । ब्रज की तरुणियाँ ।
(हि०) गोपियाँ ।

ब्रह्म-बेला = का० कु०, १००।
[सं० स्त्री०] (सं.) ब्रह्म-मुहूर्त्त।
ब्रह्माण्ड = का०, २५३। चि०, १५५।
[सं० पु०] सकल सृष्टि। खोपड़ी के ऊपर का बीच-
(सं.) वाला भाग।
ब्रह्मांड-विवर = का०, १६३।
[सं०पु०] (सं.) सृष्टि।
ब्रह्मा = का० कु०, ११४।
[सं० पु०] (सं.) विधाता, स्रष्टा।
ब्राण = भ्र०, ५६।
[सं०पु०] (हि.) घाव, फोड़ा।
ब्रीड़ा = का०, ६७, ११६। ल०, ७६।
[सं०स्त्री०] (सं.) लज्जा।

भ

भंग = क०, २१। का०, ७७, १५७। प्रे०,
[सं०पु०] ४। ल०, ४६।
(सं.) खंड। टूटने का भाव। विध्वंस। भय।
पराजय। भाँग।
भँवर = आँ०, २८। चि०, १६४, १८४।
[सं० पु०](हि.) भौंरा। आवर्त। भँवरी।
भँवर-सी = का० कु०, ८।
[वि०] (हि.) भँवर के समान।
भई = चि०, ५०, ६२, ६४, ७४, १८१।
[क्रि०] (हि.) हुई।
भक्त = का० कु०, ३०, ७२।
[सं० पु०] (सं.) उपासक। विभक्त। अनुयायी। सेवा-
करने वाला।
भक्त भावना = का० कु०, ६।
[सं० स्त्री०] भक्ति। भक्ति की लालसा। सेवा-
(सं.) भावना।
भक्ति = क० ११, १५। मा० कु०, ५। का०,
[सं०स्त्री०] १६५। चि०, ५६। भ्र०, ७८, ८८।
(सं.) म०, १५, १६।
पूजा। श्रद्धा। बाँटना। अवयव। अंग।
भक्ति-प्रयाग प्रे०, २२।
[सं०पु०] (सं.) भक्ति रूपी प्रयाग।
भक्ति-सुधा = का० कु०, ८६।
[सं० स्त्री०] (सं.) भक्ति रूपी अमृत।
भक्षक = का० कु०, ६३, ७१। का०, २७३।
[वि०] ल०, ५६।
(सं.) भक्षण करने वाला। निज- स्वार्थ
के लिये दूसरे का विनाश करने
वाला।

भग रहा = क०, १७२।
[क्रि०] (हि.) भगना क्रिया का एक रूप।
भगवति = का०, २२४, २८७।
[सं० स्त्री०] दुर्गा। देवी।
भगाती = का०, ११२।
[क्रि] (हि.) भगाना क्रिया का एक रूप।
भगे = का०, २४८, २५८।
[क्रि०] (हि.) भगना क्रिया का एक रूप।
भग्न = का०, ८४। भ्र०, ३०।
[वि०] (सं.) टूटा हुआ। नष्ट।
भग्नाश = का०, २५६।
[वि०] (सं.) निराश। आशा को जो खो चुका हो।
भज्यो = चि०, १५६।
[क्रि० स०] भगा। भजन किया। भजना क्रिया
(ब्र. भा) का भूतकालिक रूप।
भटकना = का०, ४६, ७४, ८१, ६३, १११,
[क्रि० अ०] १४४, १५३, १६०, २२७। भ्र०, १७।
(हि.) ल०, ५६।
मार्ग भूलकर इधर-उधर चला जाना।
भूल जाना। भ्रम में पड़ना।
भटकाओ = का० कु०, ८३।
[क्रि०अ०] (हि.) भटकना क्रिया का एक रूप।
भटक्यो = चि०, १८४।
[क्रि०अ०](ब्र.भा.) भटका। भूला। भटकना क्रिया का एक रूप
भद्र = प्रे०, ६।
[वि०] (सं.) श्रेष्ठ! साधु। मंगलकारी।
भद्र पथिक = प्रे०, ४, ६।
[सं० पु०] (सं.) सभ्य पथिक। श्रेष्ठयात्री (संबोधन)।

भद्रे = प्रे०, ११ ।
[वि०] (हि.) भद्र, सभ्य । (संबोधन स्त्री)
भयंकर = का०, २०२ ।
[वि०] भयानक, उग्र, डरावना, विकट । जिसे
(सं.) देखकर डर लग जाय ।
भय = का० कु०, २८, ७२, १२० । का०,
[सं० पु०] १५७, १८५, १८६, १६८, २०६,
(सं.) २४० । ल०, ५२, ७७ ।
डर, खौफ । विकार ।
भयकरी = का०, १६६, २५७ ।
[वि०] (हि.) डरानेवाली, डरावनी ।
भयते = चि०, १८४ ।
[सं० पु०] (व्र. भा.) डर से ।
भयभीत = का०, कु०, १२० । का०, ५१, १५७ ।
[वि०] चि०, १६१ ।
(सं.) डरा हुआ, जिससे मन में डर उत्पन्न
हो जाय ।
भय-संकुल = ल०, ३२ ।
[वि०] (सं.) भय से आच्छादित । भयभीत ।
भयानक = का० कु०, १२१, १२२ । का०, १८५,
[वि०] २००, २८१ । भ्रू०, ८८ । प्रे०, ५ ।
(सं.) जिसे देखने से डर उत्पन्न हो जाय ।
भयावना, भीषण ।
भयावने = का०, २१८ । चि०, ४१ ।
[वि०] डरावने ।
भयावह = का० कु०, ६७ ।
[वि०] भय उत्पन्न करने वाला । विकट,
(सं.) भयंकर, भीषण ।
भयी = चि०, ११, १२, १४, २४, ३६, ५६,
[क्रि० अ०] ६३, १६४, १६६, १६७, १८३, १८४ ।
(हि.) हुई ।
भये = चि०, १५, ३५, ४२, ६५, ६६, ६७,
[क्रि०] १५७, १६४, १८४ ।
(हि.) हुए ।
भरत = चि०, ६० ।
[सं० पु०](सं.) शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यन्त-पुत्र ।

भरना = आं०, १६ बार । क०, २ बार । का०
[क्रि०] कु०, १३ बार । का०, १०५ बार ।
(हि.) चि०, २७ बार । भ्रू०, ८ बार । प्रे०,
५ बार । म०, ३ बार । ल०, ३१ बार ।
उडेलना, उलटना । झेलना । चुकाना ।
देना । पूर्ण करना ।
भरपूर = का०, ३२, ६१ ।
[वि०] (हि.) अच्छी तरह भरा हुआ । सम्पूर्ण ।
भरभर कर = का० कु०, ३८ ।
[क्रि०] (हि.) पात्र में लेकर । (भूतकालिक क्रिया) ।
भरमार = का०, १८८ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) बहुतायत, अधिकता ।
भरमोद = का०, ४७ ।
[क्रि०] आनन्द से पूरित होकर (पूर्वकालिक
(हि.) क्रिया ।)
भरिकै = चि०, १८५ ।
[क्रि०] (व्र. भा.) भरकर । (भूतकालिक क्रिया ।)
भरि-भरि = चि०, ३४, ५३, ।
[क्रि०] भर-भर कर । पूर्ण कर-करके । (पूर्व०
(हि.) कालिक)
भर्यो = चि ६, १७१ । भ्रू०, ५७ ।
[क्रि०] भरा, पूर्ण किया । भरना क्रिया का
(हि.) भूतकालिक रूप ।
भल = चि०, २४, ५५, ५७, ६६, ७३, १८४ ।
[वि०] (व्र.भा.) भला, कल्याण कारी, सुन्दर ।
भला = आं०, १३ । का० कु०, ३१, ५३, १०६ ।
[वि०] का०, १२५, १५६, १६०, २१२, २१५,
(हि.) २१८, २३८ । भ्रू०, ३६, ४६, ५१ ।
प्रे०, ३ । म०, १५, १६ १८, २१ ।
ल०, ११, ७२ ।
बढ़िया, अच्छा, कल्याणकारी, सुन्दर ।
भली = क०, ८ । चि० १४८ । का० कु०, ८,
(वि०) ५२, ६६ । का०, २२२ । चि०, १८, ३३,
(हि.) ४५, १५६, १६४, १७७ । भ्रू०, २४,
४८ । म०, २, ७, १७ ।
अच्छी, सुन्दर, मनोरम ।

भले = चि०, ३६, १८० ।
[वि०] (हि.) दे० 'भला' ।
भले-बुरे = का०, २१० ।
[वि०] (हि.) अच्छे बुरे । उचित-अनुचित ।
भलें = चि०, १७७ ।
[वि०](ब्र. भा.)भले । अच्छे । भले ही ।
भल्ल = चि०, ४१, ४२, ५३ ।
[वि०] (अप०) भला । ठीक । उचित ।
भव = आं०, ६२ । का० कु०, २६, ८६ ।
[सं० पु०] १६६, झ०, ३८ ।
(सं.) उत्पत्ति, जन्म, संसार, कामदेव ।
भव-कानन = का० कु०, ३ ।
[सं० पु०] (सं.) संसार रूपी वन ।
भव-जन्य = का० कु०, ७२ ।
[सं० पु०] (सं.) संसार से उत्पन्न ।
भव-जलनिधि = का०, १४७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) संसार-सागर ।
भव-तम = प्रे०, २ ।
[सं० पु०] (सं.) संसार रूपी अंधकार । माया ।
भवताप-दग्ध = का० कु०, ६ ।
[वि०] संसार के ताप से जलाया हुआ । भव
(सं) दुःख दुखी ।
भवतिक = का०, २४२ ।
[वि०] भौतिक । संसार सम्बन्धी । पंचभूत से
(हि.) सम्बन्धी । पार्थिव ।
भव-धरा = प्रे० २२, म० २० ।
[सं०स्त्री०] (सं) अखिल विश्व । सम्पूर्ण जगत ।
भवन = क०, १५ । का०, २१८ । चि० ४६ ।
[सं० पु०] झ०, ३६ । म०, १६, २० ।
(सं.) मकान, घर, प्रासाद, आश्रय या
आधार स्थल ।
भवनों = का०, १८० ।
[सं० पु०] (हि.) दे० 'भवन' (बहुवचन) ।
भव-बन्ध = ल०, १३ ।
[सं०पु०] सांसारिक बन्धन । माया मोह आदि
(सं.) का जाल ।
भव बन्धन = का० कु०, १२६ ।
[सं० पु०] (सं.) सांसारिक बन्धन । दे० 'भव-बन्ध' ।
भवरजनी = का०, १३६, २०५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) संसार रूपी रात्रि ।
भव-सागर = चि०, १२ ।
[सं० पु०] संसार रूपी सागर । माया मोह का
(सं.) अथाह सिन्धु ।
भवसिन्धु = चि०, १८६ । प्रे०, १० ।
[सं० स्त्री०] (सं) संसार रूपी समुद्र । दे० भव सागर ।
भविष्य = का०, ७, ८६, १६६, १६७। प्रे०, ३ ।
[सं० पु०] (सं.) आनेवाला काल ।
भविष्य-चिंता = का०, २१० ।
[सं० स्त्री०] (हि.) भविष्य के सम्बन्ध की चिंता ।
भविष्यत् = का कु०, १२०। का०, ५२। प्रे०, २३ ।
[सं० पु०] (सं.) होनहार । भावी ।
भस्म = चि०, ७४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) राख, रस औषधि ।
भांडार = झ०, ३६ ।
[सं० पु०] (हि.) भंडार, खजाना, कोष ।
भाँति = चि० । ४, २३, ४३, ५०, ५१, १४२,
[सं०स्त्री०] १४८ ।
(हि.) तरह । किस्म । प्रकार । मर्यादा ।
भाँवरी = का०, ८३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) फेरा । चक्कर । परिक्रमा ।
भाग = का०, ४१, ८४, १३२, १६६, २२६,
[सं० पु०] २३६, २७१ । चि०, ६५ । ल० १२ ।
(हि०) भाग्य । सौभाग्य । खंड । ओर । ललाट ।
भागन = चि०, ६५ ।
[सं०पु०](ब्र०भा.) भाग्य से ।
भागना = आँ, ४६ । का० कु०, १० । का०,
[क्रि०] १९५, २६८ । चि०, २५ । झ० ३५,
(हि०) ६० । मं०, १०, ल०, ४० ।
दौड़ना । हट जाना । किसी काम से डरना
या बचना ।
भागीरथी तट = का० कु०, ११४ ।
[सं० पु०] (सं०) गंगा का किनारा ।
भाग्य = क०, १३, १५ । का. कुं., ९३, ११६ ।
[सं० पु०] कां०, १६०, १६६, १७६, २३६, २४४ ।

(सं.) चि०, २५। झ०, ६०। प्रे०, १०। प्रारब्ध। तकदीर। नियति।

भाग्य-गगन = का०, १८४।
[सं० पु.] (सं०) भाग्य रूपी आकाश।

भाग्यवान = का०, २६८।
[वि०] (सं०) सौभाग्यशाली। अच्छे भाग्यवाला।

भाता = प्रे०, ३२।
[क्रि०] (हि०) अच्छा लगता है।

भान = का०, २६। झ०, ८८।
[सं०पु०] (सं.) प्रकाश। ज्योति। दीप्ति। आभास कालपनिक विचार।

भानु = चि०, २९, १५३, १६३।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य, किरण। राजा।

भानुहि = चि०, १६३।
[सं०पु०](ब्र०भा०) भानु को। सूर्य ही।

भाप = का०, १०। चि०, ६६।
[सं० पु०] (हि.) वाष्प। ताप पाकर विलीन होने वाली पानी की अवस्था।

भामिनि = चि०, ४५, ४७।
[सं० स्त्री०] (सं.) स्त्री, औरत।

भाया = चि०, १४६।
[वि०] (हि.) प्रिय, प्यारा (क्रि०) अच्छा लगा।

भायो = चि०, ५४, १८६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) अच्छा लगा।

भार = का०, २६, ६६, ८५, ८६, ६४, १४८, १७१। चि०, २२, २८, १४८, १६०, १६०। झ०, २१। ल०, १३, ५७, ७३।
[सं० पु०] (सं.) बोझ, उत्तरदायित्व, वजन, सम्हाल।

भारत = का० कु०, १०४, १०६, ११०, ११२, ११८। चि०, १६४। म०, १७, १९।
[सं० पु०] (सं.) हिन्दुस्तान। अग्नि।

भारत-खण्ड = चि०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) भारतवर्ष का भाग।

भारतवासी = का० कु, १०६। म०, ६।
[सं० पु०] (हि०) भारत में रहने वाला, हिन्दुस्तान का निवासी।

भारतेन्दु = चि०, १६४।
[सं० पु०] (सं.) भारत का चन्द्रमा। कविवर हरिश्चन्द्र की उपाधि।

भारतेश्वरी = ल०, ७५।
[सं० स्त्री०] (सं.) भारत की सम्राज्ञी।

भारवाही = का०, २०।
[सं० स्त्री०] (सं.) भार वहन करने वाली, गाड़ी।

भारी = का० कु, १२। चि०, ५६, १६०।
[वि०] (हि.) गम्भीर। कठिन। शान्त।

भाल = का० कु०, ६, ११, १२१। का०, १६८। चि०, ६, २२, ३८, १६१। झ०, २८।
[सं० पु०] (हि.) मस्तक। कपाल। तेज। ललाट।

भाव = का०, १३। का०कु०, ६, २०, ३६, ५५, ७५, ८१। का०, ११, ५८, ८१, ११६, १२६, १३२, १४३, १६१, १६६, १८३, १८४, १८५, १६२, २३६, २५०, २६२, २६४, २६५, २७७, २८८, २८६। चि०, ५६, १६६। प्रे०, १, ४, १८, २०, २४। म०, ६। ल०, २३। अभिप्राय। विभूत। आत्मा। विचार, नाज, श्रद्धा।
[सं० पु०] (सं.)

भाव अनेक = चि०, ६०।
[सं०पु०] (हि.) अनेक भाव। विभिन्न विचार।

भाव-चक्र = का०, २५०।
[सं० पु०] (सं.) कुण्डली में गृहस्थिति प्रगट करने की क्रिया। विभिन्न विचारों के जाल में।

भावत = चि०, ३०, १५१।
[क्रि०] (ब्र. भा.) अच्छा लगता है।

भावती = चि०, ४५।
[क्रि०] (ब्र.भा.) अच्छी लगती।

भावते = चि०, ३८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) अच्छे लगते, भाते।

भावन = चि०, १६१।

[वि०] (ब्र.भा.) अच्छा लगने वाला।
भावना = का०, ८८। ल०, २१, ७४।
[सं०स्त्री०] (सं.) चाह। विचार। ख्याल। कल्पना।
भावनाओं = आं०, ६४।
[सं०स्त्री०](हि.) दे० भावना। (बहुवचन)
भावना-मयी= का०, १४०।
[वि०] (सं.) काल्पनिक। भाव से भरी हुई।
भाव-भूमिका का०, २६४।
[स०स्त्री०] (सं.) भाव रूपी पृष्ठभूम।
भावमयी = का०, २६२। प्रे०, १६।
[वि०] (सं.) भाव से भरी हुई।
भाव-मानस = का० कु०, २६।
[सं० पु०] (सं.) मन के भाव।
भाव-सागर = का० कु०, ८१।
[सं० पु०](सं.) भाव रूपी समुद्र।
भाव-सी = का०, १६७।
[वि०] (हि.) भाव के समान
भावी = का०,१४३। चि०,३३,१४१। म०,५।
[सं०स्त्री०] भविष्य में होने वाला भाग्य। आने
(हि.) वाला समय। नियति।
भावोदधि = का०, २३५।
[सं० पु०] (सं.) भविष्यत्‌रूपी सिन्धु
भाषण = चि०, १६५।
[सं०पु०] (सं.) व्याख्यान। वक्तृता।
भाषा = का० कु०, ८१। का०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) बोली, वाक्य।
भासत = चि०, १५३।
[क्रि०] (हि.) बोलत।
भिक्षा = ल०, ५४।
[सं० स्त्री०] (सं.) मांगना, भीख देना, चाकरी।
भिक्षुक = का०, १५३।
[सं० पु०] (सं) भिखमंगा। मंगन। भिखारी।
भिखारिणी = ल०, ७०।
[वि०] (हि.) भिक्षुणी।
भिखारी = का०, १२३, १८४। ल०, ४५।
[सं०पु०] (हि.) भिक्षुक, भिखमंगा, मंगन।
भिखारी-सा = ल०, ७०।
[वि०] (हि.) भिक्षुक के समान।
भिड़ना = चि०, ४१, ६५।
[क्रि०] (हि.) टक्कर खाना। लड़ना, सटना।
भिन्न = क०, ८। का० कु०, ११६। का०,
[वि०] (सं.) २७२, २८६। प्रे०, ११।
अलग, पृथक, अन्य, दूसरा। तेजधार से किसी वस्तु के किसी अंग के अलग होने की क्रिया।
भिरत = चि०, १३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भिड़ता। लड़ता। सटना, भिड़ना क्रिया का एक रूप।
भिरि गए = चि०, ५३।
[क्रि०] भिड़ गए। कटिबद्ध हो गए। जूझ
(ब्र. भा.) गए।
भी = आं०, १२ बार। क०, ८ बार। प्रे०,
[अव्य०] ३ बार। ल०, ८ बार।
(हि.) किसी बात विशेष पर प्रभाव डालने के लिए इस शब्द का उपयोग होता है अवश्य। अधिक। जरूर।
भीख = म०, ६। ल०, २६।
[सं० स्त्री०] भिक्षा। खैरात। भिक्षा द्वारा प्राप्त
(हि.) वस्तु।
भीगना = आं०, ११। का० कु०, १२३। का०, ३,
[क्रि०] ४७, १०६। भ्र०, २१, ३६, ३८।
(हि.) भीजना। किसी तरल पदार्थ या पानी से आर्द्र होना।
भीगीं पलकें= का०, १७८।
[सं० स्त्री०] (हि.) अश्रुपूर्ण पलकें। भींगी हुई पलकें।
भीगीं पंखें = का०, ३५।
[सं० पु०] (हि.) भींगे हुए पंख।
भीजि = चि०, ४५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भीजकर (पूर्वकालिक)।
भीजिए = चि०, १७५। भ्र०, ३४।
[क्रि०] (हि.) भीजना क्रिया का एक रूप। भींगिए।
भीड़ = का०, १२, ६८, १५०,१८६। भ्र०,३१

० स्त्री०] जन समूह। किसी स्थान पर। अत्यधिक
ह.) लोगों का जमावड़ा।
त = क०, १५। का०, १८६। चि०, १६१।
० स्त्री०] म०, १०।
ह.) भित्तिका, दीवार, छत। झरी, खंड, दरार।

तर = का०, कु०, ७१। का०, ४, ६४, १७१, १८२, १८६, १६०, १६८, २२८, २३४, २५१।
व्य०]
.) अन्दर। में। अन्तःकरण।

तर-बाहर = का०, १५५।
व्य०] (हि.) अन्दर-बाहर।
तर हूँ = चि०, १७६।
व्य०](व्र. भा.) भीतर ही। भीतर भी।

ति = का० कु०, १४, ८८। का०, २४३,
ं० स्त्री०] २६७।
सं.) दीवार। भय। कम्प।
नी = का०; ८८, २६३।
वि०] (हि.) ओतप्रोत। सनी या लिपटी हुई। मधुर।

नी-सी = चि०, १८०।
वि०] (हि.) मधुर-सी। हलकी (सुगंधि)-सी।
ने = का० कु०, ७६। चि०, १५३, १७१।
वि०] (हि०) दे० 'भीनी'। तराबोर।
न्यो = चि०, १४७।
के०] भीन गया।
व्र. भा.) भिनना क्रिया का एक रूप।

म = का० कु०, १०६, ११४। का०, १३,
सं० पु०] २०८। चि०, १००।
सं.) पांडु के पाँच पुत्रों में से एक। राक्षस। शिव। [वि०] भयानक। भयंकर।

मकाय = म०, ११।
वि०] भयानक शरीर वाला। विशाल डील-
सं०) डोल वाला।
मा = का०, १३६, २०५।
सं० स्त्री०] चाबुक। दुर्गा। एक प्रकार की नाव।

(हि.) दक्षिण भारत की एक नदी। (वि०) भीषण। भयंकर।
भीर = चि०, ५१, १६४।
[वि०] (व्र. भा०) भीड़।
भील = का० कु०, ६८। चि०, ७३, ७४।
[सं० पु०] (हि.) एक प्रकार की जंगली जाति।
भीलन = चि०, ७४।
[सं० पु० (व्र. भा.) दे० 'भील' (बहुवचन)।
भीलबाल = चि०, ७१।
[सं०पु०] (व्र.भा.) भील के बालक।
भीलबालकनकी = चि०, ७१।
[सं० पु०] (व्र. भा.) भील बालकों के।
भीलहि = चि० ६४, ७४।
[सं० पु०] (व्र. भा.) भील को।
भीष्म = चि०, ६७।
[सं० पु०] (सं.) राजा शान्तनु के पुत्र, देवव्रत।
भीषण = का०, कु०, ८६, १०८। का०, ५,
[वि०] १२, १८, २०, १२८, १३२, १५८,
(सं.) १६६, २००, २०१, २०२, २०५, २५७, २६७, २६६। म०, १। ल०, १५, ४७।
भयंकर। विकट। घोर। (सं.) शिव। ब्रह्म। भयानक रस।
भीषणतम = का० १७०, १८६।
[वि०] (हि.) अत्यन्त भीषण। अत्यन्त भयंकर।
भीषणतर = का०, २५४।
[वि०] (सं) अत्यन्त भीषण। बहुत भयंकर।
भीषणता = का० कु०, १०६। का०, ११६।
[सं० स्त्री](सं.) भयंकरता। डरावनापन।
भीषण-रव = का०, १३, १४।
[सं० पु०] (सं.) भयंकर आवाज। डरावनी ध्वनि।
भुज = का०, १८२। चि०, १, ३४, ५६, १७४,
[सं० पु०] १८८।
(सं.) हाथ। बाँह। हाथी की सूंड। शाखा।
भुजदण्ड = का० कु०, १०६। चि०, ६५, ६४।
[सं० पु०] (सं.) बाहु रूपी दण्ड।

भुजंन = चि०, ६६ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) बाहों । (दे० 'भुज' (बहुवचन) ।)

भुजपेंच = चि०, १५१ ।
[सं० पु०] (हि.) भुज पाश ।

भुजबल = क०, १० ।
[सं० पु०] (सं.) भुजाओं का बल ।

भुजबल ते = चि०, ६७ ।
[सं० पु०] (सं.) बाहु की शक्ति से ।

भूज-मूलों = का०, १०, १२५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कन्धों, काखों ।

भुजलता = का०, ७३, १०५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) भुजा रूपी लता ।

भुजाओं = का०, १६७ ।
[सं० पु०] (हिं.) बाजुओं हाथों ।

भुनती = ल०, ५० ।
[क्रि०] जल की सहायता के बिना गरम करके
(हि.) पकाना । जलाना ।

भुलवाती = का०, १३१, १४४ ।
[क्रि०] (हि.) भ्रम में डालती । धोखा देती ।

भुलात = चि०, ४८ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) भूल जाता भ्रम में पड़ जाता ।

भुला देना = का० कु०, ७३ । का०, ४१, २८७ ।
[क्रि०] (ब्र भा.) विस्मरण कर । देना ।

भुलाली = चि०, १८४ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विस्मृत हुआ । भूल गया ।

भुलावा = का०, २८६, ल०, १४ ।
[सं० पु०] (हि.) धोखा ।

भुलावादेना = का० कु०, ८२ ।
[क्रि०] (हि.) धोखे में डालना ।

भुलावे = ल०, ६७ ।
[सं० पु०] हि.) भ्रम में डालना । भ्रम ।

भुवन = आं०, ५३ । का०, १५६ । ल० २१ ।
[सं० पु०] (सं.) संसार । जल । जन । लोक पुराण के अनुसार चौदह होते है । जैसे। भू :, भुवः, स्वः ! महः ! जनः तपः और सत्यम् । अतल सुतल वितल, गभस्तिभत महातल । रसातल और पताल यह सात नीचे के माने गये हैं ।

भू = का०, ५८ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) पृथ्वी । स्थान ।

भूख = क०, १७, १८, । का०, १२, ३५, ५१, ७४, २५०, २६७ ।
[सं०स्त्री०] चि०, ६६ ।
(हि.) सुधा । भोजन की इच्छा ।

भूखा = का०, ५६ ।
[वि०] क्षुधित । जिसे भोजन की प्रबल
(हि.) इच्छा हो ।

भूखी = का, १८१ ।
[वि०] (हि.) भूखा की स्त्रीलिङ्ग ।

भूखे = आं०, ७८ ।
[वि०] (हि.) क्षुधित लोग । भूखे लोग ।

भूत = का०, २५, १८५ । चि०, १४१ ।
[सं० पु०] प्राणी । जीव । बीता हुआ समय ।
(हि.) मृत शरीर की आत्मा । वह मूल तत्व जिससे सृष्टि की रचना हुई हैं ।

भूतनाथ = का०, १८५ । चि०, ७३ ।
[स० पु०] (सं.) शिव ।

भूतल = का०, ५८, २३८ । ल०, ३१ ।
[सं० पु०] (सं.) पृथ्वी का ऊपरी तल । संसार ।

भूत-हित-रत = का०, ५२ ।
[वि०] (सं.) प्राणियों के भलाई में लगा हुआ ।

भूधर = का०, २५३, २६० ।
[सं० पु०] (सं.) पहाड़ । पर्वत ।

भूधरनृपति = चि० ५५ ।
[सं० पु०] (सं.) हिमालय । पहाड़ ।

भूप = चि०, १०० ।
[सं० पु०] (सं.) राजा, नृपति ।

भूपर = का०, २०२, २४५ ।
[अ०] (हि.) पृथ्वी पर ।

भूमण्डल = का०, २६१ । चि०, १६३ ।
[सं० पु०] (सं.) पृथ्वी । अखिल विश्व ।

भूमा = का०, ५४।
[सं०स्त्री०] (सं.) पृथ्वी। धरती।
भूमि = क०, १४, १७। का०, कु०, ५, १०,
[सं०स्त्री०] (हि.) ७२, १०१, १०६, १११, १२१। का०, ६३, २६३, २७८। चि०, १०, १५७, १८६। प्रे०, १५। ल०, ३३, ५२, ७४।
पृथ्वी। जमीन।
भूमिका = का०, १५६, २५१। ल० २२।
[सं० पु०] किसी ग्रन्थ के आरम्भ का वह वक्तव्य
(सं.) जिसमें ग्रन्थ के सम्बन्ध में लिखा हो।
भूमिपति = का० कु०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) राजा। भूपति।
भूल = आं०, ७६। क०, ११, २८। का०,
[सं० स्त्री०] ८५, ८७, ६२, १६२, १६६, २११,
(सं.) २५६, २८६। चि०, १६६। भ०, ४१।
त्रुटि। गलती। चूक। अपराध। दोष।
भूलना = का० कु०, ७ बार। का०, २५ बार।
[क्रि०] चि०, ७ बार। भ०, २ बार। प्रे०, ३
(हि.) बार। म०, १ बार। ल०, ३ बार।
विस्मृत करना। गलती करना।
भूल-भूलकर = प्रे०, १६।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) गलती कर करके।
भूल-सी = का०, ३६, १४५। ल०, ४०।
[वि०] (हि.) विस्मृत के समान।
भूल सुधारों = का०, ७७।
[क्रि०] (हि.) गलती ठीक करो।
भूलि-भूलि = चि०, १७६।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) भूल भूलकर।
भूली = का०, २८६। चि०, ६३। प्रे०, २३।
[वि०] (हि.) गलतियों। त्रुटियों। चूकों।
भूले-भटके = भ०, २४।
[वि०] (हि.) गलती से रास्ते को छोड़े हुए।
भूषण = चि०, ६।
[सं० पु०] (सं.) अलंकार।
भूषनों = चि०, १०१।
[सं० पु०] (सं.) गहनों।
भृंग = ल०, ५०।
[सं० पु०] (सं.) भौंरा।
भृंगा = चि०, १३२।
[सं० पु०] (सं) भवँरा। फतिंगा।
भृकुटि = चि०, ४०, ४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) भौं।
भृत्य = ल०, ५०।
[सं० पु०] (सं.) नौकर। सेवक।
भेजना = का० कु०, ८१। का०, ११४। प्रे०,
[क्रि०] ६। म०, १०, १२। ल०, ७५।
(हि.) कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए रवाना करना।
भेंट = भ०, ३४, ३५। प्रे०, १५।
[सं०स्त्री०] (हि.) भेंट। मुलाकात। मिलना।
भेटता = का०, ८२।
[क्रि०] (हि.) विदा से पहिले गले से गले मिलता।
भेटति = चि०, १५१।
[क्रि०] (हि.) भेटती है। गले से गले मिलती है।
भेटि = चि०, ५६, १६३।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) भेटकर।
भेटि बे = चि०, १७४।
[क्रि०] (हि.) भेटेंगे।
भेटों तो = ल०, २४।
[क्रि०] (हि.) गले से गले मिले तो।
भेद = का० कु०, ६। का०, ४६, १४६,
[सं० पु०] १६४, १६५, २५७, २७०, २७१।
(हि.) चि०, १४३, १५८, १८१, १८६, १८७। भ०, ७७।
भेदनी = का०, १८१।
[वि०] (हि.) भेदने वाली।
भेद-बुद्धि = का०, १३२।
[सं० स्त्री०] (हि.) रहस्य को जानने वाली बुद्धि।
भेद-सी = का०, ६०।
[वि०] (हि.) रहस्य के समान।
भैरव = का० कु०, १०७, ११८। का०, १४,

[वि०] १५ ।
(सं०) भीषण रववाला । भयानक, भयंकर ।
भैरवी = ल०, २० ।
[सं० स्त्री०] देवी का नाम । सवेरे गायी जाने
(सं.) वाली रागिनी ।
भोग = का०, ५६, १४८ । ल०, १२ ।
[सं० पु०] दुःख सुख आदि का अनुभव करना ।
(सं.) प्रारब्ध । सम्भोग ।
भोगते = का० कु०, ६६ ।
[क्रि०] भोग करते ।
भोगा = का०, १६० ।
[क्रि०] उपभोग किया । दुःख सुख का अनु-
(हि.) भव किया ।
भोगै = चि०, ५१, ६४ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भोगना क्रिया का रूप ।
भोग्य = का० कु०, ११५ का०, १२८ ।
[वि०] (सं.) जिसका भोग किया न जा सके ।
भोजन = क०, १६ ।
[सं०पु०] (हि.) भोज्य पदार्थ । खाने की सामग्री ।
भोर = का०, ४७ । चि०, ५२ ।
[सं०पु०] (हि.) तड़का । धोखा । भ्रम ।
भोरी = चि०, १८२ ।
[वि०] (ब्र. भा.) भोली ।
भोला का०, ७, ८३, १००, २४३ । झ०,
[वि०] २८ ।
(हि.) भगवान शंकर । सीधा । सादा ।
सरल ।
भोली = ल०, ११ ।
[वि०] (हि.) सीधी सादी ।
भोली-भाली = ल०, ११ ।
[वि०] (सं.) सरल स्वभाव
भौं० = म०, ५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) वरौनी ।
भौतिक = का०, २०, १६६, १८६, २६६ ।
[वि०] (हि.) सांसारिक । जगत् सम्बन्धी ।
भौरें = झ०, ६७ ।
[सं० पु०] (हि) भ्रमर ।
भौंहें = का०, ६८ । चि०, ३, १६० । ल०, ७६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'भौं' ।
भ्रम = का०, ६६, १६२, १६३, १८४, २४०,
[वि०] २५१ । चि०, १६७, १७१ । ल०,
(हि.) ६७ ।
भूल । गलती । चूक ।
भ्रम-कुहेलिका = का० कु०, १४ ।
[सं० पु०] (हि.) भ्रम रूपी कुहरा ।
भ्रमत = चि०, २६, १७१ ।
[क्रि०] ब्र. भा.) भूलता है । गलती करता है ।
भ्रमपूरित = का० कु०, १०२ ।
[वि०] (हि) भ्रम से भरा हुआ ।
भ्रमर = चि० १७१, १७३ ।
[सं० पु०] (सं) भौरा । भृंग ।
भ्रमरावलि = का० कु०, ५०,
[सं० पु०] (सं.) भवरों का समूह ।
भ्रमावत = चि०, १७० ।
[क्रि०](ब्र. भा.) भ्रमण करता है । भ्रम में डालता है
भ्रांत = का० कु०, १४, ११६ । का०, ३०, ४८
[वि०] ८१, ८८, ६३, ११०, १६२, १६६, १६७
(सं०) २४०, २४१ । चि०, ३५ । झ०, १७
भूला हुआ । जिसने गलती की हो ।
भ्रांति = का०, ४० । झ०, ६२ ।
[सं० स्त्री०](सं)भूल । गलती ।
भ्रातृ = का० कु०, ६० ।
[सं. पु०] (सं.) भाई ।
भ्रूभंग = का०, २५ ।
[मुहा०] भौहों का टेढ़ा होना । क्रोधित होना भ्रूविलास
भ्रू-युग्म = का० कु०, ३० ।
[सं स्त्री०] (सं.)दोनों भौंहें ।
भ्रू-लता = का०, ६४ ।
[सं०स्त्री०](स.) भौंह रूपी लता ।

म

मंगल = आ०, ६५ । का०, ५३, ५७, ६१, १२४
[सं० पु०] १४८, १५०, १६० २२७, २३६, २५२

(सं.) २७८, २८८, २९०, २९२। चि०, ९, ६२, १०९, १५३।
कल्याण, सौर जगत का प्रसिद्ध ग्रह, सफेद रंग की एक कठोर धातु।

मंगलकारी = चि०, १६१।
[वि०] (सं) कल्याण करने वाली, क्षेम करने वाली।

मंगलपाठ = का० कु०, १२५। प्रे०, २३।
[सं० पु०] वह पद्य जो शुभ कार्य के पहले मंगल
(सं.) की कामना से पढ़ा या कहा जाता है।

मंगलमय = का०, ५८। चि०, ३८, १४७।
[वि०] (सं.०) दे० 'मंगलमयी'।

मंगलमयी = आ०,६३। का०,२२१। ल०,३१,३२।
[वि०] (सं.) कल्याण से परिपूर्ण, भलाई से युक्त।

मंगलसा = का०, २२३।
[वि०] (सं.) शुभ की तरह, मंगल की तरह।

मंच = का०, १८३। म० २०,।
[सं० पु०] खाट, छोटी पीढ़ी, वह ऊँचा आसन
(सं.) जिसपर बैठ कर सर्व साधारण के सामने कोई कार्य किया जाय।

मंच-वेदिका = का०, १८३।
[सं० स्त्री०] (सं.) मंच की वेदी या आसनी।

मंजरी = का० कु०, १३, १६। का०, २८४।
[सं० स्त्री०] चि०, १, १४७, १४८, १४९, १६१।
(सं.) झ०, ७०।
नया निकला हुआ कल्ला, कोंपल, आम का बौर, लता।

मंजीर = का० कु०, ३०
[सं० पु०] (सं.) नूपुर, घुघुरू।

मंजु = का कु०, ४२, ४९। का०, ८४। चि०,
(वि०) १, ५, ५६, ६२, १३२, १४७, १४८,
(सं.) १५४; १३९।
सुन्दर।

मंजु-मान = ल०, ७७।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दरता का माप।

मंजुल = आ०, ६७। का०, ९७। चि०, ५९,
[वि०] ७०, १६५।
(सं.) सुन्दर, मनोहर।

मंजुलता = का०, १५१।
[सं० स्त्री०] (सं) सुन्दरता, मनोहरता।

मंडप = का०, २०६, २१५, २१६।
[सं० पु०] मंगल कार्य के लिए बाँस घास, फूस
(सं.) आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान, मंच, देव मंदिर का ऊपर की गोल बनावट और नीचे का स्थान।

मँडराती = का० १६०
[क्रि० अ०] मँडराना क्रिया का सामान्य वर्तमान
(हि.) रूप। किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उड़ना, बराबर किसी के आसपास रहना।

मंडल चि० १५५, १६८। झ० ११, ६६।
[सं० पु०] परिधि। गोल विस्तार। सूर्य या चन्द्र
(सं.) के चारो ओर दिखाई पड़ने वाला घेरा। ऋगवेद का एक खण्ड, प्रांत का वह भाग जो एक विशेष अधिकारी के अधीन हो। कुछ विशिष्ट लोगों का एक ही उद्देश्य से एकत्र होने वाला समुदाय।

मंडली का० कु०, १०८। चि० ११, १५८।
[सं० स्त्री०] ल०, २१।
(सं) समूह, किसी विशेष कार्य, प्रदर्शन कारी व्यवसाय के लिए बना हुआ कुछ लोगों का संघटित दल।

मंडित = का० ५३, २९३। चि०, १२८, २५८।
[वि०] (सं०) सजाया हुआ। छाया हुआ। भरा हुआ।

मंत्र = का० १६३। चि० १५९, १७१।
[सं० पु०] गुप्त परामर्श, यज्ञ आदि करने के
(सं.) विधान में आने वाला वेद वाक्य, ईष्ट सिद्धि या किसी देव की प्रसन्नता के लिए किया जाने वाला जप। वे शब्द या वाक्य जिनसे झाड़-फूंक किया जाता है।

मंत्र-मुग्ध = आ०, १८।
[वि०] मंत्र से मुग्ध, मोहित या मूर्छित होने
(सं.) वाला।

मंत्री = चि०, १८७ ।
[सं० पु०] सं.) परामर्श या सलाह देनेवाला, सचिव ।

मंथर = का० कु०, १२३ । का० ८६, २७७ ।
[वि०] भ्रू०, २७ ।
(सं.) धीमी गतिवाला, मंद, धीमा ।

मंद = का० कु०, ८६, १०० । का०, २६, ४८ ।
[वि०] चि०, २६, ४५, ४६, ४७, ५५, ६३,
(सं.) १४६, १५६, १६० । भ्रू०, ५२ ।
धीमा, सुस्त, आलसी, जड़बुद्धि, मूर्ख ।

मंदहिं = चि०, ४६, १५६, १६० ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) मंद को, मूर्ख या आलसी को ।

मंदाकिनी = का० कु०, १०० । का०, १६७ भ्रू० ६८।
[सं० स्त्री०] (सं.) आकाश गंगा । एक नदी । गंगा ।

मंदाकिनी-तट = का० कु०, १०१ ।
[सं० पु०](सं) मंदाकिनी का किनारा ।

मंदिर = का०, २८, ८६, ८७, १८१ । का० कु०,
[सं० स्त्री०] २, ४, ६७ । चि०, ४६, १५३, १५५,
(सं.) भ्रू०, ६, ३७ । प्रे०, ३ ।
देवालय ।

मंदिर-घटा-सी=का० १८४ ।
[वि०] (सं.) मस्ती उत्पन्न करने वाली घटा के समान ।

मँह = चि० ३६, ४०, ४१, ४५, ४६, ४७,
[अव्य०] ५०, ५३, ५५, ६३, ६४, ६८, ६६,
(ब्र भा.) ७४, ६४, १०१, १४०, १४९, १५०,
१६०, १६२ । ल० ४७ ।
मध्य, बीच ।

मकरन्द = आं, ३५, ४४, ४५, ७७ । का० कु०,
[सं० पु०] १०, १५, ३४, ३६, ५२, ५४, ६४,
(सं.) ७२ । का०, ६५, १७५, २२३, २६१ ।
चि०, १, ६, २३, २६, १५२, १६५,
१८८ । भ्रू०, ११, १६, २०, ४०, ५३,
५६ । प्रे०, ३, ६, १० ।
फूलों का रस, पुष्प के रस । तत्व ।

मकरन्द-घोल = का०, १५२ ।
[सं० पु०] पुष्प रस या फूलों का केसर मिला
(सं.) हुआ कोई सरस पदार्थ, सुरभि-रस पूर्ण ।

मकरन्द-भरा = का० कु०, १३ ।
[वि०] (सं) मकरन्द से परिपूर्ण, सुरभित वायु ।

मकरन्द-भार = आ०, २६ ।
[सं० पु०] मकरन्द का भार, सुरभित वायु का
(सं.) द्योतक ।

मकरन्द-बिन्दु = का० कु०, १०३ । का०, १३३ ।
[सं० पु०] (सं.) पुष्प रस की बूँद, सुरभि बिन्दु ।

मकरन्द-सा = भ्रू०, ६४ ।
[वि०] मकरन्द के समान, सरसता का द्योतक
(सं.) शब्द ।

मग = आ०, १६ । का०, ५८, २३५ । चि०,
[सं० पु०] ५३, १६४ । ल०, ५० ।
(सं.) मार्ग, रास्ता ।

मगध = ल०, ४६ ।
[सं० पु०] दक्षिणी बिहार का प्राचीन नाम,
बन्दीजन, ।

मगध-सम्राट = का० कु०, ११२ ।
[सं० पु०] (सं.) मगध देश का सम्राट ।

मगन = आं०, ६८ । चि०, ६४, १५७, १६० ।
[वि०] (हि.) मग्न, प्रसन्न ।

मग्न = का०, ३२, १५१ ।
[वि०] (सं.) दे० 'मगन' ।

मचना = आं०, ७७ । क०, २६ । का० कु०,
[क्रि० अ०] ३८ । का०, ३६, १६८, २०१ ।
(हि.) म०, ६ ।
शोर आदि का आरम्भ होना, उत्सव
आदि की चर्चा का चारो ओर फैलना ।
धूम होना ।

मचल = का० कु०, ३४ । का०, २६४, २७६ ।
[क्रि० अ०] 'मचलना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप,
(हि.) हठ करके । विचलित होकर ।

मचलता-सा = का०, १०१ ।
[क्रि० वि०] मचलते हुये के समान, हठ या अधिरता
(हि.) का द्योतक शब्द ।

मचलना = का०, ५१, २०५, २५७, २६१ ।

[क्रि० अ०] (हि.) किसी चीज के लिए बालकों या स्त्रियों की तरह हठ करना, अड़ना।

मछली = आं०, १०। का० कु०, ८।
[सं० स्त्री०] (हि.) एक प्रसिद्ध जल जन्तु, मीन।

मजूर = का० कु०, ६१।
[सं० पु०] (हि.) साधारण शारीरिक कर्म करके जीवन निर्वाह करने वाला, मजदूर, श्रमिक, बोझ ढोने वाला। मयूर।

मज्जन = चि०, १५।
[सं० पु०] (अप०) स्नान, नहाना।

मढ़े = का० कु०, १०३।
[क्रि० सं०] (हि.) 'मढ़ना' क्रिया का पूर्णभूत रूप।

मणि = ल०, ४८, ७६।
[सं० स्त्री०] (सं.) बहुमूल्य रत्न।

मणि-आभूषण = प्रे०, २५।
[सं० पु०] (सं.) मणियों से बना हुआ आभूषण।

मणि-दीप = आं०, ३८, ६०। का०, ७।
[सं० पु०] (सं.) मणियों का दीप या दीपक के समान चमकती हुई मणियाँ।

मणि-पद्मवासी = चि०, १५३।
[वि०] (सं.) मणि के कमल पर निवास करनेवाला, ईश्वर।

मणिपुर = चि०, ३३।
[सं० पु०] (सं.) भारत की एक रियासत का नाम जिसको आजकल मानिकपुर कहते हैं।

मणि-बन्धों = ल०, ५४।
[सं० पु०] (सं.) कलाई के जोड़।

मणिवलय = ल०, ५४।
[सं० पु०] (सं.) मणियों का कंकण या कंगन।

मणिमय = का० कु०, १०४। म०, १६, २०।
[वि०] (सं.) मणि से युक्त या मणि से भरा हुआ।

मणि-माणिक्य = चि०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) मणि और माणिक या मानिक, धन-धान्य पूर्ण, संपन्न।

मणि-रचित = का०, २३।
[वि०] (सं.) मणियों से बनाया हुआ।

मणिरत्न = का० २६।
[सं० पु०] (सं.) मणि और रत्न।

मणि राजी = का०, ४०।
[सं० स्त्री०] (सं.) मणियों की पंक्तियाँ।

मणि शलाक-सम = प्रे०, ११।
[वि०] (सं.) मणि की सलाई के समान, चमकीली किरण का द्योतक शब्द।

मणि-सम = चि०, १६०।
[वि०] (सं.) मणि के समान, बहुमूल्य या कान्ति-मान का सूचक।

मतंग तुंग = चि०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) प्रचण्ड हाथियों का समूह।

मत = आं० ४४, ५७। क०, १४, १७, १६।
[सं० पु०] (सं.) का० कु०, ४०, ४३, ४६। का०, ३७, ६१, ११०, १५४, १७०, १८४, १६६
[क्रि० वि०] (हि.) २०१, २५०, २६१, २७१। चि०, १५। झ०, ४३, ४५, ५२। प्रे०, २३, २४। म०, ३, ६, १४।
सम्मति, धर्म, संप्रदाय, भाव, वोट।
नहीं, न, (निषेध)।

मत-धर्म = का० कु०, ३१।
[सं० पु०] (सं.) संप्रदाय और धर्म या भाव और धर्म।

मतवाला = का० कु०, ३६, ५५। का०, १७१, २२२, २६३, २६८। झ०, २३। ल०, ३१, ४२, ४७।
[स० वि०] (हि.) नशे में चूर, हर्ष से उन्मत्त, पागल। शत्रुओं को मारने के लिए किले पर से लुढ़काया जानेवाला भारी पत्थर, एक खिलौना विशेष।

मतवाली = का० कु०, ४०, ६१। का०, ५, ४०, ६३, ७३, १०३। झ०, १२६। ल०, ११।
[वि०] (हि.) दे० 'मतवाला'।

मति = का० कु०, ५३, ५९। का०, ६, १६२। चि०, ६१, ६७, १००, १०७, १८६।
[सं० स्त्री०] (सं.) बुद्धि, समझ।

मत्त = का० कु०, ५०, ५४। का०, २३६।
[वि०] झ०, ६७। ल०, ५३।
(सं.) मतवाला, मस्त।

मत्तता = झ०, ५७।
[सं० स्त्री०] (सं.) मतवालापन, मस्ती।

मत्तामारुत = ल० २१।
[सं० पु०] मतवाली हवा, शीतल, मंद, सुगन्ध
(सं.) वायु।

मत्स्य = का० कु०, ४८। का०,१७,चि०, १४३।
[सं० पु०] बड़ी मछली, मीन, विराट देश का
प्राचीन नाम।

मथ = आं०, ४२।
[क्रि० स०](हि.) मथना क्रिया का पूर्वकालिक रूप।

मथने = का०, ११६।
[क्रि० स०] बिलोने की क्रिया, किसी को बार-बार
(हि.) दुःख देने वाली पीड़ा का द्योतक।

मद = आं०, २१। का० कु०, ५२। चि०,
[सं० पु०] २। झ०, २२। ल०, ३७।
(सं.) हर्ष, घमण्ड, हाथियों के गण्डस्थल से
चूने वाला गंध द्रव्य, मतवाला पन।

मदकल = चि०, ४५।
[वि०] (सं.) मतवाला, मस्त।

मदघूर्ण = झ०, ४७।
[क्रि० स०] मद से भरकर। 'घूरने' या सं० 'घूर्णन'
(सं.) क्रिया का पूर्वकालिक रूप। मस्ती में
घूरकर।

मदनत = ल०, ४८।
[वि०] मस्ती से झुकी हुई या मतवाले पन के
(सं.) बोझ से दबकर झुकी हुई। समदार्व-
नयी।

मदनहुँ = चि०, ७०।
[सं०पु०](ब्र.भा.) मदन या कामदेव भी।

मदनीर = चि०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) हाथी का मद-जल।

मदभरी = का०, ४७।
[वि०] (हि.) मस्ती में चूर, पूर्ण मतवाली।
मादकता से भरी हुई।

मदमत्त = का०कु०, ३४। का०, १०। चि०,१५७।
[वि०] (सं.) प्रसन्नता में चूर, घमण्ड में चूर। मद से
पागल।

मदमति = का० कु०, १३ ७३८। का०, २६२।
[वि०] चि०, ४८, १७१। ल०, २०।
मद से मतवाले, मदमस्त।

मद्यप-मण्डली झ०, २४।
[सं० स्त्री०] शराब पीने वालों का समुदाय या
(सं०) समूह।

मदिर = का०, ११, १२, ८६, ८८, ८६, ६१।
[वि०] प्रे०, २०, २२।
(सं.) मस्त करने वाली, नशीली।

मदिरा = आं०, २५, २७, ३२, ३६, ५१। झ०,
[सं० स्त्री०] ३८, ६७।
(सं.) मद्य, शराब।

मदिरा-मकरन्द= झ०, २६। ल०, २१।
[सं० पु०](सं.) मदिरा का रस या सौरभ।

मदिरा मोद = का०, १८२।
[सं० पु०] (सं.) मदिरा का आनन्द।

मदीय = आं०, ५।
[वि०] (सं.) मेरा।

मदोद्धत = ल०, ७६।
[वि०] (सं०) मद से उद्धत या उद्दण्ड, मदोन्मत्त।

मधु = आं०, २५, ३१, ३५, ६५, ६६, ६८,
[सं० पु०] ७५। का०, १०, ३५, ४६, ४८, ६५,
(सं.) ६८, ८४, ८८, ६०, ६२, ६४, ६७,
१०४, १४५, १७७, १७८, १८४,
२०७, २७१, २६०। चि०, २,
१७, १६, २८, ४१, ४४, ४८, ४६,
६०, १४६। झ०, २८, ४०। शहद,
मकरन्द, वसन्त ऋतु, चैत्र मास, अमृत,
मीठा, मद्य।

मधु-अंध = चि०, ५६।
[वि०] मधु से अंधा होने वाला या वसन्त की
(सं) बहार से पागल।

मधु-अधरो = का० कु०, ४३।
[सं० पु०] (सं.) अमृत भरे हुए अधर या होंठ।
मधु-उत्सव = का०, ७३।
[सं० पु०] (सं.) वसन्तोत्सव।
मधु-ऊषा = आं०, २३।
[सं० स्त्री०] (सं.) वासन्ती ऊषा, मधुवर्षी ऊषा।
मधुऋतु = ल०, ४०।
[सं० स्त्री०] (सं) वसन्तऋतु।
मधुकण = ल०, ४३।
[सं० पु०] (सं.) मकरन्द कण, पराग कण।
मधुकर = आं०, ७८। का० कु०, १६, २६, ३४,
[सं० स्त्री०] ३५, ४०, ८३। का०, ११, २६।
(सं.) चि०, १, ५, ८, २६, ३५, ५६, ६६,
१३२, १४७, १४८, १४६, १५०,
१६१, १८०, १८५, १८६।
भौंरा।

मधुकर-सा = का० कु०, १६।
[वि०] (सं.) भौंरे के समान।
मधुकरी = का०, ३६, ४५, ८२।
[सं० स्त्री०] (सं.) दे 'मधुकर'।
मधुकांति = झ०, ६७।
[सं० स्त्री०] (सं.) वासन्ती शोभा।
मधुक्रीड़ा-कूटस्थ=का० कु०, ६२।
[सं० पु०] (सं.) वसन्त के आमोद-प्रमोद रूपी पर्वत की ऊँची चोटी (मकरन्द)।
मधु-गंध = का०, ३६।
[सं० पु०] (सं.) पुष्प केसर की सुगन्धि।
मधु गुंजार = का०, ४५।
[सं० स्त्री०] (सं.) अमृतमयी ध्वनि।
मधु जीवन = का०, १५१।
[सं० पु०] (सं.) अमृतमय जीवन।
मधु-धारा = का०, ६४, ६७, १४८, २२४, २२८,
[सं० स्त्री०] २५६। झ०, ६८।
(सं.) अमृत की धारा या पुष्परस की धारा या प्रवाह।
मधुनि = चि०, १३२।
[सं० पु०] (सं.) मधु का बहुवचन का रूप, मकरन्द।
मधुप = का० कु०, ५४। का०, १६८, १७५,
[वि० पु०] १८२, २१७। चि०, २७, २६, १८८।
(सं.) झ०, ५६, ७३। ल० ११।

मधुप-सदृश = का०, ६।
[वि०] (सं.) मधुप के समान।
मधुप-सा = प्रे०, २५।
[वि०] (सं.) भौंरे के समान।
मधुप-से = झ०, ४५।
[वि०] (सं.) दे० 'मधुप-सदृश'।
मधुपान = चि०, १४८। ल०, ५०।
[सं० पु०] (सं.) अमृत या मकरन्द पीने का भाव।
मधुपों = आं०, २६, ६५। का०, १७१, २८५।
[सं० पु०] (सं.) मधुप का बहुवचन।
मधुबाला = ल०, ४५।
[सं० स्त्री०] (सं.) मधुमयी नायिका, शराब ढालने वाली नायिका।
मधुबूदों = का०, १६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) मकरन्द या फूल के रस की बूँदें।
मधुभार = ल०, ६०।
[सं० पु०] (सं.) मकरन्द का भार या बोझ।
मधुभिक्षा = ल०, १७।
[सं०स्त्री०] (सं.) मधु की भिक्षा या पुष्परस की याचना।
मधुमंगल = ल०, १८।
[सं० पु०] (सं.) वसन्त की शोभा।
मधु मन्थन = का०, २५२।
[सं० पु०] (सं) अमृत का मथा जाना।
मधुमय = का० कु०, १४, ३५। का०, ४, ५, ८,
[वि०] १२, २३, २७, ३८, ५०, ५४, ६३,
(सं.) ६७, ७४, १३३, १४८, १५, २४१,
२६३। झ०, ११।
अमृतमय या सुरभित, सुहावना।
मधुमाया = आं०, ७१। ल०, ६१।
[सं० स्त्री०] (सं.) मधु या मद्य की मायामोहकता।
मधु-मिश्रित = का०, १२८।
[वि०] (सं.) मधु मिला हुआ।

मधुमुख = का० कु० ८४।
[सं० पु०] (सं.) जिसके मुख में मधु हो या मधुबरसाने वाला मुख।

मधु-संगीत-निनादित=ल०, २६।
[वि०] सुस्वर से गाये जाने वाले गाने से
(सं.) गुंजित।

मधु-संचित = आं०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) इकट्ठा किया हुआ मधु या शहद।

मधुहास = का०, ७२। झ०, ७६।
[सं० पु०] (सं.)= मीठी हँसी।

मधुव्रत = का० कु०, ६, ३७, ३६।
[सं० पु०] (सं.) भौंरा, भ्रमर।

मधुवन = आं०, ६४। का०, १२०। ल०,
[सं० पु०] १८, २०।
(सं.) व्रज का एक वन, किष्किन्धा के पास का एक बन।

मधुशाला = ल० ४५, ४७।
[सं० स्त्री०] (सं.) मदिरालय, शराबखाना।

मधु-सा = झ०, १६।
[वि०] (सं.) मधु या वसन्त के समान, (मादक)

मधुर = क०, १७। का० कु०, १६, २२, २६, ५४,
[वि०] ५५, ६०, ६२, १०१, १२४। का०,
(सं०) पृष्ठ २७ से २६३ तक २६ बार। चि०, २६, ३६, ४६, ५६, ६३, १४१, १४३, १४७, १४६, १५८, १७०, १७६, १८६। झ०, ११, १५, २८। ल०, ११, १४, १५, २३, २५, २७, ३३, ४१, ४३, ४४।
स्वाद में मीठा, सुनने में प्यारा, सुन्दर कोमल।

मधुर-गान = का० कु०, ३४। का०, १५०।
[सं० पु०] (सं.) मीठे स्वर से युक्त गीत।

मधुर-चाँदनी-सी = का०, १८०।
[वि०] रस बरसाने वाली चाँदनी के समान।
(सं.) रस पूर्ण कोमलता का द्योतक शब्द।

मधुर-जीवन = का०, ८१। ल०, २२।
[सं० पु०] (सं.) वह जीवन जिसमें सरसता हो।

मधुरतम = का०, ६। झ०, ५४।
[वि०] (सं.) अत्यन्त मधुर।

मधुर-ध्वनि = का० कु०, ७४।
[सं० स्त्री०] (सं) मधुर शब्द या आवाज, मीठी बोली।

मधुर-प्रान = का०, १४५।
[सं० पु०] (हि.) वह प्राण या जीव जो सरस हो।

मधुर-प्रेम = आं०, १२।
[सं० पु०] (सं.) वह प्रेम जिसमें मधुरता या सरसता हो।

मधुर-भार = का०, ६६, ८६।
[सं० पु०] (हि.) कोमलता का भार या बोझ या सुकोमल।

मधुर-मधु = झ०, ३६।
[सं० पु०] (सं.) वह मधु जो मधुर हो।

मधुर-मधुर = का० कु०, १६, ६७। का०, १३०,
[वि०] १८०। झ०, १६।
(सं.) अत्यन्त मीठा।

मधुर मराली = का०, १८४।
[सं० स्त्री०] मधुर बोलने वाली हँसी या मधुर चाल
(सं.) से मन मोहने वाली हंसिनी।

मधुर-मारुत से= का०, ५४।
[वि०] (सं) वह वायु जो मधुर हो उसके समान।

मधुर-मिलन = का०, १७१, २८६, २६२।
[सं० पु०] वह मिलन जिसमें सरसता एवं
(सं.) आनन्द हो।

मधुरलहर = का०, ६६।
[सं० पु०] वह लहर जिससे आनन्द प्राप्त हो,
(सं.) सुन्दर लहर।

मधुराका = आं०, १७। का०, ४८, २२५।
[सं० स्त्री०] झ०, २६।
(सं.) सरस चाँदनी।

मधुराक्षर = चि०, १६६।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर लिखे गये अक्षर या वर्ण।

मधुरिमा = का०, ४८, ५१, ५७, ८१। झ०, ७६।
[सं० स्त्री०] (सं.) मधुरता, मिठास, सुन्दरता।

मधुलहरी = झ०, ६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) दे० 'मधुर लहर'।

मधुलुब्ध = प्रे०, २५।
[वि०] (सं.) मधु पर लुभाया हुआ।
मधुलेखा = ल०, १५।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुन्दर रेखा।
मधु-लोभी = चि०, २७।
[वि०] (हि.) मधु का लोभ करने वाला। भ्रमर का द्योतक शब्द।
मधुर-स्नेह = का०, १४४।
[सं० पु०] (सं.) आनन्द उत्पन्न करनेवाला स्नेह या प्यार।
मधुर-स्वप्न-सी = का०, २७।
[वि०] (सं.) वह स्वप्न जिसे देखने से आनन्द मिले उसके समान। आनन्दोत्पादक स्वप्न के समान।
मध्य = का०, २६२, २६३। चि०, ४६, १०१, १५३।
[सं० पु०] (सं.) बीच का भाग, कमर, अंतर।
मध्य-पथ = ल०, १३।
[सं० पु०] (सं.) मार्ग के बीच में या बीच मार्ग में।
मध्यम = क०, १८, १६। चि०, ४२।
[वि०] (सं.) मध्य का, औसत मान का।
मध्याह्न = का० कु०, १०८। चि०, १०१।
[सं० पु०] (सं.) ठीक दोपहर।
मन = आं०, १२, १६, २०, २६, ४२, ४८, ५१, ७०, ७३, ७५। का० कु०, ६, २६, ३५, ३६, ५१, ५३, ५८, ५६, ६३, ७५, ७७, १०६। का०, ३२, ३६, ४०, ४५, ४८, ५०, ५१, ५२, ६४, ७०, ७४, ६७, ६८, १००, १०२, १०३, १०६, १०६, ११०, ११२, ११५, ११८, ११६, ११७, १३४, १३५, १३६, १४२, १५४, १५७, १६२, १७५, १८४, १८६, २१६, २२६, २२६, २४८। चि०, १, ११, ३४, ३६, ४५, ५४, ६७, ६६, ६१, ६४, १५१, १५८, १६१, १६३, १६४, १७१, १७६, १८०, १८१, १८४, १८६, १६०। झ०, १६, १८, २०, ३३, ३५, ३६, ३७। प्रे०, २, ८, ११, १३, १५, १७, २१, २५। ल०, १७, २३, २८, ४७, ५२, ५४।
[सं० पु०] (सं.) अनुभव, संकल्प, विकल्प, इच्छा, विचार आदि करने वाली शक्ति, अन्तःकरण की वह वृत्ति जिससे संकल्प-विकल्प होता है।
मन-कुरंग = ल०, ४८
[सं० पु०] (सं.) मन रूपी मृग या हिरण।
मनन = का०, ५, ३३, ८२।
[सं०पु०] (सं.) चिन्तन, अच्छी तरह से सोचकर किया जाने वाला अध्ययन या विचार।
मननशील = का०, २४४।
[वि०] (सं.) वह जो बराबर मनन या चिन्तन करता रहता हो।
मनबनस्थली = का०, २२५।
[सं० स्त्री०] (सं.) मन रूपी बनस्थली या जंगल।
मन भरि = चि०, ७२।
[वि०] (ब्र. भा) यथेच्छ। मन की माँग के अनुसार।
मनभावन = का० कु०, ६७।
[वि०.] (ब्र. भा.) मन को अच्छा लगने वाला या मन वांछित।
मनभावै = चि०, १६२।
[क्रि०] (हि.) अच्छा लगे।
मन मँह = चि०, ७२।
[सं०पु०](ब्र.भा.) मन में।
मनमन्दिर = आं०, ३५। का०, २२२।
[सं०स्त्री०] (सं.) मन रूपी मन्दिर।
मन-मधुक = चि०, १८४, १८८।
[सं० पु०] (सं.) मन रूपी भौंरा।
मन-मधुकर = का०, ६५।
[सं०पु०] (सं.) मन रूपी भौंरा।
मन-मधुप = का० कु०, ६३।
[सं० पु०] (सं.) मन रूपी भौंरा। लोलुप मन।

मन-मयूर = झ०, ३६।
[सं० पु०] (सं.) मन रूपी मोर। लोलुप मन।
मनमान = चि०, १४३।
[वि०) जो अच्छा लगे। यथेच्छ जो कुछ मन में
(ब्र. भा.) आवे।
मन-मानिक = चि०, १५६।
[वि०](ब्र. भा.) मनरूपी मणी।
मनमानी = का०, १६७।
[वि०] हि.) 'दे०मनमान'।
मनमाने = आं०, ५१, ७८। चि०, १। झ०, ७०।
[वि०] (हि०) दे० 'मनमान'
मनमाने-से = झ०, ४५।
[वि०] मनमाने के समान। मनमाना काम
(हि.) करने के समान।
मनमारे = का० कु०, ६३।
[क्रि०] (हि.) उदास होकर, खोया-सा। खिन्न होकर।
मनमाहिं = चि०, २८।
[सं पु०](ब्र.भा) मन में।
मनमुग्धकारी = का० कु०, ४२।
[वि०] (सं.) मन को मुग्ध या प्रसन्न करने वाला।
मनमोद = चि०, १८०।
[सं० पु०] (सं.) मन की प्रसन्नता।
मनमोहन = का० कु०, १२६। चि०, १८४, १८५।
[वि०] (हि.) झ०, ५८।
[सं० पु०] हि.) मन को मोहने वाला। प्यारा श्रीकृष्ण।
मनमोहिनी = का० कु०, ४२।
[वि० स्त्री०](हि.) मन को मोहने वाली।
मनमृग = का० कु०, ७१।
[सं० पु०] मन रूपी मृग या हिरण। चंचल
(सं.) मन।
मनसों = चि०, ७०, ७३।
[सं० पु०] (ब्र० भा०) मन से।
मनस्ताप = का०, १८१।
[सं० पु०] (सं.) मन का ताप या दुःख।
मनस्वी = का०, २८१।
[वि०] (सं.) बुद्धिमान, स्वेच्छाचारी।

मनहर = का० कु०, ३४। चि०, २६, ७२।
[वि०] झ०, ८८। ल०, ३०।
(ब्र० भा०) मन को हरने या मोहने वाला।
मनहरन = चि०, ५६।
[वि०] (ब्र० भा०) मन का हरण करने वाला चित चोर।
मनहारी = का० कु०, ६६। चि०, १६२।
[वि०] मन हरने वाली, मन को लुभाने
(हि०) वाली।
मनहि = चि०, ५८।
[सं० पु०] (ब्र० भा०) मन में।
मन ही मन = का०, २२८, २३०। चि०, ५६, १६६।
[सं० पु०] (हि०) अपने आप, स्वयं।
मनहुं = चि०, २, २१, २६, ३३।
[अ०] (ब्र० भा०) मानो।
मनहु = चि०, ११, २१, २३, २३, ७०।
[अ०] (ब्र० भा०) मानो।
मना = क०, ३१, का० १७६, १८०।
[वि०] (अ०) निषिद्ध, वर्जित।
मनाता = ल०, ७६।
[क्रि० स०] (हि०) 'मनाना' क्रिया का सामान्य भूतरूप।
मनाते = चि०, ६०।
[क्रि० सं.] (हि.) 'मनाना' क्रिया का सामन्य भूत रूप।
मनाना = का० कु०, ८८। का०, ८६, १०३
[क्रि० सं०] ११७। प्रे०, २३।
(हि.) रूठे हुये को प्रसन्न करना, राजी करना, प्रार्थना करना, जैसे भगवान को मनाना।
मनाया = का० कु०, ३३।
[क्रि० स०] (हि.) 'मनाना' क्रिया का सामान्यभूत रूप।
मनाये = आं०, ५०।
[क्रि० स०] (हि.) दे० मनाया।
मना ले = चि०, १४।
[क्रि० सं०] (हि.) मनाना क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।
मनि = चि०, १४२।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) दे० मणि।
मनी को = चि०, ९।

[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) मणि को ।

नीषा = का०, ६ ।

[सं० स्त्री०] (सं.) बुद्धि जो सत्य असत्य का विवेक रखती है।

मनु = का०, पृष्ठ ३० से २८७ तक ६६ बार ।

[सं० पु०] चि०, ४२, ४६, ६८, १४१, १६०, १६१, १६२ ।

(सं.) ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मूल पुरुष माने जाते हैं। अन्तःकरण, मन, वैवस्वत मनु, चौदह की संख्या ।

मनुज = क०, २७ । का, कु० ७ । चि० ५, १४१, १४३, १५० । प्रे०, २२ ।

[सं० पु०] (सं.) मनुष्य, आदमी ।

मनुजहिं = चि०, १४१ ।

[सं०पु०](ब्र.भा.) मनुज को ।

मनुबीणा = चि०, ४७ ।

[सं० स्त्री०] (सं.) मानो वीणा वा मनु की वीणा ।

मनुष्य = क०, २६, २७ । का० कु०, ३६, ३७ ।

[सं० पु०] का०, १६२ । चि०, १४०, १५५ ।

(सं.) आदमी, नर ।

मनुष्यता = ल०, ७१ ।

[सं० स्त्री०] (स.) मनुष्य का भाव, मनुष्य का आवश्यक धर्म, शिष्टता ।

मनुहार = का०, १३४ ।

[सं० स्त्री०] (हि.) मनावन, खुशामद, विनय, प्रार्थना ।

मनो = का०, कु०, १३ । का०, १४ । चि०, ४७, ७०, १५२, १५६ ।

[अव्य०] (ब्र. भा.) मानो, मनु, जनु ।

मनोखसपर्ण = (नाम) कामायनी से ।

मनोगत = क०, १३ ।

[वि०] (सं.) मन में होने या आनेवाला (विचार आदि) ।

मनोगत-भाव-फूल=का०, कु० २७ ।

[सं० पु०] (सं०) मन में आनेवाले भाव रूपी फूल ।

मनोज्ञ = का कु०, १३, ३४, ६३, १००, १०५।

[वि०] (सं.) सुन्दर, मनोहर ।

मनोनीत = का० कु०, ४७ ।

[वि०] (सं.) जो मन के अनुकूल हो । पसंद किया हुआ ।

मनोबल = झ०, ८० ।

[सं० पु०] (सं.) मन का बल, मन की दृढ़ता ।

मनोभाव = का०, १२६, १७२, २७० ।

[सं० पु०] (सं.) मन में उत्पन्न होनेवाला भाव ।

मनोमय = का०, २६४ ।

[वि०] (सं.) मन से युक्त या पूर्ण । मानसिक ।

मनोमुकुल = का० कु०, १३१ ।

[सं० पु०] (सं) मन रूपी कली ।

मनोमुकुल माल = चि०, १८० ।

[सं०स्त्री०] (सं.) मन रूपी कली की माला ।

मनोरथ = आं०, ४५ । का० कु०, २, ११५ ।

[सं० पु०] (सं.) मन की इच्छा या अभिलाषा ।

मनोरम चि०, ६०, १४३ ।

[वि०] (सं.) मनोहर, सुन्दर ।

मनोविकार = का० कु०, ८८ ।

[सं० पु०] मन में उठने वाले विकार जैसे काम, (सं) क्रोध, मद, मोह, मत्सर, लिप्सा आदि ।

मनोवृति = का०, १६० । ल०, ६७ ।

[सं० स्त्री०] मन के चलने या काम करने की वृत्ति, (सं.) मन की स्थिति ।

मनोवृतियाँ = का० कु०, १५ । झ०, १५ ।

[सं० स्त्री०] (हि.) 'मनोवृत्ति' का बहुवचन रूप ।

मनोवेग = झ०, १६ ।

[सं० पु०] (सं) मनोवृत्ति ।

मनोवेदना = म०, २३ ।

[सं० स्त्री०] मन में उत्पन्न होनेवाली वेदना (सं.) या दुःख ।

मनोहर = क०, ६, १३ । का० कु०, १५, ३०, [वि०] (सं.) ३५, ३७, ४०, ४२, ४३ । का०, १३, ३१, ३४, ७५, ८५, ८७, ६०, १३५, २१५, २८४, २८५, २६३ । चि०, २१, २८, ३१, ५६, ५६, ६०, ६३, ७०, ७१, १००, १४३, १४५, १५०, १५४, १५८, १५६, १६०, १६३,

१६५। झ०, १२, १५, २८। प्रे०, ८, १३, १४, १५, २३।
मन को आकर्षित करने वाला, सुन्दर।

मनोहरता = चि०, १८३।
[सं० स्त्री०] (सं.) आकर्षण, सौन्दर्य।

मनोहारिणी = का०, २६३।
[वि०] (सं.) दे० मनोहर।

मनोहारिनी = चि०, ४५।
[वि०] (ब्र.मा.) दे० 'मनोहर'।

मम = चि०, ३१, ५७, ७४, ८८, ९६, ९९,
[व०] १५५, १७३, १८८।
(सं.) मेरा।

ममता = आ०, ४३, ५०। क०, ११। का०,
[सं० स्त्री०] ८४, १०१, १०४, ११२, १५७,
(सं.) १५८, १५९, २०७, २३८, २४३,
२६७, २८६। झ०, २६।
अपने पन का भाव, स्नेह, लोभ, मोह।

ममत्व = का०, १५३, २६७। झ०, ५।
[सं० पु०] (सं.) अपनत्व का भाव, ममता।

ममत्वमय = का०, १६१।
[वि०] ममता से भरा हुआ जिसमें ममत्व
(सं.) भर गया हो।

ममाखियों = का०, २७१।
[सं० स्त्री०] (हि.) मधुमक्खियाँ।

मयंक = चि०, ९, १४६।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा।

मय = आ०, ५१। का०, २०७। चि०, ४६,
[सं० पु०] ७३, ७४। ल०, २१।
(सं.) एक दानव का नाम जो बहुत बड़ा शिल्पी था। (वि०) दर्प, घमंड। (अव्य०) युक्त।

मयी = का०, २६५।
[अव्य०] (हि.) युक्त, भरी हुई।

मयूरी = चि०, ९३।
[सं० स्त्री०] (सं) मोरनी।

मरंद = का०, ७३, १७८, २१७। चि०, २७,
[सं० पु०] ५६, १३२, १४६। झ०, ६८।
(सं.) दे० 'मकरन्द'।

मरंद-उत्सव-सा = का०, ११।
[वि०] (सं.) मरंद के उत्सव के समान। वसंत के समान।

मरंद-उद्गम = आ०, ६६।
[सं० पु०] मकरन्द के निकलने का स्थान, फूल के
(सं.) पराग का स्रोत।

मरंद-मन्थर-मलयज-सी=का०, २२४।
[वि०] गम्भीर मकरन्द। मन्द पराग से युक्त
(सं.) हवा के समान।

मरन्दै = चि०, ४६।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) मरन्द को।

मरकत = का०, २८४।
[सं० पु०] सं.) एक प्रकार की मणि विशेष। पन्ना।

मरकत-हारावलि = चि०, ५५।
[सं० स्त्री०] (सं.) मरकत मणि के हार की पंक्ति।

मरकर = का०, ५५, २२१।
[क्रि०] (हि.) 'मरना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप।

मरण = का०, १७, २२३।
[सं० पु०] (सं.) मृत्यु, मौत।

मरण-पर्व = का०, २०१।
[सं० पु०] (सं.) मरण का पर्व। प्रलय।

मरता = ल०, ५५।
[क्रि० अ०] (हि.) मरना क्रिया का रूप।

मरना = क०, १२। का०, ५, २८, १२३।
[क्रि० अ०] प्रे०, १०। ल०, ३८, ४३, ५३।
(हि.) शारीरिक क्रियाओं का सदा के लिए अन्त हो जाना, अत्यन्त दुख या कष्ट उठाना। आसक्त होना।

मरले = का०, १३३।
[क्रि० अ०] (हि.) 'मरना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

मराल = का०, २३५। चि०, ६९।
[सं० पु०](सं.) हंस, घोड़ा, हाथी।

मराल-सी = चि०, ७०।
[वि०] (सं.) मराल के समान।

मरालिनि = चि०, १४३।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) दे० 'मराल'।

मराली = चि०, ४५, ५८।
[सं० स्त्री०] (सं.) दे० 'मराल'।
मरी = चि०, ६७।
[क्रि०अ०] (सं.) 'मरना' क्रिया का सामान्य भूत रूप।
मरीचिका = का०, २६८। ल०, ४८।
[सं०स्त्री०] (सं.) किरण, कान्ति, मृगतृष्णा।
मरीची = चि०, ५६।
[सं०पु०](व्र.भा.) सूर्य, चन्द्रमा।
मरु-अंचल = का०, ६७, १५८।
[सं० पु०](सं.) बालू प्रदेश का अंचल, शुष्कता।
मरु-ज्वाला = का०, २१७।
[सं० स्त्री०] (सं.) बालू-प्रदेश की ज्वाला। सदा ताप से जलने वाली।
मरुत = का० कु, १७। का०, २५, १६७, प्रे०, २४।
[सं० पु०] (सं०) वायु, प्राण।
मरुत सदृश = का०, १५७।
[वि०] (सं०) वायु के समान। न रुकने वाला। गतिशील।
मरु-धरणी-सम = झ०, ४०।
[वि०] (सं.) मरुस्थल के समान। शुष्क।
मरुभूमि = का०, १६०। चि०, १८०।
[सं० स्त्री०] (सं.) मरुस्थल, मारवाड़ देश।
मरुभूमि-निराशा = प्रे०, १५।
[सं० स्त्री०] = निराशा की मरुभूमि, वहाँ जहाँ कामनायें पूरी नहीं होतीं। (सं.)
मरुमय = झ०, ४६।
[वि०] (सं.) मरु से युक्त, ज्वलन शील।
मरुमरीचिका = का०, १८।
[सं० स्त्री०] (सं.) मरु प्रदेश की किरणें जो लहराते हुए जल सी दीखती है। निष्फल प्रयास।
मरुसम = चि०, १६०।
[वि०] (सं.) मरुस्थल के समान, ज्वलन-शील।
मरुस्थल = आ०, ४१।
[सं० पु०] (सं.) बालू के कण होते हैं, मरुभूमि। रेगिस्तान।
मरूँ = का०, २३०, २४३।
[क्रि०] (हि.) 'मरना' क्रिया का सामान्य वर्तमान रूप।
मरे = का०, २८९। चि०, १८१।
[क्रि० अ०] हि.) मरना क्रिया का सामान्य भूत रूप।
मरोर = का०, १०३, १४०।
[सं० पु०] (हि.) मरोड़ने की क्रिया या भाव, घुमाव, पेट में होने वाली ऐंठन, व्यथा।
मर्दन = चि०, १५२।
(सं० पु०) (सं.) कुचलना, मसलना, मलना।
मर्म = का० कु०, ६४। म०, १४।
[सं० पु०](सं.) स्वरूप, रहस्य, संधि-स्थल।
मर्मर की दीवाल = का० कु०, १०६।
[सं० पु०] (हि.) संगमरमर की बनी हुई दीवाल।
मर्म-बाधा = का०, २०६।
[सं० स्त्री०] (सं.) रहस्यमयी बाधा या विघ्न, अविज्ञात बाधा।
मर्म-वेदना = का० कु०, २०। का०, ४।
[सं० स्त्री०] (सं.) मर्मभरी हुई वेदना, वह वेदना जिसे कोई जान न सके।
मर्यादा = का०, १६५। चि० ६५, १०६।
[सं० स्त्री०] (सं.) सीमा, तट, प्रतिष्ठा।
मर्य्यादा = का०, १५।
[सं० स्त्री०] (सं.) दे० 'मर्यादा'।
मल = झ०, ५१।
[सं० पु०] (सं) मैल, दोष, पाप।
मलना = झ०, ८७।
[क्रि० सं०] (हि.) हाथ से घिसना या रगड़ना।
मल-मल = आं०, ११।
[क्रि०] (हि.) मसल मसल कर।
मलय = आ०, २७, ४२। का०, ६७, २१६ चि०, २४, १७०। झ०, ११, ७२ ल०, २४, २५, ३७।
[स० पु०] (सं.) दक्षिणी भारत का एक प्रदेश, तथ

वहाँ के निवासी, वहाँ की वायु। सफेद चन्दन।

मलय की बात = का०, २१६।
[सं० पु०] (हि.) मलय प्रदेश की हवा, सुगन्धित वायु।

मलयज = आं०, २६। का० कु०, १३, ४६, ६६। चि०, १७७। झ०, २७, ४१, ५६, ६२। प्रे० ११, १४। ल०, १६, ४५।
[सं० पु०] (सं.) मलय प्रदेश में उत्पन्न होने वाला चन्दन।

मलयज-आवास=झ०, २६।
[सं० पु०] (सं.) मलय पर्वत से आनेवाली शीतल, मन्द, सुगंधित वायु का घर। चन्दन की सुगन्धि से पूर्ण।

मलयज-धीर = चि०, ६३।
[सं० पु०] (सं.) शीतल मन्द सुगन्धित वायु।

मलयज-पवन = चि०, ६८।
[सं० पु०] (सं.) सुगन्धित एवं शीतल मंद वायु।

मलय-पवन = ल० १३।
[सं० पु०](सं.) सुगन्ध से भरा हुआ पवन।

मलय-बात = ल०, ३१।
[सं० पु०] (हि.) दे० मलय की बात।

मलय-बालिका-सी= का०, १८२। ल०, २०।
[वि०] (सं.) मलय जाति की बालिका के समान, मंथर गति से चलने वाली बालिका के सदृश।

मलय-मरुत = झ०, ६५।
[सं० पु०] (सं) दे० 'मलय-पवन'।

मलय-मारुत = का० कु०, ८।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'मलय-पवन'।

मलयज-सा = का०, १५२।
[वि०] (सं.) दे० 'मलयज-सी'।

मलयज-सी = का०, २२४।
[वि०] (सं०) चन्दन के समान। सरसता एवं
[वि०] आनन्द प्रदान करने वाली, वस्तु के
(सं) समान।

मलय-हिल्लोल = का० कु०, ४९।
[सं० पु०] (सं.) सुगन्धित वायु से अन्तःस्थल में उठने वाली आनन्द की लहर।

मलयाचल = का०, १७१।
[सं० पु०] (सं.) मलय प्रदेश का एक पर्वत, चन्दन वन।

मलयानिल = आं०, ३१। क०, ६। का० कु०, १५, ३४, ६२, ६६। का०, ७३, २२०, २६२। चि०, १, २६, ३६, ३६, १४३, १५३, १७२। झ०, १६, २४, ४६, ५३। प्रे०, १। ल०, २८, ३१, ४०।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'मलय-पवन'।

मलयानिल-तड़ित=क०, ८।
[वि०] (सं.) मलयानिल के द्वारा चोट पहुँचाया हुआ। सुकोमलता का सूचक।

मलयानिल-सा= झ०, ६४।
[वि] (सं.) मलयानिल के समान, आनन्दित करने वाला।

मलयानिलौं = चि०, ४८।
[सं० पु०] (सं.) मलयानिल में।

मलिन = आं०, ४०। का० कु०, ३६, ६३। का०, १४, ३१, ६७, ११३, १२०, २०५, २३६, २४५, २५१, २६६। चि०, १५७, १७०। ल०, ७२।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'मलीन'।

मलिनता = चि०, १२, ३६। प्रे०, १८।
[सं० स्त्री०] (सं.) मलिन होने का भाव। कपट, छल, विकार पाप।

मलिनाञ्चल = झ०, ३०।
[सं० पु०] (सं.) मलिन-अंचल, विकार से भरा हुआ, दोषपूर्ण।

मलिना = का० कु०, २७, २८।
[वि०] (सं.) दे० 'मलिन'।

मलिनाभ = चि०, १६०।
[सं० पु०] (सं.) मलिन कान्ति या शोभा।

मलिया = चि०, १५१।

[सं० पु०] (ब्र. भा.) माली।

मलीन = का० कु०, ४५, १०२। चि०, ४६, [वि०] १७६। झ०, ३३। (हि.) दे० 'मलिन'

मलीनता = का० कु०, ११२। म०, ८। [सं० स्त्री०] (सं.) दे० 'मलिनता'।

मसलन = का०, १०३। [सं० स्त्री०] (हि.) मसलने की क्रिया या भाव।

मसि = म०, ६। [सं० स्त्री०] (सं.) स्याही, काजल, कालिख।

मस्त = का० कु०, २२। का०, ६८। झ०, ४३, ४५। [वि०] (फा०) मतवाला, मदोन्मत्त।

मस्तक = आं०, ११४। का० कु०, ६०। का०, [सं० पु०] २३७। (सं.) शरीर के अंग का शीर्ष भाग, शिर, ललाट।

मस्तानी = क०, ८। [वि०] (फा.) मस्ती से भरी हुई, वह जो मस्त हो।

मस्जिद = का० कु०, ६। चि०, १८६। [सं० स्त्री०] (अ.) मुसलमानों का प्रार्थना स्थल।

मस्तिष्क = का०, १६५। ल०, १२। [सं० पु०] (सं.) मस्तक के अन्दर का गूदा, सोचने-समझने की शक्ति, बुद्धि।

मसृण = का०, ४६, १२५। [वि०] (सं.) मुलायम, चिकना।

मसृण-बाल का०, १५२। [सं० पु०] (सं.) चिकने और मुलायम बाल।

महत = चि०, १०१। [वि०] (सं.) बहुत बड़ा।

महती = का०, २७६,। म०, १७, २३। [वि० स्त्री०](सं.) बहुत बड़ी, महान।

महत्व = का०, ३०। [सं० पु०] (सं.) महान का भाव, गुरुता, श्रेष्ठता।

महत्व-मय = म०, ६, २३। [वि०] (सं.) गुरुता एवं श्रेष्ठता से पूर्ण।

महत्ता = का० कु०, २६४। [सं० स्त्री०](सं.) दे० 'महत्व'।

महराज = चि०, ६३। [सं० पु०] (ब्र. भा.) महाराज, राजाओं में श्रेष्ठ राजा, ब्राह्मण, पण्डित, वह ब्राह्मण जो किसी के यहाँ साधारण नौकरी करता हो।

महराजहिं = चि०, ६८। [सं० पु०](ब्र.भा.) महराज को।

महरानिन = चि०, ५८। [सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) महारानियाँ।

महर्षि = क०, २६, २७। [सं० पु०] (सं.) बहुत बड़ा या श्रेष्ठ ऋषि।

महल = का० कु०, ६७। चि०, ४६। झ०, ५५। [सं० पु०] प्रे०, ३, १४। म०, १९। (अ.) प्रासाद, रनिवास।

महा = आं०, ६। का० कु०, ४२, ५३। का०, [वि०] १५, १७, १०४, १६०, २५१, २५३, (सं.) २५४, २७३। चि०, ३६, ४२, ५४, १७०, १३६, १५४, १५५, १६२। प्रे०, १५, १७, २४, २५। म०, ६। ल०, १५। बहुत अधिक, सर्वश्रेष्ठ। बहुत बड़ा।

महाकमनीय = का० कु, १७। [वि०] (सं.) अतीव सुन्दर, सुकोमल।

महाकाल = का० कु०, १०७। का०, २७३। [सं० पु०] ला०, ५५। (सं.) महादेव।

महागत = ल०, ७०। [वि०] (सं.) सदा के लिए नष्ट कर देने वाला, अन्त कर देनेवाला।

महाचिति = का०, ५३। [सं० स्त्री०] (सं.) महादुर्गा, महान् चेतना शक्ति।

महाचेतना = का०, १६३। [सं० स्त्री०] (सं.) बलवती चेतना, वह चेतना जो स्थायी और दृढ़ हो।

महाछल = चि०, ६६। [सं० पु०] (सं.) बहुत बड़ा छल या कपट।

महाछवि = चि०, १६२।
[सं० स्त्री०] (सं.) अत्यन्त शोभाशाली।

महात्मा = चि०, ६०।
[सं० पु०] जिसकी आत्मा महान हो, साधु।
(सं.) महापुरुष।

महादम्भ = ल०, ४७।
[सं० पु०] (सं.) बहुत बड़ा घमण्ड।

महादेश = का०, २६१।
[सं० पु०] (सं.) बहुत बड़ा देश, महाद्वीप, गुरु-आज्ञा।

महान = का० कु०, १८। का०, ५१, ५४, ८५।
[वि०] चि०, ६६, १०३, १०५, १४०, १४३,
(सं.) १५३। भ्रू०, ७७। म०, १८, २३।
ल०, ६८।
बहुत बड़ा। श्रेष्ठ।

महानील = का०, २६।
[वि०] (सं.) गाढ़ी नीलिमा से परिपूर्ण।

महानील-लोहित-ज्वाला = का०, १८६।
[सं० पु०] वह ज्वाला जो नीलिमा से युक्त लोहित
(सं.) या लाल हो। (क्रोध)

महानृत्य = का०, १६।
[सं० पु०] (सं.) ताण्डव नृत्य, प्रलयकालीन नाच।

महापत्र = का०, २६६।
[सं० पु०] (सं.) बहुत बड़ा पत्ता, कमल पत्र का द्योतक।

महापर्व = का०, १४३।
[सं० पु०] (सं.) पर्वों या त्योहारों में महान।

महापाप = का० कु०, १२१।
[सं० पु०] (सं.) बहुत बड़ा पाप।

महाप्राण = म० ८।
[सं० पु०] प्राणों या जीवों में महान, व्याकरण में
(सं०) उच्चारण का एक स्थान।

महापुरुष = का० कु०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) पुरुषों में महान्।

महावट = का०, ४।
[सं० पु०] (सं.) अक्षय वट।

महाबल = चि०, ६३।
[सं० पु०] (सं.) बहुत बड़ा बल, अत्यन्त बलवान।

महाब्धि = चि०, ४८।
[सं० पु०] (सं.) महासागर।

महाभयावह = का० कु०, २५।
[वि०] (सं.) अत्यन्त डरावना।

महाभारत-गगन=का० कु०, ११३।
[सं० पु०] (सं) महाभारत रूपी गगन।

महामंत्र = का० १५४,।
[सं० पु०] (सं.) महत्वशाली मंत्र, बहुत बड़ी सम्मति।

महामति = चि०, ६८।
[वि०] (सं.) बड़ा बुद्धिमान। गणेश जी।

महामेघ = का०, ७।
[सं० पु०] (सं.) घनघोर बादल, प्रलय काल का मेघ।

महारण-अग्नि = का० कु०, ११४।
[सं० पु०] (सं.) महायुद्ध रूपी अग्नि।

महारथी = का० कु०, ११४।
[सं० पु०] (सं०) बहुत बड़ा योद्धा।

महाराज = क०, ६। चि०, ५८, ६४, ६५, ६४।
[सं० पु०] बहुत बड़ा राजा, ब्राह्मण गुरु आदि
(सं०) के लिए आदर सूचक शब्द।

महाराणा = म०, ४।
[सं० पु०] (सं.) चित्तौर के राजा 'महाराणा प्रताप'।

महारुद्र = चि०, ४१।
[सं० पु०] प्रलय के समय शंकर का क्रोधित
(सं.) रूप।

महाशक्ति = का०, १६५, २०२। चि०, १५४।
[सं० स्त्री०] बहुत बड़ी शक्ति। देवी का क्रोधित
(सं.) रूप।

महा-शिशु-खेल=का० कु०, १०।
[सं० पु०] (हि.) महत्वशाली बालकों का खेल।

महाशून्य = का०, २७३।
[वि०] (सं.) आकाश।

महासंगीत = का० कु०, ३।
[सं० पु०] महासंगीत से परिपूर्ण, ईश लीला
(सं.) जन्य प्रकृति का गान।

महासमीर = का०, १५७।
[सं० पु०] (सं.) वायु का महान वेगमय रूप, झंझा।

महानद = का०, २८२, २६०।
[सं० पु०] (सं०) बहुत बड़ा तालाब। बड़ी नदी।
महिनों = ल०, ६६।
[सं० स्त्री०] (सं०) कई माह।
महिमा = क०, ३१। का०, १८१, २२२, २८३, २ ०। चि०, ३०, १५३। झ०, ४१।
[सं० पु०] (सं०) म०, १७।
महत्ता, प्रभाव, आठ सिद्धियों में से एक।
महिमामंडित = म०, ८।
[वि०] (सं०) महिमा से शोभित।
महिला = का०, २७८।
[सं० स्त्री०] (सं०) भले घर की स्त्री।
महिषी = चि०, २३।
[सं० स्त्री०] (सं०) भैंस, रानी।
मही = का०, ४। वि०, १६२।
[सं० स्त्री०] (सं०) पृथ्वी, नदी।
[सं० पु०] (हि०) मठा।
महेश = चि०, १५६।
[सं० पु०] (सं०) महादेव।
महोत्पल = चि०, १३४।
[सं० पु०] (सं०) बड़ा कमल।
महोत्सव = का०, १६८। चि०, ७२। ल०, ७६।
[सं० पु०] (सं०) बहुत बड़ा उत्सव।
मह्यो = चि०, १६१।
[क्रि० सं०] (ब्र० भा०) 'महना' या 'मथना' क्रिया का सामान्य-भूत रूप।
माँ = का०, १७६, १८०, २१५, २१६, २३६, २४४। ल०, ५४।
[सं० स्त्री०] (हि०) माता, जननी।
माँग = आं०, ४६। का०, २७०।
[सं० स्त्री०] (हि०) माँगने की क्रिया या भाव, माँगना।
[सं० स्त्री०] (हि०) प्रार्थना या आग्रह वाली बात। बालों को कंघी से विभक्त करने पर उनके बीच में बनी हुई रेखा, सीमन्त।
माँगता = आं०, ६६। ल० ४२, ७०।
[क्रि० सं०] (हि०) माँगना क्रिया का सामान्य भूत रूप।
माँगता हूँ = ल०, ५४।
[क्रि० सं०] (हि०) माँगना क्रिया का वर्तमानकालिक रूप।
माँगती = आं०, ५५। का०, १६५। ल०, १६।
[क्रि० सं०] (हि०) दे० 'मागता'।
माँगना = म०, ६।
[क्रि० सं०] (हि०) याचना करना, प्रार्थना करना, चाहना।
माँगने = ल०, १७।
[क्रि० सं०] (हि०) मागने के लिए उत्सुक होना या आगे बढ़ने का भाव।
माँझी = क० १०।
[सं० पु०] (हि०) मल्लाह, खेनेवाला।
माँस = का०, १८।
[सं० पु०] (ब्र० भा०) शरीर के हड्डियों के बीच का मुलायम और लचीला पदार्थ, गोश्त।
मांस-पेशियाँ = का०, ४।
[सं० स्त्री०] (सं०) शरीर के अन्दर का मांसल भाग।
माँसल = का०, १२५, १४७, २६४।
[वि०] (सं०) मांस से भरा हुआ, मोटा ताजा, पुष्ट।
माँहि = चि०, ४६।
[अव्य०] (ब्र० भा०) मध्य में, बीच में।
मातलि = चि०, ५६।
[सं० पु०] (सं०) इन्द्र के सारथी का नाम।
माता = का० कु०, १०३। चि०, ६२। झ०, ३४। प्रे०, १६।
[सं० स्त्री०] (हि०) माँ, जननी। आदरणीय स्त्री।
मातायें = का०, २७८।
[सं० स्त्री०] (हि०) माता का बहुवचन रूप।
माति = चि०, ३, १८०।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र० भा०) मतवाला होकर, मदोन्मत्त होकर।
माती = का०, ७०।
[वि०] (हि०) मतवाली, मस्त, मदोन्मत्ता।
मातु = चि०, ४१, १८२।
[सं० स्त्री०] (ब्र० भा०) (दे० 'माता'।)
मातों = चि०, ५६।

[वि०] (हि.) मतवालों, मस्तों।

मातृत्व = का० १४२।
[सं० पु,०] (सं.) माता होने का गुण।

मातृत्व-बोझ = का०, १४२।
[सं० पु०] (हि.) मातृत्व का भार, मातापन का बोझ।

मातृ-भूमि = ल०, ५४।
[सं० स्त्री०] (सं.) वह भूमि या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।

मातृ-भूमि-द्रोही= चि०, ६७।
[वि०] [सं.] मातृभूमि से द्रोह करने वाला, देश द्रोही।

मातृ-मूर्ति = का० २४७, २४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) माता की मूर्ति।

मात्र = भ्रू०, ५८, प्रे०, १८। ल०, ५१।
[अव्य०] (सं.) केवल।

मादक = आं०, १२। का०, ७३, ११५, १५६, १८३, १८६, २६१।
[वि०] (सं.) नशा लानेवाला, नशीला।

मादकता = आं०, २६, ३३। का०, ७०, १२२, १२५, १२८, १२९, २२३, २३७, २६३। ल०, २०, ६०।
[सं० स्त्री०] (सं.) नशा का भाव, नशीलापन, मस्ती।

मादन = का०, २०३।
[वि०] (सं०) मादक, मस्त करने वाला।

माधव = का०, ७२, ८६, ६७, २६२। चि०, ५।
[सं० पु०] (सं.)
(वि०) (सं.) विष्णु वसन्त ऋतु। माधवी, माधविका।

माधवी = का०, ४७, ६७, ८८। चि०, ५७। ल०, ४४।
[सं० स्त्री०) (सं.) सुगन्धित फूलों वाली लता, एक प्रकार की शराब, दुर्गा।

माधविका कुसुम=भ्रू०, २६।
[सं० पु०] (सं.) माधवी लता का फूल।

माधवी-कुंज= आं०, १८।
[सं० पु०] (सं.) वह कुञ्ज जो माधवी लता से बना हो।

माधवी लता= चि०, ६०।
[सं० स्त्री०] (सं.) माधवी नाम की सुगन्धित फूलों वाली लता।

माधुरता = चि०, १६२।
[सं० स्त्री०] ((सं.) माधुर्य, मिठास, सुन्दरता।

माधुरी = का० कु०, ११४। का०, ४७, ७३, २२२। चि०, १७०, १३६। भ्रू०, ३५, ६३, ६४। ल०, २६, ७१, ७६।
[सं० स्त्री०] (सं.) मिठास, शोभा, शराब।

माधुरी-सी = क०, १८, २७। का० कु०, ४७, ८१, ६८। का०, ६३, ११७, १४७, १६२, १६३, १६६। चि०, ४६, १०२, १०५, १५२, १७०, १८६। भ्रू०, ३३, ७७।
[वि०] (सं.) माधुरी के समान, मधुरता-सी।

मानकर = का०, १७१।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) स्वीकार करके, कल्पना करके।

मानको = चि०, ६८।
[सं० पु०] (सं.) सम्मान को, अभिमान को।

मान चलूँ = का०, १६०।
[क्रि०] (हि.) 'मानना' क्रिया का वर्तमान कालिक रूप।

मानत = चि०, ३२, १०५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मानना क्रिया का सामान्य वर्तमान का रूप।

मानती = का० कु०, ३३। ल०, ७१।
[क्रि० स०] (हि.) 'मानना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

मानती-सी = का०, ६०।
[क्रि० वि०](हि.) कल्पना करती हुई के समान।

मानते = का० कु०, ५, ६७। का०, ८८, १६१। ल०, ५३।
[क्रि०] (हि.) सहमत होना, कल्पना करना, स्वीकार करना।

मानदण्ड-समान=का० कु०, २६।
[वि] (हि.) नापने के दण्डे के समान, मापक के समान।

मान-मोचन = का०, १८४।

[सं० पु०] रूठे हुए को मनाने या प्रसन्न करने
(सं.) का भाव ।

मान लिया = आं०, ५ ।
[क्रि०] (हि.) कल्पना किया । स्वीकार किया ।

मानव = आं०, ४६ । का० कु , ६० । का०,
[सं० पु०] ५८, ७६, १६४, १६६, २४३, २४४,
(सं.) २५०, २७७, २८६, २८६ । चि०,
१०३, १५५ । झ०, ४१, ६६ । प्रे०,
४, २५ । म०, ७ । ल०, ३०, ४७ ।
मनुष्य, आदमी, मनुज ।

मानव-जाति = का० कु०, १२५ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) मनुष्य वर्ग ।

मानवता = आं०, ६१ । का० कु०, ८६ । का०,
[सं० स्त्री०] ५८, ५६, १२४, १२६ । झ०, ३३ ।
(सं.) ल०, २३, ७७ ।
मनुष्य का वह धर्म जिससे वह मनुष्य
कहा जाता है । मनुष्यता, मनुजत्व
इन्सानियत ।

मानवता-धारा = का०, १३४ ।
[सं० स्त्री०] मानवता रूपी धारा या प्रवाह, संस्कृति
(सं.) का सूचक शब्द ।

मानवती = का०, १२७ ।
[सं० स्त्री०] वह स्त्री जो अपने प्रेमी या पति से
(सं.) मान करे, मानिनी ।

मानव-देव = का० कु०, ८६ ।
[सं० पु०] (सं.) मनुष्यों के देव ।

मानवी = का० कु०, १५१ ।
[वि०](हि.) स्त्री, मनु की कन्या का नाम ।

मानस = आं०, २८, ६५, ६८, ७७ । का० कु०,
[वि०] ६६, ६० । का०, ५०, ५४, १०१,
(सं.) १०५, ११३, १२०, १४७, २२१,
[सं० पु०] २२५, २८२, २८४, २८६, २६० ।
चि०, १४३, १५३, १७७ । झ०, ११,
१७, ६६, ७७ । ल०, ४०, ४३, ७१ ।
मन से उत्पन्न, मन से विचारा
(सं.) हुआ, हृदय, मान सरोवर, कामदेव ।
[क्रि० वि०] मन के द्वारा ।

मानस-जलधि = ल०, १० ।
[सं० पु०] (सं.) हृदय रूपी सागर, अगाध मन ।

मानसयुद्ध = का० कु०, ८ ।
[सं० पु०] अन्तस्तल में चलने वाला युद्ध । संकल्प
(सं.) और विकल्प की स्थिति ।

मानस-शतदल = का०, २२३ ।
[सं० पु०] मानसरोवर से उत्पन्न कमल । हृदय
(सं.) कमल ।

मानस-सर = का० कु०, ८३ ।
[सं० पु०] (सं.) मानसरोवर, हृदय रूपी तालाब ।

मानस-सागर = आं०, ८ ।
[सं० पु०] (सं) हृदय सागर ।

मानसिक = का० कु०, ८ । का०, १६६, २६६ ।
[वि०] प्रे०, २३ ।
(सं.) मनस से उत्पन्न, मन सम्बन्धी ।
मस्तिष्क सम्बन्धी ।

मानसी = का०, २६४ ।
[सं० स्त्री०] मन में ही की जानेवाली पूजा, विद्या
(सं.) देवी का एक नाम ।

मानहिं = चि०, ६६ ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) सम्मान को ।

मानहुं = चि०, १४३, १५४ ।
[अव्य] (ब्र.भा.) मानों, जनु ।

माना = आं०, २० । का०, १६०, १६१ ।
[सं० पु०] (सं.) एक प्रकार का मीठा, निर्यास ।
[क्रि०] 'मानना' क्रिया का भूत कालिक रूप,
(हि.) मान लिया । स्वीकार किया ।

मानि = चि०, ५० ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मानकर ।

मानिक = ल०, ७२ ७८, ।
[सं० पु०] (सं.) एक प्रकार का रत्न । एक व्यक्ति का नाम ।

मानिक-मदिरा = आं०, २१ ।
[सं० स्त्री०] मानिक के समान । लाल शराब । वह
(सं.) शराब जो मानिक पात्र में ढाली गई हो ।

मानिन = चि०, १५८।
[वि०] (ब्र.भा.) मानवती, मान करानेवाली। रूठनेवाली।

मानिहौं = चि०, ३३।
[क्रि० स०] (ब्र. भा.) मानूँगा। स्वीकार करूँगा।

मानी = चि०, १६४।
[वि०] (हि.) अहंकारी, सम्मानित, मनस्वी।

मानूँगा = क०, १८।
[क्रि० सं] (हि.) स्वीकार करूँगा।

माने = का०, १६२।
[अव्य०] (हि.) जैसे, गोया।

मानै = चि०, १०६।
[क्रि०स०] (ब्र. भा.) मान ले। जान ले। प्रेरणार्थक रूप।

मानो = का० कु०, ६७। का, २८, २६, ३०, १२१, २१६, २६१। चि०, ६१। प्रे०, १३। ल०, ६०, ६८।
[क्रि०] (हि.) स्वीकार करो; कल्पना करो।

मान्यो = चि०, ६६।
[क्रि०स०] (ब्र. भा.) मान लिया।

माप = का०, १०, १६।
[सं० स्त्री०] (हि.) मापने की क्रिया या भाव, नाप। नाप लेने वाली वस्तु।

माफ = चि०, १८३।
[वि०] (अ.) क्षमा।

माया = आं०, १८, २४, २५, ७६। क०, २७। का० कु०, १, २९, ४६। का०, २८, ३३, ६६, ७०, ७३, ७५, ८३, ८७, ६०, ६७, १०४, ११२, १२२, १२६, १२७, १६६, १७८, १८४, १८६, २०७, २०८, २२०, २२३, २२७, २३८, २४६, २६२, २६४। चि०, २६। ल०, १४, १५, ५८।
[सं० स्त्री०] (सं.) ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जिसमें समस्त सृष्टि भूली हुई है, सृष्टि के उत्पत्ति का मूल कारण।

मायाजाल = का०, ६३।
[सं० स्त्री०] (हि.) माया रूपी जाल, बंधन में डालने वाली माया।

माया-ममता = का०, ५७।
[सं० स्त्री०] (सं.) माया और ममता, माया-मोह।

मायामयी = भ्रु०, ३८।
[वि०] (सं.) माया से युक्त, माया से परिपूर्ण।

मायाराज्य = का०, २६५।
[सं० पु०] (सं.) माया का राज्य, माया की व्यापकता और उसका सब पर जमा हुआ प्रभाव।

मायारानी = का०, १५६।
[सं०स्त्री०] (हि.) मायारूपी रानी, सब पर शासन करनेवाली।

मायाविनी = का०, १५३, १६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) छल करने वाली नारी, जादूगरिनी।

माया-स्तूप-सा = ल०, ७६।
[सं०पु०] (सं.) माया के खम्भे के समान। मोहक किन्तु अस्थायी।

मार = ल०, ७१।
[सं० पु०] (सं.) कामदेव, विघ्न।

मारखाना = का० कु०, १०६। चि०, १०७।
[क्रि०] (हि.) किसी के द्वारा चोट या आघात पहुँचना, पीटा जाना।

मारग = चि०, १०५, १६४।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) रास्ता, पथ, मृगशिरा नक्षत्र, कस्तूरी।

मार-छबि = चि०, २२।
[सं० स्त्री०] (सं.) कामदेव की छवि या शोभा।

मारत = चि०, १८५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मारता है। मारना क्रिया का पूर्वकालिक रूप।

मारना = क०, १६।
[क्रि०] (हि.) प्राण लेना, वध करना, पीटना, पछाड़ना।

मारसों = चि०, ६५।
[वि०] (ब्र.भा.) कामदेव के समान। बहुत अधिक सुन्दर तथा मादक।

मारि = चि०, ५३, ६६, ६७।

[क्रि० स०] 'मारना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप,
(ब्र. भा.) मारकर। (सं०) कामदेव।

मारुत = का० कु०, १३, ३४, ११३। का०,
[सं० पु०] १२७। चि०, १५, २४, १८२।
(सं.) भ्रू०, २१।
वायु, पवन, समीर।

मारुत-वश = का०, ८।
[सं० पु०] (सं.) वायु के वशीभूत होकर, बतास के वश।

मारुत-संग = चि०, १७०।
[सं० पु०] (सं.) पवन के साथ।

मारे = का०, १२३। ल०, ७८।
[क्रि० स०] (हि.) 'मारना' क्रिया का पूर्णभूत कालिक रूप।

मारों = ल०, ४६।
[क्रि० स०] (हि.) मारना क्रिया का आज्ञार्थक रूप।

मार्ग = का० कु०, १४। का०, ४६, ४६, १०९,
[सं० पु०] १७०, १६२, १६३। प्रे०, १४, १८।
(सं.) म०, ३, ४।
रास्ता, पथ, मृगशिरा नक्षत्र, विष्णु।

मार्य्यादहुँ = चि०, ४८।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.)मर्य्यादा को। सदाचार तथा प्रतिष्ठा को।

माख्यो = चि०, ४२।
[क्रि० स०] मार डाला, मारना क्रिया का भूत-
(ब्र. भा.) कालिक रूप।

माल = का०, ६३, १६६। चि०, १४३, १६६।
[सं० पु०] ल०, २५।
(सं.) धन, सामान, क्रयविक्रय की वस्तुएँ, उत्तम सुस्वादु भोजन। माला।

मालति = चि०, ५, ५८।
[सं० स्त्री०] एक लता विशेष का नाम और उसका
(ब्र. भा.) फूल। चाँदनी रात्रि। जायफर।

मालतियाँ = आं०, ३६।
[सं० स्त्री०] (हि.) मालती का बहुवचन रूप। दे० 'मालति'।

मालती = आं०, ४८। चि०, ५५। भ्रू०, २४।
[सं० स्त्री०] प्रे०, ४। ल०, ५६।
(सं.) दे० 'मालति'।

मालती-कुञ्ज = प्रे०, ४।
[सं० पु०] मालती का कुंज या मालती लता से
(सं.) घिरा हुआ स्थान।

मालती-मुकुल= ल०, २७।
[सं० पु०](सं.) मालती की कली।

माला = आं०, १५, १६, ५१, ६०। क०, १३।
[सं०स्त्री०] का० कु०, १०, ३६, १०४। का०,
(सं.) १३, ६७, ११६, १२१, १६८। चि०,
१, १८, ३५, ५५, ५८, ५६, ७०,
१५४, १६०। भ्रू०, १७, २४, ५४।
प्रे०, २। ल०, ४५, ४७, ४८, ५६।
श्रेणी, अवली, हार, समूह।

मालाकवरी = प्रे०, ६।
[सं० स्त्री०] (हि.) कवरी नामक मृग का समूह।

मालाकार से = म०, २०।
[वि०] माला बनाने वाले के समान। हार
(हि.) बनाने वाले की तरह।

मालायें = आं०, ७७। का०, १३। म०, १६,
[सं० स्त्री०] २०।
(हि.) माला का बहुवचन, दे० 'माला'।

माला-सी = का०, ६८, २२५। भ्रू०, ७६।
[सं० स्त्री०] माला के समान। किसी का प्रिय बन
(हि.) जाने का भाव।

मालिका = भ्रू०, ३७।
[सं० स्त्री०] माला बनाने वाली स्त्री, मालिन। श्रेणी,
(सं.) एक आभूषण विशेष।

मालिका-सी = चि०, १०६।
[वि०] (सं.) मालिन के समान, श्रेणियों के सदृश।

मालिनि = चि०, १५०, १५५।
[सं०स्त्री०] माली की स्त्री। माला बनाने वाली
(ब्र.भा.) स्त्री।

मालिनि तरल-तरंग=चि०, ६२।
[सं० स्त्री०] मालिनी नामक नदी में उठने वाली
(ब्र. भा.) सुन्दर लहर।

मालिनी = चि०, ४५, ५६। प्रे०, २।
[सं०स्त्री०] वह नदी जिसके तट पर मेनका के

(सं.) गर्भ से शकुन्तला पैदा हुई थी। एक वर्णवृत्त।

मालिन्य = चि०, ४७।
[सं० पु०] (सं.) मलीनता, मैलापन, अन्धकार।

माली = का० कु०, २४'। चि०, १५३, १७७।
[सं० पु०] प्रे०, २।
(हि.) बाग के पौधों की देखभाल करने और सींचने वाला व्यक्ति, व्यक्ति वह जो पौधे लगाने और रक्षा करने में निपुण हो, एक जाति विशेष।

मालूम = म०, ४।
[वि०] (अ०) जाना हुआ। ज्ञात।

माह = चि०, १०, ४२।
[अव्य०] (व्र.भा.) मध्य, बीच। महीना।

माहि = चि०, २२, ३०, ३५, ४२, ४६, ४८, ४६, ५३, ५४, ५६, ५७, ५६, ६०, १४५, १४७, १४८, १५२, १५५, १५६, १५८, १५६, १६४, १७०, १८१।
[अव्य०] (व्र. भा.) दे० 'माहं'।

माहीं = चि०, ६६, १०७, १४५।
[अव्य] (व्र. भा.) दे० 'माह'।

मिटता = का०, १७५। प्रे०, १४, १७।
[क्रि०] मिटना क्रिया का सामान्य भूत कालिक रूप।
(हि.)

मिटना = का०, २५०। ल०, ४२।
[क्रि०] (हि.) नष्ट होना, न रह जाना।

मिटाती = क०, १७।
[क्रि०] 'मिटाना' क्रिया का सामान्य वर्तमान रूप।
(हि.)

मिटा देना = का० कु०, १४।
[क्रि०] (हि.) दे० 'मिटाना'।

मिटाना = का० कु०, ६७। का०, ५०। म०, ४।
[क्रि०] नष्ट कर देना, न रहने देना, खराब या चौपट करना।
(हि.)

मिटी = का०, ५१। प्रे०, १८।
[क्रि०] (हि.) मिटना क्रिया का भूतकालिक रूप।

मिट्टी = का० कु०, ११०, १२१। प्रे०, १७, १८।
[सं०स्त्री०]
(हि.) वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी तल पर प्रायः पाया जाता है, मृत शरीर। धूल

मिट्टी होना = का० कु०, ११०।
[मुहा०] (हि.) बरबाद हो जाना।

मिट्यो = चि०, ५४।
[क्रि०] 'मिटना' क्रिया का पूर्णभूत कालिक रूप,
(व्र. भा.) मिट गया।

मिठी = का० कु०, ४५।
[वि०] मधुरा, धीमी, मध्यम श्रेणी की,
(हि.) मद्धिम, प्रिय।

मिठी-मिठी = ल०, ७०।
[वि०] (हि.) धीमी-धीमी।

मिठौहैं = चि०, ५६।
[क्रि०] (व्र भा.) मीठा है।

मित्र = का० कु०, ३१, ४३, ४५। का०, १४,
[सं० पु०] ३६, ११४। चि०, ४२, ६२। प्रे०,
(सं.) ६, १०, २१।
सखा, दोस्त, वह जो सुखःदुख दोनों में समान रूप से सहायक हो।

मित्रता = प्रे०, ६।
[सं० स्त्री०] (सं.) मित्र होने का भाव, धर्म, मित्रत्व।

मित्ररूप = प्रे०, १०।
[सं०] (हि.) मित्र के रूप या वेष में।

मित्रवर = प्रे०, ६, १०।
[सं० पु०] (सं.) श्रेष्ठ या घनिष्ठ मित्र।

मित्रों = का०, ११४। प्रे०, २०।
[सं० पु०] (हि.) मित्र का बहुवचन।

मिथिलाधिप लली = का० कु०, १००।
[सं० स्त्री०] मिथिला देश के राजा की पुत्री,
(सं.) (जानकी)।

मिथ्या = आं०, १६। का० कु०, ८५। का०,
[वि०] १६६। चि०, १०३। ल०, ७८।
(सं.) असत्य, झूठ।

मिथ्या-बल = का०, २४०।
[सं० पु०] (सं.) वह शक्ति जो अस्थायी या नश्वर हो।

मिथ्याभाषी = क०, १०।
[वि०] (सं.) झूठ बोलने वाला।

मिलकर = आं०, ४२। का० कु०, ११, ३८।
[पूर्व० क्रि०] का०, १७६। ल०, ३५।
(हि.) 'मिलना' क्रिया का पूर्व कालिक रूप।

मिलके = का०, ११०, ११६।
[पूर्व० क्रि०](हि.) मिलकर।

मिलत = चि०, १६०।
[क्रि०]व्र.भा.) मिलने की क्रिया करना, मिलते हैं।

मिलता = आ०, ३१, ४४। का० कु०, ८०।
[क्रि०] का०, ६२, १२४, २२५, २७०।
(हि.) झ०, ११।
भेंट होना, प्राप्ति होना।

मिलती = आं०, ४८। क०, १७। का० कु०,
[क्रि० अ०] ३८।
(हि.) 'मिलना' क्रिया का सामान्य वर्तमान रूप।

मिलते = आं०, ४४। का०, १४६, १६३,
[क्रि०] २४५। ल०, ५०।
(हि.) दे० 'मिलना'।

मिलन = आं०, २७, ३७, ५१, ५६। का० कु०,
[सं० पु०] ४७,७५। का०, ८,३६,७३, ८२, ८५,
(हि.) ६१, ६२, १७६, २१८, २४५, २८६,
२६३। चि०, ८, २४, ५४, ६०,
१८१। झ०, ४५, ५६। ल०, १५, ४८।
संयोग, भेंट, साक्षात्कार।

मिलन-कथा = का०, १७७।
[सं० स्त्री०] वह कथा या वार्ता जिसका संबन्ध
(हि.) किसी के मिलन से हो। संयोग कहानी।

मिलना = आं०, १२, ६६। क०, २०। का०
[क्रि०] कु०, ७५, ८३, ६३। का०, ८, ३३,
(हि.) ४८, ५५, ७३, ८१, ८६, ११२,
१३६,१४६, १६६, २११, २१४, २१६,
२३०, २४३, २५४, २६५,२७२,२७३,
२७८, २८८। म०, १०। प्रे०, १०,
११, १५, १६, २४, २५, २६। झ०,
३०, ३६, ४०, ५३, ५६। ल०, ११,
१३, ३४, ४६।
जुटना, मिलकर एक होना। अलग-अलग पदार्थों या प्राणियों का एक होना, बीच का अन्तर मिट जाना, समान होना।

मिल्यो = चि०, १७०, १८०, १८४।
[क्रि०] (व्र. भा.) मिला, मिल गया।

मिला = क०, १५, ३०, ३१। का० ८४, ८७,
[क्रि०] १८८, १६०, १६४, १६६, १६६।
(हि.) झ०, ११। प्रे०, १६। ल०, १३, १८।
'मिलाना' क्रिया का पूर्ण भूत रूप।

मिलाई = चि०, ५८। ल०, ३४, ३५।
[सं० स्त्री०] मिलने का भाव या क्रिया, मिलाप
(हि.) करना।

मिलाओ = का० कु०, ४०।
[क्रि०] (हि.) 'मिलाप' क्रिया का रूप।

मिलाते = का०, १६२।
[क्रि० स०] (हि.) दे० 'मिलाना'।

मिलाना = का०, ६३।
[क्रि० स०] एक वस्तु को दूसरी में डालकर एक
(हि.) करना। सम्मिलित या मिश्रित करना।

मिलाने = आं०, १७, ५०। का०, ६२, १३६।
[क्रि०] प्रे०, १०। ल०, ३०, ३४।
(हि.) मिलन कराने के लिए।

मिलाप = म०, १८।
[सं० पु०] मिलने का क्रिया या भाव, मेल या
(हि.) सद्भाव होना।

मिला ली = चि०, ४६।
[क्रि०] (हि.) मिला लिया, एक में कर लिया।

मिलावत = चि०, १६७।
[क्रि०] (हि.) मिलाता है।

मिलिन्द = चि०, २२। झ०, २६।
[सं० पु०] (सं.) भौंरा, भ्रमर।

मिलि = चि०, ३६, ४२, ४७, ५४, ६३, ७१,
[क्रि०अ०] ७४, १४३, १४५, १५०, १८०,

(हि.) १८६।
मिलकर।

मिलित = आं०, १८। का०, १८१, २८६।
[वि०] चि०, ५, १८०।
(हि.) मिला हुआ, युक्त।

मिलिराज = चि०, ७१।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) सब राजा मिलकर।

मिलिब = चि०, १५६।
[क्रि०वि०] (ब्र.भा.) मिलने के लिए।

मिलो = का० कु०, ४२, ४६। का०, १२३,
[क्रि०] १२५। चि०, ७४, १६३। भ्रं०, ५२।
(हि.) ल०, ६०।
मिल गई।

मिले = आं०, ६३। क०, १४। का० कु०,
[क्रि०] ६३। का०, ४१, ७३, २१६, २६५,
(हि.) २७१, २७८। चि०, ५, ५८, ६२,
६७, १८१। प्रे०, २६। ल०, २७।
मिल गये या मिल चुके।

मिलेगा = क०,१४,२५। का०,१३३। चि०, १४,
[क्रि०] (हि.) ३४। भ्रं०,४६। प्रे०, २५। म०, ४।
मिलना क्रिया का सामान्य भविष्यत रूप।

मिश्र = का० कु०, १०७। का०, १०, ३९, ६४,
[सं० पु०] १३६, २०७, २४७, २७१। चि०, ११।
(हि.) ल०, ३२।
ब्राह्मणों का एक वर्ग मिश्र।

मिश्रित = का० कु०, ३६। का०, १४, १२६।
[वि०] चि०, २२। म०,।
(सं.) मिला हुआ।

मीच = का०कु०,१०। का०, ६९। चि०,९६।
[सं] (हि.) मृत्यु।

मीचे = का०, १२७, २२१।
[सं०] (हि.) 'मीच' का बहुवचन।

मीठ = का० कु, १०७।
[वि०] (हि.) मधुर।

मीठी = का० कु०, १०। का०, १५०, २११,
[वि०] २३५। भ्रं०, ३२। प्रे०, १६।
(हि.) मधुर। कोमल।

मीठी-चाल = का० कु०, ६६।
[सं० स्त्री०] (हि.) मंद गति।

मीठी-रसना = का०, १५२।
[सं० स्त्री०] (हि.) मधुर बोली।

मीड़ = ल०, २८।
[सं० पु०] (सं.) संगीत में स्वर बदलने का सुन्दर ढंग।

मीड़ीं = भ्रं०, ३२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मीड़ का बहुवचन।

मीत = का० कु०, ४६, १५६। पि०, १४,
[सं० पु०] १४१, १८५, १८६। ल०, ७६।
(सं.) मित्र। दोस्त। सखा।

मीन = का०, १६७। चि०, २३, १८६।
[सं० पु०] भ्रं०, ४२, ८४।
(सं.) मछली। बारह राशियों में से अन्तिम।

मीनार = म०, १६।
[सं० स्त्री०] बहुत ऊँचा या गोलाकार स्तम्भ।
(अ०) लाठ या धरहरा।

मुंदती = आं०, ४६ का०, २६३।
[क्रि०] (हि.) मुँद जाती, या मूँद लेती।

मुँदते = का०, ११६।
[क्रि०] (हि.) बन्द होते।

मुकता = चि०, ७०, १४३, १८१।
[सं० पु०] (हि.) मोती। मुक्ता।

मुक्त = क०, २१, ३१। का०, ५१, १८०,
[वि०] २१६, २८३। भ्रं०, २४, ६३।
(सं.) म०, ५।
जिसे मुक्ति मिल गई हो। बंधन से छूटा हुआ। स्वतंत्र, स्वच्छन्द।

मुक्त कंठ-से = का० कु०, १२४।
[वि०] खुली जबान से, बिना किसी संकोच
(सं.) या दबाव के दृढ़ता पूर्वक कही हुई।

मुक्ता = आं० २३, ३२, ३५। का०, २२५।
[सं० स्त्री०] चि०, २२। भ्रं०, ५१, ल०, ४८।
(सं.) मोती।

मुक्ता गण = झ०, २२ ।
[सं० पु०] (सं.) मोती का समूह ।
मुक्ता-फल-शालिनी = म०, १६ ।
[वि०] (सं.) मोतियों के समान फल वाली ।
मुक्तामय झ०, ४२ ।
[क्रि०] (हि) मोती से भरा हुआ ।
मुक्ता-माल = चि०, ३३ ।
[सं० पु०] (सं.) मोती की माला ।
मुक्ति = का०, १५७, १८०, २४६, २७० ।
[सं० स्त्री०] ल०, १३ ।
(सं.) मोक्ष ।
मुक्ति-द्वार = का०, १७० ।
[सं ०पु०] (सं.) मोक्ष का दरवाजा ।
मुकुट = आं०, ६७ । चि०, ७१, ७५ । ल०,
[सं० पु०] ७७, ७८ ।
(सं.) देवताओं, राजाओं आदि के शिर पर रहने वाला एक प्रसिद्ध शिरोभूषण ।
मुकुट-मणिन = चि०, ६७ ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) मुकुट की मणियाँ । सर्व श्रेष्ठ ।
मुकुट वर = चि०, ५५ ।
[सं० पु०] (सं.) श्रेष्ठ मुकुट । सुन्दर ताज ।
मुकुट-सा = का०, १६८ ।
[वि०] (हि.) मुकुट के समान ।
मुकुल = का० कु०, १३ । का०, २६३ । चि०,
[सं० पु०] १८० । झ०, ६४ । ल०, १६, ३५, ३७, ५६ ।
(सं.) पुष्प । शरीर । आत्मा ।
मुकुल-मन = का० कु०, १५ । झ०, १६ ।
[सं० पु०] (सं.) मन रूपी कली ।
मुकुल-माल = झ०, ६६ ।
[सं० पु०] (सं.) कलियों की माला ।
मुकुल-सदृश = का०, १६८ ।
[वि०] (सं.) अधखिले फूल के समान ।
मुकुल-सा = का०, ६० ।
[वि०] (हि.) अधखिले फूल के समान ।
मुकुलित = का०, १६६, २१७ । चि०, १४७ ।

मुकुलों = आँ०, २६ । का०, २६१ ।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'मुकुल' । (बहुवचन) ।
[वि०] झ०, ८५ ।
(सं.) अधखिली ।
मुकुर = का०, ४३, ४७, १३१, १४७, १७६,
[सं० पु०] २८४ । ल०, २६ ।
(सं) दर्पण । शीशा । कली ।
मुकुर-अंचल = ल०, ७६ ।
[सं० पु०] (सं.) अंचल रूपी शीशा ।
मुख = आं०, २१, ४६, ६८ । का० कु०, ८,
[सं० पु०] १२, १११ । का०, १०, १२, २३,
(सं.) ४५, ४६, ४७, ११४, १२१, १३२, १३४, १३६, १४०, १६६, १७२, १८३, १८४, १६६, २३३, २३८, २७७ । चि०, २, १४, २२, ४६, ५६, ५८, ६०, ६१, ६३, ६४, ६७, ७०, ७३, ७४, ६८, १०५, १३३, १५८, १७४, १७८, १८८ । झ०, ४६ । प्रे०, १०, १६, १८ । ल०, ४६, ६६ । मुँह । आनन ।
मुख-कंज = चि०, १४६ ।
[सं० पु०] (सं.) मुख रूपी कमल ।
मुख-कमल = आं०, २३ ।
[सं० पु०] (हि.) मुख रूपी कमल ।
मुख-चन्द्र = आं०, २७, ४१ । चि०, ४६, १७६ ।
[सं० पु०] ल०, २६ ।
(हि.) मुख रूपी चन्द्र ।
मुख-चन्द्र-विभा = का० कु०, ५ । झ०, ५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) मुख रूपी चन्द्रमा का प्रकाश ।
मुखपर = का०, २५६ ।
[सं० पु०] (हि.) अधिकरण कारक में 'मुख' ।
मुख फेरि = चि०, ६४ ।
[पूर्व०क्रि०] मुँह फेर कर, विरोधी भाव प्रदर्शित
(ब्र. भा.) करके ।
मुखमंडल = का० कु०, १०८ । का०, १२६ ।
प्रे० ४ ।

[सं० पु०] (सं.) मुखाकृति।

मुखर = का०, २१६, २१७।
[वि०] (सं.) ध्वनियुक्त।

मुखरित = आं०, २६। का० कु०, ८६। का०, ८, ११, १६, १८२, २५२, २७८, २६०।
[वि०] (सं.) ध्वनित, स्वरयुक्त।

मुख-सदृश = का० कु०, १०८।
[वि०] (सं.) मुख के समान।

मुख सिंह-बाल = का० कु०, १०५।
[सं० पु०] (सं.) सिंह के बालक के सदृश मुख।

मुखाकृति = चि०, ७३।
[सं० स्त्री०] (सं.) मुख मंडल, चेहरा।

मुख्य = का० कु०, ६३।
[वि०] (सं.) प्रधान।

मुगल = म०, ३।
[सं० पु०] (अ.) यवनों की एक जाति विशेष जिसने भारत पर राज्य किया था तथा जो मंगोलिया से आये थे।

मुगल-अदृष्टाकाश-मध्य = का० कु०, १०८।
[सं. पु] (सं.) मुगलों के भाग्यरूपी आकाश में।

मुगलमहीपत = का० कु०, १०८।
[सं० पु०] (हि.) मुगलों के राजा।

मुगलवाहिनी = म०, २२।
[सं.० स्त्री] (हि.) मुगलों की सेना।

मुगल-साम्राज्य = का० कु०, १०८।
[सं०पु०] (हि.) मुगलों का तथा उनके आधीन राज्य।

मुग्ध से = का० कु०, ६८।
[वि०] (सं.) मोहित के समान।

मुझ = क०, २५। का० कु०, ४२। का०, १४८, १५४, १५८, १८४, १९७। झ०, ५२।
[सर्व०] (हि.) मैं का एक रूप।

मुझको = का०, १६, २५, २८। का० कु०, ५५, ८३। का०, १५४, १६१, १६२, १८६, १६७, १६८, २१८, २१६, २३०, २४२, २४३, २४४, २५६, २८७। प्रे०, १६, २०, २२। म०, १६, १८। ल०, ३४, ३५, ३६, ४५, ५६, ६६।
(मैं) 'कर्म कारक' में

मुझ पर = का० कु०, ७५। का०, १४८, २३६।
[सर्व०] (हि.) मेरे पर।

मुझमें = क०, २७। का०, ८४, १६१।
[सर्व०] (हि.) अधिकरण में (मैं)।

मुझसे = आं०, २५। क०, २५। का०, १६८, २२४, २३७, २४३। ल०, ३८।
[सर्व०] (हि.) अधिकरण 'करण' में (मैं)।

मुझे = क०, १८, १६। का०, ८५, ८६, १६०, १६४, १६६, १६८, २२६, २२८, २४३, २५७, २६१, २८६। प्रे०, १५, २१, २२। ल०, ३८, ३६, ६६, ७८।
दे० मुझको।

मुड़ने = आं०, ४६। का०, १८६, २३६।
[क्रि०] (हि.) मोड़ से घूमने की क्रिया।

मुदभरि = चि०, ५।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्रसन्न होकर, मोद में भर कर।

मुदा = चि०, ५०, १६८।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) प्रसन्नता।

मुदित = का० कु०, ३३, ३६, ४३। चि०, २४, ४५, ४६, १४३, १४५, १४६।
[वि०] (सं.) प्रसन्न।

मुद्रित = का०, १३२, २१८।
[वि०] (सं.) मुद्रा से युक्त। मुद्रांकित।

मुनि-मन = चि०, ५५, ५६, १६३।
[सं० पु०] (सं.) ऋषि का मन।

मुनिवर = चि०, ५८।
[सं० पु०] (सं.) श्रेष्ठऋषि।

मुमूर्षु = का०, २०२। ल०, ७७।
[वि०] (सं.) मुमुक्षु। मुर्छित।

मुमूर्षु-सा = का०, २०६।
[वि०] (हि.) मुमुक्षु के सदृश। मुर्छित सा।

मुर = चि०, १३६।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) दे० मूल। (क्रि०) मुड़कर।

मुरझाकर = का०, १७५।
[पूर्वक्रि०] (हि.) कुम्हला कर।
मुरझाना = का०, १७५। झ०, ३३। प्रे०, ३।
[क्रि०] ल०, ११।
(हि.) कुम्हलाना।
मुरझाहिं = चि०, १५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सूखते हैं।
मुरझि = चि०, २४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मुरझा कर।
मुरली = आं०, २६, २६, ३१। का०, ७७,
[सं० स्त्री०] २६०, २६३। झ०, २८, २५।
(सं.) वंशी।
मरि = चि०, ५६, १८८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मुड़कर।
मुसक्या = का०, २८७। ल०, ११।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) मुसकाकर।
मुसक्यान = का० कु०, ४३। का०, २६, ४७, ८७,
[सं० स्त्री०] १३०। चि०; ५६, ७०, १८८।
(हि.) ल०, ७६।
मुसकराहट।
मुस्क्याय = झ०, ४८।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) मुसकरा कर।
मुसम्याती = आं०, १६, १७, ३५ ६४, का०, ३६,
[क्रि०] १२८, १७८, २३६, २६४।
(ब्र.भा.) मुस्काती।
मुसक्यानि = का०, २८१।
[सं०] (ब्र.भा.) मुस्कराहट।
मुसक्याने = चि०, ११।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मुस्कराये।
मुसक्यायि = चि०, ६१।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) मुसकरा कर।
मुस्करा उठो = का०, १४३। आ० २७।
[क्रि०] (हि.) मुसकराई।
मुस्कान = ल०, ६०।
[सं० स्त्री०] (हि.) मुसकराहट।
मुँह = आ०, २७, ७३, ७७, का०, कु०, ७८।
[सं० पु०] का०, २४३। चि०, ३६। झ०, ३६
(हि.) प्रे०, ६। ल०, ५१।
मुख, आनन।
मूल = का० कु०, ४५। का०, ५३, ५७, ७२,
[सं० स्त्री०] ७६, ६२, ९४, १३३, २४४, २७२।
(सं.) जड़, सोर।
मूलों = का० कु०, ४५।
[सं० स्त्री०] (हि.) मूल का बहुवचन। दे० मूल।
मूल्य = आ०, ६२। क०, २०, २२। का०,
[सं० पु०] कु०, ८६ झ०, ७१।
(सं.) मोल, कीमत, महत्ता, विशेषता।
मूषक हूँ को = चि०, ७२।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) चूहे को भी।
मूक = झ०, २६। ल०, ७३।
[वि०] (सं.) गूँगा।
मूढ़ = का०, २७। का० कु०, ५। चि०, ६६,
[वि०] १५५।
(सं.) मूर्ख, जड़।
मूढ़ मति = चि०, १७६।
[सं० स्त्री०] (हि.) मूर्ख, मतिहीन।
मूदैं = चि०, १८१।
[क्रि०] (ब्र. भा.) बंद करे, आँख बंद करे।
मूरख = क०, १६। का०, १७० चि०, ८, १४,
[वि०] ६६, १८४। प्रे०, ६।
(हि.) मूर्ख, बुद्धि-हीन (दे० मूर्ख।)
मूरि = चि०, ३४।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) मूल, जड़, सोर।
मूरति = चि०, ६६, ७२, १७४, १८६।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) मूर्ति।
मूर्त = का०, १६ २८८,।
[वि०] (सं.) मूर्ति धारी। प्रकट।
मूर्ति = आं०, ३८। का० कु०, २२, २३,
[सं० स्त्री०] ३०, ३२, १२१। का०, ४७, ५१,
(स्त्री.) ५३, १०२। चि० १३६, १४१, १४४,
१५७,। प्रे०, १७। ल०, ५३।

प्रतिमा, काष्ट, प्रस्तर या किसी धातु की बनी आकृति।

मूर्तिमती = का०, १६६।
[वि०] (सं.) साकार, सविग्रह।

मूर्तिमान = का०, १५६। ल०, ७५।
[वि०] (हि.) साकार, मूर्तिमय।

मूर्तियाँ = का० कु०, ११६।
[सं०स्त्री०] (हि.) मूर्ति का 'बहुवचन'।

मूर्खता = प्रे०, २४।
[सं० स्त्री०] (सं.) जड़ता, मूढ़ता।

मूर्च्छित = का०, १०, ६६, १६६, १८०। चि०, ४२। ल०, ३५, ४३।
[वि०] (सं.) बेहोश।

मूर्च्छना = का०, ११, २६२। झ०, ५७।
[सं०स्त्री०] (सं.) संगीत में आरोहवरोह की संधि विशेष।

मृग = का०, ११८, १४१, १४४, १७६, २८४। चि०, ६०, ६७, १६६। ल०, ३३, ५६।
[सं० पु०] (सं.) हरिण। मृगशिरा नक्षत्र। पुरुष के चार भेदों में से एक।

मृगछौनाहिं = चि० ६६, ७०।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) हरिण के बच्चे।

मृगतृष्णा = चि०, २७०।
[सं० स्त्री०] (सं.) जल की लहरों की वह भ्रांति जो कभी-कभी रेगिस्तान में कड़ी धूप पड़ने पर होती है और जिसे जल समझ कर मृग बहुत दूर तक दौड़ता रहता है।

मृगन = चि०, ५६।
[सं० पु०] ब्र.भा. मृग का बहुवचन।

मृगनाभि = चि०, १६६।
[सं० पु०] (सं.) मृग नाभि। कस्तूरी।

मृग-मन = झ०, ४३।
[सं० पु०] (सं.) मन रूपी मृग।

मृग-मरीचिका-आशा = झ०, ४६।
[वि०] (हि.) भ्रम के कारण रेत कणों को जल समझने वाले मृगों की आशा के समान। झूठी आशा।

मृगया = क०, १३। का०, १३६, १४१, १४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) चि०, ६६, १८५। म०, १२। अहेर, शिकार।

मृगमरीचिका = का० कु०, १२।
[सं०स्त्री०] (सं.) मृगतृष्णा।

मृगशावक = का० कु०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) हरिण के बच्चे।

मृगी = का० कु०, ६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) मृगा की स्त्री, हरिणी।

मृणाल = का० कु०, ४१।
[सं० पु०] (सं.) कमल-नाल। कमल का डंठल।

मृणालवाली = का० कु०, ३६।
[वि०] (हि.) मृणालि, मृणालमयी।

मृत = ल०, ५७।
[वि०] (सं.) मरा हुआ। जिसे मरे कुछ समय हुआ हो।

मृति = का०, २३५।
[सं०स्त्री०] (सं.) देखो 'मृत्यु'।

मृत्यका = चि०, १०१।
[सं०स्त्री०] (सं.) मिट्टी।

मृत्यु = आं०, ५०, ५४, ७६। का० कु०, ११६, १२०। का०, १७, १८, २६८। ल०, ५३, ५८, ७०।
[सं० स्त्री०] (सं.) शरीर से प्राण निकलना। मरना, मौत।

मृत्युसदृश = का०, २०।
[वि०] (सं.) मरण के समान। अत्यधिक दुःखद।

मृत्युसीमा = का०, १६१।
[वि०] (हि.) मृत्यु का घेरा। मौत की सीमा।

मृदङ्ग = का० कु०, ६३। का०, २६३। चि०, ११। ल०, ४८, ५६।
[सं० पु०] (सं.) एक प्रकार का ढोल के समान प्रसिद्ध पुराना बाजा।

मृदु = आं०, ४७। का०, २४, २६, ३८,

[वि०] ७३, ६०, १३०, १४५, १५२, १५७,
(सं.) २२२, २७८, २६३ । चि०, ४५, ५९ ।
ल०, ४२ ।
कोमल, मुलायम ।

मृदुगन्ध = ल०, ५६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुवास । सुगन्ध ।

मृदुगात = ल०, ४५ ।
[सं० पु०] (सं.) कोमल शरीर ।

मृदुतम = का०, २६३ ।
[वि०] (सं.) कोमल तम । सबसे अधिक कोमल ।

मृदुल = आं०, ८, ११, २६, ७५ । का०, ३६,
[वि०] ४६, ६७, १४६, १५१, २४४ । चि०,
(सं.) २६ । ल०, १०, ४४ ।
कोमल । मुलायम । मनोहर ।

मृदुल-कलिका-नव = चि०, ५७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) नवीन और कोमल कली ।

मृदुलता = का०, ११२ ।
[सं० पु०] (सं.) कोमलता । मुलायमियत ।

मृदुल-फेन = का०, १५१ ।
[सं० पु०] (सं.) हल्की सी गाज ।

मृदुहास = भ्र०, ६६ ।
[सं० पु०] (हि.) मुस्कुराहट ।

मृनाल-सी = चि०, ५७ ।
[वि०] हि.) मृणाल की तरह । कमल के डंठल के समान ।

मृषा = का०, २७१ ।
[अ०] (सं.) झूठ मूठ, व्यर्थ ।

में = आं०, १, १२, २० । कु०, २०, २८,
[अव्यय] ३०, ३२ । चि०, १४० । ल०,
(हि.) ६६, (९ बार) ६७, ६६, ७० ।
अधिकरण कारक का चिन्ह ।

मेघ = का० कु०, १२४ । का०, १८६ । चि०,
[सं० पु०] ११, ३४ । भ्र०, ४० । प्रे०, १२ ।
(सं.) ल०, ४३ ।
बादल । घन । मीरद ।

मेघखण्ड = प्रे०, १२ ।
[सं० पु०] (सं.) बादल के छोटे टुकड़े ।

मेघ-गर्जन-मृदङ्ग = का० कु०, १२४ ।
[सं० पु०] (सं) बादलों के गर्जन रूपी मृदङ्ग ।

मेघ-पट = ल०, २७ ।
[सं० पु०] (सं.) बादलों का पर्दा ।

मेघ-बन = का०, ४६ ।
[सं० पु०] (सं) मेघों का समूह । (क्रि०) मेघ बन कर ।

मेघ-वाहन = का० कु०, १३ ।
[सं०पु०] ब्र. भा.) मेघ को ढोनेवाली । हवा ।

मेघमाला = का० कु०, ५२, १०० । भ्र०, ४६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) बादलों का समूह ।

मेधा = का०, १११ ।
[स० स्त्री०] (सं.) मस्तिष्क । बुद्धि ।

मेघाच्छन्न = का० कु०, ६८ ।
[वि०] (सं.) बादलों से घिरा हुआ ।

मेघाडम्बर = का०, ७५ ।
[सं० पु०] (सं.) बादलों का आडम्बर ।

मेटृत = चि०, १५० ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मिटा देता है ।

मेटहुँ = चि०, ५० ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) मिटा दो ।

मेदिनी = भ्र०, ५६ ।
[सं० स्त्री०] धरती, पृथ्वी, यात्रियों का वह दल जो
(सं.) झंडा लेकर किसी तीर्थ या देव-स्थान
को जाता है ।

मेनका चि०, ६२ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) एक अप्सरा का नाम ।

मेरा = आं०, सत्तरह बार । क०, छः बार ।
का०, कु०, सात बार । का०, एकता-
लिसबार । चि०, पाँच बार । भ्र०,
एक बार । म०, एक बार । ल०,
नव बार ।

मेरी = आ०, तीन बार। क०, दो बार। का० कु०, दो बार। का०, सोलह बार। चि०, एक बार। ल०, सात बार।

मेरे = ल०, चार बार।
[सर्व०] (हि.) 'मैं' का सम्बन्ध कारक।

मेल = आ०, ५०। का० कु०, १०। का०, ८१, २२६। चि०, १।
[सं० पु०] (सं०) मिलने की क्रिया या भाव।

मेला = भ्र०, ३२। ल०, १४।
[सं० पु०] (हि.) उत्सव त्यौहार आदि के समय होने वाला बहुत से लोगों का जमावड़ा। भीड़।

मेली = चि०, ५६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) पहना दी।

मेवाड़ = म०, १२, ल०, ५७।
[सं० पु०] (हि.) राजपूतों की वीरता का केन्द्र जो राजस्थान में है।

मेवाड़-गगन = म०, १०।
[सं० पु०] (हि.) मेवाड़ रूपी आकाश।

मेषों = का०, ४६।
[सं० पु०] (सं.) मेढ़ों।

मैं = क०, १७, १८, २२, २३, २५, २८, ३०। का०, ४०, ७१, ६३, ६४, ६८, ६६, १००, १०३, १३१, १४४, १५०, १६६, १७६, १८३, १८४, २११, २१२, २१६, २१७, २१८, २१६, २२०, २२७, २२८, २३७, २३८, २३६, २४०, २४३। म०, १५, २१, २३। ल०, १०, ११, ६६, ६७, ६८, ७०।
[सर्व०] (हि.) पुरुष वाचक सर्वनाम का उत्तम पुरुष।

मैदान = का० कु०, १२, ६६, प्रे०, १५।
[सं० पु०] (हि.) खेत, क्षेत्र। लम्बा-चौड़ा भूमि भाग।

मैंने = क०, ११, २१, २२। का०, १२७, १४६, १८६, १६१, १६६, १६७, १६६, २२३। ल०, ६७।
[सर्व०] (हि.) देखो, 'मैं'।

मोचत = चि०, १७६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दूर करता है। नाश करता है।

मोचहु = चि०, ५०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दूर करो।

मोचै = चि०, १०६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दूर करे।

मोड़ = चि०, १७८।
[सं० पु०] (हि.) चौराहा। जहाँ से मुड़ा जाय।

मोड़ना = का०, २४३।
[क्रि] (हि.) घुसाना।

मोड़ोगे = का०, १३३।
[क्रि०] (हि.) झुका दोगे।

मोती = आ०, २३, ६७, ७७। का०, कु०, ३६, ४३, १२६। का०, १२६, १७८, १८४। चि०, ७०, ७५, १७२। भ्र०, ३१, ७६। ल०, १८, ३५।
[सं० पु०] (सं.) समुद्री सीपी से निकलने वाला एक रत्न।

मोती मस्जिद = का० कु०, १०८।
[सं० स्त्री] (अ०) दिल्ली की एक प्रसिद्ध मस्जिद।

मोते = चि०, ४६।
[सर्व०] (ब्र.भा.) मुझसे।

मोद = का० कु०, २६, ४६। का०, ४७। चि०, २२, ३८, ६०, ६२, १०६, १४०, १५०, १५४, १६४, १६५, १६७, १७१, १७३। भ्र०, ८१।
[सं० पु०] (सं.) प्रसन्नता, आनन्द।

मोद भरना = का० कु०, १०६।
[क्रि०] (हि.) आनन्दित करना।

मोदभरी = चि०, १०१।
[वि०] (ब्र. भा.) प्रसन्नता से युक्त, प्रसन्न।

मोदभरे = चि०, १६५।
[वि०] (ब्र. भा.) आनन्दित।

मोदभार = का० कु०, ४८।
[वि०] (सं.) प्रसन्नता का भार। आनन्दयुक्त।

मोदमय = का० कु०, १०।
[वि०] (हि.) आनन्दमय।

मोद-माते = चि०, १०१।
[वि०] (ब्र. भा.) आनन्द में विह्वल।

मोम = का०, ६८।
[सं० पु०] एक प्रकार का वह चिकना पदार्थ जिससे
(हि.) शहद का छत्ता बनता है।

मोर = का० कु०, ५७। चि०, ५७।
[सं० पु०] (हि) पक्षी विशेष। (सर्व०) मेरा (ब्र. भा.)

मोल = का०, १६६, २३७।
[सं० पु०] (हि.) मूल्य, कीमत, विशेषता।

मोह = का० कु०, ११५। का०, ७१, ८३,
[सं० पु०] १४५, १६२। चि०, १४, १४३,
(सं.) १८१। भ्रं०, ४८, ५४, ८६। प्रे०,
१६, १७। ल०, ३५।
समस्त दुखों का मूल। भ्रांति, प्रेम।

मोह-जलद = का०, १५६।
[सं० पु०] मोह रूपी मेघ, मोह की गहनता का
(सं.) भाव।

मोहत = चि०, ७०, ६३।
[क्रि०] (ब्र.भा.) मुग्ध करता है।

मोहति = चि०, ५०।
[क्रि०] (ब्र.भा.) मोहती है।

मोहते = चि०, ३६।
[क्रि०] ब्र.भा.) मुग्ध होते हैं या करते हैं।

मोहन = का० कु०, ७८, ७६, १११। चि०,
[वि०] (ब्र. भा.) १५६, १८१। भ्रं०, ११, ५५, ६६।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) मुग्ध करने वाला, कृष्ण।

मोहना = का० कु०, १११।
[वि०](ब्र. भा.) 'मोहक'।

मोहनी = का० कु०, ११४।
[वि०](ब्र.भा.) मुग्धकारिणी।

मोहमयी = आं०, १२। का०, ६६। १८६।
[वि०] (सं.) मोहने वाली, मुग्धकारिणी, मोहक।

मोह-मुग्ध = का०, १८।
[वि०] (सं.) मोह द्वारा मोहित।

मोहिं = चि०, ३०, ४६, ५०, ६१, ६८, ७४।
[सर्व०] (ब्र.भा.) मुझको।

मोहित = आं०, १५। का० कु०, १३।
[वि०] (सं.) मुग्ध।

मोहिनि-सी = का०, ६५।
[वि०] (हि.) मुग्धकारिणी के सदृश।

मौक्तिका हार = चि०, ७५।
[सं० पु०] (सं.) मोतियों की माला।

मौज = का० कु०, १७, ३७। चि०, १४,
[सं० स्त्री०] १४३।
(अ०) लहर-तरंग, उमंग।

मौजें = चि , ६५।
[सं० स्त्री०] (अ.) आनन्द। मन की उमंगें।

मौन = का० कु०, ७४। का०, १०, १८, २६,
(वि) ३०, ४५, ५१, ८१, २३०, २३८,
(सं.) २४५। चि०, १६७। भ्रं०, २८, ४५,
४८। ल०, ११, ३५ ३६, ३८, ५८।
चुपचाप। नीरव।

मौहें = चि०, ११, ३६, ५५, ५६, १६३,
[क्रि०] १५३।
(ब्र. भा.) मोहित करता है।

म्यान = का० कु०, ४५।
[सं० स्त्री०] (हि.) तलवार रखने का खाना।

म्यानते = चि०, ६४।
[सं० स्त्री०] म्यान से या तलवार रखने की
(ब्र. भा.) खोली से।

म्लेच्छतम = चि०, ६६।
[सं० पु०] गन्दे यवन। महा अनार्य। वह जो
(सं.) आर्य धर्म या आर्य भाषा का द्रोही हो।

य

यंत्र = का०, १६३।
[सं० पु०] (सं.) कल। मशीन। जंतर।
यंत्रों = का० १९९।
[सं० पु०] (सं.) यंत्र का बहुवचन।
यक्ष = भ० ७६।
[सं० पु०] कुबेर की निधियों के रक्षक। एक देवता।
(सं.) कुबेर।
यजन = का० १३, ३१, ५६, ११४।
[सं० पु०] (सं.) यज्ञ करना।
यज्ञ = क० ११, ३१। का० १३, ३१, १०९, ११२, ११४, ११६, १२९, १३२, २४०।
[सं० पु०] (सं.) हवन करने का एक धार्मिक कृत्य।
यज्ञ-कार्य = क० २३।
[सं० पु०] (सं.) हवन का कार्य।
यज्ञ-प्रज्वलित = चि० ६१।
[सं० पु०] (सं.) हवन की प्रज्वलित अग्नि। होता हुआ यज्ञ।
यज्ञ-पुरोहित = का० २०१।
[सं० पु०] (सं.) हवन कराने वाला। कर्मकांडी।
यज्ञ-पुरुष = का० १३२।
[सं० पु०] (सं.) विष्णु।
यज्ञ-भूमि = चि० ६०।
[सं० स्त्री०] (सं.) यज्ञ क्षेत्र, वह स्थान जहाँ पर यज्ञ होता है।
यतन = चि० ७४।
[सं०पु०] (व्र.भा.) दे० यत्न।
यत्न = चि० ४७। भ० ७३। प्रे० २०।
[सं० पु०] (सं.) कोशिश, उद्योग, तदबीर।
यत्र-तत्र = प्रे० २०।
[अव्य०] (सं.) यहाँ वहाँ।
यथा = चि० ६२, । ७० म० १।
[अव्य०] (सं.) जिस तरह, जैसे।
यथातथ्य = का० कु० ८१।
[अव्य०] ज्यों का त्यों, जैसा हो ठीक उसी के अनुसार, (सं.) यथा वैसा।
यथार्थ = भ० ४१।
[अव्य०] (सं.) ठीक। उचित। सत्य। जैसा है वैसा।
यथाविहित = प्रे० ६।
[वि०] (सं.) नियमों के अनुसार जिसका विधान किया गया हो। नियमों के अनुसार जो उचित या ठीक हो।
यदपि = चि० ३०, ३६, ४१, १७१। प्रे० ६।
[अव्य०] (व्र. भा.) देखिए 'यद्यपि'।
यद्यपि = चि० ७०, ९९। म० ८।
[अव्य०] (सं.) यदि ऐसा है। अगरचे। गो कि।
यदि = आ० ४५। क० ११, १५, १८, २२, २७, २९। का० कु०, ७५। का० ८१, १२५, १२९, १४७, १६४, १९३, २२६। चि० ९९। प्रे० ९। म० ४, १४।
[अव्य०] (सं.) अगर, जो।
यम = ल० ५१।
[सं० पु०] (सं.) इन्द्रियों को वश में रखना। निग्रह। यमराज (मृत्यु के बाद कर्मानुसार दण्ड की व्यवस्था करनेवाला हिन्दुओं का एक देवता—धर्मराज।)
यमन = चि० ६५।
[सं०पु०] (हि.) यवन। मुसलमान।
यमन-राज = चि० ६३।
[सं०पु०] (हि.) यवनराज, मुलमानों का राजा।
यमुना = ल० ७२।
[सं० स्त्री०] (सं.) उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी। यम की बहन।
यमुना-कूल = का० कु० १११।
[सं० पु०] (सं.) यमुना नदी का किनारा।
यमुने = का० कु० १२५।
[सं०पु०] (सं.) हे यमुना।
यवन = का० कु० १२०, १२१, १२२। चि० ६५। म० ५, ७, ९, १०, १२।
[सं०पु०] (सं.) यूनान देश का निवासी। मुसलमान।
यवन-चमूनायक = म० ६।

[सं०पु०] (सं.) मुसलमानी सेना का सेनापति।
यवनन के = चि० ६७।
[सं०पु०](ब्र भा) मुसलमानों के।
यवन-वीर = म० ६, ७।
[सं०पु०] वीर मुसलमान। यवन सेना के सरदारों
(सं.) के लिए संबोधन।
यवनिका = का० २८।
[सं०स्त्री०] (सं.) नाटक का परदा।
यवनी-गण = म० १२।
[सं०पु०] (हि.) यवन जाति की स्त्रियों का समूह।
यवनों = ल० ५३।
[सं०पु०] (हि.) मुसलमानों।
यश = का० कु० ६८। का० १७१, १८४।
[सं० पु०] चि० ४३, १४९। ल० १३।
(हि.) बड़ाई। प्रशंसा। ख्याति। कीर्ति।
यस = चि० ३३।
[सं०पु०] (ब्र भा.) देखिए यश।
यह = आं०, पृष्ट ३६ से ७४ तक १४ बार।
[सर्व०] क०, पृष्ट ९ से ३२ तक १९ बार। का०
(हि.) कु०, पृष्ट ३ से ६७ तक ११ बार। का०
१३ पृष्ट से २९० तक १०६ बार।
चि०, पृष्ट ८ से १८४ तक २८ बार।
झ० १६, ३७, ५०, ५७। ल०, पृष्ट
२० से ७९ तक १४ बार।
'इस' का एक रूप।
यहाँ = क०, ९, १५ १९, २१, २६। का०,
[क्रि० वि०] ५२, ५७, ८१, १५०, १६६, १७२,
(हि.) १७६, १८३ १८४, १८६, १९०, १९२,
१६५, १९९, २३८, २३९, २५८,
२६४, २६५, २६६, २६७, २६८,
२६९, २७०, २७१, २७२, २८६,
२८७, २८८। चि०, १७६। म०, ३,
१०, ११। ल०, ७२।
इस स्थान पर। इस जगह पर।
यहि = चि० १, १५ ३३, ४८, ५४. ५६।
[अव्य०](ब्र.भा.) यही। इसी।
यहिरे मन = का० कु० २२। चि० १८४।
[अव्य०](ब्र.भा.) हे मन। हे मन यहीं।
यहीं = म० ४। ल० १३।
[क्रि०वि०] (हि.) यहां ही। इसी स्थान पर ही।
यही = क० १४, १९, २६। का० कु० २, ७,
[सर्व०] ५०। का० २६, ५३, ५६, ८५, १०५,
(हि.) १११, १३०, १६६, १३६, १८५,
१६३, १९९, २१२, २१४, २१८,
२१९, २४२, २४३, २६०, २६४, २७८,
२८७। चि० ४८, १०२, १०३, १८३।
झ० ४४, ५३। म० १२। ल० १०, ७६।
'यह ही' का संक्षिप्त रूप। इसी।
यहैं = चि० २५, ६१।
[क्रि.वि.] (ब्र.भा.) इसी स्थान पर।
या = का० २०, ४०, ८२, १४१, २०५,
[अव्य०] २११, २१६। चि० १४५। झ० २५।
(फा.) ल० ११, ४३।
अथवा, वा।
याकि = का० ४७
[अव्य०] (हि.) अथवा, कि।
याके = चि० २४।
[सर्व०] (ब्र. भा.) इसके।
याको = चि० ४८, ५४, ६६।
[सर्व०] (ब्र.भा.) इसको।
यातना = का० १६७।
[सं०स्त्री०] (सं.) कष्ट। दुख। पीड़ा।
यात्रा = का० २१४, २८३, २८७।
[सं० स्त्री०] एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।
(सं.) सफर।
यात्रियों का दल = का० २७७।
[सं० पु०] (हि.) मुसाफिरों का समूह।
यात्री-दल = का० २७८, २८४।
[सं० पु०] (सं.) मुसाफिरों का समूह।
याद = का० कु० ७, १४, ७३। झ० ४३। प्रे०
[सं० स्त्री०] १६, १८।
[फा.] स्मरण, स्मृति।

यादव-वृन्द = का० कु० ११९।
[सं०पु०](सं०) अहीर लोग। गोप समुदाय।
यान = का० १६३।
[सं० पु०] (सं.) जहाज। गाड़ी। सवारी।
यान्त्रिक = आं० ४३।
[वि०] (सं.) यंत्रसम्बन्धी। यंत्रविद्या का जाननेवाला।
याम = का० कु० ५९। चि० ४५।
[सं० पु०] (सं.) तीन घण्टे का समय। पहर। समय।
यामिनी = का० कु०, २। का० ८६, ९१। चि०
[सं० स्त्री०] ४५। ल० ७४।
(सं.) रात्रि। निशा।
यामें = चि० ४०, ५६, ६१, ६४, ७२, १४७।
[सर्व०] (ब्र. भा.) इसमें।
यायावर = का० १९९।
[सं० पु०] वह जो एक स्थान पर टिककर न रहता
(सं.) हो। सन्यासी। ब्राह्मण। अश्वमेध का घोड़ा।
यासो = चि० ६६।
[सर्व०] (ब्र भा.) इससे।
याहि = चि० ५६, १८१।
[सर्व०] (ब्र. भा.) इसको।
याही = चि० १६, ६०, १८४। प्रे० २।
[सर्व०] (ब्र. भा.) दे० याहि।
युक्त = का० ८३।
[वि०] (सं.) जुड़ा या मिला हुआ। साथ लगा हुआ।
युक्ति = का० कु० ८९। का० १६५।
[सं० स्त्री०](सं.) उपाय। तरकीब। चातुरी। कौशल।
युग = आ० ७७। का० कु० ४२। का० १६२,
[सं० पु०] १६६, १७८, २५३। चि० १३, ३३,
(सं.) ४५, ४६। ल० १५, २७, ३२, ३३, ७४।
जोड़ा। बारह वर्ष का काल। काल।
युग्म।
युगानू = चि० १६४।
[सं०पु०] (हि.) जुगनू, पटवीजना, सोनकिरवा।
युगनैन = चि० ७२।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) दोनों नेत्र। दोनों आँखें।

युग-युग = का० १२१, १८१। चि० ३३। प्रे०
[अव्य०] २२। ल० १५।
(सं.) बहुत दिनतक, बहुत समयतक।
युगल = का० कु० ५, ६, ११, ४३, ११९,
[सं० पु०] १२७। का० ८१, १४४, २१०, २५३,
(सं.) २६०, २७१, २८२, २८६। चि० १३,
२२, २४, ३१, ५६, ७०, १७७।
भ० २२, ५६। प्रे० ८। म० ६।
युग्म। जोड़ा। जुड़वा।
युगुल = चि० ७१।
[सं०पु०] (हि.) देखिए 'युगल'।
युगों = का० ५६।
[सं० पु०] (हि.) बहुत दिनों।
युत = का० १२७।
[वि०] (हि.) मिला हुआ। संयुक्त।
युद्ध = का० कु० ११५, ११६। का० १०६,
[सं० पु०] १६१, १६६। चि० ४५, ६४, १६१।
(सं.) म० ५, १०, १२। ल० ५२।
लड़ाई। संग्राम। रण।
युद्ध भूमिहिं चल दीन्हों = चि० ६३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) रणक्षेत्र में चल दिया।
युधिष्ठिर = का० कु० ११४।
[सं० पु०] (सं.) अर्जुन के बड़े भाई। धर्मराज।
युवक = का० कु० ९१। प्रे० २४। म० ५।
[सं० पु०] ल० ७२।
(सं.) सोलह से पैंतीस वर्ष तक की अवस्था का पुरुष। युवा। जवान।
युवकों = का० २७८।
[सं० पु०] (हि.) युवक का बहुवचन।
युवतियों = प्रे० २४।
[सं० स्त्री०] (सं.) जवान स्त्रियाँ।
युवा = चि० ११।
[सं० पु०] (सं.) जवान। युवक।
यूथपति = चि० ६५।
[सं० पु०] सं) सेनापति। दल का सरदार।

यूथिका = आं० ४४।
[सं० स्त्री०] (सं.) जूही का पौधा और उसका फूल।

ये = भ्रं० ५४। का० कु० ५, २४। का० ५१, ५४, ८३, १२९, १३२, १७२, १७८, १८१, १८४, २१५, २३०, २३४, २४०, २४८। चि० १४५, १७७, १७९। म० ११, २५।
[सर्व०] (हि.) 'यह' का बहुवचन।

येहि = चि० ४९, ७४।
[सर्व०] (ब्र.भा.) 'ये ही', यह सब ही।

येही = चि० ६४।
[सर्व०] (हि.) देखिए येहि।

यों = आं० ४९। का० १३, ३९, ६३, १६०।
[अ०] (हि.) इसी प्रकार। ऐसी।

योंही = क० ३०। का० ३३। प्रे० ७।
[अव्य०] (हि.) बिना किसी कार्य या कारण के। ऐसे ही। इसी प्रकार ही।

योग = का०, १३१। चि० २६, १०५।
[स० पु०] (सं.) मेल। प्रयोग। ध्यान। शुभ फल। उपयुक्तता। शुभ मुहूर्त। चित्त को एकाग्र करने का उपाय या शास्त्र।

योग-क्षेम = का० १९९।
[सं० पु०] (सं.) लाभ और उसकी रक्षा, गुजारा। वह संपत्ति जिसका बटवारा न हो। कुशल-मंगल।

योगमान = का. कु. २६।
[सं० पु०] (सं.) योगी। योग करने वाला।

योग्य = क० १२, २२। का० कु० ११५। का० ७७। भ्रं० ५३। प्रे० ४।
[वि०] (सं.) उपयुक्त। समर्थ। श्रेष्ठ। लायक।

योषित = चि० १३३।
[सं० स्त्री०] (सं.) स्त्री। औरत।

यौवन = आं० ६६, ६८। का० कु० ८९। का० ४, ४०, ४७, ५५, ७२, ७४, ९९, १२३, १५६, १६४, २२२, २३१, २७७। चि० ७०। भ्रं० २०, २७, ३४। ल०, ४६, ५३, ५४, ५९।
[सं० स्त्री०] (सं.) जवानी युवावस्था।

यौवन-विलासी = ल० ५३।
[वि०] (हि.) जवानी की वासना में मतवाला।

यौवन-स्मित = का० ९। चि० ३६।
[सं० स्त्री०] (सं.) जवानी की मुस्कुराहट।

र

रंक = का० कु० ४७। का० १६९।
[वि०] (सं.) गरीब, दीन, हीनता से युक्त।

रंक-नरेश = का० कु० ४।
[सं० पु०] (सं.) दरिद्र और राजा।

रंग = आं०, ३७। का०, ८५, १६४, १७५, १७६, २३५, २४९। चि०, ४२ १४८, १६३। ल०, ३६, ७५। भ्रं०, ७०। म०, ५, २४, ३३।
[सं० पु०] (सं.) राँगा, नृत्य-गीत, सौंदर्य, आनंद, धाक, उत्सव, उमंग, पदार्थ या उसके आकार से वह भिन्न गुण जिसका ज्ञान दृष्टि से होता है। रंगने का पदार्थ।

रंग देता = का० २०७।
[क्रि०] (हि.) अपने विचारों के अनुरूप बना देता।

रंग भरी = चि० १६६।
[वि०] (हि.) रंगीन, रँगी हुई।

रंगमंच = का० २६४।
[सं० पु०] (सं.) नाट्यशाला का वह स्थान जहाँ अभिनेता अभिनय करते हैं।

रंगमयी = ल० २२।
[वि०] (हि.) रँगी हुई, रंगीन, आनंदमयी।

रंगमहल = ७१।
[सं० पु०] (हि.) आमोद प्रमोद करने का स्थान।

रंगरलियाँ = ल० ५६।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे०—'रंगरली'।

रंगरली = का० २२२।
[सं० स्त्री०] (हि.) आमोद-प्रमोद, आनंद-क्रीड़ा।

रंगराते = चि० १७२।
[वि०] (हि.) आनंद या प्रसन्नता में विभोर या अनुरक्त हुए।

रंगरेली = चि० ५६।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'रंग-रली'।
रंग बिरंगी = का० ३०।
[वि०] (हि.) विभिन्न रंगों वाली।
रंगशाला = ल० ७६।
[सं० स्त्री०] (सं) वह भवन जहाँ अभिनय होता है।
रंगस्थल = आं० ७६। का० ७५।
[सं० पु०] वह स्थान जहाँ अभिनेता अभिनय करते हैं,
(सं.) रंगमंच, रंगभूमि।
रंगसो = चि० ७०।
[सं० पु०] (हि) आनंद से, प्रसन्नतापूर्वक।
रंगा = का० १००, १०२। प्रे० १०।
[वि०] (हि.) अनुरक्त।
रंगिनि = आं० ७५।
[वि०] (सं.) रंगी हुई, आनन्दमयी।
रंगी = भ० २८।
[वि०] (सं.) रस-रंगवाली, आनन्दी, मौजी।
रंगीन = का० ६०, २६२।
[वि०] (हि.) रंगा हुआ।
रँगे = चि० १४१, १८०।
[क्रि०] (हि.) रँग दिये, रँगे गये।
रंगेगा = ल० ४१।
[क्रि०] (हि.) रंग देगा, अपने अनुरूप बना लेगा।
रंग्यो = चि० ३४, ३६।
[वि०] (ब्र. भा.) रँगा हुआ, विभोर।
रंगों = का० ७७।
[सं० पु०] (हि.) रँग का बहुवचन, दे० (रंग)।
रंजक = भ० २५।
[वि०] (सं.) रँगनेवाला, प्रसन्न करनेवाला।
रंजन = चि० १७०।
[सं० पु०] रँगने की क्रिया, वह पदार्थ जिससे रँग
(सं.) बनते हैं। स्वर्ण, जायफल।
रंजित = आं० ६५। का० ३७, ८१, ८८, १५७।
[वि०] चि० १५०, १७५ भ० २०, २२, ३५,
४७, ५४, ८४। प्रे० १।
(सं.) रँगा हुआ, अनुरक्त।
रंध्र = का०, ६६, ६८, २६३। ल०, ५९।
[सं० पु०] (सं.) छेद, योनि।
रक्षक = का० ७। भ० ७६।
[वि०] (सं) रक्षा करनेवाला।
रक्षहु = चि० १०६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) रक्षा करो।
रक्षा = क० २२। का० कु० ७। का० १४६,
[सं० स्त्री०] १८५, २७२। चि० १८५। ल० ५३।
(सं.) बचाव, बचाने की क्रिया।
रक्षा करना = का० कु० १२१। म० ३।
[क्रि०] (हि.) बचाना।
रक्षित = का० १८२।
[वि०] (सं.) बचाया हुआ, रक्षा किया हुआ।
रक्त = आं० ५२। का० कु० ९०। का० ४, ४७
[सं० पु०] १३६, १३९, १६५, १६६, २०१। प्रे०
(सं.) १८। म० ६। ल० ७७, ७८।
खून, लहू, लाल।
रक्त-दुःशासन = का० कु० ११४।
[सं० पु०] (सं.) दु.शासन का खून।
रक्त-नदी = का० २०२।
[सं० स्त्री०] (सं.) खून की नदी, शोणित-सरिता।
रक्तमयी = ल० ७८।
[वि०] (सं.) रक्तिम, खून से सनी हुई।
रक्तवर्षा = ल० ७७।
[सं०स्त्री] (सं.) खून की वर्षा।
रक्तारुण = का० १४४।
[वि०] (सं.) खून के समान लाल।
रक्तिम = का० २००। ल० ४६।
[वि०] (सं.) लाल, रक्तवर्णवाला।
रक्तिम मुख = का० १७८।
[वि०] (सं.) लालमुख, क्रुद्ध मुख का सूचक।
रक्तोन्मद = का० २०१।
[वि०] (सं.) रक्तपात करने के कारण उन्मत्त।
रखना = आं० २८, ३५, ५५। का० कु० १०,
[क्रि०] (हि.) ९२। का० ३२, ३३, ८६, १०६, १६१,

१८३, २३७, २८४। चि० २६, ६१, १४१, १४७, १७६। प्रे० २।
बचाना, रक्षा करना।

रखवाली = का० कु० ६०। का० १०३, २११।
[सं० स्त्री०] ल०, ५५।
(हि.) देखभाल, रक्षा करने की क्रिया या भाव, हिफाजत।

रखउ = चि० १५८।
[क्रि०](ब्र भा.) रखो।

रघु = चि० ५२।
[सं०पु०] (सं.) एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

रघुकुल-राई = चि० ५२।
[सं०] (ब्र.भा.) रघुकुल के राजा।

रघुवंश = चि० ४९।
[सं०पु०] (सं.) रघु के नाम से पुकारा जानेवाला वंश।

रघुवंश-जहाज = चि० ४८।
[सं० पु०] रघुवंश के लिये जहाज जो हो
(सं०) रामचन्द्रजी।

रघुवंशहिं = चि० ४९।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) रघुवंश को।

रघुवंशी = चि० ४९।
[वि०] (सं.) रघुवंश में उत्पन्न होने वाला।

रचकर = का० १६९, १९०।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) बनाकर।

रचती = का० १६, ९३, १६४, २०७, २९४।
[क्रि०] (हि.) बनाती, निर्माण करती।

रच दूँ = ल० ४०।
[क्रि०] (हि.) बना दूँ।

रचना = आं० ५७। का० ७४, १५३, १७०।
[क्रि०] (हि.) बनाना, उत्पन्न करना। [सं०] निर्माण।

रचनामूलक = का० १३२।
[वि०] जिससे रचना होती हो, जो रचना के
(सं) मूल में हो।

रचहु = चि० १४१।
[क्रि०] (ब्र.भा.) बनाओ, निर्माण करो।

रचित = का० ४८। भ० ३७।
[वि०] (सं.) बनाया हुआ, निर्मित।

रचे = का० ३२, १२९, १६५।
[क्रि०] (ब्र.भा.) बनाये।

रच्छक = चि० १५७।
[वि०] (ब्र.भा) रक्षा करने वाला।

रच्यो = चि० २४, ४८, ६७।
[क्रि०] (ब्र भा.) निर्माण किया। बनाया।

रज = आं० ६२। का० १८१, १९१, १९२।
[सं० पु०] चि० १८८।
(सं.) पराग, मकरन्द, पुष्पधूलि, स्त्रियों की जननेन्द्रिय से निकलने वाला रक्ताभ जल, ऋतु, आकाश, पाप, जल, प्राचीन समय का एक प्रकार का वाद्य, बादल, धूलि।

रजकण = भ० ३।
[सं०पु०] (सं.) मकरन्दकण, धूलिकण।

रज-कुसुम = ल० १०।
[सं०पु०] (सं.) मकरन्द, पराग, पुष्पधूलि।

रजत = का० १०६, ११९, २६९, २९४।
[सं०, स्त्री०] चि० २३। भ० ५५।
(सं.) चाँदी, हाथी, हार, लहू, सोना।

रजत-कुसुम = का० ३९।
[सं०,पु०] (सं.) रजताभ पुष्प। चम्पा।

रजत-गौर = का० २५२।
[वि०] (सं.) चाँदी जैसा श्वेत।

रजधानी = चि० ५७।
[सं०,स्त्री०] किसी देश अथवा राज्य का वह प्रधान
(ब्र भा.) नगर जहाँ से वह शासित होता है तथा जहाँ शासनकर्त्ता एवं अधिकारी रहते हैं।

रज-धूसर = का० १७६।
[वि०] (सं.) धूलिधूसरित।

रजनी = आं० १७, २७, ३१, ५७, ७६, ७९।
[सं०, स्त्री०] क० २५। का० कु० ३५, ९९।
(सं.) का० ३४, ३८, ३९, ४७, ५३, ६३, ७५, १३६, १७८, १८६, २१३, २२६, २२९, २३४, २४५। चि० ४७, १७१। भ०, ११, २१, ८५।

ल० २९, ३२, ३५, ३८, ४५, ५१, ६८।
रात्रि, निशा, रात, हल्दी, जंतुका लता, पहाड़ी, नील, दारुहल्दी, लाख, एक नदी का नाम।

रजनी-गन्धा = का० कु० ३१। चि० १६४।
[सं० स्त्री०] (सं०) रात के समय फूलनेवाला एक सुगन्धित पुष्प।

रजनी-तम = का० १६७। ल० २४।
[सं०,पु०] (सं.) रात्रि का अन्धकार।

रजनी-भर = का० कु० ३५।
[अव्य०] (हि.) रातभर।

रज से रंजित = का० २९१।
[वि०] (सं.) पराग से अभिसिक्त।

रज-रस = भ० २३।
[सं० पु०] (सं.) परागरूपी रस।

रज लिप्त = का० कु० १००।
[वि०] (सं.) रज से लिपटा हुआ। धूलमय।

रज्जु = का० कु० ३३। का० ९९, २७७।
[सं० स्त्री०] (सं.) रस्सी।

रज्जु-सी = भ० ५५।
[वि०] हि.) रस्सी के समान।

रटन = चि० १६०। ल० १७।
[सं० स्त्री०] (हि.) रटने की क्रिया का भाव।

रटना = भ० १५। म० ९।
[क्रि०] (हि.) याद करना, बार बार दुहराना।

रणजीत सिंह = ल० ५५।
[सं० पु०] (हि.) पंजाब के एक प्रसिद्ध विजेता तथा राजा का नाम।

रणनाद = का० २००।
[सं० पु०] (सं.) युद्ध की घोषणा। युद्ध में होनेवाली ध्वनि।

रणनीति = का० कु० ११२।
[स० स्त्री०] (सं.) युद्ध-नीति।

रण-भीष्म = चि० ६७।
[सं० पु०] (सं.) विकराल युद्ध।

रणभूमि = का० कु० ११४, ११७। म० ६।
[सं० स्त्री०] (सं.) युद्धस्थल।

रणमत्त = चि० ६५।
[सं० पु०] (सं.) युद्ध करने के हाथी।

रणरंगिनी = ल० ५१।
[सं० स्त्री०] (सं.) जो रण-रंग में रंगी हुई हो।

रण-वर्षा = का० २००।
[सं० स्त्री०] (सं) युद्धरूपी वर्षा।

रण-विमुख = का० कु० ११५, ११६।
[वि०] (सं) रण से भागने वाले।

रण-शिक्षा = म० ६।
[सं० स्त्री०] (सं.) युद्ध की शिक्षा।

रणागंण = ल० ६।
[सं० पु०] (सं.) युद्ध क्षेत्र, युद्ध का आँगन।

रणित = का० ११।
[वि०] (सं.) झंकृत।

रत = का० ४२। चि० ३६, १७३।
[वि०] (सं.) लगा हुआ, आसक्त।

रतन = का० २४७। चि० २३, ६६, ७५, १४७।
[सं० पु०] बहुमूल्य खनिज प्रस्तर, जवाहिरात, रत्न, माणिक।

रतनन = चि० १६३।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) रतन का बहुवचन, रत्नों, जवाहिरातों।

रतनेस = चि० १४६।
[सं० पु०] (सं.) समुद्र, सागर।

रती = चि० १६४।
[सं०स्त्री०] (ब्र.भा.) कामदेव की स्त्री का नाम।

रन = का० २०१। भ० ३१, ४७। म० ६, ११। ल० ४३, ६६।
[सं० पु०] (हि.) संग्राम, युद्ध, रण।

रत्न = का० कु० ७४, ८६। का० १२। चि० ४६, ५४। भ० ३४, ७६। ल० ७६।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'रतन'।

रत्न-हार से = चि० ४७।
[वि०] (सं.) रत्नों की माला के समान।

रत्नाकर = आं० ३३, ७२। का० कु० ६५। चि० २३, १४६। भ० ३२, ७६।
[सं० पु०] (सं.)

समुद्र ।

रत्नावली = का० कु० ५२ ।
[स० स्त्री०] रत्नों की पंक्ति । रागिनी विशेष, अलं-
(सं.) कार विशेष । तुलसीदास की पत्नी ।

रति = का० ७२, ७४, १०३ । चि० ९, १८ ।
[सं० स्त्री०] काम देवकी स्त्री, सौंदर्य, शोभा, तेज,
(सं.) कांति, संभोग ।

रथ = का० कु० १४४ । का० ११८ । चि०
[सं० पु०] ४१ । भ० ६३ ।
(सं.) स्यंदन, शतरंज का एक मोहरा जिसे ऊँट
कहते हैं । चार पहियों की गाड़ी ।

रथ-चक्र = का० कु० ७२ । भ० ६ ।
[सं० पु०] (सं.) स्यन्दन का पहिया ।

रथ-नाभि = का० २६४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) धुरी ।

रन = चि० ६५, १०३ ।
[सं०पु०](व्र.भा.) युद्ध, संग्राम ।

रन-हेतु = चि० ५३ ।
[सं० पु०] (सं.) लड़ाई के लिये ।

रमण = का० १५३ । प्रे० २४ ।
[सं०, पु०] विलास, क्रीड़ा, मैथुन, गमन, पति,
(सं.) कामदेव, अण्डकोष, गधा, सूर्य का
सारथी ।

रमणि = चि० ४८ ।
[सं०स्त्री०] (व्र.भा.) जिससे रमण किया जाय, युवती, स्त्री ।

रमणी = का० १७१, २४८ । चि० ५४, ६१ ।
[सं० स्त्री०] भ० १३ ।
(सं) दे० रमणि ।

रमणीय = का० २६, ३०, ३५, १०१, १७१ ।
[वि०] भ० ३, ६७ ।
(सं.) सुन्दर, मनोहर, रमण करने योग्य ।

रमणी-हृदय = का० कु० ७०, ७१ ।
[सं० पु०] (सं.) रमणी का हृदय ।

रमति = चि० १३२ ।
[क्रि०] (व्र.भा.) रमता है ।

रमती = चि० २८ ।
[क्रि०] (व्र. भा.) विलास करती है, घूमती-फिरती रहती है ।

रमा = का० १६४ ।
[सं० स्त्री०] (सं) लक्ष्मी, कमला, चंचला ।

रमा हुआ = का० कु० ८६ ।
[वि०] (हि.) तन्मय ।

रमि = चि० १८४ ।
[क्रि०] (व्र. भा.) रमण कर ।

रम्य = क० ८, १५ का० कु० १०५ । का० ६३,
[वि०] १८२, २२४, २७७ । चि० ४५, १५७ ।
(सं.) सुन्दर, मनोरम ।

रम्यतटी = प्रे० ३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुंदर किनारा, सुंदर तट ।

रम्यतीर = चि० १४७ ।
[सं० पु०] (हि.) सुंदर तट, मनोहर किनारा ।

रम्य फलक = का० १४८ ।
[सं०पु०] (सं.) सुन्दर तख्ता, सुन्दर हथेली, सुन्दर फल ।

रमेः = चि० ४६ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) रमा का 'संबोधन' ।

रव = का० १३ । ल० ५९ ।
[सं० पु०] (सं.) ध्वनि, गुंजार, शब्द ।

रवनों = चि० १०१ ।
[सं०पु०] (व्र.भा.) रमण करने वाले ।

रवि = आं० ५१ । का० १७५, २५७ । भ०
[सं० पु०] ५८ । ल० १३, ४४ ।
(सं.) सूर्य, भानु, दिनकर, मंदार ।

रविकर = का० ३० । भ० ७९ । प्रे० १८ ।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य की किरणें ।

रविकर-सदृश = का० कु० १०० ।
[वि०] (सं०) सूर्य की किरणों के समान ।

रवि करोज्ज्वल-दाम = का० कु० ९९ ।
[सं०] (सं) सूर्य की स्वच्छ किरणों की माला ।

रवि-किरन = चि० २९ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) सूर्य की किरणें ।

रविचन्द = ल० १३ ।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य-चन्द्र ।

रवि-रश्मि = क० १३ । का० कु० १०४ ।

[सं०स्त्री०] (सं.) सूर्य-किरण।
रवि-शशि-तारा = का० १६०, १६५।
[सं० पु०] (सं) सूर्य, चन्द्रमा और सितारा।
रश्मि = का० कु० ११४। का० २९३। ल० ४४।
[सं०स्त्री०] (सं.) सूर्य किरण।
रश्मियाँ = का० २९४।
[सं०स्त्री०] (सं.) रश्मि का बहुवचन।
रस = का० २६, ३७, ६९, ७८, १२८, १२९,
[सं० पु०] १३५, १५१, २६२, २६३, २६४,
(सं.) २७०, २९१, २९३। चि० ९, १५,
३६, ६५, ९५, १५७, १७१, १७४।
झ० ६३।
रसना या जीभ, आनन्द, साहित्य के अनुसार रति हास, शोक, क्रोध, उत्साह भाव। आश्चर्य, निर्वेद।
रस-झरना = का० कु० ५१। का० ६६, १८४।
[सं० पु०] चि० ५६, १६७, १८४, १८९, १९०।
(सं.) रस से पूर्ण झरना।
रसना = का० कु० ५१। का० १११, २८५।
[सं०स्त्री०] (सं.) जीभ, चन्द्रहार, स्वाद लेना।
रस-बूँद = आं० १६।
[सं० स्त्री०] (सं.) रस की बूँदें।
रस-भार = चि० ३८।
[वि०] (सं.) रस परिपूर्ण, वा अत्यधिक आनन्दित।
रसमय = का० २८८।
[वि०] (हि.) रस से भरा हुआ।
रस-मेघ = चि० १४।
[सं० पु०] (सं.) रस के बादल।
रस-रंग = का० ७७।
[सं० पु०] (सं.) रस-जनित आनन्द, रसमय आनन्द।
रस लेना = ल० ११।
[क्रि०] (हिं०) आनन्द लेना।
रस लोभी = झ० ६४।
[वि०] (हि.) रस-लोलुप (भ्रमर)।
रस-सागर = का० कु० ३३।
[सं० पु०] (सं.) रसरूपी सिन्धु, अतिशय आनन्द।
रससों = चि० ६५।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) रस से।
रसाल = का० कु० ४८। चि० ५५, ५७, ६९,
[वि०] (सं.) १४९, १७५। झ० ६६।
[सं० पु०] (सं) मधुर रसवाला। आम का फल।
रसालन = चि० १८०।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) आमों।
रसाल-पुञ्ज = प्रे० १४।
[वि०] (सं.) माधुर्यातिरेक (सं०) आम्र वृक्षों का समूह।
रसाल मंजरी = चि० १४७।
[सं० स्त्री०] (सं.) आम की बौर।
रसाला = चि० ६०।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) आम।
[वि०] मधुमय।
रसीली = आं० १३। झ० ५७।
[वि०] (हि.) मीठी, मधुमय, सरस।
रसीले = का० कु० ११,४९, १११। का० १९३।
[वि०] चि० ३।
(हि.) मीठे।
रसोज्ज्वल = चि० ७०।
[वि०] (सं.) आनन्द की गरिमा से उज्ज्वल।
रस्सी = का० १११।
[सं० स्त्री०] (हि.) डोरी।
रहना = आं० ३, ११, २०, २५, २९, ४१,
४५, ४७, ४९, ६६, ७२। क० ८, ९,
१४, १७, १९, २२, २४, २६, २७,
२८, ३०। का० कु० १०, १२, १३,
१५, २१, २२, २८, २६, ३०, ३४,
३५, ३६, ३७, ८१। का० ८, १०,
१४, १९, २०, २४, २६, ३३, ३५,
४५, ५७, ७१, ७२, ७३, ७४, ८१,
८२, ८८, ९२, ९९, १०३, १०६,
१११, १६५, १७९, १८०, १८२,
१८३, १८५, १८६, १९०, १९१,
१९२, १९४, १९५, १९६, १९७,
१९८, १९९, २००, २०१, २०२,

२०६, २०७, २०८, २०९, २१४, २१५, २१६, २१९, २२०, २२७, २२८, २३०, २३३, २३४, २३६, २३८, २३९, २४२, २४३, २४८, २४९, २५३, २६३, २६४, २६५, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७३, २७७, २७८, २८१, २८२, २८४, २८६, २८७, २८८। चि० ८, ९, १९, ३४, ५०, ५९, ७२, ९५, १५३, १५९, १६५, १७७, १७८, १८०, १८२, १८८। म० ११। ल० १०, ३४, ४२, ४३, ४४, ७९।

[क्रि०] (हि.) स्थित होना, ठहरना, प्रस्थान न करना, समागम करना।

रहस [सं० पु०] (सं.) = चि० ४६। समुद्र, स्वर्ग।

(हि.) गुप्त भेद, छिपी बात, मर्म या भेद की बात, गूढ तत्व, मजाक, हँसी।

रहस्य [सं० पु०] (सं.) = का० कु० १२५। का० १६, ३५, ३७, ४५, ५३, ५७, ६६, ६७, ८१, ८६, १००, ११७, १६५, १६६, १७६, २५१, २५७, २६५। प्रे० ५, २३। मर्म या भेद।

रहित [वि०] (सं.) = का०, २४। ल० ५६। हीन, बिना, बगैर।

रहिये [क्रि०] (हि.) = चि० ७४। रहना क्रिया का एक रूप।

रहियो [क्रि०] (ब्र. भा.) = चि० ४८, ६२, ६४, १४७। रहो।

रहिसकै [क्रि०] (ब्र. भा.) = चि० २६। रह सके या रह सको।

रहिहौं [क्रि०] (ब्र. भा.) = चि० १६०। रहूँगा।

रही [क्रि०] (हि.) = का० कु० १, २। का०, अनेकों बार। 'रहना' का एक रूप।

रहीम खाँ [सं० पु०] (फा.) = म० ११, २०। अकबर के नवरत्नों में से एक का नाम।

रहै [क्रि०] (ब्र. भा.) = चि० ३, १५, २५, ४३, ७०, १०१, १०६, १३६। रहे।

रहो [क्रि०] (ब्र. भा.) = क० १४। चि० ९४, २६७, १७२। ठहरो, रुको।

रहौ [क्रि०] (ब्र. भा.) = चि० ४१, ५२, १६६, १६७। रहो।

रह्यो [क्रि०] (ब्र. भा) = चि० १७०, १८४। रहा था।

राई-सा [वि०] (हि०) = आं० २०। छोटा सा, नन्हा सा।

राक्षस [सं० पु०] (सं.) = का० कु० १२१। दानव, असुर, शैतान।

राका [सं० स्त्री०] (सं.) = आं० १८। का० कु० १११। का० ६१। चि० २४। भ० २४, ९५, १६२। ल० ४३। पूर्णिमा, पूर्णिमा की रात।

राका-रानी [सं० स्त्री०] (सं.) = का० २८४। पूर्णिमा रूपी रानी। चाँदनी।

राखत [क्रि०] (हि) = चि०, ३२, ६६, १३९। रखता है, रक्षा करता है।

राखनहार [वि०] (हि०) = चि० १८७। रखनेवाले। रक्षा करनेवाले (ईश्वर)।

राखि [क्रि०] (ब्र. भा.) = चि० ६६, ७१, ९५। रख लो, बचाओ।

राखिकर [पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) = चि० १६३। बचाकर, रक्षा कर।

राखिले [क्रि०] (ब्र.भा) = चि० २६। रख लो, शरण में ले लो।

राखिहैं [क्रि०] (ब्र. भा.) = चि० १७२। रखेगा।

राखे = चि० ७०, १०९।

[क्रि०] (ब्र. भा.) रख ले।
राखै = चि० ५६, १७१।
[क्रि०] (ब्र. भा.) रक्षा करे।
राखैंगे = चि० ६४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) रक्षा करेंगे।
राख्यो = चि० ४७, ७४, १५८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) बचाया है, रक्षा किया है।

राग = का० कु० १, ११, ४३, ४८, ४९, १११।
[सं० पु०] का० ७४, ८८, ६७, १६५, १६८
(सं.) २४०, २४२। चि० ३६, ४७ ९३,
१४७, १५५, १६८, १७५, १७६। भ्रु०
११, २०, २२, ४७, ८४। प्रे० १८।
ल० १९, ४१।
प्रिय, या प्रिय वस्तु के प्रति होनेवाला
मानसिक भाव। ईर्ष्या और द्वेष, प्रेम,
अनुराग, अंग राग, एक वर्ण वृत्त, रंग,
विशेषत, लाल रंग। सूर्य, चन्द्र,
महावर, संगीत में स्वरों के विशेष प्रकार
तथा क्रम या निश्चित योजना द्वारा बने
हुए गीत का ढाँचा।

रागपूर्ण = का० १९३।
[वि०] (सं.) राग से निष्पन्न, रागी, प्रेमी।
राग-भाव = का १६३।
[सं०] (सं.) प्रेम का भाव, ईर्ष्या-भाव।
रागमय = का० २९०।
[वि०] (सं) राग से भरा हुआ।
रागमयी = ल० ५६।
[वि०] (हि.) प्रेयसी, प्रेमिका।
रागमयीसंध्या = का १४२।
[वि०] (हि.) अनुराग रंजिता संध्या।
रागमयी-सी = का १६५।
[वि०] (हि.) अनुरागवती सी।
राग रंग = ल० ४७।
[सं० पु०] (सं) प्रेमानंद।
राग रंगी = प्रे० ११।
[वि०] (सं.) प्रेमानंदी।

रागारुण = का० २६२, २६४, २९०। ल० ४४।
[सं० पु०] (सं.) अनुराग के समान अरुण, वह लालिमा जो माधुर्य और प्रेम बिखेरती हो।
रागिनी = भ्रु० ६२।
[सं० स्त्री०] (सं.) विदग्धा स्त्री, मेनका की कन्या का नाम, जयश्री नामक लक्ष्मी, संगीत में किसी राग की पत्नी।
राघव = का० २४, ३६ ४६, ५८, ८८ २६७।
[सं० पु०] (सं.) चि० ३३, ३५, ५४, ६४, १०६ ११०, १४९, १६१। भ्रु० ९६ : रघुवंशी राजा।

राजकाज = का० १७१।
[सं० पु०] (हि.) राज्य संबंधी कार्य।
राजकुमार = क० ११।
[सं० पु०] (सं.) युवराज, राजा का लड़का।
राजकुमार-से = क० १७।
[वि०] (हि.) राजकुमार के समान।
राज-कुँवर = चि० ६४। म० १०, २३।
[सं०पु०] (हि.) राजकुमार।
राज-चिन्ह = का० २०७।
[सं०पु०] (सं.) राजाओं के चिह्न।
राजत = चि० १६१, १६२।
[क्रि०] (ब्र.भा.) शोभा देती है, शोभित है।
राजन् = क० २२, २९। म० १०।
[सं० पु०] (सं.) राजा।

राजन्य = का० कु० ११२। चि० ३०।
[सं० पु०] (सं.) राजा, क्षत्रिय।
राजपथ = का० २१२।
[सं०,पु०] (सं) सड़क राज मार्ग।
राजपुत्र = क० २२।
[सं०पु०] (सं.) राजा के पुत्र। क्षत्री।
राजपूत = म० ५, ६, ७, १०। ल० ६६।
[सं०पु०] (हि) क्षत्रिय।
राजबंश = ल० ७७, ७८।
[स०पु०] (सं.) राजा का कुल।
राजमद्‌-रंग = का० कु० १०२।

[वि०] (सं.) राजोचित स्वाभिमान का आनन्द।

राज शरण = का० १८९।
[सं० स्त्री०] (सं.) राजा की शरण।

राजसभा = चि० ५२।
[सं०स्त्री०] (सं.) राजा की सभा।

राज सुख = चि० ४३, ५७।
[वि०] (सं.) राजोचित सुख, राजाओं के तुल्य सुख।

राजसूय = का० कु० ११२।
[सं० पु०] (सं.) वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल सम्राट को होता है।

राजस्व = का० ८४।
[सं०पु०] (सं.) भूमि आदि का वह कर जो राजा या राज्य को दिया जाय।

राजहीं = चि० २३, ४६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) शोभित होते हैं।

राजा = क० १०। का० कु० ४७। चि० ३३, ७१।
[सं० पु०] (हि.) किसी देश या जाति का प्रधान शासक और स्वामी, अधिपति, मालिक।

राजि = चि० ५५।
[सं०स्त्री०] (सं.) पंक्ति, कतार।

राजिव = म० २३। ल० ७६।
[सं०पु०] (सं.) कमल।

राजी = झ० ५१।
[वि०] (अ.) सहमत, अनुकूल। निरोग, स्वस्थ। प्रसन्न, खुश।

राज्य = क० १९, २२, २७, ३०। का० कु० ९६। का० २६६। चि० ४८, ७३, ७४, १४९। ल० ७१, ७८।
[सं० पु०] (सं.) राज्य का काम, शासन। एक राजा या केन्द्रीय सत्ता द्वारा शासित देश।

राज्यो = चि० ७१।
[क्रि०] (ब्र.भा.) राज्य किया।

राजै = चि० ४८, १४०, १५०, १६१, १६२।
[क्रि०] (ब्र.भा.) विराजमान है। राज्य करता है।

रात = का० ८८, २१७, २३३, २५०।
[सं० स्त्री०] (हि.) चि० १८, १८२। झ० ५२। प्रे० २, ५८। ल० ११, २०, २५, ३१, ३७।
सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक का समय। रात्रि। निशा। शर्वरी। विभावरी। रजनी।

राती = चि० १२।
[वि०] (हिं.) अनुरक्त।

रातें = आं० ७०। का० १७८, २०७। चि० १०१, १७२। ल० २५, ४५।
[सं० स्त्री०] (हिं.) रात का बहुवचन।

रातों = का० १८४।
[सं०स्त्री०] (हिं.) रात का बहुवचन।

रात्रि = क० १३। का० कु० ८। का० १८९, २६१।
[सं०स्त्री०] (सं.) दे० 'रात'।

रानी = आं० ७९। का० ९३, १४८, १८४, १९७, १९९, २०१। चि० ७१, ७४। ल० ४५, ६७, ७१, ७२, ७३, ७५।
[सं०स्त्री०] (हि.) राजा की धर्मपत्नी। स्वामिनी। मालकिन। स्त्रियों के लिए आदर सूचक शब्द।

राम = का० कु० ८६, ८७, ९६, ९७, ९८, ९९, १०१। चि० ४८, ५१, ५२। झ० ६३।
[सं० पु०] (सं.) राजा दशरथ के पुत्र श्री राम। ईश्वर। सीता के पति का नाम।

रामचरित मानस = का० कु० ८७।
[सं० पु०] (सं.) गोस्वामी तुलसीदास जी रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ।

रामबाहु = का० कु० १०३
[सं० पु०] (हि.) राम के हाथ।

राम-वैदेही = का० कु० ९५।
[सं०] (हि.) राम-सीता।

राशि-सुख = ८६, ९१।
[वि०] (सं.) सुख की राशि। सुख का ढेर।

राशि-कृत = का० २६८।

[वि०] क्रान्तिवृत्त में पड़नेवाले तारों के बारह
(सं.) समूह में से किसी एक या कुछ या सबके द्वारा किया हुआ, तारों का वह समूह निम्नलिखित है :—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ और मीन ।

राष्ट्र = का० १६३, १९६, २६६ ।
[सं० पु०] राज्य, देश । एक राज्य में बसनेवाला
(सं.) पूरा जन-समूह ।

राष्ट्रनीति = का० २४३ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) किसी भी राष्ट्र द्वारा अपनाई गई नीति ।

रास = का० क० १११ ।
[सं० पु०] प्राचीन भारत के गोपों की एक क्रीड़ा
(ब्र.भा.) जिसमें घेरा बाँधकर नाचते थे । श्रीकृष्ण और रासलीला या उसका अभिनय । घोड़े बैल आदि की लगाम । खलिहान में रखे अन्नों की ढेर ।

राह = का० ६८, २४१, २४२ । का० कु०
[सं०स्त्री०] ५१ । चि० ६५ । भ० ५१, ५२ ।
(हि.) रास्ता, पथ ।

राहु-ग्रस्त-सी = का० २३६ ।
[वि०] (हि.) राहु द्वारा ग्रसित होने के समान ।

रिक्त = का० ३६, ११७, १८३, २८३ । भ०
[वि०] २५, ३८ । ल० ३८, ५२, ७१ ।
(सं.) खाली, निर्धन ।

रिझावत = चि०, ४१ ।
[क्रि०] किसी को अपने पर प्रसन्न या मोहित कर
(ब्र. भा.) लेता है ।

रिझावहिं = चि०, १०० ।
[क्रि०] किसी को अपने पर रिझाते या मोहित
(ब्र. भा.) करते हैं ।

रिमझिम = का० २२५ ।
[सं०स्त्री०](हि.) वर्षा की छोटी छोटी बून्दे गिरना, फुहार ।

रिस = का० १८४ ।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.)क्रोध, रोष ।

री = चि० १६३ । ल० ६७
[अव्य०] (हि.) सम्बोधन का चिन्ह ।

रीझना = प्रे० २४ ।
[क्रि०] किसी के रूप, गुण आदि के कारण उसपर
(ब्र. भा.) प्रसन्न, अनुरक्त या मोहित होना ।

रीझता = चि० १५५ ।
[क्रि०](ब्र. भा.) रीझता है । दे० "रीझना" ।

रीझा = का० १५८ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) रीझना क्रिया का भूत कालिक रूप ।

रीति = का० २४३ । चि० ३५, १६७, १८३ ।
[सं० स्त्री०] कोई काम करने का ढंग या प्रकार । रि-
(सं.) वाज, परिपाटी, नियम । साहित्य में वर्णों की ऐसी योजना जिससे वर्णों में ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि गुण आ सकें ।

रीती = का० कु० ७३ । ल० ११ ।
[वि०] (हि.) खाली ।

रुण्ड = म० ७ ।
[सं० पु०] सिर कट जाने पर खाली बचा हुआ धड़ ।
(सं.) वह शरीर जिसके हाथ पाँव कट गए हों ।

रुकना = आ० ७७ । क० १४ । का० कु० ४६ ।
[क्रि० अ०] का० ६४, ६६, १०५, १९०, १९१,
(हिं.) १८६, २०१, २१८, २१४, २२०, २७३, २८४ । प्रे० ४, १५ । म० ३ । ल० ३० । गति, प्रवाह आदि में किसी प्रकार का विश्राम या अवरोध होना । अटकना । अवरुद्ध होना । ठहर जाना ।

रुकने वाली = का० २०६, २४१, २९१
[वि०](हिं.) वह वस्तु जो रुक जाय ।

रुक-रुक-कर = ल० २६ ।
[क्रि०वि०](हि.) गतिमय क्रिया में बार बार रुक कर ।

रुकावट = क० १४ । भ० ६० ।
[सं०स्त्री०] (हिं) रोकने या रोके जाने की क्रिया का भाव ।

रुख = का० ४५ । चि० १७३ ।
[सं० पु०] मुद्द, आकृति, चेष्टा, चेहरे या आकृति
(फा.) से प्रकट होनेवाली इच्छा ।

रुखाई = चि० १८३ ।

[सं० स्त्री०] 'रूखा' होने का भाव। रूखापन।
(हिं.) शुष्कता, खुश्की। व्यवहार में संकोच या शील का अभाव।

रुखसो = चि० १।

[वि०] चेहरे या आकृति से प्रकट होनेवाली
(ब्र भा.) इच्छा के अनुसार।

रुचता = का० १३९।

[क्रि०] (ब्र भा.) अच्छा लगता।

रुचि = का० १६०, १६३।

[सं० स्त्री०] मन की वह अवस्था जिसके अनुसार
(सं.) मनुष्य को बहुत सी वस्तुएँ अच्छी लगती हैं। कला साहित्य, प्रकृति आदि की कृति को पसन्द करनेवाली या न करनेवाली मन की वृत्ति। प्रेम, चाह, स्वाद।

रुचिर = का० १४२।

[वि०] (सं.) सुन्दर, मीठा।

रुचि सो = चि० ७३।

[सं०स्त्री०](ब्र. भा.) रुचि से। इच्छा से।

रुद्र = का० कु० ८६। का० १८५, १८६,
[सं० पु०] २४१, २०२, २५९।
(सं.) एक प्रकार के गण देवता जो संख्या में ग्यारह हैं। ग्यारह की संख्या। शिव का एक रूप जो बहुत ही उग्र माना जाता है जिसे उन्होंने कामदेव को भस्म करने तथा दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने के समय धारण किया था।

रुद्ध = का० १७, ८७, १६६, १६९, १८५,
[वि०] २१२।
(सं.) घेरा, रोका या रूँधा हुआ। बन्द।

रुदन = का० १९१।

[सं० पु०] (हिं०) रोने की क्रिया।

रुधिर = का० ११६, १९६। ल० ६६।

[सं० पु०] (सं.) रक्त, खून, लहू।

रुधिर-फुहारापूर्ण-यवन-कर=म० ६।

[सं० पु०] रक्त के फुहार से पूर्ण मुसलमानों का
(सं.) हाथ।

रुलाना = का० कु० ८०। भ० ९२।

[क्रि० सं०] दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना। खराब
(हिं.) करना।

रुष्ट = का० कु० ८४। का० १८९।

[वि०] (सं.) नाराज, कुपित।

रूखा = आं० २८। प्रे० १३।

[सं० पु०] शुष्कता, खुश्की, जिस व्यवहार में
(हिं.) संकोच या शीलता का अभाव हो।

रूखा-सा = भ० ३३।

[वि०] (हिं) शुष्क।

रूखी = प्रे० २३।

[वि०] (हिं.) दे 'रुखा'।

रूखे = का० कु० २१। चि० ५६, १८०।

[वि०] (हिं.) दे रूखा।

रूखेमन = चि० १८१।

[सं० पु०] बिना किसी संकोच या शीलता भरे
(हिं.) मन से।

रूठ = का० ११७, १७७, १७८, १७६, २५९।

[सं० स्त्री०](हिं.) रूठने की क्रिया का भाव।

रूठना = का० कु० ८४।

[क्रि०अ०] अप्रसन्न होकर उदासीन चुप या अलग
(हिं) हो जाना।

रूठी = आं० ३८।

[क्रि०अ०] (हिं) 'रूठना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

रूठे = आं० ५०।

[क्रि०अ०] (हि.) रुष्ट हुए, नाराज हुए।

रूप = आं० २५। क० ७, ३ २८। का०
[सं० पु०] कु० ११, १३, २८, ५१, ५२, ७६
(सं.) ८६, ९३, १२१। का० ६५, ६९, ७२, ८५, ९१, १०१, २६२, २६४, २६७, २८८। चि० ८, २५, २८, ४२, ५६ ७०, ७२, १००, १४०, १४९, १५०, १५८, १६१, १६३, १६५, १७१, १७७, १८१ १८६, १८६। प्रे० १०,

१६, १६ । म० २ । ल० ६८, ७५, ७६, ७७, ७६ ।
शकल, सूरत, स्वभाव, प्रकृति, सौन्दर्य, शरीर, दशा ।

रूप-चन्द्रिका = का १२५ ।
[वि०स्त्री०] (सं) चन्द्रिका रूपी रूप ।

रूप-जन्य = प्रे० १७ ।
[वि०] (सं.) रूप से उत्पन्न ।

रूप-जलधि = झ० २२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) रूप का समुद्र ।

रूप-निधान = चि० ४६ ।
[वि०] (सं.) रूप का आगार । रूप की निधि वाला ।

रूप-मधुर = का० ७२ ।
[वि०] (सं.) रूप का माधुर्य ।

रूप-माधुरी = का० कु० ७८ ।
[वि०] (हि) रूप माधुर्य ।

रूपवती = का० २६२ प्रे० २ ।
[सं० स्त्री०] (सं) गौरी नामक छन्द । चम्पकमाला वृत्ति
[वि०] (सं.) का एक नाम । सुन्दरी, खूबसूरत ।

रूपवाले = झ० ६३ ।
[वि०] (हि.) खूबसूरत, सुन्दर ।

रूप-सीमा = आं० २० ।
[सं०स्त्री०] (सं.) रूप की सीमा ।

रूपहली = का० १८४ ।
[वि०] (हि.) चाँदी के रंग की ।

रूपावली = चि० ७३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) रूप की पंक्ति ।

रे = चि० १७० । ल० १४, ३५, ३६ ।
[अव्य०] (हि.) सम्बोधन का चिन्ह ।

रेख = का० ५०, २५८ ।
[सं० स्त्री०] रेखा, लकीर, चिन्ह, निशान, गिनती,
(हि.) गणना । नई निकली हुई मूछें ।

रेखा = आं० ४५ । का० कु० ६५ । का० ५, ३९, १०४, १०५, ११७, १२१, १४०, १५९, २१६, २६१, २७३ । चि० ६५ ।
[सं० स्त्री०]
(सं.)
लकीर वह जिसमें लम्बाई हो पर चौड़ाई और मुटाई न हो ।

रेखायें = आं० ६७ । का० २६० । ल० ९ ।
[स०स्त्री०] (सं.) 'रेखा' का बहुवचन ।

रेखावाली = म० ८ ।
[वि०] [हिं) वह जिसमें रेखा या लकीर हो ।

रेखा-सी = का० ९९ ।
[वि०] (हिं) रेखा के समान ।

रेणु = का० २६२ । का० कु० ९७ ।
[सं०स्त्री०] (स.) धूल, बालू, पृथ्वी, कणिका ।

रेणुरन्ध्र = का० २६२ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) लघुछिद्र ।

रे रे = क० २८ ।
[अव्य०] (हिं.) सम्बोधन कारक का चिह्न ।

रेला = झ० ३२ ।
[सं० पु०] तेज बहाव, तोड़ । समूह द्वारा चढ़ा
(हिं.) धावा । धक्की-धुक्का ।

रेशमी = ल० ४९ ।
[वि०] (फा.) रेशम का बना हुआ ।

रैन = चि० २४, १६४ ।
[स० स्त्री०] (सं.) रात्रि ।

रैनि = चि० ४५ ।
[स०स्त्री०](ब्र.भा.) रात्रि ।

रो = आ० ५७ ।
[क्रि०] (हि.) रोना, विलाप करना, रुदन करना ।

रोइ = चि० ६८ ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र भा) रोकर

रोइये = चि० १७८ ।
[क्रि०] (हिं.) 'रोना' रोओ ।

रोई = आं० ५७ ।
[क्रि०] (हिं.) रो दिया ।

रोक = का० १२५, १७०, १९७ ।
[सं०पु०] (हिं.) अनुरोध ।

रोक-टोक = का० २३५ ।
[सं० पु०] (हि.) छेड़छाड़ ।

रोकना = का० कु० ३६, ४४ ।
[क्रि] (हिं.) अवरुद्ध करना ।

रोकर = का० ८१, १६५, २४८ ।

[क्रि०] (हिं.) रोना का पूर्वकालिक रूप ।
रोकी = का० कु० ४५ ।
[क्रि०] (हिं.) अवरोधक बनी ।
रोके = का० ११८, २३८ ।
[क्रि०] (हिं) रोकना, क्रिया का भूतकालिक रूप ।
रोग = प्रे० ९ । म० २३ ।
[स० पु०] (अ.) बीमारी, व्याधि, रुग्णता ।
रोज = भ० ११ ।
[सं० पु०] (फा) प्रति दिन ।
रोता = का० १५८ ।
[क्रि० (हिं.) रुदन करता ।
रोती = आ० १२ । का० १६, ६६ । ल० १८ ।
[क्रि०] (हिं.) रुदन करती ।
रोते = आं० ३०, ४७ । भ० ९४ ।
[क्रि०] (हिं.) रोना क्रिया का भूतकालिक रूप ।
रोदन = आं० ६२ । का० १२४, १६५ ।
[सं०पु०] (सं.) रोना ।
रोना = आं० ७७ ।
[क्रि०] (हिं.) प्रलाप करना ।
रोप्यो = चि० ६५ ।
[क्रि०] (व्र. भा) रोपा । आरोपित किया ।
रोम = आं ४९ । का० ४६, १३०, २२५ ।
[सं०पु०] (हिं.) शरीर के ऊपर के छोटे छोटे बाल ।
रोम-राजी = का० ८३ ।
[सं०स्त्री०](हिं.) रोमावलि ।
रोम-रोम = का० कु० ७९ । चि०, १७४ ।
[सं० पु०] (हिं.) भ० ६३ ।
सर्वांग ।
रोमांच = का० कु० २९ ।
[वि०] (सं.) आनन्द या भय से रोएँ का खड़ा होना ।
रोमांचित = का० १७६ ।
[वि०] पुलकित, भय से जिसके रोएँ खड़े हो
(सं.) गये हो ।
रोमाली = का० ६६ ।
[सं० पु०] (हिं.) रोओं की पंक्ति ।
रोमावलि = ल० ४५ ।
[सं० स्त्री०](सं.) रोओं की पंक्तियां ।
रोय = चि० १६६ ।
[क्रि०] (व्र. भा.) रो कर
रोया = का० १३ ।
[क्रि०] (हिं.) रोना क्रिया का भूत कालिक रूप ।
रोये = का० १४०, २१५ ।
[क्रि०] (हिं.) रोना क्रिया का भूत कालिक रूप ।
रो-रा = आं० १५, ५२ ।
[सं० पु०] (हिं.) दुखी हो कर ।
रोली = आं० ६१ ।
[सं० स्त्री०] तिलक लगाने की प्रसिद्ध लाल बुकनी ।
(हि.) शोभा, सौन्दर्य ।
रो लेती हूँ = का० २३७ ।
[क्रि०] (हिं.) रोना क्रिया का सामान्य वर्तमान ।
रोवन लागी = चि० ५६ ।
[क्रि०] (व्र.भा.) रोने लगी ।
रोवै = चि० १०३ ।
[क्रि०] (व्र.भा.) रोता है ।
रोष = क० १० । का० कु० १०२, १०६ ।
[सं० पु०] का० १६६, २४१ । चि० ५३, ५४,
(सं.) १७१, १७५ ।
क्रोध ।
रोष भरी = का० १८१ ।
[वि०] (हिं.) क्रोधित ।
रोषानल = का० कु० १०८ ।
[वि०] (सं.) क्रोधाग्नि ।
रोहित = क० २१, ३१ ।
[वि०] (हि.) लाल ।

ल

लई = चि० ३६ ।
[क्रि० सं०] 'लेना' क्रिया का भूतकालिक रूप,
(व्र. भा.) लिया ।
लिए = का० कु० १८ ।
[विभक्ति] (हिं.) संप्रदान कारक का चिह्न ।

लंबी = का० ४६, २१४। झ० ३९। प्रे० ११।
[वि०] जो दूर तक एक ही दिशा में चला गया
(हि.) हो, चौड़ा का उलटा।
लम्बे = का० ३।
[वि०] (हिं.) दे० 'लम्बी'।
लकीर = आं० २०। का० १६६।
[सं० स्त्री०] जिसमें लम्बाई हो किन्तु चौड़ाई और
(हिं.) मोटाई न हो, रेखा।
लक्षण = चि० १०३।
[सं० पु०] पहचानने का चिह्न, निशान, नाम, परि-
(सं.) भाषा, शुभ-अशुभ सूचक शरीर का प्राकृ-
तिक चिह्न-चाल, ढाल, रंग-ढंग।
लक्षहार = ल० ३५।
[सं०पु०] (सं.) लक्ष्यरूरी माला।
लक्षागृह = चि० १०७।
[सं० पु०] लाख से बनाया हुआ महल जिसे दुर्यो-
(सं.) धन ने बनवाया था पाण्डवो के विनाश
के लिए। उस स्थान का आधुनिक नाम।
लक्ष्मण = का० कु० ९८, ९९, १०१।
[सं० पु७] (सं.) श्री रामचन्द्र जी के छोटे भाई।
लक्ष्मी = का० कु० ८८। चि० ५४, ९५।
[सं० स्त्री०] प्रे० १९।
(सं०) धन की अधिष्ठात्री देवि, विष्णु पत्नी,
कमला, धन संपत्ति, शोभा, गृह-
स्वामिनी।
लक्ष्य = का० १३५, १९३, २६९। चि० १८६।
[सं० पु०] जिसपर दृष्टि रखी जाय। निशाना।
(सं.) वह जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप
हो। उद्देश्य।
लक्ष्य-भेद = का० १५७।
[सं० पु०] चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ
(सं.) पर निशाना लगाना या साधना।
लक्ष्य-हीन = का० कु० ७३।
[वि०] (सं.) उद्देश्यहीन, उद्देश्य रहित।
लख = का० कु० १३। का० १३३, १७१, १८६।
[क्रि०] झ० ३९।
(हिं.) लखना क्रिया का पूर्वकालिक रूप। लखकर।
लखत = चि० ५०, ६९, ७५, १६०, १६१,
[क्रि०] १६८, १७१।
(हिं.) लखना क्रिया का सामान्य वर्तमान का-
लिक रूप।
लखता = का० कु० ४४, ४६।
[क्रि०] (हिं.) लखना क्रिया का एकरूप। देखता।
लखहु = चि० ५७, ७२, ७३, १५६।
[क्रि०] (ब्र.भा.) देखो।
लख्यो = चि० ३१, ४७, ५१, ५३, ५४,
[क्रि०] १५२।
(ब्र. भा.) देखा।
लखात = चि० ३१, ४७, ४९, १०१, १४६,
[क्रि०] १५२, १५४, १५९, १६०, १६१,
(ब्र.भा.) १६८, १६९।
दिखात।
लखाती = चि० ७१।
[क्रि०] (हिं.) दिखाती।
लखाय = चि० ३३, ५२।
[क्रि०] लखाना क्रिया का पूर्वकालिक रूप,
(हिं.) लखा कर।
लखायो = चि० १५९।
[क्रि०] लखाना क्रिया का पूर्णभूतकालिक
(हिं.) रूप। दिखाया।
लखि = चि० १५, २८, ३२, ४२, ५३, ५४,
[पूर्व० क्रि०] ६४, ६८, ६९, ७१, ७२, ७४, ९१,
(हिं.) ९८, १५०, १५२, १६०, १६१,
१६९।
लखकर।
लखिहौं = चि० ३८।
[क्रि०] लखना क्रिया का भविष्यत् कालिक
(हि.) रूप।
लखु = चि० ३४।
[क्रि०] लखना क्रिया का आज्ञार्थक रूप।
(ब्र. भा) देखो।
लखे = चि० २२, ५४, ५६, ५८, ६१, ७५,
[क्रि०] १५७।
(हि.) लखना क्रिया का प्रेरणार्थक रूप। देखे।

लखै = चि० १४, ४७, ५१, ६३, ६५।
[क्रि०] (हि.) लखना क्रिया का रूप।

लखौ = चि० १०१।
[क्रि०] (व्र.भा.) देखो।

लगत = चि० १७९।
[क्रि०] (व्र. भा.) लगना क्रिया का सामान्य वर्तमान कालिक क्रिया का रूप।

लगता, लगती = आं० २०। क० १४। का० कु० १६। का० ३६, ४५, ५०, ५२, ८२, ९०, ९१, १५०, १५८, १६२, १८६, २१५, २५८, २६०, २९४। म० २०। ल० ३८, ५०।
[क्रि०] (हि.) लगना क्रिया का एक रूप।

लगन = का० १३. १५, १७, २४, २७, ३१, ३३, ७३, २८४। म० ५।
[सं० स्त्री०] (हि.) किसी काम या व्यक्ति की ओर ध्यान लगाना, लौ, स्नेह।

लगना = आं० २ बार। क० २ बार। का० कु० १ बार। का० २७ बार। चि० १७ बार। भ० २ बार। म० १ बार। ल० ४ बार।
[क्रि०] (हि.) सटना, या जुड़ना, मढ़ा जाना, या जड़ा जाना। किसी आधार पर रुकना, क्रम से सजाना, जान पड़ना, चुनचुनाहट आदि मालूम पड़ना, कार्य में रत होना।

लगा-लगा = भ० ५१।
[क्रि०] (हि.) लगाना क्रिया का पूर्वकालिक रूप। लगा लगा कर।

लग्यो = चि० ९, ४२, ५९, ७३, ९९।
[क्रि०] (व्र.भा.) लगना क्रिया का भूतकालिक रूप।

लगी = का० कु० १८।
[क्रि०] (हि.) लगना क्रिया का भूतकालिक रूप।

लघिमा = भ० ४२।
[सं०स्त्री०] (सं.) लघु का भाव, लघुता। सिद्धियों में से एक।

लघु = आं० ४४, ७९। का० ५, ३७, ४७, ५०, ८१, ८२, १४८, १५१, १७६, १८०, २२४, २४९। भ० ३४। ल० ३८, ४०, ४३, ४६।
[वि०] (सं.) छोटा, हलका, निःसार, थोड़ा।

लघुतम = का० २५८।
[वि०] (सं.) बहुत ही छोटा या कम। निस्तत्व।

लघुता = का० २५०। ल० २२।
[सं०स्त्री०] (सं.) छोटाई, हलकापन, निस्सारता, कमी।

लघुभ्राता = का० कु० १२०।
[सं० पु०] (सं.) छोटा भाई।

लघु-लघु = का० १७०। ल० २५, ३०।
[वि०] (सं.) छोटा-छोटा, बिलकुल छोटा या बहुत छोटा।

लचकीला = का० २७३।
[वि०] (हि.) सहज में ही झुकने वाला, लचकदार, जो सहज में ही परिवर्तित हो जाता हो. या जिसमें सहज में ही कमी वेशी का होना सम्भव हो।

लजत = चि० ५८।
[क्रि०] (व्र. भा.) 'लजाना' क्रिया का सामान्य वर्तमान कालिक रूप, लजाती है।

लजाइ = चि० २८।
[पूर्व० क्रि०] (व्र.भा) लजा कर।

लजाई = का० कु० १००।
[क्रि०] (हि.) लजाना क्रिया का भूतकालिक रूप।

लज्जा = का० कु० ३५। का० ६४, १३६, १८५।
[सं० स्त्री०] (सं.) चि० ७३। प्रे० २०।
वह मनोभाव जो स्वभावतः या संकोच दोष आदि के कारण दूसरों के सामने सिर उठाने या बोलने नहीं देता, शर्म, मान मर्य्यादा, हया।

लज्जा कर = म० १२।
[क्रि०] (हिं.) लजाना क्रिया का पूर्वकालिक रूप। लज्जा करके।

लज्जावती = का० कु० ३४। भ० ३६।
[वि०] (सं.) लज्जाशीला, लजवंती पुष्प।

लज्जा-सा = भ० ३६।
[वि०] (सं.) लज्जा के समान।

लज्जित = क० २७ । का० कु० १२३ । झ० ३७ ।
[वि०] (सं.) लजाया हुआ, वह जो लजाता हो ।

लजीली =का० कु० ३८ । का० १४२ ।
[वि०] जिसे स्वभावतः शीघ्र ही लज्जा आती हो,
(सं.) लज्जाशीला ।

लज्जे =झ० ३६ । म० २३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) लज्जा का सम्बोधन रूप ।

लट =आं० ३८, ६० ।
[सं० स्त्री०] (हि.) केशपाश, उलझे हुए बालों का समूह ।

लटकना =का० कु० १ बार । का० ३ बार ।
[क्रि०] प्रे० १ बार ।
(हि.) किसी ऊपरी आधार के सहारे नीचे की ओर झूलना । झुकना, काम का अधूरा पड़ा रहना ।

लड़ =का० २५९ ।
[सं० स्त्री०] एक ही तरह की चीजों की श्रेणी या
(हि.) माला, रस्सी या डोर के कई तारों में का एक तार । लर ।

लड़के =का० १९६ ।
[सं० पु०] बालक, पुत्र या बेटा ।

लड़ती =ल० ५१ ।
[क्रि०] 'लड़ना' क्रिया का एक रूप ।
(हि.) संघर्ष करती ।

लड़ना =का० ८१ । झ० ८८ ।
[क्रि०] भिड़ना, झगड़ा या तकरार करना, टक-
(हि. राना, सफलता के लिए विरुद्ध प्रयत्न करना ।

लड़ाइयाँ =का० कु० ११२ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) लड़ाई का बहुवचन ।

लड़ाई =चि० ४१ । म० २४ ।
[सं० स्त्री०] लड़ने का भाव या क्रिया । संग्राम ।
(हि.) झगड़ा, अनबन ।

लड़ियाँ =का० ११५ ।
[सं० स्त्री० दे० 'लड़ ।'
(हि.)

लड़ी =का० कु० १० ।
[सं० स्त्री० (हि.) दे० 'लड़ ।'

लता =क० १७ । का० कु० ३४, ३८, ४१,
[सं० स्त्री०] १०५ । का० ७२, ७८, ८६, १४९,
(हि.) १८२ । चि० ३, २२, ५७, १५० ।
झ० ५८ । म० १६ ।
जमीन पर फैलने या किसी आधार पर चढ़नेवाला कोमल पतला पौधा, बेल ।

लताओं =का० कु० ३९ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) लता का बहुवचन रूप ।

लतादल =क० १४ ।
[सं० पु०] (वि) लताओं के पत्ते ।

लतापत्र =का० कु० ६८ ।
[सं० पु०] (सं.) पेड़-पत्ते, जड़ी बूटी, रद्दी चीजें ।

लतायें =का० कु० १० । चि० ११ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'लताओं ।'

लता-ललित =का० कु० १८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) ललित या सुन्दर लता ।

लतावृत्त =का० २४७ ।
[सं० पु०] (सं.) लता और पेड़ पौधा ।

लतासमान =का० ४६ ।
[वि०] (हि.) लता की तरह सुकोमल ।

लता-सी =का० कु० १०० ।
[वि०] (हि.) लता के समान ।

लतिका = का० कु० १२५, । का० ६४, १५१,
[सं० स्त्री०] २६५ । चि० १, ५७ । प्रे० ३ । ल०
(सं.) १९, ३२ ।
छोटी लता । लतर ।

लतिकाओं = का० १४९ । ल० २९ ।
[सं स्त्री०] (हि.) 'लतिका' का बहुवचन ।

लतिका-लास = का० ८६ ।
[सं० पु०] लतिकाओं का नाच, हवा के झोंके से
(सं) झूमती हुई लतिकायें ।

लतिका-सी = का० ९७, १४२, १५३ ।
[वि०] छोटी लता के समान, कोमलता का
(सं.) सूचक ।

लद गई = का० ९४ ।
[क्रि०] 'लदना' क्रिया का भूतकालिक रूप ।
(हि.) भार से पूर्ण हो गयी ।

लदा = का० कु० १५। झ० १६। प्रे० २५।
[क्रि०] (हि.) लद गया।

लदि = चि० १५१।
[क्रि०] (हि) लदकर, पूर्वकालिक रूप क्रिया 'लदना'।

लदे = का० २७८।
[क्रि] (हि.) लद गये।

लथेड़ना = म० २।
[क्रि०] (हि.) धूल-मिट्टी लगाकर गंदा करना, जमीन पर घसीटना, विवाद में विपक्षी को हरा देना।

लपट = का० कु० ७५। म० १९।
[सं० स्त्री०] (हि.) आग की लौ, गरम हवा का झोंका। आँच की लौ।

लपटत = चि० १५।
[क्रि०] (हि.) 'लपटना' क्रिया का सामान्य वर्तमान कालिक रूप। झगड़ा करता है। लगता है।

लपटाई = चि० १५८।
[क्रि०] (हि.) लपटा लिया, लपटाना क्रिया का भूत कालिक रूप।

लपट्यो = चि० २१।
[क्रि०] (ब्र.भा.) लपट गये।

लपटि = चि० ११, १२।
[पूर्व०क्रि०] (हिं.) लपट कर।

लपटि-लपटि = चि० १३।
[पूर्व०क्रि०] (हिं.) बार-बार लपट कर।

लपटी = चि० २२, ६२।
[क्रि०] (हिं.) लपट गयी।
[वि०] (हिं.) लपटी हुई।

लपटों = का० २८१।
[सं०] (हिं.) लपट का बहुवचन।

लप-लप = ल० ५१।
[क्रि०वि०] (हिं.) बार-बार लप-लप करती हुई या लचकती हुई।

लब्ध = का० २०८।
[वि.] (सं.) प्राप्त, मिला हुआ।

लय = का० ११, ७४, १९१, १९३, १९५, २५२, २७३।
[सं०] (सं.) समाना, विलीन होना, सृष्टि का विनाश या प्रलय, (स्त्री०) गीत गाने का ढंग या धुन, संगीत में ताल का निर्वाह।

लय-सीमा = ल० ४९।
[सं०स्त्री०] (सं.) लय की सीमा या प्रलय का घेरा।

लयो = चि० १८४।
[क्रि०] (ब्र.भा.) लिया, 'लेना' क्रिया का पूर्णभूतकालिक रूप।

ललक = का० १०६, १९१, २५९।
[सं० पु०] (हिं.) ल० ३५।
लालसा, लालच।

ललकारना = का० कु० १२५।
[क्रि०] (हिं.) अपने साथ लड़ने के लिए या किसी पर आक्रमण करने के लिए चिल्ला कर बुलाना, कहना। प्रचारण।

ललकारा = आं ११। का० २०१।
[क्रि०] (हिं.) 'ललकारना' क्रिया का भूत कालिक रूप।

ललकों = ल० ४८।
[सं० पु०] (हिं.) ललक का बहुवचन।

ललचना = आं० ७७।
[क्रि०] (हि.) लालच करना, लालसा से अधीर होना।

ललचाई = ल० १७।
[क्रि०] (हिं.) 'ललचना' क्रिया का भूतकालिक रूप, ललचाना क्रिया का रूप।

ललचाते = का० ८६।
[क्रि०] (हिं०) 'ललचाना' क्रिया का सामान्य भूतकालिक रूप।

ललचान = चि० ६।
[सं० पु०] (ब्र. भा) ललचाने की क्रिया, वह जिसे देखकर लालच आवे।

ललचावत = चि० ५६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) ललचाने की क्रिया करना, ललचाता है।

ललना = चि० १६२।
[सं०स्त्री०] (सं.) सुन्दर स्त्री।

ललाई = ल० २०, ३२।
[सं०स्त्री०] (हिं.) लाल होने का गुण, लाली।

ललाट = का० ५। चि० ४७।
[सं०पु०] (सं.) मस्तक, माथा।

ललाम = का० कु० ८९। का० १३९। चि० २।
[वि०] (सं) रमणीय, सुन्दर, श्रेष्ठ।

ललित = का० ८६, १६५। चि० ५, ७१, ७३।
[वि०] (सं.) सुन्दर, प्रिय, सुकुमारता का लावण्य मनोहर अंग भंगी।

ललित-कला = का० ५१।
[सं० स्त्री०] (सं.) वह कला जिसके अभिव्यञ्जन में सुकुमारता और सौन्दर्य की अपेक्षा हो।

ललित-गान = का० १४५।
[सं०पु०] (सं.) सुन्दर एवं मनोहर संगीत।

ललित-लालसा - आ० १०९।
[सं० स्त्री०] (सं) वह लालसा या इच्छा जिसके मूल में सौन्दर्य भरा हो।

ललिता = का० कु० २८, १००। चि० ६७, ७१, ७३, ७४, ७५।
[वि०] (सं.) सुन्दर, मनोहारी, रम्य।

ललिता-सी = का० ९४।
[वि०] (सं.) ललिता की तरह, सौन्दर्य सूचक शब्द।

ललिताहु = चि० ७५।
[सं०स्त्री०] (ब्र.भा.) ललिता को।

ललिताहूँ = चि० ७१।
[सं०स्त्री०] (ब्र.भा.) ललिता भी।

लली = चि० १८२।
[सं० स्त्री०] (हि.) लड़की, या उसके लिए प्यार सूचक शब्द, नायिका, प्रेयसी।

लव = चि० २८।
[सं० पु०] (सं.) बहुत थोड़ी मात्रा, दो कोष्ठा छत्तीस निमेष का समय।

लवमीप लवंगे चि० १३२।
[सं० पु०] (सं.) लवंग पर निमेष मात्र भी।

लवलीन = चि० १८९।
[वि०] (सं.) तन्मय, तल्लीन, मग्न।

लसत = चि० ४५, ७२, १६०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) 'लसना' क्रिया का सामान्य वर्तमान कालिक रूप। शोभित होता है।

लसैं = चि० १०२, २२।
[क्रि०अ०] (ब्र.भा.) लसै का बहुवचन।

लसै = चि० ७१, ९८, १३९, १४६।
[क्रि०] (ब्र भा.) दे० 'लसत'।

लहत = चि० १४९, १५४, १६५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) 'लहना' क्रिया का सामान्य वर्तमान कालिक रूप, प्राप्त करता है।

लहर-से = आं० १८।
[वि०] (हि.) लहर के समान।

लहराती = का० कु० ३८।
[क्रि०] (हि.) लहराना क्रिया का सामान्य वर्तमान रूप। फहराती।

लहरि = चि० ३३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) लहराना क्रिया का पूर्वकालिक रूप, लहरकर या फहर कर।

लहरियाँ = का० १४, १२१। झ० २२, ३९।
[सं० स्त्री०] (हि) छोटी-छोटी लहरों।

लहरियों = का० १३, २३।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'लहरियाँ'।

लहरी = आं० २४। का० कु० ३६, ५४। का० ५, ५०, १०९, २२१, २२३, २३३। चि० ४७। झ० १५, ३४, ३५, ५५, ७९। ल० २५।
[सं० स्त्री०] (हि.) छोटी लहर, या तरंग।

लहरीली = ल० ५९।
[वि०] (हि.) लहराने वाली, फहरानेवाली।

लहरी-लीला = प्रे० १२।
[सं० स्त्री०](हि) लहरियों की क्रीड़ा या खेल।
लहरी-सी = प्रे० १७।
[वि०] (हि.) लहरी के समान।
लहरी सों चि० ६३।
[वि०] (ब्र. भा.) दे० 'लहरी सी'।
लहरे, लहराना आं० ८, २३, ५६। क० ८। का० १८,
[क्रि०] ३६, १५२, १६५, २२०, २४१, २४६,
(हि.) २५२, २१२। चि० १२, २९।
झ० ६१।
'लहराना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप,
फहरे।
लहरैं = चि० ७१।
[सं स्त्री०](ब्र.भा.) दे० 'लहरें'।
लहरों = का० कु० ५७। का० ३, ३४, ६३, ६८,
[सं० स्त्री०] ६९, ९४, ६७, १०१, १२३, १६७।
(हिं.) ल० २०, ३४, ३७।
नदी आदि के लहर उठनेवाली जलराशि,
तरंग, उमंग, पीड़ा का वेग।
लहरों-सदृश = ल० ६९।
[वि०] लहरों के समान, चंचलता का सूचक
(हि.) शब्द।
लहरों-सा = का० कु० ५७। का० ८, ५४, ८५,
[वि०] १८५, २०९, २४५, २४६। ल० ३४।
(हि.) लहरों के समान।
लह-लहे = का० ६, २६।
[वि०] (हि.) हरे-भरे, प्रफुल्लित।
लहि = चि० १, २७, २८, ३६, ४६, ५०,
[क्रि०] ७४, १५२, १६०, १६१, १६९।
(ब्र. भा.) 'लहना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप
लहकर, शोभित होकर।
लह्यो = चि० १८३।
[क्रि०] (ब्र भा.) लह गया या ठीक हो गया।
लहि = का० कु० ३८। चि० ४१।
[क्रि० अ०] लह क्रिया का पूर्वकालिक रूप,
(ब्र. भा.) लहकर।
लहिजात = चि० १६५।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्राप्त हो जाता है।
लहियो = चि० ६२।
[क्रि०] 'लहना' क्रिया का भविष्यत् कालिकरूप,
(ब्र. भा.) लहेगा, प्राप्त होगा।
लहू = का० १११।
[सं० पु०] (हिं) रक्त, खून।
लहे = का० कु० ४०। चि० ६७, १०१,
[क्रि०] १६७।
(हि.) प्राप्त हुए। चिपक गये।
लह्यो = चि० ३५, ९१।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्राप्त हो गया।
लहै = चि० १५, २२, १०५, १६६।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्राप्त हो।
लहौं = चि० १६५।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्राप्त करता हूँ।
ला = का० ७७।
[क्रि०] (हिं.) लाना क्रिया का आज्ञासूचक रूप।
लाँघ कर = ल० ४१
[क्रि०] (हिं) लाँघना क्रिया का पूर्वकालिक रूप।
लाघव = का० १८२।
[सं०स्त्री०] (सं.) कमी, छोटाई।
लाञ्छन = चि० २८। प्रे० २३।
[सं० पु०] (स.) दोष, कलंक।
लांछित = क० ३०। चि० २८।
[वि०] (सं.) जिसे लांछन या कलंक लगा हो, कलंकित।
लाइ = चि० १५१।
[क्रि०] (ब्र.भा.) लाकर, पूर्वकालिक रूप।
लाई = ल० १९, ३२।
[क्रि०] (हिं.) लाना क्रिया का पूर्णभूत कालिक रूप।
लाओ = झ० ६४।
[क्रि०] (हिं) लाना क्रिया का आज्ञा सूचक रूप।
लाओगे = का० १३३।
[क्रि०] लाना क्रिया का भविष्यत् कालिक
(हिं.) रूप। ले आओगे।
लाखों में = आं० २०।

[सं० पु०] (हिं) बहुतों में।

लागत = चि० १७६।
[क्रि०] (व्र.भा.) 'लगना या लागना' क्रिया का सामान्य
[सं०स्त्री०] वर्तमान रूप, लगता है। किसी कार्य
(हिं.) की तैयारी में होने वाला व्यय।

लागी = चि० ५९, ६०, ६८, ७०।
[क्रि०] (व्र.भा.) 'लगना' क्रिया का पूर्णभूत रूप।

लाग्यो = चि० १६१।
[क्रि०] (व्र. भा.) लग गया, पूर्णभूत रूप।
[सं० पु०] 'लघु' भाव, लघुता, कमी, हाथ की
(सं) सफाई।

लाज = चि० ४१। का० २०, २४, २५, १७०,
[सं० स्त्री०] १८३, १८४।
(हि.) दे० 'लज्जा'।

लाजै = चि० ५५।
[क्रि०] (व्र. भा.) लाज करती है।

लाजौहैं = चि० ३, ५६।
[वि०] (व्र.भा.) लजानेवाली या, लाज करती हुई।

लातन = चि० १०५।
[सं० पु०] हि) लातों या पैरों।

लाता = आं० १८, ७१। का० ३६। भ० ५९।
[क्रि०] (हि.) 'लाना' क्रिया का सामान्य भूत रूप।

लाता-सी = का० १३२।
[क्रि० वि०] (हि.) लाती हुई सी।

लाद लिया = का० कु० १२।
[क्रि०] (हि.) 'लादना' क्रिया का पूर्णभूत रूप। बोझा
किसी दूसरे पर रख दिया।

लाभ = चि० ५२, ६२। म० ८।
[सं० पु०] हाथ में आना, व्यापार आदि में होने
(सं.) वाला मुनाफा।

लाय चि० १७१, १७२, १८५।
[क्रि०] (व्र. भा.) लाना क्रिया का पूर्व कालिक रूप।

लायक = चि० १८४।
[वि०] (अ.) उचित, उपयुक्त, सुयोग्य, समर्थ।

लाया = आं० ४०। का० २९१। चि० १८४।
[क्रि०] प्रे० १३।
(हि०) लाना क्रिया का पूर्णभूत रूप।

लाये = का० १६३।
[क्रि०] (हि) दे० लाया'।

लायो = का० २८१, २८६।
[क्रि०] (व्र. भा.) दे० 'लाया'।

लाल = आं० ३९। का० कु० ४६। का०
[वि०] (हिं.) २३५। चि० ९। म० ५। ल० ५१।
[सं० पु०] (हिं.) रक्त वर्ण का। प्यारा पुत्र।

लालन = का० २४३।
[सं० पु०] (हिं.) लाल का बहुवचन रूप।

लालसा = का० २८, ५२, ११६, १३९, १५९,
[सं० स्त्री०] १६४, २३९, २६१, २६८। भ० १६।
(सं.) प्रे० ५। ल० ३०, ७०।
प्राप्त करने की उत्कट इच्छा, लिप्सा।

लालसिंह = ल० ५१।
[सं० पु०] (सं.) एक व्यक्ति विशेष का नाम।

लालिमा = का० कु० ३०, ३६। का० १८३।
[सं० स्त्री०] चि० १६४।
(हिं.) लाल होने का भाव, लाली।

लाली = आं० ११, ६६। का० कु० ४५, ७९।
[सं० स्त्री०] का० ६९, १००, १०३, १३९, १७१,
(हिं.) २८१। चि० १४७। ल० ३०, ४२,
६०।
लाल होने का भाव, लालपन, प्रतिष्ठा।

लावण्य = प्रे० १८।
[सं० पु०] सरस सुन्दरता। लवण या नमक का
(सं.) भाव या धर्म। नमकीनपन।

लावण्य शैल = आं० २०।
[सं०पु०] सौन्दर्य का पर्वत नमक का
(सं.) पहाड़।

लावने = चि० ४१।
[क्रि०] (व्र. भा) लाने।

लास = का० १६०, २९४।

[सं०पु०] (सं.) नृत्य, नाच।

लिखते-लिखते = का० कु० ५१।

[अव्य०] (हि.) बार-बार लिखने की क्रिया।

लिखना = आं० ४५। का० कु० ७६, ८१। का०
[क्रि०] ३८, ६३, १०६, १६७। चि० ४८।
(हि.) भ० ४४। म० ९।
लिपिबद्ध करना, चित्रित या अंकित
— करना, काव्य रचना करना।

लिपट गई = का० कु० २४,१२४,१२५। का० १७६।
[क्रि०] (हिं.) लिपटना क्रिया का पूर्ण भूतकालिक रूप।

लिपटती = क० १४। का० ९७।
[क्रि० (हिं. लिपटना क्रिया का सामान्य भूतकालिक रूप।

लिपटा = का० कु० ६३। का० ४६, १०३,
[क्रि०] १४३, १५२, १६८।
(हि.) लिपटना क्रिया का पूर्ण भूतकालिक रूप।

लिपटा-लिपटा - भ० २१।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) बार-बार लिपटा कर।

लिपटी = का० कु० ७५। का० १२१। भ० २२,
[क्रि०] (हि) दे० 'लिपटा'।

लिपटें = आं० ४८। का० १५१। भ० २२।
[क्रि०] (हि.) लिपटना क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

लिपि = का० ६४। चि० १६८। प्रे० २०।
[सं० स्त्री०] अक्षरों या वर्णों के चिन्ह, वर्णमाला
(सं.) लिखने की प्रणाली।

लिप्सा = का० कु० ८३।
[सं०स्त्री०] (सं.) पाने की इच्छा।

लिया = आं० ५०। क० १३, १८, २२। का०
[क्रि०] १६२, २०९, २८५। प्रे० ९, १०,
(हि.) ११, १२, २३, २५।
ग्रहण किया।

लिया है = का० ५४।
[क्रि०] (हि.) लेना क्रिया का पूर्णभूत कालिका रूप।

लिये = आं० १ बार। क०५ बार। का० कु० ३
[क्रि० अ०] बार। का० २३ बार। चि० ७ बार।
(हि.) म० ३ बार। ल० ३ बार।
दे० 'लिया'।

लियो = का० कु० ४९। चि० ३४, ३५, ७३,
[क्रि०] १५९, १६३।
(ब्र. भा.) लिया।

लिवा चलूँगा = का० २२०।
[क्रि०] 'लिवा चलना' क्रिया का भविष्यत कालिक
(हि.) रूप। साथ लेकर चलूँगा।

लीक = का० २५१।
[सं०स्त्री०] (हि) लकीर, रेखा, पंगडंडी, रूढ़ि।

लीजिए = का० कु० ६। चि० १७५।
[क्रि०] (हि.) लेना क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

लीजे = का० कु० ६। चि० ७०, १८४।
[क्रि०] (हि.) दे० 'लीजिये'।

लीजो = चि० १७६।
[क्रि०स०](ब्र.भा.) दे० 'लीजिये'।

लीन = का० १४, १५, १६७, १७७, १९५,
[वि०] २५७। चि० ५१। भ० ३९।
(सं.) समाया हुआ, काम में लगा हुआ, तन्मय।

लीना = आं० ७९।
[वि०] (सं.) दे० 'लीन'।

लीने = चि० १७१।
[क्रि०] (ब्र.भा.) 'लेना' क्रिया का भूत कालिक रूप।

लीन्हे = चि० ६८।
[क्रि०] (ब्र.भा.) 'लेना' क्रिया का भूत कालिक रूप।

लीन्हो = चि० ५८, ६०, ६४, ६५, ६६, ६७,
[क्रि०] ६८, १५६।
(ब्र. भा.) लेना क्रिया का पूर्णभूत कालिक रूप,
ले लिया।

लीन्ह्यो = चि० ६५, १४७।
[क्रि०] (ब्र.भा.) दे० 'लीन्हों'।

लीला = का० कु० १, ६। का० ३२, ६३, ७६,
[सं० स्त्री०] १०३, १०४, ११५, १४०, १९०,
(सं.) २५३। चि० २३, ४६, १६१। भ०
१९। प्रे० ३, १८, २३। ल० ३०, ६६
मनोरञ्जन के लिए किया जानेवाला व्यापा
क्रीड़ा, खेल आदि, प्रेम, विनोद। साहित्
में एक भाव, विचित्र काम, अवतारों व
देवताओं के चरित्र का अभिनय।

लुटेरा कर्म = का० कु०, ८८ ।
[सं० पु०] (हि.) लूटने वालों का कार्य ।

लुटे-से = का०, ४५ ।
[वि०] (हि.) लुटे हुए के समान ।

लुढ़कना = भ्रु०, २५ ।
[क्रि०] ऊपर-नीचे चक्कर खाते हुए आगे या
(हि.) नीचे की ओर जाना, ढुलकना ।

लुढ़का = आं०, २८ । ल०, ४८ ।
[वि०] जो लुढ़क गया हो या जिसे लुढ़का
(हि.) दिया गया हो ।

लुप्त = का० कु०, १०६ । का०, २५२ ।
[वि०] (सं.) छिपा हुआ, गुप्त, अदृश्य ।

लुब्ध नयन = का०, ३१ ।
[सं० पु०] लुभाये हुए नयन या ललचायी हुई
(सं.) आँखें ।

लूँगा = का०, १५२ । म०, १७ ।
[क्रि०] (हि.) लेना क्रिया का भविष्यत् कालिक रूप ।

लू = म०, ५ । ल०, ६६ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) गरम और तेज हवा ।

लूट = ल०, ५२ ।
[सं०स्त्री०] (हि) लूटने की क्रिया या भाव ।

लूटती = आं०, १० । का०, ४०, ६५ ।
[क्रि०] 'लूटना' क्रिया का एक रूप बलात् प्राप्त
(हि.) करती ।

लूटना = ल०, १७ ।
[क्रि० सं०] मारकर या डरा धमका कर किसी का धन
(हि.) = छीन लेना, ठगना, मोहित या मुग्ध
करना ।

लूटेंगे = चि०, ७२ ।
[क्रि०] 'लूटने' क्रिया का भविष्यत कालिक
(हि.) रूप ।

लुरि = चि०, २२ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) 'लुरकना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप ।

लू-सा = म०, ११ ।
[वि०] गरम और तेज हवा के समान झुलसा
(हि.) देने वाली गरमी के समान ।

ले = आं०, ४७, ५८, ६६ । क०, २० ।
[क्रि० स०] का०, ३८, ४०, ४७, ४८, २२१,
(हि.) २२५, २२७, २३७, २४४ । म०,१२ ।
ल०, १०, १४, ३७, ४८, ४६ ।
लेना क्रिया का प्रेणार्थक रूप ।

लेइ = चि , ३६, १८६ ।
[क्रि०] 'लेना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप ।
(ब्र.भा.) लेकर ।

लेइहैं = चि०, ३३ ।
[क्रि०](हि.) लेंगे, भविष्यतकालिक रूप ।

लेकर = आं०, ३६, ४४, ४६, ७६ । क०, २१,
[क्रि०] २६ । का०, १४, ६४, १४१, १५०,
(हि.) १५४, १५७, १६१, १७६, १८०,
१६१, २४८, २६४ । प्रे०, ११, २५ ।
ल०, ४०, ४५ ।
'लेना' का पूर्वकालिक रूप ।

लेख = का०, १८० ।
[सं० पु०] किसी विषय पर लिखकर भाव प्रगट
(सं.) करना, लिखावट, लिखी हुई आज्ञा या
आदेश जिसे किसी सरकारी अफसर ने
जारी किया है ।

लेखनी = का० कु०, ७६ । भ्रु० ४४ । म०, ६
[सं०स्त्री०](सं.) कलम ।

लेख-सी = म०, ८ ।
[क्रि० वि०] लिखे हुए के समान, स्थिर, न मिटने
(हि.) वाली ।

लेखा = आं०, ४५ । का०, ५, ४७, २२५ ।
[सं० पु०] ल०, २८ ।
(हि.) गणना, हिसाब-किताब, आय-व्यय
अथवा घटना आदि का विवरण ।
[सं०स्त्री०] रेखा (संस्कृत साहित्य में र ल में
(हि.) अधिक भेद नहीं होता ।

लेखायें = का० कु०, ७६ । का०, २६० ।
[सं० स्त्री०](हि.) रेखायें । लेखा का बहुवचन ।

लेखिके = चि०, १०३।
[क्रि०] 'लखना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप।
(ब्र. भा.) देखकर।

लेखें = का०, २००।
[क्रि०] (हि.) देखें।

लेखो = का०, २७१।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) दे० 'लेखा'।

लेटे = का०, २१३। ल०, ६०।
[क्रि० वि०] (हि.) करवट पड़े हुए। लेटे हुए।

लेत = चि०, १८६।
[क्रि०] 'लेना' क्रिया का सामान्य वर्तमान
(हि.) कालिक रूप।

लेती-सी = का०, १००।
[क्रि० वि०] ग्रहण करती हुई के समान। प्राप्त करती
(हि.) हुई के समान।

लेना = आं०, ३ बार। क०, १ बार। का०-
[क्रि० स०] कु०, ३ बार। का०, २१ बार। चि०,
(हि.) ४ बार, भ्र०, २ बार। म०, ३ बार।
ल०, ३ बार।
अधिकार में करना, ग्रहण या प्राप्त करना, पकड़ना, मोल लेना, खरीदना, अगवानी या अभ्यर्थना करना, भार ग्रहण करना, जिम्मे लेना, सेवन करना।

लेना देना = का०, १८६।
[मुहा०] आवेश में मरने और मारने के लिए
(हि.) तत्पर हो जाना।

लेना-लेना = का०, २०१।
[क्रि० स०] (हि.) पकड़ लेना, अधिकार में कर लेना।

लेलिया = का०, ८४, १७१।
[क्रि० स०] (हि.) पकड़ लिया, अधिकार में कर लिया।

लेलूँ = भ्र०, ५४।
[क्रि०सं०] (हि) ग्रहण या प्राप्त कर लूँ।

ले लेना है = का०, ६३, ६४, ६७, ६६, १००,
[क्रि० सं०] १०४, १०५, १३०, २४२।
(हि.) प्राप्त या ग्रहण कर लेना है।

ले लो = क०, २७ ल०, ५१।
[क्रि०] (हि.) लेना क्रिया का आज्ञार्थक रूप।

लेवै = चि०, १६२।
[क्रि०] लेना क्रिया का सामान्य वर्तमान
(ब्र. भा.) कालिक रूप।

लेश = का०, ६२, २५४। प्रे०, १६।
[सं० पु०] ल०, ५१।
(सं.) अणु, बहुत ही थोड़ा अंश, चिन्ह।

लेहु = चि०, १६६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) लेना क्रिया का आज्ञार्थक रूप, लो।

लैके = चि०, ६, ३८।
[क्रि०] (ब्र.भा.) लेना क्रिया का पूर्वकालिक रूप, लेकर।

लो = क०, १८, २५। का० कु०, ५८।
[क्रि०] का०, ५७, १२८, १८३, २४६।
(हि.) ल०, १०, १६।
दे० 'लेहु'।

लोक = का० कु०, ६३। का०, ७०, ८७,
[सं० पु०] १६६, १६७, १७०, १७१, १७५,
(सं.) १८२, १६३, २३५, २४२, २६१, २६४, २६६। चि०, ४३, १५७, १८३। भ्र०, ३४।
संसार, जगत, भुवन, लोग, जनता।

लोक-अग्नि = का०, २४७।
[सं० स्त्री०] (सं.) संसार की आग, ताप, दुःख।

लोकन = चि०, १७८।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) लोक का बहुवचन रूप।

लोक-पथिक = का०, १२३।
[सं० पु०] संसार पथ में गमन करने वाला यात्री।
(सं.) संसार के सुख दुख को सहन करनेवाला मानव।

लोक-ललाम = का० कु० ५६।
[सं० पु०] (सं.) जन प्रिय, लोक रंजक।

लोग = आं०, ४०। का० कु०, ५१। का०, [सं० पु०] १६६। चि०, १०१, १८३। म०, (हि.) १७।
जनवर्ग।

लोगन = चि०, १७६।
[सं० पु०] (हि.) लोगों, जनता।

लोगे = क०, २७।
[क्रि०] (हि.) लेना क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

लोगों = म०, १२। ल०, १७।
[सं० पु०] (हि.) लोग का बहुवचन।

लोचन = का०, २३५, २५१, २८०। चि०, ३।
[सं० पु०] (सं.) नेत्र, आँख, नयन।

लोटना = का०, १२१। का०, ४६, ८८। चि०, [क्रि० अ०] ३८। भ०, ३३।
(हि.) चीत और पट होते हुए इधर-उधर हिलना। लुढ़कना। कष्ट से करवटें बदलना। तड़पना।

लोटि = चि०, ४२, ६०।
[क्रि० अ०] लोटना क्रिया का पूर्वकालिक रूप।
(हि.) लोटकर।

लोध्र = का०, १८१।
[सं० पु०] (सं.) एक वृक्ष विशेष का नाम (लोध)।

लोनी = चि०, २२, १४७।
[वि०] (सं.) सुन्दर, सुहावनी।

लोप = प्रे०, १७।
[सं० पु०] (सं.) नाश, गायब, अन्तर्द्धान।

लोभ = का० कु०, १३, ६२। चि०, ६५, [सं० पु०] १४३। भ०, ३८, ४४। प्रे०, १०।
(सं.) दूसरे की वस्तु प्राप्त करने की कामना, लालच, लिप्सा।

लोभा = चि०, १५०, १६३।
[क्रि० अ०] हि०) लुभा जाना।

लोभी = का०, ११५। चि०, १४६। भ०, ७४ [वि०] लोभ करने वाला या जिसे लाभ हो,
(हि.) लालची।

लोम = का० कु०, ७७। भ०, ३१।
[सं० पु०] (सं.) रोवाँ, बाल।

लोल = आं०, ८। का०, ८१, २४६, २५२। [वि०] चि०, १, ६३। भ०, २२, ७७।
(सं.) ल०, ६।
हिलता हुआ, बदलता रहने वाला उत्सुक।

लोलुप = का०, १११।
[वि०] (सं.) लोभी, लालची, परम उत्सुक।

लोहा = चि०, १५।
[सं० पु०] (हि.) एक धातु विशेष, जो पृथ्वी के अन्दर से निकाली जाती है। खनिज पदार्थ।

लोहित = का०, २६८।
[वि] (सं.) लाल।
[सं० पु०] (सं.) मंगल ग्रह।

लौं = चि०, १४७, १५८, १८८।
(अव्य०) (ब्र. भा.) तक।

लौटकर = आं०, ८। का०, ११८, १३२, १७८, [क्रि०] २४५, २५७, २५६। भ०, ३६।
(हि.) लौटना क्रिया का पूर्णकालिक रूप।

लौटन लाग्यो = चि०, ६७।
[क्रि०] (ब्र. भा.) लौटने लगे, वापस आने लगे।

लौटना = का०, १६६। ल०, ९।
[क्रि०] (हि.) कहीं से जाकर वापस आ जाना, पीछे की ओर घूमना।

लौटा = आं०, ६६, ७०। का०, १२७, १६४। [क्रि०] लौटाना क्रिया का पूर्णभूत कालिक
(हि.) रूप।

लौटाये = का०, १२३।
[क्रि०] (हि.) लौटाना क्रिया का पूर्णभूतकालिक रूप।

लौटा लूँगा = का०, १५३।
[क्रि०] लौटाना क्रिया का भविष्यत कालिक
(हि.) रूप।

लौह-हिय = का० कु०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) लोहे के समान कड़ा हृदय, दृढ़ हृदय।

व

वंचना = का०, १६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) धोखा । छल ठगना ।

वंचित = आं०, ७८ । क०, ११, २६ । का०, १०२, १६६, २७१ । प्रे०, ४ । ल०, २६, ४४ ।
[वि०] (सं.) जो ठगा गया हो । अलग किया हुआ । हीन । रहित ।

वंचिते = का०, २४८ ।
[वि०] (सं.) दे० 'वंचित' का संबोधन ।

वंदन = चि०, ५८ ।
[सं० पु०] स्तुति, प्रणाम । सरीर पर बनाये हुये
(सं.) तिलक आदि चिन्ह ।

वंन्दनवार = प्रे० १३ ।
[स० पु०] (सं.) तोरण ।

वंदना = का० कु०, ३ ।
[सं० स्त्री०] स्तुति । प्रणाम । अभिवादन । स्तुति-
(सं.) करने का भाव ।

वंश-चरित्र = चि०, ४८ ।
[सं० पु०] कुल का चरित्र । कुटुंबी, पूर्वजों के वे
(सं.) कार्य जिनसे ख्याति या कुख्याति प्राप्त होती है ।

वंशी = का० कु०, ११८ । का०, २२५ । भ०,
[सं० स्त्री०] ५५ । ल०, ५६ ।
(सं.) मुँह से बजाया जाने वाला एक बाजा । बाँसुरी । मुरली ।

वंशीरव = क०, ८ ।
[सं० पु०] (सं.) वंशी की ध्वनी । बाँसुरी की आवाज ।

वक्र = का०, १६० ।
[वि०] (सं.) टेढ़ा । तिरछा । झुका हुआ । कुटिल ।

वक्तृता = का० कु०, १०६ ।
[सं० स्त्री०] वाक पटुता । भाषण देने की योग्यता
(सं.) या शक्ति । व्याख्यान । भाषण ।

वक्ष = का० कु०, ७५ । का०, ६२ । भ०,
[सं० पु०] ६० । ल०, १२, ६६ । का०, २५० ।
(सं.) छाती । सीना । उर-स्थल ।

वक्षस्थल = का०, १६४, १६८, २३३ । ल०, ३१ ।
[सं० पु०] (सं) छाती । उर । हृदय ।

वक्षों = का०, १२५ ।
[सं० पु०] (सं.) वक्ष का बहुवचन ।

वचन = का० कु०, १०१ । का०, ११०, २४४ ।
[सं० पु०] मनुष्य के मुँह से निकलनेवाले सार्थक
(सं.) शब्द । वादा । वाणी । कथन । उक्ति ।

वज्र = का०, २०० ।
[सं० पु०] फौलाद । इन्द्र का एक तीक्ष्ण और
(सं.) कठोर शस्त्र । बिजली । हीरा । भाला ।

वज्र खचित = का०, १६८ ।
[वि०] वज्रमय । वज्र से जड़ा हुआ । अटल ।
(सं.) वज्र लिखित ।

वज्र प्रगति = का०, १६५ ।
[वि०] (सं.) विद्युत-गति, दृढ़ गति ।

वज्रहृदय = प्रे०, ६ ।
[वि०] (सं.) कठोर हृदय । पाषाण हृदय ।

वदन = का० कु०, ३४, ६६, ५१ । का०, ४,
[सं० पु०] ११ । चि०, ५६ ।
(सं.) मुख । मुँह । बात कहना बोलना ।

वदन-विधु = का० कु०, २०० ।
[वि०] (सं.) चन्द्रमा के समान मुख ।

वदान्यता = ल०, ५६ ।
[वि०] (सं.) बहुत बड़ी दानशीलता । मधुर भाषिता ।

वत्स = क०, १५ । का० कु०, १०१, १०२ ।
[सं० पु०] चि०, ६४, ७४, १३७ ।
(सं.) गौ का बच्चा । बछड़ा । बालक । पुत्र ।

वर्त्तमान = का०, १३१, १६५, १६६, २१० ।
[वि०] प्रे०, १३ ।
(सं) जो इस समय हो या चल रहा हो । उपस्थित । मौजूद । विद्यमान । आधुनिक, आजकल का ।

वध = का० कु०, १२१ ।
[सं० पु०] किसी मनुष्य को जान-बूझकर किसी
(सं०) उद्देश्य से मार डालना ।

वधिक = का०, २८, २९ ।

[सं० पु०] वह जो प्राणदण्ड पाने वाले का बध
(सं.) करता है। फाँसी चढ़ाने वाला।
बहेलिया।

वधू = का०, २४।
[सं० स्त्री०] नवविवाहिता स्त्री। दुलहन। पत्नी,
(सं.) भार्या। पुत्र की बहू।

वन = आं०, ४४, ४६। का० कु०, ६६, ६७,
[सं० पु०] का०, ६३, ६६, १५३, १५८, २१७,
(सं.) २६५, २६८, २८१, २६०। चि०,
२८। भ०, १७।
जंगल। बगीचा। जल भवन।

वन-कुञ्ज = क०, २६।
[सं० पु०] (सं.) जंगल। वाटिका। झाड़ी।

वन-कुसुमों = का० १८१।
[सं० पु०] (सं.) जंगल के प्रसून। उपवन के फूल।

वन-पथ = का०, ८१।
[सं० पु०] (सं.) जंगल का रास्ता। उपवन का मार्ग।

वनमाला = का०, २८।
[सं० स्त्री०] (सं.) जंगली फूलों की माला।

वनमिलन = चि०, ५५।
[सं० पु०] (सं.) वन में हुआ मिलन। जंगल में हुई भेंट।

वन-लक्ष्मी = का०, २६२।
[सं० स्त्री०] (सं.) वन की छटा। वन की शोभा।

वन-वन = का०, १५३। प्र०, ६।
[अव्य०] (सं.) एक जंगल से दूसरे जंगल को।

बनवासी = का०, १०२।
[सं० पु०] जंगल में रहनेवाले। बस्ती छोड़ कर
(सं.) वन में रहने वाले निवासी। जंगली।

वन-वैभव = का०, १०१।
[वि०] वन का ऐश्वर्य। जंगल की सम्पदा।
(सं.) वन की शोभा।

वन शोभा = म०, ६।
[सं० पु०] (सं.) वन की छटा। जंगल का सौन्दर्य।

वनस्थली = का०, २३५।
[सं० स्त्री०] (सं.) जंगली स्थान, वनभूमि। वनखण्ड।

वनस्पति = आं०, ७८।
[सं० स्त्री०] (सं.) पेड़ पौधे। जड़ी-बूटी।

वनिता = चि०, ४७। म०, ११।
[सं० स्त्री०] (सं.) नारी। स्त्री। प्रिया। रमणी।

वनिताओं = प्रे०, ७।
[सं० स्त्री०] (सं.) स्त्रियों, नारियों, रमणियों।

वनो = का०, १८२।
[सं० पु०] (हिं.) दे 'वन' (बहुवचन)

वनो-से = का०, १८२।
[सं० पु०] (हिं.) जंगलों के मध्य से।

वन्य देश = चि०, ७४।
[सं० पु०] जंगली प्रदेश। जंगली प्रान्त। जंगली
(सं.) इलाका।

वन्या = भ०, १६।
[वि०] वन में पैदा होने वाला पदार्थ, वनोद्भव।
(सं) जंगली।

वपु = का०, ४६, २८८।
[सं० पु०] (सं.) शरीर। देह।

वय = का०, ७४, २१३। चि०, ७०।
[सं० स्त्री०] (सं.) उम्र। अवस्था।

वर्य = का० कु०, ५१।
[वि०] (सं) श्रेष्ठ। वर। कामदेव।

वर = का० कु०, १०६ का०, ३१, २११,
[सं० पु०] चि०, ४५, ल०, ३६।
(सं.) पति, स्वामी। दुलहा। किसी पूज्य
से प्राप्त सिद्धियाँ। फल।

वर कर्णधार = का०, १५। चि०, ४८।
[सं० पु०](सं.) श्रेष्ठ नाविक।

वरणीय = का०, ३०।
[वि०] (सं.) वरण करने योग्य।

वरदान = का०, २७, ५३, ५७, ६८, १०२,
[सं० पु०] १४८, १५३, १६२, २४३, २८१।
(सं.) किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर
कोई भारी हुई वस्तु या सिद्धि देना।

वरनायक = चि०, ७३।
[सं० पु०](सं.) अधिपति। श्रेष्ठ नायक। कर्णधार।

वररूप-आगरी = चि०, ४७।
[वि०] (सं) अतिशय रूपवती।

वरवीर = चि०, ५२।
[सं० पु०] (सं) श्रेष्ठ वीर।

वरुण = क०, १२। का०, १४, २५, ३६, ६५, ११४।
[सं० पु०]
(सं.) एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति माना गया है। जलेश। सूर्य।

वरुणालय = क०, ३०।
[सं० पु०](सं.)समुद्र। सागर। सिन्धु।

वरुणी = का० कु०, ६२।
[वि०] (सं.) दे० वरुण।

वरुनी = चि०, १७४।
[सं०पु०](ब्र. भा.) भौंह, बरौनी।

वर्ग = का०, १८१, १६६, १३६।
[सं० पु०]
(सं.) एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह। कोटि। श्रेणी। सामान्य धर्म या स्वरूप रखने वाले पदार्थों का समूह। सभा। परिच्छेद।

वर्गों = का०, १८६।
[सं० पु०] (हि.) दे० 'वर्ग', 'बहुवचन'।

वर्जन = चि०, ६६।
[सं०पु०]
(सं.) त्याग। छोड़ना। कुछ करने से रोकना। मनाही मुमानियत।

वर्जित = का० कु०, १०६। का०, १२२।
[वि०] (सं.) निषिद्ध। अग्राह्य। त्यागा हुआ।

वर्ण = का०, १६१, १६६, २६४।
[स० पु०
(सं.) पदार्थों के लाल काले आदि भेदों के नाम। रंग। भेद। प्रकार। संकेत अक्षर। रूप।

वर्णों = का०, ७५।
[सं० पु०] (हि.) वर्ण का बहुवचन।

वर्म = का०, १८। का०, ४६। चि०, ६५।
[सं० पु०] (सं.) कवच। बख्तर। घर। मकान।

वर्ष = चि०, ६३।
[सं० पु०] साल। वृष्टि। सात द्वीपों का समूह
(सं.) या भाग।

वर्षा = आं०, ३५, ५५, ७१। का० कु०, १६, ७३, ११०। का०, २३, ८१, १६६, १७६, १८१, २२३, २२६, २६६, २८१। चि०, १५०। झ०, १५, २०, ३१, ३६। प्रे०, २४। म०, ६।
[सं० स्त्री०]
(सं.) एक ऋतु का नाम। पावस ऋतु। बरसात।

वर्षाऋतु = का०, कु०, १३।
[सं० स्त्री०] बरसात का मौसम। वह ऋतु जिसमें
(सं) वर्षा होती है।

वलि = क०, ११, ३१। का०, १८, २२, २६, २०१।
[सं० स्त्री०]
(सं.) रेखा। लकीर। देवता को चढ़ाई जानेवाली चीज या उसके उद्देश्य से चढ़ाया या मारा जाने वाला पशु। पेट पर की रेखा।

वलि कर्म्म = क०, १३, २४, ३१।
[सं० पु०] (सं.) बलिदान का कार्य।

वलि देना = क०, १०।
[क्रि०] (हि.) देवता को चढ़ाना।

वलि-योग्य = क०, ११।
[सं० स्त्री०] चढ़ाने योग्य। देवता को चढ़ाई जाने
(सं.) योग्य।

वल्कल = का०, २८५। प्रे०, ४।
[सं० पु०] पेड़ की छाल। छाल का वस्त्र, ऋगुवेद
(सं.) की एक शाखा।

वल्कल-वसन = चि०, ५८।
[सं० पु०] (सं.) पेड़ के छाल का वस्त्र।

वल्कल-वसन-विभूषित=चि० ५।
[वि०] (सं.) पेड़ के छाल से विभूषित।

वल्गा = चि०, १६३।
[वि०] (सं.) प्रियतम, प्यारा।

वल्लरियाँ = का०, २६२।

[सं० स्त्री०] (सं.) लतायें। मंजरियां। बल्लियां। एक प्रकार का बाजा।

वसन्त = [सं० पु०] (सं.) क०, १६। का० कु०, १३। का०, १०, ५०, ६३, २४६। चि०, ३६। भ्रं०, २६। प्रे०, १०, ११, १३, १४ १७। साल की छः ऋतुओं में से प्रथम सुहावनी ऋतु। छः रागों में से दूसरा राग।

वसन = [सं० पु०] (सं.) का० कु०, ४५। का०, १०, १४३, १६८, २१२, २६३। वस्त्र। कपड़ा। रहना। स्त्रियों के कमर का एक आभूषण। आवरण। निवास।

वसना = [सं० क्रि०] (सं.) का०, २७७, २८५। निवास करना। स्त्रियों के कमर का एक आभूषण।

वसिष्ट = [सं० पु०] (सं.) क०, २२, २७। एक प्राचीन वैदिक ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र थे। एक ऋषि का नाम। सप्त-ऋषियों में एक ऋषि।

वसुन्धरा = [सं० स्त्री०] (सं.) का० कु०, ६०। पृथ्वी। वसुधा। भूमि। धरती। वसुमती।

वसुंधरे = [सं० स्त्री०] (सं.) चि०, ६७। हे पृथ्वी, हे वसुधा।

वसुधा = [सं० स्त्री०] (सं.) आं०, ५५, ७६। का०, १२७, १६०, १६६, १६८, १७०, १७१, १७५, १८५, १६०, १६८, २०५, २५८, २८८। ल०, १०, १२, १३, ३०, ३१, ३३, ३८। पृथ्वी। भूमि।

वस्तु = [सं० स्त्री०] (सं.) क०, १३, १४। का० कु०, ८०, १०६। का०, १८५, १६४। भ्रं०, ७५। प्रे०, ३। वास्तविक या कल्पित सत्ता सत्य। साधन या सामग्री जिनसे कोई चीज बनी हो। तुच्छ गुणवाला पात्र।

वस्तुत्वदीय = भ्रं०, समर्पण।

[सं० स्त्री०] (सं.) तुम्हारी वस्तु।

वस्त्र = [सं० पु०] सं.) चि०, ३८। कपड़ा।

वह = [सर्व] (हि.) आं, १६। ११ पृष्ठ से ७८ पृष्ठ तक। क०, १०, १२, १३, १५, १८, २८, ३१। का० कु०, ४, ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १४, २२, ३२, ५१। का०, १०१ बार ८ पृष्ठ से २८४ पृष्ठ तक। चि०, १२, १५, ४८, ५३, ५८, ५६, ६०, ६४, ६७, ६८, ६६, ७२, १०१, १७६। भ्रं०, ५। ल०, १६, बार १० पृष्ठ से ६६ पृष्ठ तक।
एक सर्वनाम जिसके द्वारा वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है।

वहन = [सं० पु०] (सं.) आं०, ४८। ल०, ४४, ४५। सहना, लादना या ढोने क्रिया का भाव।

वहाँ = [अव्य०] (हि.) क०, ११, १५, १७। का०, कु० १८, ३१ का०, १८, ३०, ३३, ७७, ११६, १२५, १८१, १८२, १६७। म०, ४, ५, १६, २३। ल० १४, ४८। उस जगह।

वही = [सर्व०] (हि.) क०, १७। का० कु०, ५, ६, २५, ३०, ४७। का०, ६६, ६७, १८३, २०७, २१०, २८१, २८२। भ्रं, ११। म०, ७। ल०, २१, ४२, ५३, ५५, ६७, ७५। उसी जगह।

वहि = [सं०] (हिं.) चि०, १२, ३६, ६८, ७०, १६६। उस, वह।

वही = [सर्व०] (हि.) आं०, ७५। का० कु०, ५, ६, ७, २५, ३०। का० १५, १६, १८, ७२, ६०, ६१, ६२, ११६, ११७, १२०, १२२, १२६, १२८, १३०, १३१, १३३, १३४, १३५, १४१, १६२, १६६, १७७, १८२, १८३, २०१, २०२, २१०, २१८, २२३, २२४, २५७।

चि०, १२, १८३, प्रे०, २। म०, ६, ४, १०, २१।

उसी, उन्हीं।

वहै = चि०, ११, ३३, ३६, ४८ ५६, १६८, १८४।
[अ०] उसी।
(ब्र. भा.)

वह्नि = का० ३२, १६६।
[सं०स्त्री०] (सं.) अग्नि, आग।

वह्नि-शिखा = का० २१४।
[सं०स्त्री०] (सं.) आग की लौ।

वांछित = भ्रू० ३७, ५१।
[वि०] (सं.) चाहा हुआ। अभिलषित।

वा = चि०, १४५। म०, २१।
[अव्य०] (सं.) या, अथवा।

वाक्य = का० कु०, १०२, ११७। का० १६५।
[सं० पु०] (सं.) व्याकरण के अनुसार क्रम से लगा हुआ शब्द समूह जिसके द्वारा कोई अभिप्राय प्रकट हो।

वाड़व-ज्वाला = आं०, १०।
[सं० स्त्री०] (सं.) बड़वाग्नि की ज्वाला।

वाड़व-वह्नि = का० ८५।
[सं० स्त्री०] (सं.) बड़वाग्नि। वह कल्पित अग्नि जो समुद्र में जलती हुई मानी गई है।

वाणी = का० कु०, ४८। का०, ११६, १३५, १४०, १६२, २१२, २२०, २४८, २४६, २६२। चि०, ६७। भ्रू० ४५। ल०, ३२, ७१।
[सं० स्त्री०] (सं.) सरस्वती, मुख से निकले हुए सार्थक शब्द। वचन। जीभ, रसना, स्वर।

वाणों = का०, १६४, २००।
[सं० पु०] (सं.) छड़ी के आकार का सिरे पर फल लगा हुआ वह अस्त्र जो धनुष की सहायता से चलाये जाते हैं। तीरों।

वात = का०, २०१।
[सं० पु०] (सं.) वायु, हवा। वैद्यक के अनुसार वह वायु जिसके विकार से शरीर में अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

वात चक्र = का०, ६२, २५६, ल० २४, ३७।
[सं० पु०] (सं.) ज्योतिष में एक योग। ववंडर।

वातायन = का०, १२, १४६। ल० २२।
[सं० पु०] (सं.) झरोखा। खिड़की। एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम।

वातावरण = का०, ११६।
[सं० पु०] (सं.) वह हवा जिसने पृथ्वी को चारो ओर घेरा है। आस-पास की परिस्थिति जिसका जीवन या अन्य बातों पर प्रभाव पड़ता है।

वात्सल्य = ल०, १२।
[सं० पु०] (सं.) वह स्नेह जो माता पिता का सन्तान पर होता है।

वाद = ल०, १२।
[सं० पु०] (सं.) किसी तथ्य या तत्व के लिए होने वाला तर्क। शास्त्रार्थ। तत्वज्ञों द्वारा निश्चित कोई मत या सिद्धान्त।

वाधा-विघ्न-आपदा = ल०, ७८।
[सं०स्त्री०] (सं.) रुकावट, अवरोध, विपत्ति।

वाम = का०, १६०, २७७। म०, १८। ल०, ५३।
[वि०] (सं.) बायाँ। दाहिने का उल्टा। प्रतिकूल, विरुद्ध। टेढ़ा, वक्र।
[सं० पु०] (सं.) कामदेव, वामदेव, वरुण। कुच, स्तन।

वायु = का०, ४१। चि०, २८, ५५, १४५। ल०, ४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) हवा।

वायु-तरंग = का०, १८२।
[सं० स्त्री०] (सं.) वायु लहरियाँ।

वायुमण्डल = भ्रू०, ५६।
[सं०पु०] (सं.) आकाश।

वार = का० कु०, ४५, ६६। म०, ६। ल०, ३७।
[सं० पु०]

(सं.) जल, पानी, युद्ध, समर, अवसर, रुका. आवरण ।

वारण = का०, २००।
[सं०पु०] (सं.) किसी बात को न कहने का संकेत या आज्ञा। मनाही। रोक, बाधा। कवच। हाथी। अंकुश।

वार-पार = का०, १५६, २५१।
[सं० पु०] (हि.) आर-पार।
[अव्य०] (हि.) इस किनारे से उस किनारे तक।

वारि = चि०, १४, २४, १५८, १६३।
[सं पु०] (सं.) जल, पानी, तरल पदार्थ।
[सं० स्त्री०] (सं.) वाणी, सरस्वती। कलसा।

वारिद = का० कु०, ५२।
[सं०पु०] (सं.) मेघ, बादल।

वारिद पुञ्ज = का० कु०, ११३।
[सं०पु०] (सं.) बादलों का समूह।

वारिधारा-सी = का० कु०, ११५।
[वि०] (हि.) जल की धारा के समान।

वारी = आं, २०। चि०,५६, ५८, ६५।
[सं०स्त्री०] (सं.) न्यौछावर हाथी के बाधने जंजीर।

वारुणी = चि०, १०१।
[सं० स्त्री०] (सं.) मदिरा, शराब, वरुण की पत्नी। एक पर्वत का नाम। वृन्दावन के एक कदंब का रस, जो वरुण की कृपा से बलराम के लिए निकला था।

वारें = चि०, ६५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) निछावर करें।

वारो = चि०, ५७, १६०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) निछावर करें।

वाला = आं०, ६२। का०, १२१, १६६। प्रे०, १३। ल०, ४७।
[प्रत्यय] (हि.) दे० वाली।

वाली = का०, १०२, ११५, ११६, १६४, २८४ २८६। ल०, १४, २०, ४४, ४८, ६६।
[सं० पु०] (सं.) सुग्रीव का बड़ा भाई। कानों में पहनने का आभूषण। कर्तृत्व, स्वामित्व, सम्बन्ध आदि का प्रत्यय।

वाले = आं०, २१, ६५, ७५। का०, २५६, २६२, २७०, २७१। ल०, ३८, ४२, ४५, ७७।
[प्रत्यय] (हि.) कर्तृत्व, स्वामित्व, सम्बन्ध आदि का सूचक प्रत्यय।

वासना सरिता = का० १०।
[सं० स्त्री०] (सं.) वासना रूपी नदी।

वासर = का० कु०, ३५।
[सं० पु०] (सं.) दिन, दिवस।

वासित = म०, १६।
[वि०] (सं.) सुगंध से युक्त या सुगंधित किया हुआ।

वासी = का०, १६। चि०, १५३।
[सं० पु०] (सं.) किसी स्थान पर रहने या बसने वाला।

वास्तव = का०, १६२।
[वि०] (सं.) यथार्थ, प्रकृत, असली।

वास्तविक = प्रे०, २४।
[वि०] सं.) असली, सच्चा।

वास्तविकता = का०, २११।
[सं० स्त्री०] (सं.) असलियत, सचाई।

वाह गुरू = का० कु०, १२०।
[सं० पु०] (हि.) सिक्खों के गुरु का सम्बोधन।

वाहद्रथ = का० कु०, ११८।
[सं०पु०] (सं.) एक राक्षस का नाम।

वाहन = का०, ८७। चि०, १६३।
[सं० पु०] (सं.) सवारी।

वाहरी = ल०, ६७।
[अव्य०] (हि.) बाह्य।

वाल्मीकि = चि०, ४८।
[सं० पु०] (सं.) एक प्रसिद्ध मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि कवि हैं।

वाष्प = का०, २०, २६३।
[सं०पु०] (सं.) भाप, आँसू।

वास = का० कु०, ३३, ११३। का०, ३१।
[सं० पु.] प्रे०, २१।

(सं०) निवास, रहना। घर, मकान।

वासना = का०, ७, ११, ३५, ७२, ८७, ८६,
[सं०स्त्री०] ११६, १२५, १६३, २६७। ल०, ६६,
(सं.) ७४।
इच्छा, कामना। काम की प्रवृत्ति।

वासना तृप्ति = का०, १६२।
[सं०स्त्री०] (सं.) इच्छा की संतुष्टि।

वासना धारा = का०, १२८।
[सं० स्त्री०] (सं) चाह या इच्छा की धारा।

वासना भरी = का०, १५१।
[वि०] (हि.) वासना से पूर्ण।

वासनायें = ल०, ७४।
[सं० स्त्री०] प्रत्याशा, कुछ पाने या करने की इच्छाएँ।
(सं.) चाह, इच्छा, वांछा।

वाही = चि०, ५७, १८९।
[वि०] (सं.) भार ढोने वाला, ले जाने वाला।

वाह्य = का० कु०, १५। का०, २४५, २५८।
[क्र० वि०] (सं) भ०, १६, ४५।
[वि०] बाहरी, अलग पृथक। वहन करने
(सं.) योग्य। जो वहन करता है। रथ, यान,
[सं० पु०] सवारी।

वाह्य-उदार = का०, ४६।
[वि०] (सं.) ऊपर से उदार।

वाह्य-रूप = का० कु०, १२३।
[सं० पु०] (हि.) बाहरी रूप। कायिक रूप।

विकंपित = का०, १६५, १६८, २६०।
[वि०] काँपता हुआ, अस्थिर, भयभीत,
(सं.) हिलता हुआ।

विकच = चि०, २९, ६६।
[वि०] (सं.) खिला हुआ, विकसित, प्रस्फुटित।

विकट = का०, २११, २२६। २०१।
[वि०] चि०, ४०१।
(सं.) कठिन, भीषण, मुश्किल, भयङ्कर, दुर्गम।

विकट-ध्वनि = चि०, ५१।
[सं० स्त्री०] (सं.) भयङ्कर ध्वनि, कठोर आवाज।

विकट-भृकुटि-तट = चि० २२।
[सं० पु०] (सं०) क्रुद्ध या भयंकर भौहों का किनारा।

विकट-मुख = का० कु०, ६८।
[सं० पु] (हि) भयङ्कर मुख।

विकर्षणमयी = का०, २००।
[वि०] (हि.) अनाकर्षक, खिंचावभरी।

विकल = आं०, ७, ११, ४७, ५३। क०, १८।
[वि०] का० कु०, २२, २३। का०, ४, ११,
(सं.) १६, २५, २६, ३६, ५६, ६०,
६३, ६४, १०५, १४०, १५७, १६०,
१६३, १६५, १८०, १८६, १८६,
२००, २६०, २६७, २७१, २८१।
चि०, १२, ६५। भ्रू०, १८, ३३,
३८। ल०, १७, २६, ४४, ४६, ५२,
५३, ५६, ५८।
विह्वल, व्याकुल, बेचैन।

विकलता = का०, १२१।
[सं० स्त्री०] बेचैनी, विकल होने की अवस्था
(सं) या भाव।

विकल-रूप = आं०, १०।
[सं० पु०] (हि.) व्याकुल अवस्था। बेचैनी की दशा में।

विकलित-सी = का०, १५।
[वि०] (हि) व्याकुल सी।

विकल-व्यथा = का०, २२४, २४१।
[सं० स्त्री०] व्याकुल करने वाली व्यथा। भय-
(हि.) ङ्कर कष्ट।

विकल्प = का०, १७२।
[सं० पु०] भ्रम, धोखा, विपरीत सोच-विचार।
(सं.) चित्त की पञ्चविधि वृत्तियों में से एक।

विकस = का०, ७६।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) विकसित होकर।

विकसत = चि०, १।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विकास होना, विकसित होना।

विकसता = का०, ५३, १०१, १३२।
[क्रि०] (हि.) विकसित होता। प्रफुल्लित होता हुआ।

विकसहु = चि०, २४।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विकसित हो। फूलो।

विकसा = आं०, २८ ।
[क्रि०] (हि.) खिला हुआ। फूला हुआ।
विकसावत = चि०, २६ ।
[क्रि०] विकसित करता है। प्रस्फुटित
(ब्र. भा.) करता है।
विकसित = आं०, २३ । का० कु०, ८३ । का०,
[वि०] ७४, १६२ । चि०, १४ । झ०, २७ ।
(सं.) प्रे०, १, १४, १५ ।
जिसका विकास हुआ हो। खिला हुआ। प्रफुल्लित।
विकसी = आं०, ३८ । चि०, ५६ । का०, २६० ।
[वि०] जिसका विकास हुआ हो।
(हि.) खिला हुआ।
विकसें = चि०, १६४ ।
[क्रि०] ब्र. भा.) विकास हो, फूलें।
विकसेगी = झ०, ५७ ।
[क्रि०] (हि०) खिलेगी। फूलेगी। विकसित होगी।
विकार = क०, ३२ । का०, ५७, ८१ ।
[सं०पु०] दोष। अवगुण, बुराई, वासना,
(हि.) विकृति।
विकाश = क०, ७ । चि०, १५२ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रकाश। प्रसार। विस्तार। विकास।
विकास = का० कु०, ५० । का०, २३, ५४, ७६,
[सं० पु०] १३२, १६०, १६१, २६१ । चि०,
(सं.) २१, १५४, १६६ । झ०, ११, ६३ ।
प्रसार। फैलाव। विस्तार।
विकासन = चि०, १४६ ।
[सं०पु०] (सं.) विकास का बहुवचन।
विकासमयी = का०, २८ ।
[वि०] (हि.) विकसित होने योग्य।
विकीर्ण = का , १६० ।
[सं० पु०] बिखरी हुई। बिखेरा हुआ। छितराया
(सं.) हुआ।
विकृत = का०, १६० ।
[वि०] जिसमें किसी तरह का विकार हो गया
(सं.) हो, अपूर्ण, अधूरा, रोगी।

विक्रम = म०, १६ ।
[सं० पु०] (सं.) पराक्रम। वीरता।
विक्रय = क०, २० ।
[सं० पु०] बेचना। बिक्री। मूल्य लेकर कोई वस्तु
(सं.) देना।
विक्षत = का०, २५७ । ल०, ५० ।
[वि०] (सं.) घायल। फटा हुआ।
विक्षुब्ध = ल०, १३ । का० ५७, २२१ ।
[वि०] (सं.) दुखी। ग्रस्त। पीड़ित।
विखरी = का०, २५८ ।
[क्रि०] (हि.) फैली, छिटकी।
विखरे = का०, १७८ । २५३ ।
[क्रि०] (हि.) फैले हुए, छितराये हुए।
विखेरता = का०, २४५ ।
[क्रि] (हि.) फैलाता हुआ।
विखेर्यो = चि०, २३ ।
[क्रि० (ब्र.भा.) फैला दिया। बिखेर दिया।
विगत = क०, ३२ । का०, ५७, ८१, १२१,
[वि०] २०५, २५० । चि०, ५१ ।
(सं.) समय जो गत हो चुका हो। बिता हुआ। गत। पिछला।
विचर = का०, २६३ ।
[पूर्व०क्रि०] (हि.) घूमकर, भ्रमण करके, यात्रा करके।
विचरण = प्रे०, १८ ।
[सं० पु०] (सं.) चलना, फिरना, घूमना।
विचरणकारी = प्रे०, ३ ।
[वि० पु०] (सं.) घूमने योग्य। भ्रमणशील।
विचरत = चि०, १३२ ।
[क्रि] (हि.) घूमता है।
विचरती = का० कु०, ११ ।
[क्रि०] (हि.) घूमती है।
विचरूँगा = का०, १५३ ।
[क्रि०] (हि.) भ्रमण करूँगा।
विचलित = चि०, २३ ।
[वि०] अस्थिर, चंचल। स्थान, प्रतिज्ञा,
(सं०) सिद्धान्त आदि से हटा हुआ।

विचलित-सी = का०, १५ ।
[वि०] (हि.) विचलित होने के सदृश्य ।

विचलेगा = ल०, ५७ ।
[क्रि०] (हि.) विचलित होगा । दृढ़ता-च्युत होगा ।

विचार = का० कु०, ८, ७४ । का०, ५६, ७७, ६८, १००, ११२, १४१, १५३, १७१, १८ , २०५, २११, २३८, २४६ । चि०, ५६, ६६, १४७, १५८, भ०, १६ । म०, ४ । ल०, ७१ ।
[सं० पु०] (सं.) वह जो मन में सोचा या सोचकर निश्चित किया जाय । संकल्प । मन में उठने वाली कोई बात । सोचना, समझना ।

विचार-संकट= का०, १६६ ।
[सं० पु०] (सं.) मानसिक उलझन ।

विचारि = चि०, १४८ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विचारना क्रिया का पूर्वकालिक रूप ।

विचारि के = चि०, १७० ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र. भा.) विचार करके ।

विचारै = चि०, १५३ ।
[क्रि] (ब्र. भा) विचार करे ।

विचारो = का०, १२६, १६८ । ल०, ६३ ।
[क्रि०] (हि.) विचार करो । सोचो ।

विचित्र = क०, ६ । भ०, ७७ ।
[वि०] (सं.) कई रंगों वाला, विलक्षण । एक अर्थालंकार जिसमें किसी फल की सिद्धि के लिये किसी उलटे प्रयत्न का उल्लेख हो ।
[सं० पु०] (सं.)

विच्छेद = का०, २४६ । आ०, ६५ ।
[सं० पु०] काटकर अलग करना । नाश । वियोग । परिच्छेद । कविता में यति ।
(सं.)

बिछलना = क०, ५५ । ल०, ३१ ।
[क्रि० अ०] (हि.) विचलित होना ।

बिछल ‘ड़ना = भ०, ६६ ।
[क्रि० अ] (हि.) फिसलना । फिसल पड़ना ।

विजड़ित = ल०, ६० ।
[वि०] (सं.) जड़ा हुआ । संलग्न । जटित ।

विजन = का०, २४, ३४, ३६, १५८, १६७, १७५ । चि०, २४ । भ०, ३२, ८५ । ल०, ५६ ।
[सं० पु०] (सं.) जिसमें जन या मनुष्य न हों । एकान्त । निराला । हवा करने का पंखा ।

विजनपथ = का०, ८१ ।
[सं० पु०] (सं.) एकान्त पथ ।

विजय = का० कु०, ११५, ११७ । का०, १६, १३५ । चि०, ६, ४१, ४२, ६३, ६७, ६१, ११०, १६३ । म०, १३ । ल०, ४७, ५२, ७६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) जीत । भोजन करना । विमान । एक प्रकार का शुभ मुहूर्त । अर्जुन का एक नाम ।

बिजय-कथा = का०, १६० ।
[सं०स्त्री०] (सं.) विजय की कहानी ।

विजय-लक्ष्मी = का० कु०, ११५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) विजय की अधिष्ठात्री तथा विजय कराने वाली देवी ।

विजयिनी = का०, ५६, १८१ । चि०, ५ ।
[वि०] (सं.) जीतने वाली । जिसने विजय प्राप्त की हो ।

विजयिनी-सो = का०, ६३ ।
[वि०] (सं.) विजय करने वाली के समान ।

विजयी = क०, २२ । का०, ५७ । म०, १५ । ल०, ४६, ५१, ५२, ७७ ।
[वि०] (सं.) विजेता । विजय प्राप्त करनेवाला ।

विजयों = का०, २६७ ।
[सं स्त्री०] (सं.) विजय का बहुवचन । दे० विजय ।

विजित = ल०, ४६ ।
[वि०] (सं.) हारा हुआ ।

विज्ञान = का०, १७१, २७२ । का० कु०, १०६ ।
[सं० पु०] (सं.) ज्ञान । जानकारी । आत्मा । किसी विषय; विशेषतः जड़ पदार्थों और लौकिक विषयों की जानी हुई बातों,

तत्त्वों, सिद्धान्तों आदि का वह विवेचन जो एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में हो।

विज्ञानकार = का० कु०, ६४।
[वि०] (सं.) वैज्ञानिक।
विज्ञान-ज्ञान = का०, १६८।
[सं० पु०] (सं.) सभी प्रकार का वैज्ञानिक ज्ञान।
विज्ञानमयी = का०, १८६।
[वि०] (हि.) ज्ञान से भरी हुई।
विटप = का०, २६५। भ०, १६।
[सं० पु०] (सं.) वृक्ष। पेड़।
विडम्बना = क०, १८। का०, २७२।
[सं० स्त्री०] (सं.) किसी को चिढ़ाने या तुच्छ ठहराने के लिये उसकी नकल करना। हँसी उड़ाना। उपहास करना। उपहास, दम्भ।
वितरती = का० कु०, १३।
[क्रि०] (हि.) वितरण करती। बाँटती। फैलाती।
वितरना = का०, १६८।
[क्रि०] (हि.) बाँटना। वितरण करना। दे देना।
वितरित = का०, १६४।
[वि०] (हि.) बाँटा हुआ। दिया हुआ।
वितरे = का०, २४४।
[क्रि०] (हि.) दे दिये।
वितरो = का०, १५३।
[क्रि०] (हि.) दो। फैला दो।
वितान = का० कु०, ६। का०, १२६। चि०, २४।
[सं० पु०] (सं.) विस्तार। तम्बू या खेमा। चँदवा। यज्ञ। घृणा। एक वर्णवृत्त का नाम। शून्य।
वित्त = का०कु०, ११६।
[सं० पु०] (सं.) धन। राज्य संस्था आदि के साथ आय और व्यय की व्यवस्था। जाना हुआ।
[वि०] मिला हुआ।
विदग्धता = आं०, ७४।
[सं०स्त्री०] (सं.) पांडित्य। विद्वता।

विदारत = चि०, १६३।
[क्रि०] (ब्र.भा.) विदीर्ण करता है।
विदांवभूव: = चि०, १३३।
[क्रि०] (सं.) पंडित हुआ।
विदारित = भ्र०, १५।
[वि०] (सं.) फाड़ा हुआ। विदीर्ण किया हुआ।
विदित = का०, कु०, ११५। चि०, ६६, १८७।
[वि०] (सं.) जाना हुआ। ज्ञात।
विदूषक = का०, २६३।
[सं० पु०] (सं.) अपने वेश, चेष्टा, बात-चीत आदि से दूसरों को हँसाने वाला। भाँड़। मसखरा।
विद्या = का०, १६५।
[सं० स्त्री०] (सं.) शिक्षा आदि के द्वारा उपार्जित ज्ञान। मोक्ष प्राप्ति की सिद्धि करने वाला ज्ञान। ज्ञान के विशेष विभाग। गुण, दुर्गा।
विद्याधर = चि०, ३०।
[सं० पु०] (सं.) देवयोनि। विशेष। एक प्रकार का रति बन्ध। एक मन्त्र विशेष। विद्वान।
विद्युत = का०, १००, १२५, १७०, २५३, २६३। चि०, १०६।
[सं० स्त्री०] (सं.) बिजली। सन्ध्या। अतिशय ज्योतिष।
विद्युत-वृन्द = का० कु०, ६७, १२६।
[वि०] (सं.) बिजलियों का समूह।
विद्युत-विलास= का०, २५४।
[सं० पु०] (सं.) बिजली के सदृश विलास। क्षण-भंगुर चमक-दमक का सूचक भाव।
विद्युत्कण = का०, २०, २६, ५६, ७३, १७८।
[सं० पु०] (सं.) आधुनिक वैज्ञानिकों के मतानुसार प्रत्येक परमाणु के गर्भ में धन विद्युत से आविष्ट कण जिसके चारों ओर ऋण विद्युत् से आविष्ट अनेक कण चक्कर लगाते रहते हैं। बिजली के कण।
विद्युत्पात = का० कु०, ६३।
[सं०पु०] (सं.) बिजली गिरने का भाव।

विद्रुम = आं , २३ ।
[सं० पु०] प्रवाल । मूँगा । मुक्ता फल नामक
(सं.) वृक्ष । कोपल ।

विद्वान = भ्रु०, ७७ ।
[सं० पु०] जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो ।
(सं.) आत्मज्ञ । सर्वज्ञ ।

विद्वेष = का० कु०, १०६, ११२ ।
[सं०पु०] (सं.) शत्रुता, बैर, विरोध ।

विधवा = प्रे०, २० । ल०, ५ ।
[सं स्त्री०] वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो,
(सं.) (राण) ।

विधाता = का०, ५७, ५८ । ल०, ५३ ।
[सं० पु०] (सं.) ब्रह्मा, विधान करने वाला, ईश्वर ।

विधान = का० कु०, ७२ । का०, ७१, ११३,
[सं० पु०] २०६ । चि०, १३६ ।
(सं.) किसी काम का आयोजन । अनुष्ठान ।
विधि रीति-प्रणाली ।

विधायिनी = चि०, २२, १६४, १८२ । भ्रु०, ७० ।
[वि०] (सं.) विधायिका । निर्माण करने वाली ।

विधि = का० कु०, ८८ । का०, ११४ ।
[सं० पु०] भ्रु०, ६३ ।
(सं.) कोई काम करने का ढङ्ग या रीति ।
व्यवस्था । प्रकृति, नियति ।

विधियाँ = का० कु०, ८८ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) रीतियाँ, प्रणालियाँ ।

विधिवत = का०, २७८ ।
[क्रि० वि०] (सं.) विधिपूर्वक ।

विधु = आं०, २१, ७२ । क०, ७ । का० कु०,
[सं० पु०] १०१ । का० ४७, ५५, ८७, ८८ ११८,
(सं.) १२७ । प्रे०, १२ ।
चन्द्रमा । वायु । कर्पूर ।

विधुकर = प्रे०, १ ।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रकिरण ।

विधुकर-धवलाभा = चि०, ४६ ।
[सं० पु०] चन्द्रकिरण के प्रकाश सदृश उज्ज्वल ।
(सं.) चन्द्रमा की उज्वल ज्योति ।

विधुकुल-राई = चि०, ६० ।
[वि.] (ब्र. भा.) चन्द्रकुल के राजा (कृष्ण) ।

विधुमण्डलते = चि०, ७१ ।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमण्डल से ।

विधुमांहि = चि०, ७० ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) चन्द्रमा में ।

विधुर = का०, २४६ । चि०, २, ५८ ।
[वि०] ल०, २७ ।
[वि०] वियोगी । व्याकुल । असमर्थ । जिसकी
(सं.) पत्नी मर चुकी हो । रँड़ुआ ।

विधुरों = चि०, १३२ ।
(सं) विधुर का बहुवचन ।

विध्वंस = का०, १८ ।
[सं० पु०] (सं.) नाश, बरबाद ।

विध्वस्त = का०, १६० ।
[वि०] (सं.) विनष्ट ।

विन्दु = आं०, २३, ५७ । का० कु०, ५१, ५३,
[सं० पु०] ५४ । का०, ३७, १२२, १५३, १५७,
(सं.) १७८, २१०, २४५, २६१, २६२,
२६४ । चि०, १८० । भ्रु०, ६१ ।
म०, ६ ।
जलकण । बूँद । शून्य ।

विन्दु-सा = का०, ७५ ।
[वि०] (हि.) विंदु के सदृश ।

विन्दुहिं = चि०, ७० ।
[सं० पु०] (सं.) विंदु को ।

विनत = चि०, १४१ ।
[वि०] (सं.) झुका हुआ । विनम्र । नत ।

विनती = क०, २६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) विनय । आग्रह ।

विनम्र = क०, २१ । का०, ६ ।
[वि०] (सं.) झुका हुआ । विनीति । सुशील ।

विनय = का० कु०, २२ । चि०, ६१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) प्रार्थना । आग्रह । विनती ।

विनयन = का०, १६६ ।

[सं० पु०] विनय। नम्रता। शिक्षा। निर्णय।
(सं.) निराकरण। दूर करना।

विनष्टि = का०, १६४।
[सं० स्त्री०] (सं.) नाश। लोप। पतन।

विनवौं = चि०, १४८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विनय करता हूँ।

विनाश = का०, ६०, १५७, १५८, १७०, १६१, २४०, २५४।
[सं० पु०]
(सं.) नाश। लोप। बिगाड़। खराबी। तबाही। हानि।

विनाशशील = का०, १२३।
[वि०] (सं.) विनाशी। नष्ट होनेवाला।

विनाशों = का०, १२४।
[वि०] (सं.) विनाश का बहुवचन। दे०, विनाश।

विनिमय = का०, १७८, २४१, २४६।
[सं०पु०] आदान-प्रदान। लेन-देन। किसी एक
(सं.) वस्तु के बदले में कोई दूसरी वस्तु लेना।

विनियुक्त = का० कु०, ११६।
[वि०] नियोजित। काम में लगाया हुआ।
(सं.) प्रेरित। अर्पित।

विनोद = आं०, ५५। का० कु०, २६। का०,
[सं०पु०] ७१, ७४, १३६। चि०, ६, २२,
(सं.) १६४, १६५, १७३। भ्रं०, ३४, ४१, ८२। ल०, ३३।
खेल। प्रसन्नता। आनंद।

विन्यास = का०, ८६।
[सं० पु०] स्थापना। रखना। सजाना। जड़ना।
(सं.) किसी स्थान पर डालना।

विपक्ष समूह = का०, २००।
[वि०] (हि.) शत्रुओं का समूह, शत्रुगण।

विपञ्ची = चि०, २३, १७६। भ्रं०, ५२, ५६।
[सं० स्त्री०] प्रे०, ११, १६।
(सं.) एक प्रकार की वीणा, बाँसुरी।

विपत्ति = चि०, १०३।
[सं० स्त्री०] दुःख। संकट। आपत्ति। दुःख स्थिति
(सं.) या अवस्था।

विपत्ति-विदारी=चि०, ४६।
[वि०] (हि.) विपत्ति दूर करने वाला।

विपद = आं० ५५। ल०, ३३।
[सं०स्त्री०] (सं.) विपत्ति। आपत्ति।

विपद-नदी = का०, १८१।
[सं०स्त्री०] (सं०) विपत्ति रूपी नदी। दुःख का समय।

विपिन = आं०, ३५। का०, ११३।
[सं०पु०] (सं.) वन, जंगल।

विपिनवासी = का० कु०, ११३।
[वि०] (सं.) जंगलों में रहने वाले।

विप्रयोग = भ्रं०, ८८।
[सं० पु०] अलग होने की अवस्था या भाव।
(सं.) संयोग का विपरीतार्थक।

विपुल = का०, १२१, १२३, २६३, २६८। चि०,
[वि०] ५१। म०, ७, ८।
(सं.) अधिक।

विपुला = आं०, ४८।
[वि०] (सं.) बहुत बड़ी।

विप्लव = का० कु०, ८। का०, ७६, १११,
[सं०पु०] १८६, २३६।
(सं.) उपद्रव, अशांति, दंगा, बलवा।

विफल = का०, १७, १२७, १३१, १४७, २४०।
[वि०] (सं.) असफल-प्रयत्न, फल-हीन, व्यर्थ।

विफलता = का०, २६७। भ्रं०, १७।
[सं०स्त्री०] विफल होने का भाव या क्रिया।
(सं.) असफलता।

विभक्त = का०, १६५।
[वि०] अलग-अलग हुआ, बँटा हुआ,
(सं.) विभाजित।

विभत्स = क०, १८।
[वि०] (सं.) घृणास्पद, घृणा करने योग्य, बुरा।

विभव = क०, १८। का० कु०, ६७। का०, ८,
[सं०पु०] ४०, ६१, ६७, १०६, १६६, २६८।

(सं.) ल०, ६८, ७६।
ऐश्वर्य, धन, अधिकता, बाहुल्य।

विभा = का०, ३०। चि०, ४०, ४६, ५५,
[सं०स्त्री०] १३६। १६६। प्रे०, २६। ल०, ३६।
(सं.) दीप्ति, प्रकाश, किरण।

विभाकर = चि०, ६३।
[सं०पु०] (सं.) अग्नि, सूर्य, राजा।

विभाजन = का०, २४१, २७१।
[सं० पु०] अलग-अलग करने की क्रिया का भाव
(सं.) बटँवारा।

विभावरी = का०, ८। ल०, १६।
[सं० स्त्री०] (सं.) रात, रात्रि।

विभाग = का०, २४१।
[सं० पु०] विभाजन, कार्य-संचालन की सुविधा की
(सं.) दृष्टि कार्य-क्षेत्र के छोटे-छोटे हिस्से।
मुहकमा।

विभाजित = का०, १६५।
[वि०] (सं.) बँटा हुआ। विभक्त।

विभास = चि०, १३६।
[सं० पु०] प्रकाश, दीप्ति, राग विशेष जो प्रातः-
(सं.) काल गाया जाता है।

विभासि = चि०, १६६।
[पूर्व०क्रि०](ब्र. भा.) प्रकाश करके।

विभुता = का० कु०, ८७। का०, १३५। ल०,
३३।
[सं० स्त्री](सं.) (दे०) 'विभूति'।

विभु-सी = ल०, १४।
[वि०] (हि.) नित्य सी, ईश्वर के सदृश।

विभूति = आं०, १४। क०, १४। का०, १९,
[सं० स्त्री०] २६, ३१, ६०, ८५, २७६, १६७।
(सं.) ल०, १२।
अधिकता, अलौकिक, शक्ति ऐश्वर्य, महापुरुष, सृष्टि। शिव के अंग में लगाने की राख या भस्म।

विभूतियाँ = क०, १०।
[सं० स्त्री०](हि.) 'विभूति' का बहुवचन दे०—'विभूति'।

विभूषित = भ०, २६।
[वि०] (सं.) शोभित, सुसज्जित।

विभो = चि०, १६५।
[सं० पु०] (सं.) 'विभु' का संबोधन। ईश्वर, भगवान।

विभोर = का०, १५०, १६१। ल०, २३।
[वि०] (सं.) विह्वल, विकल, मस्त।

विभ्रम = का०, ६७, २२६।
[सं० पु०] भ्रांति, धोखा। साहित्य के संयोग-
(सं.) शृंगार का हाव विशेष।

विमल = क०, ८। का० कु०, १, १५, २४,
[वि०] (सं०) १००, १०१। का०, २६, ६१, २६०।
चि०, २४, ५६, ६१, ६३, ६६, ७०,
७१, १४३, १४७, १५०, १५४, १५७,
१६८, १६६, १८६। भ०, १६ २०,
२६, ७२, ७६, ६६। प्रे०, १, ६,
१०। म०, १६। ल०, १३।
स्वच्छ। निर्मल। धवल। पवित्र।
पावन। निष्कलंक।

विमल-कीरति= चि०, ५०, ५२।
[सं० स्त्री०](ब्र. भा.) स्वच्छ कीर्ति, निष्कलंक यश।

विमल-विधु-कांत= का० कु०, २९।
[वि०] (सं.) पूनों के चन्द्रमा के प्रकाश-सा उज्ज्वल।

विमला = का०, २६४। चि०, ४६, १६४। प्रे०,२४।
[वि०](सं०) श्वेता, निर्मला, धवला।

विमुक्ति = का०, १५१।
[सं०स्त्री०](सं.) छुटकारा, मोक्ष।

विमोहित = चि०, १६५।
[वि०] (ब्र. भा.) विशेष मुग्ध।

वियोग = भ०, ४५। प्रे०, १७, २३, २५।
[सं० पु०] ल०, ४६।
(सं.) अलग रहने का भाव. वह अवस्था जब दो प्रेमी अलग रहते हैं।

वियोगिनी = चि०, ६।
[वि०] (हि.) प्रिय से वियुक्त प्रेयसी।

विरक्ति = का०, ११८, २३७। भ०, ८८।
[सं० स्त्री०] विरत रहने का भाव या क्रिया कार्य,

(सं.) पद या सेवा आदि से अलग होना। वैराग्य, उदासीनता।

विरचित = भ्रु०, ५४।
[वि०] (सं.) बनाया हुआ।

विरत = चि०, ६५।
[वि०] (ब्र. भा.) विरक्त, अलग।

विरति = का०, ११६। भ्रु०, ३६।
[सं० स्त्री०] (सं.) विरत रहने का भाव या क्रिया, विरक्ति।

विरथ = भ्रु०, ३२।
[वि०] (सं.) रथ-हीन।

विरल = का०, २४६। ल०, ३५, ४३, ६८।
[वि०] (सं.) 'सघन' दुर्लभ, कम, धीमा-धीमा, मंद।

विरला = ल०, २७।
[अव्य०] (हि.) कोई-कोई।

विरस = का०, ५०। ल०, ६।
[वि०] (सं.) नीरस, शुष्क,।

विरह = आं०, ३०, ३१। का०, १६५, १७५, १७६। चि०, ६४। भ्रु०, ३४, ५२। प्रे०, १७। ल०, ४८।
[सं० पु०] (सं.) किसी से अलग या रहित होने का भाव।

विरह-अश्रु = चि०, ५७।
[सं० पु०] (सं.) वियोगकालिक वेदनाश्रु।

विरह-कोक = का०, १७१।
[सं० पु०] (सं.) विरह रूपी कोक। 'विरह' की साकरता का द्योतक।

विरह-तम = का०, १७८।
[सं० पु०] (सं.) विरह रूपी अंधकार। विरहजन्य मुग्धकारी स्थिति।

विरह-निशा = आं०, ३६।
[सं० स्त्री०] (सं.) वियोग कालिक रात्रि।

विरह-मिलन = आं०, ४६।
[सं० पु०] (सं.) वियोग एवं संयोग। विछोह और सम्मिलन।

विरह-मिलनमय = का०, २४२।
[वि०] (सं.) वियोग-संयोग से युक्त। 'भौतिक प्राणियों की धारणा या सांसारिक स्थिति का द्योतक।

विरह-वह्नि = भ्रु०, ८०। प्रे०, १५।
[सं० पु०] (सं.) विरह रूपी अग्नि।

विरह-सुधा = भ्रु०, ४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) विरह रूपी अमृत।

विरहिणी = का०, १७५।
[सं० स्त्री०] (सं.) पति-से वियुक्त पत्नी। वियोगिनी।

विरही = का०, ४०, ८४, १२४, १५७, १६५, १६८, २३६, २४०। चि०, १४, १५८, १८०। ल०, १२, १३, ३५।
[वि०] (हि.) वियुक्त, वियोगी।

विरहपूर्ण = का०, ३४।
[वि०] (सं.) विराग से भरा हुआ, राग रहित, वैराग्यवान।

विराग-भूमि = का० कु०, ५३।
[सं० स्त्री०] (सं.) वैराग्य दायिनी भूमि, वैराग्य रूपी भूमि।

विराग-विभूति = का०, ८४।
[सं स्त्री०] (सं.) वैराग्यरूपी दिव्य संपत्ति।

विराजत = चि०, ५५, ७२, १५८, १६५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) शोभित है, स्थिति है।

विराज-राजासम=चि०, १४०।
[वि०] (सं.) राजा के समान शोभित।

विराजहिं = चि०, ६१।
[क्रि०] (ब्र. भा.) शोभा देता है।

विराजिता = चि०, १३६।
[वि०] (सं.) शोभिता, स्थिता।

विराजै = चि०, १५०।
[क्रि०] (ब्र. भा.) शोभा देता है।

विराट् = का०, १७, २४, २६, ३३, १२६, २८३, २८८। चि०, ७२।
[सं० पु०] (सं.) विश्वरूप ब्रह्म। विश्व, क्षत्रिय, कांति।

विरुद्ध = का० कु०, ८। का०, १०६, १६१, १६५, १६६। चि०, १८७।
[त्रि०] (सं.) विपरीत, उलटा, प्रतिकूल।

विरोध = का०, १४३ । चि०, ७३ । भ्रु०, ६३ ।
[सं० पु०] ल०, ७८ ।
(सं.) बैर, शत्रुता, प्रतिकूलता ।

विरोधी = चि०, ७३ ।
[वि०] (हि.) बैरी, शत्रु, प्रतिकूल, विपक्षी ।

विलख रही = का०, १५८ ।
[क्रि०] (हि.) रो रही है ।

विलगानो = चि०, १५७ ।
[क्रि०] (व्र. भा.) अलग हुआ ।

विलम्ब = का० कु०, १०२ । का०, ४६, ५६ ।
[अव्य०] चि०, ६४ ।
(सं.) देर ।

विलसत = चि०, १७, ५६, १४३ ।
[क्रि०] (व्र. भा.) आनंद करता है ।

विलसहीं = चि०, ६६ ।
[क्रि०] (व्र. भा.) विलास करता है । उपभोग करता है ।

विलसती = का०, २६४ ।
[क्रि०] (व्र. भा.) उपभोग करती है ।

विलसित = का०, २८३ ।
[वि०] (सं.) विलास करता हुआ ।

विलसित-हिमशृंग=चि०, ५५ ।
[वि०] (सं.) हिम शृंगों से विलास करता हुआ ।

विलास = का० कु०, १०० । का०, ८, १२, १५,
[सं० पु०] ७१, ८४, ६०, १०३ । चि०, ६ ।
(सं.) भ्रु०, ११ । ल०, ५३ ।
प्रसन्न करने वाली क्रिया, मनोविनोद अनुराग सूचक चेष्टाएँ, साहित्य के संयोग शृंगार में 'हाव' विशेष, आनंद ।

विलासमयी = का०, ३८ ।
[वि०] (हि.) विलासिनी ।

विलासहिं = चि०, ५६ ।
[सं०पु०] (व्र. भा.) दे०—'विलास' ।

विलासिता = का०, ७ । चि०, ५० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सांसारिक भोग, आराम तलबी ।

बिलासी = का०, १० । चि०, १५३ ।
[वि०] (सं.) विलास करने वाला ।

विलासिनी = का०, १३, १३० ।
[वि०] (सं.) विलास करने वाली ।

विलीन = का०, ७, १०, ७१, ८५, १४०, १५७,
[वि०] २५३ । ल०, ५३ ।
(सं.) नष्ट, गुप्त, अदृश्य । छिपा हुआ ।

विलीनपटपदे = चि०, १३३ ।
[सं० पु०] (सं.) छिपे हुये भौंरे ।

विलीन-सी = का०, २६१, २६८ ।
[वि०] अस्तित्व रहित होने के समान । लुप्त
(हि.) हुई सी ।

विलुलित = चि०, २२ ।
[वि०] (सं.) चंचल, हिलता डोलता हुआ । गतिमय ।

विलोकन = का०, २०८ । का० कु०, ६६ । प्रे०, २ ।
[सं० पु०] (सं.) दर्शन, अवलोकन ।

विलोड़ित = का०, १६ । चि०, १६६ ।
[वि०] (सं.) मथित, आलोड़ित ।

विलोम = भ्रु०, ३३ ।
[वि०] (सं.) उलटा, विपरीत ।

विलोल = चि०, ४०, ५६ ।
[वि०] (सं.) चंचल ।

विलोलदृष्टे = चि०, १३३ ।
[वि०] (सं.) चंचल नेत्रवाली ।

विवर = का०, ४६, १६० ।
[सं० पु०] (सं.) छिद्र, दरार, गुफा, कन्दरा ।

विवर्ण = का०, २३ ।
[वि०] जिसका रंग बिगड़ गया हो । बदरंग,
(सं.) कांतिहीन ।

विवर्तनो = ल०, ५६ ।
[सं० पु०] (सं.) चक्कर लगाने या घूमने का भाव ।

विवश = का०, २५, ३४, २६७ ।
[वि०] (सं.) लाचार ।

विवस = का० कु०, ६६ । चि०, १०१ ।
[वि०] इच्छानुकूल कार्य न कर सकना ।
(सं.) लाचार ।

विवस्वान = चि०, १३२ ।
[सं० पु०] (सं.) यमराज ।

विवादी = का०, १६३।
[वि०] (सं.) झगड़ालू।

विवाह = प्रे०, १६।
[सं० पु०] (सं) वह धार्मिक या सामाजिक कृत्य जिसके अनुसार पुरुष और स्त्री में पति एवं पत्नी का सम्बन्ध स्थापित होता है। पाणि ग्रहण।

विवाहा = का० कु०, ११२।
[क्रि०] (ब्र भा.) विवाह किया।

विविध = चि०, ४६।
[वि०] (सं.) अनेक प्रकार के। तरह तरह के।

विवेक = चि०, ५६। झ०, ६३।
[सं० पु०] (सं.) ज्ञान। भली बुरी बातें सोचने की शक्ति। बुद्धि।

विशाल = का० कु०, ७५, ६६, १०५। का०, २३५ २५२। चि०, १३६, १४३, १६६। झ०, ५७।
[वि०] (सं.) बड़ा। दीर्घ। विस्तृत। भव्य। बृहत्तर।

विशाला = चि०, ३६।
[वि०] (ब्र.भा.) देखो विशाल। जो साधारण न हो। असाधारण।

विशुद्ध = का०, १६६।
[वि०] (सं.) शुद्ध। पवित्र। निर्मल।

विशेष = का० कु०, ७७, १०६, १११। का०, १४, ८१, ११५, २६५ झ०, ४४।
[वि०] (सं.) खास।

विश्लेषण = ल०, ६६। का०, ७३।
[सं० पु०] (सं.) किसी वस्तु या द्रव के प्रत्येक भाग को तथ्य-समीक्षा एवं परीक्षा की दृष्टि से अलग-अलग करना।

विश्वम्भर = चि०, ६६, ७३।
[सं० पु०] (सं.) विश्व का भरण करने वाला। भगवान विष्णु।

विश्व = आं०, ५१, ६१। क०, ८, १०, २५, ३१, ३२। का० कु०, ६, ६२, ७२, ७४, ८६, ६०, ६३, ६४, १२६। का०, ६, से २६३ पृष्ठ तक ४३ बार। चि०, १४१, १५४, १८७। झ०, १६, १८, ३०, ३५, ६३। प्रे०, १७, १८, २३। ल०, १४, २५, २८, ३३, ३६, ५६, ७०, ७६, ७७।
[वि०] (सं.) संसार, जगत, विष्णु, शरीर।

विश्वभर = का० कु०, ७८। का०, ५७। झ०, ४२।
[अव्य०] (हि.) सम्पूर्ण संसार। सारा जगत।

विश्व-कल्पना-सा = का०, २६।
[वि०] (हि.) जगत की कल्पना के समान।

विश्व-कुहर = का०, १७०, १६३।
[सं० पु०] (सं) संसार रूपी सुराख।

विश्व-गृहस्थ = का० कु०, ४, ६२।
[सं० पु०] (सं.) संसार रूपी गृहस्थी का जो प्रधान हो अथवा ईश्वर।

विश्व-जनता = का० कु०, ६१।
[सं० स्त्री०] (सं.) संसार के लोग।

विश्व-देव = का०, २५, २६।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य। परमात्मा। मनु।
[सं० पु०] (सं) देवताओं का एक गण जिसमें इन्द्र, अग्नि आदि नौ देवता होते हैं।

विश्वधारिणी = चि०, १५४।
[वि०] (सं) सम्पूर्ण विश्व को धारण करने वाली।

विश्वधारी = चि०, १५४।
[वि०] (सं.) विश्व को धारण करने वाला।

विश्वपति = झ०, १८।
[सं० पु०] (सं) परमात्मा। ईश्वर।

विश्व-पथिक = का०, १६६।
[सं० पु०] (सं) संसार का मुसाफिर। मनुष्य-जीवन।

विश्व-पालिनी = चि०, १५४।
[वि०] (सं.) विश्व का पालन करने वाली।

विश्व-प्रेम = प्रे०, २४।
[सं० पु०] (सं.) संसार प्रेम। मानव प्रेम।

विश्व-मंदिर = आं०, ६०।
[सं० पु०] (सं.) संसार रूपी मन्दिर।

विश्व-मधु-ऋतु= ल०, २२ ।
[सं० पु०] (सं०) संसार की मधु ऋतु । वसंत ।
विश्वमात्र = प्रे०, २४ ।
[सं० पु०] संपूर्ण विश्व । केवल संसार ।
विश्वमाधुरी = का०, १३१ ।
[सं०स्त्री०](सं.) संसार का सौंदर्य ।
विश्वमानवता = ल०, १३ ।
[सं०पु०] (सं.) संसार का मनुष्यत्व ।
विश्व-रंध्र = का०, २७३ ।
[सं० पु०] (सं.) विश्व का छेद । दे० 'विश्व-कुहर' ।
विश्व-रानी = का०, ६३ ।
[सं० पु०] संसार की रानी । विश्व की शासिका ।
(सं.) (श्रद्धा)
विश्व-वन = का०, ५ ।
[सं० पु०](सं.) संसार रूपी कानन ।
विश्व वाणी = ल०, १३ ।
[सं० स्त्री](सं.) संसार की आवाज ।
विश्व-वीणा = का० कु०, ३ ।
[सं० स्त्री०](सं.) संसार रूपी वीणा ।
विश्व-वेदनावाला = आं०, ६१ ।
[सं० स्त्री०](सं.) विश्व वेदना रूपी वाला । संसार की पीर वाला ।
विश्व-वैभव = का०, ६४ । झ०, ५७ ।
[सं० पु०] (सं.) संसार का ऐश्वर्य ।
विश्व-व्यापी = प्रे०, २४ ।
[वि०] (सं.) संसार में जो सब जगह हो ।
विश्व-व्याप्त = चि०, १५४ ।
[सं० पु०] विश्व में व्यापक रूप से समाया हुआ ।
(सं.) भगवान ।
विश्व-शरीरी = का० कु०, ६४ ।
[वि०] (सं.) विश्व रूपी शरीर वाला । भगवान ।
विश्व-सदन = आ०, ७६ ।
[सं० पु०] (सं.) संसार रूपी घर ।
विश्वस्त-प्रमुदित= का० कु०, ६३ ।
[वि०] जिसका विश्वास किया जा सके
(सं.) और जो प्रसन्न हो ।
विश्वात्मा = प्रे०, २४, २५ ।
[सं० पु०](सं.) ईश्वर । विश्व पुरुष ।
विश्वामित्र = क०, २७ ।
[सं० पु०] विश्वमित्र । श्रीरामचन्द्र के गुरू ।
(सं.) संसार का मित्र ।
विश्वास = आं०, २४ । का०, ५७, १०४, १०६,
[सं० पु०] १४८, १६७, १८३, २१६, २२३,
(सं.) २३०, २४४ । झ०, ४२, ७७ । ल०
२१ ।
भरोसा । प्रतीति ।
विश्वासन = चि०, ५६, १०६ ।
[सं० पु०](सं.) विश्वास का बहुवचन ।
विश्वास-मयी = का०, १६६ ।
[वि०] जिसका विश्वास किया जा सके ।
(सं.) विश्वास से जो भरी है ।
विश्वास-हीन का०, १६७ ।
[वि०] जिसका विश्वास न किया जा सके ।
(सं.) अविश्वासी ।
विश्वेति = चि०, १५४ ।
[सं० पु०] सं. संसार ऐसा ।
विश्वेश = प्रे०, २३ ।
[सं० पु०](सं.) परमात्मा और ईश्वर ।
विश्वेशर = चि०, ७२, ७४ ।
[सं० पु०] दे० 'विश्वेश' । परमेश्वर, शिव की
(सं.) मूर्ति ।
विश्रब्ध = का०, ५२ ।
[वि०] (सं.) शान्त । विश्वास के योग्य ।
विश्रम्भ-कथा = ल०, ६० ।
[सं० स्त्री०] प्रेम कथा । प्रेमी और प्रेमिका के बीच
(सं.) में होने वाले झगड़े या कटाक्ष का वृत्तान्त ।
विश्रांत = का० कु०, ५३ । का०, ६, ८८, ६३ ।
[वि०] झ०, ३१ । म०, ७ ।
(सं.) थका हुआ । जो विश्राम करता हो ।
विश्राम = आं०, ५३ । का० कु०, १३, ७२ ।
[सं० पु०] का०, ४७, ६५, ७०, ८७, ६२, ११८,
(सं.) १२४, १४८, १५६, १७५, २१४,
२२६ । चि०, ४, १४१ । प्रे०, ४ ।

झ०, ३१ । ल०, १२, १६, ४४, ७१ ।
आराम । आनन्द । शान्ति ।

विश्राम-राका = झ०, २६, ६३ ।
[सं० पु०] (सं.) विश्राम करने के लिए रजनी के समान ।

विश्राम-स्थान = झ०, ३३ ।
[सं० पु०] (सं.) विश्राम करने की जगह ।

विशृंखल = का०, २१२ ।
[वि०] (सं.) अव्यस्थित । जिसकी शृंखला अव्यवस्थित हो ।

विष = आं०, ३२ । का०, ६, ८६, १२२, २०५, २३६, २५१ । झ०, ७७ । ल०, ३५ ।
[सं० पु०] (सं.) जहर । गरल ।

विषम = का०, १६, १२१, १७५, १७१, २०१, २३६, २५१, २७३ । झ०, ३८ । चि०, १४२ ।
[वि०] (सं.) जो सम न हो । अतुल्य। बहुत कठिन । संगति का एक ताल । भयंकर । जो दो के भाग देने से न बटे ।

विषमता = का०, ५४, १२१, १७१, १७२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) असमानता । विरोध । बैर ।

विषय-शून्य = का०, २४१ । झ०, ३१ ।
[वि०] (सं.) जिसमें मजमून न हो । जिसमें किसी प्रकार विवेचन न हो । तत्वहीन ।

विष-वृक्ष = का० कु०, १२ ।
[सं० पु०] (सं.) विष रूपी । वृक्ष ।

विषाद = का० कु०, १ । का०, १७० । चि०, १४३ । झ०, ३० । ल०, ४८ ।
[सं० पु०] (सं.) अपूरणीय अभिलाषा के कारण मन में होने वाला दुःख । साहित्य में एक संचारी भाव ।

विसद = चि०, ४६, १४१, १६४ ।
[वि०] (सं.) बड़ा, विशाल ।

विसरै = चि०, १५३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भूले ।

विसवलय = चि०, ५५ ।
[सं० पु०] (सं.) कंकण ।

विसारहु = चि०, १६६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भूल जाओ । भूलो ।

विसारि के = चि०, १७१ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) भूल कर ।

विसारो = चि०, १७६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भूलो ।

विसाला = चि०, ५५ ।
[वि०] (ब्र. भा.) विशाल । बड़ा । विस्तृत ।

विसिख = चि०, ३४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) विशेष प्रकार की शिक्षा ।

विस्तार = का०, ५६ । चि०, १५८ । झ०, ४१ ।
[सं० पु०] (सं.) फैलाव । तनाव ।

विस्तारो = चि०, ७४ ।
[क्रि०] (हि.) फैलावो ।

विस्तीर्ण = क०, १४ ।
[वि०] (सं.) दे० 'विस्तृत'

विस्तृत = का०, ३, ३०, ३५, ५६, ७१, १२०, १३२, १८०, २८० । झ०, ६३ । प्रे०, ७, १३ । म०, ४, ल०, ३३ ।
[वि०] (सं.) फैला हुआ । विशाल । बड़ा ।

विस्तृत-सी = का०, २७७ ।
[वि०] (सं.) फैले हुए के समान । विशाल के सदृश ।

विस्मृत = क०, २४ । का०, १७१, १६२ । चि०, ६०, १६८, १७०, १८४ । म०, ६ ।
[वि०] (सं.) भूला हुआ । जो याद न हो ।

विस्मृत-से = का०, २४५ ।
[वि०] (हि.) भूले हुए के समान ।

विस्मृति = आं, ८, २६, ५५, ७०, ७५ । का० कु०, ६० । का०, ६, ४६, ६२, ६७, १७७, १६३, २८६, २६३ । प्रे०, १६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) भूल ।

विस्तृत = चि०, १५० ।
[वि०] (सं.) विशाल, बड़ा ।

विहंग = का०, १७२, १८२ ।
[सं० पु०] पक्षी । बादल । तीर । आकाश में

(सं.) विचरने वाला।

विहंगम = का० कु०, ८। चि०, १४५।
[सं० पु०] (सं.) पक्षी।

विहंग-संग = चि०, १४४, १४५।
[वि०] (सं०) पक्षियों के साथ।

विहँसते = आं०, २६। का०, २६०।
[क्रि०] (हि.) हँसते। प्रसन्न होते।

विहग = का०, १४४, २६०। चि०, १४६।
[सं० पु०] ल०, ४५।
(सं.) दे विहंग।

विहग-कुल = चि०, ५४। म०, ७।
[सं०पु०] (सं.) पक्षियों का समूह या परिवार।

विहग-बालिका-सी=का०, १७५।
[सं०स्त्री०] (हि.) पक्षियों के शिशु के समान।

विहरण = चि०, ६६, १६३।
[सं० पु०] घूमना। घूमने की क्रिया करना। विहार
(सं.) करना। विशेष रूप से छान लेना।

विहरण-प्रेमी = चि०, ४६।
[वि०] (सं.) विहार का प्रेमी। विहार करने वाला।

विहरत = चि०, ८, १५७।
[क्रि०] (ब्र. भा) विहार करता है।

विहरते = का०, १८२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विहार करते। घूमते।

विहरहिं = चि०, ६३।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विहार करते हैं।

विहस = ल०, ४६।
[पूर्व० क्रि०] (हि.) हँसकर।

विहसते = आं०, ६४।
[क्रि०] (हि.) हँसते हैं।

विहाग = ल०, १६।
[सं० स्त्री०] एक प्रकार का काजल जो आँखों में
(सं०) लगाया जाता है। एक राग जो आधी
रात के समय गाया जाता है।

विहार = का०, ६। ल०, १३।
[सं० पु०] मनो-विनोद और सुख प्राप्ति के लिये
(सं.) होने वाली क्रीड़ा। बौद्ध भिक्षुओं के
रहने का स्थान।

विहीन = का०, २०, १७१। ल०, ५३।
[वि०] (सं.) रहित। बिना।

विह्वल = का०, ४८, २६३, २६४। भ०, ८१।
[वि०] ल०, ३०।
(सं.) आकुल। विभोर। बेसुध।

विह्वल-सी = भ०, ३३।
[वि०] (सं.) आकुल की तरह।

विह्वल-सा = क०, ८।
[सं०स्त्री०](सं.) आनन्दित के समान। प्रसन्न के सदृश्य।

वीचि = चि०, ६६, १६६।
[सं०स्त्री०] (सं.) लहर। तरंग।

वीचिन = चि०, १५३।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा) लहरें, तरंग। अवकाश, सुख। चमक।

वीणा = आं०, ३८। का० कु०, १२१ का०,
[सं० स्त्री०] २६२। चि०, १५६। भ०, ३६।
(सं.) ल०, ४८।
एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

वाणी वीणा-अनुकारी=का०, कु०, ४८।
[सं० स्त्री०](सं.) वीणा के स्वर में मिल जाने वाले स्वर।

वीर = का० कु०, ५२, ६६, १०६, १०८,
[वि०] ११३। का०, ५१, २४८। चि०, २२,
(सं.) ४०, ४२। म०, ८, १०, १२, १५,
१६, १७, १८।
बहादुर। पराक्रमी। सौर्यवान। भाई।
लड़का। पति।

वीरकर्म = चि०, ६४।
[सं० पु०] (सं.) वीरों का कार्य। वीरता।

वीर गाथा = ल०, ५३।
[सं० पु०] (सं.) वीरों की कथा।

वीरजन = का०, ११५।
[सं०पु०] (सं.) वीर लोग।

वीरता =) का० कु०, १०६। ल०, ५२।
[वि०.] (सं.) शौर्य। पराक्रम।

वीरभाव = म०, ८।

[सं० पु०] (सं.) वीरता का भाव।

वीर-भूमि = ल०, ५२।

[सं० स्त्री०] (सं.) वीरों को पैदा करने वाली भूमि।

वीरवर = चि०, ४६।

[सं० पु०] (सं.) श्रेष्ठ वीर।

वीर-विचित्र = का० कु०, १०१।

[सं० पु०] (सं.) अद्भूत। पराक्रमी।

वीर-शृङ्गार-रस = चि०, २२।

[सं० पु०] (सं) काव्य में से माने गये नव रसों में से दो।

बीरुध = का०, २५। का०, ८६। का० कु०, २६।

[सं० पु०] (सं.) का०, २६, २८४। प्रे०, ३। चि०, ५७।
लता। पौदा।

वीर्य = का०, ४।

[सं० पु०] (सं.) शुक्र। रेत। पराक्रम। बल। वीर्य।

वृत्त = का०, ३४। का०, कु०, १०।

[सं० पु०] (सं.) घेरा। वृत्तान्त। हाल। वर्णिक छन्द।

वृत्ति = प्रे०, ४, २४। चि०, १५०। भ०, ७१।

[सं० स्त्री०] (सं.) जीविका। रोजी। योग्य छात्र को सहायता दिया जाने वाला धन।

वृथा = का०, १७५, १६४, २१६।

[वि०] (सं.) व्यर्थ। बेमतलब। फिजूल।

वृद्ध = चि०, ६५, ७३, ७४। ल०, ५३।

[सं० पु०] (सं.) बुड्ढा। पण्डित। विद्वान।

वृद्धि = का०, ५८।

[सं० स्त्री०] (सं.) बढ़ती। अधिकता।

वृन्तों = आं०, ४५।

[सं० पु०] = वृन्त का बहुवचन। कच्चा और छोटा

(सं.) फल। वह पतला डंठल जिस पर फूल लगता है।

विषमयी = का०, १२१।

[वि०] (सं.) जहरीली। जहर से भरी हुई।

विषाद = का०, ७, १८, ५४, १२२, १६०,

[सं० पु०] १८०, २०५, २३६। चि०, ५५।

(सं.) भ०, ३१, ४३। ल०, ५३, ७२। ल०, ३५, ४३, ५६।
दुःख। काम करने की इच्छा न होना। मूर्खता।

विषाद-आवरण = का०, २०५।

[सं० पु०] (सं.) विषाद का पर्दा।

विषाद सों = चि०, ४७।

[वि०] (सं.) दुख के समान।

विष्कंभ = का०, १८।

[सं० पु०] (सं.) नाटक के अंक का एक भेद जिसमें गत और आगत घटनाओं की सूचना निम्न श्रेणी के पात्रों द्वारा दी जाती है। बाधा-विघ्न।

वृक्ष = का० कु०, ८५, १०१, १०२। का०,

[सं० पु] ३२। चि०, ४६। प्रे०, १४। म०,

(सं.) २४।
पेड़। तरु।

वृत्त-पत्र = भ०, ३०।

[सं० पु०] (सं.) पेड़ का पत्ता।

वृत्त पाँत = का०, २३३।

[सं०पु०] (हि.) पेड़ का पत्ता।

वृत्रघ्नी = का०, १६०।

[सं० पु०] (सं.) इंद्र।

वृन्द = चि०, ६। म०, २, ५, १०।

[सं० पु०] (सं.) समूह, झुण्ड।

वृन्दहू = चि०, ६६।

[सं० पु०) (सं.) समूह भी। दल भी।

वृश्चको = ल०, ७८।

[सं० पु०] (सं.) बिच्छुओं का डंक।

वृष = का०, २८२, १७७।

[सं० पु०] सांड। एक राशि।

(सं.) बैल।

वृषभ = का०, २८३, २८६।

[सं० पु०] (सं.) दे० 'वृष'।

वृषभ की = चि०, ७२।

[सं०पु०] (सं.) बैल की।

वृष्टि = का०, ६, १२, १०, ७३, १६४, २३६।
[सं० स्त्री०] (सं) झ०, ६०।
वारिस। वर्षा।

वे = का० कु०, २०, २५, ३१, ५२। का०,
[सर्व०] ८, ५५, ६४, ७१, १४२, १४३, १८०
(हि.) १८३, २३८, २४५। झ०, ५१। म०,
५, १०। ल०, ३३।
'वह' का बहुवचन।

वेग = का० कु०, ५३, ७२, ७५, १०१, १०६
[सं० पु०] ११६, १२५। का०, १५, ५२, २०२।
(सं.) चि०, १५६। झ०, ४०। प्रे०, २४।
ल०, ६। ल०, ७६।
प्रवाह। बहाव। जोर। तेजी। शीघ्रता।
जल्दी।

वेगपूर्ण = का० कु०, ४४। म०, २। ल०, ६६।
[वि०] (सं.) प्रवाहपूर्ण। बहावदार। तेज।

वेगभरा = का०, ६५।
[वि०] (सं.) प्रवाह से पूर्ण।

वेगभरी = का०, १६०, २२१।
[वि०] (सं.) प्रवाह से भरी।

वेगभरे = का० कु०, १२।
[वि०] (सं.) प्रवाह से भरे।

वेगवती = चि०, १५०।
[वि०] (सं.) प्रवाह से भरी। बहावदार।

वेगसहित = का० कु०, १२६। म०, ७।
[सं० पु०] प्रवाह के साथ। तेजी से। शीघ्रता से।
(सं.) जल्दी से।

वेणु = आं, ३३। का० कु०, ११८। का०,
[सं० पु०] १७८, २२४।
(सं.) वंशी, बांसुरी। बाँस।

वेणुवादन कुंज = का० कु०, ११२।
[सं० पु०] (सं.) वे कुंज जिनमें वंशी का वादन होता है।

वेतन-युक्त = प्रे०, १६।
[सं० पु०] (सं.) वेतन-भोगी।

वेतसी = का०, १४६।
[सं० पु०] (हि.) बेंत, बड़वानल।

वेद = झ०, ६३।
[सं० पु०] वास्तविक और सच्चा ज्ञान। आर्यों के
(सं.) सर्वमान्य प्रधान धार्मिक ग्रंथ।

वेदना-सा = का०, ८६।
[वि०] (सं.) पीड़ा के समान।

वेदना = आ०, ७, ११, ४०, ६२, ६६, ८८।
[सं० स्त्री०] का० कु०, ६०। का०, २८, ४०, ५२,
(सं.) ११६, १२०, १७५, १७६, २१२।
ल०, २१, ३०, ४९।
व्यथा, पीड़ा, हार्दिक या मानसिक
दुःख।

वेदनामय = का०, ८४।
[वि०] (हि.) वेदना युक्त। दुःखपूर्ण।

वेदने = आ०, ७५। झ०, ८८।
[सं० स्त्री०] (हि.) वेदना। (संबोधन)।

वेदिका = का०, १८३, २१८।
[सं० स्त्री०] शुभ या धार्मिक कार्य के लिए बनाया
(सं.) गया ऊँचा छायादार स्थल। कुरसी।
वह चबूतरा जिसपर मकान बनता है।

वेदियाँ = का०, १९६।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'वेदी' (बहुवचन)।

वेदी = आं०, ६६। का०, ११४, ११६, २०१,
[सं० स्त्री०] २१५, २८४।
(हि.) शुभ या धार्मिक कृत्य के लिए निर्मित
छायादार उपयुक्त भूमि।

वेदी-ज्वाला = का०, २१४।
[सं० स्त्री०] (सं.) वेदिका की पवित्र लपटें।

वेला = आं०, १२, ४०, ६०। का०, १५।
[सं० स्त्री०] ल०, ५६।
(सं.) तट। सीमा। काल। समय। समुद्र की
लहरें।

वेश = का० कु०, ६, ११०। का०, ५२, २५८
चि०, २२। झ०, ५८। प्रे०, १८,
२५।
पहनावा, पोशाक, पहनने के वस्त्र।

वेष = का० कु०, १२।
[सं० पु०] (सं.) दे० 'भेष'।

वैध = का० कु०, ८६।
[वि०] कानून के अनुसार ठीक। विधिनुसार।
(सं.) संविधान के अनुसार।

वैभव = आं, २३। का० कु०, ११३। का०, ६, ५६, १६६। प्रे०, १२। ल०, ३४, ४७।
[सं० पु०] (सं.) विभव। ऐश्वर्य। धन-संपत्ति।

वैभवहीन = का०, ८२।
[वि०] (सं.) विभव-विहीन।

वैश्वानर = का०, १८३। चि०, १३६।
[सं०पु०] सं) अग्नि। चेतन, परमात्मा।

वैसा = का०, ८७, ६३, १४३। म०, ५, २१।
[वि०] (हि.) उस तरह का। उस प्रकार का।

वैसी = का०, २८, ६७, १५७, २८८।
[वि०] (हि.) दे० 'वैसा'।

वैसे = आं०, २७। का०, २८२। चि०, १७३। ल०, ६६।
[अव्य०] (हि.) उस तरह।

वोही = का० कु, ६।
[सर्व०] (हि.) दे० "वही"।

व्यंग = आं०, ५७। ल०, ६८, ७६, ७६।
[सं० पु०] (सं.) चुटकी, ताना, बोली, शब्द का व्यंजना के द्वारा प्रकट होनेवाला गूढ़ अर्थ।

व्यङ्ग मलिन = ल०, ११।
[वि०] बोली बोलना। चुटकी लेना।

व्यंग-हास = ल०, ६७।
[वि०] (सं.) व्यंगपूर्ण हँसी। उपहास।

व्यक्त = का० कु०, ७४। का०, १६, २७, ३५, ५३ चि०, १६६।
[वि०] (सं.) स्पष्ट, स्थूल, बड़ा, प्रकट।

व्यक्ति = का०, ५०, ७०, १३२। प्रे०, १६, १७।
[सं० स्त्री०] (सं.) मनुष्य, आदमी। व्यक्त होने की क्रिया या भाव।

व्यक्तिगत = प्रे०, १७।
[वि०] (सं.) वैयक्तिक। किसी व्यक्ति से संबंधित।

व्यजन = का०, ७३, ६०।
[सं० पु०] (सं.) पंखा। झालर।

व्यतीत = चि०, ३५, ४५। प्रे०, ८। ल०, २३।
[वि०] (सं.) गत, बीता हुआ।

व्यथा = आं०, ११, ५२, ५४। का० कु०, ८, २१। का०, ५४, १२६, २१५, २१७, २२६। भ०, २७, ६१। ल०, ११, २१, ३७, ४०।
[सं० स्त्री०] (सं.) पीड़ा, वेदना, कष्ट, दुख।

व्यथा-गाँठ = का०, २१३।
दुःख की गाँठ। व्याकुल वेदना।

व्यथा-भार = का०, २४४।
[वि०] (सं.) दुःख का बोझ। वेदना का भार।

व्याथायें = आं०, १३, ५८।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० 'व्यथा' (बहुवचन)।

व्यथित = आं०, ८, ६१। का० कु०, १७, ८०, ८६। का०, ३५, ३७, १२०, २२१। चि०, ६५, १४३, १५८। प्रे०, १४। ल०, ३३।
[वि०] (सं.) दुःखित। जिसे किसी प्रकार की वेदना या कष्ट हो। दुःखी।

व्यथिता = का०, २४५।
[सं० स्त्री०] सं.) दुःखिणी।

व्यर्थ = आं०, १०, ३६। का० कु०, १३। का०, ३७, ३६, ८७, ८६, १२०, १५४, १६२, १६४। चि०, ५१, ७३। भ०, ३७।
[वि०] (सं.) निरर्थक। अर्थ रहित। विफल, जिसका कोई फल न हो।

व्यवहार = का०, १८६।
[स० पु०] (सं.) कार्य, काम। बर्ताव। आचरण।

व्यवधान = भ०, ६१।
[सं० पु०] (सं.) ओट, परदा। अड़चन। खंड। विच्छेद। बाधा।

व्यवसाय = का०, १८२।
[सं० पु०] धंधा। जीविका निर्वाह के निमित्त किया
(सं.) जानेवाला कार्य।
व्यवस्था = का०, १६८, २००, २७१।
[सं० स्त्री०] (सं) प्रबन्ध, इन्तजाम।
व्यस्त = का०, १०, १३, १४, १५, ३३, ३५,
[वि०] ४६, ५१, ५३, ५६। भ्रु०, ८६। ल०,
(सं.) ४४।
घबड़ाया हुआ, व्याकुल, व्यग्र।
व्याकुल = आं०, ३१, ३३। क० १७, १६६।
[वि०] का० कु०, १४, २८, ८५। का०,
(सं.) ३६, ६५, १११, १३६, १६६, १६८,
१८५, चि०, ६८, १४१। भ्रु०, ३८,
४५। म०, ४। ल० २६, ७०।
अत्यंत उत्कंठित, कातर। घबड़ाया
हुआ, विकल।
व्याकुलता = का० १६१। चि०, १५३। ल०, १२।
[सं० स्त्री०] (हि.) कातरता। व्यस्तता। उत्कंठा।
व्याकुल-सी = का०, २७, १२१।
[वि०] (हि.) घबड़ायी हुई सी। व्यस्त-सी।
व्याख्या = का०, २७१।
[सं० स्त्री०] वर्णन, विश्लेषण। जटिल अंश का
(सं.) स्पष्टीकरण।
व्याधि = का० कु०, ७२।
[सं० स्त्री०] सं० बखेड़ा। रोग। विपत्ति।
व्यापक = का०, १६६, १७६। ल०, ३२।
[वि०] भरा या छाया हुआ। घेरने या ढकने
(सं.) वाला।
व्यापकता = का०, १६५।
[सं० पु०] (हि.) गहराई, फैलाव, विस्तार।
व्यापार = क०, २७। का०, ५६, १२४, १७८।
[सं० पु०] भ्रु०, ४२। ल०, १२, १३।
(सं.) व्यवसाय, कार्य, काम। सहायता।
चीज खरीद कर बेचने का काम।
क्रय-विक्रय।
व्यापी = का० कु०, ५। ल०, ३०।
[वि०] जो व्याप्त हो, जो चारों ओर फैला हो।
(हि.) व्याप्त होने वाला।
व्याप्त = क०, ३२। का० कु०, १०८, ११२,
[वि०] १२३।
(सं) किसी वस्तु या स्थान में अच्छादित।
सीमांत। फैला हुआ।
व्याली = का०, ५।
[सं० स्त्री०] (सं.) सर्पिणी, नागिन।
व्यालों-सी = का० १४।
[वि०] (हि.) सर्पों के समान।
व्याहहु = चि०, ५४।
[क्रि०] विवाह करो। व्याहना, क्रिया का एक
(ब्र. भा.) रूप।
व्योम = का० कु०, २४, ६४, ६६, ११२।
[सं० पु०] का०, १४, १६, २०, २६, ८८।
(हि.) चि०, २३, ६७, ७४, १४१, १४६।
भ्रु०, २४। प्रे०, १०। म०, ६।
ल०, १६, ५६, ६८, ७५।
आकाश। अंतरिक्ष। आसमान।
व्योमकेश = चि०, ७२।
[सं० पु०] (हि.) आकाश। अवली। रजनी।
व्योम-गंगा = आं०, ८।
[सं० स्त्री०] (सं.) आकाश गंगा।
व्योमतल = का०, ५१।
[सं० पु०](हि.) आकाश की सतह।
व्योम-बीच = का०, ४६। चि०, १८२।
[सं० पु०] (हि.) आकाश-मध्य। गगन के बीच में।
व्योम-मुकता-सम=चि०, १४५।
[वि०] (हि.) आसमान के मोतियों के समान। तारों
के समान।
व्योम-सरोवर= चि०, १४६।
[सं० स्त्री०](सं.) आकाशरूपी सरोवर।
व्रज = का० कु०, ११२।
[सं० पु०] मथुरा। कृष्ण की क्रीड़ा भूमि। लीला-
(सं.) भूमि। समूह।
व्रज-कानन = का० कु०, १२५।
[सं० पु०] (सं.) मथुरा के जंगल। वृन्दावन के वन।

ब्रजभूमि = का० कु०, १११, ११४।
[सं०पु०] (सं) मथुरा और वृन्दावन की भूमि।
ब्रज्या = का०, ६३।
[सं०स्त्री०] दल, रंग-भूमि। घूमना-फिरना।
(सं.) एकत्रित करना। आक्रमण।
ब्रह्मा = का० कु०, ११४।
[सं० पु०] (सं.) ईश्वर। चतुरानन। सृष्टि कर्ता।
ब्रीड़ा = का०, ६४, २६३।
[सं०स्त्री०] (सं.) लज्जा, लाज, शर्म।

श

शंक = चि०, ५०।
[सं०पु०](ब्र.भा.) डर, भय, शंका।
शंकर = चि०, ६१।
[सं० पु०] (सं.) संहार करने वाला। महादेव।
शंका = का० कु०, ५७, ५८। का०, १६६।
[सं० स्त्री०] चि०, ४ । भ्रु०, ६४। प्रे०, २१।
(सं.) अनिष्ट। भय। सन्देह। खटका।
शंकित = का० कु०, ८१।
[वि०] (हि.) भयातुर। डरा हुआ।
शंख = का० कु०, ११४।
[सं० पु०] धार्मिक कृत्यों पर बजाया जाने वाला
(सं.) बड़े घोंघे का एक प्रकार का पवित्र बाजा। कम्बु।
शंपाओं = का०, १४।
[सं० स्त्री०](सं.) बिजलियों। कमरों।
शकल-निपात = का०, १४।
[सं० स्त्री०](सं.) संपूर्ण नाश। पूर्ण विनाश।
शकुन्तला = चि०, ५७, ५८, ५६, ६०, ६१, ६२।
[सं० स्त्री०](सं.) कण्व ऋषि की पालित कन्या।
शक्ति = आं०, ४१। क०, २४, ३१। का०
[सं० स्त्री०] कु०, ३। का०, ९, १४ ३१, ५६,
(सं.) ७२, ७६, १२५, १६५, १८६, १६६, १६६, २३७, २५४, २६२, २७३, २८६। चि०, १४२। ल०, ६६, ७१। बल, ताकत, पराक्रम। वह तत्व जिससे कोई कार्य या अभीष्ट सिद्ध होता है। प्रकृति। माया। दुर्गा। एक प्रकार का शस्त्र।

शक्ति-केन्द्र = का०, १६१।
[सं० पु०] जहाँ से शक्ति उत्पन्न हो। विपुल
(सं.) शक्ति जिसमें हो।
शक्ति-चिन्ह = का०, २५, २४०।
[सं० स्त्री०] (सं.) शक्ति का चिह्न। शक्ति का प्रतीक।
शक्ति मती-करुणा=चि०, १८७।
[सं० स्त्री०] दया की वह भावना जिसमें कुछ
(ब्र भा.) करने की सामर्थ्य हो।
शक्तिमयी = का०, २३८।
[वि०] (हि.) शक्ति से युक्त। बलशाली।
शक्तिमान = चि०, १५३।
[वि०] (हि.) पराक्रमी। बलशाली।
शक्तियाँ = का०, १४।
[सं०स्त्री०] (हि.) शक्ति का बहुवचन।
शक्तिशाली = का०, ५७। ल०, ७१, ७८।
[वि०](हि.) ताकतवर। बलिष्ठ। पराक्रमी।
शक्ति-सुधा = का० कु०, ६३।
[सं० स्त्री०] (सं.) शक्ति रूपी अमृत।
शक्ति-स्रोत-जीवन = का०, १६१।
[सं० स्त्री०] जीवन के लिए शक्ति का उद्गम।
(सं.) जीवन को जहाँ से शक्ति मिले।
शक्ति-हीन = क०, ३१।
[वि०] (सं.) बलहीन। दुर्बल।
शठता = चि०, ६१।
[सं० स्त्री०](सं.) धूर्त्तता। चालाकी। दुष्टता।
शत = म०, ३।
[वि०] (सं.) पचास का दूना। सौ।
शतघ्नियों = ल०, ५४।
[सं० स्त्री०](हि.) एक प्रकार के प्राचीन शस्त्रों।
शतदल = आं०, ४४। का०, १७५, १७८।
[सं० पु०] (सं.) कमल।
शतद्रुशत = ल०, ५३।

[सं० पु०] शतद्रु—सतलज नदी का प्राचीन
(सं.) नाम। सैकड़ों सतलज।

शतपत्र = का० कु०, १७।
[सं० पु०] (सं) कमल, मोर, मैना, सारस।

शत-शत = का०, १११, २४६, २८५। भ्र०, ५६।
[वि०] प्रे०, १६। ल०, ६०।
(सं.) सैकड़ों, बहुत से।

शतशः = का०, १६५। म०, १५।
[वि०] (सं.) सैकड़ों। सौगुना

शताब्दियों = ल०, १३।
[सं० स्त्री०] अनेक शतियों। अनेक शतकों। बहुत
(सं.) समय।

शत्रु = का० कु०, २०। का०, २३०, २३८।
[सं० पु०] (सं.) चि०, ६४। म०, ६, ११, १२, २२।
बैरी। दुश्मन। एक असुर का नाम।

शत्रुन = चि०, ६५, ६७।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) शत्रुओं।

शत्रु-हृदय = चि०, ५१।
[सं० पु०] (सं.) बैरियों का दिल।

शत्रुता = ल०, ६६।
[सं० स्त्री०] दुश्मनी। बैर।

शनि = का०, १७०।
[सं० पु०] = सौर जगत का सातवाँ अशुभ ग्रह।
(सं.) एक देवता।

शपथ = भ्र०, ६७, ८७।
[सं० स्त्री०](सं.) कसम। सौगन्ध।

शब्द = क०, ८, १८। का० कु०, ५। का०,
[सं० पु०] १६, १११, २४६। म०, १। ल०, ५८
(सं.) ७२, १११।
सार्थक ध्वनि। आवाज। संतों के बनाये
पद।

शयन = अं०, ५५। का०, ११८, १८६। भ्र०,
[सं० पु०] ५५।
(सं.) सोना, नींद लेना।

शयन-कक्ष = का०, १८६।
[सं० पु०] (सं.) सोने का कमरा।

शयनागार = प्रे०, २।
[सं० पु०] (सं.) सोने का कमरा।

शय्या = अं०, ७६।
[सं० स्त्री०] बिछौना। पलंग।

शर = का० कु०, ६८। चि०, ४२, ५३, ५४।
[सं०पु०] (सं.) बाण, तीर। भाले का फल।

शरजाल = चि०, ५३।
[सं० पु०] (सं.) बाणों का समूह। तीरों का ढेर।

शरजालहिं = चि०, ४२।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) दे० शरजाल।

शरण = का० कु०, ६६। का०, १६१, १७१,
[सं० स्त्री०] १८६, १६५। चि०, ६७। ल०, ६६।
(सं.) रक्षा। आश्रय। घर। मकान।

शरत्काल = का० कु०, १२०।
[सं०पु०] (सं.) सरदी का मौसम। शरत् ऋतु।

शरद = अं०, ७१। का० कु०, ६७। का०, २३,
[सं० स्त्री०] २७१। चि०, १७१। भ्र०, २३।
(दे.) एक ऋतु जो आश्विन और कार्तिक में
पड़ती है। वर्ष। साल।

शरद-इंदु = का०, १५३।
[सं०पु०] (सं.) शरत् काल का स्वच्छ चन्द्रमा।

शरद-इंदिरा = का०, २८।
[सं०स्त्री०] (सं.) शरत् काल की चाँदनी।

शरद-घन = का० कु०, १००।
[सं०पु०] (सं.) शरत् कालीन बादल।

शरद-प्रान्त = का०, २२१।
[सं० पु०] (सं.) शीतलता प्रदान करने वाला प्रदेश।

शरद-ललाट = का० कु०, २६।
[सं०पु०] शरत् के समान स्वच्छ एवं देदीप्यमान
(सं.) मस्तक।

शरद-शर्वरी = का० कु०, १३।
[सं० स्त्री०] (सं.) शरद की रात्रि। शरद रूपी नायिका।

शरभ = ल०, ७६।
[सं०पु०] (सं.) टिड्डी। हाथी का बच्चा। शेर।

शरासन = चि०, १०६।
[सं० पु०] (सं.) धनुष।

शरीर = का० कु०, १०० । का०, २६, ३६, ४८, ८३, १४१, १४५, २०७, २१२ ।
[सं० पु०] (सं.) देह । तन ।

शरीरी = का०, २५४ ।
[सं०पु०] (सं) जीव, आत्मा (वि.) शरीर धारी ।

शलभ = का०, १७६ । ल०, ४६ ।
[सं० पु०] पतंग । फतिंगा ।

शवता = का०, १३० ।
[सं०स्त्री०] (हि.) मुर्दापन । शव की भाव वाचक संज्ञा ।

शवलित = का०, ८४ ।
[वि०] (सं.) मिश्रित । मिला हुआ ।

शशांक = चि०, १४० ।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा कपूर ।

शशि = आं०, ३३, ३५, ४४, ७७ । का०, १७५, १८४ । चि०, २८, ४५, १०१, १४६ । भ्रु०, २३, ७२ ।
[सं०पु०] (सं.) चन्द्रमा ।

शशि-कला-सी = का० कु०, १२० ।
[वि०] (हि.) चन्द्रमा की कला के समान ।

शशि-किरण = का० कु०, ८ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) चन्द्रमा की किरण । रश्मि ।

शशि-किरनें = ल०, ४१ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) चन्द्रमा की किरणें ।

शशि-खंड-सदृश = का०, १६८ ।
[वि०] (हि.) चन्द्रमा के टुकड़े के समान ।

शशिमुख = आं०, १६ ।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा के समान मुख ।

शशिलेखा = का०, ११७, २२५, २३६ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) चन्द्रमा का चित्र । चन्द्रमा की किरणें ।

शशि-शतदल = ल०, २५ ।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा रूपी कमल ।

शशि सी = ल०, ३६ ।
[वि०] (हि.) चन्द्रमा के समान ।

शस्य = का०, ८२ । चि०, १५७ । प्रे० ७ । ल०, ५१ ।
[सं० पु०] (सं.) नयी घास । अनाज । खड़ी फसल ।

शस्य भरी = प्रे०, ११ ।
[वि०] (सं.) अनाज से भरी । हरियाली से भरी ।

शस्य श्यामला = का०, ६३, १६४ । चि०, १४३ ।
[वि०] (सं) हरी-भरी प्रकृति । हरियाली ।

शस्यावलि = चि०, १३६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) अनाज की बालों का समूह ।

शस्त्र = का०, १४६ । चि०, ४२ । म०, ५६ ।
[सं० पु०] (सं.) फेंककर मारा जाने वाला अस्त्र ।

शस्त्र-यंत्र = का०, १६६ ।
[सं० पु०] (सं.) फेंककर मारा जानेवाला हथियार ।

शस्त्रागार = चि०, ३१ ।
[सं० पु०] (सं.) हथियार-घर ।

शस्त्रों = का०, १६१ ।
[सं० पु०] (हि.) फेंककर मारे जानेवाले हथियार ।

शस्त्रों-सा = का०, २०० ।
[वि०] (हि.) हथियारों के समान ।

शहनाई = प्रे०, १३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) एक प्रकार का बाजा ।

शांत = आं०, १२, ३७ । क०, ११ । का० कु०, १४, १५, १८, २१, ४०, ४८, ५६, ८६, ६०, ६६, १२० । का०, ३०, ३१, ३४, ५०, ८५, ८६, ६३, १३६, १६०, १६३, २२३, २३०, २४५, २७२, २८०, २८१ । चि०, ६६ ६६, ७३, १४५ । भ्रु०, १७, १६, ३३ । प्रे०, ३, ४, ६, ६, २५ । म०, ७, ११ । ल०, १२, १३, ३२, ४३, ५६ ।
[वि०] (सं.) स्वस्थ, हो हल्ला रहित । धीर, गम्भीर । सौम्य । जिसमें क्षोभ, चिन्ता, उद्वेग, दुख, आदि न हो ।

शांत-कुटीर = प्रे०, २१ ।
[सं० पु०] (हि.) नीरव झोपड़ी ।

शान्तचित्त = का० कु०, ५७ । प्रे०, ७ ।
[सं० पु०] (सं.) उद्वेग आदि से रहित चित्त । स्थिर ।

शान्तमयी = का०, ७७ । चि०, ७२ ।
[वि०] (हि.) शान्त, मौन, स्थिर ।
शान्ति हेतु = का० कु०, १४ ।
[क्रि० वि०] (सं.) शान्त-कारण । शान्ति के लिए ।
शान्ति = आं०, २५ । का० कु०, ५३, ६२, ६३,
[सं० स्त्री०] ६६, ११६, १२०, १२२ । का०, ८,
(सं.) १०, २७ । १२२, २३०, २३६,
२५० । चि०, ४५, ५९, १४२,
१६१, १७०, १६६ । झ०, ३४, ६२ ।
प्रे०, ४, २१, २२, २६ । म०, ७,
२४ ।
स्तब्धता । सन्नाटा । अमंगल आदि दूर
करने का एक धार्मिक उपचार ।
शान्ति-देवी-सी =का०, कु०, १०० ।
[वि०] (हि.) शान्ति की देवी के सदृश ।
शान्ति पुञ्ज = का०, १४६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) शान्ति का समूह । गम्भीर शान्ति ।
शान्ति- प्रात = का०, २५० ।
[सं० पु०] (सं.) शान्ति रूपी प्रातःकाल ।
शान्तिमयी = का०, ३८ ।
[वि०] (सं.) शान्त, स्तब्ध ।
शांति-राज्य = प्रे०, ६ ।
[सं० पु०] (सं.) वह राज्य जिसमें शान्ति हो ।
शांति वारि = ल०, ३२ ।
[सं० पु०] (सं०) पूजन का शांतिदायक जल ।
शाखा = चि०, २६, ६८ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) डाली । विभाग । खण्ड । टहनी ।
शाखावली = का० कु० ५३ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) वृक्ष की डालियों का समूह ।
शामली = का० कु०, २५ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) सेमल का वृक्ष ।
शाप = का०, १६३, १८५, १६१ । चि०,
[वि०] ५८, ६० ।
(सं.) किसी के अनिष्ट की कामना से कहा
गया कोपमय शब्द । धिक्कार । भर्त्सना ।
शाप-पाप = का०, २५४ ।
[सं० पु०] (सं.) भर्त्सना का पाप ।
शापित = का०, २८८ ।
[वि०](हि.) धिक्कारा गया ।
शापित-सा = का०, २२७ ।
[वि०] (हि.) धिक्कारे गये के समान ।
शारद-घन-बीच =झ०, २२ ।
[अ०] (हि.) शरद्कालीन बादलों के मध्य में ।
शारद-चन्द्र = प्रे०, १५ ।
[सं० पु०] (सं.) शरद्कालीन चन्द्रमा ।
शारदशशि = झ०, ७२ ।
[सं० पु०] (सं.) दे० शारद चन्द ।
शारदीय = चि०, १५४ ।
[वि०] (हि.) शरद्काल का । शरद् ऋतु सम्बन्धी ।
शालि = क०, ८ ।
[सं० पु०] (सं.) जड़हन नाम का धान । गन्ना ।
शालियाँ = का०, ३२, १४१ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) धान की बालियां ।
शालीनता = का०, १०३ ।
[सं० स्त्री०] शिष्टता । नम्रता । अच्छे आहार-
(सं.) विचार ।
शावक = का०, ४७, १४६, २४८ । चि०, ४० ।
[सं० पु०] (सं.) किसी भी पशु या पक्षी का बच्चा ।
शाश्वत = का०, २७, १६३ ।
[वि०] चिरन्तन । कभी नष्ट न होने वाला ।
(सं.) अजर ।
शासक = का०, १६८, २४३ ।
[सं० पु०] हाकिम । राजा । जो शासन करता है ।
(सं.) जिसे दण्ड देने का अधिकार हो ।
शासन = क०, १०, २७ । का०, १७, २५, ३४,
[सं० पु०] ३८, ८३, १७१, १८५, २०६ । चि०,
(सं.) १०६ । ल०, ४७, ७४, ७६, ७७,
७८, ८८, १६२, १६४, १६८ ।
आज्ञा । आदेश । राजत्वकाल। नियन्त्रण ।
शासनादेश = का०, २६७ ।
शासन की आज्ञा ।

शासित = का०, २६।
[वि०] (हि.) जिसपर शासन किया जाय। प्रजा।

शास्त्र = का० कु०, १२०। का०, ११०।
[सं० पु०] किसी विषय का सारा ज्ञान जो क्रम
(सं.) से किया गया हो।

शास्त्र-शास्त्र = का०, २७२।
[अव्य०] (हि.) प्रत्येक शास्त्र।

शास्त्रों = का०, २०२।
[सं० पु०] (हि.) शासन शब्द का बहुवचन।

शाहंशाह = म०, २०, २२।
[सं० पु०](हि.) शाहों का शाह। बादशाह।

शिंजनी-सी = का०, १०६।
[सं० स्त्री०] नूपुर-सी। पैजनी-सी। अंगूठी-सी।
(सं.) धनुष की डोरी के समान।

शिंजिनी = आं०, २४। का० १८५।
[सं० स्त्री०] (सं.) दे० शिंजनी।

शिकारी = चि०, १८५।
[वि०] (फा.) शिकार खेलने वाला। (सं०) व्याध।

शिक्षित = का० कु०, १०६।
[वि०] जिसने शिक्षा प्राप्त की हो। पढ़ा-
(सं.) लिखा।

शिक्षा = का० कु०, १२०। प्रे०, २१।
[सं० स्त्री०] विद्या पढ़ाने तथा कोई कला सीखने
(सं.) की क्रिया। तालीम, उपदेश। सबक।
परामर्श।

शिखरों = का०, ५३, ८८, ११६, १५८, १६६।
[सं० पु०] का० कु०, ५३, ६६। चि०, १४३।
(सं.) चोटियां। मन्दिर या मकान के ऊपर
वाले नुकीले भाग। कलशे। गुम्बद।
मंडप।

शिखा = का० कु०, ७६। का०, ११८। चि०,
[सं० स्त्री०] ४६। ल०, ४६।
(सं.) चोटी, कलगी, आग की लपट। दीपक
की लौ। प्रकाश-किरण।

शिखिगण = का० कु०, १२४।
[सं० स्त्री०] मयूरों का समूह। मुर्गों का समूह।
(सं.) घोड़ों का समूह। दीपक का समूह।

शिखी = चि०, १५७।
[सं०स्त्री०] शिखा या चोटी वाला। मयूर। मुर्गा।
(सं.) सारस। घोड़ा। बैल।

शिथिल = आं०, २४, २७, ५२, ६८। का० कु०,
[वि०] १२। का०, १०, ६३, ६६, ८१, १४६,
(सं.) १८४, २१२। झ०, ३०, ४५, ५२,
७२। म०, २३। ल०, १०, २५, ४४।
निष्क्रय, सुस्त।

शिथिलपत = का०, १४१।
[सं० पु०] जो थकावट के कारण धीमा पड़ गया
(सं.) हो। धीमापन। सुस्ती के साथ।

शिथिल-सी = का०, ७०।
[वि०] (सं.) निष्क्रय सा, सुस्त सदृश।

शिर = का०, १७, २१६। चि०, ४२। म०,
[सं० पु०] ७। ल०, ४६।
(सं.) सिर, माथा, चोटी, सेना का अग्रभाग।

शिरमौर = का० कु०, ११३।
[वि०] (हि.) सर्वश्रेष्ठ।

शिर-रत्न = का० कु०, १०६।
[वि०] (सं.) शिरोमणि सबसे उत्तम, श्रेष्ठ।

शिरस्त्राण = क०, १७।
[सं० पु०] (हि.) शिर-त्राण।

शिरहि = चि०, ६४।
[सं० पु०] (सं.) शिर का। शय्या का। चोटी का।

शिरायें = का०, ४।
[सं० स्त्री०] शरीर में रक्त की छोटी नसें जिसके द्वारा
(सं.) शरीर के विभिन्न अंगों में होकर रक्त
हृदय में पहुँचता है। जमीन के अंदर
बहनेवाला सोते।

शिरोप = आं०, ३०, ३१। का०, १७८।
[सं० पु०] (सं.) सिरस का वृक्ष, कोमल फूल वाला।

शिरोमणि = म०, २०,।

[सं० पु०] सिर पर पहनने का रत्न। (वि०)
(सं.) सबसे उत्तम, श्रेष्ठ।

शिरो सहा = चि०, १३३।
[सं० पु०] (सं.) सिर के बाल, केश।
शिलहिं = चि०, ७१।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) दे० शिला (बहुवचन)।
शिला = का०, कु०, २६, १०६। का०, ३।
[सं० स्त्री०] (सं.) पत्थर, चट्टान। गेरू। कपूर।

शिला-लग्न = का०, २४७।
[सं० पु०] (सं.) शिला रूपी लग्न।
शिला-संधियों = का०, २६।
[सं० स्त्री०] (सं.) चट्टानों की संधियां या गुफाएँ।
शिल्प = का० कु०, ११०। का०, ८४। प्रे०,
[सं० पु०] २०। म०, २०। ल०, ५६।
(सं.) दस्तकारी, कोई हाथ का बना काम, कारीगरी, कौशल।

शिल्प कुसुम = का० कु०, ११०।
[सं० पु०] (सं.) शिल्प रूपी कुसुम।
शिल्प-पूर्ण = का० कु०, ११०।
[वि०] (सं.) शिल्पमय। कलापूर्ण।
शिल्प-साहित्य= का० कु०, १०६।
[सं० पु०] (सं.) कला संबंधी साहित्य।

शिल्प सी = का०, १६०।
[सं० पु०] सं.) कला के सदृश। कलामयी।
शिल्प-सौन्दर्य= का०कु०, १०६।
[सं० पु०] कौशल की सुन्दरता। शिल्प कला की
(सं.) मनोहारिता।

शिल्पी = का० कु०, ६, ५१।
[सं० पु०] शिल्प का काम करने वाला, शिल्प
(सं.) का अच्छा जानकार। राज, चित्रकार।
शिवं चि०, १३६।
[सं० पु०] (सं.) कल्याण।

शिव = का०, १८५। चि०, २६। प्रे०,
[सं०पु०] २३।
(सं.) कल्याण, मंगल। हिन्दुओं के एक प्रधान देवता जिसमें सृष्टि के संहार तथा कल्याण दोनों की क्षमता है।

शिविका = म०, १, ३, ७।
[सं० स्त्री०] (सं.) पालकी। डोली।
शिशिर = का०, ८८, ६४, १७५, १८१। चि०,
[सं० पु०] १८, २८, ३६। झ०, ४६। प्रे०, १६।
(सं.) जाड़ा, शीतकाल, माघ और फाल्गुन की ऋतु। विष्णु। हिम। पद्माकर। लाल चंदन।

शिशिर-कण = आं०, ३५। झ०, २१।
[सं० पु०] हिम कण, ओस की बूँदें। लाल-चंदन
(सं.) का चूर्ण।
शिशिर-प्रभंजन-वेग=का० कु०, १३।
[सं० पु०] (सं.) शरद ऋतु की वेगवती वायु।
शिशु = आं०, ६८। का० कु०, १०५। का०,
[सं० पु०] ६४, १४१, १४४, २७८। चि०,
(सं.) १४१। झ०, २६, ३४, ४१। ल०, २६।
बालक, बच्चा।

शिशुता = का०, १३५।
[सं० स्त्री०] (सं.) बचपन। लड़कपन।
शिशुपाल = का० कु०, ११२, ११३।
[सं० पु०] चेदि देश के राजा का नाम जिसका
(सं.) श्री कृष्ण ने बध किया।
शिशु-सा = का०, ६३, २३४।
[वि०] (हिं.) बच्चों सा। बालकों के समान।

शिशुसाल = का०, ४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) मछली के बच्चे।
शिशु-सिंह = का० कु०, १०६।
[सं० पु०] (सं.) सिंह के बच्चा।
शिष्टाचार = प्र०, ६।
[सं० पु०] शिष्ट तथा उत्तम व्यवहार। आगत का
(सं.) सम्मान करना।
शिष्य = चि०, ५८।
[सं० पु०] (सं.) चेला। जिसे शिक्षा दी जाय।
शीघ्र = क०, १०, ११, २०, २३, २५। का०

[वि०] (सं.) कु०, ८०, ६२, १०२, १२०। का०, १०, ५५। भ०, ८२। प्रे०, २१। म०, १२, १४, १७, २४। ल०, ७५। अविलम्ब। जल्दी।

शीत = [सं० स्त्री०] (सं.) का०, ११८, २५६। चि०, २४। भ०, ६१। ठंडक। शीतलता। एक ऋतु का नाम।

शीतकर = [सं० पु०] (सं.) का० कु०, ५५। भ०, ५६। म०, १६। शीतल करनेवाला। चंद्रमा। कपूर।

शीतल = [वि०] (सं.) आं०, १०, ३०, ३६, ४३, ६३। क०, १४। का० कु०, २३, ३८, ४८, ५३, ५४, ५७, ७०, ७१, ६०, ९२, १४६, १५०। का०, ३, १८, २०, २३, २४, २६, ३१, ३४, ३७, ३८, ४८, ७६, ८५, १३६, १७७, १८३, १८४, २३६ २३८, २४८, २५८, २८०, २८१। चि०, ११, ६३, १५४, १५८। भ०, १६, ३४, ३८, ४३, ६१, ७३, ८७। प्रे० ११, १५, २२। ल०, ६, १३, ३६, ४३। ठंडा। जड़।

शीतल करना= [क्रि०] (हि.) म०, ३। ठंडा करना।

शीतलकारी = [वि०] (सं) का० कु०, १२६। ठंडा और ठंडा करने वाली।

शीतलता = [सं० स्त्री०] (हि.) आं०, ७१। का०, ७७, १०१, १२२, २०७। भ०, २१। ठंडापन। सर्दी जड़ता।

शीतलताई = [सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) चि०, २४। ठंडापन। सर्दी। जड़ता।

शीतल-मन्द-बयार=का०, ५०। [सं० पु०] (सं.) ठंडी मन्द हवा।

शीतलता-सी = [वि०] (हि.) ल०, ३२। सर्दी के समान।

शीतल-दाह = [सं० पु०] (सं.) का०, २७। ठंडी जलन।

शीतांशु = [सं०पु०] (सं. चि०, १५३। चन्द्रमा और कपूर।

शीतातप = [सं० पु०](सं०) का० कु०, १४, ७३, ११०। सर्दी, गर्मी।

शील = [सं० पु०] (सं.) चि०, २५, ४६, १५४, १६३। ल०, ७७, ७६। सौजन्यता। कोमल हृदय। चाल-ढाल। संकोच।

शील-निवास = [वि०] (सं.) चि०, २२। शिष्ट, शीलवान।

शीश = [सं० पु०] (हि.) प्रे०, १३। मस्तक, शिर, शीष, सबसे ऊपर।

शीघ्र = [वि०] (सं.) का०, १०। भ०, ८२। म०, १४, १७, २४। अविलम्ब। जल्दी। छिद्र।

शुक्र = [वि०] [सं० पु०] (सं.) का०, ६७। चमकीला, वीर्य। एक नक्षत्र का नाम।

शुक = [सं० पु०](सं.) आं०, २३। क०, १६। तोता। सुग्गा।

शुकीह = [सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) चि०, ५८। सुग्गी।

शुक्ल पक्ष = [सं० पु०] (सं.) भ०, ८५, अमावस्या के बाद के प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के पन्द्रह दिन।

शुक्ल-रूप = [वि०] (सं.) चि०, ३३। स्वच्छ रूप।

शुचि = [सं० पु०] (सं.) का० कु०, १०४, ११४। का०, २६, २४४। चि०, ४६, ४८, ५३, ७२, ६८, १४५, १४६, १५२, १५५, १५८, १६१, १६२, १६४, १६८। भ०, ५३। म०, ४, ८। ल०, १२। स्वच्छता, पवित्रता। (वि०) पवित्र, शुद्ध।

शुचितम = [वि०] (सं.) भ०, ३३। अत्यन्त पवित्र।

शुचि-भावत = चि०, ७२ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सुन्दरता या स्वच्छता अच्छी लगती है।

शुचिसों = चि०, ७३ ।
[सं० पु०](ब्र.भा.) स्वच्छता से ।

शुद्ध = का० कु०, ११४ । का०, ७६, १६६ ।
[वि०] चि०, ५७ । भ्र०, ७७ । ल०, ७५ ।
(सं.) स्वच्छ, निर्मल । पवित्र । बिना मिला घट का ।

शुभ = क०, ३२ । का० कु०, १००, १०६ ।
[वि०] का०, २७, १६५, १६२, २५१ । चि०, १५२, १६१ । भ्र०, ५८, ७७ । म०, ७, १८ ।
(सं.) मंगलकारी । कल्याणकारी । भलाई (सं.) चार्दा ।

शुभकांक्षिणी = का०, १६५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कल्याण की कामना करनेवाली ।

शुभ-रूप = चि०, १५६ ।
[सं०पु०] (सं) मंगलकारी रूप ।

शुभ-सत्ता = का० कु०, ८६ ।
[सं० स्त्री०] कल्याणकारी । मंगलकारी । अधिकारी ।
(सं.) सामर्थ्य ।

शुभे = प्रे०, ८ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) हे ! शुभदायिनी ।

शुभ्र = का० कु०, १७, ११४ । का०, ४८ ।
[वि०] प्रे०, १५ ।
(सं.) श्वेत । निष्कलंक ।

शुष्क = का० कु०, २० । का०,३२ । भ्र०,३३ ।
[वि०] (सं.) नीरस । रूखा । निर्मोही ।

शून्य = आं०, ८, ११, ४१, ७६ । का० कु०, ७४, ६३ । का०, ६, १८, ४८, १५७, १७१, १६०, २०७, २०६, २४५,२५०, २५१ । चि०, १३६, १६०, १६६ । भ्र०, १६, २६, ३८, ८२ । प्रे०, ३ । खाली जगह । आकाश । एकान्त स्थान ईश्वर । स्वर्ग ।

शून्यता = का० कु०, ५३, ८० । का०, ४६
[सं० पु०] १५८ ।
(सं०) शून्य का भाव या धर्म ।

शून्यता-सा = का०, १७६ ।
[वि०] (सं.) शून्य के भावों की तरह ।

शून्यते = का०, ३८ ।
[सं० पु०] (सं.) हे शून्य । हे ईश्वर ।

शून्य-प्रांत = का०, १५४ ।
[सं० पु०] (सं०) एकान्त स्थल । विजन स्थान ।

शून्य-भेदिनी = का०, २५२ ।
[सं० स्त्री०] आकाश को भेदने वाली । शून्यता नष्ट
(सं.) करने वाली ।

शून्य-शून्य = का०, २०८ ।
[अ०] (सं.) निस्तब्ध । एकदम खाली ।

शूल = का०, १६२ ।
[सं० पु०] काटा । वायु के प्रकोप से होने वाली
(सं.) पीड़ा, मृत्यु ।

शूल-सदृश = का०, २१२ ।
[वि०] (सं.) कोट के समान ।

शेफाली = का०, २२१ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) नील सेवार का पौधा ।

शेर = ल०, ५५, ७५ ।
[सं० पु०] बिल्ली की जाति का एक हिंसक जंगली
(फा.) पशु । वीर या साहसी ।

शेष = आ०, ३०, ४१ । का०, ८१, १६२,
[सं० पु०] १८३ । प्रे०, २० । म०, ७ ।
(सं.) बाकी । बचा हुआ । अन्त । समाप्ति । नाश । हाथी । शेष नाग ।

शेषचिन्ह = आं०, ६ ।
[सं० पु०] (सं.) अविशष्ट का प्रतीक ।

शैल = आं०, ६०, ७७ । का० कु०, २७,
[सं० पु०] २६, ५३,६२ । का०, ४८,७३,११६ ।
(सं.) चि०, ४८, १७० । भ्र०, १५, ३४ । प्रे०, १७ । म०, ८ ।
पर्वत । चट्टान । शिलाजीत ।

शैल घाटियां = का०, १७६ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) उपत्यकाएँ ।

शैल-माला = का०, ५१, २२४ । म०, ७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) पर्वतमाला ।

शैल-शृंग = का० कु०, ५३ । का०, ११७, १५७,
[सं० पु०] १६४, १८१, २०६ । चि०, ११ ।
(सं.) पर्वत की चोटी ।

शैल-शृंग सी = का० कु०, ५२ । का०, १८१ ।
[वि०] (हि.) पर्वत शिखर के समान ।

शैल-शिखर = का०, २४७ ।
[सं० पु०] (सं.) पर्वत की चोटी ।

शैल-शिखाओं = म०, ८ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) पर्वत की चोटियाँ ।

शैलशिला = प्रे०, १५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) पर्वत की चट्टान ।

शैल-श्रेणियाँ = का०, ३० ।
[सं० स्त्री०] (हि.) पर्वत की चोटियाँ ।

शैलेय = का०, १८३ ।
[वि०] (सं.) पथरीला । पहाड़ी ।

शैवाल = का०, १८३ ।
[सं० पु०] (सं.) सेवार ।

शैशव = चि०, ३१, ७३, १४१ । प्रे०, १४,
[सं० पु०] १६ । ल०, १२, ६०, ७२ ।
(सं.) बालापन । (वि.) शिशुसम्बन्धी ।

शैशव-सा = का०, ८६ ।
[वि०] (सं.) बचपन के सदृश ।

शोच = का० कु,० १०५ । चि०, १४३ ।
[सं० पु०] (सं) चिंता, अफसोस ।

शोचहु = चि० ५० ।
[सं०पु०](ब्र.भा.) सोच भी ।

शोण = का०, १७६ ।
[सं० पु०](सं.) लालरंग । अग्नि । रक्त ।

शोथ = का०, ८२, १७१, २३५ । ल०, ४३,
[सं० पु०] ५५ ।
(सं.) दुख, चिन्ता, कष्ट ।

शोध = का०, ७६ ।
[सं० पु०] (सं) खोज, तलाश । शुद्ध करने की क्रिया ।

शोधक = का०, १७१ ।
[सं० पु०] (सं.) शुद्ध करने वाला । सुधार करने वाला ।

शोभत = चि०, १४५ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) शोभा देता है ।

शोभती = का० कु, ११६ । भ०, ५६ ।
[क्रि०] (हि.) शोभा पाती ।

शोभन = का०, ८४, २८६ । भ० ४१ । प्रे०,
[वि०] १३, २५ ।
(सं.) सजीव । सुन्दर । रमणीय । (सं०) शिव कमल ।

शोभनतम = का०, २६ ।
[वि०] (सं.) अत्यन्त सुन्दर । अत्यन्त रमणीय ।

शोभा = आं०, २४ । का० कु०, ३, ३३, ५४ ।
[सं० स्त्री०] का०, ६ । चि०,१५०, १६३, १६४ ।
(सं.) कान्ति । चमक ।

शोभा-धाम = का० कु०, ६७ । चि०, २ ।
[सं०पु०] शोभा का घर । (वि०) अत्यन्त
(सं.) शोभा वाला ।

शोभामिने = चि०, १३४ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) हे शोभा वाली ।

शोभित = का०, १८२, २७७ । म०, ८ ।
[वि०] (सं.) सुशोभित । सुन्दर शोभा से युक्त ।

शोर = का० कु०, ३८ ।
[सं०पु०] (फा.) कोलाहल । हल्ला, रोर, प्रसिद्धि ।

शोषण = का०, १६९ ।
[सं० पु०] सोखना । नाश करना । चूसना । अधि-
(सं.) नस्थ को परेशान करना ।

शोषित = भ०, ४० ।
[वि०] (सं.) जिसका शोषण किया जाय ।

शौर्य = ल०, ५१ ।
[सं० पु०] (सं.) पराक्रम । शूरता । वीरता ।

श्याम = आं०, १६। का०, १६०, १६४, १७६, [वि०] १६०, २६५। चि०, २१, १६२, १६०। (सं.) साँवला काला (सं.) (श्री कृष्ण) अक्षयवट का नाम।

श्याम-छटा = का०, ६७। [सं.०स्त्री०] (सं) साँवली शोभा

श्याम घन = झ०, ४६। [सं०पु०] (सं.) काला घन। घने बादल।

श्याम-बनशाली = झ०, ७१। [वि०] (हि.) घने बनों वाली।

श्यामल = आं०, ३२, ७८। का०, १६८, २६६, [वि०] २८४। चि०, ६६। झ०, २४। प्रे०, (सं.) ४, ७। ल०, ४४। सांवले या काले रङ्ग का।

श्यामल-घाटी = का०, १६७। [सं०स्त्री०] (हि.) अन्धेरी घाटी।

श्यामलता = आं०, ५४। का०, १७५। [सं० स्त्री०] (सं०) सांवलापन। कालापन।

श्यामला = प्रे०, २४। [वि०] (सं.) साँवला। काले रङ्ग का।

श्यामले = चि०, ३६। [सं० स्त्री०] (सं०) हे सांवली रंग वाली।

श्याम-सिवार = का० कु०, ६७। [सं० पु०] (हि.) काली सेवार।

श्यामा = का० कु०, १०, ५५। प्रे०, ५। [सं० स्त्री०] (हि) रुचि। राधा। युवती, एक पक्षी।

श्यामा-ध्वनि = आं०, १३। [सं० स्त्री०] (सं.) श्यामा नामक पक्षी की मधुर ध्वनि।

श्यामोज्ज्वल = का० कु०, १००। [सं० पु०] (सं.) सुन्दर साँवला रंग।

श्लथ = ल०, ४८। [वि०] (सं.) शिथिल। मंद। धीमा। थका हुआ।

श्वापद = का०, १८६, २४८। [सं० पु०] (सं.) हिंसक पशु (पंजा मार कर नोचने वाले पशु)।

श्वांस = का० कु०, १६, २६। का०, १७, १३०, १६७, २००, २२४, २२५, २५६। प्रे०, ११। सांस। प्राणियों की नाक से हवा खींचने और निकालने की क्रिया।

श्वास लेगा = का०, १४५। [क्रि०] (हि.) संतोष लेगा।

श्वेत = का०, २५८। [वि०] (सं.) उज्ज्वल, निष्कलंक, सफेद।

श्रम = क०, १४। का०, १०३, १०४, ११८, [सं० पु०] १२३, १२८, १४६, १८१, २२४, (सं.) २३६, २८३। चि०, १६१। प्रे० १४, २५। थकावट। मेहनत। परिश्रम। दौड़-धूप। शैथिल्य।

श्रम-लव-बिन्दु = का० कु०, १३। [सं० पु०] (सं.) मेहनत के कारण उत्पन्न कुछ बूँदें। पसीने की बूँदें।

श्रमित = चि०, १४६। [वि०] (हि.) थकित। शिथिल।

शृंखला = (सं.) का० कु०, १२६। का०, १३। [सं० स्त्री०] (सं) कड़ी। सिलसिला, श्रेणी। जंजीर। सांकल। परंपरा।

शृंग = का० कु०, २८, १०४, १०५। का०, [सं० पु०] ४७, १४१। प्रे०, २४। (सं) पहाड़ की चोटी। शिखर। पशुओं की सींग। सींग नामक वाद्ययंत्र।

शृंगनाद = का०, १७६। [सं० पु०] (सं.) पहाड़ की चोटी पर से आने वाली आवाज। सींग नामक वाद्ययंत्र की आवाज।

शृंगार = आं०, ५०। का०, ६, ३६, ५१, ५५। [सं० पु०] ल०, ७६। (सं.) सजावट। सजाना। सिन्दूर।

शृंगालिनी = चि०, ५१। [सं० स्त्री०] (हि.) सियारिन।

शृंगाली वृंद = म०, १२।
[सं० पु०] (हि.) सियारिनों का समूह।
शृंगीनाद = का० कु०, ८६।
[सं० पु०] (सं.) सिंगा नामक बाजे की आवाज।
श्रमविश्राम = ल०, १४।
[सं० पु०] (सं) थकावट के बाद का आराम।
श्रद्धा = का०, ६२, १००, १०६, ११०, ११३,
[सं० स्त्री०] ११५, ११६, ११७, ११८, १२७,
(सं.) १२६, १३२, १३४, १३९, १४०,
१४२. १४३, १४४, १४६, १५०,
१६०, १६२, १६६, १७५, १७६,
१८०, १८२, १८३, १८६, १८६,
१६०, २१४, २१५, २१६, २१८,
२२०, २२८, २२६, २३०, २३१,
२३६, २४१, २४७, २८५, २८६,
२६० । चि०, ५६।
वैवस्वत मनु की स्त्री का नाम। आस्था।
पवित्रता। हृदयवाली।

श्रद्धामय = का०, २४४।
[वि०] (सं.) आस्था से परिपूर्ण।
श्रद्धाविहीन = का०, १६१।
[वि०] (सं.) श्रद्धा से अलग। बिना श्रद्धा के।
श्रद्धे = का०, १३०, १३६, १४४, १४८,
[सं० स्त्री०] १५४, २१६, २५४।
(सं.) हे श्रद्धा। कामायनी में श्रद्धा के लिये
मनु द्वारा किया गया संबोधन।
श्रम-विन्दु = का०, १४३।
[सं० पु०] (सं.) स्वेद विन्दु, पसीने की बूँदें।
श्रम-सीकर = आं०, २७। का० कु०, १२। का०,
[सं० पु०] १२६, २४५, २५३।
(सं.) दे० श्रम विन्दु।
श्रम-स्वेद = का०, १८१।
[सं० पु०] (सं०) दे० श्रम विन्दु।
श्रमै = चि०, १४०।
[सं० पु०] (सं.) दे० श्रम।
श्रवणों = आं०, २६।
[सं० पु०] (हि.) कानों।
श्रान्त = का०, २४, ३६, १४१, १५४, १६०, १६६,
[वि०] २१८, २४१। चि०, २८, ३६। म०, ८।
(सं) थका हुआ। शान्त।
श्रान्त-भवन = प्रे०, १६।
[सं० पु०] (सं.) शान्त घर।
श्रान्ति = का०, १८१।
[सं० स्त्री०] (सं.) थकावट। शान्ति। शिथिलता।
श्रावण = झ०, २४।
[सं० पु०] (सं.) आषाढ़ के बाद आने वाला मास।
श्री = का०, १००। म०, ७।
[सं० स्त्री०] कमला। लक्ष्मी। धन। ब्रह्मा। विष्णु।
एक आदर-सूचक शब्द जो नाम के आगे
लगाया जाता है।

श्री-कलित = का०, ८१।
[वि०] (सं.) लक्ष्मी से विभूषित।
श्रीमंत = का०, ६१। झ०, ६६।
[सं० पु०] (सं) स्त्रियों के सिर की मांग। धनवान।
श्रीमान् = का० कु०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) विष्णु। शिव। (वि०) धनवान।
श्री सम्पन्न = का० कु०, ५२।
[वि०] (सं.) धनवान। बुद्धिमान।
श्रुति = चि०, ५१, १८६।
[सं० स्त्री०] (सं.) वेद विद्या।
श्रुतियों = का०, ६७।
[सं०स्त्री०] (हि.) वेदों। विद्याओं।
श्रुवा = चि०, ६७।
[सं० पु०] (सं.) कछुली। वह कछुली जैसा पात्र जिससे
हवन में घी डाला जाता है।

श्रेनी = चि०, ७१।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा) दे० श्रेणी।
श्रेय = का०, १४। का०, ५३, २४४।
[वि०] अधिक। बेहतर। कल्याणकारी।
(सं) कल्याण। अच्छापन। ख्याति।
श्रोत्रिय = चि०, ५२।
[वि०] (सं.) मांडलिक। स्थानीय।

ष

षड़ानन = चि०, ७२ ।
[सं० पु०] (सं.) कार्तिकेय, छह आनन वाला ।

स

सङ्कलन = का०, १६६ ।
[सं० पु०] (सं.) संग्रह ।

सङ्कलित = का०, ४६ । चि०, १८५ । झ०, १८ ।
[वि०] (सं.) संग्रहीत, चुना हुआ, एकत्रित ।

सङ्कल्प = का० कु, ६१ । का०, ३१, १०६, १४८, १७२ ।
[सं० पु०] (सं.) पक्का इरादा, मंतव्य, दृढ़ विचार, अटल, निश्चय ।

सङ्कीर्णता = प्रे०, ५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सकरापन, क्षुद्रता, छोटापन ।

संकुचित = आ०, ३० । का० कु०, ८१ । का०, १४, २४, १६३, १६४, १६५, १८६, २२०, २६३ ।
[वि०] (सं.) संकरा, तंग, सिकुड़ा हुआ ।

संकुचित-सी = चि०, ४६ ।
[वि०] (हि.) सिकुड़ी हुई-सी, सकरी-सी, तंग-सी ।

संकुल = का०, २८४ ।
[वि०] (सं.) युक्त, परिपूर्ण । मिला हुआ । तंग ।

संकेत = आ०, ६० । का०, २८, ३१, ७१, ८३, ८६, ६६, ११३, १८४, २७१, २८३ । झ०, २६, ३३ । ल०, २३, ७६ । म०, ४ ।
[सं० पु०] (सं.) इंगित, इशारा, एकांत स्थान, चिन्ह ।

सङ्कोच = का० कु०, ६८, १०५ । चि०, ७३ ।
[सं० पु०] (सं.) हिचक, शर्म, लज्जा, सिकुड़ने की भावना ।

सङ्ग = का०, ६६ । का०, ८३, ६६, १६६, २२६ । चि०, १५, ३१, ४५ ४७, ५४, ५८, ६०, ६३, ६७, ७१, १००, १४५, १५८, १६३ । झ०, ३६, ४८ । प्रे०, १८ ।
[सं० पु०] (सं.) सहवास, साथ । मिलन । आसक्ति ।

सङ्गम = का०, १० । चि०, १५२, १८६ । प्रे०, २२ । ल०, १५ ।
[सं० पु०] (सं.) मिलाप, सम्मेलन, मेल, वर्तमानकाल की सब बातों का ज्ञान । समागम ।

सङ्गर = चि०, ४१, ५३, १०० ।
[सं० पु०] (सं.) युद्ध, संग्राम, विपत्ति, नियम ।

सङ्गिनी = ल०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) साथ रहने वाली, सखी, सहचरी । सहेली ।

सङ्गीत = का० कु०, ७६ । का०, ४५, ६१, ६४, १८०, २१६, २२५, २६३ । झ०, ५२ । ल०, १५, ६० ।
[सं० पु०] (सं.) गाना, नृत्य, लय, ताल, स्वर, तथा नृत्य का सामंजस्य से होने वाला मनोरम कार्यक्रम ।

सङ्गीतज्ञ = का० कु०, ३१, ३८ ।
[सं० पु०] (सं.) गायक, संगीत शास्त्र का जानकार ।

सङ्गीतात्मक = का०, २६३ ।
[वि०] (सं.) संगीत से युक्त । संगीत सम्बन्धी ।

संग्रह = का०, १३३, १८१ । प्रे०, २१ ।
[सं० पु०] (सं.) संचय । एकत्र या इकट्ठा करना । ग्रहण करना ।

सङ्घ = ल०, ३३ ।
[सं० पु०] (सं.) समूह, समुदाय, संगठित छोटा समाज ।

सङ्घर्ष = का०, ३७, १४७, १५७, १७१, १६२, १६६, १६७, २४०, २६७ ।
[सं० पु०] (सं.) होड़ । प्रतियोगिता । रगड़ । वह क्रिया जिसमें दो वस्तुएँ आपस में रगड़ खाती हैं ।

सङ्घर्षन = का० कु०, १६६ ।
[सं० पु०] (सं.) देखिये 'संघर्ष' ।

सङ्घर्ष-भूमिका = का०, १६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) संघर्ष की प्रस्तावना । संघर्ष का आरम्भ ।

सङ्घात = का०, १५ ।
[सं० पु०] (सं.) झुण्ड, समूह, संगठन, संघ, वध, निवास-स्थान ।

सङ्घाती = वि०, ११ ।
[सं०पु०] (सं०) साथी, मित्र, सहयोगी ।

संचय = का०, ८२, १६६ ।
[सं०पु०](सं.) संग्रह एकत्रीकरण । समूह । संग्रह ।

संचरहि = वि०, ६३ ।
[वि०] (व्र.भा.) घूमता हुआ । विचरण करता हुआ । फैलता हुआ ।

संचरित = का०, १८४ ।
[वि०] (सं.) जिसका संचार हुआ हो । फैलता हुआ । चलता हुआ ।

संचार = का०, ४, ५६, ८२, ६० ।
[सं०पु०] (सं.) गमन । फैलना । चलना ।

संचारिणी = का० कु, १०० ।
[वि०] (सं.) गमन करने वाली । फैलाने वाली । चलती हुई ।

संचित = का० कु०, १८० । का० ३१, ३६, ३६, ७०, ७४, ८३, ११५, ११७, १२२, १४८, १५४, १७१ । रू०, ७६ । ल०, १७ ।
[वि०] (सं.) एकत्रित ।

संजीवन = का०, २१८ ।
[वि०] (सं.) जीवन शक्ति-उत्पादक ।

सँजोवे = वि०, ३६ ।
[क्रि०] (व्र. भा.) सँजोना । अलंकृत करना । सजाना ।

संज्ञा = आं०, ३६ । का० कु०, १०६ । का०, ६७ । प्रे०, १७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) नाम । बुद्धि । ज्ञान । व्याकरण के अनुसार किसी के नाम को संज्ञा कहते हैं ।

संतति = का०, १६६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) संतान । औलाद ।

संतान = क०, ११ । का०, ५१, ५८, ७७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) संतति । औलाद । बाल-बच्चे ।

संताप = का० कु०, ९७ । वि०, १६१ ।
[सं०पु०] (सं.) दुख, ताप, जलन । मानसिक हलचल ।

संताप-हरण = का० कु०, ८६ ।
[सं०पु०] (सं.) दुख को दूर करना । कष्ट-निवारण करना ।

संतापित = वि०, १६१ ।
[वि०] (सं.) दुखी । सताया हुआ । संतप्त ।

संतृप्त = का०, १६४ ।
[सं०पु०] (सं.) पूर्ण संतुष्ट । तृप्त ।

संतुष्ट = का० कु०,७ । का०, ७१ । प्रे०, ७ ।
[वि०पु०] (सं.) तृप्त । जिसे संतोष हो गया हो ।

संतोष = का० कु०, ८८ । का०, २६, १२४ ।
[सं०पु०] (सं.) तृप्ति । सब्र ।

संदिग्ध = का०, १८५ ।
[वि०] (सं.) संदेह पूर्ण । जिसमें सन्देह हो ।

संदेश = का०, ३८, ५०, ७६ । वि०, ५८ । म०, १२ । ल०, २३, ३३ ।
[सं० पु०] (सं.) हाल-चाल । समाचार । कोई महत्व पूर्ण समाचार ।

संदेश-विहीन = का०, ३४ ।
[सं० पु०] (सं.) बिना किसी समाचार के । बिना सूचित किए हुए ।

संदेह = आं०, २७ ४४ । का०, ५४, ६६, ८६, १०६, १६४, १८४, २६६ । ल०, १३ ।
[सं० पु०] (सं.) संशय । शंका । निश्चय का अभाव ।

संधान = का० कु०, ६८ । का०, २६ । वि०, ५४ ।
[सं० पु०] (सं.) निशाना बैठाना । युक्त करना । कमान पर तीर लगाना । संधि ।

संधि = का० कु०, ११२ । का०, ११८, १३६, २६१ । म०, १८, २४ । ल०, १२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) मेल । संयोग । योग ।

संधिपत्र = का०, १०६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) संधि का पत्र । संयोग पत्रिका ।

संध्या = आं०, ३०, ३३, ३७, ४७, ५२, ५६ । का० कु०, ३०, ५२, । का०, १८, ११६, ११७, १४२, १७५,

१७६, १७७, १७८, १८३, २११, २२४, २१३, २७७, २८५। चि०, ३६, १४५, १६०, १६१, १६३। झ०, ३५, ५८। प्रे०, ७, ८, १०, ११, १३, १५। ल०, ३८, ४६, ५६, ६०, ७२, ७८।

द्विवसावसान की बेला। सायंकाल। शाम। आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना। सन्धि-स्थल।

संध्या की लाली = का०, १००।

[सं० स्त्री०] (सं.) सायंकालीन सूर्यास्त की लाली। सायंकाल की आकाश की लालिमा।

संध्याघन-माला = का०, ३०।

[सं० स्त्री०] (हि) सायंकाल के बादलों का समूह।

सम्पत = का०, १८।

[सं०स्त्री०] (हि.) सम्पत्ति। धन। ऐश्वर्य,। वैभव।

संपत्ति = क०, १३। का० कु०, १३।

[सं० स्त्री०] का०, ५८।

(हि.) धन। विभव।

संपन्न = का० कु०, ११३। का०, १८१।

[वि०] (सं.) पूरा किया हुआ। सिद्ध। सहित।

संपुट = आं०, २३। चि०, २६।

[सं० पु०] (सं) अंजुलि। दोना। डिबिया।

संपूर्ण = का० कु०, ८७। का०, २९३।

[वि०] (सं.) सब, बिलकुल, समाप्त, पूर्ण।

संबन्ध = का०, ७१, १२४, १५२। झ०, ११।

[सं० पु०] (सं.) सम्प के। लगाव। मिलना। नाता रिस्ता।

सम्बन्ध-विधान = का०, २७०।

[सं० पु०] (सं.) सम्बन्ध का नियम। किसी रिस्ते का सामाजिक विधान।

सम्बद्ध = का०, २७३।

[वि०] (सं.) सम्बन्ध युक्त बंधा हुआ। जुटा हुआ।

सम्बल = आं०, ४४। का०, २२२। ल०, ३१।

[सं० पु०] (सं) दे० 'संवल'।

सम्बोधन = का० कु०, ४५

[सं० पु०] (सं.) जगाना, पुकारना। समझाना-बुझाना व्याकरण का एक कारक।

सम्भव = का०, २३०।

[सं० पु०] (सं.) हो सकने योग्य। मुमकिन।

सम्भल = का०, २८३।

[सं० पु०] (सं.) दे० 'संभालू'।

सम्भार = का० कु०, १२। का०, ५१।

[सं० स्त्री०] (हि.) रक्षा। हिफाजत।

सम्भाल = का० कु०, ७५।

[सं० पु०] (सं.) हिफाजत भण्डार। संचय।

सम्भोग = झ०, ४५।

[सं० पु०] (सं.) उपयोग। व्यवहार। रति-क्रीड़ा। योग्य-सामग्री।

सम्भोग-सेज = प्रे०, २५।

[सं०पु] (हि.) वह शैय्या जिसपर रति क्रीड़ा हो।

संयम = का० कु०, ८८। का०, ३६, ६६, २५१।

[सं० पु०] (सं.) बंधन, रोक। दबाव। परहेज। समाधि का साधन।

संयुक्त = का०, ४६। चि०, १५४।

[वि०] (सं.) दे० 'संयुत'।

संयुत = का०, २६।

[वि०] (सं.) संयुक्त। सम्बद्ध। जड़ा हुआ।

संयोग = प्रे०, १७, २३। म०, १२।

[सं० पु०] (सं.) मिलाना। लगाव। सम्बन्ध।

संरक्षक = का० कु०, ११२।

[सं० पु०] (सं.) अभिभावक। पोषण करनेवाला। आश्रय देनेवाला।

संलग्न = का०, १६१, १८४।

[वि०] (सं.) सम्बद्ध, सम्बन्धित। जुड़ा हुआ।

सँवर = का० कु०, ३३।

[क्रि] (ब्र.भा.) सज करके।

संवर्द्धना = झ०, ५३।

[सं०पु०] (सं.) बढ़ाना। उत्साह।

संवल = का०, १८२, २५०, २५४, २७७।

[सं० पु०] (सं.) मार्ग-व्यय। वह साधन जिसके आधार पर कार्य हो। सहारा।

संवाद = का०, ६१। चि०, ५६। ल०, १२।
[सं० पु०] (सं०) वार्तालाप। समाचार। विवरण।

सँवार = चि०, १५७।
[सं०स्त्री०] (व्र.भा.) हाल। समाचार। संवाद। वार्तालाप।

सँवारत = चि०, ६३।
[क्रि०] (व्र.भा.) सँवारना। सँवारने की क्रिया।

सँवारी = चि०, ३४, ४२।
[क्रि०] (व्र.भा.) सँवार कर। सँवारना।

संवेदन = का०, ३६, ३७, १६६।
[सं० पु०] (सं.) ज्ञान। इन्द्रिय का वह शारीरिक व्यापार जिसके फलस्वरूप कोई अनुभूति या चेतना का उद्‌बोधन होता है।

संवेदन-भार-पुञ्ज=का०, १५४।
[सं० स्त्री०] सं.) संचयीभूत संवेदन।

संवेदनमय = का०, २२६।
[वि०] (सं.) संवेदन से युक्त।

संवेदनों = ल०, ७४।
[सं० पु०] (हि.) सवेदन का बहुवचन।

संश्लिष्ट = का०, ७३।
[वि०] (सं०) जुड़ा हुआ। संयुक्त।

संसय = चि०, ४०।
[सं० स्त्री०](सं.) शंका। सुबहा। संदेह। द्विविधा।

संसार = क०, १४। का० कु०, ८, १०, २६, ३०, ३१, ५३, ६३, ६४, ७२, १०६, ११६, १२५। चि०, ५६, ७२, १३६, १४१, १४२, १५३, १६१। झ०, ९१। प्रे०, १०, २१, २६। ल०, १२, ३६, ७६।
[पु०] (सं.) भव, जगत, दुनिया, मर्त्यलोक।

संसृति = आ०, ६५। का०, १६, २३, २६, ३४, ४५, ७२, ७६, १३२, १३४, १६५, १६६, १६८, १८०, १६२, २०७, २५३, २६४, २८२, २८६, २६२। ल०, ४३, ५०।
[सं० स्त्री०] (सं.) संसार। जगत।

संहर्षादलिविरुतैरितीवगायँल्लोलोयौं = चि०, १३४।
[सं० स्त्री०] (सं.) हर्ष से परिपूर्ण भौंरों की गुञ्जार का आनन्द।

संहार = का०, २५३।
[सं० पु०] सं.) विनाश। गूँथना। ध्वंस।

संहारकारिणी= चि०, १००।
[वि०] (सं.) नाश करने वाली। विनष्ट कर्त्री।

संहार-वध्य = का०, २४०।
[वि०] विनाश करने के योग्य।

संस्कार = का०, १७१।
[सं० पु०] (सं०) विशिष्ट कृत्य। धर्म के दृष्टिकोण से किये जाने वाले जीवन के विभिन्न अवसरों के आवश्यक परंपरागत कर्त्तव्य। मृतक की अन्त्येष्टि क्रिया।

संस्कृति = का०, ३१।
[सं० स्त्री०] (सं.) आचार-विचार। कला-कौशल तथा सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास। (अं०) 'कल्चर'।

संस्थानों = का०, २०६।
[सं० पु०] (सं.) संस्कृति के उत्थान के लिए स्थापित समाज। अस्तित्व स्थापन। प्रबन्ध। व्यवस्था।

सअंक = चि० १६२।
[सं० वि०] (हि.) सकलंक। चिन्ह के सहित।

सकना = क०, २, ११, १८। का० कु, १४, २५, ११२। का० १७, २६, ६६, ८१, १०६, १२५, १२८, १४६, १४७, १६५, १७०, १८६, १६४, १६८, २१२, २१६, २२०, २५६, २७२। चि०, ३, २६, २८, ५०, १०१, १५७। प्रे०, २। म०, १३। ल०, ४७, ६७, ७१, ७१, ७७।
[अ०] (हि.) कुछ करने में समर्थ होना।

सकर्मक = का०, ३३।
[सं०स्त्री०] (हि.) कार्यशील। क्रियाशील। कर्मशील। वह क्रिया जो कर्म रखती हो।

सकल = का० कु०, ५६, ८६, ६३, ६७। का०, [वि०] २५, ५८, ८३, १५३, १६५, १७१, (सं०) १७५, १८०, १६८, २२४, २३५, २३६, २४४, २६६, २७०, २७३। चि०, ५२, ५४। ऋ०, ३४। प्रे०, १४। ल०, १३, ४३, ७७।
सम्पूर्ण। समस्त। सभी।

सका = का० कु०, ८१। का०, १३५, १६३, [क्रि०] १७०, १६०, प्रे०, २३। (हि.) सकना क्रिया का भूतकालिक रूप। दे० "सकना"।

सकि = चि०, १४७।
[क्रि०] (ब्र. भा.) (दे० "सकना"।)

सकुचाती = का०, २००। चि०, ६१।
[क्रि०] (हि.) (दे० "सकुचाना"।)

सकुचाना = का०, १६५। चि०, ६। प्रे०, ३०।
[अ०] संकोच करना। सकुचित करना।
(हि.) लज्जित करना।

सकूलन = चि०, १७३।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) मनोहर तटों। किनारों पर।

सक्रोध = का०, १६६।
[सं० पु०] (सं.) क्रोध सहित। गुस्से के साथ।

सखा = आं०, ६६। चि०, ७१। प्रे०, १०।
[सं०पु०] (हि.) मित्र। साकी। दोस्त। विदूषक।

सखियन = चि०, ५७, ६१।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) सभी सखियाँ।

सखियां = चि०, ६१।
[सं० स्त्री०] सखी का बहुवचन। सहेलियां।
(हि.) सहचरियां।

सखिहिं = चि०, ५८।
[सं० स्त्री०] (ब्र.भा.) सखियाँ। सहचरियाँ। सहेलियाँ।

सखी = का०, ७४। चि०, २४, ५७, १६३।
[सं०स्त्री०] (हि.) सहचरी। सहेली।

सखी-गन = चि०, ५६।
[सं०स्त्री०] (ब्र.भा.) सखी गण। सखियों का समूह।

सखी-सङ्ग = चि०, ६१।
[सं०स्त्री०] (हि.) सखि के साथ। सहेली के साथ।

सखे = का०, ६१।
[सं० पु०] सखा का संबोधन। मित्र। दोस्त,
(हि.) साथी। सहचर।

सखेद = का०, १४६।
[वि०] (हि.) दुख से। खेद के साथ।

सघन = क०, ६, १४। का०, ३, १३, [वि०] ८१, १२१, १४६, २२०, २५१, (सं.) २६६, २६८, २८१। चि०, १४६, १५०, १५८, १६३। ल०, ३८।
घना, अविरल। ठोस।

सच = आं०, ७०। का० कु०, ८४। का०, [वि०] ६३, प्रे०, ६, १६, २०। म०, २३।
(हि.) सत्य। वास्तविक। उचित।

सचमुच = क०, २८। का० कु, ६५, १००। का०, [अ०] १६१, २००, २१४, २६०, २८७। (हि) प्रे०, १०, १२, १६, २२। म०, १४, २१, २२।
अवश्य, निश्चय, वास्तव में।

सचराचर = का०, २८८।
[सं० पु०] संसार के चर और अचर सभी पदार्थ
(सं.) तथा प्राणी।

सचेतनता = का० २६१।
[सं० पु०] चेतनता। जड़ता का विरुद्धार्थक।
(सं.) चेतनशील।

सचैन = चि० १५२।
[वि०] चैन के साथ। आराम के साथ। मौज
(सं.) के साथ। आनन्द तथा शान्तिपूर्वक।

सचरित = प्रे०, ७।
[वि०] (सं.) अच्छा चरित्र वाला। चरित्रवान।

सच्चा = आं०, २४, ६५। क०, ३०। का० कु० [वि०] ११४। का०, २१४। प्रे०, ९, २३। (सं.) ल०, ६६।
सत्यवादी। वास्तविक। असली। उचित यथार्थ।

सच्चा-पुत्र = म०, ६ ।
[सं०पु०] (हि.) योग्य पुत्र । असल पुत्र ।
सच्चिदानन्द = चि०, १७६ ।
[सं० पु०] (सं०) परमात्मा । सत्, चित्त तथा आनन्द से पूर्ण ।
सजग = आं०, ५८, ७५ । का० कु०, ६८,
[वि०] १०० । का०, ३१, ५१, ५३, ७०,
१२०, १६८, २०१, २०६, २३५,
(हि.) २६१ । ल०, १० ।
सावधान । सचेत । होशियार ।
सजधज = प्रे०, ४ ।
[वि०] (हि.) बनठन, बनाव, शृङ्गार । सजावट ।
सजल = का०, ४६, ५७, ७५, ८१, १५३,
[वि०] १७६, २१७, २३४ । चि०, ७३ ।
(हि.) जलयुक्त । अश्रुपूरित (नेत्र)
सजा = का०, कु०, १६, ३५ । का०, २१८ ।
[क्रि०] (हि.) अलंकृत हुआ-दंड ।
सजाती = क०, ७ । प्रे०, २ ।
[क्रि०] सँवारती । सजाना क्रिया का वर्तमान
(हि) कालिक रूप ।
सजाना = भ्रु०, ५१ । प्रे०, २, ११, २२ । ल०,
१० ।
[संज्ञा] बनाना, सुशोभित करना, सवारना ।
सरजायो = चि०, ६३, ७१ ।
[क्रि०] (हि.) अलंकृत करना ।
सजाव = चि०, ५४ ।
[क्रि०] (हि.) दे०, 'सजाना', सजाना क्रिया का रूप ।
= चि०, ५२ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) सजकर ।
सजी = क०, १३ । का० कु०, ६६ । भ्रु०,
[क्रि०] ६२ । प्रे०, ४, २५ ।
(ब्र. भा.) देखिये 'सजा' । 'सजना' क्रिया का एक रूप ।
सजीव = का०, ३३, ५२, ६५, ८३ । ल०, ११।
[वि०](सं.) जीवन से युक्त । ओजपूर्ण । तेजस्वी ।

सजीवता = आं०, २०, ४३ । का०, २१६ ।
[सं०स्त्री०](हि.) ओजत्व । तेजत्व ।
सजे = आं०, २३ । क०, ६ । म०, २० ।
[क्रि०](हि.) सजना क्रिया का एक रूप ।
सज्जन = का० कु०, ८४ । चि०, ११०, १४०,
[सं० पु०] १६४ । प्रे०, ८ । म०, १४, २३ ।
(सं.) शरीफ, भला आदमी । साधु पुरुष, प्रियतम । उत्तम व्यवहार करने वाला ।
सज्जनता = चि०, ११० ।
[सं० स्त्री०] संतई । साधूपन । भलमनसाहत ।
(सं.) सौजन्य ।
सज्जन-कृत = म०, १४ ।
[वि०] सं.) साधु पुरुषों द्वारा किया गया ।
सज्जनहिं = चि०, ६८ ।
[सं०पु०] ब्र.भा.) दे० 'सज्जन'
सज्जित = चि०, २२ । प्रे०, १३ ।
[वि०] (सं.) साधनों से युक्त । आवश्यक ।
सटेक = चि०, ४२ ।
[वि०] (हि.) सहारा के सहित । सप्रतिज्ञ ।
सड़े-से = का० कु०, ११५ । म०, १८ ।
[वि०] (हि.) हीनावस्था के समान । विकार सदृश्य ।
सत = का०, २४१ । चि०, ४७ ।
[सं०पु०] (सं.) धर्म, सच, सत्य ।
सतत = आं०, ६१ । का०, १६, ८१, ८३, ६१,
[अव्य०] ६२, ११०, १३०, १६१, १६१, १६२,
(सं.) १६३, १६४, १६५, २३५, २४१,
२४२, २५७, २६७, २८८ । चि०,
१६० । भ्रु०, ८६ । ल०, १२, ३३ ।
सर्वदा । निरन्तर । लगातार । सदा ।
सताना = का० कु०, १४ । का०, १२ ।
[क्रि०] (हि.) कष्ट देना । दुख देना । पीड़ित करना ।
सताने = का० कु०, १८ ।
[क्रि०] (हि.) दे० 'सताना' क्रिया का रूप ।
सती-छाया = का० कु०, २४ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) साध्वी-छाया ।

सतकर्म = चि०, १४०। म०, १८।
[सं० पु०] अच्छे कार्य। सच्चा कार्य। सत्य का
(सं.) सत्कृत पालन। अच्छाई के प्रति निष्ठा।
[वि०] अच्छा काम करने वाला। अच्छी कृति।
(सं.) उत्तम काम।

सत्कविता = चि०, ६२, ११०।
[सं० स्त्री०] (सं) अच्छी कविता. कल्याणकारी रचना।

सत्ता = का० कु०, ६४। का०, २६, २८, ५१,
[सं० स्त्री०] ६०. १६२, २५२। ल०, ७८।
(सं.) अस्तित्व। शक्ति। सामर्थ्य।

सत्य = आं०, १६। क०, १७, २२, २३, २६
[वि०] ३१, २८। का० कु०, ६७, ८५, ६१,
(सं.) ९३, १२४। का०, १८, १६, ५१,
५४, ५५, ५८, ११०, १११, १३४,
१४८, १७७, २११, २५०, २८५,
२८८। चि०, १३६, १३६। झ०,
१६, ५२। प्रे०, १७। म०, १२।
ल०, ७४, ७७।
ठीक। असल। वास्तविक। सच।

सत्य-प्रेम-मय= प्रे०, १०।
[वि०] (हिं.) सच्चे प्रेम से युक्त (मित्र) सुहृद।

सत्य-सत्य = क०, २२।
[वि०] (सं.) पूर्ण सत्य। वास्तविक।

सत्य-सुन्दर = का० कु०, ५१।
[सं० पु०] सौन्दर्यमय वास्तविक तत्व। सत्य
(सं.) और सुन्दर।

सदन = का० कु०, ५१। चि०, ६१, १६२।
[सं०पु०] (सं.) गृह। घर।

सदनहिं = का० कु०, ६४।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) घर में। गृह में।

सदय = का० कु०, २३, ८४, ८६। का०, २७,
[वि०] १५८। चि०, ५२, १५३।
(सं.) दया के साथ। दयालु। कृपालु।

सदर्प = का०, ५८। ल०, ७८।
[वि०] (सं.) घमंड के सहित। अहंकार से युक्त।

सदा = आं०, ७१। क०, १०, १४, १५, १७।
[अ०] का० कु०, ४, २२, २७, २८, ८३,
(हि.) ६०, ६३। का०, १६, २६, ८४, ६३,
१०६, ११०, १२३, १२६, १५४, १६४,
१६५, १९०, १६२, १६४, २०६, २४३,
२७१, २८३। चि०, १, १५, ४८, ५१,
६४, ६५, १०१, १०५, १०६, ११०,
१६६, १८६, १८८। झ०, ४३, ४८।
प्रे०, ८, २६। म०, १०, १४, १६।
हमेशा। सर्वदा। नित्य।

सदाहिं = चि०, ६४।
[अ०] (ब्र.भा.) दे०, 'सदा'

सदृश = आं०, २३। क०, १३, २८। का० कु०,
[वि०] ७३। का०, ६, २७, २६, ३०, ४८,
(सं.) ५८, ६८, ६८, १२७, १६७। झ०,
४५। म०, ७। ल०, ३४, ५०।
समान। तुल्य। सा।

सदैव = का० कु०, ८७। का०, ६४, १३६,
[अ०] १६१, १६३, १६६।
(हि.) सर्वदा। सदा। हमेशा।

सद्भाव = का० कु०, ८८। का०, ८४, १६४।
[सं० पु०] प्रे०, ८।
(सं.) अच्छे भाव। उचित भावना।

सन = चि०, ५३।
[सं० पु०] एक प्रसिद्ध पौधे का रेशा जिससे रस्सी,
(सं.) टाट आदि बनता है।

सनमान = चि०, १०२।
[सं० पु०] ब्र. भा.) सम्मान, आदर, सत्कार।

सन-सन = का०, २४७।
[वि०] हवा के तेज चलने से जो आवाज
(हि.) होती है।

सना हुआ = का०, ६८।
[क्रि] (हि) लिप्त। ओत प्रेत हुआ।

सनी = चि०, ४७।
[क्रि०] (हि) ओतप्रोत हुई, सनी हुई।

सनी-सी = का०, १६३।
[वि०] (हि.) मिली हुई सी।

सनातन = का० कु, ६३।
[सं० पु०] अत्यन्त प्राचीन, अनादि काल, बहुत
(सं) दिनों से चला आया हुआ व्यवहार।
नित्य, शाश्वत।

सनाथ = का०, ७३, ८३।
[वि०] (सं.) रक्षक या सहायक स्वामी से युक्त।

सनी = चि०, १४६।
[क्रि०] (ब्र. भा.) युक्त, ओतप्रोत, मिली हुई।

सने = चि०, १५४, १८१, १८२।
[वि०] (हि) मिले हुए, युक्त।

सनेह-में-चूर = चि०, १५।
[वि०] (हि.) अति स्नेह से भरा हुआ।

सनेही = चि०, ५७।
[वि०] वह जिसके साथ स्नेह या प्रेम हो।
(ब्र.भा.) प्रेमी।

सनेहू = चि०, ६४।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) स्नेह, प्रेम।

सन्नद्ध = का० कु०, ३। चि०, ४१। म०, ५,
[वि०] १६।
(सं.) तैय्यार, उद्यत, काम में पूरी तौर से लगा हुआ। संलग्न।

सन्नाटे = का०, २०५। झ०, ३१।
[सं० पु०] वह अवस्था जिसमें कहीं कुछ भी शब्द
(सं.) न हो, नीरवता।

सन्मार्ग = चि०, १५५।
[सं०पु०] (सं.) अच्छी राह।

सन्मानस = का० कु०, ६४।
[सं० पु०] (सं.) मान सरोवर।

सन्मुख = चि०,६४, ६८, ७३, १०३। म०, २२।
[वि०] ल०, ६७।
(सं.) समक्ष, सामने।

सन्यो = चि०, ५।
[वि०] (सं.) सना हुआ। ओत-प्रोत।

सन्निकट = चि०, ६६।
[वि०] (सं.) निकट, पास।

सन्निधि = का०, ८३।
[सं० स्त्री०] समीपता, पड़ोस, आमने-सामने की
(सं.) स्थिति।

सन्नुपङ्कजम् = चि०, १३३।
[सं०पु०] (सं.) निश्चित ही कमल।

सपच्छ = चि०, ४१, प्रे०, ७।
[सं० पु०] (सं.) अनुकूल पक्ष।

सपने = आं०, ११, २६, ५३, ५६, ५७।
[सं० पु०] का० कु०, ८७। का०, ६८, १०५,
(हि.) १०६, ११०, ११२, १२०, १३६,
१६५, १७८, १८३, १८६, १६१,
१६६, २०६। झ०, ६४। प्रे० २३।
ल०, १६, २७, ४५।
स्वप्न, वह मानसिक दृश्य या प्रक्रिया।
जो अच्छी तरह नींद न आने की अव-
स्था में दिखलाई देती है।

सप्रीत = का० कु०, ४४। चि०, १६१।
[वि०] (पु.) प्रेम से, प्यार से।

सपूत = चि०, ४८। म०, १८।
[वि०] (ब्र. भा.) सुपुत्र, लायक या योग्य पुत्र।

सप्त = चि०, १६३।
[वि०] (सं.) गिनती में सातवीं।

सप्तर्षि = चि०, १३२।
[सं० पु०] सात ऋषियों का समूह गौतम, भारद्वाज,
(सं.) विश्वामित्र जमदग्नि, वशिष्ठ। कश्यप
और अत्रि। अथवा मरीचि, अत्रि,
अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और
वशिष्ठ। वे सात तारे जो साथ रहकर
ध्रुव की परिक्रमा करते दिखलाई
पड़ते हैं।

सप्तसिन्धु = का०, ६।
[सं०] (सं.) = पंजाब। सात नदियों का प्रदेश।

सफरी = चि०, ८।
[वि०] सफर में काम आने वाला (छोटा और
(अ.) हलका)। [सं०] मछली।

सफल = का०, ५८, १५४, १८२, १८३, १९८। [वि०] (सं.) जिसमें फल लगा हो। जिसका कुछ फल या परिणाम हो। जिसमें प्रयत्न करके कार्य सिद्ध कर लिया हो। कामयाब।

सफलता = [सं० स्त्री०] (हि.) आं०, ४४। का०, ४९, ५४, १३०, १८१। कामयाबी। प्रयत्न करके कार्य सिद्ध कर लेने का भाव।

सब = [वि०] (हि.) का०, ३ पृष्ठ से २९४ पृष्ठ तक ८४ बार। चि०, ४ पृष्ठ से ५२ पृष्ठ तक २६ बार। प्रे०, ९ पृष्ठ से ३५ पृष्ठ तक १२ बार। म०, ७, ११, १४, २०। ल०, २१, ३०, ३१, ३४, ३५, ४३, ४८, ७८। जितने हों कुल, पूरा। सारा।

सबकुछ = [अ०] (हि.) का०, १०६, २२७, २४८। सारा। पूरा। सभी।

सबके = [अव्य०] (हि.) आं०, २०। का० कु०, ८४। का०, १०४ २३८। चि०, ३, ११, ४८, ५४, ५६, ६५, ७३। सभी के।

सबने = [वि०] (हि.) आं०, १५। सभी ने।

सब-भूतन-सं० = [सं० पु०] (ब्र.भा.) चि , ७३। सभी जीवों के साथ।

सबल = [वि०] (सं०) का० कु०, ६९, १०९, ११७। का०, १५। म०, ११। ल०, ६६। बलवान, ताकतवर। शक्तिशाली।

सबसे = [वि०] (हि.) का०, १०५, १६५, २२६, २३०। सभी से।

सबहिं = [वि०] (ब्र. भा.) चि०, ८, १५, ६४, ६५, १०९, १४८, १५७। सब लोगों ने। सभी लोगों को।

सबही = [वि०] (हि.) चि०, ४७, ४८, ५२, ५४, १२५, १५६, १८५, १८९। दे० सबहिं।

सबेरा = [सं० पु०] (सं.) का०, ११४। प्रे०, ११। प्रातः काल।

सबै = [वि०] (ब्र. भा.) चि०, १५१, १५४, १७२, १७६, १८२, १८४, १८५। समस्त, सम्पूर्ण, सभी।

सभा = [सं० स्त्री०] का० कु०, ४९, १११। का०, ३०। परिषद। समिति।

सभी = [अव्य०] (हि.) क०, १०, १३, ३१। का०कु०, २, १५, ५१, ६२, ६७। का०, ९, ६६, ८४, ८५, ८६, १५७, १६६, १८६, १९६, २३०। प्रे०, ४, २३। म०, ३, ५, १०। सब कोई। प्रत्येक। हर एक।

सम = [वि०] (सं.) का० कु०, ५४, ९७, १०८, १६३, १६५, १९३, १९६, १९८, १९९, २०१। का०, १८, २३९। चि०, २२, २८, ३०, ५२, ७२, ७४, १४३, १६०। झ०, २८, ३५, बराबर। समान। सदृश।

समझना = [क्रि०] (हि.) क०, ११, १४, २२। का० कु०, ३४, ८५, १३, ६२, १२१। का०, ७ पृष्ठ से २८७ पृ० तक २७ बार। चि०, २२, २८, ३०, ५२, ७२, ७४, १४०, १४३, १६०। झ०, २८, ३५। प्रे० ९, १८, २२, २३। म०, ३, १०, १४। ल०, १८, ६७। जानकारी हासिल करना, ज्ञान प्राप्त करना।

समतल = [वि०] (सं.) का०, १०६। सपाट। चौरस।

समता = [सं०.स्त्री०] (हि.) का०, १७१। चि०, २२। झ०, ६२। प्रे, १६, २३। बराबरी, तुल्यता समानता।

समन्वय = का०, ५८, ७४ ।
[वि०] (सं.) मिश्रण । मेल । सम्मेलन ।

समय = आं०, ३२ । का०, कु०, ४१, ४८, ७६, ११६ । का०, १६७ । चि०, १५६, १५८ । भ्रु०, ५४ । प्रे०, २, ४, ५ । म०, ३ । ल०, २२ ।
[सं० पु०] (सं.) अवसर । मौका । काल ।

समर = का०, २६४ । चि०, ६७ ।
[सं० पु०] (सं.) युद्ध । लड़ाई । द्वन्द ।

समरस = का०, २५४, २८८ ।
[वि०] (हि.) एक रस । सबसे सर्वत्र हर समय समान आनन्द प्राप्ति का भाव ।

समरसता = का०, ५४, १६२, २४४ ।
[सं० पु०] (सं.) सामरस्य ।

समर्थ = का०, १४६, १५४ ।
[वि०] (सं.) शक्ति । सामर्थ्य । उपयुक्त, योग्य ।

समर्थन = का०, ११० ।
[सं० पु०] (सं.) किसी मत का पोषण । किसी के विचार को ठीक कहना । अनुमोदन ।

समर्पण = का०, ३१, ५७, ८१, ६४, १०४, १६० ।
[सं० पु०] (सं.) भ्रु०, ५ । प्रे०, २४ ।
सौपना, भेंट । नजर करना ।

समष्टि = प्रे०, २३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) व्यष्टि का विरुद्धार्थक । सभी अंगों या व्यष्टियों का अंतर्भाव । समूह ।

समस्त = का०, ३३, ५६ । ल०, ६० ।
[वि०] (सं.) सम्पूर्ण । सभी । सारा ।

समस्वर = क०, ३१ ।
[सं०पु०] (सं.) समान स्वर । एक स्वर ।

समस्या = आं०, १४ । का०, २६५ । म०, ८ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) विकट प्रसंग । पहेली ।

समस्यायें = का०, १६४ ।
[सं०स्त्री] (हि.) दे० "समस्या", बहुवचन ।

समाई = का०, १६४ ।
[क्रि०] (हि.) आयी । स्थान बनायी ।

समागम = का० कु०, १९ ।
[सं०पु०] (सं.) संभोग । मैथुन । आगमन । संसर्ग ।

समाचार = म०, १०, १२ ।
[सं० पु०] (हि.) खबर । संवाद ।

समाज = आं०, ४८ । का०, २६७ । चि०, ६४ । भ्रु० ६६ ।
[सं०पु०] (सं.) गिरोह, झुण्ड । समुदाय ।

समात = चि०, ८, १८, ३५, १६० ।
[क्रि०](ब्र. भा.) अँटता । समा जाता ।

समाता = आं०, ४६ । ल०, १७ ।
[क्रि०] (हि.) दे० "समात" ।

समाती = चि०, १२ ।
[क्रि०] (हि.) समाता क्रिया का स्त्रीलिंग रूप ।

समादर = भ्रु०, ६० ।
[सं० पु०] (सं.) यथेष्ट सम्मान ।

समाधि = आ०, ५५ । का० कु०, ५६ । का०, १५७ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) ईश्वर के ध्यान में मग्न होना । योग साधन का चरम फल । मृत अस्थियों के गाड़े जाने का स्थान ।

समाधि-सा = का०, २०७ ।
[वि०] (सं.) समाधि की तरह । विषाद-मौन ।

समाधि-स्थान = का० कु०, ७३ ।
[सं० पु०] (सं.) समाधि लगाने का स्थान । समाधि का स्थान ।

समान = का० कु०, ७४, ६४, १०० । का०, ३, ३५, ४५, ४५, ५०, ५४, ६०, ६१, १०१, १५१ । चि०, २४, २६, ५५, ६१, ६२, १४१, १६९, १७५ । प्रे०, ५, १०, म०, ५ । ल०, ५६ ।
[वि०] (हि.) बराबर । तुल्य । गुण ।

समाप्त = का०, ६३, ११६ ।
[वि०] (सं.) खत्म । अंत ।

समाया = का० कु०, ६ ।
[क्रि०] (हि.) समाना क्रिया का भूतकालिक रूप ।

समिद्ध = का०, ३२, २३६ ।
[वि०] (सं.) प्रज्वलित, उद्दीपित । भड़काया हुआ ।

समिध = चि०, १०१ ।
[सं० पु०] (सं.) अग्नि, आग । अनल ।

समीप = आं०, २३, ४१, ६२ । का० कु०,
[अ०व्य०] १०५ । का०, १२६, १४३, १४६,
(सं.) १७६, १६२, १६३, २७२, २८५ ।
चि०, ७२, ६६ । प्रे०, १५ । ल०,
६६ ।
निकट, नजदीक, पास ।

समीपहिं = चि०, ५७ ।
[अ०व्य०] समीप में ही । नजदीक में । दे०
(ब्र. भा.) "समीप" ।

समीपि = चि०, १५१ ।
[सं० पु०] (हि.) नजदीकी । संम्बन्धी । पड़ोसी ।

समीर = आं०, ३६ । का० कु०, १०० । का०,
[सं० पु०] ११, १२, २७, ३६, ३६, ६६, ६०,
(सं.) ६८, १४६, १७७, २५०, २९३ ।
चि०, ११, ७१, १४०, १४३, १५७,
१६४, १८० । ल०, ३७, ४४ ।
वायु । हवा । बयार । पवन ।

समीरण = का० कु०, ३७, प्रे०, ६ ।
[सं०पु०] (सं.) समीर, वायु । मलयज, पवन ।

समीरन = चि०, २६, ५६, १४६, १५२, १५७,
[सं० पु०] १६८, १८६ ।
(ब्र. भा.) समीरण ।

समुचित = का , ७६ ।
[वि०] (सं.) ठीक । उचित । उपयुक्त ।

समुज्ज्वल = चि०, ७१, ७२ ।
[वि०] (सं.) अत्यन्त उज्वल ।

समुझ = चि०, १८, १८४ ।
[पूर्व०क्रि०](ब्र भा.)समझ करके । (सं.) बुद्धि ।

समुझत = चि०, १०१ ।
[क्रि०] समझना क्रिया का एक रूप समझते
(ब्र. भा.) ही ।

समुझ्यो = चि०, १६० ।
[क्रि०] समझा । समझना क्रिया का भूत-
(ब्र. भा.) कालिक रूप ।

समुदाय = का०. २५, ८२ । चि०, २६ ।
[सं०पु०] लघु समाज जो किसी विशेष लक्ष्य
(सं.) के लिये होता है । समूह । ढेर ।
झुण्ड । संघ ।

समुदित = का० कु०, १०८ । चि०, १४८ ।
[वि०] (सं.) उदित । प्रकाशित ।

समुद्र = आं०, ५६ । क०, ११ । का० कु०,
[सं० पु०] ४५, ८६ । का०, १८२, २८८ । चि०,
(सं.) १७६ ।
सागर । उदधि । पयोधि । रत्नाकर ।
बड़ा सागर ।

समूह = चि०, १६६ ।
[सं० पु०] (सं.) झुण्ड । गिरोह । समुदाय ।

समृद्ध = का० कु०, ८८ । का०, ३२, २३६ ।
[वि०] (सं.) सम्पन्न । ऐश्वर्य शाली ।

समृद्धि = का०, ६, ५८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सम्पन्नता । ऐश्वर्य ।

समेट = चि०, ५४ । भ०, ३४ ।
[पूर्व०क्रि०] (सं.) एकत्र कर ।

समेटति = चि०, १५१ ।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा.) बटोरती हुई । एकत्रित करती हुई ।

समेटना = का०, ६६ । ल०, २४ ।
[क्रि०] (सं.) बटोरना । एकत्रित करना ।

समेटि = चि०, ५८ ।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा.) बटोर कर । समेट कर ।

समेत = का०, ८३ ।
[अ०व्य०] (सं.) सहित । साथ ।

सम्मान = का० कु०, ६८, ११५ । भ०, ७८ ।
[सं० पु०] (सं.) आदर, इज्जत, प्रतिष्ठा, मान ।

सम्मुख = का० कु०, ७२, १०८ । का०, १३१

[वि०] १८३, १६६, २७६ ।
(सं.) समक्ष । सामने । साथ ।
सम्मेलन = प्रे०, २५ ।
[सं० पु०] (सं.) जमघट । मिलाप । संगम ।
सम्मोहन = आं०, ३३ । का० कु०, १५४ । प्रे०,
[सं० पु०] १० ।
(सं.) मोहित करने का भाव । कामदेव के पंचबाणों में से एक का नाम ।
सम्राजमम्भोजकुलेऽखिलेपि=चि०, १३४ ।
[सं० पु०] (सं०) सम्पूर्ण सरसिज कुल के साम्राज्य में भी ।
सम्राट = का० कु०, ११६ ।
[सं० पु०] शाहंशाह । नृपति, राजा । महाराजा-
(सं.) धिराज ।
सम्हरिके = चि०, १४८ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सम्हाल करके । सहारा दे करके ।
सम्हल-सम्हल = म०, १३ ।
[अव्य०] (हि.) रुक-रुक । ठहर-ठहर । सोच-सोच ।
सम्हार = का० कु०, ८ ।
[वि०] (हि.) सहारा । रक्षा ।
सम्हालना = का०, ६६ । झ०, ६१ ।
[क्रि०] (हि.) सहारा देना । सहायता करना ।
सम्हाला = का०, २०० ।
[क्रि०] 'सम्हालना' क्रिया का भूतकालिक रूप ।
(हि.) दे० सम्हालना ।
सम्हाली = ल०, १७ ।
[क्रि०] (हि.) सम्हाला क्रिया का स्त्री-लिंग रूप ।
सर = का० कु०, ३४, ३५ । का०, २७१,
[सं० पु०] २८५ । चि०, ६६, १५७, १८६ ।
(सं.) झ०, ११ । प्रे०, १३ ।
तालाब । सरोवर ।
सरद = चि०, २, ७० ।
[वि०] (हि.) सर्दी । जाड़ा, शीत ।
सरन = चि०, १७८ ।
[सं०स्त्री०] (ब्र.भा.) शरण ।
सरबस = चि०, ५, १८५ ।
[वि०] (हि.) सर्वस्व । सब कुछ । सभी चीजें ।
सरमाती = का० कु० १८ ।
[क्रि०] (अ०) शर्म खाती हुई ।
सरल = आं०, १३ । का०, २८, ७४, ८३, ८४,
[वि०] ८५, ८७, १०५, १३६, १५१, १६३,
(सं.) १७८, २४१ । चि०, ५५, ७३, १७३,
१८५ । झ०, ४१, ७०, ७६, ८४ ।
प्रे०, २, ५ । म०, १४, ६६ । ल०,
११, २३ ।
सीधा । निश्छल । निष्कपट ।
सरलकथा = का० कु०, ७४ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) साधारण कथा ।
सरल-सरल = ल०, ४३ ।
[वि०] (स०) अत्यन्त सरल ।
सरल-स्वभाव = चि० ६ ।
[सं० पु०](हि.) सीधा स्वभाव । सीधापन ।
सरवर = चि०, ८, २४, ४६, ६७ ।
[सं० पु०] (सं.) तालाब, सरोवर ।
सरवर-जलहूँ = चि०, ४५ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) सरोवर के जल में भी ।
सरस = का०, ६३, ८२, ६७, १०३, १३३,
[वि०] १४३, २१७ । चि०, ५५, १८१ ।
(सं.) झ०, ३८ । ल०, २३ ।
मीठा । रसीला । मधुर । गीला ।
ताजा । भावपूर्ण ।
सरस-सीकर = ल०, २१ ।
[सं० पु०] सं.) पसीने की बूँदें । श्वेद-बिन्दु ।
सरसाओ = चि०, १७४ ।
[क्रि०] सरसाना क्रिया का एक रूप । शोभित
(सं.) करो । सरस बनाओ ।
सरसाधि = चि०, २४ ।
[पूर्व० क्रि०] बाण को साधकर । तीर को सम्भाल
(ब्र.भा.) कर ।
सरसात = चि०, १५१ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) दे० 'सरसाना' । सुशोभित होता है ।
सरसाये = चि०, १८०,

[क्रि०] (ब्र. भा.) शोभित हुए। 'सरसाना' क्रिया का एक रूप।

सरसावै = चि०, १६२।
[क्रि०] (ब्र.भा.) सरसाना क्रिया का एक रूप। दे० 'सरसाना'। लुभाती।

सरसि = चि०, १३४।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा.) आनन्दित होकर।

सर-सिज = आं०, ६५। चि०, २४। झ०, २८।
[सं० पु०] ल०, ३०।
(सं.) कमल। तोयज। अरविन्द।

सरसिज-वन = आं०, २३।
[सं० पु०](हि.) कमल का वन। अंबुज-कानन।

सरसी = का० कु०, ३६। का०, १७५। चि०,
[सं० स्त्री०] २३।
(हि.) छोटा तालाब। (वि०) शोभित। खिली हुई।

सरसोहैं = का० कु०, ३६। का०, १७५। चि०, २३।
[क्रि०] (ब्र.भा.) सुन्दर लगती है। सुहाती है।

सरस्वती = का०, १६०, १६७, २०५, २४७।
[सं० स्त्री०] शारदा। भारती। विद्या। विद्या की
(सं.) अधिष्ठात्री देवी। इड़ा।

सरहिन्द = का० कु०, ११८।
[सं० पु०](फा०) भारतवर्ष के मध्य में।

सराह = का०, २८६। चि०, १७१।
[पूर्व०क्रि०] सराहना क्रिया का एक रूप। प्रशंसा
(ब्र. भा.) करके।

सराहना = प्रे०, २३।
[क्रि०] प्रशंसा करना। बड़ाई करना (सं०)
(सं.) बड़ाई। प्रशंसा।

सराहनो = चि०, ६०।
[क्रि०] प्रशंसा करना। सराहना क्रिया का एक
(ब्र. भा.) रूप।

सराही = चि०, १८४।
[क्रि०] प्रशंसा की। (वि०) सराहना क्रिया
(हि.) का एक रूप।

सरिता = आं०, ७६। का०, ७३, २३३, २४३,
[सं० स्त्री०] २४५,२४६, २५२,२६६, २७७। चि०,
(सं.) १, २६, १७३। झ०, ३६। प्रे०, ३,
१३, १४, १५, २६। म०, ४। ल०,
२७, ७०।
नदी। नद।

सरिता-तीर = चि०, ४५।
[सं० पु०] (सं.) नदी का किनारा। कछार।

सरिस = चि०, ३०। झ०, ३९।
[वि०] (हि.) समान। सदृश।

सरोज = आं०, २८। चि०, ३, २८, २६,
[सं० पु०] ४६, १८८। झ०, ११।
(सं.) कमल। जलज। पंकज।

सरोज-पत्रेनु = चि०, १३३।
[सं० पु०] (सं.) कमल के दल।

सरोज-पराग = का० कु०, ३६, १००।
[सं० पु०] (सं) अरविंद का मकरन्द। कमल-पराग।

सरोज राजै = चि०, १३४।
[सं० पु०] (सं.) कमल की पंक्तियां। कमल दल।

सरोज हृदय = का० कु०, ६०।
[सं० पु०] (सं.) कमल के समान सुकोमल हृदय।

सरोरुह = का०, १७६। चि०, १४३। झ०, ११।
[सं० पु०] (सं.) कमल। अरविंद।

सरोरुहारणि = चि०, १३३।
[सं० पु०] (सं.) कमली। कुमुदिनी।

सरोवर = का० कु०, ५५। का०, २३५। चि०,
[सं० पु०] १५३। झ०, ११।
(सं.) तालाब। सर। बावली। तड़ाग।

सर्ग = का०, ७, १७, १८, ५३।
[सं० पु०] संसार। सृष्टि। स्वर्ग। प्रवाह। स्वभाव
(सं.) प्रकृति। सीढ़ी।

सर्ग-अंकुर का०, २१०।
[सं० पु०] (सं.) जीवन-विकास।

सर्प = क०, २५ ।
[सं० पु०] (सं.) सांप । कीरा । भुजंग ।
सर्राटे = का०, २०५ ।
[सं० पु०] सर् सर् शब्द का होना । दौड़ने की
(हि.) क्रिया में होने वाली सनसनाहट ।
सर्वज्ञ = का०, १६५ ।
[वि०] (सं.) सब कुछ या सभी बातों का ज्ञाता ।
सर्वत्र = का० कु०, ७६, १०६, १११ । भ्रु०,
[अव्य०] ४४ । प्रे०, १४ । म०, १३ ।
(सं.) सभी जगह ।
सर्वत्र-सुलभ = का० कु०, ६१ ।
[वि०] (सं.) सभी जगह सुलभ । सुगम ।
सर्व मंगले = का०, २४६ ।
[सं० पु०] (संबोधन) । सबका मंगल करने
(सं.) वाली अर्थात् श्रद्धा ।
सर्वस = चि०, ३४ ।
[वि०] (ब्र.भा.) सर्वस्व । सब कुछ । कुल । समस्त ।
सर्वस्व = का० कु०, ७३, ११३ । का०, १०४ ।
[वि०] प्रे०, १३, २०, २२, २५ । म०, २ ।
(सं०) कुल । समस्त । सर्वस ।
सर्वाङ्ग = का०, २५२ ।
[सं० पु०] सम्पूर्ण शरीर । सारा बदन, काया के
(सं.) सभी अवयव ।
सलज्ज = का०, ४७ ।
[वि०] (सं.) लज्जा के साथ, लज्जापूर्वक ।
सलिल = का०, २८३ । चि०, २३, १६० । भ्रु०
[सं० पु०] ३७ । म०, ८ । ल०, १६, १४३ ।
(सं.) अम्बु । जल । पय । नीर ।
सलोनी = चि०, १४७, १५८ ।
[वि०] (हि.) सलोना का स्त्री वाची रूप । दे० सलोने ।
सलोने = चि०, ६३, १६२ ।
[वि०] (हि.) सुन्दर नमकीन । मनोहर ।
सवारत = चि०, १७८, १८५ ।
[क्रि०] (ब्र भा.) सजाना । दे० "सँवारना" ।
सविता = का०, २५ ।
[सं० पु०] (हि.) सूर्य । दिनकर ।

सविनय = का० कु०, ६८ । का०, १३१ ।
[वि०] (हि.) नम्रता पूर्वक ।
सविलास = का०, ५४, ५६, ८६ । भ्रु० २८ ।
[वि०] हि.) आनन्द तथा उल्लास पूर्वक ।
सवेरा = का०, १२०, २५८ ।
[सं० पु०] सुबह । प्रातःकाल । दिन का प्रारंभिक
(हि.) अंश ।
सव्य-साँची = का० कु०, ११५ । चि०, ३१ ।
[सं० पु०] (सं.) अर्जुन । कुन्ती-पुत्र ।
सव्रीड़ = का०, ८६ ६४, ।
[वि०] (सं.) सलज्ज ।
सशंक = का०, २४६ । ल०, ७७ ।
[वि०] भय से । शंका से । डर से । दे०
(सं०) 'सशंकित' ।
सशंकित = का०, २७१ ।
[वि०] (सं.) शंकित । भयभीत । डरा हुआ ।
सशक्त = का० कु०, ६० ।
[वि०] (सं.) बलवान । मजबूत । शक्तिशाली ।
ससी = चि०, १४६ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) शशि । राकापति । निशापति ।
सस्नेह = का० कु०, ६८ । का०, ५४, १६२ ।
[वि०] भ्रु०, २५ ।
(सं.) स्नेह सहित । प्रेमपूर्वक ।
सस्वर = प्रे०, ११ ।
[वि०) (सं.) राग से । मधुर राग से ।
सस्मित = का०, ८६ ।
[वि०] (हि.) मुस्कराता हुआ । विहँसता हुआ ।
सह = का०, २६, १७७, १७८ । चि०, २६,
[वि०] ५३, ५५, ६३, ६४, ७१ । म०, १७ ।
(हि.) सहित । समेत । साथ ।
सहकार = चि०, ७१ ।
[सं० पु०] औरों के साथ मिलकर कार्य करने की
(हि.) प्रवृत्ति । सहयोग । सुगन्धित पदार्थ ।
आम ।
सहचन्द = चि०, ७१ ।
[वि०] (सं.) चन्द्रमा के साथ । चन्द्र के सहित ।

सहचर = क०, १३। का० कु०, ६७, १०६।
[सं० पु०] का०, ५६, ७१, ८६, २६३। चि०,
(सं.) २८। प्रे०, ६, २२।
साथी। सङ्गी। सखा। सेवक।

सहचर-सुख-क्रीड़ा = का० कु०, ६८।
[सं० पु०] (सं.) सखा द्वारा की गई सुख की क्रीड़ा।

सहचर-सी = क०, ६।
[वि०] (हि.) साथी के समान। सुहृद-सी।

सहचरी = का० कु० ११।
[सं० स्त्री०] साथी का स्त्री वाची शब्द। पत्नी।
(हि.) सखी।

सहज = का० कु०, १८, १००। का०, ३२।
[वि०] ८६, ११२, १४३, १५२, १६४, १६६,
(सं.) १७१, १७२, १६७, १६८, २०८,
२०६, २२४, २६६, २७६। चि०,
३०, ५६ ६३। प्रे०, ५। ल०, ४७।
सरल, सुगम, साधारण। सगा भाई।
स्वाभाविक।

सहजमुद्रा = का०, १२६।
[सं० स्त्री०](सं.) स्वाभाविक आकृति। साधारण अवस्था।

सहज-लब्ध = का०, १४७।
[वि०] सरलता से ही मिलने वाला। साधारण
(सं.) ढङ्ग से प्राप्त।

सहजही = चि०, ६६।
[अव्य०] (हि.) साधारण ही। सरलता से ही।

सहजै = चि०, ४, ४७।
[वि०](ब्र. भा.) दे० 'सहज'।

सहत = का०, १११, १३४, १६६, २२२,
[क्रि०] २३८, २४६, २६०। चि०, ६, १०५।
(हि.) सहना क्रिया का एक रूप। सहता हुआ।

सह-नखत-पांति = चि०, २८।
[वि०] (सं.) नक्षत्रों के समूह के साथ।

सहना = का०, ५५, १६६, १६४, २१६, २५१।
[क्रि०] म०, २, ३, ६, ८।
(हि.) झेलना। पार करना। बर्दाश्त करना।

सहने = चि०, १८४।
[क्रि०] (हि.) 'सहना' क्रिया का रूप।

सहयोगी = का०, १८१।
[सं०पु०] सं.) साथी। सहकारी। सहयोग करनेवाला।

सहर्ष = का०, ४५।
[वि०] (सं) प्रसन्नापूर्वक। आह्लाद पूर्वक।

सहलाना = आं०, ५४। का०, ८५, २१५, २१६।
[क्रि० स] मलना। किसी वस्तु, व्यक्ति या जीव
(हि.) पर हाथ फेरना।

सहसारथि = चि०, ६६।
[वि०] (ब्र.भा.) सारथी के सहित।

सह सकता = का०, १५३।
[क्रि०] (हि.) 'सहना' क्रिया का रूप।

सहसा = का०, ३८, ५२, ७७, ६६, १०१, १०४,
[अव्य०] १६६, १८६, २१४, २७३। चि०,
(हि.) १८४। झ०, ६०। प्रे०, १८। ल०,
६६, ७२।
एकाएक। अकस्मात।

सहानुभूति = का०, ३२। प्रे०, २०।
[सं०स्त्री०](सं.) हमदर्दी। दुख को देखकर दुखी होने
का भाव।

सहाय = का०, १७०, १७१। चि०, ५०, १४६।
[सं० पु०] (सं.) सहायता। आश्रय। मदद। सहारा।

सहायक = क०, १४। म०, २२।
[वि०] (हि.) सहायता करने वाला। सहकारी।

सहायता = क०, १८।
[सं०स्त्री०] (हि.) सहारा, आश्रय।

सहारा = आं०, ४१। का० कु०, २३, २८, ७६
[सं० पु०] झ०, ४४। प्रे०, २१। म०, २०।
(हि.) आश्रय। भरोसा। सहायता। सहारा

सहारे = आं०, ३६, ४३। चि०, २४, १०१
[वि०] १८२।
(हि.) दे० 'सहारा'।

सहि = चि०, ३८, ५०, ५८।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र.भा.) सह कर।

सहित = क०, ३०। का०, ५४। चि०, १, ६

[अव्य०] १४, २८, ५८, ६४, ६६, ७३, ७४ ।
(सं.) भू०, ६० । म०, ६ ।
समेत । साथ ।

सहिना सकि हैं= चि०, १४७ ।

[क्रि०] (ब्र. भा.) सह नहीं सकेंगे । बर्दाश्त न कर सकेंगे ।

सहिहौं = चि०, १६० ।

[क्रि०] (ब्र. भा.) सहूँगा ।

सही = का० कु०, ७५, ११२, ११३ । का०,
[क्रि०] ११२ । चि०, १५, ३५, ३६, ४६ ।
(हि.) "सहना" क्रिया का भूतकालिक रूप ।
(सं०) सत्य ।

सहृदय = चि०, १६४ ।

[वि०](सं.) दयालु । रसिक । हमदर्द । भावुक ।

सहृदयता = आं०, ६६ । का०, २०८ ।

[सं० स्त्री०] (सं.) दयालुता, भावुकता, रसिकता ।

सहेतु = का०, १४७ ।

[वि०] (सं.) कारण सहित ।

सहै न भार = चि०, ६७, ।

[क्रि०] ब्र.भा.) वजन नहीं सहता ।

सह्यो = चि०, ३६, ४७ ।

[क्रि०] ब्र.भा.) 'सहना' क्रिया का भूतकालिक रूप । सहा ।

सा = आं०, १६, ३०, ५५, ५७, ५८, ७३ ।
[अव्य०] ल०, ३४ ।
(सं.) सदृश । समान ।

साँच = चि०, २४, ६७ ।

[सं०पु०](ब्र.भा.) सत्य, शाश्वत, उचित, ठीक ।

साँचहु = चि०, २६, ५५ ।

[सं०पु०](ब्र.भा.) (दे० 'साँच' ।)

साँचे = का०, १०१, १०५, १७२ । चि०, ४७,
[सं० पु०] १७९ ।
(हि.) सत्य । ढालने के लिये बनाया हुआ एक प्रकार का साँचा । जिससे कोई वस्तु ढाली जाती है । (बहुवचन)

साँझ-किरन-सी = का०, १७६ ।

[वि०] (हि.) सायंकालीन किरणों के समान ।

साँझ-सबेरे = चि०, ५७ ।

[सं० पु०] (हि.) प्रातः-सायं ।

साँझ-सी = ल०, १४ ।

[वि०] संध्या के समान, सायंकाल सदृश
(हि.) काली ।

सान्ध्य = क०, ७ । चि०, १, ३६ ।

[वि०] (सं.) सायंकालीन ।

सांयकाल = का०, ८१ ।

[अव्य०, (सं.) सन्ध्या समय । अंतिम पहर ।

साँवरो = चि०, १४८ ।

[वि०] साँवला । श्याम । (सं०) कृष्ण ।
(ब्र. भा.) गोपाल । प्रियतम ।

साँस = आं०, १०, १२ । का० कु०, ८५ । का०,
[सं०स्त्री०] १६, २०, २२२, २४७, २७१ ।
(हि.) स्वाँस, श्वास, जीवन, दम ।

साँसारिक = का० कु०, १०४ ।

[वि०] (सं.) लौकिक, ऐहिक ।

साकार = का०, ४८, ६०, १७५, २०९, २६४ ।

[वि०] (सं.) रूप या आकार वाला, स्थूल, मूर्तिमान ।

साक्षात = ल०, ६६ ।

[अव्य०] (सं.) सम्मुख । सामने प्रत्यक्ष । (वि०) साकार ।

साक्षी = का० कु०, ६४ । का०, २८६ । ल०, १३ ।

[सं०पु०] (हि.) गवाह । तटस्थ दर्शक ।

साख = का०, ८६ ।

[सं०स्त्री०](हि.) मर्यादा, रोब, धाक ।

साखा = चि०, ५५, ६६, १८४ ।

[सं० स्त्री०] (हि.) शाखा, डाली, डाल ।

सागर = आं, ४२, ४८, ६१ । का० कु०, १ । का०,
[सं० पु०] २६, ३१, ३४, ३५, ३६, ५८, १६६,
(हि.) १७६, २०६, २८८ । चि०, ६६,
१८६ । प्रे०, २२, २६ । ल०, १४,
१५, १६, २०, ३४ ।
समुद्र, रत्नाकर । झील ।

साचि = चि०, २४ ।

[वि०] (हि.) दे० साँच । सच्ची ।

साची = चि०, १८३ ।

[वि०] (हि.) दे०, साँच ।

साज = का०, ८७, ६२, १४२ । चि०, ३३,

[सं० स्त्री०] ७१, ९४, १०६ । भ्र०, ५६, ६७ ।
(हि.) शृंगार, सजावट, सजे हुये होने की अवस्था ।

साजती = चि०, १५५ ।
[क्रि०](ब्र. भा.) सजाती ।
साजहि = चि०, १५४ ।
[क्रि०](ब्र.भा.) सजाती, साजती ।
साजि = चि०, ३८, १०० ।
[पूर्वक्रि०](ब्र.भा.) सजाकर ।
साजै = चि०, ७१ ।
[क्रि०](ब्र.भा.) सजाते हुए ।
साज्यो = चि०, ७१ ।
[क्रि०](ब्र.भा.) सजाया ठाट बाट बनाया ।
साड़ी = का०, ३८ ।
[सं० स्त्री०] स्त्रियों के पहनने की धोती । भारतीय
(हि.) महिलाओं के पहनने का एक प्रकार का वस्त्र ।

सात = भ्र०, ७६ ।
[वि०] (हि.) चार और तीन के योग से बनी संख्या ।
सात्विक = का० कु०, ५८, ६७ । का०, ३७ ।
[वि०] शुद्ध, पवित्र, सतोगुणी, पवित्र, निर्मल ।
(सं.) सत्व गुण से उत्पन्न, विष्णु ।
साथ = क०, ६, १६, २०, २६ । का० कु०,
[सं० पु०] २२, २४, २५, ३० । का०, ७३, ८३,
(सं.) ८८, ११२, ११७, १५७, १७६, २१३, २१४ । चि०, १७० । भ्र०, ६६ । प्रे०, २, ६, १८, २२, २४ । म० ३, २२ ।
संगति, सहचार, साथी, संगी, घनिष्ठता कबूतरों का झुण्ड । (अव्य०) सिवा, अतिरिक्त ।

साथ-साथ = म०, १ ।
[अव्य०] (हि.) एक साथ, मिलकर ।
साथिन = ल०, ४० ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० साथी (स्त्री०) (बहुवचन) ।
साथी = आं०, ७४ । का० कु०, २८, ५१ ।
[सं० पु०] का०, ७३, ६४, १०७, १२६, १६० ।
(हि.) चि०, ५६ । प्रे०, २४ ।
मित्र, संगी, सहचर, सहयोगी, दोस्त ।

सादर = म०, २३ ।
[वि०] आदर के साथ, ससम्मान, मान
(सं.) सहित ।
सादी = आं, २२ ।
[वि०] जिस पर सजावट आदि न की गई हो ।
(हि.) सीधी, सरल, स्वेत ।
साध = का०, ४८, २२० ।
[सं० पु०] साधु, पवित्र, सात्विक (स्त्री०) लालसा
(हि.) (वि०) उत्तम, अच्छा ।
साधक = का०, ७५ । म०, १८ ।
[स०पु०] (सं) साधना करने वाला, योगी, यति ।
साधती = का० कु०, ८८ ।
[क्रि०] (हि.) साधने की क्रिया ।
साधन = का० कु०, १०६ । का०, ३, ७१, ७५,
[सं० पु०] ११५, १७१, १८१, १८३ ।
(सं.) जरिया, निर्णय, आज्ञा, उपाय, युक्ति, कारण, हेतु, तात्पर्य ।
साधना = का० कु०, ७३ । का०, ८८, ६३,
[सं० स्त्री०] १०६, १६२, १६३, २६८, २८० ।
(सं.) आराधना, तपस्या, सिद्धि ।
साधारण = का०, ११५ ।
[वि०] आसान, सामान्य, मामूली, सहज,
(सं.) आम, सरल, सुगम, सभी से सम्बन्धित
साधि = चि०, ७२, १५६, १६३ ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) साध करके ।
साधिका = का० कु०, ७२ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) साधना करने वाली महिला ।
साधिकार = का०, १४३, २३८ ।
[क्रि० वि०] अधिकार सहित, अधिकार से । (वि०)
(सं.) जिसे अधिकार प्राप्त हो ।
साधु = क०, ३० ।
[सं० पु०] (सं.) सज्जन, कुलीन, आर्य, संत, सत्पुरुष
सानंद = का० कु०, १२१ । का०, ४५, ५८

[क्रि० वि०] ८६, ६०। चि०, १४२। झ०, १७,
(सं.) २६।
आनन्दपूर्वक, आनन्द सहित।

सानु = का०, २६।
[सं० पु०] समतल भूमि, पर्वत की चोटी। वन,
(सं.) जंगल, पल्लव, मार्ग, पंडित, सूर्य्य, ज्ञानी।

सानुनय = चि०, ६६।
[क्रि० वि०] (सं.) अनुनय सहित, विनय के साथ।

सानुराग = का०, १४८, २३६।
[क्रि० वि०] (सं.) अनुराग सहित, नेह के साथ, प्रेम-पूर्वक।

साभिमान = का०, १५०।
[क्रि० वि०] (सं.) अभिमान के सहित।

सामंजस्य = का०, २७२।
[सं० पु०] (सं.) अनुकूलता। औचित्य। मेल।

सामग्री = का० कु०, ८५। प्रे०, ३।
[सं० स्त्री०] (सं.) वस्तु, साधन, सामान, चीज।

सामना = का० कु०, ३०, ५२, ६८। म०, २२।
[सं० पु०] ल०, ७२।
(हि.) भेंट, मुलाकात, मुकाबला, समक्ष, सम्मुख।

सामने = क०, १३। का० कु०, १६, ४८।
[क्रि० वि०] का०, १८३, २८३। म०, ११।
(हि.) सम्मुख।

सामुहिक = का०, २०१।
[वि०] (सं.) समूह से सम्बन्ध रखने वाला।

सामुहे = चि०, ५३, ५६, ६१, ६९।
[अव्य०] (ब्र. भा.) सामने, सम्मुख।

साम्राज्य = का० कु०, १०६। चि०, ४८। ल०,
[सं० पु०] ७६।
(सं.) आधिपत्य, वह बड़ा राज्य जिसके अधीन अनेक छोटे-छोटे राज्य हों। राज्य और उपनिवेश दोनों मिलकर।

साम्राज्य-स्थापन=का० कु०, ११२।
[सं० स्त्री०] विशाल राज्य की स्थापना। साम्राज्य
(सं.) की नींव।

सायक = चि०, ४१।
[सं० पु०] (सं.) बाण, तीर, खड्ग, एक वर्ण वृत्त।

सार = का०, १५७, १६८, १७७, २५१।
[सं० पु०] झ०, ४२।
(सं.) तत्व, तात्पर्य, निष्कर्ष, शक्ति, बल, उत्तम, श्रेष्ठ, दृढ़।

सारथि = चि०, ४८, १७७।
[सं०पु०] रथ हाँकने वाला. स्यन्दन चालक,
(ब्र.भा.) समुद्र. सागर, सूत।

सारथी = का० कु०,८, ११४,११५। चि०, ४८।
[सं० पु०] (सं.) दे० सारथि। रथ का चालक।

सारथे = का० कु०, ७२, ७३।
[सं० पु०] (सं.) सारथी का सम्बोधन।

सारल्य = का० कु०, १११।
[सं० पु०] (सं.) सरलता, सीधापन, सहजता।

सारस = चि०, ६३, ६८।
[सं० पु०] चन्द्रमा, एक प्रकार का बड़ा पक्षी, हंस,
(सं.) कमल, झील का जल।

सारस्वत = का०, १६६, १६७, २०१, २०५,
[वि०] २८३।
(सं.) विद्वानों का, सरस्वती का, सारस्वत प्रदेश का। (सं०) सरस्वती नदी पर स्थित पंजाब का एक प्रदेश।

सारस्वत-प्रदेश = का०, १६०, १६६।
[सं पु०] सरस्वती का प्रदेश। सारस्वत
(सं.) प्रदेश।

सारा = आं०, ६१। का० कु०, ३१।
[वि०] का०, ३७, ६४, १२१, १६६।
(हि) झ०, १६। ल० ५०।
समस्त, सम्पूर्ण, सब।

सारिका = क०, १६।
[सं स्त्री०] (सं.) मैना, एक पक्षी।

सारी = क०, १४। का० कु०, १२। का०,
[वि०] ६६, १६५। झ०, ७६।
(हि.) सम्पूर्ण, (सं०) मैना, साड़ी।

सारे = क०, १४, का० कु०, ४, ५७, ५६।

[वि०] का०, २२४ । चि०, १७८ । भ०, ५१ ।
(हि०) दे० 'सारा' ।
सार्थक = का० कु०, ३५ ।
[वि०] उचित, सफल, उपकारी, गुणकारी ।
(सं.) अर्थ सहित ।
सार्वजनिक = क०, १३ ।
[वि०] सर्वसाधारण सम्बधित । सभी से
(सं.) सम्बन्धित ।
सालम्बे = चि०, १३२ ।
[सं० पु०] (सं.) आलम्ब के सहित ।
सालती का०, २१३, २६८ ।
[क्रि०] (हि.) चुभती । कसकती । छेद करती ।
सालुम्ब्रापति, सालुम्ब्राधिपत==म०, ६, १२ ।
[सं० पु०] (सं.) सालुम्ब प्रदेश के राजा ।
साले चि०, १३२ ।
[सं० पु०] (सं.) साल का वृक्ष ।
सावधान का०, १६५ । चि०, १०६ ।
[वि०] (सं.) सचेत । सतर्क ।
सावन = ल०, ४२, ।
[सं० पु०] श्रावण । असाढ़ के बाद का महीना ।
(हि.) यजमान । वरुण ।
सावन-घन-सघन = ल०, २७ ।
[सं० पु०] (सं.) सावन के घने बादल ।
साहस = आं०, ३८, । क०, २७ । का० कु०,
[सं० पु०] ८१ । का०, १६४, २०१, २३६,
(सं.) २५७, २५६ । चि०, ४१, १८४ ।
ल०, ६६ ।
मानसिक दृढ़ता जो किसी बड़े कार्य करने की ओर प्रवृत्ति करती है । हिम्मत ।
साहसिक = का०, २०० ।
[वि०] (सं.) निर्भीक । पराक्रमी । डाकू । हठीला ।
सिंचकर = आं०, ७१ ।
[पूर्व०क्रि०](व्र.भा.) पानी पाकर । भींग जाने पर ।
सिंचन = चि०, ५७ ।
[सं० पु०] (सं.) जल छिड़कना । सींचना ।
सिंचन हेतु = का०, कु० १३ ।
[क्रि०वि०] (सं.) सींचने के लिये ।
सिंचा = का० कु०, ६३ ।
[क्रि०](व्र. भा.) सींचना क्रिया का भूतकालिक रूप ।
सिचाव = भ०, ५९ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) सिंचाई । पल्लवन के लिए पौधों में पानी देना ।
सिंचित = का०, २६३, २६१ । चि०, १७४ । प्रे०,
[वि०] २२ । म०, २४ ।
(हि.) सिंचा हुआ । भींगा हुआ । तर ।
सिंचे हुए = का०, २६ । भ०, २२ ।
[क्रि०] (हि.) सींचा हुआ ।
सिन्धु = आं०, १० । क०, ८ । का० कु०,
[सं० पु०] ७०, ७१, ७४ । का०, ३, १४, १५,
(सं.) ३८, ५२, ६१, ६२ ।
१७६ । चि०, २२, १७६ । भ०, ५१ ।
प्रे०, १७, २५ । ल०, २१ ।
नदी । बड़ी नदी । सागर । पंजाब की एक विख्यात नदी । गजमद । गन्धर्वी, एक राजा का नाम ।
सिन्धु-सा = भ०, ४२ ।
[वि०] (हि०) सिन्धु के समान ।
सिन्धु-सी = क०, ३१ ।
[वि०] (हि.) सिंधु-सदृश ।
सिन्धु-सेज = का०, २४ ।
[सं० स्त्री०](सं.) समुद्र रूपी शय्या ।
सिंह = का० कु० १०५ । चि०, ७२, १८५ ।
[सं० पु०] म०, १२ ।
(सं.) केशरी । नाहर । वीर । बहादुर ।
सिंहद्वार = का० कु०, १०८ । का०, १८२, १६८ ।
[सं० पु०] चि०, ६३ ।
(सं.) प्रधान द्वार । प्रमुख द्वार । महल का बड़ा फाटक ।
सिंहासन = का०, १८३ । चि०, ५४, ७२, १०६ ।
[सं०पु०] बैठने का स्थान । राजा या देवता के
(सं.) बैठने का स्थान । वह आसन जिस पर सिंह का आकार बना हो ।

सिंहिनी = का० कु०, १०५।
[सं० स्त्री०] (सं.) सिंह का स्त्रीलिंग।
सिंहनी-सी = ल०, ६७।
[वि०] (सं.) सिंहनी के समान।
सिकता = आं०, ४२। भू०, ३६। ल०, ६,५०।
[सं०स्त्री०](सं०) बालू। रेत।
सिकता-सी = का०, २७०।
[वि०] (हि.) बालू-कण के समान।
सिकुड़न = का०, ५१, २६३।
[सं० स्त्री०] = सिकन। सिकुड़ने के कारण पड़ा हुआ
(हि.) बल।
सिक्त = का० कु०, ४२। चि०, ३६।
[वि०] (सं.) सिंचित। गीला। भीगा आ।
सिखाया = का०, २२६।
[क्रि०] सिखाना, क्रिया का भूतकालिक रूप।
(हि.) (सं०) शिखा, चोटी।
सिखाने = का०, १०३, २२२।
[क्रि०] (हि.) 'सिखाना' क्रिया का एक रूप।
सिखावन = चि०, १४८।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) शिक्षा। सीख।
सिखी = चि०, ६६, १७२।
[क्रि०] सीखना क्रिया का एक रूप। (सं०)।
(हि.) मोर।
सिखै = चि०, १५।
[क्रि०] (ब्र.भा.) दे० 'सीखना।
सित = आं०, ४४। का०, १७५। चि०,
[वि०] १५५।
(सं.) स्वच्छ, सफेद, श्वेत, निर्मल।
सित-सरसिज = आं०, ५४।
[सं० पु०] श्वेत कमल।
सित-सरोज = का०, २३। चि०, २६।
[सं० पु०](सं.) सफेद कमल।
सिताबी = भू०, ७०।
[सं०स्त्री०](फा०) चाँदनी।
सिथिल-बानी = चि०, ५६।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.) मन्द वाणी। धीमी आवाज।

सिद्ध = का०, १६१।
[वि०] प्रमाणित, परिपूर्ण, शोधित, निर्णीत,
(सं.) प्रसिद्ध, सिद्धि प्राप्त।
सिद्धान्त = का०, ११०। प्रे०, १७।
[सं० पु०] विचार एवं तर्क द्वारा निश्चित किया
(सं.) हुआ मत। तत्वार्थ। उसूल।
सिधारत = चि०, २८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) जाता। गमन करता। मरता।
सिधारी = का०, कु०, १००।
[क्रि०] (ब्र. भा.) चली गई। मर गई।
सिधारे = चि, ६८।
[क्रि०] (ब्र. भा.) चले गये, मृत्यु को प्राप्त हो गये।
सिमिटि = का०, ६८।
[पूर्व० क्रि०] (सं.) सकुचित हो कर।
सिये = आं०, ७७।
[क्रि०] सिया हुआ, बन्द किये। सीना क्रिया
(हि.) का भूतकाल का रूप।
सिर = आं०, ६०, ६१। का० कु०, ११८।
[सं० पु०] का०, २६, ९७, १७१, २१६, २४१,
(हि.) २४७। चि०, ६०, ६२, ६५, ७४,
७५, १८८। प्रे०, १२, १८। म०,
२, २१। ल०, १०, ७७।
कपाल। चोटी। सिरा।
सिरनाई = चि०, ६०, ६४।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा.) मस्तक नवाकर। नतमस्तक होकर।
सिरमौर = चि०, ६६।
[सं० पु०] (हि.) सिर का मुकुट। शिरोमणि। सिरताज।
सिरहिं = चि०, ५८, ६४।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) सिर भी।
सिरात = चि०, १८५।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मन्द होती। समाप्त होता। ठंडी होती।
सिला = चि०, ७१।
[सं० पु०] (सं.) प्रस्तर। शिला।
सिवा = का० कु०, १२।
[अव्य] अलावा, अतिरिक्त। (वि०) अधिक
(हि.) ज्यादा।

सिसक सिसक = आं०, १५ ।
[पूर्व० क्रि०] फूट-फूट कर रोना । सिसकी भर-भर
(हि.) कर ।
सिसकी = आं०, ६४ । का०, २०६ ।
[सं०स्त्री०] (हि.) धीरे-धीरे रोने की आवाज । सिसकारी ।
सिसकी-सी = का०, ३६ ।
[वि०] (हि) सिसक-सी । सीत्कार के समान ।
सिसिर = का० कु०, ५५ । चि०, १७३ ।
[सं० पु०] (हि.) शिशिर । शीतकाल ।
सिहर = आं ३६ । प्रे०, ११ । ल०, ३, १०, ४० ।
[सं० स्त्री] (हि.) रोमांच । स्फुरण, शिश्न ।
सिहरन = का०, २६३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) स्फुरण, रोमांच, सिहरने की क्रिया ।
सींचत = का० कु०, ६६ । चि०, १७७ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सींचता है ।
सींचति = चि०, ५७ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सींचती है ।
सींचते = ल०, ७४ ।
[क्रि०] (हि.) भिगोते । पल्लवित करने के लिए
पानी देते ।
सींचि = चि०, ७३ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) सींचकर ।
सींचिहौं = चि०, १७४ ।
[क्रि०] (ब्र० भा०) सींचूंगा ।
सींचे = चि०, १७३ ।
[क्रि०] सींचना क्रिया का भूतकालिक रूप ।
सींचो = चि०, ७४ ।
[क्रि०] (हि.) सींचना क्रिया का आज्ञार्थक रूप ।
सींचन = चि०, ५७ । ल०, ७६ ।
[सं० पु०] खारी पानी से मिट्टी निकालने की
क्रिया ।
सींचना = का०, १८६ । झ०, २६ ।
[क्रि०] (हिं०) दे सींचते ।
सी = आं०, २०, ३४, ४३, ४८, ५१,
[अव्य०] ६७, ७६ ।
(हि.) समान । सदृश ।
सीकर = का०, २५३ । चि०, १८१ ।
[सं० पु०] जलकण । पथ-विंदु । श्वेदकण ।
(सं.) (स्त्री०) सिकड़ी ।
सीख = का०, ५१, १६६ । चि०, १७२, १८३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) शिक्षा । तालीम । परामर्श । सलाह ।
सीखती = ल०, ५६ ।
[क्रि०] काम करने का ढंग जानने का प्रयत्न
(हि.) करती ।
सीखना = का०, ६३, १६६ । चि०, १७२ ।
[क्रि०] जानना । ज्ञान प्राप्त करना । काम करने
(हि.) का ढंग जानना ।
सींव = चि०, १३६ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र भा.) सीमा ।
सीढ़ी = का०, ११० ।
[सं० स्त्री०] ऊँचे स्थान पर चढ़ने का वह साधन
(हि.) जिसमें एक के बाद एक पैर रखने का
स्थान बना हो । निसेनी । सोपान ।
सीत = चि०, १४१ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) शीत, सर्दी ।
सीतल = चि०, १७३ ।
[वि०] (ब्र. भा.) ठंडा, शीतल ।
सीता = का० कु०, १०१ ।
[सं० स्त्री०] मर्यादा पुरुषोतम श्री रामचन्द्र जी की
(सं.) धर्म पत्नी ।
सीधी = आं०, २२ । का०, १४० ।
[वि०] जो टेढ़ा न हो. सरल, जो अपने लक्ष्य
(हि.) की ओर हो । भोली, शान्त, सुशीला ।
सीप = का० कु०, ४३ । ल०, ३५ ।
[सं० पु०] सीपी, समुद्री सीप का सफेद चमकीला
(सं.) आवरण । एक जलजन्तु विशेष ।
सीपी = आं०, २३, ७२ । का०, २२३ । चि०,
[वि०] १८१ ।
(हि.) सीप ।
सीमा = का०, १३१, १३४, १३६, १६५, २०५
[स.० स्त्री०] २१०, २३८ । चि०, ५३ । प्रे०, ७,

(सं.) १६, १७।
हद, सरहद। वह अन्तिम स्थान जहाँ तक कोई काम हो सकता हो या होना उचित हो।

सीमामयी = ल०, ७०।
[वि०] सीमा से युक्त या घिरा हुआ, वह
(सं.) जिसका आदि अन्त मालूम हो।

सीमायें = का०, २३६।
[सं० स्त्री०] (सं.) सीमा का बहुवचन।

सीमाविहीन = ल०, ३ ।
[वि०] (सं.) सीमा रहित, असीम, अनन्त।

सीमित = का०, १३३।
[वि०] वह जो सीमा के अन्दर हो या जिसकी
(सं.) सीमा हो।

सीरी = चि०, १८०।
[वि०] (हि०) शीतल।

सीवन = ल०, ११।
[सं० स्त्री०] सीने का काम। सिलाई का टाँका,
(सं.) दरार, सन्धि।

सीस = का० कु०, ५। चि०, १६०।
[सं०पु०](ब्र.भा.) सिर, शीश।

सीसी = चि०, २३।
[सं० स्त्री०] (हि.) सीत्कार सूचक शब्द। शी-शी।

सु = चि०, १३६, १४०, १४५, १५६।
[अं०] सुन्दरता या श्रेष्ठता का द्योतक।
(हि.) उपसर्ग।

सुन्दर = आ०, २०। क०, ८। का० कु०, १९,
[वि०] ३०, ३४, ३६, ३८, ३६, ४१, ४२,
(सं.) ४३, ५१, ५६। का०, ३०, ४५, ५७,
१०६, १२०, १४८, २६२, २६३,
२६४। चि०, १४, २१, ५६, १६०।
भ्र०, २०, २८। प्रे०, २।
शोभाशाली, छविमान।

सुन्दरी = का० कु०, ३०, ३१, ६७। भ्र०, २६।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुन्दर नारी, ललना।

सुअंगसो = चि०, ७०।
[वि०] (ब्र. भा.) अच्छे अंग के समान।

सुअनोखिये = चि०, २४।
[वि०] (ब्र.भा.) विचित्र अनोखा, विलक्षण।

सुअन्न = चि०, १३६।
[सं०पु०] अच्छा अन्न, वह अन्न जो सत् कर्म में
(सं.) प्रयोग किया

सुकछु = चि०, १६४।
[अव्य०] (ब्र.भा.) कुछ, किंचत्।

सुकर्म = म०, ११।
[सं०पु०] (सं.) अच्छा कर्म, सत्कर्म।

सुकलोल = चि०, २३।
[सं० पु०] (सं.) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा।

सुकहत = चि०, ५१।
[सं० पु०] अच्छा कहता है। अच्छी बात
(ब्र.भा.) बोलता है।

सुकीर्त्ति = चि०, ४८, ६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) अच्छी कीर्ति, सुयश।

सुकुमार = आं, ७१। का०, ४६, ४७, ६०। चि०,
[वि०] ४७, ५६, ७४, १७३। म०, १३।
(सं.) ल०, २३।
कोकल अंगों वाला, सुकोमल।

सुकुमारता = का०, ६३, ६४।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुकोमलता।

सुकुमारि = का०, १२५। चि०, २४।
[वि०] (ब्र.भा.) दे० 'सुकुमारी'।

सुकुमारी = चि०, ५८, १६०। म०, २२।
[वि०] (सं.) सुकोमलांगी। सुन्दर कोमल अंगों वाली।

सुकुमारी-सी = का० कु०, ३४।
[वि०] (सं.) कोमलांगी के समान।

सुकुसुमित = चि०, १५।
[वि०] अच्छी तरह फुला हुआ विकसित।
(सं.) सुन्दर फूलों से युक्त।

सुकृत-फल = का० कु०, १०१।
[सं०पु०] (सं.) उत्तम कर्मों का फल, पुण्य।

सुकेतु = म०, ८।
[सं० पु०](सं.) सुन्दर पताका।
सुकवि = आं०, ८।
[सं० पु०] (सं.) अच्छे कवि।
सुकेश = चि०, ६।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर केश, या बाल।
सुकौन = चि०, १६६।
[सर्व०] (हि.) वह कौन।
सुख = आं०, ११, १२, १३, २७, ४०, ४५, ४६, ५०, ५३, ५५, ५७, ७४, ७५, ७६, ७६। क०, १०, १३, ३०। का० कु०, ७, २२, १८, ३३, ५१, ६३, ६६, ७५, ६७। का०, ६, ७, ८, १६, २८, ३०, ३२, ३५, ४०, ५३, ५४, ८४, ८७, ६०, ६६, ११०, ११२, ११५, ११७, ११६, १२५, १२६, १२६, १३०, १३१, १३३, १३५, १३६, १४७, १४८, १५४, १५८, १७६, २१०, २२१, २२८, २३७, २६६, २६६, २८१, २८२, २८३, २८८, २८६, २६१, २९३। चि०, १, ३, ५, १४, १५, २१, २२, २३, ३२, ३३, ३५, ४६, ४६, ५०, ५१, ५३, ५८, ६१, ६२, ६३, ६४, ७१, ६४, १४३, १४६, १५०, १०४, १७७, १८१, १८५। भ०, ३३, ३६, ४६, ८६, ८८। प्रे०, २, १०, १४, २३। ल०, २५, ४५, ४७, ४८, ७८।
वह अनुकूल और प्रिय अनुभव जिसके सदा होते रहने की कामना हो।
सुख-आकर = चि०, ७१। ल०, ३६।
[वि०] (सं.) सुख का समूह। सुख का घर।
सुखकारी = आं०, ५४। का० कु०, ४७, ४८, [वि०] ६६। प्रे०, १४।
(हि.) सुख उत्पन्न करने वाला।
सुखद = क०, १३। का० कु०, १४, १०४। [वि०] का०, ३५, १८२, २३६, २४१, २४२। (सं.) चि०, ११, ३६, ५८, ५६, ६६, ७०, ७४, १४१, १४६, १५०, १५४, १७१। भ०, ८८। प्रे०, १, १६।
सुख देने वाला, सुखदाई।
सुखद-सुदुकूल = चि०, ५५।
[सं० पु०] (सं.) सुख देने वाला सुन्दर अञ्चल या वस्त्र।
सुखदा = चि०, १५२।
[वि०] (सं.) सुख देने वाला।
सुखदाई = का० कु०, ३४।
[वि०] (हि.) सुख देने वाला, सुखद।
सुखदान = चि०, ३५, १४६।
[सं० पु०] (सं.) सुख का दान।
सुखदायक = का०, २८४।
[वि०] (सं.) सुखद।
सुखदायिनी = चि०, १६४।
[वि०] (सं.) सुख देने वाली।
सुख-दुख = का० कु०, ३१, ७३। का०, ११२, [सं० पु०] १७७, १७६, २३४, २३८, २४१, (सं.) २६५। प्रे०, २३।
प्रसन्नता और कष्ट।
सुखदेनी = चि०, ७१।
[वि०] (सं.) सुख देने वाली।
सुखधाम = आं०, ७१। प्रे०, १४।
[सं० पु०] सं.) सुख का घर।
सुखनिधि = का० कु०, ६४।
[सं० स्त्री०](सं.) सुख का खजाना या कोष।
सुख-परिरम्भ = भ०, ६१।
[सं० पु०] वह आलिङ्गन या स्पर्श जिससे सुख या (सं.) आनन्द प्राप्त हो।
सुखपावत = चि०, ६०।
[क्रि०] (सं.) सुख प्राप्त करता है।
सुखपावहीं = चि०, ७०।
[क्रि०](ब्र. भा.) सुख पाते हैं।
सुख-पुंज = का० कु०, ३।
[सं० पु०] (सं.) सुख का समूह। सर्वाङ्गीण सुख।

सुख-पुलकगात = ल०, २५ ।
[सं० पु०] सुख से पुलकित शरीर । अत्यन्त आनन्द
(सं.) प्राप्ति का सूचक ।

सुखभरी = चि०, १६८ ।
[वि०] (हि.) सुख से भरी हुई ।

सुखमय = का० कु०, १६, ५१, १०५ । का०,
[वि०] १६०, २४१ । चि०, ३१, ५४ । प्रे०,
(सं.) १० । म०, १०, २४ ।
सुख से परिपूर्ण, आनन्दमय ।

सुखमा = का० कु०, १७, ५३ । चि०, १, ४६,
[सं० स्त्री०] ५४, १४० । झ०, ४१, ६५ ।
(सं.) शोभा । सुषमा ।

सुखमा-सी = चि०, ३६, १६२ ।
[वि०] (सं.) सुषमा के समान या रूप ही ।

सुखमूल = का० कु०, १८ । चि०, १४६ ।
[सं० पु०] (सं.) सुख की जड़, जिससे सुख प्राप्त हो ।

सुख-रजनी = ल०, ६० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुखरूपी रजनी ।

सुख-रूप = चि०, ३६ ।
[सं० पु०] (सं.) वह जो सुख का ही रूप हो ।

सुखलहर = ल०, ४३ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) आनन्द की हिलोर ।

सुखलेख = का० कु०, ३० ।
[सं० पु०] वह लेख जिसे लिखने या पढ़ने में
(हि.) सुख या आनन्द प्राप्त हो ।

सुख-विराम = का०, १६२ ।
[सं० पु०] (हि.) विश्राम का सुख या आनन्द ।

सुख-विश्वास = का०, ८ ।
[सं० पु०] आनन्दमय विश्वास । सुख प्राप्त करने
(सं.) का विश्वास ।

सुखशशि = का० कु०, ६१ ।
[सं० पु०] (सं.) सुखरूपी चन्द्रमा ।

सुख-संचार = का०, ६, ७० ।
[सं० पु०] सुख का संचरित होना या वह जहाँ
(सं.) सुख का संचार या प्राप्ति हो ।

सुख-समीर = का०, १३४ ।
[सं० पु०] (सं०) सुखरूपी समीर ।

सुखसमृद्धि = चि०, ५० ।
[सं०स्त्री०] सं.) सुख-वैभव, सुख-संपत्ति ।

सुख-सरवर = प्रे०, १० ।
[सं०पु०] (हि०) सुख रूपी तालाब ।

सुख-साज = चि०, ५४, १७०, १८६ ।
[सं०पु०] (हि०) सुख की सामग्री ।

सुख-साधन = का०, १६०, १६१, १६२, १७२,
[सं० पु०] १८२, १८४, १६१, १६६ ।
(सं.) सुख का साधन या उपाय । सुकर्म का द्योतक ।

सुख-सानी = चि०, ५६ ।
[वि०] (ब्र.भा.) सुख में सनी हुई, सुखमय ।

सुख सीमा = का०, १३६ ।
[सं०स्त्री०] सुख की सीमा या सीमांत सुख,
(सं.) अर्थात् आनन्द, सांसारिक सुख का सूचक शब्द ।

सुखलाकर = झ०, ५१ ।
[क्रि०] 'सुखलाना' क्रिया का पूर्व-कालिक
(हि.) रूप ।

सुख-सूत्र = का० कु०, ३१ ।
[सं०पु०] सुख प्राप्त करने का सूत्र या कारण या
(सं.) उपाय, सुख का आधार । सुख रूपी डोरा ।

सुख से = प्रे० १२ ।
[सं०पु०] (हि.) सुख पूर्वक ।

सुख सों = चि०, ७४, १०६ ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) सुख पूर्वक ।

सुख-सौरभ-तरंग=का०, १५३ ।
[सं० पु०] सुख रूपी सौरभ की लहर । आनन्दमय
(सं.) जीवन ।

सुख-स्वप्न = का०, २६, ३७, १७० ।
[सं० पु०] (सं.) आनन्दमय स्वप्न, सुख का सपना ।

सुखाई = चि०, १८१ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सुखाकर, (पूर्वकालिक क्रिया) ।

सुखाय = वि०, ३४।
क्रि०] (ब्र.भा.) सुखाकर। (पूर्वकालिक क्रिया)।
सुखी = क०, २६। का० कु०, ६६। का०, १३२,
[वि०] १३५, १५४, १५७, १७६, १६३,
(हि.) २२८। वि०, १८२। प्रे०, २३।
वह जिसे सुख या आनन्द प्राप्त हो।
सुखों = आं०, ४८। का० कु०, ३३। का०,
[सं० पु०] १३६, १४८।
(हि.) सुख का बहुवचन रूप।
सुख्याति = वि०, ४८, ६७।
[सं० स्त्री०] सं.) सुप्रसिद्धि।
सुगंध = का० कु०, ११६। का०, १६२। वि०,
[सं० स्त्री०] ३८, ५६, १३६, १५३, १६५, १६६,
(सं.) १८०। म०, १६। ल०, ६०, ७६।
सुन्दर गंध, वह गंध जो आनंद देती हो।
सुगंधित = का० कु०, ३७। म०, ३।
[वि०] (हि.) सुगंध से पूर्ण, जिसमें सुगंध हो।
सुगांठिहि बाँधो = वि०, ७४।
[क्रि०] गांठ को अच्छी तरह बांध लो।
(ब्र. भा.) भलीभांति चेत लो।
सुगौरव = का०, ६।
[सं० पु०] (सं.) अच्छी प्रतिष्ठा।
सुघड़ = वि०, १६२।
[वि०] (ब्र. भा.) सुन्दर, शोभाशाली।
सुघर = का० कु०, १३। वि०, ७०, १००,
[वि०] १४७, १५८।
(हि.) दे० 'सुघड़'
सुघराई = का०, १०५। भ०, १६। ल०, ४३।
[सं० स्त्री०] हि.) सुन्दरता, सुघरता।
सुचारु = वि०, २३।
[वि०] (सं) अच्छी तरह सुन्दर ढंग से।
सुचि = वि०, २४, ४७, ५५, ६०, ७०,
[सं०स्त्री०] १४१।
(ब्र भा.) पवित्र, निर्मल।
सुचिचन्द-वदन=वि०, ६१।
[सं०पु०] (ब्र.भा. निर्मल चन्द्रमा के समान मुख।
सुचित्त = वि०, १५१।
[सं० पु०] सुव्यवस्थित चित्त या मन। चिन्ता
(सं.) रहित मन। वह चित्त या मन जिसमें विकार न हो।
सुचिरेण = वि०, १३३।
[अव्य०] (सं.) बहुत काल तक।
सुचूर = वि०, २३।
[स०पु०] ब्र. भा.) सुन्दर चूर्ण।
सुचेली = वि०, ६५।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.) सुन्दर शिष्या या सुन्दर दासी।
सुचोखी = वि०, ४६।
[वि०](ब्र.भा.) भव्य।
सुछन्द = वि०, ५१।
[वि०](ब्र. भा.) स्वच्छन्द। अच्छी कविता।
सुछवि = आं०, २०।
[सं०स्त्री०](सं.) सुन्दर छवि, कान्ति।
सुछाजत = वि०, २२।
[क्रि०] ब्र.भा) अच्छी तरह शोभित होती है। सुशोभित है।
सुछाया = वि०, ६६; १४१, १४६।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.)सुखद छाया।
सुजग = वि०, १ ७।
[सं०पु०](ब्र.भा.) सुन्दर संसार।
सुजनता = वि०, २२।
[सं०स्त्री०](ब्र भा.)सज्जनता।
सुज्यों = वि०, १६२।
[क्रि०वि०](ब्र.भा.) सजाया हुआ या सजाया गया।
सुढर = का०, ३०। भ०, २२, ७९।
[वि०] (हि.) सुन्दर ढली हुई।
सुत = क०, १०, १८, २६, ३०। का०
[सं० पु०] २८४। वि०, २२, ४१, ६३, ७४
(हि.) पुत्र, लड़का, बेटा।
सुतार = वि०, १४१, २५२।
[क्रि०वि०](ब्र.भा.) सुविधा। सुअवसर।
सुतीछन = वि०, १६४।
[वि०](ब्र.भा.) अत्यन्त तीव्र, अति तीक्ष्ण।

सुदामा-सा = का० कु०, ६४।
[वि०] (सं.) सुदामा के समान। अत्यन्त गरीब।
सुदिन = भ्रू०, २८।
[सं०पु०] (हि.) शुभ दिन।
सुदीजे = चि०, १४८।
[क्रि०] (सं.) भली भाँति दीजिए।
सुदूर = का०, १७०, २१६। चि०, १६८।
[अव्य०] (सं.) बहुत दूर।
सुदृढ़ = का०, ८६।
[वि०] (सं.) अच्छी तरह मजबूत।
सुधरैं = चि०, १०७।
[क्रि०अ०] (ब्र. भा.) सुधर जाना या ठीक रास्ते पर आ जाना।
सुधा = आं०, ४३। का० कु०, १७, ७२।
[सं० स्त्री०] (सं.) का०, ४७, ७८, ८८ १४३, १५०, १५६, २६१। चि०, १, ८, २१, २५, ७०, ७१, १६४, १७१, १८१, १८६। भ्रू०, २३, ४१, ५३, ५५, ७७। प्रे०, ४। ल०, ७६। अमृत, जल, दूध, पृथ्वी।
सुधाकर = चि०, २४, ७१। भ्रू०, ३८।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा।
सुधारि = चि०, १५०।
[क्रि०स०] (ब्र. भा.) 'सुधारना' क्रिया का पूर्वकालिक रूप।
सुधाधारन = चि०, १७७।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) सुधा की धाराएँ। अमृत की धाराएँ।
सुधाकण = का० कु०, ४२।
[सं० पु०] (सं.) सुधा बिन्दु।
सुधा-कलश = का० कु०, ५६।
[सं० पु०] (सं.) अमृत घट।
सुधा-झरी-सी = चि०, १४०।
[वि०] (हि.) सुधा के झरने के समान।
सुधा नीर = का० कु०, ३।
[सं० पु०] (सं.) जल रूपी अमृत।
सुधानिधि = प्रे०, २२।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुधा सागर या सुधा का कोष। चन्द्रमा का सूचक शब्द।
सुधामन्दाकिनी = का० कु०, ३१।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुधा बरसाने वाली आकाश गंगा। सुधा रूपी गंगा।
सुधामय = का०, ८७। का० कु०, ७६। का०, १६१।
[वि०] (सं.) सुधा से युक्त या परिपूर्ण।
सुधार = प्रे०, १२। चि०, ४२, १५६।
[सं० पु०] (सं.) सुधारने की क्रिया या भाव, संवार।
सुधारत = चि०, ६०, १६५, १६६, २८७।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सुधार करता है, दोष को दूर करता है। अपनी गलतियां दूर करता है।
सुधारना = का० कु०, १००।
[क्रि०] (सं.) दोष या त्रुटि दूर करना।
सुधारस = चि०, १५८, १७५।
[सं० पु०] (सं.) अमृत रस।
सुधारी = चि०, १०१, १०६।
[क्रि०] (हि.) सुधार किया। परिवर्तन किया।
सुधारे = चि०, ५०, १७६।
[क्रि०] (हि.) संशोधन किये। ठीक किये।
सुधा-सागर = प्रे०, २५।
[सं० पु०] (हि.) सुधा का समुद्र।
सुधासिंचन = भ्रू०, ६१।
[सं० पु०] (सं.) अमृत-सिंचन।
सुधा-सिंधु = का०, २०७।
[सं० पु०] (सं.) अमृत का समुद्र।
सुधा-स्रोत = भ्रू०, ४६।
[सं० पु०] (सं.) अमृत का सोता या प्रवाह।
सुधि = चि०, ३५, १७२, १७४। प्रे०, २।
[सं० स्त्री०] (हि.) याद, स्मरण। खबर लेना।
सुधीरज = चि०, ३५।
[सं० पु०] (हि.) प्रबल धैर्य।
सुन = का० कु०, ६, १६। का०, ६०, १७८,

[पूर्व० क्रि०] २०१ । चि०, १४७ । प्रे०, १३ ।
(हि.) ल०, ७१ ।
सुनकर ।

सुनकर = का० कु०, ४८ ।
[क्रि०] (हि.) सुनना क्रिया का पूर्वकालिक रूप ।

सुनत = चि०, ५१, १७२ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सुनता है ।

सुनती = ल०, ६५ ।
[क्रि०] (हि.) सुनती है ।

सुनती-सी = का०, १४४ ।
[क्रि० वि०] (हि.) सुनने के सदृश्य, श्रवण करती सी ।

सुनते-सुनते = का० कु०, ४६ । प्रे०, १८ ।
[अव्य] (हि.) श्रवण करते-करते ।

सुनना = आं०, १३, १४, १५, ७८ । क०,
[क्रि०] ३१ । का०, १०, ५७, ७०, ८५,
(हि.) ९६, १५४, १७३, १७७, १८४,
१९३, २११, २३३, २४४, २४८,
२७५, २८१ । चि०, ६०, ६९, १४३,
१७६, १८६, १८७ । झ०, ४३ ।
प्रे०, ४, १३ । म०, १० । ल०, १०,
११ ।
कानों से शब्द या कही हुई बात का ज्ञान प्राप्त करना । किसी बात या प्रार्थना पर ध्यान देना ।

सुन पड़ना = म०, १ ।
[क्रि०] (हि.) सुनाई पड़ना ।

सुनले = का०, १५४ ।
[क्रि०] (हि.) सुनने की आज्ञा देना ।

सुनलो = क०, ३१ ।
[क्रि०] (हि.) सुनने के लिए आज्ञा देना ।

सुनहला = आं०, ५४ । का०, २३, ३८, १६८,
[वि०] २२०, २७३ । झ०, २८ ।
(हि.) स्वर्णिम, सोने के रंग का ।

सुनहु = चि०, ५० ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सुनो ।

सुना = का० कु०, ४७ ।
[क्रि०] (हि.) 'सुनना' क्रिया का भूतकालिक रूप ।

सुनाजा रे = ल०, २८, २९ ।
[क्रि०] (हि.) सुना । सुना जाओ ।

सुनाना = का० कु०, ७९ । का०, ३७, ४५, ७६,
[क्रि०] ८५, १२७, २६७, २७८ । चि०, ११,
(हि.) ६०, ६१, १७८, १८६ । झ०, ३५ ।
प्रे०, ४, ५, १३, २४ । म०, ११, १२ ।
ल०, १२, १५, ४७, ७३, ७७ ।
कोई बात किसी को सुनने के लिये कहना ।

सुनि = चि०, ४१, ४६, ५०, ५२, ६७, ७२,
[क्रि०] ७३, ९३, १४७, १४८ ।
(हि.) सुनकर ।

सुनिये = क०, २२ । चि०, ५७, ७१ ।
[क्रि०] (हि.) सुनने के लिए निवेदन करना ।

सुनि सकत = चि०, ५१ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सुन सकता है ।

सुनिहित = का०, ८१, ११७ ।
[वि०] (हि) भलीभाँति समाया हुआ ।

सुनि है = चि०, ६४ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सुनेंगे ।

सुनी = क०, २२ । चि०, १८ ।
[क्रि०] (हि.) सुनना क्रिया का भूत कालिक रूप ।

सुनीति = चि०, १५ ।
[सं० पु०] (हि.) अच्छी या सुन्दर नीति ।

सुनील = चि०, २३ ।
[वि०] (सं.) जिसका वर्ण बहुत नीला हो । कृष्ण ।

सुने = चि०, ३, ५ । ल०, १३ ।
[क्रि०] (हि.) सुनना क्रिया का भूतकालिक रूप ।

सुनै = चि०, ४७, ६१, १६७ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सुनना क्रिया का भूतकालिक रूप ।

सुनो = क०, १५ । का० कु०, ८१, ८२ ।
[क्रि०] (हि.) का०, १९९ । चि०, १८६, १८७ ।
सुनने के लिये आज्ञा देना ।

सुपद्मिनी = चि० ९ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुन्दर कमलिनी । दे० 'पद्मिनी' ।

सुपागति = चि०, १५१ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भली भाँति परिपक्व करती है ।

सुपाठ = का० कु०, ३६ ।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर सबक ।

सुपाणिपल्लव = का० कु०, १६ ।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर हाथ रूपी पल्लव ।

सुपेखे = चि०, १०७ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भलीभाँति देखें ।

सुप्रभात = का० कु०, ११३ । चि०, ४६ । झ०, २१ ।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर प्रभात ।

सुप्रसन्न = चि०, १५४ ।
[वि०] (सं.) अत्यधिक प्रसन्न ।

सुप्रेम-रस = का०. कु०, ७८ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम जनित आनन्द । प्रेम का आनन्द ।

सुप्राङ्गण = का० कु०, ६२ ।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर आँगन ।

सुप्त = आं०, ११, १३ । का०, ११७ ।
[वि०] (सं.) सोया हुआ । अक्रियाशील । नीन्दामग्न ।

सुप्ति = झ०, ३५ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सोना । शयन ।

सुफल = चि०, ३३ ।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर फल या परिणाम ।

सुबरन = चि०, १७६ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) स्वर्ण, सुन्दर रङ्ग ।

सुबरसत = चि०, २६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भलीभांति बरसाती है ।

सुबाजहि = चि०, ४७ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) मधुर ध्वनि होती है ।

सुबाल = चि०, २५, १४५ ।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर बालक ।

सुबीर = चि०, ४२ ।
[सं०] (हि.) सुदृढ़, वीर ।

सुभग = चि०, २२, ५५, ६६ ।
[वि०] (सं.) सुन्दर, ऐश्वर्य युक्त ।

सुभट = चि०, ५३ ।
[वि०] (सं.) वीर, साहसी, प्रचण्ड वीर ।

सुभद्रा = का० कु०, ११२ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) श्रीकृष्ण की बहन तथा अर्जुन की पत्नी का नाम । दुर्गा का एक रूप । एक नदी ।

सुभाव = चि०, ४६, ५६, १७३ ।
(सं० पु०](ब्र.भा.) स्वभाव, प्रकृति ।

सुभावति = चि०, १४० ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) अच्छी लगती है ।

सुभीता = का०, १६० ।
[सं०पु०] (सं.) सुगम, सहूलियत ।

सुभ्रातृस्नेह = का०. कु०, १०३ ।
[सं०पु०] (सं.) भाई का सुन्दर स्नेह ।

सुमंगल-मूल = का० कु०, ६३ ।
[वि०] (सं.) जहाँ सुख और कल्याण की जड़ सुमंगलों का उत्पादक ।

सुमति = चि०, ५०, १०७ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) सुबुद्धि । अच्छे विचार । अच्छी राय ।

सुमधुर = चि०, ६० ।
[वि] (सं.) अत्यन्त मधुर । मन्द ।

सुमन = आं०, १५, ४५, ७३ । का०, कु०, ६३ । का०, ५०, ५७, ८८, ९६, १३३, १८२, २६३, २६४ । २८४, २८५, २६२, २६३ । चि०, ४, १४, २४, २६, ५५, ६६, ७३, ६१, १४३, १५२, १५३, १६७, १७३, १७६ । झ०, २२, ३६, ५४, । ल०, ३, ४३ ।
[सं० पु०] (सं.) पुष्प । सुन्दर मन । निश्छल भाव ।

सुमन-मरन्द = ल०, ७६ ।
[सं०,पु०] (सं) पुष्प-पराग, पुष्प-रज, पुष्प-धूल ।

सुमन-रंग = ल०, ४६ ।
[सं० पु०] (सं.) पुष्प का रंग ।

सुमनावली = चि०, १५१ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) पुष्पों की पंक्तियां ।

सुमनोहर = चि०, ७०, १४३ ।
[वि०] (सं.) अतिमनोरम । मन को आकर्षित करने वाला, अत्यन्त सुंदर ।

सुमन-सा = का०, १०१।
[वि०] (हि.) पुष्प के समान।
सुमन-सुरभि = का० कु०, १२४।
[सं स्त्री०] (सं.) पुष्प की सुगन्धि।
सुमन-स्पर्श = का० कु०, ६७।
[वि०] (सं.) फूल सा कोमल स्पर्श।
सुमनों = का०, १४६, २४५। ल०, १२, ४३।
[सं० पु०] (सं.) पुष्पों। फूलों।
सुमल्ल = चि०, ५३।
[सं०पु०] (सं.) सुंदर पहलवान।
सुमहोत्पल = चि०, १४६।
[सं०पु०] (सं.) सुंदर महत्तम कमल।
सुमुखि = चि०, २५।
[सं०स्त्री०] (सं.) सुन्दर मुखवाली (सुन्दरी)।
सुमूर = चि०, ४६।
[सं०पु] (ब्र.मा.) सुन्दर मूल।
सुमेहदी = चि०, १६८।
[सं०स्त्री०] (हि.) एक वनस्पति जो पीस कर हाथ-पैर में लगाई जाती है। स्त्रियों के शृंगार का एक विशिष्ट उपकरण।
सुमोद = चि०, १०३।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर आनन्द।
सुयंत्र-सा = का० कु०, ११६।
[सं० पु०] (हि.) सुदृढ़ यन्त्र के समान।
सुयज्ञ = चि०, १४०।
[सं० स्त्री०] (सं.) कल्याणकारी यज्ञ।
सुयशलता = भ्रं०, २४।
[सं० पु०] (हि.) सुकीर्तिरूपी लतिका।
सुयामिनी = चि०, ४६।
[सं०स्त्री०] (सं.) चांदनी रात। सुन्दर रात।
सुयुद्धभूमि = चि०, ६३।
[सं०स्त्री०] हि.) सुन्दर संग्राम स्थल। रणक्षेत्र।
सुयोधन = का० कु०, ११४।
[सं० पु०] (सं.) दुर्योधन।
सुरंग = चि०, ५६। ल०, ४६।
[वि०] (सं.) सुन्दर रंग वाला। सुन्दर, रसपूर्ण, सेंध, बारूद आदि की सहायता से किला अथवा दीवार उड़ाने के लिए उसके पीछे खोदकर बनाया हुआ गहरा और लम्बा गड्ढा।
सुरंजित = चि०, १०१।
[वि०] (सं.) सौंदर्यमय।
सुर = का०, ३१। चि०, २६, १००। भ्रं०, ४५।
[सं०पु०] (सं.) देवता, स्वर्ग में रहने वाले प्राणी।
सुरक्त = चि०, १००।
[वि०] (सं.) सुन्दर रक्त।
सुरधनु = का०, १७६, २५८।
[सं० पु०] (सं.) इन्द्रधनुष।
सुरधनु-सा = का०, २३५।
[वि० पु०] (हि.) इन्द्र धनुष के समान।
सुरनारि = चि०, १४६।
[सं० स्त्री०] (सं.) देवताओं की स्त्रियां।
सुरनारी = चि०, ५६।
[सं० स्त्री०] (सं.) देवताओं की स्त्रियाँ।
सुरबालाओं = का०, ६, ७४।
[सं० स्त्री०] (सं.) देवताओं की तरुणियां।
सुरबालायें = का०, १३।
[सं० स्त्री०] (सं.) देवताओं की तरुणियां।
सुरभि = का०, ६३, ८६, १५३। चि०, २२, ३९। भ्रं०, ४६, म०, १६।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुगन्धि (सुरभ)। गाय।
सुरभिचूर्ण = का०, १४६।
[सं० पु०] (सं.) सुगंधि धूलि।
सुरभित = का० कु०, ५१, ७२। का०, ८, १०, १३, ६७, १८२, २२१। चि०, २४, ५५, १५८।
[वि०] (सं.) सुगन्ध से सना हुआ। सुगन्धित। महँकता हुआ।
सुरभिपूर्ण = का० कु०, ३४, ६७। प्रे०, २।
[वि०] (सं.) सुगन्ध से भरा हुआ। सुगन्ध पूर्ण।
सुरभिमय = आं०, ६२। का०, ११।

[वि०] (हि.) सुवास से भरा आ।

सुरभि-संचय-कोश-सा = का० कु०, ६७।
[वि०] (हि.) सुगन्ध संचित करने वाले खजाने के सदृश। पराग-कोष के समान।

सुरभि-सहित = का० कु०, ६०।
[वि०] (सं.) सुवाससयुक्त।

सुरभी = का० कु०, ५२। चि०, १०३।
[सं० स्त्री०](हि.) गाय, सुगन्ध।

सुरम्य = चि०, १३६। ल०, ७०।
[वि०] (सं.) सुन्दर, रमणीय।

सुर-वर्ग = का०, १६१।
[वि०] (सं.) देवताओं का समूह।

सुरस = का० कु०, ७३। चि०, १५५।
[सं०पु०] (सं.) सुन्दर रस।

सुरसरि = चि०, ७१।
[सं० स्त्री०] (सं.) गंगा।

सुरसरि-तीर = चि०, ६६।
[सं०पु०] (सं.) गंगा का तट।

सुरसरी = चि०, ७३। झ०, ३४, ७६।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.) गंगा।

सुरसरी हूं को मन्द-प्रवाह = चि०, ६६।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) गंगा का भी मन्द प्रवाह।

सुरसुन्दरी-वृन्द= का० कु०, १२४।
[वि०] (सं.) देवताओं की स्त्रियों का समूह।

सुर-श्मशान = का० ३।
[सं० पु०] (सं.) देवताओं का मरघट।

सुरा = का०, ११।
[सं० स्त्री०] (सं.) शराब। मदिरा।

सुराका = चि०, १४०।
[सं० स्त्री०](सं.) चादनी युक्त रात। सुन्दर रात्रि।

सुराग = का०, १६८।
[सं० पु०] (सं) सुन्दर राग।

सुराजत = चि०, २२।
[वि०] (ब्र. भा.) शोभति।

सुराज्य = चि०, ३३, ४५, ४८।
[सं० पु०] (सं.) सुन्दर राज्य।

सुरीति = का० कु०, ११३।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुचारु रीति, अच्छा व्यवहार।

सुरुचि = का०, ८३। चि०, ५५, ५६।
[सं० स्त्री०] अच्छी इच्छा, उत्तम रुचि।

सुरुचिपूर्ण = का०, १४६।
[वि०] (सं.) सुरुचि से युक्त।

सुरूप = चि०, २२।
[सं० पु०] (सं.) वह रूप जो क्षण प्रतिक्षण नवीनता का अनुभव कराये। सुंदर।

सुलखात = चि०, १५१।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भली भाँति दिखाई देता है।

सुलखि = चि०, १६४।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा.) भलीभाँति देखकर।

सुलच्छ = चि०, ४१।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) सुंदर उद्देश्य।

सुलझना = का०, ४५, ४६, ६६, ७४, ७७, १७७।
[क्रि०] (हि.) उलझना का विपरीतार्थक भाव।

सुलझी = आं०, ६७।
[वि०] (हि.) स्पष्ट, सुलझी हुई।

सुलतान = ल०, ६८, ६६, ७१, ७३, ७७।
[सं० पु०] (अ.) बादशाह, नवाब।

सुलभ = का०, ८६। झ०, ५३। ल०, १०।
[वि०] (सं.) जो सरलता से प्राप्त हो, सुगम।

सुललित = चि०, ४५।
[वि०] (सं.) बहुत सुंदर।

सुलागति = चि०, १५१। प्रे०, १।
[क्रि०] (ब्र. भा.) अच्छी लगती है।

सुलोक = चि०, १४०।
[सं० पु०] (सं.) उत्तमोत्तम, लोक, सुखमय संसार।

सुवक्ष = का० कु०, १२०।
[सं० पु०] (सं.) विशाल वक्षस्थल।

सुवर्ण-सा = ल०, ३८।
[वि०] (हि.) सुवर्ण के सदृश कांतिमान।

सुवारिद-वृन्द = का० कु०, ५३ ।
[वि०] (सं.) सजल मेघमाला ।
सुवासित = भ्रं०, ७६ ।
[वि०] (सं.) सुगंधित ।
सुविकास = का० कु०, ७२ ।
[सं० पु०] समुन्नति, भलीभाँति विकसित होने का
(सं.) भाव ।
सुविचार = ल०, १२ ।
[सं० पु०] (सं.) उत्तम विचार ।
सुविपंची = चि०, ४७ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सुन्दर सुमधुर वादिनी, वीणा ।
सुविभात = चि०, १४२ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) भला लगता है ।
सुविश्व = चि०, १३६ ।
[सं० पु०] (सं.) सुखमय विश्व ।
सुविस्तृत = म०, १६ ।
[वि०] (सं.) विशाल, हर ओर फैला हुआ ।
सुव्याप्त = चि०, १३६ ।
[वि०] (सं.) भलीभाँति प्रसारित ।
सुव्रता = क०, २८, २६, ३० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) कठिन व्रत का पालन करने वाली ।
सुशस्त्र = चि०, ४२ ।
[सं० पु०) (सं.) तीखी धार वाले शस्त्र ।
सुशीतलकारी = भ्रं०, ३० ।
[वि०] (सं.) सुख शांति प्रदान करने वाला ।
सुशील = क०, २३ ।
[वि०] (सं.) शीलवान ।
सुशोभित = का०, ४६ ।
[वि०] (सं.) भली-भांति शोभा प्राप्त ।
सुषमा = आं०, २ । का० कु०, ३६, ५१, ६७ ।
[सं०स्त्री०] का०, ६६, ८५, ८७, ६२, १६८,
(सं.) २३५, २६३ । चि०, १६८ । भ्रं०,
६५ । प्रे०, २५ ।
सौंदर्य ।
सुषुप्ति = का०, २०५ ।
[सं० स्त्री०](सं.) सुनिद्रा ।
ससंगौं = चि०, १०७ ।
[सं०पु०] मनोनुकूल संग, सत्संग । सुखदायक
(ब्र.भा.) संग ।
सुसंवाद = का०, १६७ ।
[सं०पु०](सं.) मनोहारी कथोपकथन ।
सुसोहति = चि०, ५० ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) सुशोभित होती है ।
सुस्वादु = का० कु०, १०१, १०५ । चि०. १०४,
[वि०] १५४ ।
(सं.) स्वादिष्ट । रसना को तृप्त करने वाला
भोजन ।
सुस्मित = आं०, ६५ ।
[वि०.] (सं.) सुहास्य ।
सुस्मित-सा = का०, १६८ ।
[वि०] (हि.) सुहास्य-सा । विशेष । स्निग्धता का भाव ।
सुहाग = का०, ६७, १००, २२६ । चि०, २ ।
[सं० पु०] भ्रं०, ३१ । ल०, ११ ।
(सं.) सधवा या सौभाग्यवती रहने की दशा ।
सुहागिनी = आँ०, ६१ । का०, १५६ ।
[वि०] (सं.) सौभाग्यवती । सधवा ।
सुहात = चि०, ४७, ६८ ।
[क्रि०](ब्र.भा.) अच्छा लगता है ।
सुहाती = का० कु०, ५, ४५ । का०, २४० ।
[क्रि०] (हि.) अच्छी लगती है ।
सुहाया = भ्रं०, ६६ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) सुन्दर लगा । शोभित हुआ ।
सुहावत = चि०, ५६ ।
[क्रि०] (ब्र भा.) अच्छा लगता । शोभित होता है ।
सुहावन = चि०, ११ ।
[वि०] (ब्र.भा.) मनोहर ।
सुहावनी = चि०, ५३ ।
[वि०] (ब्र.भा) मनोहारिणी ।
सुहावने = चि०, ५१ ।
[वि०] (ब्र.भा.) दे० सुहावना ।
सुहावै = चि०, १० ।

[क्रि०] (ब्र.भा.) अच्छा लगे। अच्छा लगता है, शोभित होता है।

सुहास = का०, २४०। भ०, ६४।
[सं० पु०](ब्र.भा.)चित्त चोर हँसी।

सुहिन्दी = चि०, १६४।
[सं०स्त्री०](ब्र.भा.)सुन्दर हिन्दी। पवित्र हिन्दू।

सुहिया = चि०, १४।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) सरल-हृदया, सरल हृदया वाली।

सुहीते = चि०, ३८।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) सरल हृदय से।

सुहृद = का० कु०, ३०, ८४।
[वि०] (सं.) मित्र। सुन्दर हृदय वाला, हितैषी।

सूआ = का०, १११।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) सुग्गा।

सूक्ति = का०, १४०।
[सं०स्त्री०](सं.) ज्ञान वर्द्धक उक्तियाँ।

सूक्तम = चि०, १४३।
[वि०] (ब्र.भा.) संक्षिप्त, महीन, बारीक, अति लघु।

सूक्ष्म = चि०, १५३।
[वि०] (सं) दे० सूक्ष्म।

सूख = भ०, ३१।
[क्रि०] (सं.) 'सूखना' क्रिया का मूल रूप।

सूखत = चि०, १६३।
[क्रि०] (ब्र.भा.) शुष्क होता है।

सूखते = का०, १३४।
[वि०] (ब्र.भा.) शुष्क होते हुए।

सूखना = भ०, ३१। प्रे०, २।
[क्रि०] (हि.) शुष्क होना।

सूखा = आं०, २८, ७८, ७६। क०, १६, १७।
[वि०] का०, ४, ११०, १३२, १६०, १६४, २८१। भ०, ६४। ल०, ६, ३७, ४०, ४२, ४७, ४६।
(हि.) शुष्क हुआ। नीरस। निष्ठुर।

सूखी-सी = आं०, १६।
[वि०] हि.) मुरझाई-सी।

सूखे-से = का०, २७०।
[वि०] (हि.) सूखे हुए से। शुष्क के समान।

सूचक = का०, १७।
[वि०] (सं.) सूचना देनेवाला।

सूझना = का० कु०, ८।
[क्रि०] (हि.) दिखाई देना।

सूझी = चि०, ५७।
[क्रि०] (हि.) दिखाई दी।

सूत = चि०, १४१।
[सं०पु०] (सं.) सारथी। महर्षि वेदोव्यास ऋषि के पुत्र का नाम। धागा।

सूत्र = का० कु०, ३३, ७५, ८६, १०६, १५८। भ०, २६।
[सं०पु०] (सं.) जनेऊ। यज्ञोपवीत। धागा। कटि-भूषण। 'गागर में सागर' जैसा भाव व्यक्त करने वाला शब्द समूह।

सूत्रधार = का०, २८६।
[सं० पु०] (स.) नाट्यशाला का व्यवस्थापक। प्रमुख नट। एक वर्ण शंकर जाति।

सूत्रधारिणी = का०, ५।
[वि०] (सं.) नाट्यशाला का प्रमुख व्यवस्थापिका।

सूध = चि०, २६, ६१।
[वि०] (ब्र.भा) सरल। सीधे।

सूधी = चि०, ५६, ५८।
[वि०] (ब्र.भा.) सरल, सीधी, वक्रता रहित।

सूधो = चि०, ५६, ५६, ६३, ७४।
[वि०] (ब्र.भा.) निष्कपट। निश्छल।

सूना = आं०, ६६। का०, ३६, ६७, १४४, १५१, १६०, २१६। भ०, ८२।
[वि०] (हि.) प्रे०, १४। ल०, ४४। एकान्त। नीरवता का भाव।

सूना-सपना = का०, ३४।
[सं० पु०] (हि.) सूखा स्वप्न।

सूनी = का०, १७६।
[वि०] (हि.) रिक्त।

सूनी-साँस = का०, १७६।
[सं०स्त्री०](सं.) शिथिल।

सूने = आं०, ४०, ५१, ७६। का०, ६२, १६०, १७६, २०६। ल०, ३८, ४४, ४८।
[वि०] (हि.) एकान्त।

सूनेपन = ल०, ६, ३६ ।
[सं० पु०] (हि.) नीरवता ।

सूबा = का० कु०, ११६, १२१ ।
[सं० पु०](फा.) प्रान्त, प्रदेश ।

सूर = चि०, १६४ ।
[सं० पु०](हि.) सूर्य । अंधा ।

सूर्य-ताप = का० कु०, १०४ ।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य की गरमी ।

सूर्य मल्ल = का० कु०, १०८, १०६ ।
[सं०पु०] (सं) एक हिन्दू योधा ।

सूर्य-से = का० कु०, ११३ ।
[वि०](सं.) सूर्य के समान ।

सूर्य्य = चि०, ७२ । प्रे०, १४ ।
[सं०पु०](सं०) भानु । दिनकर । दिवाकर ।

सूर्य्य-केतू = चि०, ६६ ।
[सं० पु०] (सं.) सूर्य की पताका ।

सृजन = का०, ८८, २२५, २५३, २६३ । चि०, १४६ । ल०, १४, २६ ।
[सं० पु०]
(सं.) सृष्टि या निर्माण करने की क्रिया । पालन । सर्जन ।

सृष्टि = क०, २५ । का० कु०, ८७ । का०, ५, ८, ६, १०, १७, १६, २३, ५६, ५८, ६६, ७०, ७१, ७३, ११६, १२२, १३०, १७०, १८२, १८५, १८६, १६०, १६१, २३६, २८८ । भ्रू०, ५७ ।
[सं०स्त्री०]
(सं.) उत्पत्ति । जन्म, निर्माण ।

सृष्टि कुंज का०, १६१ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) सृष्टि रूपी कुञ्ज ।

सेज = क०, १३ । का० कु०, ६३ का०, ८८, २७५ । चि०, ४६ । भ्रू०, ७० । प्रे०, २ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) शय्या । आराम से सोने योग्य बिस्तर ।

सेतु = का०, १४७ ।
[सं०पु०] (सं.) पुल । बाँध ।

सेनप = का० कु०, ११६ ।
[सं० पु०] (सं.) सेनापति ।

सेना = चि०, ४५, ६४, ६५। ६८ ।
[सं० पु०] (हि.) फौज, सिपाहियों का समुदाय ।

सेनापति = चि०, ६३, ६५, ६७ । म०, १४
[सं० पु०] (हि.) सेनानायक ।

सेवक = का० कु०, ८७ ।
[वि०] सेवा करने वाला । जिसमें सेवा
(सं.) भाव हो ।

सेवत = चि०, ७१ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) सेवा करता है ।

सेवा = क०, २१ । का०, २८२, २८६ । चि
[सं० स्त्री०] ६४ । भ्रू०, ६५ । म०, २४ ।
(हि.) निष्काम । परिचर्या ।

सेवाम् = चि०, १३४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) सेवा ।

सेस = चि०, ६ ।
[वि०] (हि.) बाकी । बचा हुआ । (सं०) शेषनाग

सैनन = चि०, १७६ ।
[सं० पु०](ब्र.भा.) संकेतों । इशारों ।

सैनप = चि०, ६, ६७, ६८ । म०, १
[सं०पु०] २१ ।
(ब्र. भा.) सेनापति ।

सैनहिं = चि०, ४२ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) इशारे से ।

सैना = चि०, ६५ ।
[सं०स्त्री] (ब्र.भा.) दे० 'सेना' ।

सैनानी = चि०, ७१ ।
[सं० पु०] (हि.) सेनापति ।

सैनिक = का० कु०, १०८ । म०, १, २, ३
[सं० पु०] ४, १२ ।
(सं.) सिपाही ।

सैन्य = का० कु०, ६६, ११४ । चि०, ६३
[सं०पु०] ६४, ७१ । म०, ७, २४ ।
(सं.) दे० 'सेना' ।

सों = चि०, १३६, १४२, १४५, १५१
[अ०] १५२, १५५, १६७, १७३ ।
(ब्र. भा.) से ।

सोई = का०, १६६, २४० । ल०, १६ ।
[सर्व०] (हि.) सो गयी ।

सोऊ = चि०, १७२ । ल०, ३५ ।
[सर्व०] (ब्र. भा.) वह भी । वही ।

सोक = ल०, ४२ ।
[सं०पु०] (सं.) शोक, दुख ।

सोच = क०, १७ । का० कु०, ६८ । ल०, ४२ ।
[सं०पु०] शोक, चिन्ता । (क्रि०) चिन्ता करो ।
(हि.)

सोचकर = का०, ३२ ।
[क्रि०] (हि.) विचार कर ।

सोचती = ल०, ६७ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) विचार करती है ।

सोचना = का०, कु०, ६४ । का०, ६४, ७०, १०६, १६०, १६७, १८३, १८५, १८६, २०७, २२८ ।
[क्रि०] (हि.) विचार करना ।

सोच रही = का०, १४२ ।
[क्रि०] (हि.) विचार कर रही ।

सोचै = चि०, १०६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा) सोचे ।

सोच्यो = चि०, १८४ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) विचार किया ।

सोत = चि०, ६२ ।
[सं०पु०] ब्र. भा) स्रोत सोता, झरना ।
[क्रि०] (हि.) नींद लेना, शयन करना ।

सोनजुही = आं०, ५४ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) स्वर्ण यूथिका । एक प्रकार की पीली जूही ।

सोना = आं०, ३६, ५२, ५३, ६५ । का० कु०, १५, ५६, ६३, ८६, १४६, १५२, का०, २, ३, २४, ३७, ४०, ५५, ६६, ६७, ७०, १०६, १७२, १७६, १८६, २३३, २३५, २६२, २८४, । चि०, १५, ४१ । झ०, ५४ । प्रे०, ५ । ल०, ११, ३१, ४५ ।
[सं० पु०] (हि.) पुष्प विशेष । स्वर्ण ।

सोने की सिकता=का०, १४२ ।
[सं०स्त्री०] सुनहले रजकण । सूर्य की किरणों से
(सं.) प्रतिभाषित सिकता राशि ।

सोपान = का०, २०६ ।
[सं० पु०] (सं.) सीढ़ी ।

सोभा = चि०, ६१ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) शोभा । सौन्दर्य ।

सोम = का०, २४, २५, ७८, १०६, ११६, ११७, १२८, १३४, २८६ ।
[सं० पु०] चंद्रमा । अमृत ।
(सं०)

सोमपात्र = का०, ११६, १३४ ।
[सं० पु०] (सं.) सोमरस पीनेवाला पात्र । चषक ।

सोमरस = का० कु०, ११४ ।
[सं० पु०] सोमलता का रस । एक प्रकार का
(सं.) मादक पेय जिसे वैदिक युग में लोग पीते थे ।

सोमलता = का०, १०६, २७७ ।
[सं० स्त्री०] एक प्रचीन लता जिसके रस का सेवन
(सं०) वैदिक युग में लोग मादक रस के रूप में किया करते थे ।

सोम-वाही = का०, २८६ ।
[वि०] अमृत को वहन करने वाली । सुधामयी ।
(हि.) सुधासिक्त ।

सोया = का०, १६८, १७६, १८०, २३६ ।
[क्रि०] ल०, ३१ ।
(हि.) सो गया । (वि०) प्रसुप्त, निद्रित ।

सोया संदेश = का०, ५१ ।
[सं०पु०] (हि.) अव्यक्त सन्देश । छिपा सन्देश ।

सोयेगी = आं०, २७ ।
[क्रि०](हि.) सोना का भविष्यत् कालिक रूप ।

सोहई = चि०, ४६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) शोभित होता है ।

सोहत = चि०, १, ६३, १५०. १५४, १६० ।
[वि०] (ब्र. भा.) शोभित ।

सोहै = चि०, ११, ६६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) शोभित होता है ।
सौंध = का०, १२ ।
[सं० पु०](ब्र.भा.) महल ।
सौन्दर्य = आं०, ३३, ४३ । का० कु०, ५०, ५१,
[सं० पु०] ७८, ६८ । का०, १०२, १२५, १५१,
(सं०) १८७, २२४ । चि०, १४० । भ्रु०, ३५,
६६ । प्रे०, १८, २४, २५ । ल०, ७६ ।
सुन्दरता । वह शोभा । जिसमें अद्भुत
आकर्षण हो ।
सौन्दर्य-जलधि= का०, १६३ । चि०, १३६, २३६ ।
[सं० पु०] (सं.) सौन्दर्य सागर या अगाध सुन्दरता ।
सौन्दर्य-प्रेम-निधि= प्रे०, २६ ।
[सं०स्त्री०] (सं.) अतिशय सुन्दर प्रेमी ।
सौन्दर्यमयी = का०, ६६ । भ्रु०, ६० । प्रे०, २४ ।
[वि०] ल०, ६६, ७६ ।
(सं.) सुन्दरी ।
सौन्दर्य-सुधा-सागर=प्रे०, २५ ।
[सं० पु०] सौन्दर्य रूपी सुधा का समुद्र । अप्रतिम
(सं०) सौन्दर्य ।
सौंपना = का० कु०, ७६ । भ्रु०, ४४, ८१ ।
[क्रि०] (हि.) समर्पण करना, सुपुर्द करना, सहेजना ।
सौंपि = चि०, ५ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सौंपकर ।
सौंह = चि०, १७८ ।
[सं०पु०](ब्र.भा.) शपथ । सामने ।
सौ = क०, १८, २५, २७ ।
[अव्य०](ब्र.भा.) एक सौ ।
सौजन्य = का० कु०, ३७ ।
[सं० पु०] (सं.) सुजनता, सज्जनता ।
सौदामिनी-सन्धि-सा = का०, १६ ।
[वि०] (हि.) बिजली की कौंध के समान ।
सौ बार = का०, १८३ ।
[अव्य०] (हि.) अनेक बार ।
सौभाग्य = भ्र०, ३० । ल०, ७०, ७३ ।
[सं० पु०] सुहाग । अच्छा भाग्य ।

सौप्यो = चि०, ३४, ६५ ।
[क्रि० सं०] 'सौंपना' क्रिया का पूर्णभूतकालिक
(ब्र. भा.) रूप, सौंप दिया ।
सौमनस्य = का०, १८३ । भ्र०, २४ ।
[सं० पु०] (सं.) भलमनसाहत, शिष्टता, प्रेम, सन्तोष ।
सौम्य = का० कु०, ६२ । का०, २४२, २४४,
[वि०] २७१ । प्रे०, ५ ।
(सं.) अच्छे स्वभाव वाला, नम्र, सुशील,
सुन्दर, सोम या चन्द्रमा से सम्बन्ध
रखनेवाला, चान्द्र ।
सौरचक्र = क०, २० ।
[सं० पु०] (सं.) सौर मण्डल ।
सौरभ = आं०, ३१, ४३ । का० कु०, १५,
[सं० पु०] ३४, ५७, १०१ । का०, ११, ४६,
(सं.) ४८, ५७, ६४, ६८, १३२ । चि०,
२, १४, १५, १८, २३, २४, ४६,
५५ ६१, १५८, १६७, १७०, १७३,
१७५ । भ्रु०, १६, ३४, ५६ ।
सुगन्ध ।
सौरभित = का० कु०, १९ ।
[वि०] (हि.) सुगंधित ।
सौहार्द = प्रे०, २४ ।
[सं० पु०] (सं.) सुहृद होने का भाव, सज्जनता, मित्रता ।
सौहार्द-प्रेम = का० कु०, १११ ।
[सं० पु०] (सं.) सुहृदों के द्वारा मिलनेवाला प्रेम ।
स्खलन = का०, १२२, १६८ ।
[क्रि०] (सं.) शिथिल होना, पतन, गिरना, चूना ।
स्तब्ध = क०, १० । का०, कु०, २६, ६३ ।
का०, ३, ६१ । भ्र०, ४८ । प्रे०, १३ ।
[वि०](सं.) स्तंभित । दृढ़ । पक्का । मन्द । धीमा ।
स्तम्भ = का०, २१४, २१८ ।
[सं० पु०] खम्भा, तना, शरीर, रुकावट, किसी
(सं.) को रोकने का प्रयोग ।
स्तम्भों = का , १८२ ।
[सं० पु०] (सं.) 'स्तम्भ' का बहुवचन ।
स्तर = आं०, ३७ । का०, १६०, २४६ ।
[सं० पु०] (सं.) तर, परत, अस्तर ।

स्तर-स्तर = का०, १४, २३६ ।
[अव्य०] (सं.) सतह-सतह ।

स्तवक = का०, २४६ ।
[सं० पु०] (सं.) फूलों का गुच्छा । स्तुति करने वाला ।

स्तवन = क०, ३१ ।
[सं० पु०] (सं.) स्तुति । यशोगान, कीर्ति, गाथा ।

स्तिमित = का०, १५७ ।
[वि०] (सं.) भींगा हुआ । तर, ठहरा हुआ निश्चल ।

स्तूप = का०, ४६ ।
[सं० पु०] मीनार । ऊँचा टीला । ढूहा । अस्थियों
(सं) तथा स्मृति चिह्नों को ढक कर बनाया
हुआ ऊँचा ढूहा ।

स्त्री = म०, १० ।
[सं० स्त्री०] (सं.) पत्नी, नारी, भामिनी, मादा ।

स्थल = का , १४७ । प्रे०, २२ ।
[सं० पु०] (सं.) तल, जमीन, धरातल ।

स्थल-पद्म = का० कु०, १२१ ।
[सं० पु] भूमि में होने वाला कमल ।
(सं.) गुलाब ।

स्थान = क०, १३, १४, २० । का , ३०,
[सं० पु०] १६३ । म०, ३ ।
(सं.) आवास, स्थल । ठौर । भू भाग ।

स्थापित = का० कु०, ७३, ६८, १०१ १०६ ।
[वि०] (सं.) प्रतिष्ठित, जिसकी स्थापना हुआ हो ।

स्थित = का० कु०, १२५ ।
[वि०] ठीका हुआ । आसीन । उपस्थित ।
विद्यमान । अवलम्बित ।

स्थिति = का०, २४१ । ल०, ७७ ।
[सं० स्त्री०] अवस्था । दशा । पद । आवास ।
(सं.) अस्तित्व ।

स्थिर = का०, ५७, १२४, २५८, २६२,
[वि०] २८४ । प्रे०, २६ ।
(सं.) निश्चित । ठहरा हुआ । निश्चल शान्त ।

स्थूल = का०, १६७ ।
[वि०] मोटा । मोटी । बिना परिश्रम के समझ
(सं.) में आने वाला । इन्द्रीयग्राह्य पदार्थ ।

स्नात = का० कु०, १६, ३१, १०० । का०,
[वि०] २२ । चि०, १८६ ।
(सं.) नहाया हुआ । जिसके सम्पूर्ण अङ्ग पर
कोई प्रभाव पड़ा हो ।

स्नान = आं०, २४ ।
[सं० पु०] स्वच्छ अथवा शीतल करने के लिए
(सं.) सारा शरीर जल से धोना या जल
राशि में प्रवेश करना । नहाना । धूप
वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना
लेटना या सोना कि सारे शरीर पर
उसका पूर्ण प्रभाव पड़े ।

स्निध = का०, १५०, २५१ । प्रे०, १२, १८ ।
[वि०] म०, ८ २५ । ल०, १२, २३ ।
(सं.) चिकना । जिसमें स्नेह भरा हो ।

स्निग्धालोक = झ०, ७३ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम का प्रकाश । स्नेह की आभा ।

स्नेह = आं०, २८, ८६ । का०, ३, २५ । का०
[सं० पु०] कु०, ७८ । का०, ८३, ११६, १४८,
(सं.) १७६, १८०, १८६, २०८, २२६,
२२८, २४३, २४४ । चि०, १४७ ।
प्रे०, १६ । झ०, ४१, ५८ ।
मोह । प्यार । सनेह । मृदुलता चिक-
नाई । नेह ।

स्नेहमयी-सी = का०, २२१ ।
[वि०] (सं.) स्नेहभरी के समान ।

स्नेह-संबल = का०, ८८ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रेम का आधार ।

स्नेह-सहित = प्रे०, १० ।
[सं० पु०] सं.) स्नेह के साथ । प्रेम के सहित ।

स्नेह-सा = का०, ८६ ।
[वि०] (हि.) प्रेम के सदृश ।

स्नेहालिंगन = ल०, २६ ।
[सं० पु०] (सं.) स्नेह से गले मिलना ।

स्पंदन = का०, १६, ३४, १६१, १६४, २१५,
[सं० पु०] २५२ । ल०, २८ ।

(सं.) कम्पन, धीरे-धीरे कंपना; स्फुरण, हृदय या अंगों का कंपन।

स्पन्दन-हीन = का० कु०, १५। झ०, १६।
[वि०] (सं.) स्फुरण रहित।

स्पन्दमान = चि०, १३२।
[वि०] (सं.) स्पन्दित करता हुआ। हृदय में गुदगुदी पैदा करता हुआ।

स्पंदित = का०, ५४, २५४, २६३।
[वि०] (सं.) काँपता या फड़कता हुआ, स्फुरित।

स्पर्धा = का०, १६२। प्रे०, १७।
[सं० स्त्री०] (सं.) द्वेष, डाह। संघर्ष, वैमनस्य।

स्पर्श = आ०, ५४। का० कु०, ५१, ५५; १००। का०, १०, ४७, ६७, ६६, ६४, २१५, २६२, २८६, २६१। झ०, १६, ६४। प्रे०, ८।
[सं० पु०] (सं.) छूना। छू जाना। दबने का अनुभव।

स्पष्ट = का० कु०, ३०, १०२। का०, ११६, १६८, १८६, २४६। प्रे०, ६।
[वि०] (सं.) साफ। सुव्यक्त। साफ समझ में आने और दिखाई देने वाला।

स्पृहणीय = का०, २७, ८६।
[वि०] (सं.) बहुत अच्छा, जिसकी कामना करना उचित या योग्य हो।

स्फटिक-शिला-आसीन = का० कु०, ९५।
[वि०] (हि.) स्फटिक शिला पर विराजमान। स्फटिक एक प्रकार सफेद पारदर्शी पत्थर जो बर्फ की तरह श्वेत और चिकना होता है।

स्फीत = का० कु०, २६। का०, ४।
[वि०] (सं.) समृद्ध। फूला हुआ। बढ़ा हुआ। वर्द्धित।

स्फुट = चि०, १३३।
[वि०] (सं.) फुटकर। व्यक्त। विकसित। खिला-हुआ।

स्फुलिंग = का०, १६०।
[सं० पु०] (सं.) चिनगारी।

स्फूर्ति = का०, ४७, ६३, १४०। चि०, १४१, १५४। ल० ६०।
[सं० स्त्री०] (सं.) तेजी। फूर्ती। स्फुरण होना। उत्तेजना।

स्फोट = का०, ५।
[सं० पु०] (सं.) फूट पड़ना, विस्फोट।

स्मरण = का० कु०, ६०, ८१, ६७। का०, १७, ४०, २५०। झ०, १५। प्रे०, ७, ६। म० ६।
[सं० पु०] (सं.) किसी देखी सुनी अनुभूति या पढ़ी हुई बात का पुनः ध्यान में आना। याद आना।

स्मशान वासी = प्रे० २०।
[वि०] (सं.) श्मशान पर निवास करने वाले, मरघट पर रहने वाले। भूत-प्रेत आदि का सूचक।

स्मित = का० कु०, २१। का०, ६८। झ०, २२, ६५। १६६। ल०, ३४।
[सं० पु०] (सं.) मन्द मुस्कराहट। धीमी। मुसकान।

स्मित-रेखा = का०, १०६।
[सं० पु०] (सं.) मन्दहास की रेखा।

स्मित-लतिका-प्रवाल = का०, १५२।
[वि०] (सं.) मंद हँसी जिसमें लाल अधर मूंगे की लतिका के समान सुशोभित होते हैं।

स्मिति = का०, २७, १६६, १७८, २२१, २२४, २५६, २७३, २६०। ल०, २८।
[वि०] (सं.) हँसी। मुसकान।

स्मृति = आ०, १४, ३५, ७४, ७५। का० कु०, ६६, ७३, ७७, ११०। का०, २४, ७०, ६२, ११५, ११७, १६०, १७५, १७८, १७६। चि०, १८६। झ०, ३१ ३३, ३५। प्रे०, २३। ल०, ११, ३३, ४४।
[सं० स्त्री०] (सं.) स्मरण। याद। नीति तथा दर्शन आदि का विवेचना सम्बन्धी धर्म-शास्त्र।

स्मृति-पथ = का०, ३६।
[सं० पु०] (सं.) स्मरण रूपी मार्ग।

स्मृति-रेखा = आ०, २२।
[सं० स्त्री०] स्मरण-चिन्ह। यादगार। स्मृति की रेखा।

स्मृतियाँ = आं०, ६।
[सं० स्त्री०] स्मरणों। यादगारों। नीति तथा दर्शन
(सं.) आदि का विवेचना सम्बन्धी धर्म शास्त्र।
स्मृति-सी = आं०, १।
[वि०] (हि.) स्मरण सदृश।
स्मृति-सौरभ= झ०, ४३।
[सं०पु०] (सं.) स्मरण रूपी सुगन्ध। याद की सुगंधि।
स्रस्त = प्रे०, २५।
[वि०] (सं.) च्युत। शिथिल।
स्रुवा = का० कु०, ११४।
[सं० स्त्री०] लकड़ी की वह कलछी जिससे हवन के
(सं.) समय अग्नि में घी आदि की आहुति
दी जाती है।
स्रोत = क०, १४। का० कु०, ६६, १२६।
[सं० पु०] (सं.) का०, ४। झ०, १५, ३६। म०, ४, ८।
पानी का बहाव, झरना, धारा, पानी
का सोता, नदी। मूल।
स्रोतों = का०, २७०।
[सं० पु०] स्रोत का बहुवचन। दे० 'सोत'।
(हि.) = प्रे०, २५।
स्वगत = का०, २२८।
[वि०] अपने में आया या लाया हुआ। स्वतः,
(सं.) अपने आप।
स्वचेतन = का०, १८२।
[सं० पु०] अपनी चेतना। आत्मसत्ता। आत्म-
(सं.) स्थित।
स्वच्छ = का० कु०, ६, १३, २६, ३०, ५३
५६, ६६, ६६, १२२, १२६। का०,
३०, ३४, ५७, २३३। चि०, १,
२४, १५३। झ०, २८, ८६, ६४।
प्रे०, ४, १२, २४। म०, ४।
[वि०] (सं.) शुभ। शुद्ध। पावन। निर्मल। उज्वल
स्वच्छन्द = का० कु०, २२। का०, ६६, १६०,
[वि०] २८३। चि०, १, ३४। प्रे०, १७,
(सं.) २६।
स्वाधीन। स्वतन्त्र। निरंकुश। मनमाना
आचरण करने वाला। स्वेच्छाचारी।

स्वच्छन्द-सुमन का०, ६६।
[सं० पु०] (सं०) स्वच्छन्दता रूपी सुमन।
स्वच्छ शरीर= का०, कु०, १००।
[वि०] (सं.) निर्मल तन।
स्वच्छशीला = का०, कु०, ५७।
[वि०] (सं.) सहज निर्मल रहने वाली।
स्वच्छ-सुन्दर= का०, कु०, ४२।
[वि०] (सं.) साफ सुथरा।
स्वच्छ स्नेह = का०, कु०, ७१।
[सं० पु०] (सं.) पवित्र प्रेम। निर्मल नेह। निश्छल प्रेम।
स्वच्छ-स्वच्छन्द=का०, कु०, ६५।
[वि०] (सं.) निर्मल-उन्मुक्त।
स्वजन = का०, १८६, २४६।
[सं० पु०] (सं.) आत्मीयजन। कुटुम्बी, नातेदार।
स्वजनों = का०, १६४।
[सं० पु०] (हि.) स्वजन का बहुवचन।
स्वतन्त्र = का०, १५४, १६३, १६८।
[वि०] (सं.) स्वाधीन, मुक्त।
स्वतन्त्रता = का०, ६६, १७०। प्रे०, १६।
[सं०स्त्री०] (सं.) स्वाधीनता। स्वच्छन्दता, निरंकुशता।
स्वत्व = क०, १३। का०, १६२, २७२।
[सं० पु०] (सं.) अपनत्व। निजत्व।
स्वदेश = का० कु०, ९०। ल०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) निजदेश। मातृभूमि।
स्वधर्म्म = चि०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) निजधर्म। अपना धर्म।
स्वप्न = का० कु०, १२५। का०, ८, ७०,
[सं० पु०] ७७, १५८, १६६, १८६, २१४, २७३,
(सं.) २८६। झ०, ४१, ८८। प्रे०, १६,
२२। ल०, ११, ७६।
मन में उठी हुई ऊँची कल्पनाएँ।
निद्रा अवस्था में दिखलाई देनेवाले
दृश्य और परिस्थितियाँ।
स्वप्न-पथ = का०, ८८।
[सं० पु०] (सं.) स्वप्न का मार्ग। स्वप्न रूपी रास्ता।

स्वप्नमयी = आं०, ६५ ।
[वि०] (हि.) स्वप्निल । स्वप्न से युक्त ।
स्वप्न-लोक = का०, ३५ । चि०, १४ । भ्रू०, ५४ ।
[सं० पु०] (सं.) कल्पना जगत ।
स्वप्न-सदृश्य = प्रे०, १६, १८ ।
[वि०] (सं.) स्वप्न-समान । सपने की तरह ।
स्वप्न-सबेरे = आँ०, १७ ।
[सं० पु०] (हि) भोर का सपना । आशा पूर्ण स्वप्न ।
स्वप्न-सी = क०, २८ । का०, ६३ ।
[वि०] (हि.) सपने के सदृश्य ।
स्वप्नों = का०, ६७ । ल०, १२ ।
[सं० पु०] (हि.) दे०, 'स्वप्न' (बहुवचन ।
स्वभाव = का०, २६४ । चि०, ५७, ६१, भ्रू०, ४० ।
[सं० पु०] (सं.) मनोवृत्ति । आदत । मिजाज । प्रकृति । मुख्य गुण ।
स्वभाव-मकरन्द=चि०, १७७ ।
[सं० स्त्री०](सं.) स्वभाव रूपी पराग ।
स्वभाववश = का० कु०, ६४ ।
[सं० पु०] (सं.) स्वाभाविक रीति से आदत के वशीभूत होकर ।
स्वयं = आँ, २४, ६८ । क०, ६, ३० । का० कु०, ८१, ६२, ६६, ११४ । का०, ६, १६, ६७, ६८, ८१, ८६, ६२, ६६, ११६, ११७, १२६, १६०, १६१, १६३ १७२, १८४, १८५, २०६, २०६, २४०, २५२, २७२ । भ्रू०, ४०, ४५ । प्रे०, २४ । म०, ८, १२ । ल०, १७, १८, ७६ । खुद । अपने आप ।
स्वर = आं०, ७, २६ । क०, १० । का० कु०, १०, ४५, ४१, ११६ । का०, ११, २६, ६३, ६८, १५०, १७६, १७८, १८०, १८४, १६३, २२४, २४०, २५०, २६०, २६१, २८६ । चि०, ५८, १४७ । प्रे०, ४, १० । ल०, २७, ३३, ४५ । ध्वनि, आवाज, बोली ।
स्वरलहरी = का० कु०, ८१ । का०, १८१, २१८ । भ्रू०, ५५ । ल०, २६ ।
(सं० स्त्री०] (सं.) ऊँचे-नीचे स्वरों की वह लहर या क्रम जो प्रायः संगीत आदि के लिए उत्पन्न की जाती है ।
स्वरूप = का०, १६६, २४२, २५४ । चि० ७१ । प्रे०, १६, २४ । म०, १४ ।
[सं०पु०] (सं.) व्यक्ति, पदार्थ, कार्य आदि की आकृति, शकल, मूर्ति, चित्र ।
स्वरों = का०, १७८ ।
[सं० पु०] (सं.) स्वर का बहुवचन ।
स्वर्गंगा = आं , १७, ५४, ५६ । का०कु०, ६६ ।
[सं० स्त्री०] का०, १४२ ।
(सं.) आकाश गंगा ।
स्वर्ग = आं०, ५६ । का०, ११३, १२७, १२८, १३१, १३२, १६२ । चि०, ६८ ।
[सं० पु०] (सं.) भ्रू०, २६ । प्रे०, ८, २४ । ल०, १२ । बैकुण्ठ । देवधाम । पुण्य आत्माओं का निवास स्थल । तीसरा लोक । इन्द्र लोक ।
स्वर्ग-माँहि = चि०, ६८ ।
[सं० पु०] (सं.) स्वर्ग में ।
स्वर्गीय = का० कु०, १६, १२० । का०, १४८ ।
[वि०] (सं.) भ्रू०, १६ । ल०, ३२ । स्वर्ग में रहने वाले । मृत । स्वर्ग संबंधी ।
स्वर्गीय-भाव = का० कु०, १०३ ।
[सं० पु०] (सं.) ईश्वरीय भावना । अत्यन्त पवित्र एवं आकर्षक भावना ।
स्वर्गीया-सुखमा=चि०, ७३ ।
[सं० स्त्री०] (ब्र. भा.) स्वर्गीय सुख । सौंदर्य । अपरिमित आनन्द । अलौकिक शोभा ।
स्वर्ण = का०, २४७ । ल०, ७१, ७५ ।
[सं० पु०] (सं.) सोना । सुवर्ण । कंचन । धतूरा ।
स्वर्ण-कलश = का०, १८२ ।
[सं० पु०] सं.) सोने का घड़ा । सुवर्णघटक ।

स्वर्ण-किरण-सी=का०, २२८।
[वि०] (सं.) सुनहली किरण के समान।
स्वर्ण-किरन = का०, ८१।
[सं० स्त्री०] (हि.) सुनहरी किरण। कनक किरण।
स्वर्ण-खचित = क०, १७।
[वि०] (सं.) स्वर्ण का बना हुआ। स्वर्ण जटित।
स्वर्णघट = झ०, ५६।
[सं० पु०] (सं.) स्वर्ण कलश। सोने का घड़ा।
स्वर्ण-छत्र = चि०, ४८।
[सं० पु०] (सं.) सोने का ताज। सोने का छाता।
स्वर्ण-जल = का० कु०, ८।
[सं० पु०] (सं.) सुनहला पानी। सोने का पानी।
स्वर्ण-मय = झ०, ५८।
[वि०] (सं) सोने से युक्त। स्वर्णिम।
स्वर्णमयी = ल०, ७०।
[वि०] (सं.) 'स्वर्णमय' का स्त्रीलिंग।
स्वर्ण-विलास = झ०, ६६।
[वि०] (सं.) धन का वासनामय आनन्द।
स्वर्ण-शालियों = का०, २८।
[सं० स्त्री०] (हि.) धान की सुनहली बालें।
स्वर्ण-शतदल = आं०, ६८।
[सं० पु०] (सं) स्वर्णिम जलज। सोने का कमल।
स्वर्ण-सा = का०, १६०।
[वि०] (हि.) सोने के समान। कनक के समान।
स्वर्ण-सृष्टि = आं०, ६६।
[सं० पु०] (सं.) स्वर्णलोक।
स्वर्णाक्षर = म०, ६।
[सं० पु०] (सं.) सोने के अक्षर। (मुहा०) अमर लेख।
स्ववश = का०, १६७, १८३।
[सं० पु०] (सं.) अपने वश में या अधिकार में।
स्वस्थ = का० कु०, ४, १०१। का०, ४, ३१,
[वि०] ८७, ११२, १२६, २१६।
(हि.) आरोग्य। नीरोग। तन्दुरुस्त। भला-चंगा।
स्वांग = झ०, ६४।
[सं० पु०] किसी के अनुरूप धारण किया जाने-
(सं.) वाला बनावटी वेष या रूप। वेश। नकल। आडम्बर।
स्वागत = का० कु०, २६, ३०। का०, ६१,
[सं० पु०] १०२, १६६। चि०, ७२। ल०, ३२।
(सं०) अभिनन्दन। अभ्यर्थना। अगवानी। आदर-सत्कार।
स्वातन्त्रमयी = का०, १६१।
[वि०] (सं.) स्वतंत्र, मुक्तियुक्त।
स्वाती = का०, २२३। ल०, ३५। चि०, १५८।
[सं० स्त्री०] (सं.) एक नक्षत्र का नाम।
स्वातीकन = का०, २३५।
[सं० स्त्री०] सं.) स्वाती की बूंद।
स्वाती-विन्दु = का० कु०, ४३।
[सं० स्त्री०] स्वाती नक्षत्र से बरसी हुई जल की
(सं.) बूँद।
स्वाद = का० कु०, ३४। प्रे०, २३।
[सं० पु०] रसानुभूति, आनन्द। किसी वस्तु के
(सं.) खाने पीने से जीभ को होने वाला अनुभव।
स्वाधिकार = का०, १३६।
[सं० पु०] (सं.) अपना अधिकार, स्वाधीनता, स्वतंत्रता।
स्वाधीन = क०, १३। म०, १४।
[वि०] जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र,
(सं.) आजाद।
स्वानुभूति = का० कु०, ६४।
[सं० स्त्री०] अपने मन में होनेवाला ज्ञान। अपना
(सं.) ज्ञान।
स्वाप = का०, २७३।
[सं० पु०] (सं.) निद्रा, नींद, अज्ञान।
स्वाभाविकता = झ०, ७३।
[सं० स्त्री०] स्वभाव से या आप से आप होने का
(सं.) भाव। प्रकृत, नैसर्गिकता, कुदरतीपन।
स्वामिनि = का०, १६६।
[सं० स्त्री०] (सं.) मालकिन, गृहणी।
स्वामी = का० कु०, ८७। का०, १६७। चि०,
[सं० पु०] ७४, १६१। म०, ३, १२, १८।

(सं.) मालिक, पति, घर का प्रमुख व्यक्ति स्वत्वाधिकारी, शौहर।

स्वायत्त = का०, ६।
[वि०] जिस पर अपना अधिकार हो। जो
(सं.) अपने ही अधीन हो।

स्वारथ = चि०, ३६, १७३, १८५।
[सं० पु०(ब्र.भा.) अपना लाभ, अपनी भलाई, स्वार्थ।

स्वारथरत = चि०, ५७।
[वि०] अपनी भलाई में लगा रहने वाला।
(सं.) स्वार्थी।

स्वार्थ = का० कु०, ६३, ११२, ११५। का०,
[सं० पु०] १३२। झ०, ४१, ७७। प्रे०, १०,
(सं.) १६।
अपना अर्थ या उद्देश्य, अपना मतलब।

स्वार्थी = चि०, १८६। प्रे०, २२०।
[वि०] अपना अर्थ साधने वाला, अपना मत-
(सं.) लब निकालने वाला, मतलबी। खुदगर्ज।

स्वार्थों = का०, १६१।
[सं० पु०] (सं.) स्वार्थ का बहुवचन।

स्वावलम्बन = का०, १८२।
[सं० पु०] अपने ही भरोसे रहकर अपने ही
(सं.) बल पर कार्य करना।

स्वास्थ्यकर = म०, २१।
[वि०] (सं.) तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाला, आरोग्यवर्धक।

स्वीकार = क०, १८, १६, २३। का० कु०, ११६
[सं० पु०] का०, ३६।
(सं.) अपनाने या ग्रहण करने की क्रिया, अंगीकार। मंजूरी।

स्वीकृति = का०, १२३, २६८।
[सं० स्त्री०] स्वीकार करने का भाव या क्रिया,
(सं.) मंजूरी।

स्वेद = का० कु०, २४। का०, १५७। चि०,
[सं० पु०] ५।
(सं.) पसीना, श्रम कण।

स्वेद्-कण = चि०, २८।
[सं० पु०] (सं.) पसीने की बूँद।

ह

हंत = का०, १३०।
[अ०] (सं.) एक दुख बोधक शब्द।

हँसना = आं०, ५ बार। क०, १ बार। का० कु०,
[क्रि०] ६ बार। का०, ४७ बार। चि०, ११
(हि.) बार। झ०, ५ बार। म०, १ बार।
ल०, १५ बार।
हास करना। उपहास करना। मुँह खोलकर प्रसन्नता प्रकट करने के लिए हा-हा करना।

हक नाहक = चि०, ५७।
[अव्य०] (अ० + फ०) जबरदस्ती। व्यर्थ।

हजार = चि०, ४२।
[वि०] (फा.) बहुत, अनेक। दस सौ।

हजारों = का० कु०, ५।
[वि०] (फा.) हजार का बहुवचन।

हट जाना = का० कु०, ७६, १०२। का०, ८६,
[क्रि०] २१६। चि०. ६६। प्रे०, ६।
(हि.) सरक जाना। खिसकजाना। न रह जाना। विचलित हो जाना।

हटना = का० कु०, ५, ६। का०, २३, २८।
[क्रि०] १३६। म० ४, १२।
(हि.) सरकना, खिसकना। विचलित होना, न रह जाना।

हठ = का० कु०, ५। का०, १६१।
[सं० पु०] (सं.) जिद। दृढ़ प्रतिज्ञा।

हठि = चि०, ६६।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा.) हठ करके। जिद करके।

हठीले = ल०, ६।
[वि०] (हि.) दृढ़प्रतिज्ञ। जिद्दी। बात के पक्के।

हत-चेत = का०, २५४।
[वि०] (सं.) बेसुध, बेहोश।

हत-चेतन = का०, २३८।
[वि०] (सं.) बेसुध।
हतभाग्य = का०, ११। का०, ४८।
[वि०] (सं.) भाग्यहीन।
हताश = का०, ५२, १५८, १६६, २३४।
[वि०] झ०, ३३।
(सं.) निराश।
हथेली = का०, १२७।
[सं० स्त्री०] (सं.) करतल।
हम = आं०, ३०, ३३, ३६, ३७। का०, १०
[सर्व०] १३, १५, १६, २०, २५। का० कु०,
(हि.) ७, १०, २०, ३१, ३२, ३३, ६१।
का०, ७, ६, २५, ३२, ७२, ७३,
७४, ६२, ११४, १२७, १२८, १२६,
१३१, १३६, १४७, १६१, १६६,
२२२, २२५, २६०, २६१, २७८,
२८६, २८३। चि०, १४, २६, ३१,
३३, ५८, ६०, ६१, ६४, ७२, ७३,
७४। झ०, ४६।
मैं का बहुवचन।
हमको = आं०, १७। क०, ११। चि०, ६४,
[सर्व०] १८६।
(हि.) मुझको का बहुवचन।
हमहूँ = चि०, ६४, ७४।
[सर्व०] (ब्र.भा.) हम भी।
हमारा = आं०, ११, १५, १६, २५, २८, ३०,
[सर्व०] ६७। क०, १०, १२, २०, २६।
(हि.) का० कु०, ३१, ३२, ३३, ३६। का०,
५७, १२८, १३१, १३२, १८४, १६७,
१६६, २२८, २६०। चि०, ५०, ६०,
६१, ६४, ६८, ७१, ७३, १५७, १७६,
१८३, १८७। झ०, ५, २६, ३०, ५३,
म०, १२।
मेरा का बहुवचन।
हमी = का० कु०, ३३। का०, २८७।
[सर्व०] (हि.) मैं भी का बहुवचन।

हमें = क०, १३, २६। का०, २२०। झ०,
[सर्व०] ३०। म०, ५।
(हि.) हमको।
हमेश = चि०, ६७।
[अव्य०] ब्र.भा) सदा, सदैव।
हय = चि०, १८१। म०, ६। ल०, ३३।
[सं०पु०] (सं.) इन्द्र। घोड़ा।
हयन = चि०, ५१।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) घोड़े।
हय-पद-वज्र = म०, २।
[सं० पु०] हि.) घोड़े के वज्र के समान पैरों से।
हर = का० कु०, ३६। का०, २४४।
[वि०] (सं.) हरण करने वाला। प्रत्येक। शिव।
हर एक = का० कु०, ६, ६३।
[वि०] (फा.) एक एक, प्रत्येक।
हरखत = चि० ६६, ७०, ६०।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्रसन्न होता है।
हरखाओ = चि०, १७४।
[क्रि०] ब्र.भा.) प्रसन्न करो।
हरखाय = चि०, १५६।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) प्रसन्न होकर।
हरखावा = चि०, १५७।
[क्रि०] (ब्र.भा.) प्रसन्न हुआ।
हरजाई = चि०, १६३, १८३।
[वि०] आवारा। हर जगह घूमने वाली। (स्त्री०)
(फा.) व्यभिचारिणी स्त्री। वेश्या।
हरण = चि०, ६७, १०७।
[सं० पु०] (सं.) छीनना, लूटना, मिटाना, नाश।
हरते = का०, २८२।
[क्रि०] (हि.) मिटाते।
हरने = का० कु०, ८। ल०, १३।
[अव्य०] (हि.) मिटाने के लिए।
हरम = म०, ३।
[सं० पु०] (अ.) जनानखाना, अन्तः पुर।
हरमें = ल०, ७७।

[सं० स्त्री०] (अ.) रखेल स्त्रियाँ, विवाहिता स्त्रियाँ ।

हरयाली = का०, १०० ।
[सं० स्त्री०] (हि.) दे० हरियालि ।

हरलेना = का०, २४४ ।
[क्रि०] (हि.) दे० हरना ।

हरषायो = चि०, ५८, ७३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्रसन्न हुआ ।

हरषावत = चि०, २६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्रसन्न करता है ।

हरषाहिं = चि०, २२ ।
[क्रि] (ब्र. भा.) प्रसन्न होते हैं ।

हरषित = चि०, ६२ ।
[वि०] (ब्र.भा.) आनन्दित ।

हरषी = चि०, ५६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्रसन्न हुई ।

हर्ष = का० कु०, १२६ । का०, १३०, २३५ ।
[सं० पु०] चि०, १४३ । प्रे०, २३ । म०, ६ ।
(सं.) प्रसन्नता, आनन्द खुशी ।

हर्ष-विषाद = चि०, ५६ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रसन्नता और शोक ।

हर्ष-शोक = का०, २२७ ।
[सं० पु०] (सं.) प्रसन्नता और विषाद ।

हरस = चि०, १८१ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) दे० हर्ष ।

हर हर = चि०, ६५ ।
[वि०] (हि.) धूआँधार, हरहराती हुई ।

हरा = का० कु०, १८१ । का०, १६१, १८२,
[वि०] १६१, २२३ । भ्रू०, ५० ।
(हि.) प्रसन्न, ताजा । हरे रंग का ।

हरि = चि०, १५२, १८४ ।
[सं० पु०] शिव, विष्णु, कृष्ण । आग । बन्दर ।
(हि.) (पूर्व क्रि०) हरण कर ।

हरिचन्द = चि०, १६४ ।
[सं०पु०] (ब.भा.) हरिश्चन्द्र ।

हरिचन्दन = का० कु०, १०७ ।
[सं० पु०](सं.) एक प्रकार का चन्दन । चाँदनी ।

हरिचन्द्रादि = चि०, ४७ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) शिव, चन्द्रमा आदि ।

हरिण = का० कु०, ४२ ।
[सं० पु०] (सं.) हिरण ।

हरित = का० कु०, ३ । का०, १७५, २८१ ।
[वि०] चि०, १४६, १५७ । भ्रू०, १६, २३,
(हि.) ४१ । ल०, १५, २० ।
आनन्दित । हरा ।

हरियारी = भ्रू , ६२ ।
[सं०स्त्री०](हि.) दे० हरियाली ।

हरियालिन = चि०, ७० ।
[सं० स्त्री०](ब्र.भा.) दे० हरियालियों ।

हरियालियों = का० कु०, ५३ ।
[सं०स्त्री०] हरियाली का बहुवचन । हरे-भरे भूमि-
(हि.) खण्डों ।

हरियाली = क०, १७ । का०, कु०, ५२ । का०,
[सं० स्त्री०] २२३, २५७, २८१, २८३, २८४ ।
(हि.) चि०, २८, ७० । भ्रू०, ३६ । म०, २ ।
हरे-भरे पेड़ पौधों का विस्तार ।

हरिश्चन्द्र = क०, ३१ ।
[सं० पु०] सं) सूर्यवंश के प्रतापी और सत्य-निष्ठ राजा ।

हरिश्चन्द्रादि = का०, १६०, २२५ । प्रे०, १४ ।
[सं० पु० (हि) हरिश्चन्द्र वगैरह ।

हरिहै = चि०, १८५ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) हरेगा ।

हरिहौं = चि०, १८५ ।
[क्रि०] (ब्र.भा.) हरूँगा ।

हरी = चि०, ११, १५१, १६८ ।
[सं० पु०] (ब्र.भा.) दे० हरि (वि०) हरित ।

हरी-भरी = का०, २८ । प्रे०, १५, २२ । का०,
[वि०] ५ ।
(हि.) हरियाली से पूर्ण ।

हरे = क०, ८ । का०कु० ३५, ५४ चि०,११।
[वि०] प्रे०, १ ।
(हि.) हरा का बहुवचन ।

हरे हरे = का० कु०, २५ । प्रे०, ३ । म०, २ ।
[वि०] (हि.) हरे-हरे रंग के । हरा का बहुवचन ।

हृद = का०, २८४।
[सं० पु०] (सं.) दे० हृदय।
हल = का०, १८१।
[सं० पु०] (सं.) भूमि जोतने का एक प्रसिद्ध उपकरण।
हलका = का०, १४३।
[वि०] (सं.) ओछा। थोड़ा। कम वजनी।
हलका सा = का०, ६८।
[वि०] (हि.) ओछा-सा।
हलकी = का०, ११२, १८०, २१५, २४६।
[वि०] ल०, ६६।
(हि.) हलका का स्त्रीलिंग।
हलकी-सी = का०, १०३। भ०, ४८।
[वि०] (हि.) ओछी-सी।
हलचल = का०, ५, १८, २४, ५०, १६६, १८५,
[सं० स्त्री०] २२१। भ०, १७।
(सं.) खलबली, तहलका, क्रान्ति।
हलाहल = का०, १३, २६५। भ०, ४६।
[सं० पु०] समुद्र मंथन से निकला हुआ भयंकर
(सं) विष। प्रचण्ड विष।
हवन = प्रे०, १६।
[सं० पु०] (सं.) होम।
हवन-धूम = चि०, ३३।
[सं०पु०](ब्र.भा.) होम का धुआँ।
हवा = भ०, ६४।
[सं० स्त्री०] (अ.) वायु, पवन। यश, कीर्ति।
हविष्य = का०, ७। चि०, १३६।
[वि०] (सं.) बलि। हवन करने योग्य।
हसी = का० कु०, ३३।
[सं० स्त्री०] (हि.) हास।
हस्तगत = का० कु०, ११६।
[वि०] (सं.) प्राप्त, हासिल।
हस्ता = चि०, १३२।
[क्रि०] (ब्र. भा.) हँसता।
हहराइ = चि०, १५८।
[पूर्व क्रि०] (ब्र. भा.) हहरकर।
हाँ = का० कु०, ३०। का०, २५, ४०, ६६,
[अव्य०] ९२, २०८, २३३। म०, २३। ल०,
(हि.) ७५।
स्वीकृति, समर्थन आदि का बोधक शब्द।
हाँफ = का०, ३६, १६८।
[सं० पु०] श्रम भार से जल्दी-जल्दी साँस की
(हि.) गति।
हांसी = चि०, ४६, ६३, ७०।
[वि०] (सं.) हँसी।
हाँ-हाँ = का०, कु० २०, १२४।
[अव्य०] (हि.) ठीक ठीक।
हाथ = क०, २०। का० कु०, ३४, ५८, १०६,
[सं० पु०] ११६। का०, ७८, १४६, १६८,
(हि.) २०१, २१६, २४८। भ०, ३६, ७२।
प्रे०, २। ल०, ७३, ७४।
कर, हस्त।
हाथन = चि०, ३८।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) हाथों।
हाथों = क०, ६। का०, १४२, २२६। भ०,
[सं० पु०] ४७। प्रे०, १६। ल०, ५३, ७८।
(हि.) हाथ का बहुवचन।
हानि = आं०, ४५, ५०।
[सं० स्त्री०] (सं.) क्षति, नुकसान, घाटा, बुराई।
हाय = क०, १७, २५, २६। का० कु०, ४८,
[अव्य०] १२१। चि०, ३५, ३६, ५७, १६६,
हि.) १७०। भ०, ३८, ४८, ५४, ६१।
प्रे०, १३। ल०, ७४।
शोक, दुख आदि का बोधक शब्द।
हार = का० कु०, १८। क०, १४। का०,
[सं० स्त्री०] ११, ५५, ६६। चि०, ४८, ७१,
(हि.) १८७। भ०, ४२, ७४, ६३। ल०, ७३।
पराजय। माला।
हारना = का० कु०, ११२। चि०, ६६। ल०,
[क्रि०] २३।
(हि.) पराजित होना। विफल होना।
हारी = का० कु०, ३१। का०, १०४, १०६।
[वि०] (सं.) पराजिता। हारी हुई।
हारों = आं०, १६। का०, १७१, २०८, २६६।

[सं० स्त्री०] म०, २१, २२।
(हि.) पराजयों। मालाओं।
हाल = का० कु०, ११२। चि०, २३।
[सं० पु०](हि.) दशा। परिस्थिति। समाचार। विवरण।
हाला = ल०, ४७।
[सं० स्त्री०] (सं.) शराब।
हास = का०, ३८, ८७, १४२, १५३, १६१,
[सं० पु०] २५४। चि०, १३३। भ्र०, २३।
(सं.) म०, १४। ल०, २५।
हंसी। ठठोली। हँसने की क्रिया या भाव।
हासी-रेखा = चि०, ६५।
[सं०स्त्री०] (ब्र.भा.) हँसी की रेखा।
हासों = का०, १२५। ल०, १४।
[सं० पु०] (सं) हास का बहुवचन। हँसियों।
हाहाकार = आं, ७, ७७। का०, १३, १६४।
[सं० पु०] त्रास से घबड़ाकर चीखना चिल्लाना।
(सं.) कुहराम।
हिंडोला = का० कु०, ६६।
[सं० पु०](सं.) पालना, झूला।
हिंडोले = का०, २४६। प्रे० १।
[सं०पु०](सं.) झूलों।
हिन्दी = चि०, १६४।
[वि०] (फा.) भारतीय।
हिंस = क०, ६।
[वि०] (सं.) मार काट करने वाला।
हिंसक = का०, १४६, २४८।
[सं०पु०] (सं.) प्रहार करने वाला, निर्दयी, घातक।
हिंसा = क०, ३७। का०, १३६, १४४, १६६।
[सं० स्त्री०] दूसरे को मारने काटने या पीड़ा पहुँचाने की वृत्ति।
हिंसा-सुरत = का०, १३६।
[अव्य०] दूसरों को कष्ट पहुँचाने में मिलनेवाला
(हि.) सुख।
हिचक = का०, ६६।
[सं० स्त्री०](हि.) मानसिक रुकावट।
हिचकना = भ्र०, ५२।
[क्रि०] (हि.) रुकना, आगा, पीछा करना।
हिचकी = आँ, ७६। का०, ८४।
[सं० स्त्री०] पेट या कलेजे की वायु का कुछ रुक-
(हि.) रुक कर गले के मार्ग से बाहर निकलने का शारीरिक कार्य व्यापार। शोकाकुल अवस्था में विषादमयी प्राणवायु का रुक रुक कर निकलने का कार्य व्यापार।
हिचकी-सी = का०, १६०।
[वि०] हि.) हिचकी के समान। अवरुद्ध।
हित = आँ०, ४६। का०, १४४, २२२,
[सं० पु०] २७८। चि०, १४, ६८, ६३, १०६,
(सं.) १४७, १८८।
कल्याण, मंगल।
हितकर = क०, १२। चि०, ६२।
[क्रि०] (सं.) लाभप्रद, कल्याणप्रद।
हिम = आं०, ३०। क०, १५। का० कु०, ६।
[सं० पु०] का०, ३, २३, २४, ८७, २५४, २५७,
(सं. २६८, २६२, २६३। चि०, ४। भ्र०,
३८, ६०। प्रे०, २४।
पाला, तुषार। चन्द्रमा।
हिम कणिका= का०, ६५।
[सं०स्त्री०](सं.) ओला, तुषार कण।
हिमकन = का०, २७६, २८४। भ्र०, १७।
[सं० पु०] (हि.) ल०, २४, ३६।
हिमकण।
हिमकर = आं०, १८, ४२, ५१, ५६। का०,
१२५, २५३, २५७। ल०, २६।
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा।
हिम-खण्ड = का०, कु०, १०५। का०, ४८।
[सं० पु०] (सं.) भ्र०, २२।
हिमकण।
हिम-गिरि = क०, २९। का० कु०, १०४, १०५।
[सं० पु०] (सं.) का०, ३, ३०, ५१, १३१। चि०,
६४, ६९।
बर्फ का पहाड़। हिमालय।

हिमगिरि सों = चि०, ७२ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) हिमालय के समान ।

हिमतल = का०, १७५ ।
[सं० पु०] (सं.) बर्फ की सतह । बर्फीली जमीन ।

हिमधवल = का०, ३ ।
[वि०] (सं.) बर्फ की भांति स्वच्छ ।

हिम-नग-सरिता= का०, १६० ।
[सं० स्त्री०] बर्फीली नदी, हिमालय से निकली
(सं.) हुई नदी ।

हिमलता = का० कु०, १०४ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) बर्फ की लता ।

हिम-बिन्दु-सी= का० कु०, ६७ । झ०, ५३ । ल०,
[वि०] ७६ ।
(हि.) ओस की बूँदों के समान ।

हिम-शिलाओं = का०, १६ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) बर्फ की चट्टानों ।

हिम-शीतल = का०, २४, १६७ ।
[वि०] (हि.) हिम के समान ठण्डा ।

हिम शैल = ल०, १५ ।
[सं० पु०] (सं.) हिमगिरि ।

हिम-शृंगों = का०, १०० ।
[सं० पु०] (सं.) बर्फ की चोटियों ।

हिम-सर = का० कु०, १०५ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) बर्फ का तालाब ।

हिमांशु = का० कु०, ११०
[सं० पु०] (सं.) चन्द्रमा ।

हिमानी = का०, १८, १५७, २५७ ।
[सं०स्त्री०]((सं.) पाला । बरफ । ग्लेशियर ।

हिमालय = का०, २६ । चि०, ५५ ।
[सं० पु०] भारत के उत्तरमें स्थित, संसार का
(हि.) सबसे ऊँचा पर्वत ।

हिमालय शृंग = ल०, ७६ ।
[सं० पु०] (सं.) हिमालय की चोटी ।

हिमालय-सा = प्रे०, २२ ।
[वि०] हिमालय के समान शीतल, उन्नत
(सं.) और प्रसिद्ध ।

हिय = चि०, ५ पृष्ठ से १८६ पृष्ठ तक ३८ बार ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) हृदय ।

हिय-पट = चि०, ३४ ।
[सं० पु०] (हि) हृदय-पटल ।

हिये = चि०, ५ पृष्ठ से १७६ पृष्ठ तक ६ बार ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) हृदय में ।

हिये-लाइ = चि०, ६३ ।
[पूर्व० क्रि०] (ब्र. भा.) हृदय में लाकर ।

हियो = चि०, ११, १५२, १८४ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) हृदय भी ।

हिरण्यमय = क०, १० ।
[वि०] (सं.) सुनहला, सोने का ।

हिलना = आं०, २६, ५० । क०, १० । का०
[क्रि०] कु०, ६६, ६८ । का०, ११ । चि०,
(हि.) २६, ५५, ६०, १४७, १७८ । झ०,
५३ ।
अपने स्थान से कुछ इधर या उधर
होना ।

हिलकोर = का०, ६०, ११० ।
[सं० पु०] (हि) लहर, तरंग ।

हिलता-डुलता= ल०, ३० ।
[क्रि०] (वि.) घूमना फिरना, डिगना ।

हिलाता = का० कु०, ४६ ।
[क्रि०] (हि.) हिलने कि क्रिया करता ।

हिलाती = का० कु०, ३६, ७७ ।
[क्रि०] (हि.) हिलाता का स्त्रीलिंग ।

हिलाते = का० कु०, १६ ।
[क्रि०] (हि.) हिलाता का बहुवचन ।

हिलामिला = का० कु०, ६४ ।
[वि०] (हि.) अत्यधिक परिचय वाला । घनिष्ट मित्र ।

हिलोर = आं०, ८, २८ । का०, १४० । चि०,
[सं० स्त्री०] १५०, १६२ । झ०, २८ ।
(हि.) तरंग, लहर ।

हिल्लोल = का०, १०२ ।
[सं०पु०](सं.) मौज, उमंग, तरंग ।

ही = आं०, ३६, ४८, ७२, ७३ । क०, १८
[अव्य०] २०, २८, ३० । ल०, ६६, ६८, ६६,
(हि.) ७० ।
निश्चयात्मकता का बोधक अव्यय ।

हीतल चि०, १७३, १८५ ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) हृदय पट । हृदय तल ।

हीन = आं०, ५४ । का०, १५, ५६ । चि०,
[वि०] १५, ३१, ५३, १७० ।
(सं.) रहित ।

हीय = चि०, ५० ।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) हृदय ।

हीरक = चि०, २३, १६० । झ० , ७० ।
[सं०पु०] (सं.) हीरा ।

हीरक-पात्र = झ०, ५३ ।
[सं०पु०](सं.) हीरे का बर्तन ।

हीरक-गिरि = का०, २५४ ।
[सं०पु०] हीरे का पहाड़ । ऐसा पहाड़ जो देखने
(सं.) में हीरे सा लगता हो ।

हीरक-तार = चि०, २४ ।
[सं०पु०] (हि.) हीरे का तार ।

हीरकाभास = चि०, २१ ।
[सं०पु०] (हि.) हीरे के आभा वाला ।

हीरन के = चि०, ७१ ।
[सं०पु०](ब्र.भा.) हीरों के ।

हीरे = आं, ३० । का०, २८४ ।
[सं०पु०] (हि.) हीरा का बहुवचन ।

हुंकार = का० कु०, ४३, १०७, ११४ । का०,
[सं० पु०] १८४, १८५, २६७ । म०, ५ ।
(सं.) गरज, गर्जन ।

हुंकारत = चि०, ५३ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) हुंकार करते हुये । हुंकार करते हैं ।

हुंकारों = ल०, ४६ ।
[सं० पु०] (सं.) हुंकार का बहुवचन ।

हुआ = आं०, १८, २१, ३८, ५५ । क०, ११,
[क्रि०] २८, २६ । का० कु०, १६, ३३, ३४,
(हि.) ५०, ५१ । का०, १०, पृष्ठ से २७७ पृष्ठ
तक १६ बार । म०, ५, ६ । ल०, १०,
७२, ७३, ७४, ७७, ७६ ।
होना क्रिया का भूतकालिक 'रूप' ।

हुआ-सा = का०, ८ पृष्ठ से १६८ तक २० बार ।
[क्रि० वि०] झ०, ३० । म०, ५ ।
(हि.) होने के समान । लगभग समाप्त ।

हुई = का०, १११ । म०, २१, ३२ ।
[क्रि०] होना क्रिया का भूतकालिक स्त्रीलिंग
(हि.) रूप ।

हुए = का०, २१६ । ल०, ४२, ५६, ७७,
[क्रि० वि०] ७८, ७६ ।
(हि.) होने के निकट ।

हुलसाइकै = चि०, ६ ।
[पूर्व, क्रि०] ब्र. भा.) प्रसन्न करके ।

हुलसावन = चि०, १६१ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्रसन्न करना ।

हुलसावही = चि०, ६६ ।
[क्रि०) (ब्र. भा) प्रसन्न करते हैं ।

हुलसी = चि०, १४६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्रसन्न हुए ।

हुलसे = चि०, ५६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) प्रसन्न हुए ।

हुलास = चि०, ६ ।
[सं० पु०] (ब्र. भा.) आनन्द, प्रसन्नता ।

हूँक = ल०, ४२ ।
[सं० स्त्री०] (सं) हृदय की वेदना । पीड़ा ।

हूजिये = क०, ११ ।
[क्रि० वि०](ब्र.भा.)होईये ।

ह्रास = का०, १४, ७६ ।
[सं० पु०](सं.) नाश । पान ।

हृतंत्री = का०, ७४ ।
[सं०पु०] (सं.) हृदय का तार ।

हृतंत्री-झनकार= प्रे०, १३, ।
[सं०पु०] हृदय के तारों की झंकार। अन्तःकरण
(सं.) की मधुर ध्वनि।
हृत्तल = का०, २४८।
[सं० पु०] (सं.) अन्तःकरण।
हृत्पटल = का०, कु०, १२०।
[सं० पु०] (सं.) हृदय का परदा।
हृत्सर = का०, कु०, ८४।
[सं०पु०] (सं.) हृदय रूपी तालाब।
हृद्गत = का०, कु०, १०२।
[वि०] (सं.) आन्तरिक, मन में बैठा या जमा हुआ।
हृदयंत्र = का०, कु०, ११६।
[सं०पु०] (सं.) हृदय रूपी यंत्र।
हृदय = आँ०, २०। का०, कु०, २६ पृष्ठ से ६३
[सं०पु०] पृष्ठ तक १६ बार। का०, ३ पृष्ठ से २४५
(सं.) पृष्ठ तक ४३ बार। चि०, १७३, १७७,
१८६, १८८। झ०, १५, १६, २७।
प्रे०, ५। म०, १६,२०। ल०,१८,३१।
मन। कलेजा। दिल। मध्य।
हृदय-अंधेरी-झोली=ल०, २६।
[सं०स्त्री०] हृदयरूपी अंधेरी-झोली। अज्ञान भरे
(हि.) हृदय।
हृदय-उदार = का० कु०, ११६।
[वि०] (सं.) दयालू। उदार-हृदय वाला।
हृदय-क्षत = झ०, ६२।
[सं०पु०] (सं.) घायल दिल। टूटा हृदय।
हृदय-कमल = आं०, १२। प्रे०, १३।
[सं० पु०] (सं.) हृदय रूपी कमल।
हृदय-कुमुद = का०, ३५।
[सं० स्त्री०] (सं.) हृदय रूपी कुंई।
हृदय-गगन = का० कु०, ७६। का०, ५, ११६।
[सं० पु०] प्रे०, १६ १८।
(सं.) हृदय रूपी आकाश।
हृदय-गुफा = झ०, ८२।
[सं० स्त्री०] (हि.) हृदय रूपी गुफा।
हृदय-दौर्बल्य = का० कु०, ११५।
[सं० पु०] हृदय की दुर्बलता। हृदय का एक
(सं.) रोग।
हृदय-पटल = का०, ५८।
[सं० पु०] (सं.) हृदय का परदा।
हृदय-मूर्छना = का०, १८१।
[सं० स्त्री०] (सं.) हृदय का संगीत।
हृदय-रत्न = का० कु०, ५०। का०, ५७। प्रे०, २०।
[सं० पु०] (सं.) हृदय का रत्न।
हृदय-वीणा = झ०, ५७।
[सं० स्त्री०] (सं.) हृदय की वीणा।
हृदय-वेदना = का० कु०, २२।
[सं० स्त्री०] (सं.) दिल का दर्द। अन्तर की पीड़ा।
हृदय-मंह = चि०, ७४।
[सं०पु०] (ब्र.भा.) हृदय में।
हृदय-समाधि = आं०, १२।
[सं० स्त्री०] (सं.) हृदय की समाधि।
हृदय-सर्वस्व = का० कु०, ३१।
[सं० पु०] (सं.) हृदय की सारी पूँजी।
हृदयाब्धि = का० कु०, ७५। झ०, ५६।
[सं० पु०] (सं.) हृदय रूपी समुद्र।
हृदयासन = चि०, १८०।
[सं० पु०] (सं.) हृदय का आसन।
हृदयेश = का० कु०, १४।
[सं० पु०] प्राणेश। प्राणप्रिय। स्वामी।
(सं.) पति।
हृदयों = आं०, २२। का०, १३५, १६४, १७१।
[सं० पु०] प्रे०, ११, २२। ल०, १७।
(हि.) हृदय का बहुवचन।
हे = क०, २१, २५, २६, २७, ३०। का०,
[हि०] ३७। चि०, १४०। ल०, १५, १६।
सम्बोधन का चिन्ह।
हेत = चि०, ३४, ६२।
[सं० पु०](ब्र.भा.) हित, हेतु। कारण।
हेतु = का०, १४, ६४। चि०, ३१ पृष्ठ से
[सं० पु०] १७४ पृष्ठ तक १३ बार। म०, २२।
(सं.) कारण। अभिप्राय। उद्देश्य।

हेम = आं०, ३७ । का०, २४ ।
[सं० पु०](सं.) हिम । पाला । सोना । नाग केसर ।

हेमकूट = का०, २६२ । चि०, ५६ ।
[सं० पु०](सं.) हिमालय के उत्तर का एक पर्वत ।

हेम-लेखा-सी = का०, २२२ ।
[वि०] (हि.) स्वर्णलेख के समान ।

हेमवती-छाया = का०, १६९ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) स्वर्णिम छाया । स्वर्ण के समान चमकीली छाया ।

हेमाभ = का० कु०, १०० । प्रे०, १
[वि०](सं.) स्वर्ण की झलक, सोने की चमक ।

हेमाभ-रश्मि= का०, ७८ ।
[सं० स्त्री०] (सं.) स्वर्णिम किरण । सोने की चमक वाली किरणें ।

हेरि = चि०, १५०, १६१, १७०, १८२ ।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा.) देखकर । लखकर ।

है = सभी पुस्तकों में अनेक पृष्ठों पर । होना
[अव्य०] क्रिया का वर्तमानकालिक रूप (एक वचन)।

ह्वै = चि०, १६६, १६७ ।
[पूर्व०क्रि०](ब्र.भा.) होकर ।

होइये = चि०, १७८ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) हो जाइये ।

होके = ल०, ६६ ।
[पूर्व०क्रि०] (ब्र.भा.) होकर ।

होगा = आं०, ४६, ५५, ५६ । क०, २३, २५।
[क्रि०] का०, ३८, ११७, ११६, १२६, १३०, १३२, १३६, १६२ । ल०, ४०, ५३, ७७ ।
होना क्रिया का भविष्यत् कालिक रूप ।

होना = आं०, २८ पृष्ठ से ६४ पृष्ठ तक १८ बार
[क्रि०] क०, ११, २२ । का० कु०, २, ८
(हि.) १०,११, १४,३०,५३ । का०, ८ पृष्ठ से २६० पृष्ठ तक ७४ बार । भ्रं०, १५ म०, ५, ६, १२, १३ । ल०, १३, २६ ४७, ७२, ७३, ७७ ।
घटना । कार्य का सम्पन्न किया जाना उपस्थिति, अस्तित्व आदि सूचित करने वाली संयुक्त क्रिया ।

होय = चि०, ६५, १८५ ।
[क्रि०](ब्र. भा.) होवे ।

हो रहा = का० कु०, ३० । का०, १५, २६
[क्रि०] ५४, ८१, ८३, ८६, ११५, १३१
[हि.] १४५ ।
होना क्रिया का एक रूप ।

होली = आं०, ६१ ।
[सं० स्त्री०] हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक त्योहार
(हि.) (क्रि०) जलाना । भस्म करना
हो गयी ।

होवै = चि०, ३३, ३६ ।
[क्रि०] (ब्र. भा.) सम्पन्न हो ।

हौस = चि०, १२ ।
[सं० स्त्री०] (हि.) लालसा, चाह, कामना, उत्साह ।

परिशिष्ट

[अनुक्रम के लिए शब्दों को कोश में देखें। ऐतिहासिक चरित्रों के संबंध में यहाँ कुछ विशेष रूप से दिया गया है।]

अंग-उपांग—अंगुलि, अंखिया, अधर, अनामिका, अलकें, अस्थि, आँख, आनन, आनन-सरोज, आपाद-मस्तक, ऊँगली, कंठ, कच, कटाक्ष, कटि, कपोल, कर, कर-किसलय, कर-पल्लव, कल कंबु, कबरी, कुंतल, केश, क्रोड़, गर, गर्दन, गल, गला, गाल, गुल्फ, गोद, घुटना, चरख, चमड़े, चरण, चरन, चर्म, चिकुर, चितवन, चुटकी, छाती, जटा, जीभ, डंक, डग, ताल, ताली, तिल, दन्त, दशन, दाँत, दृष्टि, देह, नयन, नस, नाभि, नेत्र, पग, परिरम्भ, पलक, पलकन, पाद, पांयन, पार्श्व, पुतरी, पुतली, बदन, बाल, बाहु, बाहन, बाहें, बुद्धि, भाल, भुज, भुजन, भृकुटि, भौं, भौंहें, भ्रू-युग्म, मस्तक, मस्तिष्क, मांग, मुख, मुंह, मेदनी, रक्त, रसना, रुधिर, रोम, रोमराजी, रोमाली, रोमावलि, लट, लहू, लोचन, लोम, वक्ष, वक्ष-स्थल, वदन, वपु, वरुनी, वर्ण, शिर श्रवण, साँस, सिर, सुपाणिपल्लव, सुवक्ष, सुहिया, हथेली, हाथ, हिय, हियपट, हीतल, हृतंत्री, हृत्तर, हृदयंत्र, हृदय।

ऋतुएँ—ऋतुनायक, ऋतुपति, कुसुम ऋतु, ग्रीष्म, ग्रीष्मासन, चैत, जेष्ठ निदाघ, पतझड़, पावस, बरसात, बसंत, मधुऋतु, माधव ऋतु, वसंत, वर्षा, वर्षा ऋतु, शरत काल, शरद, शीत, शिशिर, सरद, सावन।

जलाशय—अमर तरंगिनी, आकाश गंगा, कालिन्दी, कृष्णा, गंगा, गंगासागर, जाह्नवी, पंचनद, पशोला, प्रशान्त, फाल्गु, बरुणा, भागीरथी, महानद, यमुना व्योम गंगा, व्योम-सरवर, सप्त सिन्धु।

जाति और वंश—असुर, अनार्य, आर्य, इक्ष्वाकु वंश, किन्नरियाँ, किलात, कौरव वंश, क्षत्रिय, क्षत्री, गंधर्व, गोप, चंद्रकुल, गोपकुल, चांडाल, चारण, तातार, तुर्क, तुर्की, तुरुष्क, दस्यु, दानव, देव, दैत्य, धीवर, नाग, पारसिक, पाण्डव, पिशाच, पौर, बनचारी, बनचर, बौद्ध, ब्रजबाला, ब्राह्मण, भारती, भारतवासी, भील, भीलन, मंत्र, मुगल, मुसलमान, म्लेक्छ, यक्ष, यमन, यवन, यादव, यायावर, रघुकुल, रघुवंशी, वधिक, विद्याधर, वर्ण, विप्र, सारस्वत, स्मशानवासी, हिन्दी, हिन्दू।

जीव-जन्तु—अलि, अली, अश्व, इन्द्रवधूटी, एरावत, कच्छप, कटि, करी, कलकम्बू, कलभ, कल हंस, कलापी, कस्तूरीमृग, कीर, कुंजर, कुंजर कलभ, कुरंग, कुहुकनी, केशरी, केहरी, कोक, कोकिल, कोकिला, कोयल, खंजन, खसी, गज, गरुण, गाय, गिद्ध, गिद्धिनी, चकई, चकवा, चकोर, चकोरी, चक्रवाल, चातक, चातकी, जुगनू, ज्योतिरिंगणों, झिल्ली, तितली, तिमिंगल, तरंग नाग, पतंग, पन्नग, पपीहा, पिक, पिच्छल, फणि, बकुल, बलाका, बाल बकुल, बिहंगम, वृप, भँवर, भृगं, भृंगा, भ्रमर, भौंरे, मकर, मछली, मतंग, मत्स्य, मधुकीट, मधुप, मधुव्रत, ममाखियों, मयूर, मयूरी, मराल, मरालिनी, मराली, मिलिंद, महिषी, मूषक, मृग, मृगछौनहिं, मेष, वृश्चिक, वृष, वृषभ, व्याल, व्याली, शलभ, शिखी, शिशुमाल, शुक, शर, श्यामा, सर्प, सारस, सारिका, सिंह, सिहनी, सिंहिनी, सिखी, सूआ, हय, हयन, हरिण, हरि, हाथी।

दिशाएँ—आग्न, अरुणाचंल, आकाश, इशान, उत्तर, चर्तुदिक, त्रिदिक, दक्षिण, पाताल, पूरब, पूर्व, प्रतीची, प्राची।

पर्वत—अरावली, अर्बुदगिरि, अस्ताचल, उत्तरगिरि, कैलाश, चक्रवाल, भूधर, भूधर नृपति, वारुणी।

रंग—अरुण, अरुणिमा, अरुनारे, आरक्तिम, उजल, उज्वल, उद्धत, कारा, कारी, काला, कालिमा, काले, कुंकुम अरुण, गुलाबी, गुलाली, गैरिक, गोरा, गौर, चम्पक, चट-कीला, चमकीला, धवल, नील, नीला, नीलिमा, नीले, नीलोज्वल, पीत, पीला, रंगबिरंगी, रंगीन, रक्तारुण, रक्तिम, रसोज्वल, लोहित, लाल, शोण, श्याम, श्यामल, श्यामला, सुनहला, सुनरन, सुमनरंग, सुवर्ण-सा, स्वर्ण-सा, हरित, हरी।

वनस्पति—अम्बुज, अक्षय वट, अगर, अगरू, अमर-बेलि, अरविंद, अरसी, अलम्बुषा, इन्दीवर, कंज, कंजु, कचनार, कदम्ब, कदली, कनक-कुसुम, कमल, कमलिनी, कमली, कर्णिकार, कल्पवृक्ष, कस्तूरी, किंजल्क, किंसुक, कुंद, कुमुद, कुमुदिनी, कुरबक, कुशकेत, की, केरो (केला), केशर, कोकनद, गुलाब, चंदन, चंपक, चंपा, चमेली, चलदल, छुईमुई, जलज, जलजात, जवाकुसुम, जूही, ज्योतिष्मती, झाड़,झुरमुट, तमाल, तरुराज, ताड़, तामरस, दूब, देवदारु, धव, धवल, नलिन, नलिनी, नाल, नीरज, नील कमल, नील नलिन, नील लता, नीलोत्पल, पद्म, पद्मिनी, पराग, पलास, पारिजात, पिच्छल, पुआल, पूरहन, प्रियंगौ, बट, बर, बीज, बेर, बेल, बेला, बेलि, बेली, भंजरीं, मकरंद, मधुनि, मरंद, मलयज, मल्लिका, महावट, माधविका कुसुम, माधवी, माधवी कुंज, माधवी-लता, मालति, मालती, मालती-कुंज, मालतीमुकुल, मूल, मृणाल, मृनाल, यूथिका, रज, रज-कुसुम, रजत-कुसुम, रजनीगंधा, रसाल, रसालन, रसाल पुंज, रसाल मंजरी, रसाला लता, लोधकट, वल्लरियाँ, विद्रुम, वेतवी, वृत, वृक्षपत्र, शतदल, शस्यश्यामली, शालि, शिरीष, शोफाली, कैवाल, सन, सरसिज, सरसी, सरोज, सरोज-नेत्रेनु, (पत्र) सरोज-पराग, सरोरुह, सरोरुहदि, (सरोरुह) साले, (साल) सिल-सरोज, सुमेंहदी, सोनजुही, स्तवक, स्थाल, पद्म, हेम।

पदार्थ—अंचल, अंजन, अम्बर, अग्नि, अनल, अन्न, अभिषेक, अमृत, अरघ, अराएँ, अराल, अलात चक्र, अल्पना, असवारी, अस्त्र, आँख-मिचौनी, आँच, आग, आटा, आभूषण, आयुध, आरसी, आवरण, आसन, आसव, उवधान, ऊन, ओढ़नी, औषधी, कंकन, कंचन, कड़ी, कपूर, कमान, करवा, कर्नफूल, कर्पूर, कलकिंकिनी, कलश, कलसी, कवच, कस्तूरी, काँटन, काँटे, काट, किरीट, काष्ठ, किंकिनी, केनारी, किवाड़, कुंकुम, कुंकुम-चूर्ण, कुदार, कुलिश, कुश, कृष, कृषि, कोटर, कौड़ी, कौस्तुभ, क्षीर, खाट, खील, खुट्टी, खेवैया, गंध, गजरा, गदा, गरल, गरलवात, गागर, गागहि, गीत, गुरिया, गुलाल, गूँधन, गेंद, गोधन, ग्रंथ, घंटा, घड़ी, घी, घूँघट, चंगेर, चंदन, चम्पक, चक्र, चतुरंग, चल-चक्र, चल-चित्र, चषक, चाँदी, चादर, चाप, चारण, चिता, चिता-भस्म, चित्र, चित्र-पट, चिनगारी, चिनांसुक, चीर, चुम्बक, चूड़ामणि, छन्न, छायानट, छिन्न पात्र, छीर, छूरा, छौर, जंजीर, जमींदारी, जयमाला, जरतारी-ओढ़नी, जल, जवाहिर, जाल, जूआ, जौहरी, ज्वार, झूला, टही, टीका, डुब्बी, डोर, डोल, ढाल, तन्तु, तकली, तरणी, तलवार, तार, तारा, तिल, तुला, तुर्य, तूलिका, तेल, तोप, तोरण, त्रिशूल, थाल, दाम, दीप, दीपक, दुंदुभी-मृदंग-तूर्य, दोना, दोल, दोला, द्रुतपद्र, द्वैत, धनु, धनुष, धान्य, धूल, ध्वजा, नग, नगीना, निकष, नीड़, नीलम, नूपुर, नैया, पंखा, पट, पतंग, पत्थर, पय, परदा, परिचारक, पर्ण, पवि, पहेली, पागो, पाती, पारत, पात, पावक, पाश, पीताम्बर, पुखराज, पुल, पुरोडाष, प्याला, प्रतिमा, प्रत्यंचा, फांस, फुलवारी, फूल, बंशी, बंसी, बर्फ, बहुरुपिया, बाड़ब, बारूद, ब्रान, बालू, बिन्दी, बीणा, बीन, वेणी, वेदी, भस्म, भांडार, भांवरी, भाप, भुजदंड, भुजपेंच, भूषण, मंच, मंच वेदिका, मंजीर, मंत्र, मज्जन, मणि, मणिबन्धो, मणि माणिक्य, मदिरा, मधु, मधुराक्षर, मनि, मरकत, मलयज, मसि, महासंगीत, मांस, मानिक, मानिक-मदिरा, माला, मिट्टी, मीड़, मुकता, मुक्ता, मुक्तामाल, मुकुट, मुकुर, मुरली, मूर्ति, मृदंग, मेला, मोती, मोम, मौक्तिका हार, म्यान, यंत्र, यज्ञ, यवनिका, रजत, रज्जु, रतन, रत्न, रत्नहार, रथ, रस्सी, राग, राजसूय, रास, रुण्ड, रेशमी, रोली, लक्ष्यहार, लघिमा, लेखनी, लोहा, वन्दनवार, वंशी, वज्र, वर्म, वलि, वल्कल, वल्कल-वसन, वह्नि, वाण, वानन, वाली, विज्ञान, विष, वीणा, वेणु, वेद, व्यंजन, व्रज्या, शंख, शरासन, शस्त्र, शस्त्रागार, शहनाई, शाल, शिंजिनी, शिरस्त्राण शिल्प, शिल्प-साहित्य, शिल्पी, शिविका, श्रुवा, संधि-पत्र, संपुट, सफरी, समाधि, साड़ी, साम्राज्य, साफ, सिंहासन, सिकता, सीप, सुवरन,सुयंत्र, सुयज्ञ, सुरा, सोना, सोमपान, सौमचक्र, स्रुवा, स्वर्ण, स्वर्ण कलस. स्वर्णघट, स्वर्ण छत्र, स्वर्णासर, स्वाती, हरिचंदन, हलाहल, ।

स्थल—अंतःपुर, अम्बरचुम्बी, अमृत धाम, अराम, अस्तधाम, आंगन, आपानक, आमरवास, आराम, आर्व-

मंदिर, आवास, आश्रम, ऊतंग, उटजों, उद्यान, उपवन, उशीरगृह, कच्चा, कक्ष, कानन, कुंज, कुटिया, कुटी, कुटीर, कुल्या, कुसुमाकर, केतन, क्यारी, क्रीड़ागार, खंडहर, खड्ड, खान, खिड़की, खेत, गगन-चुम्बी, गर्त, गली, गह्वर, गिरिजा, गिरि, गुफा, गुफा-द्वार, गुरुकुल, गुहा, गुहा-गृह, गृह, गेह, गैल, ग्राम, ग्राम्य, घर, घाटी, चुम्बी, छज्जा, जगत रंगशाला, झाड़, झालर, तपोक, दुर्ग, दुर्ग-द्वार, देव-मन्दिर, देव यजन, द्वीप, धाम, नगरोपकंठ, निर्माण, नीड़, पर्णकुटीर, पगोडा, पुर, प्राचीर, प्रांगण, फुहारे, बलभीयुत, बिहारथल, भीत, मंडप, मंडल, मंदिर, मधु-शाला, मरु-स्थल, मस्जिद, महल, मीनार, मोती मस्जिद, रंगमंच, रंग महल, रंग शाला, रंगस्थान, राजधानी, राजपथ, विश्व-मंदिर, विहार, वेणुवादनकुंज, वेदिका, वेदी, शयन कक्ष, शांतकुटीर, श्रान्त भवन, सदन, सुप्रांगण, सूना, सोपान, स्तम्भ, स्तम्भों, स्तर, स्तूप, हरम।

स्थान—अजमेर, अमरावती, अवध, आगरे (आगरा), आर्यावर्त, ऋषिपत्तन, कपिसा, कलिंग, काशी, काश्मीर, कुशवती, गुजरात, गुर्जर, गुर्जर, चारण भूमि, चित्रकूट, चिलियान-वाला, जम्बू द्वीप, टाली कोट, त्रिपुर, त्रिभुवन, दिल्ली, द्वावाटिका, पंचनद, प्रयाग, बिहारस्थल, भारत, भारत खंड, मगध, मणिकूट, मनोसर्पण, मरुस्थल, मरुभूमि, मिश्र, मेवाड़, लाक्षागृह, वनस्थली, व्रज, सप्तसिंधु, सरहिंद, सारस्वत, सारस्वत प्रदेश, स्वर्ग।

चरित्र—

अकबर—जन्म १५४२ ई० में अमर कोट में। राज्यकाल १५५६–१६०५ ई०। अकबर द्वारा चित्तौड़ पर चढ़ाई १५६७ ई०। उसके प्रधान सेनापति अब्दुर रहीम खान खाना को प्रताप की चारित्रिक महत्ता का ज्ञान १५७२ ई०।

अमर सिंह—महाराणा प्रताप के पुत्र। महाराणा की मृत्यु के पश्चात ये विलासी हो गए। 'अमर महल' का निर्माण कराया। जहांगीर से संधि की।

अमिताभ (भगवान बुद्ध)—५६३-४८३ ई० पूर्व। कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के पुत्र। बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक। ऋषिपत्तन (सारनाथ) से धर्मका प्रचारारंभ लगभग ५२७ ई० पूर्व।

अलाउद्दीन खिलजी—राज्यकाल १२९६-१३१६ ई०। सन् १२९९ ई० में अपने भाई उलूख खाँ और वजीर उसरत खाँ को गुजरात विजय के लिए भेजा। गुर्जर नरेश कर्णदेव सिंह वाघेला भाग कर अपनी पुत्री देवल देवी के साथ देवागिरि में छिप गया। उसकी रानी कमला देवी दिल्ली हरम में भेजी गयी।

अशोक—राज्यकाल लगभग २७२ ई० पूर्व–२३३ ई० पूर्व। शासन काल के लगभग दस वर्ष बाद कलिंग का युद्ध। इस युद्ध के भयंकर हिंसा के परिणाम ने उसे बौद्ध धर्म का अनुगामी बना दिया। वह धर्मजीत और लोकजयी महान सम्राट के रूप में विश्व के इतिहास में प्रसिद्ध है।

आलमगीर—मुगल सम्राट मुहीउद्दीन मोहम्मद औरंगजेब ने सन् १६२९ ई० में सिंहासनारूढ़ होने पर अपने लिए 'आलमगीर' उपाधि धारण की, जिसका अर्थ होता है विश्वजयी। जन्म सन् १६१८ ई०, मृत्यु अहमद नगर में १७०७ ई०।

कमला—कमलावती। कर्ण देव सिंह की पत्नी अलाउद्दीन के हरम में आकर भारतेश्वरी बनी। कमला के साथ ही सेनापतियों ने मालिक कफूर—जिसका असली नाम माणिक था एक हजार दीनार में खरीदा गया था, अति सुन्दर गुलाम था—दिल्ली भेजा गया। (दे० अल्लाउद्दीन परिशिष्ट) मालिक उसके शैव का सहचर था।

काफूर—इसका मूलनाम माणिक था। अप्राकृतिक काम व्यापार के लिए हजार दीनार पर खरीदा गया दास था। सन् १९२९ में उसने अलाउद्दीन को मोहित किया। कुछ समय बाद सेनापति बना दिया गया दक्षिण में बारंगल की उसने विजय की और फिर षड़यंत्र द्वारा अलाउद्दीन की सन् १३१६ ई० में हत्या करवाई। अलाउद्दीन के छोटे लड़के मुबारक ने उसे मरवा डाला।

कर्ण सिंह—कमला के पति गुर्जर नरेश। (दे० अलाउद्दीन)।

कृष्ण सिंह—राणाप्रताप की सेना के विश्वस्त सरदारों में ऐ एक। सालुम्त्रापति। इन्होंने अमर सिंह द्वारा रहीम की पत्नी के बंदी बनाये जाने की खबर महाराणा प्रताप तक पहुँचायी थी।

खानखाना अबदुर्रहीम—अकबर के नवरत्नों में से एक। उसके प्रधान सेनापति। महाराणा प्रताप के शौर्य और चरित्र के प्रशंसक। (दे० परिशिष्ट में अकबर।) जन्म—सन् १५५६ ई०—विद्वान एवं कवि।

खुसरो:—शाह सुलतान नासिरुद्दीन खुसरो (ख्वाजा गुलाम काकू) जो गुजरात-विजय के समय माणिक के साथ ही अलाउद्दीन के दरबार में दिल्ली भेजा गया था। भारवाड़ या परमार जाति का था। मुसलमान बनने पर उसका नाम हसन रखा गया। खुसरो खाँ के नाम से सन् १६१३ में यह मुबारक का मुख्य वजीर और सेनापति हो गया। १३२० ई० में मुबारक को मारकर उसने सल्तनत पर कब्जा कर लिया। यह सुलतान खुसरो के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है।

तथागत—दे० अमिताभ।

तुलसीदास—रामचरित मानस प्रणेता हिन्दी के महाकवि। जन्म—सं० ६५५४ के लगभग—मृत्यु काशी में १६८० वि०। कार्य क्षेत्र-मूलतः काशी। अयोध्या, प्रयाग चित्रकूट में भी रहे। मानस के अतिरिक्त विनय-पत्रिका गीतावली, दोहावली, कृष्ण गीतावली आदि रचनाओं के स्रष्टा।

बुद्ध—दे० अमिताभ।

पद्मिनी—अनुश्रुति है कि अलाउद्दीन ने चित्तौर गढ़ पर पद्मिनी की प्राप्ति के लिए चढ़ायो की थी। पद्मिनी राणा भीम सिंह की पत्नी थी। वह उसे न पा सका क्योंकि उसने जौहर कर लिया। यह ऐतिहासिक सत्य नहीं है।

महाराणा प्रताप—चित्तौड़ नरेश उदय सिंह के पुत्र। निरंतर २६ वर्ष तक मुगलों से लड़ते रहे पर उनकी अधीनता नहीं स्वीकार की। हिन्दू धर्म रक्षक रूप में पूजित। राज्य काल १५७१–१५९७ ई०।

माणिक—दे० काफूर।

रणजीत सिंह—पंजाब केशरी का जन्म सन् १७८०। महाराजा की उपाधि ग्रहण। सन् १८०१। अंग्रेजों से संधि कर ली थी।

रहीम खां—(दे० अब्दुर्रहीम खानखाना)

लाल सिंह—पंजाब का कुख्यात सेनापति।

शेरसिंह—अंग्रेजों द्वारा मुल्तान के गर्वनर मूलराज के विद्रोह को दबाने के लिए भेजा गया नायक जो राष्ट्रीयता की भावना वश सिखों से मिलकर अंग्रेजों का विद्रोही हो गया और जिसने जमकर उनसे चिल्लियां वाले युद्ध (सन् १८४८ ई०) में मोर्चा लिया। रामनगर, सादुल्लापुर तथा चिल्लियां वाले युद्धों में उससे अंग्रेज हारे।

श्याम सिंह—प्रथम अंग्रेज सिक्ख युद्ध, (१८४५-४६ ई०) का योद्धा जो युद्धभूमि में फिरोजपुर के समीप मारा गया।

सूर्य केतु—विजय नगर के राजा जिन्होंने मुसलमानों का दाँत खट्टा कर दिया। वे युद्ध में टाली कोट में मारे गये।

सूर्यमल—जाटों द्वारा आलमगीर के विरोध में किये गये विद्रोही नेता चूड़ामन का भातृज। इसने भरतपुर में अपना राज्य प्रतिष्ठित किया था।

हरिश्चन्द्र (भारतेन्दु)—आधुनिक हिंदी के निर्माता कविवर हरिश्चन्द्र।

इतिहासेतर—अम्बे, अज, अजीगर्त, अनंग, अनरण्य, अनुसूया, अमला, अर्जुन, आदित्य, आसुतोष, इंदिरा, इड़ा, इंद्र, उर्वसी, कमला, कण्व ऋषि, कर्ण, कश्यप, कामायनि, कामायनी, कुम्भकर्ण, कुमुद्वती, केशव, कौरवनाथ, कौरवाधिप, कौरवाधिपति, कौशिक, क्रतुमय पुरुष, कृष्ण, गालव, गिरिजा, गोपाल, गौरी, घनश्याम, चंचल, जनक, जनकलली, जनकसुता, जानकी, त्रिपुरारि, दशरथ, देवदास, देवव्रत, द्रौपदी, धनंजय, धनुर्धर, धर्मराज, ध्रुव, नटराज, नटेश, पशुपति, पांडव, पार्थ, पूषा, प्रजापति, पृथासुत, प्रभावती, प्रियंवदा, प्रियव्रत, विशेश्वर, ब्रह्मा, भगवति, भरत भीम, भीमा, भीष्म, भूतनाथ, भैरव, मदन, मनु, महारुद्र, मार, मेनका, मोहन, यज्ञ-पुरुष, यम, युधिष्ठिर, रघु, रघुकुल राई, रघुवंश-जहाज, रति, रमे, रवि, राका, राम, राम-वैदेही, राहु, रुण्ड, रुद्र, लक्ष्मी, लघिमा, ललिता, वन लक्ष्मी, वरुण, वरुणी, वसिष्ठ, वाणी, विक्रम, विजय-लक्ष्मी, विध्या, विधाधर, विधाता, विधु, विभाकर, विश्वम्भर, विश्वत्थामा, विशेश्वर, विश्वमित्र, श्रुतघ्नी, ब्रह्मा, शंकर, शकुन्तला, शनि, श्री, षणानन, सप्तर्षि, सरस्वती, सव्य-सांची, ससी, सारस्वत, सीता, सुदामा, सुधाकर, सुयोधन, सूत, सूर, सूर्य्य, सेस, हर, हरहर, हरि, हरिचंद, हरिचंदादि।

लेखक की कुछ अन्य रचनाएँ

प्रसाद की कविताएँ	७)
कामायनी समीक्षा	३)
हिन्दी साहित्य और साहित्यकार	१।)
कृति और कृतिकार	४॥)
अमर साहित्यकार (हिन्दी)	१)
अमर साहित्यकार (संस्कृत)	१)
प्रेरणा के प्रतीक	३)
सदासुहागिन रूठ गई	३)
साँझ-सकारे	५)
मुद्रा और बैंक	७)
अवशेष	२)
नीहारिका	१।)
जो गाता हूँ	३)

प्राप्तिस्थान—

आराधना प्रकाशन,

६४।४४ गोला दीनानाथ, वाराणसी।

इस कोश के संबंध में

इस महत्वपूर्ण कृति के दर्शन से विश्वास हो रहा है कि राष्ट्रवाणी हिन्दी का स्तर निकट भविष्य में संसार की उच्चतम भाषाओं की कोटि में पहुँच जायेगा। वैज्ञानिक बुद्धि के ऐसे श्रमसाध्य कार्य पश्चिम की विकसित भाषाओं में ही हुए हैं। हिंदी के यशस्वी कवि प्रसाद द्वारा व्यवहृत शब्दों का यह कोश इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी कवियों पर विचार और विश्लेषण करने वाले हिन्दी-काव्य का गौरव तो बढ़ायेंगे ही, अपने कवियों को दीर्घजीवी और यशस्वी भी करेंगे।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र

यह 'शब्द-कोश' एक नयी दिशा में उपयोगी प्रयास है और अध्यवसायी लेखक की अद्यतन कृतियों में सर्वोपरि है। इससे प्रणेता के श्रम का ही नहीं साहित्यिक निष्ठा का भी परिचय मिलता है। निःसन्देह पाठकों द्वारा इस कृति का अच्छा स्वागत होगा। आशा है पाण्डेय जी इसी तरह इस युग के अन्य कृत्यविद्य कवियों के शब्दों को पाठकों के लिए सुगम कर देंगे। इस कोश तथा ऐसे ही अन्य सत्प्रयत्नों के लिए हिन्दी जगत् सुधाकर जी का आभार मानेगा।

—शांतिप्रिय द्विवेदी

